

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY****KOTA (Raj)**

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER S No	DUE DTATE	SIGNATURE

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY****KOTA (Raj)**

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१६१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महाकवि विशाखदत्तप्रणीतं

मुद्राराक्षसम्

‘विमला’ संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी-व्याख्या-टिप्पणी-
नोट्स-प्रश्नपत्रादि-विन्युपितम्

व्याख्याकारः

आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्रः

बी० ए० (आनर्स), एन० ए० (हिन्दी-संस्कृत),
डिप्लोम-एन-एड्, रिजर्व्स्कोलर, साहित्याचार्यः



चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९७२

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०२९

मूल्य 

© चौखम्बा विद्याभवन

चौक, पो० बा० ६६, वाराणसी-१

फोन : ६३०७६

प्रधान कार्यालय

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

गोपाल मन्दिर लेन,

पो० आ० चौखम्बा, पोस्ट बाक्स ८, वाराणसी-१

फोन : ६३१४५

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
161

M
MUDRARAKṢASA
OF
VISA KHADATTA

संस्कृत

Edited
with the VIMALĀ Sanskrit, Hindi, English
Commentaries and Critical Notes.

By
JAGADĪSHA CHANDRA MIŚRA
B. A. (Hons) M. A. (Sanskrit-Hindi) Dip. In. Ed.
Research Scholar, Sāhityacharya.



THE
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI-1
1972

© The Chowkhamba Vidyabhawan

Post Box No 69

Chowk, Varanasi-1 (India)

1972

Phone 63076

First Edition

1972

Price Rs ~~30-00~~

Also can be had of

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

Publishers & Oriental Book-Sellers

P O Chowkhamba, Post Box 8, Varanasi-1 (India)

Phone 63145

आमुख

प्रायः सभी विश्वविद्यालयों के बी० ए० एम० ए०, आचार्य एवं विभिन्न प्रशासनिक प्रतिपादितों की परीक्षाओं में 'मुद्राराक्षस' सामान्य रूप से पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इस नाटक पर संस्कृत व्याख्या के अतिरिक्त अंग्रेजी माध्यम से भी लिखित कई तरह की व्याख्याएँ उपलब्ध हैं पर व सभी छात्रों के लिए समान रूप से सहज बोधगम्य नहीं हैं। मुझे अपनी आचार्य एम० ए० की परीक्षाओं में अनुभूत कठिनाइयों से तथा मूत्रग्रन्थ के प्राणोन्मादी प्रभाव के संचरण आकर्षण से हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की त्रिभाषीय 'बिनाला' व्याख्या लिखने की प्रेरणा मिली। इस संस्करण के माध्यम से, बिना किसी की सहायता लिए भी, विभिन्न भाषाभाषी छात्र महाकवि विशालदत्त के गभीर भावतक अनायास पहुँच सकें—इस उपयोगिता की दृष्टि से प्राचीन एवं नवीन शैलियों का सरल समन्वय उपस्थित करने का यह मेरा प्रयास है।

मुद्राराक्षस के इस संस्करण को वर्तमान रूप देने में मुझे अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत के कतिपय प्राप्त संस्करणों से सहायता लेनी पड़ी है। पाठ की दृष्टि से श्री तुष्टिराज शास्त्री के द्वारा सम्पादित संस्करण की ही आधार बनाया गया है। टीका की संरक्षण के विषय में श्री एन० आर० काले, श्री शारदारज्यन राय, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, निरुपण विशालकुमार तथा प० कनकलाल ठाकुर के संस्करण अधिक एवं उपयुक्त सहायक सिद्ध हुए हैं। इनके अतिरिक्त श्री जिन विद्वान् लेखकों एवं सुधी समीक्षकों की कृतियाँ से सहायता मिली है, मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ।

मेरे इस प्रयास में प्रोत्साहन देनेवालों में सुहृद नानधेम डा० जयनन्त मिश्र, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय एवं प्रातस्मरणीय आचार्य श्री कृष्णनोहन ठाकुर अध्यक्ष रणवीर संस्कृत विद्यालय, का० हि० वि० वि० वाराणसी

का नाम सर्वोपरि है। इनके अतिरिक्त अपने ही 'आत्मस्वरूप' काशी मिपिला ग्रन्थमाला' के सुविख्यात सम्पादक, सुरभारती के अटलब्रती, तपस्वी विद्वान् आचार्यप्रवर श्री पण्डित रामचन्द्र जी झा का नाम लेकर मैं उनके कृत्यों का महत्त्व कम नहीं करना चाहता, जिनकी छत्रच्छाया में 'भीत भीत पदे' होकर धीरे-धीरे क्रमशः बढ़ रहा हूँ। अन्त में चौखम्बा संस्थान के बन्धुद्वय श्री मोहनदास जी गुप्त एवं श्री विट्ठलदासजी गुप्त के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनकी कृपा से यह ग्रन्थ इस रूप में पाठको के सम्मुख प्रस्तुत हो सका है। सबसे अन्त में मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र चि० अवधेशकुमार को इस सन्दर्भ में शुभाशीर्वाद दूँगा, जिसने अपने शी० एस सी० की तैयारी की व्यस्तता में भी इच्छा अनिच्छा पूर्वक हाथ बँटाता रहा है।

अनन्तचतुर्दशी }
वि० सं० २०२९ }

बिनयावनत
जगदीशचन्द्र मिश्र



भूमिका

संस्कृत नाटक का उद्गम और विकास

काव्य या कला का मूल कारण अनुकरण है। प्राचीन दार्शनिक Aristotle के विचार से 'Art is imitation.' यहाँ उक्त काव्य ने नाटक का प्रत्यक्ष रूप है, उसने जो अनुकरण रसवत् दिखाई देता है। धनञ्जय का नाटक तथा कुरुक का परिभाषार्थ इस बात का अच्छा दृष्ट स्पष्ट कर देता है —

अवस्थानुवृत्तिनाम्न कुरुक उत्तमनाम्नाम् ॥ दस० ११३ ॥

मार्तण्ड काव्य शास्त्र के वेत्ताओं के लिए भरतृ का 'अनुकरा' शब्द नया नहीं है। आचार्य भरतृ ने भा नाटक को 'लोक स्वभाव का अनुकरा' या 'लोकवृत्त का अनुकरण माना है। लोकस्वभावानुकराणाम् नाट्यम् उत्तमनाम्निताम्'—ना० शा० काव्य० ना० पृ० १३० और लोकवृत्तानुकरा शास्त्रनेतृनाम्नाम् ॥' इन दोनों परिभाषाओं में उल्लिखित स्वभाव तथा वृत्त शब्दों का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है। इसके अन्तर्गत लोकस्वभाव के समस्त अन्वयाद्य रूपों का समन्वय है। इनमें मानव के वाच्य प्रकृति के साथ उनके अन्तःप्रकृति को, उनके मानसिक भावों को भा अनुकृत करत है। नाटक का एकमात्र उद्देश्य पात्रों का अन्तःप्रकृति को सुन्दर तथा नान्विक रूप में अभिव्यक्त करत हुए मानव तथा मानवतर प्रकृति का चित्रण कर उसके द्वारा आनन्द का उत्पत्ति या रसोद्घोष करना है।

नाटक में नायकों का भौतिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक इन चार प्रकार के व्यक्तियों द्वारा 'अवस्था' का अनुकरण का जाता है। दशरूपककार धनञ्जय की 'अवस्थानुवृत्ति' का भा रहा तात्पर्य है। इनमें काल-दात वेग भूषा, आकार प्रमाण आदि के द्वारा पात्रों को प्रत्येक अवस्था का अनुकरण इस प्रकार किया जाता है कि नयों में पात्रों का वास्तव्यारोप हो जाता है।

नाट्यशास्त्र के सम्बन्ध में रसवि पूर्वार्थ और पश्चिमा आचार्यों का मूलमन्त्र उक्त एक ही है, फिर भी दोनों के मन्त्रार्थ भिन्न हैं। दोनों ही नाटक में अनुवृत्ति को प्रधानता स्वीकार करत हैं। फिर भी दोनों के विचारों का आरम्भ भिन्न प्रमाण विन्दुओं से है। भरतृ का शब्दे पद्यों द्वारा विरचित अनुकरण है और नारदों आचार्यों का शब्दे वेदवन्दित 'अविर्भावनाशा परिभूषणम्' है। दोनों ही आचार्य वस्तु स्तर में अधिक दूर हैं। जहाँ पर प्राचीन आचार्य भरतृ शब्दे के विरक्तार का परिचय करने के लिए प्रयत्नशाली हैं और नारदों आचार्य उनके शब्दे रचित स्वयं का न्याय पर विवेक सम्पन्न रूप देने के लिए। एक ने अनुकरा को हानता का व्यवहार किया है और दूसरे ने स्वयं को अवैरवना का समुच्चय। पर दोनों का मूल उद्देश्य आनन्द का उत्पत्तिनाम्ना है। प्राक्किम भिन्न होत हुए भी प्राप्त उद्देश्य दोनों का एक ही है। क्योंकि नाटक भा आनन्द का साध्य न होकर उसका साधन मात्र ही तो है। नाटक अगर

अनुकूलित है तो इसे देखकर मनुष्य को आछादित होने का कारण यह है कि उसकी भावना करने में ही वह आनन्द प्राप्त करता है ।

संस्कृत साहित्य में इस नाटक के लिए रूपक शब्द प्रयुक्त हुआ है। अंग्रेजी में जिस अर्थ में (Drama) शब्द का प्रयोग होता है—उसी अर्थ में संस्कृतसाहित्य में रूपक' शब्द प्रयुक्त है। अधिकतर लोग अंग्रेजी ड्रामा (Drama) का अर्थ नाटक शब्द के द्वारा ही करते हैं, किन्तु नाटक रूपक का एक भेद मात्र है। वह रूपकों के १० भेदों में से एक प्रमुख भेद मात्र है। धनञ्जय ने लिखा है —

नाटकमथ प्रकरण भाणव्यायोगसमवकारडिमा ।

इहाष्टगाङ्गवीथ्य ग्रहसनमिति रूपवाणि दश ॥ दश० ५० १।८

भारत तथा विद्वानाय ने रूपकों से हा सम्बद्ध १८ उपरूपकों का उल्लेख किया है। किन्तु दशरूपक में इसकी चर्चा नहीं है। केवल तृतीय प्रकाश में प्रसंगवत्त उपरूपक के एक प्रमुख भेद नाटिका—का वर्णन मिलता है।

अस्तु, हम कह सकते हैं कि भारत में नाटकों का उद्भव अतिप्राचीन काल से है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार आरम्भ से ही अभिनय कला का बढी महत्ता रही है और प्रायः सभी आचार्यों ने उसका विवेचन किया है। पछत भारतीय आचार्यों के मत से नाटक रसावेश से प्रेरित रूपक का एक प्रमुख भेद है, अवस्थानुकूलित उसका प्रमुख धर्म है। आनन्दोपलब्धि उसका लक्ष्य है।

संस्कृत नाटक के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में स्वदेश विदेश के आलोचकों ने पर्याप्त छान-बीन की है। गभार गवेषणाओं के पश्चात् इन समीक्षकों ने अपने-अपने मतानुसार इस पर कतिपयवादों की स्थापना की है। इस विषयपर मुख्यतः तीनवाद प्रचलित हैं —

(क) परम्परागत वाद ।

(ख) धार्मिक भावनावाद ।

(ग) लौकिक लोलावाद ।

प्रचलित इन तीनों मतों के आधार पर यह कहा जाता है कि नाटककार अपनी अपूर्व निर्माणक्षमता के बलपर नानाभावों की संवेदन क्षमता को एकत्र कर जीवनानुभूतियों की अभिव्यक्ति अभिनय में करता है। वह कहीं परम्परानुमोदित है, कहीं धर्म से अनुप्राणित और कहीं लौकिक लोलाओं से आकलित ।

(क) परम्परागत वाद

(१) पृष्ठोक्तवाद—भारतीय परम्परा के अनुसार जैसा कि नाट्यशास्त्र में बतलाया गया है, नाटक की उत्पत्ति त्रतायुग में ब्रह्मा के द्वारा की गयी थी। सतयुग के सुखी और सम्पन्न लोगों को किन्हीं मनोरञ्जन के साधनों की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु, त्रतायुग के आत ही समस्त सृष्टि में सासारिक कष्टों का आविर्भाव हुआ। अतः देव दानव दोनों मिल कर ब्रह्मा के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि वे ऐसे वेद की रचना करें, जो सर्वा के द्वारा समान रूप से अनुशासित हो सके। इस पर ब्रह्मा जी ने ध्यानावस्थित होकर इन दुःखी प्राणियों के लिए नाट्यवेद की प्रवृत्त किया। इसके लिए उन्होंने ऋग्वेद से मृत्यु, सामवेद से संगीत,

गुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रत्न लेकर नाटककला का सृष्टि का और इसे पक्क बर
कहकर प्रसिद्ध किया —

आह पाख्य ऋग्वेदाद् मानस्यो मातनेव च ।

गुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वानपि ॥ (भरत ना० डा० १)

इतना हा नहा हमने भगवान् शंकर ने काम्बवृत्त्य, पारंगत ने व्यस्यवृत्त्य तथा विष्णु ने
चार श्रुतियों का मनावर करके पूर्णकालकला उत्पन्न कर दा । निनाकार्य वृद्ध स्वशला
विवचना ने एक सुन्दर रत्नच निना किया । उत्तर सर्वप्रथम विपुर दाह नाक रत्न गरा ।
इन्के बाद मनुप्रमथन इन्द्रध्वज एवं नै नठ ग्ये थ विनमे पुत्रों का अभिनय पुत्रों ने और
छियों का अभिनय विनों ने किया था । इन कला को नरर्पणोक्त एक लने का प्रेर भरत
हने को है । इस विवचन ने हम यह निष्कर्ष निकल सकन है —

(१) चरों वरों के मरूप में हा नाटककला का निना हुआ है ।

(२) वैदिक काल में कला ना नाक नहा बना था ।

(३) पहल नर-नारा दोनों निककर अभिनय करन थ ।

(४) सना नाक धार्मिक थ तथा पर्वों पर रत्न बरन थ ।

(२) धार्मिक भावनायाद

(२) मृतक-पूजावाद—डॉ० रिजवे के कथनानुसार नाचों का उत्पन्न मृदात्माओं के
नति प्रक का हुआ थका से है । थका प्रक करन का यह प्रथा प्राय विष के समान गति
मात दशों में भारत में हा प्रचलित है । समस्त धार्मिक वस्तुओं के मूल में ना दहा थका कान
करदा है । इसा थका का भगवान् वस्तुओं में म बावधित के सिद्धान्त का एक पुनरुत्थन
सना ना है । फल मृदात्माओं के प्रति प्रक का गरा प्राति के निनिच अभिनय है । रानडाडा
और ह्मलाडा—इन्के प्रना है । अपने पूर्वजों का प्राति थका प्रदर्शित करने के लिए हा ये
धार्मिक लाडायें होता है । इसा मृतक पूजा का विद्युत्त रूप 'नाच' है । विद्वान्मन में हा
नृत्य, गान और सवायों का इसमें समन्वय हो गया किन्तु, डॉ० रिजवे के इस मत को त्वरित
विद्वान् कहों ना समर्पण प्राप्त नहीं हुआ ।

(३) मे-पोलवाद—शास्त्र विद्वानों न डॉ० रिजवे के इस मत का खंडन करत हुए
कहा है कि नाच के छिद्र—वस्तुवचना के प्रात सना जा—आदि, नथ और मनन
ने कुछ पूर्वांग, एकान्विति, पूजावरकन, मन्त्राव्यंज, कुतूहल जाद—मूलाधिक नात्रा में आवश्यक
है । आवश्यक इन्केर है कि इनके बिना नाच का कला रूप हा नभव नहीं हो सकता,
और मूलाधिक नात्रा में इन्केर कि इनका अत्याधिक अभाव और उन्मे वरतन वस्तु-संगठन
का निरति—मृतक पूजा को आधार मान लने पर नाच के गम्भार प्रभाव के छिद्र पातक मर
हो सकता है । इन आलोचकों का दृष्टि में नाच का उत्पत्त 'मे-पोल' (May pole)
नृत्य से हुआ है । पश्चिमी प्रदेशों में नर का नहाना अत्यन्त आनन्दप्रद हाता
है । इस अवसर पर नृत्य गानादि के साथ छो नृत्य उत्सव मनाव है । इस उत्सव का
निरुपजा यह होता है कि उत्सव स्थान पर सर्वप्रथम एक लम्बा वस्तु गाड दत है और फिर उनके
नाचे नर नारा सना ना भाव ने नृत्य गानादि में भाग लने है । आरम्भ में ना 'इन्द्रध्वज' का
उत्सव प्रात इसा प्रकर हाता ह । सनाव शास्त्रा प्रवृत्ति ने नाच के इस उत्सव पर अधिक

बल दिया है। इस उत्सव की प्रक्रिया में नृत्य, गीत तथा उत्सव की कर्मकाण्डीय पद्धति-नाटक की उत्पत्ति का मूलाधार है। दूसरी बात इस उत्सव का समय करीब करीब वसन्तागम के अवसर पर ही होता है। अतः उस समय प्रायः विश्व की सभी जातियाँ उत्सव मनाती हैं। किन्तु इस वाद में केवल यही दोष दिखलाई देता है कि 'मे पोल' नृत्य की उच्चिन्त सगति 'इन्द्रध्वज पर्व' के साथ ही नहीं बैठती है। मे पोल का समय तो वसन्त में पड़ता है, किन्तु 'इन्द्रध्वज पर्व' भारत में वर्षा ऋतु के अन्त (भाद्र शु० १२) में मनाया जाता है।

(४) कृष्णोपासनावाद—कई भारतीय आचार्यों ने संस्कृत नाटक के उद्भव के विषय में कृष्णोपासना को प्रमुख स्थान दिया है। उनका कहना है कि कृष्णोपासना के कई अङ्ग जैसे रथयात्राएँ, नृत्य, वाद्य, संगीत एवं लीलाएँ ऐसे उपकरण हैं जो संस्कृत नाटक की उत्पत्ति में सहायक सिद्ध हुए हैं। इस मत के पोषक विद्वानों का कहना है कि सर्वप्रथम नाटक दूरमेन प्रदेश में खला गया है। इसमें दो मत नहीं कि कृष्णोपासना के कई अङ्ग इस प्रसंग में बड़ा महत्त्वशाली हैं। संस्कृत नाट्यों में शौरसेनी प्राकृत की प्रबलता भी इसका प्रबल प्रमाण हो सकता है फिर भी इस मत में सर्वाधिक दोष यह है कि कृष्ण से सम्बन्धित नाटक ही सर्वाधिक प्राचीन है, न तो इसका कोई पुष्ट प्रमाण मिलता है और न कोई सबल तर्क ही। दूसरे कृष्ण के आतिथिक राम, शिव और विष्णु की लीलाएँ—जो कृष्ण की लीलाओं से थोड़ा भी कम महत्त्व पूर्ण नहीं हैं उसकी अवहेलना कर दी गयी है।

(५) लौकिक लीलावाद

प्रो० हिल मैट स्टन कोनों का मत है कि भारत में पहले लोकप्रिय स्वर्ग अधिक प्रचलित थे और उन स्वर्गों से ही नाटकों का प्रादुर्भाव हुआ है। इन स्वर्गों में रामायण तथा महाभारत के आन्त्यान मिखावर ही नाटकों की कथावस्तु तैयार की गयी होगी। परन्तु इस मत का खण्डन डा० कोप ने किया है। उनके मतानुसार महाभारत तथा रामायण के 'नट' शब्दों के आधार पर उस काल में नाटकों का अस्तित्व नहीं माना जा सकता। किन्तु, रामायण का महाभारत में केवल नट शब्द का प्रयोग ही नहीं है, प्रत्युत उनमें 'नाटक' का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। रामायण के प्रारम्भ में ही अवधवावर्णन के प्रसङ्ग में महर्षि वाल्मीकि ने बताया है कि वहाँ नाटक की मण्डलियाँ तथा कथाएँ थी (वधुनाटकसर्वैश्च सनुक्ताम्) राम के अभिषेक के समय भी लिखा है —

नरानर्तकसंगाना गायनाना च गायताम् ।

यतः कर्णसुता वाच शुश्राव जनता ततः ॥

महाभारत में नट, शैत्रूप आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है और उसके हरिवंश पर्व के ९१ में १७ अध्याय तक तो नाटक रखे जाने का भी संकेत मिलता है। हरिवंश में नाटक का सर्वाङ्गाण विवर्तित रूप हमें उपलब्ध होता है। किन्तु डा० बी० हरिवंश तथा महाभारत के रचनाकाल में पर्याप्त अन्तर मानन है। डॉ० वाच 'संस्कृतद्वामा' (परिच्छद २ पृष्ठ २८) में हरिवंश को इमा की दूसरी या तिसरी शती से पूर्व रखने का राय नही है।

इस सम्बन्ध में वीथ का कहना है कि नाटक के प्रचार से पूर्व स्वर्गों के भारत में प्रचलित होने का कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता, साथ ही मि० कोनों ने जिन प्रमाणों का उल्लेख किया है वे सभी महाभाष्य के समकालीन तथा उनके उपरान्त के हैं। अतः उनसे स्वर्गों की प्राचीनता

सिद्ध नही होती। लेकिन ईसा का दूसरा उठा के बहुत पहले भारत में नाटकों का अस्तित्व न माननेवाले साक्षात् प्राणियों के आगे साम्बादन का वह नूतन प्रमाण स्वरूप उद्घोषित किया जा सकता है :—‘बुद्धोत्था-साम्बादन’ प्रेक्षककेन्द्र द्रष्टुः। दिव्यनेशन केन्द्र पूरा निरुद्ध उभरेत्। उद्योग-प्रधानेन दार्शनिक-उद्योग वा। व्यंग्योत्पत्तिषु वैद्य-प्रत्यक्षरत्नैक कारण। (छा० मू० १, ४, २८—३१)

इतना ही नहीं, इससे ना पूर्व सम्मिलित के बाध्यता नूतनों में हा सिद्धांतों तथा कलाओं के न-नूतनों का उत्पन्न निरुद्ध है। ‘नरानन्द-सिद्धांतिका’ नियुक्त न-नूतनों : (४११११०)। ‘कर्मन्द् बुद्धात्मिका’ : (४१३१११)। छा० काय जो० निरुद्धों लेखों को माध्या पर इन दार्शनिक उद्योगों ने व्यक्त मानकर इन्हें किन्हीं साक्षात्कारों का मान मानने से नहीन नहीं है। इस मन्दन में जो० सिद्धांत न जो नही करके दिया है—जन्म अधिक वक्त प्रतीत होता है। उन्होंने मन्मथ नाटकों में मन्मथ के मन्थ ज्ञान का प्रयोग, यह वक्त का सम्मिलन, सम्मिलनों का आन्तरिक मन्मथ विद्वत् के आन्तरिक वक्त का मन्मथ के आधार पर वह निरुद्ध करना कहा है। कि नाटकों की उत्पत्ति लोकोत्तरे नूतनों में है। उद्योगिक चारों उद्योगों में नै नूतन वक्त का मन्मथ नै लोकोत्तरे से वक्त जाता है और नाटकों का उत्पत्ति का उत्पन्न धार्मिक मन्मथों से बुद्ध जाता है। किन्तु नाटकों में विद्वत् के वक्त का उद्योग का साधुता नहीन मन्मथ में बुद्ध वक्त की आन्तरिकता से मन्मथ प्रदान होता है और नहीन मन्मथ एक धार्मिक मन्मथ है। दूसरे पक्ष में वक्त को उत्पन्न उद्योग निरुद्ध सिद्ध वह निरुद्ध सिद्ध विद्वत् की मन्मथ किन्ता प्रचार लोकोत्तरे लोकोत्तरे से वक्त जाता।

(१) पुष्पलिकावृत्तवाद—जन्मों निरुद्ध छा० निरुद्ध ने नाटकों की उत्पत्ति लोकोत्तरे माना है। उन्होंने यह सिद्धांत का उद्योग यह बताया है कि भारत में पुष्पलिका का प्रचार बहुत पुराना रहा है। महाभारत में पुष्पलिकों का वर्णन निरुद्ध है। कथानिर्माण में भी इन पुष्पलिकों का वर्णन है। नाटकों में प्रयुक्त होने वाले सूत्रकार तथा मन्मथ आदि उद्योग इस वक्त के उत्पन्न है। निरुद्ध ने लिखा है कि पुष्पलिकों को नचाव समान नचावेवाला वक्त वक्तों को—मन्मथ का—गले से पकड़ रहा है। इसलिये वह ‘मन्मथ’ है पाठे चटकर नही मान नाटकों मन्मथ को ना दे दिया गया है। निरुद्ध के इस वक्त का प्रत्यास्थान यह कहते हुए छा० रिखे ने यह दिया है कि नाटकों का कथानु, वक्त, रत्न आदि का मन्मथ में वर्णन काय है इन्हीं सूत्रकार कहलाता है कि कि ‘शोरे’ पकड़ने के कारण। नहीन महाभारतदि ग्रन्थ में पुष्पलिक, पुनिका, दानवरा आदि उद्योगों के बहुत प्रमाण का प्रदान है, इन्हें उद्योग नहीं प्रदान होता है। छा० रिखे के अनुसार निरुद्ध का इन नाटकों की उत्पत्ति उन मन्मथ निरुद्ध वक्त से मानना अनपेक्षित है। दूसरा वक्त लोकोत्तरे के नाच के उद्योग पर विचार करने में ना यह स्पष्ट निरुद्ध हा जाता है कि इनमें बहुत हा वक्त नाटकों की उत्पत्ति का विकास हो चुका था।

(२) व्यापानाट्यवाद—छा० निरुद्ध इन मन्मथ में एक दूसरा वक्त ना रखते हैं। इस वक्त के अनुसार वे नाटकों का विकास लोकोत्तरे से मानते हैं। छा० कोनो ना इस वक्त के उत्पन्न है। जो वक्त के अनुसार लोकोत्तरे नाटकों का उत्पत्ति में छाया नाटकों का बहुत वक्त हाता है। प्राचीन भारत में जन्म द्वारा बहुत से दिखाने की प्रथा प्रचलित थी। इन दिखाने

के अनुसार 'रूपक' शब्द की अनर्थकता भी सिद्ध होगी है। किन्तु, डा० कीथ का कहना है कि यह वाद महाभारत के एक स्थल के अर्थार्थ अर्थवधारण पर अवलम्बित है। संस्कृत में कुछ छाया नाटक भी पाये जाते हैं, जिनमें 'दूताङ्गद' विशेष प्रसिद्ध है। छाया नाटक में महीन पर्दे के पीछे अभिनेताओं के प्रतिविम्बों के द्वारा अभिनय दिखाया जाता है। अतः परवर्ती छाया नाटकों के आधार पर भारतीय नाट्यकला का उदय मानना सर्वथा अशुभ है।

(३) सवादसूक्तवाद—नाटकों के कर तत्त्वों में से दो तत्त्व विशेष प्रमुख हैं, सवाद तथा अभिनय। सवादवाले तत्त्व को हम भारत के प्राचीनतम साहित्य—ऋग्वेद में ढूँढ सकते हैं। ऋग्वेद में लगभग १५ सूक्त ऐसे हैं, जिनमें सवाद का तत्त्व पाया जाता है। इन्द्र मन्त्र सवाद (१।१६५, १।१७०), विद्वामित्र नदा सवाद (१।३३) पुरुराज-उपसा सवाद (१।१५५) तथा वन यमी सवाद (१।११०) इनमें प्रमुख हैं। इन सवादों पर सर्वप्रथम १८६९ ई० में प्रो० जैक्सन का ध्यान गया। उन्होंने हा इन सूक्तों को नाटकों का उत्पत्ति का मूल बताया। कुछ कालोपरान्त प्रो० लेवी ने भी इस बात का समर्थन किया तथा वान कोटर ने इस प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और यह प्रमाणित करने का भी प्रयत्न किया कि सूक्तों से रहस्यपूर्ण नाटकों का सूचना मिलती है। डा० हरटल ने एक पत्र और आगे बढ़कर यहाँ तक घोषणा की कि वैदिक नाटक के विकास का मूलरूप हम सुपर्णाध्याय में देखने को मिल सकता है। स्वदेश एवं विदेश के कतिपय अन्य विद्वानों का समर्थन भी इन मतों को प्राप्त है। किसी भी नाटक के ये तीन मूलतत्त्व हैं। नृत्य, गान तथा सवाद। पहले इन सवादों के साथ नृत्य और गीत भा रहे होंगे किन्तु अब उनका स्वरूप हमें उपलब्ध नहीं है। ऋग्वेद में विवाह सूक्त के अन्तर्गत नवदम्पति के सम्मुख पुरोहितों के नृत्य करने का उल्लेख मिलता है। जहाँ तक गीतों का प्रश्न है—सारा ऋग्वेद ही भरा पत्र है। इन सवादों के सुन्दर वाद्यलाप की दृष्टि दृष्ट हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि इन सूक्तों से संस्कृत नाटकों का उत्पत्ति की समाप्ति का ना सवाती है।

(४) वैदिकानुष्ठानवाद—उप्युक्त सवादसूक्तों के अतिरिक्त कुछ विद्वान् वैदिकानुष्ठानों में नाटकों की उत्पत्ति के राज देखते हैं। वैदिक अनुष्ठानों में नाटक के सभी उपादान तत्त्व मिल जाते हैं। वैदिक काल में महाव्रत अनुष्ठान अधिक प्रचलित था। यह अनुष्ठान एक प्रकार का नाटक सा ही था। क्योंकि इस अनुष्ठान में कुम्हारियों अग्नि के चारों ओर नाचती थी। शूद्र और वैश्य के प्रकाश के लिए कलह भी अभिनय का घटक होता था। इसके साथ ही यज्ञमण्डप में बैठे हुए यजमानों तथा याजकों के मनोविनोदार्थ वाद्यलापन मूल ही नाटक के कथोप कथनों की ओर संकेत करते हैं। यह विद्वानों का तो यहाँ तक कहना है कि नाटकों में यज्ञमण्डप सवाद महाव्रत में प्रयुक्त भवादों की देख कर ही विकास किया गया है। यदि इस विचार को ठीक मान लें तो नाटक के सभी उपादान तत्त्व हम वैदिक अनुष्ठानों में मिल जाते हैं। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी जी ने अपने 'अभिनव नाट्यशास्त्र' में बताया है, कि नाटक स्वतः एक यज्ञ है, अतः इसे ऋग्वेद के उन सूक्तों का आधार मानकर किसी दूसरे यज्ञ का अङ्ग जैसे माना जा सकता है। कुछ भी हो, ऋग्वेद के सवादों में नाटक के राज मानने में कोई अनुचित नहीं है।

निष्कर्षस्वरूप हम कह सकते हैं कि नाटकों की उत्पत्ति में प्राचीन नृत्य, गीत एवं सवादों का अधिक हाथ रहा है। सभी जातियों में ये नृत्य, गीत आदि अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित थे। भारत में सम्प्रदाय के विकास के साथ ही इन तत्त्वों का भी द्रुत विकास प्रारम्भ हो गया

अँर इन्हा मूल्य मातों का विकसित रूप आज चउकर नाक कहलाया, जिसमें अनिनय न जानन टाउ दिना । इस प्रकार निमकोधभाव से हम कह सकत है कि नाक का सर्वप्रथम विकास भारत में ही हुआ ।

सत्य साहित्य में नम, काव्यशाय, शूद्रक, विशाखदत्त, भवभूत, नारायण एव धार्म्य प्रकृति उचकोटि के नाककार माने जात है । इनके नाटक अपने कठिन नाकाय विद्यमानों के कारण विद्वत्साहित्य में अपना स्वतंत्र स्थान रखत है । अकेल 'अभिज्ञानशाकुन्तल' ने हा विद्वत् में हलचल उत्पन्न कर दी है । मुद्राराक्षस का नाकाय विद्यमानोंका त्वरणा विद्वत् प्रशंसा करने मूल नहा हान ।

मुद्राराक्षस . एक आधुनिक दृष्टिकोण

'मुद्राराक्षस' को मनसने की अवक का पद्यियाँ रहा है—दृश्य काव्य के रूप में रूपक के रूप में, ऐतिहासिक इतिवृत्त के रूप में, राजनीतिक रचना के रूप में, या देने हा कुछ अन्य पक्षों का आधार बनाकर । पर मुद्राराक्षस को मात्र दृश्य काव्य का दृष्टि से देखना या उनके चरित्राङ्कन का व्याख्या करना, उनमें रस का स्थापना करना या उनके रूपकत्व पर बल देना या उनका राजनीति को नइत इन लगना सत्य साहित्य का एक नहत्वाङ्कना रचना अनइता करने का मकल प्रदान है ।

'मुद्राराक्षस' को केवल दृश्य काव्य कहकर हम उस कृति के विशिष्ट अँर मनन विधान का प्रान सबसे अधिक उच्छा करने है । उक्त साहित्य की मनाया में यह प्रचउन है, लगना अन्य विधान के त्तरतर किना रचना का अन्य काव्य या दृश्य काव्य कह बिना हम उसे थैठ अँर नहत्वाङ्कना पश्यन नहीं कर सकत । दृश्य या अन्य काव्य होने के लिए कुछ नियम है, कुछ दाय है । मनाया को प्रचल्य पद्यि यह है कि किना नहत्वाङ्कना रचना को काव्य का कर्मज पर कना जान, फिर कहा जान कि काव्यत्व की दृष्टि से इसमें अनुक अनुक गुणों है । यहाँ यह कहा छविता से मुला दिन जाता है कि दृश्य काव्य के सन्दर्भ में लखक का जो गुणों जका गना है—ब हा तो इस रचना का विशिष्ट विधान है, जिसे रचनाकार ने बनी नेहनत अँर अन्तदृष्टि के साथ विकसित किया है । अब तक दृश्य काव्य के रूप में ही इस नाक का उचने का प्रयास किना गया है । उक्त नाकों की जिन रुचियों को विशाखदत्त ने छोण है, उसे बढाव देने का कोशिश की जाता रही है । विस विशिष्ट विधान को मुद्राराक्षस ने विशाखदत्त ने विकसित किया है, उसे छोण जानकर नजर अन्धाव कर दत है । विशाखदत्त के नाक के इन अनिकन में नायक, नायिका अँर विदूषक की खोज दया कहास्तु के अँदात्य का विशिष्टता देना ही थैठ है ।

दृश्य काव्य के रूप में 'मुद्राराक्षस' को देखकर उनमें राजनीतिक एव कृतात्रिक कथानों की जाच होतो है और एक के तथ्य को दूसरे में सहा नहीं बैठाने का थैठ की जाती है । यहाँ भी मुद्राराक्षस के नूहन विधान की यह विद्यता नहीं सनखी जाती कि इस नाक की रचना इन दोनों तरों पर अवश्य चढता है । पर ये दो स्तर परस्पर एक दूसरे से सश्रित हैं, इसलिय एक विराजता कृतात्रिक अर्थ की छवि करती है । इस दृष्टि से किता भी चरित्र में दोनों स्तर

की संगति बैठाने का आवश्यकता हा नहीं है। ऐसा तो तब अपक्षित था, जब दोनों स्तर दा अलग अलग प्रकृति के जावनशुत्रों से लिये गये होते।

ऐतिहासिक इतिवृत्त या स्थूल ध्वनाक्रम की आलोचना का आधार मानलने पर कुछ दूसरे प्रकार का आन्तरिक उत्पन्न होता है। इसका परिणाम यह बनकरता है कि मुद्राराक्षस के चरित्रों की रानायण के चरित्रों की तरह जाका जाना है और फिर राक्षस या मलयवेतु की सल नायक की सहा दा जाती है, तथा चन्द्रगुप्त, मलयवेतु और राक्षस के परम्परित विवोध में चाणक्य की दृष्टी-चालक नाटक का बणधार कहा जाता है।

मुद्राराक्षस की चाणक्य नाटि परक रचना मान कर इनका व्याख्या भी पण्डितों में पयाप्त प्रचलित है। चाणक्य के अर्थशास्त्र का पारिभाषिक शब्दवाचियों की चुनकर—इन्हीं व्याख्या की जाता है। इसकी अतिवादा स्थिति वहाँ पहुँचता है जहाँ इस नाटक को पद्यत्रों का एक जाल मान लिया जाता है। इन समाशकों की यह अन्दाज नहीं कि मुद्राराक्षस में जहाँ अर्थशास्त्र ने रचना को प्रभावित किया है वहाँ नाटक की प्रक्रिया अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन शाल बन गयी है। इस नाटक में अर्थशास्त्र का कोई महत्त्व तभी है जब कि पात्रों के अनुभवाय स्तर पर वह उनसे, न कि विवेचन के रूप में।

प्राय इन्हीं एकदरी दृष्टियों से संस्कृतसाहित्य के इतिहासकारों ने पिछली कर सदियों से इस अनुभवसकुल और सहिष्णु रचना की समीक्षा की है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि 'मुद्राराक्षस' को लेकर मुद्राराक्षस के समीक्षक, पाठक और सामान्य जन में कई प्रकार के विभ्रम फैले हैं। यह एक प्रबल तथ्य है कि प्रारम्भ में संस्कृत पण्डितों का सहानुभूति मुद्राराक्षस के साथ कम रही है। इसलिए आश्चर्य इस बात पर नहीं होता कि आलोचकों ने विशाखदत्त और उसका श्रष्ट कृति 'मुद्राराक्षस' के साथ न्याय नहीं किया है, बरन् इस बात पर होता है कि अपने पूर्वजों के बाबजूद वे विशाखदत्त के कृतित्व का इतनी दूरतक विह्वलपण कर सके हैं। 'संस्कृतकविद्वान' में डॉ० भोलाशंकर व्यासने इसके महत्त्व की इस प्रकार व्यक्त किया है—'विशाखदत्त की कृति का सबसे बड़ा महत्त्व तो इसमें है कि उनने हर बदन पर इस बात की ध्यान में रखा है कि वह दृश्य काव्य की रचना कर रहा है, श्रव्य काव्य की नहीं, और अपनी गम्भीर प्रभावशालकता की नाटकीय योजना द्वारा उत्पन्न करना चाहता है।' (पृ० ३५४) पर इसकी प्रभावशालकता का अनुभव करते हुए भी 'व्यास' जो इसके आस्वादन प्रक्रिया की स्पष्ट और प्रशस्त नहीं कर सके हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि दृश्य काव्य के सम्बन्ध में व्यासजी की अपनी एक दृढ़ आस्था है, जिससे मुद्राराक्षस का मेल नहीं खाता।

इस विशेष समस्या की लेकर टी० सत्यजन सिंह ने अपना 'मुद्राराक्षस' की भूमिका में व्यास जी के इस मत का अच्छा स्पष्टीकरण किया है। व्यासजी की दृष्टि में मुद्राराक्षस की नाटकीय घटनाओं की विशेषता बिना इसके दृश्य काव्यत्व को केन्द्र में रखे, संभव नहीं हो सकता। पर सिंहजी ने दिखाया है कि मुद्राराक्षस की यह विशेषता है कि यह यथार्थानुसृत आदर्श की केन्द्र में रखकर चलता है। विवेचन के इस बिन्दु पर हमें कहना होगा कि मुद्राराक्षस की शक्ति और सम्भावना का धर्मतापूर्ण आख्यान डॉ० सिंह जी ने किया है। मुद्राराक्षस के काव्य

का नावना को उल्टे नायनरक माधना से अन्ध-करके दिखा नकना सिंह वी का मूम सगैरिषक नख का एक बड़ा प्रना है। इस प्रकार डॉ० रमाशंकर तथा निम्ना विद्यालङ्कार ने अपने अपने ढंगों में मुद्राराक्षस को अच्छा मनाया जलितर को है।

पर, इन रचना को समग्र रूप में अनुभावित करने का ध्येय इन समालोचकों में विद्यमान न हो सक्त। इसीलिए मुद्राराक्षस का रचनात्मक दृष्टि को एक नानादृष्टि एकाने के बगैर दृष्टि के समग्र विधान का विजयन डॉ० मोरारकर व्यास ने भी निहानत काव्यशास्त्र और कव्य शास्त्र में किया है। उनके विवेचन में मुद्राराक्षस का विद्वान का दमार्थिक के अन्वयन को बर्षा है वह एकदम और प्रगत है। मुद्राराक्षस को अभिनेत प्रज्ञा का मैदानिक बर्षा तो है, पर विद्वाना नहीं है। अपने आशय का बाध या वह है कि विद्यालङ्कार को एक अनुभूत नाटक की मानत तुर तो, उनकी दृष्टि का विवेचन स्वतन्त्र बर्षा के नायन से हा किया गया है। इन तरह मुद्राराक्षस को रचनादृष्टि का महा शा से अभ्यास करन तुर ना वे उल्लेख काव्य प्रना का—को मनाप्रक के लिए नूत विचारान विषय है—विजयन करने में गति शान न हो सके।

विद्यालङ्कार के द्वारा प्राचान कथावस्तुओं में नायकता का दृष्टि से उन्नत के सुन्दर में आ बगैरकर पाण्डव और आ मानुरान व्यास ने अपना 'सम्पन्न सगैरिष का कुरखा' में किया है—'सम्पन्न नायकता का दृष्टि से मुद्राराक्षस में का नैतिक नवानादौ ना दन पड़ती है। चिन्तु यह मुद्राराक्षस पर नायकता के विषयों का बर्षा का अनन्त प्रमान नाव नाव पड़ता है। (१०-११-१२)। पर वह दृष्टि या बन्तु विद्यालङ्कार के पूर्व का सुविधानक तीरी का है। विद्यालङ्कार प्राचान कथावस्तुओं को सुविधान से उकर—जो नायक का रूप उकर—अने अनुभव का अनन्त अप रवाना है। इस रूप में जगत के सुविधान का ना-पदनाम उन्नत उकर विद्यालङ्कार को दृष्टि उन्नत और अनन्त कार्यक है—उत्ते रान्न वा सुत नहीं कर सके।

वह सब है कि डॉ० बा० कौष और नैतानक ने भी 'मुद्राराक्षस' का ऐसा चिन्ता का जाना चाहिये, वी नहीं को। जो दृष्टि-दृष्टि के साथ आचार्य बलदेव जाम्भान का नाव सम्पन्न सगैरिष के प्रमुत समालोचकों में किया गया है। उन्व्याय वा ने अपने 'सम्पन्न सगैरिष का सुविधान' में बर ननोदोग के साथ मुद्राराक्षस का विवेचन किया है। पर उनकी द्वारा दृष्टि दाक्ष से दना वी है कि उनके आन वे रचना और उसके अनुभव को उठ ना नहै नहा दैव। मुद्राराक्षस के समग्र में छित इनके—विद्यालङ्कार, रचाना, रचनाकृत, विद्वाना, कथावस्तु, पात्र-परायण, कविता, जैसे—द्वार कार्यक दाक्षार प्रती को अन्ध अन्ध उकर कव्य है, रचना का समग्र विवेचन नहीं होता। नहा 'मुद्राराक्षस' के अध्ययन को उन्नत बर्षा समना है।

वह अपने में उन्नत बर्षा विद्वाना है कि सुनी नाव को एकदम में आवद करने बाव विद्वाना जगत दृष्टि का प्रतिपादन करने बाव दृष्टि का ऐसा खण्डित दृष्टि से अध्ययन किया बाव। काव्यिक समालोचकता में रचना के अर्थ तथा अनुभव को जगत और विद्वानाक बनाने रखने का वेद्य है। पर, उन्व्याय वी मुद्राराक्षस के अर्थ को पूराने काव्यदाक्ष के साथ नने विमान चिन्तों में बाध देना चाहते हैं इस अर्थ में इसका व्याख्या उन्व्यायक सुविधान है।

मुद्राराक्षस के अभित महत्त्व के कारण संस्कृत साहित्य के अनेक समाश्रकों ने इसे समझने की व्यत्नता प्रकट की है। पर, बहुतों ने इसका विधान समझने में चूक की है, जिसका मुख्य कारण इस नाटक की कूटनीति के धरातल पर समझने का आग्रह है। मुद्राराक्षस में स्थूल कूटनीतिक घटनाक्रम का महत्त्व है, पर उस स्थूल कूटनीतिक घटनाक्रम को सूक्ष्म-सशक्त प्रशान्तिक के सबल संरक्षण में भारत के राष्ट्रीय एकीकरण की घटना से मिलाकर ही रचना के साहित्यिक रूप को भारत की सांस्कृतिक चेतना में ही समझा जा सकता है।

इस महत्त्वपूर्ण दृश्य काव्य की तरह 'मुद्राराक्षस' का अपना विशिष्ट विधान है। शाकुन्तल का वैशिष्ट्य मूलतः उसके विधान का वैशिष्ट्य है, जिसमें रचना की पूरी परिकल्पना उमड़ती है। विधान की यह धारणा कुछ-कुछ वैसी ही है, जैसी मानव-व्यक्तित्व की, अर्थात् रचना का व्यक्तित्व ही उसका विधान है। यहाँ विधान के इस रूप में वस्तुपक्ष और कलापक्ष का सन हो विभाजन विलीन हो जाता है। मुद्राराक्षस के विधान में एक बड़ी ओर जटिल राजनीतिक परिकल्पना का रूप उमड़ता है। आचार्य विष्णुगुप्त का रूप एक ओर है तो मलयकेतु और राक्षस के संयोग वियोग की प्रमविष्णुना दूसरी ओर है। इन चरित्रों की परस्पर टक्काहट की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक चेतना के राजनीतिक संघर्ष का रूप है तथा कौटिल्य की कूटनीति विगत राजनीति से बड़े भिन्न और अधिक मार्भक रूप में विकसित होती है—इसका आरयान है। उपेक्षित चण्डाल की शक्ति से सम्मान्य नन्दों की शक्ति भिन्न है—इस अर्थ में कि वह तिरस्कृत है। चण्डाल का बहिष्कार चाणक्य का तिरस्कार उनको सर्वज्ञ शक्ति की चुनौती देकर विकसित करता है, और उसे सम्पूर्ण भारत को एकमूर्त में गूँथ देने की शक्ति प्रदान करता है, जो विलासी नन्दशक्ति में नहीं थी। ये सारी प्रक्रियाएँ ऐसीदा नाबधाराओं में और राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप उठी हुई जटिल समस्याओं का निरूपण करना व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन के दृढ़ छाया-आलोकों को उद्घाटित कर सचना, तात्पर्य यह कि जीवन के गहरे और बहुमुखी वात प्रतिवातों और विस्तृत जीवन दशाओं में पद पद पर आने वाले उद्घेदनों को चित्रित करना, उन्हें सभालना और अपनी कला में उन सबों को सजीव करना विशाखदत्त के उस साहित्यिक विधान का अंग बनती है, जो न दृश्य काव्य के निवृत्त है, न राजनीति के, और न जिससे कौटिल्य के अर्थशास्त्र का आग्रह है, न चाणक्य-नीति का, बरन जिसमें उा बोध के साथ अलङ्कार भारत के निर्माण के लिए भी—कूटनीति की ओर राजनीति की विकसित होने की पूरी स्वाधीनता और स्वायत्तता है। रचना में जीवन्त व्यक्ति जैसा यह स्वाधीनता और स्वायत्तता की स्थिति संभव हो जाना ही मुद्राराक्षस की सफलता और सार्थकता का चरम स्तर है।

'मुद्राराक्षस' की रचनाइष्टि, उसे व्यञ्जित करने वाला रीति नीति और उसका विधान एक सन्तुक्त रूप में विकसित हुए हैं। इसकी सही पहचान का उपक्रम ही इसके मूल्यांकन की प्रक्रिया की सार्थक बना सकता है। संस्कृत साहित्य का यह एक साहित्यिक दुर्भाग्य हो रहा जायगा कि मुद्राराक्षस की लेखर संस्कृत पण्डितों में प्रारम्भ से ही आत्यन्तिक धारणाएँ विकसित होती रही हैं। कुछ आलोचक इसे संस्कृत की श्रेष्ठ रचना घोषित करना चाहते हैं, और ऐसे भी लोग हैं जो मानते हैं कि इसका महत्त्व इसलिए है कि यह अनेक विश्व विद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इस विषय परक विवाद से ऊपर सच यह है कि इस रचना के वैशिष्ट्य को सम्यक्त एव खली दृष्टि से समझा जा सकता है, भूष-दोष की दृष्टि से, अवहेलनात्मक मुक्ति से नहीं।

मुद्राराक्षस का गठन

रत्न का मन्त्रज्ञ नृपि ने अशिराम बहना हुए मुद्राराक्षस का भावधारा में इनें जो मन्त्र-मान्द्र रत्न या मन्त्र मन्त्र रत्नि लिखा है, मन्त्र के अन्य नाकों में उन्मत्त पूर्ण अभाव है। यहाँ प्रारम्भ न हा चाक्ष का जो नाक्ष प्रखर निह-गन्ध मुनाइ पट्टा है, उम गर्जन का भविष्य जेवने के लिए जन अनि वस्तु एवं स्काम हा वाग्य है, पर मुद्राराक्षस में इन तरह का बहाव ना चलाव जना दखन का नहा मिलता। इन नाक में गति है, पर क्षमता नहा है। अभिप्राय है, पर अनुमति का अभाव है। कटा है, पर कल्पनक्षमता का अभाव है। मन्त्र है, पर हृदय नही है। निराश है, निरन्धरा नहा है। जावन है, पर रत्न नहा है। इसका कारा है—गन्धर्जन का मन्त्र मान्द्रा के रहन हुए भी, नवों के परिचय की पन्ना विदग्धता के बावजूद विशाखदत्त रत्न नाक में जने को भाव कर नहा रख मके। फल यह नाक गन्धर्वा होकर नि मन्द है। प्रगल्भ मागर की तरह विद्राघ होकर भी गह्वरहित है। वह द्रव्य का मक्ता है पर नकनार नहा मक्ता कारा मट है—नाककार को मन्त्र नाक के निरन निरनों के पान्न करने का त्रिना चिन्ता रहा है जना रात्रों और दर्शकों के साथ एकता न होकर जने को पिघला देने, कुल देने, बहा देने का नहों। कवि स्वर्ग चूड़ि नावना के प्रवाह में रह नहा मक्ता—इन्परि उन्के काव्य में बहा इन का क्षमता नहा आ सका। मुद्रा राक्षस को इनें मन्त्र-रूपकर पन्ना पन्ना है। उह नाक से अधिक काव्य और पद्य म अधिक पद्य है। चाक्ष को किना तरह राक्षस की अलूझा मिल जाती है और वह रत्नी में जने सब ओर ने विवश कर जने का नें कर उठा है। मन्त्ररात्रों के अभाव ने, मन्त्र में, वदन्त जावना शक्ति के बिना नाक मूना-मूना गता है।

ग्रन्थकार : विशाखदत्त

मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में लिखा है—“अशिराद्यग्नि परिरदा यथा तदा मान्द्र व-भरदत्तप्राप्त्य महाराजप्रभाक पुष्पमूले। कवेर्विशाखदत्तस्य कृतिरभिनेतव मुद्राराक्षस नाम नाक ना-दिनगन्धिः” इतने इतना ही पता चलता है कि इन नाक के कर्ता का नाम विशाखदत्त है। जो महाराज ‘पृथु’ अथवा नाक के कुछ अन्य मस्तरणों के अनुसार ‘महाराज मान्द्रादत्त’ के पुत्र है। इनके पितामह का नाम ‘मान्द्र व-भरदत्त’ था। किन्तु विशाखदत्त कहीं के थे। केवल नाककार ४, कवि ५ या किमा राजन्त्र के मवालक या मवालकों में से कोई एक था—इसका कुछ पता नहीं चलता। किन्तु ‘मुद्राराक्षस’ के नाककार विशाखदत्त है—इतने पता नहा है। बहुत अवगुति और कल्पित का तरह विशाखदत्त या अपने व्यक्तित्व के परचम के मन्त्र में उदास है। इसका कारा यह है कि इनार पूर्ति चिन्तक मन्त्र म मिश्रण के अत्यन्त म कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के इस निरपेक्षता से प्रसुत करि-नाक विशाखदत्त ना पूर्ण प्रवृत्ति प्रवाह होत है। फल इनका भाव्य हृदय हा इनके व्यक्तित्व का परिचायक है।

व्यक्तित्व

विशाखदत्त मूलतः राजनैतिक होने के कारा एक शुद्ध विचारक है। इनके नाक का कथावस्तु का रात्र को इन्ही को न को विचार नव हा है। विचार के फल और नक का

फून पर पटनाओं और राजनीतिक समस्याओं का मिश्र चढा देने के बाद ही विशाखदत्त की कथावस्तु का कनेक्चर तैयार होता है। विशाखदत्त के ये नृत्नीतिक विचार विविध हैं—आकार में भी वे प्रामिति की रेखाओं की तरह एक दूसरे को काटते, जलते, कहीं इल्की, कहीं गहरी घुरचिराँ और गुत्थियाँ बनाते हुए फैले रहते हैं। पुन विशाखदत्त के अन्वस्त हाथ उन्हें समेटते हुए, अभीष्ट रूप रेखा देते हुए, प्रतिपाद्य निष्कर्ष तक पहुँचा लेते हैं। अतः विशाखदत्त मूलन राजनीतिक पद्धतियों के शिल्पी हैं। पाठकों से इनकी अपेक्षा रहती है कि वे इनका शिल्पगत विशेषताओं की अनगढ़ता और पुन, उसके प्रातपाद्य सुघटता की रेखा रेखा तक की समझें और समझने का धमता रखें। इनके व्यक्ति की सत्पुष्टि निर्मिति की प्रशंसा में नहीं, निर्माण की प्रक्रियाओं की समवदारी में प्राप्त होती है।

आस्था की दृष्टि से नाटककार वैदिक धर्म का विश्वासी प्रताप होता है। शिव,^१ विष्णु,^२ सूर्य,^३ एवं बाजों के प्रति उदार विचार ही इस दृष्टिकोण के परिचायक हैं। उनका दृष्ट्य अपनी धार्मिक आस्था की किसी पर थोपना नहीं, प्रत्युत वे सदैव इसका ध्यान रखते थे कि कहीं कोई दुखी न हो न घ, किसी के प्रेन भू न हो न घ, किसी को हल्की ची न पहुँचे। नाट्य यह कि शिव उदार दृष्टि कोण के हिन्दूधर्म में विश्वास रखकर भी अन्य धर्मों के प्रति आस्थावान थे। नाट्य चतुर्थ अङ्क में क्षत्रगुरु जातिशक्ति के आगमन की अज्ञकुन समझ है। सम्भवतः यह भी उनका धर्मातिपशान के कारण ही सम्भव है।

इसीलिए उनके व्यवहारों में, विचारों में आत्मात्मिक समय, धार्मिक आस्था सासारिक व्यवहार पुल मिलकर ऐसा समन्वय उपस्थित कर देते हैं कि पाठक और पात्र, दोनों की सहानुभूति का पथ आप से आप प्रशस्त बन जाता है।

सारांश यह कि विशाखदत्त का व्यक्तित्व राजनीतिक पृष्ठभूमि पर निहासा, समन्वय और वादिक विवेक का केन्द्र है। जहाँ राजनीति है, वहाँ उनका नृत्नीतिक विवेक उभरता है, और जहाँ उनकी कला की दृष्टि है, वहाँ उनका नाटककार उन्हें द्विविधा से उठाकर उन्हें विश्वासी अर अशक्त बना देता है—सबका परिणत व्यक्तित्व में उन्हें उपस्थित करता है। संक्षेप में इन कह सकते हैं कि विशाखदत्त का व्यक्तित्व सदैव विकल्प से उठकर सकल्प में पर्यवसित है और तर्क से उठकर विश्वास में सुस्थिर है।

कृतित्व

विशाखदत्त की अन्तिम किन्तु अमर कृति मुद्राराक्षस के अतिरिक्त दो अन्य कृतियाँ भी हैं — 'देवीचन्द्रगुप्तम्' और 'अभिसारिचञ्चितकम्'। किन्तु इन दोनों ग्रन्थों का अस्तित्व केवल नाट्यदर्पण और शृङ्गार के प्रकाश के उद्गरणों में ही सुरक्षित है। ये दोनों ही कृतियाँ विशाखदत्त के कीमती कालोन रचनाएँ हैं। 'देवीचन्द्रगुप्तम्' का श्रुतिवृत्त राजनीतिक है। इसमें उत्तमशीय राजा रामगुप्त की दुर्बलता और चन्द्रगुप्त द्वितीय के प्रबल पराक्रम का वर्णन ही अन्य निदर्शन है। अपनी मौलता के कारण रामगुप्त ने स्वसौ पत्नी भुवदेवी को महाशक्तिशाली शक राज की समर्पित कर देना चाहा, किन्तु अत्यन्त तेजस्वी चन्द्रगुप्त ने छत्रवेश में शक राज का पथकर 'भुवदेवी' से विवाह कर लिया। यह नाटक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। इसका

उल्लेख वान के दर्शकरीय में, राजवंश का अन्त्यमानता में वन नाशदर्शी में सात बार हुआ है। 'अनेसगरेकक्रेवकम्' का उल्लेख अनेनव भारती एव श्वारनकाय में निम्न है। इस नाटक का कथावस्तु बलराम चरण के जीवनचरित्र पर आधारित है। इस वष का शन ना होने पूर्वक ज्यों के प्यारों से हा नाव होता है।

निधान

'मुद्राराक्षस' की कथावस्तु का केन्द्र 'गण्डेय' (पन्ना) है। समस्त तत्त्वज्ञान राजा की यही राजधानी हो। विशालदण्ड इस प्रदेश के निवासी प्रजापति हैं। यहाँ के नृपाओं से, यहाँ का प्रजापति से, बाल बल्लभ से, वस्तु-व्यवहार से ये पूर्ण परीक्षित हैं—इसका राजा नाटक में बौद्ध विद्वानों के सुन्दरन में गान-ध्यान पर निम्न है। 'विशालदण्ड गैड इस का प्रजापति ने, यहाँ का सुन्दरनों के नाक-धाराओं से पूर्ण परीक्षित' में। लड़ गण्डेयों के मैनिहों के प्रजे आकरों ना रमा गण्ड का पुष्ट करने है।

बचने बालेन्य-उपे न-इन्द्रजित्ता हकि।

न गडे लन्करीण वगुण-नरेणै। १।१३

इस लोक में बौद्ध नियम में ना यह प्रजापति होता है कि बने उस प्रदेश का निवासी है, जो शन की गैडों के छिद्र दम्पन है। कुछ निम्नर इन कह सकते हैं—गैड प्रदेश की प्रजापति का उल्लेख, लड़ जगित्तों का बान, बाल की बजानों परी विदेयता इस बात का प्रमाण है कि विशालदण्ड पूर्वी विहार का विहारप्रान्त दक्षिण किंवा उत्तर पर्वतों बल्लभ के निवासी थे।

रचना-काल

(क) अन्तःसाधनः—मुद्राराक्षस की रचना में चन्द्रमहान का उल्लेख निम्न है। जो केवल उल्लेख नहीं हो ना रहा है कि चन्द्र के माय पुत्र प्रह की स्थापित के कारण प्रजापति दोग ठाक नहीं बैठा है। कुछ आलोचकों के मतानुसार यह दिव्य २ दिवस ८८० ई० थी, इस कथा पर इन नाटक की रचना नहीं मरी के प्यारों में ना ना सकती है। वे० कोश की सन्नाय के अनुसार मुद्राराक्षस की अनेनव इसा बचन पर बल्लभ वन के नन्दी दूर ने बताया था। किन्तु, इस कथा के सुन्दरन में कोई अन्य पुष्ट प्रमाण का बनाव रहने के कारण इसकी नात्मता विद्वानों ने नहीं दी है।

मुद्राराक्षस का कथानक ऐतिहासिक है। उसका रचनाकाल निर्धारित करने के लिए वल्लभोंन ऐतिहासिक प्रमाणों को सुनना करने पर प्रजापति है कि प्रमाण काउ में महाराष्ट्र, गुजरात, नागपुर, बजरा सान्ध बजरादण्ड के सुन्दरन में सुन्दरन में कोई कोई चर्चा नहीं है। विशालदण्ड के नाम के अने दण्ड उल्लेख एव उनके विद्या, निम्नर आदि के नामों के अंग की प्रमाण 'दण्ड' उल्लेख को देखकर कुछ विद्वानों ने यह विचार व्यक्त किया है कि इसका वर 'दण्ड' वर था। किन्तु, सुन्दरन में 'दण्ड' वरान मान्य का कोई भी उल्लेख नहीं पाया गया है। डॉ० सत्यप्रत सिंह ने लिखा है कि 'इस नाटक के कथानक से सन्दर्भ

१. मुद्रा० ५।२३

२. मुद्रा० ५।११

३. मुद्रा० १।६

४. Jacobi : Vienna Orient Journal. ५. वही सूत्र २।२ P. F.

सभी रूपनायें इस नाटक के 'भरतवाक्य' पर केन्द्रित^१ है।^२ वस्तुतः इस नाटक के भरतवाक्य में 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्त'^३ ही पाठ नहीं मिलता, अपितु, अवन्तिवर्मा, दन्तिवर्मा, रन्तिवर्मा, रन्तवर्मा पाठ भी मिला करता है। इन विभिन्न राजाओं के कालभेद के कारण, विशाखदत्त का कालनिर्णय भी अनिश्चय-गमगत हो जाता है।

प्रथम पाठ के आधार पर प्रो० शारदा राजन राय^४ की धारणा है कि मुद्राराक्षस में विशाखदत्त ने गुप्तमगध चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (३७५-४१३ ई०) का ओर संकेत किया है। वे प्रकारान्तर से अपने आध्यादाता चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की प्रशंसा करते हैं। मुद्राराक्षस का घटन स्थल पालिपुत्र है। जोनी यात्री फाहियान ने पालिपुत्र को मगध की राजधानी बतलाया है। हनेसन उसे भग्नावशेष पाया^५। इस पाठ के आधार पर कुछ विद्वान इस रचना को पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ की मानते हैं।

दूसरे पाठ 'अवन्तिवर्मा' को लेख्य महोदय प्रामाणिक मानते^६ हैं। इनके मतानुसार राजा हर्ष (६०६ ई में ६४८ ई०) के बहनोई ग्रहवर्मा के पिता मीनारि राजा था। इस मत के अनुसार इस नाटक की रचना ७ वीं सदी में हुई। मेकगनल,^७ तथा रैप्सन^८ इसी मत की स्वीकार करते हैं।

'दन्तिवर्मा' पाठ के आधार पर मुद्राराक्षस का रचनाकाल पल्लव राजा दन्तिवर्मा का समय ७७९-८३० ई० निश्चिन किया गया है। किन्तु उस समय दक्षिण में हूणों का उपद्रव नहीं फैला था। अतः यह मत मान्य नहीं हो सका।

इसी प्रकार 'रन्तिवर्मा' या 'रन्तवर्मा' भी भ्रामक मत ही है। इन विभिन्नमतों का सामंजस्य केवल एक ही हो सकता है कि सर्वाधिक प्राचीन पाठ 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्त' ही विशाखदत्त का अभिप्राय था। बाद के सभी पाठ परिवर्तित कर सामयिक राजस्थिति के लिए प्रयुक्त किये गये होंगे।

मुद्राराक्षस की शैली, भारत का सीमा निर्धारण, धार्मिक कथन प्रश्रुति की भिन्नानुसार यही कहा जा सकता है कि इस नाटक का मूल पाठ 'पार्थिवश्चन्द्रगुप्त' ही है और इसका रचना-काल ऊपर लिखित चन्द्रगुप्त के साथ ही मेल खाता है।

१ विशाखदत्त का शास्त्र वैदुष्य

मुद्राराक्षस के अध्ययन मनन करने से हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि विशाखदत्त की प्रतिभा बहुमुखी थी। कवि-न्यायशास्त्र^९ नाट्यशास्त्र,^{१०} अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा ज्योतिष के धुरन्धर विद्वान्^{११} थे।

विशाखदत्त की राजनीतिक दृष्टिभूमि तक पहुँचने के लिये मौ० सरलान इतिहास के प्रारम्भिक पृष्ठों का पर्यालोचन करना पड़ेगा। सिमन्दर ने भारत पर आक्रमण ई० पू० ३८६ ई० में किया

१ मुद्रा० by डा० सत्यवत सिंह, भूमिका खण्ड, पृ० १२

२ S Ray's Introduction to his edition of Mudra Rakshasa pp 9-14

३ Elphinstone's History of India P. 292.

४ Telanga's Introduction to his edition of Mudra Rakshasa

५ Macdonell Skt Lit P 365

६ JRAS 1900 P 535

७. मुद्रा० ५१२०

८ मुद्रा० ४१३

९ द्रुमिलोपनिषद् चतुष्पञ्चके ज्योति शास्त्रे ।

था। मिन्य तथा पञ्जाब के अनेक गाराबों का स्वतन्त्रता अग्रदूत कर सिक्खों ने नीर्य सभाष्ट चन्द्रगुप्त का पथ प्रशस्त कर दिया। चन्द्रगुप्त नीर्य के पूर्व महाराजमनन्द यहाँ का शासक था। इनके मन्त्राचार्य को नीर्य पश्चिमोत्तर सामान्य में दृढ़ करने वाला सिक्खों था।^१ ३० पू० ३२२, के लगभग नीर्य मत्ता की म्थाना के साथ नारनाव इतिहास में एक नवान युग का प्रवर्तन हुआ। मन्मूर्त देव एक सुमनसित शान्तनव के अगान देख बड़ हुआ। नारन से जब सिक्खों लौट गरा—चन्द्रगुप्त ने अरना राजनगि के गुद, प्रखर पण्डित चात्त्व को प्रेरता से मन्म का राज्य-सिद्धान्त अधिस्त कर लिया। उन्ने अने अद्वय पौरव से नौदन्ताभाव्य का उत्तरी एव पश्चिमोत्तरवर्ती मोनारै हिन्दूकुल तथा वर्चनान पारमर्षी सरहद तक तथा दक्षिण में नन्दरा सिन्धव श्रेता को ली कर, मानदान के नानर नैगूर तक पहुँचा दी। इन प्रकार इन मनन कलिह एव कन्दनार को छोड कर मन्मूर्त नारन (पाकिस्तान को केकर) तथा आधुनिक अरगामिमान और बन्धुविमान इसके साम्राज्य में मनाविष्ट^२ थे। इनने बड़ अनुदान को चात्त्व की नाति ने एक कठिन नैड के रूप में प्रदर्शित किया है। इसकी गुडनामों से को गयी है। 'ननु खडत्पेसारो' 'हिना' (मुद्रा० अष्ट २) इनमें मरी का खड दिखाने वाला, मररा, सम्माना, ग्रीविनी, बैनालिक आदि मनी प्रकार के पन्कि गुनचर के काम में मडल्ल है और मन्मत्त। वे अपने उद्देश्य में मरुड हो ही गान है। इनने पण चडता है कि विशाखदत्त राजनाति ज्ञान के पूर्ण पण्डित थे।

'मुद्राराक्षस' का पत्रियों में, तन्काठान मन्मत्ता नाटक के पात्रों के आचरण में पदे पदे परिचयित होना है। नैतिक देवर्त, सन्दर्भररक अभिगधिरा, रिष्ट एव परिष्कृत मस्तिष्क प्रबुद्ध लैकिङ प्रता, विभिन्न विचार और वैदग्ध्य के बान में पद पद आविष्ट है। राज नाटिक पङ्क्तियों का भी इन नाटक में विशाखदत्त ने उसी प्रकार परिचयन किया है, जिन प्रकार उच्च नैतिक विचारों का सन्निवेश किया है। विशाखदत्त नैतिकता अथवा सदाचार के आदर्श से पूर्ण परिचित थे। उनके हर पात्रों के ब्यक्तित्व में इन गुणों का सन्निवेश है। इनके छोटे-छोटे राज ना बहा कृतनाटिक पृष्ठाधार पर विद्वत्तत्वात् रूप अनैतिक आचरण करते इ वहाँ इनके लिए भी उन्हें पदवाचन करना पडता है। मनःस्थिति का परिवर्तन में निष्कान कर्मरोग की प्रधानता के नावार पर प्रदिष्टित आत्मात्मिक अर्थव्या से अनुरचित विष उदात्त एव कठोर आदर्श को स्थापना कालिदास या वाल्मीकि ने की है, प्रायः विशाखदत्त इस नावभूमि से अवलब हो अनुरचित थे। अथवा उनका प्रकृति में मन्दिहित राजनाटिक मुक्तता ने इसे अमोहत कर दिया। विशाखदत्त के पान भावार्थक अथवा कल्पनात्मक उल्लाह से प्रेरित होकर नहीं, प्रत्युत वैदिक विद्वत्ता से प्रेरित होकर कार्यशील हुए हैं।

विद्याउदय के नाकाय ज्ञान का नर्कचरि विविष्टता है उनकी वैदिकता। विचारों में, तत्त्व-विद्या में, आचरण नाकाय प्रसनों में उनका अभ्यसन, चिन्तन अतिप्रचार है। चात्त्व की वृत्ताधिको वे व्यवहार की कर्तव्य पर कसते हैं। सामान्य आचरणशास्त्र के ऊपर वे आचरण के एक उच्चतर आदर्श का निर्माण करते हैं। इनके आदर्श का पृष्ठभूमि बुद्धि अथवा चरित्र की दृढ़ता है। मनाज एव ज्ञानन पर वे न्यायव्यापिक तथा एक दुर्गठ राजनातिह का दृष्टि ने विचार करते हैं। मुद्रा-राक्षस का द्वारा नैतिक एव बीदिक वातावरण इस बात के साक्षा है कि विशाखदत्त का ज्ञान किसी एक शास्त्र के पल्ल में नहीं बसा है। 'मुद्राराक्षस' के मन्मूर्त पात्रों में पद मरुड बुद्धिवाद

१. राजचैपुरी, पोलिटिकल हिस्ट्री, पृ० १७१।

२. महाकविकालिदास : डा० रमाशंकर तिवारी, पृ० ३७।

व्याप्त है। मुद्राराक्षस में ऐसे युग का चित्रण है जो विराट् सर्वनात्मक उद्वेगना एव अशान्ति से परिपूर्ण है। संभवतः समाज की इस स्थिति का निरूपण करने में विशाखदत्त का आन्तरिक संघर्ष भी उन्हें विचलित कर रहा था। विभिन्न शास्त्रों का पाण्डित्य एक ओर उन्हें खींचता था और निर्मग प्राप्त कविताएँ उन्हें दूसरी ओर खींचती थी—‘कर्त्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्भिषो वा’ (मुद्रा० ५१३) किन्तु विशाखदत्त की व्यावहारिक सजावट, राजनीतिक वक्तव्य तथा शब्दतटित का भण्डार इस बात का प्रमाण है कि उनका पाण्डित्य, उनकी काव्य-प्रतिभा का वहीं बाधक नहीं बना।

व्यावस्तु का मूलस्रोत

महाराज नन्द एव चाणक्यसम्बन्धी कथा का स्पष्ट उल्लेख श्रीमद्भागवत एव विष्णुपुराण में है। इन पुराणों में कथित वृत्तों के अनुसार आचार्य चाणक्य ने महानन्दों का विनाश कर मगधसाम्राज्य के राज्यसिंहासन पर चन्द्रगुप्त को अधिष्ठित कर दिया। इन्हीं पुराणों में यह भी लिखा है कि कोटिल्य वा यह शिष्य कामन्दक ने चाणक्य की उस अभिचार क्रिया का वर्णन किया है जिसका प्रयोग उन्होंने नन्द को मारने के लिए किया था।

कौटिल्य के द्वारा नन्दवश के सर्वनाश के बाद चन्द्रगुप्त का राज्यारोहण काल इतिहासों की मान्यता के अनुसार ३० सन् के ६२५ वर्ष पूर्व माना जाता है। उस समय से लेकर ‘मुद्राराक्षस’ के रचनाकाल तक के लगभग एक सहस्र वर्ष का अन्तराल प्रतीत होता है। इस अवधि में चन्द्रगुप्त एव चाणक्य के बीच बाढी कथा के सम्बन्ध में बहुविध किंवदन्तियों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। मुद्राराक्षस के नाटककार को इन किंवदन्तियों का ज्ञान अवश्य होगा। यद्यपि नाटक की वस्तुयोजना में इन किंवदन्तियों का कुछ भी सच नहीं मिलता। दृश्यरूपक में लिखा है कि शक्यार के घर में छिपकर चाणक्य ने ‘कृत्वा’ उत्पन्नकर राजा को पुत्रों सहित मार डाला। यागानन्द का मृत्यु के बाद, पूर्वनन्द का पुत्र चन्द्रगुप्त महापराक्रमी चाणक्य के द्वारा राजा बना दिया गया। इस प्रकार का सघटन वृहत्त्व में मिलता है। (दृश० सू० पृ० ७४) किन्तु बृहत्कथा सम्प्रति अनुपलब्ध है। कथासरित्सागर को लोग बृहत्त्व का मूल अक्ष का यथार्थ रूपांतर मानते हैं। मुद्राराक्षस का विस्तृत विवरण कथासरित्सागर में नहीं मिलता। जो कुछ भी वृत्त मिलता है उसमें राक्षस के कृत्यों की कोई चर्चा नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस नाटक की व्यावस्तु की वक्तव्य विशाखदत्त की निजी है। आस्थामूलक भारतीय कौटिल्यनीति के साथ स्वाभिक्तिपरक राक्षस का संघर्ष, जहाँ सब कुछ बुद्धि के बाटे पर सौलवर तक से परिष्कृत कर इस इतिवृत्त को सजाया गया है। इस आस्था के नवनिर्माण, नाटकीय गति, क्रिया और ज्ञान के बीच समुचित सामञ्जस्य की स्थापना का अभिनव प्रयास विशाखदत्त की अपनी विशेषता है।

ऐसा लगता है विशाखदत्त ने अपने नाटक में मौर्य साम्राज्य की स्थापना तथा नन्दवश के विनाश का सारा श्रेय आचार्य विष्णुगुप्त को दिया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अरूप तत्त्व का अपनी कल्पना से बल पर रूप सिरका है, सौन्दर्य का प्रतिमान गढ़ा है। और उसे लावण्य-जल से मग्न स्नान कराया है और फिर इससे सम्बन्धित सारे घटनाचक्रों की परिचर्यना कर ली है। कौटिल्य अर्थशास्त्र की राजनीति का महाप्रयोजक तो सर्वप्रथम राक्षस की ही नाटककार ने दिखाया है। कथासरित्सागर के वर्णन में राक्षस के चरित के मामजस्य का वही भी आग्रह परिलक्षित नहीं होता—जैसा मुद्राराक्षस में है। चाणक्य-चरित में व्यापक वस्तुनिष्ठता

के कारण नास्तीन धर्मवृत्त का नाशानक नष्टिना के बीच भर निरुपगत है। मुद्रास्फोट के
 विकास के संवेदात्मक में सुदृष्ट चारणन संवेदात्मक के अतिरिक्त विस्फोटक की समेकित दृष्टि
 यहाँ सामान्य के साथ मानव के उदात्त चरित्र में सामान्य स्वरूप समन्वय का प्रतिष्ठा है।
 मानव एवं विस्फोट के अद्वय कौशल्य चरित्र वनान्य होने के कारण मुद्रास्फोट में बाहर
 हा नास्तीन न्यतिन प्राप्त कर सका—न्यतिन समेकित सुक सामान्य का इतना अन्तर्गत प्रकट है
 कि समेकित नास्तीन का अनादित्व ही ना नहीं निरुपगत। विस्फोटक का उदात्त कर्तव्य यहाँ सामान्य
 है, यहाँ समन्वय मानव का कथा प्रकट दार्शनिकता तथा भारत रचनात्मक के निर्विघ्न बाधन
 से नास्तीन है। विस्फोटक की उत्पत्ति से प्रकट यह सुक कथा सामान्य-रस से अतिरिक्त
 कथा ही उदात्त है। मुद्रास्फोट का वन नास्तीन दृष्टिकोण का समन्वय में अना सामान्य
 रजता है। इस नास्तीन में कौशल्य का सुदृष्ट चरित्र का दार्शनिकता ही ना ही समेकित सामान्य
 के मानव नास्तीन में यहाँ मुद्रा का अन्तर्गत सुदृष्ट चरित्र है। वस्तुतः ही महाकवि विस्फोटक
 की प्रतिष्ठा मान्य है।

मक्षिप्र क्यावस्तु

दुःखराशियों के कारणों का केन्द्रबिन्दु मनुष्य का महानात्म्य 'राज्ञ' है, जिन्हीं वांछना और स्वाभिमान ने प्रभावित होकर वास्तव बाह्य है कि वह किन्हीं प्रकार बन्धुत्व का मत्वा होना चाहता है। क्योंकि वह अन्तों तरह जानता है कि यदि राक्षस-बैला राजनाटि-मुत्सव एवं स्वाभिमान व्यक्त बन्धुत्व का अक्षय्य स्वाकार करे तो बन्धुत्व का राज्य बूट हो जाय और भारत एक इन्डिस्ट्रियल प्रजासत्तक के बर्षों झुल्लेते एवं झुल्लेते रूप में आ जाय। हम, इसी उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर और राज्ञ के साथ जो राजनाटिक बाजों की चोटें चलाते हैं। वन्हीं का हम नाटक क इन्तकालों में रचित किया गया है।

प्रथम श्लोक में वात्स्य को बनने सुनवहीं से पता चलता है कि कुसुमपुर में राक्षस के राजा मन्त्रिज शत्रु काम कर रहे हैं—(१) कुमाल नीलजिह्वा (जो वात्स्य का ही भाग्य है), (२) काम्य उच्छ्वास, (३) नीलकार श्रेणी चन्दनदास। इसी चन्दनदास के घर राक्षस का परिवार निहित है। वात्स्य को बनने सुनवर के द्वारा चन्दनदास के घर पर हा राक्षस नाम अक्षिप्त एक मुद्रा मिली—विष्णु की म्हापद्मा से वात्स्य उच्छ्वास से एक दृष्टि से छिन्न कर छिन्न कर देता है। उस मुद्रा का श्रेणी राक्षस के पराजय का कारा बनता है। उस शत्रु के नाम का राक्षस भी इसी वजह से जिता है।

द्वितीय एक राष्ट्र की राजनीतिक इच्छा की प्राथमिक पराजय का निर्माण है। राष्ट्र में जन गुणवर्तों के द्वारा बुद्धिमान नैतिक के मन हो चन्द्रमुख का हृत्पत्र का गुणवर्तों बनाई थी। द्वितीय, वास्तव की प्रकृति के द्वारा राष्ट्र की यह योजना बन गई हो गयी।

तुलाना जल में कौटुबानहोलव के प्रविश्य को बनारसक कहा है। इसने चन्द्रस्य का नाभ के लोप इतक-छट्ट का बनाया वस्तु है। कामदेव ने काम-दूधर रागदा का वल्लभन कर दिया और काम के लिये रागस को इस सवाद से कनी बोवना प्रभाव होदा दिखाद देने लगा।

चतुर्थ ०८ ने रामसु को अपनी योजना की बखसला का आभास मिटा है। वह परदेन रावकुमार मल्लिके को ज्यों के सिद्धान्त पर बैसना चाहता है। मल्लिके अपना आभूषण वस्त्रा ने भना रामसु को भेट करती है।

पञ्चम अङ्क इस नाटक की गर्भसन्धि है। मुद्रित लेख और आभूषण पेटिका के साथ सिद्धार्थक पकड़ा जाता है। मलयकेतु को यह विश्वास हो जाता है कि राक्षस गुप्तरूप से चन्द्रगुप्त के साथ मिला है। इनका विरोध केवल चाणक्य से है। इसी क्रोध में वह अपने सहयोगी राजाओं की हत्या करवा देता है। इसके कुफलस्वरूप वह बन्दा बना लिया जाता है। इस अङ्क में चाणक्य का कूटनीति फलोभूत होनी दिखाई गयी है।

षष्ठ अङ्क में राक्षस अपने मित्र चन्दनदाम को टोह में पाटलिपुत्र पहुँच जाता है। यहाँ उसे चन्दनदास के प्राण सकट का सूचना एक व्यक्ति से मिलती है।

सप्तम अङ्क में चाण्डाल चन्दनदास को फाँसी देने के लिए बधस्थान ले जाता है। चन्दनदास की पत्नी के आर्त्तविलाप पर उसकी सहायता के लिए राक्षस स्वयं उपस्थित हो जाता है। यहाँ वह चन्द्रगुप्त का मन्त्रिण स्वीकार करता है। इस अन्तिम अङ्क में नाटककार ने बड़ी कुशलता से कार्यान्विति का निर्वाह किया है।

मुद्राराक्षस : परम्परित दृष्टिकोण

महाकवि विशाखदत्त की अमर कृति 'मुद्राराक्षस' सस्कृत साहित्य में अपने ढंग का अकेला नाटक है। इतिहास एवं राजनीति का सुन्दर समन्वय इसकी मौलिक विशेषता है। इसमें एक ओर नन्दवंश के विनाश का काली छाया है तो दूसरी ओर चन्द्रगुप्त के राक्ष्यारोहण का चाँदनी। कहीं राक्षस के सक्रिय विरोध के बादल हैं तो कहीं कौटिल्य की कुटिल नीति की सजगता सदृश्य है। अन्त में राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त के प्रभुत्व की स्वीकृति है। इस नाटक में सर्वत्र साहित्य और राजनीति के विविध तथ्यों का मणिक्राचन योग मिलता है। इसका कारण संभवतः विशाखदत्त का जन्म राजकुल में होना है। मुद्राराक्षस या कुछ प्रतियों के अनुसार वे महाराज भारकरदत्त के पुत्र थे और कुछ के अनुसार सामन्त बटेश्वरदत्त के पुत्र एवं महाराज पट्ट के पुत्र थे।

इस नाटक के रचनाकाल के विषय में भी विद्वानों में तीव्र मतभेद है। अधिकांश विद्वान् इसे चौथी पाँचवीं शती की रचना मानते हैं, किन्तु, कुछ विद्वानों ने इसे सातवीं आठवीं शती की कृति माना है। सस्कृत साहित्य के प्रायः सभी इतिहासों में इसका विवेचन सप्रमाण अवस्थित करने की चेष्टा की गयी है।

नामकरण—दार्शनिक दृष्टि से नामों में सार्थकता का अभाव खटकता है, किन्तु, साहित्यिक दृष्टि नामों में सार्थकता मानती है। इस नामोच्चरित्र के सम्बन्ध में 'औचित्यविचारचर्चा' में लिखा है—'नाम्ना कार्यान्तरूपेण ज्ञायते गुणदोषयो' ऐसी दशा में किसी वस्तु के प्रकृत अर्थ के अनुरूप नाम चुनने में कवि की कला लक्षित होती है। प्रस्तुत अर्थ के अनुकूल नाम के गुणों ही सदृश्यों के हृदय विकसित हो जाते हैं। इसी अन्वर्थकता की दृष्टि से विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' शब्द का अर्थ-गौरव के रूप में ग्रहण किया है। यह शब्द मूल पुस्तक की आत्मा की सभासनाओं को व्यक्त करता है। संभवतः इस तहर के नाम चुनने में कवि को कालिदास के 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' से भी प्रेरणा मिली हो। अस्तु—'मुद्रया परिगृहीतः राक्षसोऽयम्' यहाँ मध्यमपदलोपी बहुव्रीहि समास है, पुनः 'उदधिकृत्यकृतो ग्रन्थ' इति मुद्राराक्षसम्। यहाँ 'अधिकृत्यकृत ग्रन्थे' इस सूत्र से अग्रन्तत्वाद नपुंसकलिङ्ग का विधान किया गया है। अतः 'मुद्राराक्षसम्' नाम की सूपयुक्तता स्पष्ट है। समग्र ग्रन्थ में नाम की अन्वर्थक क्षमता व्याप्त है। इस नामकरण की आधारभूत घटना यह है कि अपनी ही मुद्रा को अपने विरुद्ध प्रयुक्त होते हुए देखकर राक्षस विवश हो जाता है।

कथानक—इन्हें चन्द्रशुत के रामदारोहन के पन्नाच चाक्य द्वारा राक्षस को रात्रिगतिक चालों को विरुद्ध कर देने की प्रसिद्ध ऐतिहासिक कथा को सात अङ्गों में अव्यक्त सुचारु रूप से व्यक्त किया गया है। इस नाटक की नैतिक विशेषता यह है कि इन्होंने प्रायः विषय की नैतिक शिक्षा नहीं लगायी है। सर्वत्र राजनीतिक बह्यन्व का, कृत्यनैतिक दाव पैच का निर्वाह कथावस्तु में दृढ़ निर्वन्धवात् व्यापार से नियमित है। प्रायः को नयुरेता, नृत्य के पद विधान तथा संगीत को दान मछे न सुनव पड, किन्तु वस्तुसंज्ञना इनका सङ्ग, गमोर एव स्रष्ट है कि नाटकीय गत्यात्मकता कहीं भी क्षिणित नहीं प्रतीय होती। नाटक की सुनल घटनाएँ एक ही छव्य को ओर अभिमुख हैं।

इस नाटक की कथावस्तु की एक और मुख्य विशेषता है, नाटो-नाटों का अभाव। चन्द्रशुत और नटपक्षेय को प्रतापशरी शोभोचरा अंर विजया को लडकर, सुग्रीव नाटक में प्रेम और कर्तव्य को दृग्भूमि में, कठोर कर्तव्य और आत्मत्याग की भावना से अनुप्रेरित मेट चन्द्रदास का पानो, रंगमंच पर ध्वनित के त्रिप उगस्थित होती है। सकार करण की नृतिवनी किनी नैराश्य की भावना ने प्रेरित होकर नहीं, प्रत्युत नारी के सदर्न के निर्वाह के लिए हा। फिर भी नाटकीय व्यापार को अन्वेषित का जा सुगठन रूप इन्होंने दृष्टिगोचर होता है; वह मस्कृत साहित्य में अम्यत्र दुर्लभ है। इसको इसी मित्री नैतिकता के कारण कुछ मस्कृत के विद्वानों का यह आक्षेप है कि इसको कथावस्तु का मविधान मस्कृत नाटकों की परम्परा से भिन्न है। किन्तु, विद्याभूषण को मस्कृत के अन्य नाटककारों का अग्रज इसका ज्ञान अधिक था। क्योंकि स्वयं उन्होंने चतुर्थ अङ्क में राक्षस के मुख से यह कहकर स्थिति को साठ कर दिया है :—

‘कार्योत्पन्नमादौ वनुमति रचयन्मत्स्य वितारमिच्छन्,

बोबाना ममिताला फलमतिमहल गूढमुदनेदयम्।

कुर्वन् कुदया विनश्य प्रवृत्तमि पुनः सहर्तु कार्यवात

कर्ता वा नाटकानामिन्ननुमति कुदमस्तदिषो वा ” ४। ३

—नेर जैसे आदमी को अवस्था सचनुव एक नाटककार को तरह रहती है। छोटे छोटे कार्य का बोधकर में अर्थात् मुक्तस्मृति में एक नाटककार सर्वप्रथम उद्देश्य करता है। फिर प्रतिमुख-स्मृति में उसका वितार करना चाहता है इसका बाद वह गमंस्मृति में नाट्याय कथावस्तु के कार्य-बोझों के छिपे हुए गमार फल को प्रकट करना चाहता है। फिर अपनी बुद्धि से विमर्श का रचना कर फीले हुए व्यापारों को सनेट कर उत्सृष्ट करता है।

कथानक में चाक्य की दृष्टिक नीति का वर्णन होने से इसका स्वरूप सम्यक् अवगत रहित है, फिर भी विद्याभूषण ने इसे पूर्णरक्तन सम्मिलित रखने में अपनी अदभुत क्षमता प्रदर्शित की है। इस नाटक में कार्यवस्थाओं, अर्थव्यवस्थाओं और सम्बन्धों का नाट्यशास्त्रविहित प्रमाण हुआ है, जिसका विवेचन क्रमशः द्रष्टव्य है।—

कार्यावस्थाएँ—भारतीय आचार्यों ने नाटक में कथा-विकास को पाँच अवस्थाएँ मानो हैं। दशरूपककार धनञ्जय ने लिखा है :—

“अवस्था पञ्चकार्यस्य प्रारम्भस्य फलाधिनिः।

आरम्भवत्प्रारम्भस्याद्या निरवधि फलपन्नाः ॥” २० सू० १।१९

—फल की इच्छावाले नाटकदि के द्वारा प्रारम्भ कार्य की पाँच अवस्थाएँ होती हैं। आरम्भ, चल, प्रारम्भ, निरवधि तथा फलपन्नाः।

कार्य को वे पाँचों अवस्थायें नायक की मनोदृष्टि में क्यावस्तु का मनोवैज्ञानिक विभाजन हैं। इन पाँचों के नामानुसार धनजन्यन ने सब की अलग अलग परिभाषाएँ दी हैं। 'आरम्भ' के सम्बन्ध में उनकी परिभाषा है :—

“उत्सुक्यमानमारम्भः फललाभाय भूयते।”

अर्थात् अत्यन्तफललाम की उत्सुकतामात्र ही आरम्भ है।

किसी भी फल की प्राप्ति के लिए नायक में प्रबल इच्छा पायी जाती है तथा इस इच्छा के प्रति पूर्ण उत्सुकता होती है। यह उत्सुकता मात्र ही आरम्भ है। 'मैं इसे कहूँ' मात्र इतनी-सी चेष्टा ही आरम्भ है। शर्त इतनी ही कि किसी भी नाटक का यह आरम्भ खिर और धुनि-योजित होना चाहिये, क्योंकि नाटक की परवर्ती घटनाओं की सफलता इसी पर निर्भर करती है। मुद्राराक्षस में निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस की मुद्रा देने तक की कथा 'प्रारम्भ' के अन्तर्गत आती है। 'प्रयत्न' के विषय में धनजय का का विचार है :—

“प्रयत्नस्तु तदप्राप्ते न्यापारोपितविराम्बितः।”

अर्थात् फल की अप्राप्ति की स्थिति में उसकी उपलब्धि के लिये योजना युक्त तीव्र व्यापार या चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं।

'प्रयत्न' के अन्तर्गत नायक अपनी अप्रोप्तिस्त वस्तु को प्राप्त करने के व्यापार में सलग्न रहते हैं। 'मुद्राराक्षस' में निम्नलिखित घटनाओं को प्रयत्न के अन्तर्गत समावेश किया जा सकता है। चाणक्य द्वारा राक्षस और भल्यकेतु में विग्रह कराने की चेष्टा, शकटदास को सूली देने का मिथ्या आशयजन, सिद्धार्थक द्वारा राक्षस का विश्वासपात्र बन कर उसे धोखा देना। इसी प्रकार 'प्राप्त्याशा' के सम्बन्ध में दशरूपककार का कथन है :—

“उपायापायशकाभ्या प्राप्त्याशाप्रसिम्भदः।”

—जहाँ उपाय तथा विघ्न की आशंका के कारण फलप्राप्ति के विषय में कोई एकान्तिक निश्चय नहीं हो पाता, फलप्राप्ति की सम्भावना उपाय और विघ्नाश दोनों में दोल्यमान रहती है, वहाँ प्राप्त्याशा नामक अवस्था होती है।

इस प्राप्त्याशा की योजना के लिए नाट्यकार ने चन्द्रगुप्त और चाणक्य के छद्म विरोध, राक्षस द्वारा कुम्भपुर पर आक्रमण की योजना आदि घटनाओं द्वारा राक्षस का उत्कर्ष वर्णित किया है, किन्तु साथ ही कूटनीतिज्ञ चाणक्य की योजनाओं का भी वर्णन हुआ है। 'नियताप्ति' के सम्बन्ध में इनका कथन है :—

“अपायाभावतः प्राप्तिनियताप्तिः सुनिश्चिता।”

—जब विघ्न के अभाव के कारण फल की प्राप्ति निश्चित हो जाती है तो नियताप्ति नामक अवस्था होती है।

हम देख चुके हैं कि प्राप्त्याशा में फलप्राप्ति के बाद नायक का मानस सन्देह से विचलित रहता है। किन्तु नियताप्ति में प्राप्ति निश्चित हो जाती है। नायक का मन किसी एक प्राप्ति पर निश्चित हो जाता है और एकान्त निश्चय के बाद फलप्राप्ति भी निश्चित हो जाती है। भारतीय नाट्यशास्त्र की कसौटी पर पाश्चात्य दृष्टि के दुःखान्त नाटकों की मीमांसा करने पर 'फलप्राप्ति नहीं होगी' इन निश्चय की दृष्टि में नियताप्ति मानी जा सकेगी। किन्तु,

नियति शब्द की व्युत्पत्ति भी सुनाने लोगों के ही अन्तर्गत है। मुद्राराक्षस में चातक्य द्वारा राक्षस और नटपक्षेय में विवाद करा देने और राक्षस की योजनाओं को विफल कर देने की योजनाएँ नियति के अन्तर्गत आती हैं। 'फलागन' के सम्बन्ध में धर्मजय का कथन है :—

“सन्मन्त्रलसगतिः फलयोगो यथोदिनः ॥”

—सन्मन्त्र फल की प्राप्ति हो जाने पर फलागन कहलाता है।

इन लक्ष्मण ने फल के साथ 'धर्मस्त' विवेचन प्रयुक्त हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि जब तक फल अपूरा है तब तक उसे नियंत्रण ही कहा जावेगा। मुद्राराक्षस के छठे-सातवें अध्यायों में फलागन की सिद्धि के लिए राक्षस के आत्मसमर्पण की पृथग्भूमि प्रस्तुत करने द्वारा उनके द्वारा चन्द्रगुप्त के अनाथ पक्ष की स्वीकृति का स्पष्टत्व हुआ है। एक अवस्थाओं का निरूपण नाट्यकार ने इनकी मजबूती और स्पष्टता से किया है कि ऐसा बहुत कम नाटकों में मिलता है।

अर्थप्रकृतिर्था— “श्रीशिविन्दुनाम्नास्वमकरोकारलक्षणाः ।

अर्थप्रकृतयः पञ्च ता एताः परिकीर्तिताः ॥”

—किन्हीं भी रूपक में शिव, विन्दु, पानाका, प्रकरी तथा कार्य के पाँच अर्थ प्रकृतिर्था हैं। अर्थप्रकृति से तात्पर्य इन लक्ष्यों से है जो प्रयोजनसिद्धि के कारण होते हैं।

अर्थप्रकृतिर्था नाटकीय कथावस्तु का भौतिक विभाजन (Physical division) है। इनमें से पताका (मुख्य प्रासंगिक कथा) और प्रकरी (गौण प्रासंगिक कथा) का आधिकारिक कथा के साथ मनुष्यित्व निर्वाह करणत आदर्शक है। मुद्राराक्षस में चातक्य द्वारा राक्षस को करने पक्ष में निजाने का निक्षय कथावस्तु का 'बीज' है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रथम अध्याय में चातक्य की इस शक्ति से हुई है :—

“अथवा अगृहाते राजसे किन्तुलाग नन्दवदस्य किंवा स्वैरनुत्पन्नवित्तवन्त्रगुल्लक्षणाः ।”
“वदभिदाय प्रति विदधानः उक्तोऽन्वयार्थवितुनरनाभिः ॥”

चातक्य गुप्तचर प्रकृति का नटपक्षेय के आशय में चले जाना 'बीजव्यास' अथवा बीज का आरम्भ है। 'विन्दु' के अन्तर्गत इन घटनाओं की योजना की जा सकती है—निपुण द्वारा चातक्य को राक्षस की मुद्रा देना, शकटद्वारा से पत्र लिखवाना, चातक्य द्वारा चन्द्रनारायण को बन्दी बनाने की आज्ञा देना। नाटक की प्रत्यक्षि में सिनार्क और माधुराया द्वारा किये गये प्रयत्न 'पताका' के अन्तर्गत गण्य है। 'प्रकरी' का आशय मुद्राराक्षस के दूरीय अंक के अन्त में और चतुर्थ अंक के प्रारम्भ में किया गया है—चातक्य और चन्द्रगुप्त का निष्ठा कलह और राक्षस तक इनकी सूचना पहुँचाना इत्यादि आदर्शक है। राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त का नन्दित्व स्वीकार करके आत्मसमर्पण कर देना 'कार्य' नामक अर्थप्रकृति है। अर्थव्यासों के अन्तर्गत रहे फलागन हम निर्विवादरूप से स्वीकृत कर सकते हैं।

सम्बन्धार्था—

“अर्थप्रकृतयः पञ्च पञ्चावस्था सन्निविदाः ।

यथास्तस्येन वायन्ते मुखावाः पञ्चसप्तयः ॥

अन्तरैकार्थसम्बन्धः सन्निरेकान्यदे सति ।

मुखप्रतिमुखे वर्गः सातमर्शोरसद्विदि ॥” द० क० १।२३

किसी एक प्रयोजन से परस्पर सम्बद्ध कथाओं को जब किसी दूसरे एक प्रयोजन से अन्वित किया जाय, तो वह सम्बन्ध सन्धि कहलाता है। एक ओर कथाओं का सम्बन्ध अर्थप्रकृति के रूप में कार्य से है, तो दूसरी ओर अवस्था के रूप में पलागम से दोनों को संबद्ध करने पर सन्धि हो जाता है। ये सन्धियाँ—मुख, प्रतिमुख, गम अवगम या विमर्श तथा उपसद्धति है। नाट्यशास्त्र में भरत ने वर्णित इसका स्पष्टीकरण नहीं किया है (ना० शा० २१, २६,) किन्तु, विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण में इस मत का पुष्टि की है —

“यथासरवमवस्थाभिराभिर्योगात् पञ्चभिः ।

पञ्चपैनेति शृष्टस्य भागा स्तु पञ्च सन्धयः ॥” सा० द० ६, ७४

इन्हीं अवस्थाओं और अर्थप्रकृतियों को ध्यान में रखते हुए आधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथाओं में समन्वय स्थापित कर इस नाटक में नाट्यसन्धियों की व्यवस्था की गयी है। चाणक्य को मुद्रा प्राप्ति तक की कथा इस सन्धि के अन्तर्गत आती है। ‘प्रवल’ और ‘हिन्दु’ के सहयोग से निर्मित ‘प्रतिमुखसन्धि’ में कथानक को फल की ओर अग्रसर करने वाले प्रत्यक्ष परोक्ष साधनों का वर्णन रहता है। मुद्राराक्षस के प्रथम अंक में चाणक्य की योजना शकटदास से पत्र लिखवाकर सिद्धार्थ को कायसिद्धि के लिए भेजना और चन्दनदाम को बंदी बनाने की प्रस्तुती इसी सन्धि के अन्तर्गत की गयी है। गर्मसन्धि अर्थात् पताका और प्राप्तिदाश के योग में ‘बीज’ की सफलता के सन्निधि रहने पर और पुनः उसके विकास की आशा होने का चित्रण रहता है। राक्षस की कूनीति के फलस्वरूप चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी का स्थिर न होना ‘बीज’ की अस्थिरता का सूचक है, किन्तु विराधगुप्त द्वारा राक्षस को उसके उपायों की विफलता की सूचना देने से चाणक्य नीति की विजय की पुनः आशा होती है। मुद्राराक्षस के तृतीय और चतुर्थ अंकों में प्रफरी और नियतासि के संयोग से ‘विमर्शसन्धि’ की योजना की गयी है। इसके अन्तर्गत सफलता के मा’ में आने वाले विघ्नों का वर्णन रहता है। चाणक्य पक्ष में चन्द्रगुप्त और चाणक्य का विमर्श—जो मिथ्या होने पर भी सत्य में परिणत हो सकता है, आर राक्षस पक्ष में भागुरायण द्वारा मलयकेतु के मन में राक्षस के प्रति सन्देह उत्पन्न करना इसके उदाहरण हैं। इस नाटक के अंतिम तीन अंकों में—‘हार्व’ और ‘पलागम’ के संयोग से निर्वहण सन्धि की योजना की गयी है, जिसके अन्तर्गत घटना क्रम क्रमशः उपसंहार की ओर उन्मुख रहा है। राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त का अभिषेक स्वीकार करना हम सन्धि की सफल परिणति है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुद्राराक्षस की कथावस्तु की योजना नाट्यशास्त्रानुसार ही है।

कथागत अन्य विशेषताएँ

संस्कृत नाट्यशास्त्र के अनुसार कथावस्तु तीन प्रकार की होती है—ऐतिहासिक (प्रख्यात), काव्यनिक (उत्पाद्य) और मिश्र। अरस्तू ने भी प्रायः तीन प्रकार के कथानक का संकेत किया है। दन्तकथामूलक, कल्पनामूलक और इतिहासमूलक। भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि से प्रसिद्ध में पुराण, दन्तकथाओं और इतिहास का अन्तर्भाव है और उत्पाद्य कथा काव्यनिक सृष्टि होती है। नाटक के लिए अनुपम विधि से कथानक का निश्चित विधान प्रख्यात रूप में होना चाहिए। उत्पाद्य त्प्राप्य नहीं है, किन्तु, विधान की दृष्टि से अधिक काव्य प्रसिद्ध है। क्योंकि प्रसिद्ध या प्रख्यात कथावस्तु में सौन्दर्य का आधान व्यवस्था पर निर्भर रहती है।

मुद्राराक्षस का कथानक ऐतिहासिक अर्थात् प्रख्यात है। इस नाटक में घटना-निर्देशन और चरित्र चित्रण पर एक ऐसा बल दिया गया है, अतः इन्होंने से एक किसी को प्रमुख मानना असंगत

होगा। भरतू ने कथावस्तु का आधारभूत या दृक्स्थिति को माना है। यहाँ भी भरतू का तात्पर्य दृक्स्थिति से यह नहीं है कि उसने एक ही व्यक्ति को कहा है। पर, एक व्यक्ति को कथा में भी अनेकदा तथा अन्विष्टि का अभाव हो सकता है। वस्तुतः कथानक के देखे जाये हैं—कार्य का पक्ष। अर्थात् उसने ऐसी घटनाएँ नहीं होनी चाहिए जिनमें परस्पर कोई अन्वय या अभाव सम्बन्ध न हो। क्योंकि ऐसी वस्तु—जिनके होने और न होने से कोई प्रत्यक्ष अन्तर नहीं होता, किन्तु पूर्ण इकार का स्वरूप नही हो सकता। सुदाराक्षस के कथानक का प्रत्येक प्रकरण अन्य प्रकरणों से सम्बद्ध तथा अन्त में प्रधान कार्य का उपकारक है। यही हम नाटक की अन्विष्टि का रहस्य है। इसने घटनाविशेष और चरित्र चित्रा पर एक जैसा बल प्रदान किया है। अतः इसने किसी एक को प्रमुख मानना असंगत होगा।

प्रधारन में छेख ने प्रस्तावना। नाटक के प्रारम्भ में सूत्रधारका उक्ति या, ने उद्देश्यक मानक भेद का प्रयोग किया है। भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रस्तावना के पाँच भेद माने गये हैं। यथा—उद्घाटनक, कथोद्घाटन, प्रयोगाभिप्रेत, प्रदर्शन और अवगलित। इसका आरम्भ पूर्णता से नरूप है। विद्यासा का परिचय पूर्णता का सूचक है। सुदाराक्षस की पूर्णता में विद्यासा की कथिक पूर्णता का अनिवार्य व्यवस्था की गयी है। क्योंकि इसमें वाच्य ने सूत्रधार द्वारा प्रमुख चरित्रादि पदों का ग्रहण पक्ष में अर्थ न लकर चरित्रगत पक्ष में अर्थ लेकर रमणच पर प्रवेश किया है।

कथावस्तु के दो भेद होत हैं—सूत्रधार द्वारा अर्थ। सुदाराक्षस में सूत्र्य है। कथावस्तु को स्पष्ट करने के लिये अर्थोपप्लेखों में से विषयमय का प्रयोग नहीं किया गया है। कूटिका अर्थात् नेत्रमय की हस्तों लिये वृष्ट स्थान दिया गया है और अस्वस्थ का योजना नहीं की गयी है। अज्ञानतर की योजना सातवें अंक में हुई है। क्योंकि इसमें पक्ष अर्थ में प्रस्तावित कथानक की ही अवधारित किया है। पाचवें और छठे अंकों के आरम्भ में छेख ने प्रवेशक का योजना का है। इस योजना में विशालदत्त ने नाटक के आस्वाद के नमने का उल्लेख किया है। कथा का आन्वय दृष्टि पर आश्रित रहना है और दृष्टि का आधार है आदर्शिकता। सुदाराक्षस का प्रत्येक घटना का अर्थानुसंगता के पीछे प्रकट कर से कार्यकारण की पूर्णता है। इसका ही नहीं, इसकी हर घटना में मशगल के साथ प्रयोग का भा आभास मिलता है। इसके हर चित्र में कल का अस्तित्व प्रकट होता है। यही विरोधानास हम कथा का रहस्य है। इसकी हर अन्तर्नाष्ठित राजनीतिक घटना की आन्वयिक दृष्टि पर हम इसकी प्रधानमान सनाहित अकारणता से विषय का अनुभव करते हैं किन्तु, शीघ्र ही इसकी यह प्रकृति ही जाता है कि हम नाट्यकता के पीछे भी कौटिल्य की नीति श्रद्धा का आधार वर्चमान है। इसके मयाग में भा प्रयोजन विद्यमान है। हम प्रकार एक और श्री हमारा विस्तृतभाव द्विगुणित हो जाता है और दूसरी बार अर्थित्व की भावना या परिपुष्ट हो जाता है। राजनीतिक धरातल पर अर्थित्व भावना यह सविस्तर परिपुष्ट हो कथन में सुदाराक्षस का सौन्दर्य है, जिसका विशालदत्त ने अपना अन्तर्द्वी प्रविष्टि के द्वारा उत्पन्न निरन्तर रूप से दर्शाना किया है।

प्रस्तुत नाटक में कथावस्तु का अन्विष्टि सुश्राव्य रूप में तो हुई ही है, अन्वय अर्थात् स्वगत भाषा का योजना भा आदर्शिकता में की गई है। इसके अन्तर्गत नाटककार ने 'अज्ञान-नाष्ठित' का भा अनेक स्थलों में योजना की है। वाच्य नभरे का अर्थ भा इसी प्रकार का है। अतः यह स्पष्ट है कि सुदाराक्षस की कथावस्तु की शास्त्रावली के अनुसार प्रस्तुत किया गया है और कथानक में हर दृष्टि से रोचकता का निर्वाह किया गया है।

चरित्र चित्रण

नाटक में कथावस्तु के बाद दूसरा स्थान है चरित्र चित्रण का। चरित्र चित्रण का मूल आधार है पात्रों का चरित्र चरित्र हो किसी व्यक्ति का रुचि अरुचि का प्रदर्शन करता हुआ उसके नैतिक प्रयोजन को अभिव्यक्त करता है। इस 'चरित्र' शब्द के वास्तविक अर्थ के विषय में पश्चिमी आल चर्कों में बड़ा मतभेद रहा है। एक ओर बोसा के आदित्यवेद्याओं की धारणा है कि चरित्र का अर्थ 'वर्णन सामान्य' है, अर्थात् वह केवल व्यक्ति का भद्रता अध्रद्रता का घोटन करता है। उधर, प्रो० तुचर का मत है कि इसमें व्यक्ति के नैतिक गुण दोष पर अवश्य बल है, कि तु, साथ ही व्यक्तिवैशिष्ट्य का जमाव नहीं है। चरित्र का वह अतिवैयक्तिक रूप जो श्वसपीथर या यैवर की रचनाओं में उपलब्ध होता है—अस्तु की परिभाषा उसे छोड़ जाती है। किन्तु, अस्तु की परिभाषा भी निश्चित व्याप्ति का घोटन इस सम्बन्ध में अवश्य करती है—व्यक्ति को निश्चितताएँ चाहे उसमें अन्तर्भूत न हों किन्तु सरल और सामान्य भेदक विशेषताओं का उभयमें अभाव नहीं है।^१ मुद्राराक्षस में दण्डनाटक की भाँति चरित्र भी बहुमुख्य है, किन्तु, इसकी एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इनमें स्त्री पात्र नहीं सी है। चन्द्रदास की परती अपवाद स्वरूप है। यद्यपि राजलक्ष्मी को अमूर्त नायिका माना जा सकता है, किन्तु यह कल्पनागत दुरायड का उदाहरण होगा। इसमें मुख्य रूप से चन्द्रगुप्त, चाणक्य, राक्षस और मलयकेतु का चरित्राकन हुआ है। अन्य पात्र गौण हैं। फिर भी इन पात्रों में कोई भी निश्चेष्ट चित्रित किया हुआ नहीं दिखाई पड़ता। प्रत्येक पात्र अपने आपमें पूर्ण है और नाटक का दृष्टि से उसके चरित्र का जितना विकास अपेक्षित है, हुआ है। सभी पात्र गुण-दोषों के मिश्रण हैं। वे छोटे २ पात्र भी अपने आपमें पूर्ण सशक्त हैं। नाटक के चित्रकार की तूटिका ने इन सबों में भी समानरूप से जीवन्तरस भरा है। सभी अपने आप में स्पष्ट एवं यथार्थ हैं। इन पात्रों के चित्रण में विशाखदत्त की अपनी शैली है। प्रत्येक पात्र का व्यक्तिव स्वतन्त्र है, उद्देश्य से प्रेरित है—कल्पित होकर भी कृत्रिम प्रतीत नहीं होते। इसके चरित्र चित्रण की एक और विशेषता यह है कि सभी पात्र इस तुलनात्मक ढंग से चित्रित हुए हैं कि उनकी विशेषताएँ अपने आप स्पष्ट हो जाती हैं। चाणक्य और राक्षस—एक स्थिरचित्त, जागरूक, कठोर, नीति निपुण एवं कभी न झुकने वाला है, तो दूसरा—अस्थिरचित्त, विस्मरणशील, उदार हृदय, सम्बल और अन्त में झुक जाने वाला है। इसी प्रकार चन्द्रगुप्त और मलयकेतु, मागुरायण और सिद्धार्थक, निपुणक और विराधगुप्त, वैदितरि और जाग्रति आदि पात्रों का विरोधी किन्तु सुन्दर तुलनात्मक चित्रण है।

अगर सच पूछा जाय तो चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह नाटक संस्कृत साहित्य में एकदम अकेला है। मुद्राराक्षस के चरित्र के विकास की विशाखदत्त ने मौलिक रूप से बढ़ाने का सफल प्रयास किया है। अन्य विशेषताओं को छोड़कर यदि इस नाटक के चरित्रों पर ही सूक्ष्म पर्दा डाला जाय तो इसकी उपयुक्त विशिष्टता शलक उठेगी। इसके सभी पात्र दृढ़रूप से चित्रित हैं। प्रत्येक पात्र के चरित्र का विकास प्रतिद्वन्द्व की पृष्ठभूमि पर विरोध और सघर्ष में हुआ है। चाणक्य और राक्षस, चन्द्रगुप्त और मलयकेतु—एक दूसरे के भयंकर प्रतिद्वन्द्वी के रूप में चित्रित हुये हैं। इनका चरित्रिक परस्पर के सघर्ष पर ही आधारित है। यदि चाणक्य नन्द वंश का भयंकर शत्रु है तो राक्षस नन्दवंश का अनन्य भक्त। चन्द्रगुप्त जिस अंश तक चाणक्य

का अनन्य एवं अनन्यक है, जो अनुगत में नन्दके राक्षस पर संदेह करने बाधा अनुधानों है। चाक्ष और राक्षस का पारस्परिक कष्ट क्षमियों और काइन जैसे कुछ नैतिक पदार्थों के लिए नहीं होता, प्रत्युत वे दोनों ही महान् आदर्शों के लिए एक दूसरे के साथ मर्यादित हैं। चाक्ष का आदर्श था—“एक बड़ौली हाथों के समान इस प्रकार मनमाना करने बाध, निरङ्कुश, रात्रिपञ्च के लिए धन का व्यय करने बाध और नैयन्द से उन्नत होकर अन्त करने बाध राक्षस को तुल्य से बहककर चन्द्रमुख की सेवा में प्रतिनियुक्त करके ही इन लक्ष्य। १।२३। और नन्दनो राक्षस के समान आदर्श था—“देव स्वर्गगोष्ठि आवस्यतेनराग्निन स्यादिति।”—विषयन की स्वच्छता के लिए इन पर इन अनन्य विचार करते हैं :—

नायक

भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार किन्हीं भी अभिनय के कथानुसू, नायक तथा रत्न में तीन प्रमुख वर्ग हैं। किन्हीं को रुक् को अलोकना इन्हीं तीन वर्गों के आधार पर ही बांटी है। पाश्चात्य पद्धति कथानुसू, चरित्रविचार, कथोरुपधन, ईश्वरकाय, शैली तथा वदेन इन छ वर्गों को मानती है और इन वर्गों के अतिरिक्त नायक को सादरों तक मानती है। भारतीय पद्धति के ऊपर कथित तीन वर्गों के भाग ही पश्चिम के नाने उस समझित हो जाते हैं। इदरुनककार धनधन ने नायक के स्वरूप में लिखा है :—

“नेत्रा विनोटी नयुरत्तमानो दृष्टः प्रियवदः।

रुद्धोक्त दुर्चिर्मानो व्यवस्थितो युवा।” दृष्ट २।१

वास्तव यह कि नेत्रा-विनोद, नयुर, त्यागो, चतुर एवं प्रियवादी जैसे अनेक विशेषणों से विभूषित होता है। धनधन की दृष्टि में ये नायक चार प्रकार के होते हैं :—

“भेदैःतुषां छेत्तमानोदाम्प्रोद्वैरयम्।”

अर्थात् क्रोध, शान्तचित्त एवं कृतात्मेन नायक चार छेत्त हैं। गनीर, धनवान्, स्थिरचित्त, अहंकार न्यून, विनयी एवं इहवर्ती नायक चारोदाम्प्र है। सामान्य दुःखान्ध्र अ नान्दि नायक चार दाम्प्र कहाते हैं। ईर्ष्यातु, अभिमानो, कषट, क्रोधी, कर्ष एवं आत्मनराक्षक व्यक्ति चारोदाम्प्र नायक माने गये हैं। इन कथितन शुरु के अतिरिक्त नायक को परीक्षा के लिए कुछ अन्य कर्तव्या इस प्रकार हैं :—

(१) नायक शब्द की व्युत्पत्ति ‘नी’ शब्दों वातु से है, जिसका अर्थ—‘देवता’ होता है अर्थात् वह प्रमुख भाग्यीर पात्र—जो नायक की कथा के विभिन्न दृश्यों की रचयिता में आकर करके अभिनय वदेन तक ले जान।

(२) वह प्रमाण पात्र जिसकी उपस्थिति कथा के आदि से अन्त तक हो।

(३) अग्रे रत्न का प्रधान अवयव हो।

(४) अभिनय के समस्त प्रेरणा-समाध का प्रताक हो।

(५) अभिनय के चरम पक्ष का अनोखा हो।

(६) उसके व्यक्तित्व का प्रभाव नायक के अन्य पात्रों पर हो।

(७) उसके व्यक्तित्व से नायक की हर रचना समृद्ध हो।

अब प्रश्न उठता है कि मुद्राराक्षस का नायक कौन है। चाणक्य, चन्द्रगुप्त अथवा राक्षस— इस विषय पर विद्वान् आलोचक एकमत नहीं हैं। इन तीनों को ही नायक मानने के विषय में पक्ष विपक्ष में तर्क दिये जाते हैं। इसका कारण विशाखदत्त की अनूठी प्रतिभा है। यह कहना अनर्गल न होगा कि संस्कृत नाट्य साहित्य के विशाखदत्त अनेक कवि हैं, जिन्होंने अपने कविकर्म के प्रति अत्यन्त सचेतन रूप से प्रमाणिक रहे हैं और साथ ही जिसने युग के बदलते हुए मूल्यों को सहजा है। इन तीनों पर हम क्रमशः विचार करते हैं —

मुद्राराक्षस का नायक : चाणक्य

‘मुद्रागमस’ में चाणक्य सर्वाधिक क्रियाशील पात्र है। इसकी विचारधारा चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व पर आच्छादित है। वह अपने प्रतिद्वंद्वी राक्षस के साथ राजनीतिक घात प्रतिघात में भाग लेकर नाट्यवस्तु का पोषण करता है। इसका नाटक के रंगमंच पर सर्वप्रथम नदवश विनाश के लिए एक दृढप्रतिष्ठ शासन के रूप में उदय हुआ है। नाटक के अन्त में भाई इसने राक्षस को अपने पक्ष में करके प्रतिज्ञा का सफल निर्वाह किया है। यह व्यवहारबुद्धि, शास्त्र ज्ञानी तथा राजनीति विशारद साक्ष्य है। शास्त्रीय दृष्टि से यह ‘धीरोदात्त’ नायक है। इसके व्यक्तित्व में धीर, ज्ञान एवं धीरोद्भूत का मिश्रण है।

“साना-यशुयुक्तरसु धीरज्ञान्तो द्विजादिक ।” दश० पृ० ८०

“धीरोदत्तरत्नहङ्गुरी चक्षुष्यो विकल्पन ।” दश० २१५

यह महान् चरित विशाखदत्त की महती कल्पना है। मुद्राराक्षस की तो बात ही क्या? संस्कृत नाट्य साहित्य के प्रायः सभी नायकों में सर्वाधिक प्रमाणीत्पादक यह चरित्र है। इस नाटक के सम्पूर्ण घटनाचक्र का एकमात्र नियन्त्रा चाणक्य ही है। अर्धशास्त्र और प्राचीन कथा परम्परा का चाणक्य भले ही एक महत्वाकांक्षी महाक्रोधी या महानैतिज्ञ आखण रहा हो, किन्तु विशाखदत्त का चाणक्य निरादरता, निस्वार्थमयता और लोकोत्तर की महती भावना का महान् चरित है। ‘निरोहणामीशस्तुगमिव तिरस्कारविषय’ (मुद्रा० ३१२९)। वह लोकोत्तर राजनीतिज्ञ है। उसकी सारी कर्तव्य बुद्धि मौर्य साम्राज्य की दृढ सम्पन्नता के लिए संचालित है। वह मौर्य चन्द्रगुप्त का अभेद्य कवच है। अपने आश्रितों का आधारस्तम्भ है। उसका तेजस्वी व्यक्तित्व चाणक्य के पराभव से तमतमा उठता है—“आ क एष मयि स्थिते चन्द्रमभिमवत्तुमिच्छति” (मुद्रा० प्र० अङ्क)। यह भावुक और भाग्यवादी नहीं होकर परम पुरुषार्थी है। अपने अनन्या-सक्त अनुचरों पर भी अप्रणय विश्वास न कर उसे अपनी प्रखर बुद्धि पर दृढ आस्था है —

“एका केवलमर्गसाधनविधौ सेनाशुद्धिः शोधिका ।

नन्दोन्मूलनदृष्टवोर्यमहिमा बुद्धिस्तु भागात्मम ॥” मु० २१२६

चाणक्य की यह उक्ति ही उसके समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। उसकी सम्मति में मूल व्यक्ति ही दैव में विश्वास करते हैं—‘दैवमविद्वान्त प्रमाणयन्’ (मु० तृ० अङ्क)। कीटव्य का अर्थ शास्त्र गुप्तचरो और गूढ़ प्रणिधियों के सम्बन्ध में जिन शास्त्रीय सिद्धान्तों का उल्लेख किया है, मुद्राराक्षस साम्राज्यवाद के इन देवदूतों की व्यावहारिक रूपरेखा तैयार कर देता है। शास्त्ररव शिष्य रूप में, जीवसिद्धि साधक रूप में तथा सिद्धार्थक कर्मकर रूप में चाणक्य की विभिन्न भावनाओं के प्रतिरूप हैं। चाणक्य प्रतिहिंसा और प्रतिशोध का अवतार है। वह अपने शत्रुओं के अपराध को क्षणभर के लिए भी सहा नहीं करता। प्रतिपक्षियों के नाम ही चर्चा आन ही

वह क्रोध से ठिठभिठा उठता है। वह अपने शत्रुओं को निन्दानाच करने में अपनी शक्ति का शोष नहीं करना चाहता। अपने शत्रुओं के प्रति अत्यन्त उग्र एवं क्रूर होना हुआ भी वह राष्ट्र के गुणों का प्रसक्त है। उसकी दृष्टि में राष्ट्र एक स्वाभिमन, बुद्धिमान, साहस एवं दृढ़ मनो है। उन्हा सुजाहिता के कारण वह राष्ट्र के गुणों का प्रसक्त भी है। उसकी दृष्टि को जितना चााक्ष समझना है, मनवत- राष्ट्र स्वयं भी अपने गुणों को उतना अधिक नहीं समझता। तना तो यह कहता है—“अ एव अनाक त्वमि मयदे यत्नः”।

चााक्ष स्वयं नसिष्काला, आत्मविश्वासी, दृढप्रतिष्ठ, वृत्तान्तिष्ठ, कठोर राजनीतिज्ञ एवं सत्तालुभा अपने स्वयं तक पहुँचनेवाला व्यक्ति है। कर्त्तव्य की बेदी पर अपने मन को सारा नष्ट भावनाओं को आहुति चढ़ानेवाला वह चारों ओर इन नाटक में प्रत्यक्ष भेद की मूर्ति है। इसका व्यक्तित्व निरन्तर आत्मनिरीक्षा में मग्न है—“आर्त्तं ननु कौटिल्यः” (पृ० ७०)। लोकहित के लिए आत्ममुक्ति की भावना से भरा वह व्यक्ति एक स्वतंत्र नायक करिब है। इसका नातिशय की सराहना चन्द्रगुप्त के कनुक्री, मागुराणा, सिर्दारक आदि स्वयं के पात्रों ने तो की ही है, परन्तु के राष्ट्रम, चन्द्रनदास आदि पात्र भी उसके बुद्धिबल में अभिभूत हैं। मुद्राराक्षस का चााक्ष बल प्रयोग को अनेका द्वन्द्व परिचयन पर अधिक विश्वास रखता है। रत्नान के बाद शत्रु पर विजय पाने की अनेका अपने निस्वार्थ व्यक्तित्व से बने अभिभूत करने की क्षमता रखता है। चााक्ष मूर्तिमान आत्मविश्वासी है। उसका अन्तर्भेद, उसकी आत्मनिरीक्षण करने अने किमी प्रवृत्ति शक्ति की प्रतिस्पर्धा स्वीकार नहीं करती। इसके नष्ट-भय ने आत्मोत्साह की भावना मरी है। वह महात्माय राष्ट्र की प्रथा, पराक्रमशक्ति और राष्ट्रमन्त्रि की स्वीकार करता है, किन्तु, फिर भी उसे अपने सर्व व्यक्तित्व का प्रतिस्पर्धी बना नहीं मानता। नौर्य साम्राज्य को सुदृढ़ स्थापना, हितसाधन और पुरुषार्थ-साधन का साधक बनने का वह दृढ़ निश्चय कर चुका है—

“चााक्षस्तत्तर्माप च नैव, केवल ते सत्तर्मा नदनुकृते, प्रथमवैरम्” ॥ मु० ३१।२

वह शिष्यवत्सल है, अतः चन्द्रगुप्त के राष्ट्र की निष्कण्टक बनाने का चिन्ता उसे निरन्तर रहता है। पर्वतेश्वर के प्रति विवकल्या का प्रयोग करके उसने जिस बुद्धिबल का परिचय दिया है, नाटक के अन्त में मलयकेतु की दम्बनसुक्त करके तथा चन्द्रनदास की अलग-सेठ का पद देकर उसकी ही उदारता व्यक्त की है। वह परम्परागत कथा पुराणों का चााक्ष नहीं है। वह कौटिल्य के अर्थशास्त्र का भी चााक्ष नहीं है। वह तो ‘मुद्राराक्षस’ का वह चााक्ष है, जो अपने व्यक्तित्व की महत्ता स्वयं ही नहीं समझता, प्रशस्त अपने आदर्शों पर चढ़ने के लिए अपने प्रतिपक्ष को भी दूरदर्शिता से, बुद्धि वैनव से—विचर कर देता है।

चन्द्रगुप्त की मग्राज् बना करके उसने अपने को मग्रा राजनीतिज्ञ होने का प्रसक्त प्रमाण दिया है। उसकी राजनीति दैव की शक्ति के समान अतुलनीय है। वह सुजाहिनी है, इन्तिल्ल राष्ट्रम की चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाने के दृढ़ संकल्प को पूर्ण करता है। चन्द्रगुप्त की महत्त सचिद्वि प्रदानकर भी वह निरस्त है और रावन्वतन में रहकर भी कुटी में बगी का जीवन व्यता करता है। महत्त क्रोध और आत्म प्रदसा उनके दो सहज उल्लेखनीय गुण हैं, किन्तु एक महत्तावादी व्यक्ति में इनका भी होना उतना ही स्वाभाविक है। चााक्ष सर्वप्रथम एक अनात्मन योगी है, फिर कर्मयोगी। इसका व्यक्तित्व किसी भी राजनीतिज्ञ के लिए—हिंसा ना काल में—किसी भी देश में सर्वथा आदर्श एवं अनुकरणीय है।

इस नाटक में चाणक्य का चरित्र इतना अधिक सशक्त बन गया है कि वही नायक प्रतीत होता है। इसका कारण स्पष्ट उसकी अतुल्य प्रज्ञा, कर्मनिष्ठा एवं दृढ़ प्रतिष्ठा है। उसके समस्त कार्यत्याग की वृष्टभूमि में चन्द्रगुप्त की विरोधिनी शक्तियों को एक सूत्र में बांधकर चन्द्रगुप्त के एकछत्र राष्ट्र की स्थापना के लिये होती है। अतः वह सद्बल ही सामाजिकों की समवेदना प्राप्त कर लेता है। वह मेधा, त्याग तेजस्विता, दृढ़ता एवं पुरुषार्थ का प्रबल प्रतीक है। भविष्य की घटनाओं को चुनौती देकर अपने रूप ढालने का वह वाजीगर है। शरीर में जो स्थिति मेरुदण्ड की होती है, वही स्थिति मुद्राराक्षस में चाणक्य के चारित्र्य की है। यह चरित्र अत्यन्त घटनापूर्ण गौरवशाली है। इसका मूल उद्देश्य है—नन्दवंश का मूलोच्छेद एवं चन्द्रगुप्त को भारत का सार्वभौम सम्राट् बनाना। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति वह अपनी राजनीतिक प्रतिभा के बल पर करता है। उसके चरित्र में दृढ़ता, आत्मत्याग, कर्मनिष्ठा, निर्भीकता, साहस एवं विद्वत्ता आदि गुण कूट कूट कर भरे पड़े हैं। सामंजस्य आदि कूटनीतिक चालों में वह पारंगत है और उनके प्रयोग करने में कभी भी नहीं हिचकता। साइंस होने के साथ साथ वह कठोर सिद्धान्तवादी भी है। वह विशुद्ध परिणामवादी है। वह सिद्धि देखना है, माधन चाहे कैसा भी हो। छल से उसने राक्षस को मुद्रा से ही राक्षस को अधिष्ठान कर लिया। चन्द्रगुप्त की रक्षा के लिये गुप्तरूप से वह पर्वतेश्वर की हरषा कराने में भी सकोच नहीं करता। वह क्रूर है, पर उसकी क्रूरता परिस्थितिजन्य है। सक्षप में हम कह सकते हैं—मुद्राराक्षस में चाणक्य का चरित्र समग्र रूप से अत्यन्त प्रभावोत्पादक, आकर्षक एवं प्रतिष्ठासम्पन्न है। वह नाट्य धर्म की साकार प्रतिमा है। निर्भीकता, स्पष्टवादिता, दृढ़ता, कठोरता, कष्टहिंश्रुता, उद्योगशीलता आदि विशेषताएँ उसके चरित्र को गौरवपूर्ण एवं महान् बना देती हैं। चाणक्य कूटनीति में पारंगत होने पर भी शेर बीते की तरह खूबार नहीं है। चन्द्रगुप्त उसका परम प्रिय है उसके साथ उसका व्यवहार पुत्र या शिष्य की तरह रुझ या कोमल है, अप्रिय तो किसी स्थिति में नहीं। पर चन्द्रगुप्त प्रभूति साधारण व्यक्तियों से केन्द्र राक्षस तक से भी उसका व्यवहार अक्षिप्त या अभद्रतापूर्ण नहीं है। राजनीति के साथ-साथ वह उसकी नैतिक विशेषता है। यह इतना सूक्ष्मदर्शी या दूरदर्शी है कि राक्षस जैसे राजनीतिक को भी उसकी कूटनीति के आगे बार-बार मुँह की खानी पड़ती है। असफलता शब्द से तो उसे परिचय ही नहीं है। उसका एकमात्र कारण उसकी असाधारण योग्यता के अतिरिक्त उसका वैराग्यपूर्ण तपस्वी जीवन भा है। लोग मगध सम्राट् चन्द्रगुप्त के गुरु एवं प्रधान सचिव की जगह वह विभूति देखते हैं —

उपरशकलमेतद् भेदक गोमयाया

बहुभिरुपह्वाना बहिषा स्तोम एव ।

शरणमपि समिद्धि शुभ्यमाणाभिराभि

दिनमिनपटलानां दृश्यते जीर्णकुड्याम् । मु० ३१५

तो दग रह जाते हैं। हमारे मन कीर्णा के समस्त समवेदनशील तार इस दृश्य को देखकर एक शरुत हो उठते हैं। उन तारों से घेसी करुण ज्ञान रागिणी फूट पड़ती है कि उनमें चाणक्य को सारी कूटनीति जो उन्मूल्यता उनमें धीरे धीरे विलीन हो जाता है, जैसे हम और मौचकर ज्योतिष्यक से धिरे हुए चाणक्य को त्यागी-तपस्वी के रूप में देखकर अपना माथा झुका देते हैं। वह हमारी सारी धब्बा का पात्र होता है। फिर नायकत्व का प्रश्न हा क्या ?

नाटक या नायक

(१) चन्द्रगुप्त—मौर्य-सम्राट् चन्द्रगुप्त भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से 'मुद्राराक्षस' क

नायक है। वह मनस्वी एवं अदम्य वज्रादी है। नौवें साम्राज्य के भार वहन करने के लिए सदैव तत्पर रहता है और लोक-व्यवहार से पूर्ण परिचित है—“अग्निः सत्सति लोकव्यवहारान्” (सु० १०००)। हमें राज्य में छठ-कन का कहीं अस्तित्व नहीं है। अराधितों एवं विद्रोहियों के प्रति वह अदम्य क्रोध है—“दधनप्यक्रियुः शत्रुदण्डो राजा” (सु० प्र० १००)। वह अक्रान्ता-वज्र एवं प्रकृतिप्रेमी है। हमें प्रायः नायक के सभी गुण पाये जाते हैं। धनप्रप ने लिखा है :—

“नेत्रा विनीतो नधुरस्तगता दक्षः प्रियवदः,
रक्तगोष्ठं शुचिर्जग्नो रुद्रवर्णस्तरो युवा।
दुष्टमुत्साहस्तुनिद्रा कलामनमनन्विता,
स्रोतो हृत्त वेदसो शालचपुत्र धार्मिकः॥” इत्य० ११

—नायक को नका, विमल, मधुरनासी, रत्ना, चतुर एवं प्रियवादी होना चाहिए। वह छोटालक एवं तक्षिन्न मन बाज होता है। उसे बाजबाज में प्रवीण, कुञ्जीन वशीलत्व, स्थिर मन होना चाहिए। वह बुद्धि, उत्साह, प्रज्ञा, स्मृति, कष्ट तथा ज्ञान से युक्त होता है। दूर, दृढ़, वैदस्यो, शालचपुत्र तथा धार्मिक होता है। चन्द्रगुप्त में प्रायः ये सभी गुण वर्णनात् हैं। सन्तुर् नौवें-साम्राज्य का अधिपति हस्तगत कर लेने पर भी उसे थोड़ा भी अहंकार नहीं है। वह सर्वज्ञानात्मान विमल स्वभाव का है। उसके इस स्वभाव से ही विजुष होकर राष्ट्रस ने कहा है—“बाह एव हि लोकेस्मिन् सनवित नहोदयः।” (सु० ११२)। चन्द्रगुप्त मधुर स्वभाव का एक प्रियवशी राजा है।

चन्द्रगुप्त पूर्ण स्वामी है—वह किसी भी स्थिति में सर्वस्वत्याग के लिए तत्पर रहता है। उसके मनुष्य जो कुछ भी कार्य वसस्थित होता है, दक्षगूर्वक उसका निर्वाह करता है। सामारिक किसी भी वस्तु के प्रति उसका कहीं भी मोह परित्यक्त नहीं होता। प्रकृतिप्रेमी होने के कारण कौमुदीनहोत्सव के प्रति उसका सामान्य आकर्षण प्रतीत होता है। इससे उत्पत्ति भी नकारक प्रमू है। इतिहासकारों का कहना है कि यह महाराज नन्द की एक दासी मुरा नामक युवा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। अतः यह युव था। वही कारण है कि चातक ने नायक में इसे ‘वृषल’ नाम से ही सम्बोधित किया है। केवल एक बार नायकान ने ही चातक ने उसे ‘नो राजन् चन्द्रगुप्त’ ऐसा सम्बोधन किया है। इसी कारण पर कुछ आशोचक उसे शत्रुलोत्पन्न मानते हैं। राष्ट्रम भी उसे कुछ इसी प्रकार समझता है।—

“पति स्वत्वा देवं मुननग्रेनुवैरनिबन्धन।

गता लिट्तेन श्रीशुभमविनागेन वृषलो।” सु० ११२

किन्तु, तत्त्व दृष्ट इसके विरुद्ध है। चन्द्रगुप्त अपने चातक का अन्वभक्त है। उसका राज्य भी निश्चिन्त मित्र है। कार्य चातक स्नेहवश भी उसे ‘वृषल’ कह सकते हैं। कुछ आशोचक वृषल शब्द का अर्थ भी हमारे दम से करते हैं। राजा वृषः वृषलः अर्थात् इस स्मृतति से वृषल का अर्थ राजाप्रिय हो जाता है। जो कुछ भी हो इसके अतिरिक्त हमने कतिपय अन्य भी गुण हैं—जिनके कारण इसे नायक का नायक कहा जा सकता है।

चन्द्रगुप्त प्रसारक एक राजा है। योग्य युव का योग्यतम मित्र है। इसकी प्रकृति धार्मिक है। लोकव्यवहार का वह पूर्ण ज्ञाता है। अग्रिमिन्नि योद्धा है। वह अपने गुरु के निधन में रहते हुए प्रत्येक कार्य को सर्वोत्तीकृत करना चाहता है। चातक चन्द्रगुप्त को पाकर गर्वित है और चन्द्रगुप्त चातक को पाकर निम्न है। चातक मनस्वी है,—विचारशील शासक है।

इसकी प्रत्येक गतिविधि में विचारों की प्रौढ़ता एवं यौवन का वृत्तांत परिलक्षित है। कवियों के शब्दों में —

“सुविग्रन्धैरै पथिपु विषनेष्वप्यचलता,
चिर धुर्येणोदाशुररपि भुवो यस्य गुरुणा ।
पुर तानेयोन्मै नववयसि वोढु व्यवसितो
मनस्वो दम्पत्वात् स्फुलित च न दुःख वहति च ॥” सु० ३३

विशाखदत्त ने चन्द्रगुप्त का चरितचित्रण नाटक की सहजता के अनुकूल किया है, अर्थात् उसने साधारण जन की तरह गुण और अवगुण दोनों विद्यमान हैं। वह आरम्भ से अन्त तक केवल मौर्य सम्राट् के आदर्श का ही निर्वाह नहीं करता है। इसका चरित्र नाटकीय स्थितियों के अनुरूप गतिशील है।

कुछ आलोचकों का आक्षेप है कि विशाखदत्त ने चन्द्रगुप्त को वास्तविक मौर्य सम्राट् के रूप में चित्रित नहीं किया और जो कुछ किया भी वह मौर्य सम्राट् के व्यक्तित्व के अनुरूप प्रणीत नहीं होता, अस्तु। यह निःसर्को बड़ा जा सकता है कि विशाखदत्त का चन्द्रगुप्त भले ही मौर्य सम्राट् के रूप में चित्रित न हो, पर मौर्य सम्राट् के कुशल शासक के रूप में चन्द्रगुप्त अवश्य ही प्रतीत होता है। चाणक्य का कृपल (चन्द्रगुप्त) केवल युद्ध ही नहीं है, उसके व्यक्तित्व में राजराजेश्वर का व्यक्तित्व झलकता है। चन्द्रगुप्त यदि कृपल अर्थात् महान् नहीं होता तो अशोक भी म्रियदर्शी कैसे हो पाता। चाणक्य का कृपल तो महान् अर्थ का ही वाचक है अथवा उसका स्नेह सूचक है। इस अभिप्राय की पुष्टि नाटक की ही इस उक्ति से स्पष्ट हो जाती है —

“नन्देविभुत्तमनपेक्षितराजराजैरभ्यासित च कृपेन कृपेण राजान् ।” सु० ३१२८

इतना ही नहीं, चाणक्य ने भी सब कुछ चन्द्रगुप्त की हितकामना से ही किया है, अतः फल निम्नि अर्थात् नदबध के उन्मूलन द्वारा राज्य की प्राप्ति और राज्यस्य द्वारा मज्जित्व की स्वीकृति—चन्द्रगुप्त की ही दुर्र है। चाणक्य ने फलनिम्नि के लिए अपेक्षित कारणरूप सामग्री की योजना भले ही की है, किन्तु फल के प्रति आसक्ति उसके मन में नहीं है। इसके अतिरिक्त चन्द्रगुप्त का व्यक्तित्व उत्तराष्ट्र विवासशील रहा है, अतः उसी को मुद्राराक्षस का नायक मानना समीचीन होगा।

(१) राजस—पाश्चात्य समीक्षकों ने इस नाटक के शीर्षक को ध्यान में रखते हुए राजस को ही नायक माना है। वह अत्यन्त वैभवशाली, प्रभावपूर्ण, यशस्वी एवं कुलीन मन्त्री है। उसके चरित्र में सद् के साथ कुछ असद् का भी सम्मिश्रण है। वह मूलतः सज्जन होने पर भी सर्वथा निर्दुष्ट नहीं कहा जा सकता है। उसके स्वभाव में कहीं न कहीं ऐसी कमजोरी भूल करने की प्रवृत्ति—है, जिसके कारण अपनी विपत्ति के दायित्व से वह सर्वथा मुक्त नहीं बड़ा जा सकता। अपने किसी न किसी स्वभाव-दोष या भूल के कारण ही वह दुर्भाग्य का शिकार बनता रहता है।

संग्रही नाटक में उसका चरित्र विरोधों ने बीच ही विवक्षित हुआ है। उसकी भावुकता ही उसकी पराजय के कारण है। उसकी सबसे उल्लेखनीय विशेषता स्वामी के प्रति निष्ठा का निर्वाह है—पहले न दबध के प्रति तदनन्तर मलयचेतु के प्रति और अन्त में आशोर्वादरूप में चन्द्रगुप्त के प्रति इसका अनेकान् प्रमाण मिलता है। इसकी इस भक्ति को देखकर ही चाणक्य कहता है—
“अहो राजसस्य नदबधे निरावशयो भक्तिगुणः” नन्द के प्रति एतन्त निष्ठा और राजस की महत्वाकांक्षा इन दोनों की एक ही माना जा सकता है। वह कृदनीति का मर्मज्ञ है, नेपावी तथा।

दक्षविद्या में निपुण है। उसने सैन्यसंचालन की पूरी क्षमता है। **राजनीति** है, बोर है—
'द्वित्रैः नेबनीला चरतिवज्रपा राक्षसराज यासां' २१४। **राजनीति** और पञ्च को
समन्वयों के विभिन्न पहलुओं के व्यापक आकार पर राज्य का चरित्र चित्रित किया गया है।

राज्य के पात्र कर्ण व्यक्ति नहीं हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वह सामान्य बल-बुद्धि वाला,
माधारण जन है। वरुण का नागर्य है—महान मानव नावनाओं से युक्त। इसके चरित्र के साथ
पद-पद पर देश के का तादात्म्य होता रहता है। किन्तु, वह सैन्य प्रह्वि का ही है, नावा का
नहीं। इसकी विरक्ति करने तक मानित न रहकर व्यापक जनमानस को प्रभावित करने में समर्थ
है। यह आवेश, पद त्वरा में आकर, अपनी प्रह्वि से लाचार होकर अपने निर्वासनस्थी भूत के
कारण दुर्भाग्य का शिकार बन जाता है। महान मानवीय दुर्बलता के कारण यह निर्वासन होने में
भूलकर जाता है, जिसने प्रेशुक के हृदय में स्वयं सद्गानुभूति का उद्रेक होने लगता है। चूँकि इनकी
विनयि इसके शीघ्र का अग्रस्था अनुपात में कहीं अधिक है। अतः प्रेशुक के मन में चन्द्रगुप्त या
वात्स्य की अग्रस्था इसके प्रति अधिक कष्ट आकर्षण उत्पन्न होता है। इसकी पराजय मन्त्र
निर्वासनस्थी भूत के कारण हो होता है। किन्तु, इन भूत के लिए इसके कहीं स्वभाव, कहीं
आवेश की प्रभावना, कहीं त्वरा का प्रह्वि, कहीं महत्वाकांक्षा और कहीं भविष्य विद्वान् ही—
वस्तुतया ही है। यह अपने स्वभाव के कारण ही किया नौ अनजान या नवीन व्यक्ति पर सहसा
विश्वास कर लेता है, यथा-सिद्धार्थक। उन्ने इसा भूत के कारण जोरुमिदि और सिद्धार्थक जैसे
व्यक्ति पर विश्वास कर अपनी पराजय को मान्यत्र कर लिया है। ये दोनों ही चापस्य के
प्रतिषेध हैं और वचनाचक्र का बदल देने की सामर्थ्य रखते हैं। इन दोनों पर विश्वास करना ही
उसके पतन का मूल कारण बन गया है।

राज्य स्वार्थरहित है। उसकी एकमात्र प्रवृत्ति है न-इमान्द्रव्य का पुनरुद्धार करना।
इतिहासिक हमने मलपरेतु का माधव ग्रहण किया है—

“देव स्वर्गाग्रेषु शान्तवनेनाराधितः स्थायिनि ।” गु० २।१

राज्य एक सच्चा मित्र है। विद्यालक्ष ने इसकी नेत्रामावना का जो चित्रा किया है वह
भारतीय मान्य साहित्य की कर्तृ देन है। अपने मित्र चन्दनदास के जीवन की रक्षा वह अपने
आपको धन्य में डालकर भी करता है। चन्दनदास उनका अग्रिम मित्र है—“द्विजोन्मिष
हृदयन्”। इनका पुरा जीवन निराशा और दुर्भाग्य से उन्नेकित रहा है। वह पुनर्प्राप्ति की
अग्रस्था अधिक मालुष और भाग्यशायी है। कठप्रति की अवरोध और विस्तराशीलता—विने-
षतः अपने सहायकों या योजनाओं का स्मरण न रहना—के कठत्वरूप ही उसे सफलता नहीं
मिल सकी। स्वामी मन्त्र के प्रति अनन्तरागि एव चन्दनदास के प्रति लोकोत्तर स्नेह उसके चरित्र
के दो अविस्मरणीय गुण हैं। इसकी समस्त गति निर्वलता यह है कि इसने किन्तु पुनर्प्राप्ति की किन
कार्य के लिए निपुण किया है—उसी तक कि यह उनके मान तक की भी भूल जाता है—
‘कस्मिन् प्रयोजने मनाव प्रहित इति प्रयोजनाना वाङ्मयाश्च सतु अवधारयामि ।’ इस प्रकार
हम देखते हैं कि राजनीति में निष्ठात्र होते हुए भी राज्य की पराजय होती है। किन्तु, पराजित
राज्य भी इनारे सामने मशान बना रहता है।

इतना ही नहीं राज्य अपनी अनुकूलि एव राजनीतिक शक्ति का इतना सुन्दर स्वरूप प्रकट
करता है कि नामय जेला कूनीतिव भी उसे सारसी देता है :—

“गुरभिः कुरुनाज्जैशैदीर्घजागरहेतुभिः ।

धिमायासितासेना वृषलस्य मतिश्च मे ॥” गु० ७८

“—यह वही राक्षस है जिसने रातों दिन जगकर, गभीर उपायों और वदियों द्वारा बहुत बहुत दिनों तक चन्द्रगुप्त की सेना को परेशान किया, और मेरी बुद्धि के छत्रके छुड़ाये ।

चाणक्य को राक्षस पर सबसे बढकर नाज है, वह उसे सैकड़ों सेनाओं से बढकर मानता है :—

“—एका केवलमर्थमाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽपिका ।

नन्दोन्मूलनदृष्टवीजमहिमा बुद्धिस्तु मायान्मम ॥”

इतना ही नहीं, जब कुत्रिम चाण्डालों द्वारा उसे राक्षस के कैद होने की खबर मिलती है तो वह खुशी से बासों उछलकर पूछता है कि बताओ, क्याओ किसने ऊँची जंजीर लपेटोवाली आग को कपड़े के छोर में बाँध लिया है । किसने इना को फूँदे में फास लेने की हिम्मत की है । किसने मद-मत्त हाथियों को पछाड़कर दहाड़नेवाले सिंह को पिंजरे में कैद करने का साहस दिखलाया है ? और वह कौनसा बाक्य बहादुर है जो मगरों, बडियालों से भरे समुद्र को तैरकर पार कर लिया है ?

“केनोनुङ्गशिसाकलापकपिबो बद्धः पटन्ते शिखी,

पाशै केन मदागतेरगतिता सद्यः समासादिता ।

केनानेकपदानवासित सटः सिहोऽपित” पकरो,

भीमः केन च नेकनक्रमकरो दोर्भ्या प्रतीर्षोऽर्णव” ॥ गु० ७९

इसी एक श्लोक में राक्षस की धीरता, गम्भीरता और नीरता का परिचय मिलता है ।

राक्षस के व्यक्तित्व में उसकी अपनी विशेषताएँ हैं । इसके स्वभाव में मानव स्वभाव की विभिन्न भक्तियों का चित्रण है । मानव मन की आशा और निराशाओं के घात-प्रतिघात में राक्षस का व्यक्तित्व अपनी स्वाभाविक महत्ता के कारण अजेय दिखाई देता है । विशाखदत्त ने चाणक्य के हाथों में राक्षस की मुद्रा के पड़ जाने की, चाणक्य की मुद्रा में राक्षस के आ जाने से जो तुलना की है—उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राक्षस की हार उसके जीवन की एक आकस्मिक घटना है, एक अनहोनी है और राक्षस की महत्ता घटाने की अपेक्षा बढ़ाने वाली है । अतः पाश्चात्य विद्वान् भरत्यू, रिचर्ड और नूवर के सिद्धान्तों के अनुसार ‘राक्षस’ ही इस नाटक का नायक तथा यह नाटक दुःस्वप्न है ।

मुद्राराक्षस का अङ्गीरस

भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से किसी भी नाटक के मूल तथ्यों में नेता, वस्तु और रस को परमावश्यक माना गया है । पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में भी यद्यपि ‘रस’ नामक किसी वस्तु का उल्लेखन नहीं है, फिर भी कार्य और व्यापार की सक्रियता को वहाँ भी महत्त्व दिया गया है । जहाँ तक विशाखदत्त के मुद्राराक्षस का प्रश्न है—भारतीय रस सिद्धान्त की परम्परा से तो अनुप्राणित है ही—पाश्चात्य परम्परा के कार्य-व्यापार की सक्रियता का भी ज्ञान या अनजान में ही सुन्दर समन्वय हो जाता है ।

मुद्राराक्षस यद्यपि एक सुस्वान्त नाटक है, फिर भी इसके मूल में एक करुण चेतना सुख की तह में छिपी हुई है । नाटक की पक्षि पक्षि में सुख दुःखात्मक भावना का समन्वित रूप हमें मिलता है । इस नाटक में बैसे तो अनेक रसों की सुन्दर योजना हुई है; किन्तु इसके अंगी रस के रूप में ‘वीर रस’ की सफ़ल अभिव्यक्ति हुई है ।

नाटक के आदि से अन्त तक जो रस विद्यमान रहकर, अभिनय में अभिव्यक्त अन्य रसों की अपेक्षा सर्वाधिक व्याप्त हो—जैसे इन अक्षोरस कहते हैं। अक्षोरस में मुख्यभाव की मूढ-वृत्ति का प्रतिकूल नहीं रहता है। यह रस नाटक के मूढ उद्देश्य या कलागमन का त्वादरूप होता है, नन्ध ही प्रेक्षा के पश्चात् पाठक या दर्शक पर पढ़नेवाले प्रभूत प्रभाव का अभिव्यञ्जक होता है। अगो रस का सम्बन्ध अन्य रसों से करीब-करीब नहीं होता, जो सम्बन्ध स्थायी और संचारी मावों का परस्पर होता है।

भारतीय नाट्यशास्त्र में वीर, शृंगार और कर्मा रसों में से किसी एक को अक्षोरस मानने का बात है। मुद्राराक्षस में वीर्य के विचार में वीर रस की प्रधानता परिलक्षित होता है। हमने चान्दमर का उद्देश्य नन्दवश का विनाश कर चन्द्रगुप्त की सार्वभौम सत्ता की स्थापना करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति में नाटक का प्रधान चक्र समुत्थित हुआ है। कथावस्तु के प्रारम्भ से अन्त तक वीर रस किसी न किसी रूप में विद्यमान है। कथावस्तु की प्रधान शृङ्खला की दृष्टि से भी अगो रस वीर ही प्रधान होता है। क्योंकि कथावस्तु की प्रायः सभी प्रमुख शृङ्खलाएँ नन्दवश के विनाश से सम्बन्धित हैं। किन्तु भी प्रकार के उद्वेग का स्थायमानव उत्साह है और उत्साह से ही वीर रस का अभिव्यक्ति होता है।

पात्र भा वीररसानुसूत हैं। चान्दमर एवं चन्द्रगुप्त इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं। इनका मूढवृत्ति—नन्दवश का विनाश कर चन्द्रगुप्त के एक छत्र राज्य की स्थापना है। इन भावों का प्रतिफलन भी तो वीर रस में ही सम्भव है। इस नाटक की प्रमुख घटनाएँ अधोद्विज हैं :—

- (१) नन्दवश का विनाश,
- (२) चन्द्रगुप्त के राज्य का स्थापना,
- (३) राज्य को अधिकृत करना।

इन तीनों घटनाओं का सम्बन्ध मर्याप्य है। तीनों में आश्रय चन्द्रगुप्त या चान्दमर है। आश्रयन भीन अवश्य हो जाते हैं। किसी भी प्रकार से विचार करने पर नाटक में सम्पूर्ण अवधों के उपयोग से वीररस की ही निष्पत्ति हुई है। नाटक में अन्तिम स्थल पर जो प्रभाव की अभिव्यक्ति होती है, वही पूर्ण रसनिष्पत्ति का कारण बनकर चमत्कार उत्पन्न करने और ओकोउर का व्याप्तक आनन्द देने में सहायक बनती है। इस प्रभाव की अभिव्यक्ति में मूढता वीर रस ही प्रधान उद्देश्य है। इसका शास्त्राव विवेचन इस प्रकार है :—

(१) नन्दवश का विनाश

- १—स्थापनाभाव—उत्साह
- २—मूढमन—मन्द
- ३—आश्रय—चान्दमर या चन्द्रगुप्त
- ४—वैशान—मन्द का अत्याचार
- ५—अनुभाव—चान्दमर की प्रताप
- ६—संचारीभाव—मन्द

वीर रस के अभिव्यक्त इस नाटक में अनुत्त, रौद्र, वीर्यत्स शृङ्गार आदि अन्य रसों का भी वक्र-वक्र उन्नावेद्य है। जहाँ कहीं भी विषम परिस्थिति आती है—चान्दमर की नीति दाढ़ बनकर उपस्थित हो जाती है। चान्दमर की प्रतिष्ठा में रौद्र रस की अभिव्यक्ति है। मन्द पर्वदेश्वर की

शृंगार में बीभत्स रस का समावेश है। हास्य का सम्पूर्ण नाटक में अभाव है। शृंगार का विस्तृत चित्रण नहीं है, पर राजवल्लभी के वणन में शृंगार फूट पड़ा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मुद्राराक्षस नाटक का अगीरस बीर है, पोषकरस रौद्र और निर्यामक शान्त है। इस प्रकार रसयोजना को दृष्टि से भी यह नाटक सफल है।

निष्कर्ष

'नाटक का नायक कौन है ?' इस नाटक के सम्बन्ध में यह ज्वलन्त प्रश्न है। संस्कृत नाट्यशास्त्र की परम्परा संभवतः चन्द्रगुप्त को नायक मानना चाहे पर विशालदत्त स्वयं चाणक्य के पक्ष में है। पाश्चात्य आलोचकों ने राक्षस के परामर्श को दृष्टि में रख कर 'मुद्राराक्षस' को दुःखान्त नाटक की संज्ञा दी है। हमारी सहानुभूति भी राक्षस को उपलब्ध है, फिर भी वह नाक के फल का भोक्ता नहीं है। अतः भारतीय दृष्टिकोण उसे नायक नहीं मान सकता। दरुत नायकविषयक द्वन्द्व चन्द्रगुप्त और चाणक्य को लेकर हो है और वह द्वन्द्व भी इसलिए कि विशालदत्त संस्कृत नाटक साहित्य के क्षेत्र में अपादमस्तक मौलिक है। इस सन्दर्भ में यह अत्युक्ति न होगी कि इन महाकाव्यिक महाकवि की प्रतिभा रुढ़िग्रस्त सठियाए हुए संस्कृत नाट्य साहित्य के अक्षरों में हो नहीं समा सकी है। फलतः इनका प्रत्येक पात्र चरित्र से अधिक चारित्र्य का प्रतिपादक बन गया है, जो नायकविषयक द्वन्द्व का मूल कारण है।

विशालदत्त किसी भी चरित्र से सम्बन्धित वस्तु, घटना किया या पात्र की समस्या के बहिः पक्ष के प्रति जितना ही उदास और पराङ्मुख प्रतीत होते हैं, अपने पात्रों के अन्तः पक्ष के प्रति वे उतना ही अधिक सचेष्ट और जागरूक प्रतीत होते हैं। उनको तरल विचक्षण, पर सूक्ष्म दृष्टि पात्रों की बहिर्गतिविधि पर नहीं टिकती प्रत्युत उनके अन्तर में प्रविष्ट होकर उनका परिष्कार कर देती है। वे झूठों का समझ कर, उन्हें एक सूत्र में पिरो देने वाले माखी नहीं, बल्कि उन्हें निचोड़ छानकर, इधर तैयार करने वाले गधी की तरह लगते हैं। उनमें रक्षीयता, नाटकीयता, राजनीतिकता, युगप्रभाव, जन-जीवन, तर्क-वितर्क, संघर्ष समाधान—सब हैं, पर सब एकदम सूक्ष्मरूप में, झगधरूप में। इसीलिए मुद्राराक्षस में, एक जागरूक कुम्भकार की तरह उन्होंने पात्रों की कम मूर्चियाँ बनायी हैं, पर भी कोई भी मूर्ति उनकी अंगुलियों का स्पर्श या सको—उनमें उन्होंने एक मन्त्रदृष्टा ऋषि की तरह नयी प्राणपतिष्ठा कर दी है। अतः उनके सभी पात्र बोझले हैं। वे भाउक या तरंगी नहीं, शास्त्रीय विवेक की पूरी सजगता से समुक्त विदग्ध नागरिक हैं।

विशालदत्त इतिहास में इतिवृत्तात्मक नहीं, पुरातनवेत्ता हैं। पुराण में बाण्यार्थ के प्रतिपादक नहीं लाक्षणिकता के आग्रही हैं। यही कारण है कि मुद्राराक्षस का प्रत्येक चरित्र भावसिक्त एवं सर्वाधिष्ठित है, अतः एवं सन्धे अर्थों में सभी चरित्र उनकी आत्मा के शिल्प हैं। उनमें बुद्धि का उत्कर्ष और हृदय की प्राणवत्ता—दानों दूध और पानी की तरह घुल मिल गये हैं, भीरु प्रज्ञा तथा प्रतिभा, इतिहास एवं कल्पना का भन्व्य समावेश बन गया है। चाणक्य और चन्द्रगुप्त दोनों के व्यक्तित्व में एक भी चरित्र ऐसा नहीं जो दर्शक या पाठक को केवल वहाँ ही ले जाय, इनकी एक भी क्रिया ऐसी नहीं—जो केवल सोचने को ही बाध्य करे। पाठक को लगता है कि इन चरित्रों में कोई आवर्त है जो उसे नचा-नचा कर गोते लगवा देता है, इनके व्यक्तित्व में कोई ऐसी शक्ति है जो पहले वह हाथियों पर उठाये चलती है, और फिर गहरे सींचती चली जाती है। राक्षस और मलयकेतु की प्रतिद्वन्द्विता में चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त का व्यक्तित्व ऐसा है, जो अध्ययन मनन के क्रम में प्रत्येक बार राजनीति की सीमा रेखा में नये रंग भरता चलता है। फिर भी

देना लगता रहता है कि कहीं इन चरित्रों में कुछ और है जो पकड़ में नहीं आ रहा है। इन चरित्रों के चित्रक शब्दमनुद् नयेक बार कुछ नयी व्यवस्था और भावना लेकर उन्मथित होत हैं, फिर ना लगता रहता है कि कुछ और शेष है जो वे कह देना चाह रहे हों। इन दोनों चरित्रों को यही मन्त्र बड़ा विशयना है, जिसके कारण ये नायक के अन्तर्गत उठते हैं।

'सुराराधन' में पद पद पर राजनीतिक स्थल प्रथम का पट्टन, विद्रोह, विश्वासघात और विद्रोह उद्घाटन किया गया है। चाणक्य और राज्य की राजनीतिक चालें सत्यता और दुर्बलता के प्रतीक हैं। दोनों के बात प्रतिपादन के द्वारा उन्मथित करने में विशालरूप जगना प्रकृति के अनुसार इनने मूल्य और मूल मूल्यों को उन्मथित करने का प्रयत्न करने लगत है कि कथानक उलट-उलट कर रहे जात है। जहाँ पद सत्य नाश्रित रूप में उन्मथित किया गया है, वही नटकीय मध्य उलट गये हैं।

विशालरूप का कलाकार मुख्यतः चाणक्य की नीति के सन्दर्भ पर मुग्ध है और उनका इतिहासकार नीतिज्ञान चन्द्रगुप्त के गौरी व्यक्तित्व पर दुःख है। उनका कलाकार जहाँ कैम्पिच नाति के उत्कर्ष से आकर्षित होकर बह्यप्रकारी बन गया है, वहाँ उनका इतिहासकार चन्द्रगुप्त की सजग चेतना से पूर्ण सजगित होकर उन दराओं को खोज में मलम्ब हो जाता है, जिनमें चन्द्रगुप्त का ऐतिहासिक व्यक्तित्व लो गया है। विशालरूप का चाणक्य कहीं गैरगौरी का मरकर जाल फैलाकर एक ऐन्द्रजातिक बन गया है जो कदाचित् प्रत्येकाश की भावना से विश्रित बना है, पर कहीं भी इसका व्यक्तित्व आभास को उच्च भावना का प्रभावना नहीं करता है। उसकी एकमात्र दुर्गमनीय पत्र मध्य इच्छा है—नन्दवश का विनाश कर नीच-मात्राचर की स्थापना। इसका सारा व्यक्तित्व सम्पूर्ण भारत को नीच-मात्रा की एक छवच्छा में बंधने की मन्थना का निदर्शन है।

इसकी सम्पूर्ण दुर्बलताओं के चल पर चाणक्य की कृता—नाशनाशना की तरह छाया डुर है, उसका प्रत्येक कार्यक्रम एक ऐसे माण्यो-कुच के सृष्ट आकर्षक बन जाता है कि उसका सम्मिलित प्रभाव उसे इस नाटक का नायकत्व स्वतः सन्निहित कर देता है और नायक चाणक्य के व्यक्तित्व से एक नन्दर नीली मानी भव आने लगती है, जिसका सम्पद विद्रोहना मनमव नहीं तो कठिन अवसर बन जाता है। छाया है कि हम एक ऐसे व्यक्तित्व को छनछाना में बैठे हैं, जहाँ राजनीति की शुष्कता, कदाचित् नननरोर देने वाली दुःखानु भूति और कला के रम्य विविध पुष्प, सब धार पर आकर एकाकार हो गये हैं। यही है चाणक्य का गौरीवर्ण्य व्यक्तित्व, जहाँ इतिहास एक पुराण की मूर्ति में सांस्कृतिक एवं राजनीतिक नीति या परिपाक का आदर्श उन्मथित किया गया है।

इतिहास प्रसिद्ध बुद्धिवाद का पात्र चाणक्य, वह व्यक्ति है—जो अपनी बुद्धि से बड़े से बड़े साम्राज्य की नींव तक डिला सकता है, जो अपना कूटनीति के कारण देश का मानविश्व बढ़त सकता है, जिसकी कल्पना गहन से गहन मनस्थानों का संनाशन खोज लगी है—देशा वैदिक व्यक्ति ही विशालरूप का अभिप्रेत नायक हो सकता है।

भारतीय जीवन में चाणक्य एक आकर्षक व्यक्ति निश्चय रूप से हैं। विशालरूप ने सुराराधन में इनकी कैदिल्लनीति पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। चाणक्य ने यह नाटक घटनाप्रधान न होकर पात्रप्रधान है। इस नाटक में विशालरूप का उद्देश्य आचार्य विष्णुगुप्त की सराहना की है। चन्द्रगुप्त की अंतिम मर्दन में दर्जना है—“कठन सत्रादितनस्य विकल्पितम्।” (मु० ग० प्र० ५०) उसका प्रतिश्रुति नदःमात्य राज्य करता है—

“आकर सर्वशास्त्राणां रत्नानामिव सागर” ।

गुणैर्न परितुष्यामो यस्य मत्सरिणो वयम् ॥” मु० रा० ७।७.

विशाखदत्त ने स्वयं सिद्धार्थ के मुख से इस चरित्र को प्रशंसा की है —

जयति अयनकार्यं यावत् कृत्वा च सर्वम् ।

प्रतिहतपरपश्चा अर्यचाणमन्यनीत ॥ मु० रा० ६।१

लेखक ने अपनी प्रशस्तियों के अनुरूप ही आचार्य विष्णुगुप्त का ऊँचा चरित्र खींचा है। चाणक्य इस नाटक के नायक तो हैं ही, सर्वाधिक प्रभावशाली चरित्र भी रखते हैं। चाणक्य का चरित्र अत्यन्त उज्ज्वल, स्पष्ट, आदर्श एवं अनुकरणीय है। इसका निजी स्वार्थ वहाँ कुछ नहीं है। इसका तन, मन, धन सभी देश के लिए अर्पित है। यह स्वाम की तो प्रतिमूर्ति है। यह अनासक्त योगी है। इसका गृह विभूति है —

‘उपलसवलमेतद् भेदक गोमयाना

बहुभिरूपहृन्नाना बहिषा स्तोम एष ।

शरणमपि समिद्धि शुभ्यभाणमिराभि

विनमितपटलाना इत्यते जीर्णकुड्यम् ॥” मुद्रा० १।१५

नाटक के प्रारंभ होते ही रंगमंच पर आर्य कौटिल्य का न्यक्तिरव प्रभावोदीप्त हो उठता है। अर्यशास्त्र का चाणक्य-दैव और पौरुष के सारसम्य का चिंतन करने वाला आचार्य विष्णुगुप्त मुद्राराक्षस में बोला बदल लेता है। यहाँ उसे अपने पौरुष में आगाध आस्था है, अपने पुरुषार्थ में अटूट विश्वास है। रक्ष्यप्राप्ति के लिए अदम्य उत्साह है। इसके न्यक्तिरव में, जिसकी अभिनयक्ति विशाखदत्त ने उसके वाचिक, वाचिक तथा मानसिक न्यायार्थों के वर्णन द्वारा की है। इसकी प्रत्येक उक्ति में आत्मविश्वास की भावना ही स्पष्ट होती रहती है। नाट्यकारभ में ही सर्वप्रथम जो उमड़ी कड़कती आवाज निकलती है—उसके समस्त न्यक्तिरव का आवलन कर देती है —

‘आ क एष मयि स्थिते चन्द्रमभिभवतुमिच्छति बलात् ।” मुद्रा० प्र० अ०

उसका अहित करना अदम्य बूढ़ सह क मुख से जर्जस्तो होकर दौत निकालने के समान भवकर है —

“जम्भाविदारितमुखस्य मुखात् स्फुरन्तीम् ।

को हर्तुमिच्छति हरे परिभूय दम्प्राम् ॥ मु० रा० १।८

अत हम कह सकते हैं कि चाणक्य ही शास्त्रीय दृष्टि से इस नाटक के फल का मोका है। वह अपरिमदी है, निष्काम कर्म योगी है। चक्रवर्ती सम्राट् का निर्माता है, मौर्यसाम्राज्य का प्रतिष्ठापक है, सर्वप्रथम गृहद्वारत का उपस्थापक है। उसकी परिग्रहशून्यता का ही प्रभाव है कि उसके लिए मौर्यसम्राट् चन्द्रगुप्त भी, शूद्र है और मौर्य है, बृषल है, शुण के समान तिरस्क रणीय है। नाट्यकार के शब्दों में—

‘निरोद्वाणभाशस्तृणमिव तिरस्कारविषय ।” मुद्रा० १।१६

✓ मलयकेतु—मलयकेतु एक पर्वतीय राजकुमार है। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त को अपेक्षा इस राजकुमार का चरित्र अधिक विकसित है। इसके पिता पर्वतक के मृत्यु में चाणक्य का हाथ है। मृत्यु विषकन्या द्वारा हुई थी। चाणक्य के द्वारा सर्वप्रथम इसके विषय में यह सूचना मिलती है कि उसने भागुरायण के द्वारा ‘तुम्हारे पिता चाणक्य को मरवाया है। ऐसा भय दिपलककर कुसुमपुर में भगा दिया गया है। राक्षस ने यही सोचकर इसका आश्रय ग्रहण किया है कि पिता

वध से प्रज्वलित मलयकेतु इसका प्रतिशोध अवश्य लेगा। क्योंकि वह पराक्रमी है, विजिगीषु है। किन्तु, विशाखदत्त ने इस पात्र को ना सख्त-व्यक्तित्व प्रदान नहीं किया है। चातक्य के प्रति चन्द्रगुप्त के मन में वैसा दृढ़ विश्वास था, वैसा विश्वास राजस के प्रति मलयकेतु के मन में उदित नहीं हो सका। चंचल और ब्यबेकी प्रकृति के होने के कारण उसने राज्य के प्रति अविश्वास किया और चातक्य के शुभचर मातुराया को अपना विश्वस्तु विचारद मनना—और, वही पराक्रम का मूल कारण बन गया। वह मातुराया का बलवर्ती बन गया। राज्य के विरुद्ध वह बने बने वैसा सनसता है, वह उसे उम्मी प्रकार समझता है। वह अपनी बुद्धि का विशुद्ध प्रयोग नहीं करना चाहता। राज्य को निष्कण्ट कायों को भी वह कपटपूर्ण समझने लगता है। मर्य में उसे असुरा का रूप आती है। अथर्वार्थ को दयार्थ मानकर ही वह गुट है। हित अहित की पहचानने की—मनो धुनना है ही नहीं। अपनी ही ब्यबेकिता के कारण वह साचकर पान प्रसन्न है—“इह या न चचिनादसन्तोषप्रति” (मु० ब० अ०)

जिन अनुपात में चन्द्रगुप्त चातक्य का मक है उन्हीं अनुपात में मलयकेतु राज्य पर मदेह करता है। वह भीरोदय प्रकृति का धामक है। अन्तः नहस्ताकाशा, अस्थिरता, भ्रूकर आदि प्रवृत्तियों उसके व्यक्तित्व में सहज प्राप्य हैं। विवेक के अभाव में वह मातुराया के द्वारा ठगा गया है। मातुराया ने राज्य के विरुद्ध उसे इतना अधिक नर दिया है कि राज्य की प्रत्येक गतिविधि में उसे दोष के ही दर्शन होते हैं। वह राज्य को मलिन करता है। उसे मला बुरा कहता है। उसका आक्रोश यहाँ तक बढ़ जाता है कि वह राज्य को इन शर्तों में अपनाहित कर देता है —

“ताव निपात्य सहन्नुज्जनाश्रुतोयै ।

अन्वर्थकोपि ननु राज्यस गद्यमोजमि । मु० रा० ५१४ ॥

वह राज्य को नाम्ना नहीं करना भी राज्य ही मानता है। तभी तो उसे राज्य का इतना तिरस्कार करके भी सतोष जब नहीं हुआ, तब उसने कहा :—

“अनृप्यस्य विज्रेतुषिक लाभनिष्ठत ।

कल्पिग्य मूल्यनेदेश कूप अवता वदन् ॥” मु० रा० ५१५ ॥

राजस के लिए इसने बड़ा और आवाज हा क्या हो सकता था ? उनक मुह से केवल इतना ही निकला—“नहि पर्वतेश्वरे विपकन्या प्रयुक्तान्”

अविबेकिता, गभीरता दूरदृष्टि आदि सद्गुणों के अभाव के कारण वह अपने विश्वस्तु राजाओं का बध करा देता है। वह इतना भी नहीं सोच पाता कि राज्य अपने स्वामी मन्द के कर शत्रु चन्द्रगुप्त से कैसे सम्बन्ध कर सकता है ? मलयकेतु इतना मूर्ख होगा, इसकी कल्पना भी राज्य नहीं कर सकता था ।

चतुर्थ और पंचम अङ्क में मलयकेतु के शरीर का विकास जिस प्रकार हुआ है, उसका निर्वाह आगे तक नहीं किया जा सका। इसका कारण है वह राज्य के आश्रय का उरजुक्त पात्र नहीं है। वह मन्द है, उसने अपना ही सेना की केन्द्र बिन्दु का अपने ही हाथों विनाश कर दिया है। वह कृप्य है। लोगों को पहचानने में सर्वथा असमर्थ है। उसके पास समर्थ मैन्य शक्ति थी, पराजनों योद्धा थे, किन्तु, अपना ही अयोग्यता, गभीरता और दुर्नीति के कारण उसका उपयोग नहीं कर सका। मोर्य सम्राट् को पराजित करने की अपेक्षा अपने ही दुर्बुद्धि-बाल में पैम कर अपनी पराजय को आहत कर लेता है।

अन्य पात्र—विशाखदत्त के इस मुद्राराक्षस नाटक में पात्रों की भीड़ तो नहीं कही जा सकती—पर जो भी पात्र है—भादों के आकाश में रेलम रेली करते हुए वादलों की तरह हैं। नाट्यकला की दृष्टि से इस दोष का प्रधान कारण उनका वही नाटककार है जो कौटिल्यनीति की भव्य दीवार के एक एक छिद्र का निदर्शन बड़ी सूक्ष्मता से करता चला जा रहा है। उसके अप्रधान पात्र हमारी किसी न किसी दुबलता के प्रतीक बनकर उपस्थित होते हैं, और वे अनेक हैं। सारे विचारे अवयवों को जोड़ने के उपक्रम में और तथ्यपूर्ण वातावरण के निर्माण के काम में वे पात्र राजनीति के धरातल पर अनावास उठते चले गये हैं। पर, मुद्राराक्षस का नाटककार राजनैतिक व्यामोह में फँसकर कहीं छल नहीं कर पाया है।

इस नाटक में छोट बड़े कुल मिलाकर लगभग २९ चरितों का अपनी अपनी विशेषताओं के साथ चित्रण किया गया है। अप्रधान पात्रों में चन्दनदास, नागुरायण, सिद्धार्थक और शकटदास का चरित्र उल्लेखनीय है। विराधगुप्त, निपुणक वरमक प्रभृति श्रेष्ठ पात्रों के चरित्रों का स्थान उतना महत्वपूर्ण नहीं है।

✓ भागुरायण—भागुरायण गुप्त साम्राज्य का प्रमुख योद्धा और सेनापति सिंहबल का छोटा भाई है। यह चाणक्य का अत्यन्त विश्वासपात्र गुप्तचर है। प्रथम अंक की समाप्ति पर सर्वप्रथम इसकी चर्चा हम सुनते हैं कि यह भाग गया है। यह भाग जाना ही इसकी वह गुप्त योजना है—जिसकी लेखमाला कौटिल्यनीति की छोल गहरों से लिखा जाती है। शत्रु भी इसकी योजना को सराहना करते हैं। वह स्वामिमक्ति, दूरता, साहस, धैर्य और कष्ट-व्यपराधना का श्रेष्ठतम उदाहरण है। चाणक्य की मर्यादा का रक्षा के लिए वह सदैव चिन्तित और प्रयत्नशील रहता है।

भागुरायण उन पात्रों में है जो नाटक में थोड़े समय के लिए ही हमारे सामने आते हैं और अपने कर्तव्य की पलक से प्रेक्षक का मन मोह लेते हैं। भागुरायण रंगमंच पर केवल दो बार आता है। प्रथम नाटक के आरम्भ में उसके भाग जाने की सूचना मिलती है। मागकर यह मलयकेतु का मन्त्रोत्तर स्वीकार कर लेता है। वह नीर और उत्साही तो है ही, साथ ही बड़ा ही आत्मविश्वासी भी है। चाणक्य की कूटनीति और अपनी बुद्धि पर उसे पूरा भरोसा है। मन्त्रोत्तर स्वीकार करने के बाद कुछ दिनों तक इसका कुछ भी पता नहीं चलता है। फिर चतुर्थ एव पंचम अंक में यह रंगमंच पर हमारे सामने आता है। इसका मुख्य कार्य इन्हीं दो अंकों में वर्णित है। मलयकेतु उसके हाथों का पुत्रला है। वह जैसे चाहता है, उससे वैसा ही करवा लेता है। उसका चरित्र आदर्श गुणों का सारंगान है। मलयकेतु को वह ठग लेता है, उसके साथ विश्वासघात करता है पर स्वेच्छा से नहीं, आर्य विष्णुगुप्त की आज्ञा से। हम विश्वासघात के लिए उसे पक्षात्पात होता है। उसकी आत्मा उसे धिक्कार देती है — 'कष्टमेवमप्यस्मासु स्नेहवान् जुमारी मलयकेतुरतिसप्ताग्न्य इत्यहो दुष्करम्।' उसे हम बात का कष्ट है कि वह धन के लिए आत्मा को चाणक्य के हाथों में बेच दिया है। फिर भी उसने जिस नरपरता, गंभीरता एवं स्वाभिमान के साथ अपने दायित्व का निर्वाह किया है, उसके लिए उसका चरित्र महान् है।

✓ सिद्धार्थक—सिद्धार्थक सच्चे अर्थ में चाणक्य का गुप्तचर है। यह विश्वसनीय पात्र है। रामस के गुप्त प्रणिधि के रूप में प्रतिनिवृत्त शकटदास की गतिविधि के परीक्षणार्थ चाणक्य ने सिद्धार्थक को प्रतिनियोजित किया था। यह सीधा सच्चा, पर कुशल गुप्तचर है। यह स्पष्टवादी एवं अपने चरित्र पर विश्वास करने वाला शूरमा है। इसके जीवन में न कहीं चिन्ता है और न किसी काम में इसे भ्रम ही होता है। वह अपनी बुद्धि पर मुग्ध है, और चाणक्य की कूटनीति से घबड़ाता है। एक पर इसे गर्व है और दूसरी से घबड़ाता है। इसे अपने स्वाभिमान का सदैव

ध्यान रहता है। चातक्य को महत्वाकांक्षा इसका सर्वत्र है। अपनी भावनाओं का हनन करके ना-मकी आकांक्षा का वह पालन इमानदारी से करता है। चातक्य की आकांक्षा का पालन यह जानें बन्द कर करना है। सप्तम अंक में यह चातक्य की आकांक्षा का चम्पल्लिके रूप में इनार मानन वर्णित होता है—“अदेहि चाण्डालवेषधारिणी मूला चन्दनदास वध्यस्थान नराय” विस्तार का दृष्टि से इसका चरित्र महत्पूर्ण नहीं है, फिर भी इसका चारित्र्य इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह चातक्य की आकांक्षा का ही प्रतिनिर्णय है—“वयस्य का वाक्यको जोविमुक्षान भार्य चाक्यस्यादाति प्रहिण्यति” यह स्पष्ट है अपने आपका चातक्य का कार्यभार के लिए परिस्थिति के अनुकूल दास बना है।

✓ चन्दनदास—इस मन्त्रा नाटक में सर्वाधिक मनोरंजक एवं कष्टा चारित्र्य चन्दनदास का है। वह प्रतिभा, सत्य, मातृक और कोनक कुल का जगतक है। यह लोकार प्रेता है। जहरियों का नया है। वेदन और का रतन है। यह लक्ष्मी का वरद पुत्र है। दुश्मन पुर का प्रभु-पुत्र है। यह राजसूय का परम प्रिय मित्र है। अपने प्रथम काल में राजसूय न बनना परिवार इमा के घर परोक्ष के रूप में रख दिया था। यह प्रथम अंक के बीच में तथा सप्तम अंक में रंग मंच पर उत्पन्न होता है। वह राजसूय पर उत्पन्न परिवार के प्रांत अनन्य स्नेह रखता है। उसका जीवन का यह प्रेम और श्रम उसकी व्यक्तिगत विदेशता के रूप में इनार मानने जाता है। राजनीतिक विषय के समय, अपना सर्वनाश के समय भी अपना मित्रता का उसे ध्यान है। राजसूय परिवार की ओर यदि किना का ध्यान जाता है तो प्रत्यक्ष यह अनन्य-भवहार कुलका के साथ उनकी रक्षा का मार्ग बूढ़ निकलता है। चातक्य के द्वारा राजसूय के परिवार को नगने पर तथा मही सींगने पर प्रादुर्भाव की बन्दी देने पर कहता है “आर्य, कि ने नय दर्शनम सन्तनपि मेह अनात्तराजसूय गृहजन न समंवापि कि पुनरसुतम्।”

चन्दनदास ने राजसूय के परिवार की रक्षा करके अपना अनन्य मित्रता का परिचय दिया है। उसका आत्मत्याग इतना प्रबल है कि वह सम्पत्ति और परिवार का विनाश का त्याग करन के साथ ही अपने राजसूय के हितार्थ अपने प्राणों का भी मोह छोड़ दिया है। उसका आत्म त्याग इतना प्रबल है कि चातक्य को भी इस पर बहिर रह जाना पड़ता है। इसके इस पुत्र का प्रस्ताव चातक्य और राजसूय एक साथ करते हैं —

“श्रुतेर्धर्मदानेन पुनरसुतेने जन ।

क इदं दुष्करं दुर्वादिदानीं शिवाय विना ।”

चन्दनदास के व्यक्तित्व और किना ने एक सच्चे मित्र का सरलता और त्याग, तरलता और आदर्शवादित्व, व्यावहारिकता और नानाशक्तिदान, भवेदन्वीलता और सदाचारिता—साथ साथ बहता है। यह चरित्र इस नाटक का वह आदर्श है जो मित्रता के नाम पर अपने व्यवहार और त्याग के प्रांत सर्वाधिक सचित्र है। वने प्रसन्नता है कि उसका विनाश वैदिक दास के कारण नहीं, बल्कि मित्र के कार्य से हो रहा है—“आर्य, अयं भिन्नकार्यो मे विनाशाय पुन-पुनरुदात्तः”। वन्ने अपने इस त्याग के लिए त्याग और विनाश के लिए पश्चात्ताप कभी नहीं किया। उसे तो कष्ट केवल इन बातों के लिए है कि सर्वत्र चरित्र दुष्टता का भार ध्यान देने पर ना उसका विनाश चरित्रों का तरह हो रहा है। जल्दा बहिष्कार के कारण चन्दनदास ने जो कुछ भी किया ठीक बजाकर, अपनी मित्रता और त्याग के तराजू पर लौटकर। इसलिये करना से अधिक इसका चरित्र आदर्श है, समा किया है स्वीकार है, इसके सभी विचार आकर्षक हैं, सब को स्थिति अनुकरणीय हैं। जीवन और जगत के कष्ट पर धार रहने वाली मित्रता, उसकी

एक करण किन्तु, मधुर झाको देने वाले आदर्श चरित त्याग को प्रमुखता देने वाले एक मित्र का उत्कर्ष, स्वार्थ की अभिव्यक्ति में स्वतः समर्पण देने वाला व्यक्तित्व, भला किस का मन नहीं मोह लेता है।

चन्दनदास नि स्वार्थ, दृढप्रतिष्ठ, मित्रत्वविशारद एव आदर्श चरितवान् है। वह राक्षस का मित्र, सहयोगी, सहायक एव अनन्य हृदय है। उसकी कर्तव्य बुद्धि स्पष्ट है, उसका आत्मविश्वास दृढ़ है, उसका कार्य अप्रमत्त है। सर्वतोभाष्य इसका चरित्र अनुकरणीय एव आदर्श है।

छोटे-छोटे पात्र—शकटदास राक्षस का अनन्य सहयोगी है और स्वाधरहित होकर उसकी सहायता करना चाहता है, किन्तु सिद्धार्थक द्वारा उससे लिखाए गए छलपूर्ण पत्र ने राक्षस के परामर्श को सुनिश्चित कर दिया है। संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि इन पात्रों और अन्यान्य गौण पात्रों ने अपने क्रियाकलाप से नाटक की कथावस्तु के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि विशालदत्त ने अपने प्रत्येक चरित्र औचित्य पर ध्यान दिया है। यही कारण है कि विशालदत्त का चरित्र सशक्त, गंभीर एव ओजपूर्ण है। इनके छोटे छोटे पात्र भी सशक्त हैं—विरूद्धक, निपुणक, आक्षिप्तुण्डिक, शकटदास प्रभृति सभी पात्र चाहे सूक्ष्म हों, किन्तु विशालदत्त की अनुक्तियों ने उनमें भी जीवन रस भर दिया है। ये चरित मृच्छकटिक के चरित्र की तरह जीवन्त और जाग्रत हैं, किसी हद तक उससे भी अधिक सशक्त, अधिक स्पष्ट और अधिक यथार्थ।

एकांग्विति—मुद्राराक्षस में घटनाओं और चरित्रों की समानरूपेण प्रधानता है, अतः इसमें सबाद वीराल की ओर यथोचित ध्यान दिया गया है। स्पष्ट है कि ये सबाद एक ओर कथागत में सहायक रहे हैं और दूसरी ओर चरित्र-व्यञ्जना में भी इनका योग सहायनीय है। इसके नाटकीय व्यापार की गत्यात्मकता, घटनाचक्र का उतार चढ़ाव, सभी प्रमुख पात्रों के साथ चलते हैं। इसके हर कार्य-व्यापार—कथाचक्र की धुरी बना है, जो सच्चे अर्थ में अनेक होकर भी एक ही है। इसकी घटना इतना सशक्त एव सुनियोजित है कि इसमें से एक को भी यदि हम थोड़ा भी इधर-उधर करें तो सर्वाङ्ग ही छिन्न भिन्न और अस्त-वस्त हो जायगा। इसकी प्रत्येक घटना में परस्पर आवश्यक या सभान्व सम्बन्ध है। इसकी इस सततता में प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक अङ्क अपने आप में एकांग्विति या व्यापार की दृष्टि से स्वतः पूर्ण है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि प्रत्येक अङ्क स्वतन्त्र होने के नाते एक दूसरे अङ्क से अविच्छिन्न या असम्पृक्त है। खूबी तो यह है कि अपने आप में पूर्ण वे अङ्क एक दूसरे में जुड़कर नाटकीय एकांग्विति या व्यापार शृङ्खला की निमित्त में सहयोग देते हैं। इसकी कोई घटना या परिस्थिति ऐसी नहीं, जिसे बलपूर्वक प्लान कर दिया गया हो, सभी स्वाभाविक हैं, सभी एक ही लक्ष्य की ओर अभिद्रुत हैं प्रस्तुत नाटक की वस्तु का निर्वाह बड़े ध्यान से नियोजित किया गया है। इसकी व्यापारिकांग्विति का जो सुगठित सुष्ठुरूप दिखलाई पड़ता है, वह अन्यत्र संस्कृत नाटकों में दुर्लभ है। विशालदत्त ने प्रसंगानुसृत कथोपकथन के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजगता दिखलाई है। स्वगतभाषण के प्रति उनके मन में कुछ पूर्वोद्ग्रह रहा है। मुख्य हों चाहे गौण—सभी पात्र स्वगत चिन्तन के अभ्यस्त हैं, जिसने कहीं कहीं नाट्यवस्तु में सूक्ष्मता में देखने पर कुत्रिमता प्रतीत होती है। व्यापार भाषित का प्रयोग अपेक्षाकृत सीमित रूप में हुआ है। पात्रों की एक अन्य विशेषता यह है कि वे स्वगतभाषण अथवा संक्षिप्त वार्त्तालाप द्वारा एक दूसरे की प्रवृत्तियों को प्रकाश में लाने रहे हैं। विशालदत्त ने सबादों में विशिष्टता लाने के लिए भाव मुद्राओं का भी सफल निर्वाह किया है।

‘प्रविशति सचिन्तः’ ‘प्रविश्य विचार्य’ ‘सवेगमात्मगतम्’ आत्मनादुरथ यः, ‘सम्पद्म् अवलोक्य’ मादि
किया सके। इसके उदाहरण हैं।

देश काल और उद्देश्य

मुद्राराक्षस नाटक में अपना स्वयं विशेषता है—यह नाटक संस्कृत नाटकों के लिए नैतिक
वातावरण लेकर आता है। नम्रुत नाटकों को रोमन्ता परम्परा और नम्र चित्रा को
छोड़कर सामनातिक पद्धतों एवं छल प्रयत्नों को अपने वर्णों का विषय बनाया है। छलक ने
प्रसंगानुसार सामाजिक वातावरण का भी चित्रा किया है। चन्दनदास, दुर्लभदास और राक्षस
जैसे विशिष्ट चित्रों पर विन्ना ना समाज को सर्व हो सकता है। यमराज चित्र दिखाकर निष्ठा
मागने, जनता का उत्पत्ति में विश्वास होने और राजपुत्रों द्वारा आभूषण धारण करने का चित्रा
भी ईश्वरका को अभिव्यक्ति में मशरूक रहा है। कौमुदा महोत्सव को परम्परा का उल्लेख भी
देश-कालानुरूप है। पवित्र हृदय मागुराणा, जिने रोच के लिए जनच्छापूर्वक कीर्तित्य के
आदर्शानुसार मलयवेतु के माथ विश्वासगत करना पड़ता है, माझापुत्र यमिदायक, विवेक धन
के लिए मननीय होकर न चाहते हुए भी चान्दाल का भेष बनाना पड़ता है। सभी पात्र अपना
स्वयं व्यक्तित्व लेकर आते हैं। तात्पर्य यह कि मुद्राराक्षस में समाज के हर स्तर का कार्य-कलाप
समिविष्ट करने का चेष्टा की गयी है। इस नाटक के अभ्यसन से यह भा स्पष्ट हो जाता है कि
यस समय चतुर्वर्ती में नरार्दा के अनुसार नाटकों का विश्व यादर था तथा चान्दालादि का
समाज में अत्यन्त निम्न स्थान था। समाज और जीवन के हर में कार्य-कलाप का मत्ता अमि
कार्यः प्रविष्टि कर उनकी स्वातन्त्र्य को भीन रूप दे कर देशकाल का पुरा मञ्जिवेश किया गया
है। विशालदत्त से पूर्व संस्कृत नाट्यवेचना अभिवात्यवादा परम्पराओं में पोषित थी। किन्तु
इस कवि ने अभिवात्य वर्ग के साथ सामान्य स्तर के जनजीवन के चरित्रों का भी अपने नाटक में
समावेश कर एक नया परिष्कार उत्पन्न कर दिया है।

प्रस्तुत नाटक की रचना का उद्देश्य नन्दवज्र के नाश द्वारा नीर्य साम्राज्य को न्यायना और
चातक्य के चरित्रोत्कर्ष का वर्ण करना है, जिसमें नाट्यकार को राजनीति मरुलना मिली है।
मुद्राराक्षस में सब से बड़ी विशेषता यह है कि इनमें तात्कालिक नारायण राजनातिक पद्धत
का एक निम्न चित्र है। कलात्मक निरुपगता के उदाहरण संस्कृत के दूसरे नाटकों में ना मिल
सकते हैं, पर कथा के साथ मात्रात्मक राजनातिक निरुपगता का विविष्ट रूप रसा में परिष्कृत
होया है। इनमें न तो आम्र मविष्य की समावनाओं की शक्ती प्रस्तुत की गयी है और न कोई
रोमांटिक वातावरण उत्पन्न किया गया है। चातक्य की कुटिलगति—जो है, वह वही है,—
निर्भय, नम्र, कठोर, सत्य, न कुछ अधिक न कुछ कम। वही विशालदत्त चातक्य का कुटिल
नाति का उदाहरण, गनीर बनकर अनेक पात्रों में बिखर आये हैं, किन्ती एक पात्र के निर्माण
में उनकी प्रतिमा नहीं अकटो—सभी पात्र अपने अपने क्षेत्र, अपना अपनी सामा में चातक्यनाति
के उच्च विविष्ट पद्धतों के स्तर का दर्शाए करन चलते हैं, किन्ती विविष्टता में हा पड़ता है,
जिनकी खण्डना में ही अन्तर्पडता है।

इस नाटक पर कुछ आलोचकों का यह काक्ष्य है कि इनमें छल प्रपञ्च वर्ण द्वारा किसी
उल्लेखनीय आदर्श की स्थापना नहीं की गयी, किन्तु राजनातिक के क्षेत्र में दृढगति का प्रयोग
कम है। वस्तुतः इस क्षति में आदर्शोन्मुख चर्चा का सुन्दर निर्वाह हुआ है।

मूलतः किसी भा नाटक के उद्देश्य दो प्रकार के होते हैं। एक तो भावबोध के आवर्तन से उत्पन्न और दूसरा कुछ प्रभावों एवं कुछ अन्य प्रवृत्तियों के सयुक्त कारणों से प्रेरित। इन कारणों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक उल्लेख प्रमुख भी होते हैं। जब कोई नाटकीयवस्तु सामान्य प्रवृत्ति या भावबोध से विकसित होती है तो उसका उद्देश्य गहरा और तात्त्विक होता है। जब वह राजनीतिक प्रवृत्तियों के सयुक्त कारणों से विकसित होता है तो वह केवल आकारात्मक मोड़ में कुछ प्रचलित रूपों का समर्थन करके समाप्त हो जाता है। यह आकारात्मक उद्देश्य, कुछ काल के लिए अतिप्रबल हो जाता है और वह ऐसा प्रभाव उत्पन्न करता है कि लगता है जैसे पूरा का पूरा क्षेत्र मूलतः भावबोध के आवर्तन से उद्भूत है, किन्तु कालान्तर में ऐतिहासिक दूरी प्राप्त करने के बाद, जब उसका मूल्यांकन होता है तो प्रायः ऐसा लगता है कि समूचा का समूचा स्वरूप ही एक प्रकार की स्थिति से समुद्भूत है और सारा नवापन सारा आग्रह केवल मूल भावबोध के विभिन्न संभव पक्षों में से एक पक्ष का ही समर्थक है।

मुद्राराक्षस का उद्देश्य इसी द्वितीय कोटि का है। भारतीय जीवन में चाणक्य का व्यक्तित्व अति आकर्षक सिद्ध हुआ है। संस्कृत साहित्य में विशाखदत्त को अपने इस नाटकीय उद्देश्य के लिए रयाति तो मिली ही—मुद्राराक्षस से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य के शतपथ कवि, नाटककार और लेखकों ने इस महामहिम व्यक्त को इसी उद्देश्य की सफलता के हेतु विभिन्न रूपों में अपनी अपनी ध्वजा चलाई अर्पित की है। विशाखदत्त ने मौर्ययुग के भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और नैतिक दशा का चित्र खींचकर आदर्श-मुक्त वार्थ की स्थापना में सफलता प्राप्त की है। यह बात इस नाटक के कथानक एवं वर्णनों से स्पष्ट हो जाती है। विशुद्ध राजनीतिक राजनाति के विवरण विद्वत्पण की मूल उद्देश्य मानकर लिखा गया यह नाटक अपने उद्देश्य की पूर्ति में बड़ाचिप उपलब्ध सम्पूर्ण संस्कृत नाट्य साहित्य में अकेला है। उद्देश्य की दृष्टि से संस्कृत नाट्य साहित्य के रंग मंच पर विशाखदत्त का उदय एक असाधारण घटना है। विशाखदत्त के सग्न व्यक्तित्व ने कृटनाति के सभी तत्वों को आत्मसात कर लिया है। इसके लिए उन्होंने अपने नाटक की कथावस्तु राजनातिक्षेत्र से ली है। ऐतिहासिक और पौराणिक वृत्त के आधार पर लेखक ने अपने नाटक का ढाँचा रखा पर चाणक्यनीति का मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। इस नाटक में राजनाति की स्वयं कथा और उदात्त चरित्रों से शक्ति संचय करना ही नाटककार का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ण में नाटककार को यथष्ट सफलता मिली है।

नाटकात् अन्य विशेषताएँ

मुद्राराक्षस कर्मसाधना अथवा अहिंसा कार्यतत्परता का संदेश देने वाली सफल नाट्यकृति है। इसमें वीररस के 'कुम्भवीर' नामक प्रकार का भली भँति निर्वाह हुआ है। शृंगारादि अन्य रसों का समावेश हमेशा कथावस्तु के अनुकूल रहा है। इस नाटक का उद्देश्य केवल राजनीतिक घट्यर्थों का प्रतिपादन मात्र न होकर सत्त्वमय ओजोगुण का प्रकाशन भी है। अतः नाट्य वृत्तियों की दृष्टि से एक ओर जहाँ हम नाटक में सत्त्वगुण प्रेरित 'सात्त्वता वृत्ति' है, वहाँ दूसरी ओर छल, वपट तथा अभिमान की समूचक 'आरभटी वृत्ति' भी है। सात्त्वती वृत्ति के अन्तर्गत नाट्यकार ने 'संवातक' नामक भेद का प्रयोग किया है। क्योंकि वैदित्य से राक्षस का विग्रह, भिन्न अथवा स्वामी के प्रति अनन्यभक्ति का फल है और वह उसे दैवतशाय भी मानता है।

मुद्राराक्षस अपने नाटकीय वैश्वर्य के लिए सुप्रसिद्ध है। रंग मंच पर अभिनीत होने की योग्यता ही इसकी सफलता का अंतिम प्रमाण नहीं है। यद्यपि इसमें विशाखदत्त की अभिनयकला का

विशुद्ध मन मन स्थान पर परलब्ध है, फिर ना इच्छा नष्टा च्छेदवत् उच्छेदी वा कल्प प्रज्ञा से अक्षय होने के हाथ पड़ा है। यह ना कालिका का उपासकों से हो गे है और गुरु दुरु बनने बिना ना इन्हें ऐसा रहा है और 'इत-इतकर मनन्द का' हरानों ने प्रकट रहा है। यहा इ इच्छा ना चाह देखें।

ना चाहना का गज ने दहन—बनकों का नाक वात नीचा दहन पटा और चर्चका करवचन और तनवचन—मना हुआ है।

नाक गज प्रवचन में हा वा बना है। प्रथम श्रुति में 'नों' हा मुखर वा बचना प्रवचना क अर्थ में ना का अर्थ होना है कि कय वात का नाक स्वर दुर्गम पड़ा है —

“ना क दय नव त्वत् वन्द्यमननवन्द्यमनन्द”।

ऐसी किना हा उपासना बनने वचन उपासक वचन के माथ नाकान कयनक का प्रवचन प्रकट होता है। नव ना यह है कि प्रवचन में उपासना न टाट, एना बननाओं को नाक का किना ना कयन नहा दुर्गमना ना मन्ता है। ऐना प्रवचन हा है कि नाक का कयन भी नननननना। उपासक ने सुन रहकर नहा सुने पडा। अन्तर्द्वों का ना कयनन ननुत उपासना लला है। इसके सरे नाकान विद्वानों का एना ना इना मन्तना में समन नहा, नका सनन और विवचन, अन्तर्द्वन और रस की विवचना ना कयन हा है। मन्तन में नहाकय का ज्ञान की कयनों की उपासक उपास ना पछाहत्य में बहरान का प्रवचन का एना मन्तना ना नादव वचन दुर्गम है। इच्छा स्वरु भी मन्तन के अन्तर्द्वों का कयना नाक हा है। मन्तन के अन्तर्द्वों का पन्तना के विनारा विनारद्वन विनारक का इमन विनार हा रहमकार कर दिया है। इना हा नहा कयन में एना ना ना प्रवचन के कयना ला-गनों क एना ना कयन ननुत नहा रखा। वन्दनवचन का पन्ता से मन्तन प्रज्ञा कयन मन्तन है। विवचना और एना का चव अन्तर्द्वन से गुरु है। उपासक का एक और नवी विद्वान है कि कयन नाक वचन के उपासक के एना ना, उपासक का पन्तना का मन्तन में कयना की है। निरुक्त कयनना है, उपासक अन्तर्द्वन अन्तर्द्वन का मन्तन में उपासक है और विनारद्वन कयन का एना उपासक विद्वान का कयनने न दय विनार रखा है—मन्त हा इमने वर अन्तर्द्वन रहा हा। एना नाक का 'इत' एना हा और गनों का नाकान मन्तना कयना उपासक प्रवचन हा है ना उपासक अन्तर्द्वन ना हा इमन मन्तन मन्तन है। एक वचन में—उपासक ने इमन 'कय' का पन्ता का नवाह कयन न कयन नहा प्रवचन की है। एना नाक वचना का कयना मन्तना का मन्तन कयन उपासक प्रवचन कयन है। एना सननाओं का एना ना ने इत एना ना के मन्तन कयन करे। एना नाक का एना ना इमन है। नाव और एना की इत से पाठ ना नकयन ना एना नाक और विद्वान के दहन हा है।

अननवन्द्यं
वि० उ० १०१९

विनयादनत—
—जगदीशचन्द्र मिश्र

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

चाणक्य	: आचार्यविष्णुगुप्त, मौर्यसाम्राज्य का प्रतिष्ठापक, महान् राजनीतिक, प्रस्तुत नाटक का नायक ।
राक्षस	: चन्द साम्राज्य का महामात्य, चाणक्य का प्रतिद्वन्द्वी, नाटक का प्रतिनायक
चन्द्रगुप्त	: मौर्यसाम्राज्य का संस्थापक, चाणक्य का दृढ़ भक्त ।
मलयकेतु	: महाराज परवर्तक का पुत्र, चन्द्रगुप्त का प्रतिस्पर्धी, राक्षस का सहायक ।
चन्दनदास	: राक्षस का अभिन्न मित्र, पादलिपुत्र का नगरसेठ ।
भागुरायण	: मलयकेतु का कपटी मन्त्री, चाणक्य का गुप्तचर ।
जीवसिद्धि	: क्षपणक वेषधारी चाणक्य का गुप्तचर, राक्षस का कपटी मित्र ।
सिद्धार्थक	: चाणक्य का विश्वासी गुप्तचर ।
सुसिसार्द्धक	: चाण्डाल वेषधारी सिद्धार्थक का मित्र ।
निषुणक	: राक्षस की अगूठी ढाकर चाणक्य को देने वाला एक गुप्तचर ।
शाङ्गरव	: चाणक्य का शिष्य गुप्तचर ।
विराधगुप्त	: राक्षस का गुप्तचर ।
आर्य आजलि	: परवर्तीय राजकुमार मलयकेतु का कनुकी ।
प्रियंवदक	: राक्षस का परिजन ।
क्षकटदास	: राक्षस का परम मित्र ।
आर्य वैहीमरि	: मौर्य साम्राज्य का कनुकी ।
करभक	: राक्षस का गुप्तचर ।
दौवारिक	: राक्षस का द्वारपाल ।
वेन्नघारी पुरुष	: कुमार मलय केतु का परिजन ।
भासुरक	: कुमार मलय केतु का अनुचर ।
पुरुष	: चाणक्य का गुप्तचर ।
बालक	: चन्दनदास का पुत्र ।
वतालिक	: राक्षस द्वारा प्रतिनिजित चारणद्वय ।
सूत्रधार	: नाटक का संचालक ।

स्त्री-पात्र

शोणोत्तरा	: मौर्यसम्राट् की द्वारपालिका ।
विन्नया	: मलय केतु की द्वाररक्षिका ।
कुटुम्बिनी	: चन्दनदास की धर्मपत्नी ।
भटी	: सूत्रधार की सहायिका ।

सम्मतिपत्राणि

(१) आचार्य : श्रीकृष्णमोहनठक्कुरः

प्रधानाचार्य (रणजीर संस्कृत विद्यालय, काशी हिन्दी विश्वविद्यालय)

विद्यासदस्यविरचितमन्वर्थनामोपेतं कविरपदावजिउत्तिष्ठम् अभिरामरामजीवरुं मुद्राराक्षसनामकं नाटक को न जानाति संस्कृतसमाजे । रत्नानुगुणरदबन्धुरनिन्द नाटक सहृदय-हृदयावर्जकमित्यन न कस्यापि सहृदयस्य सचीतिरेकः । अस्य पपायदर्पस्फोटनमतिरुठिनम् । त्रिविधानवयविद्याविद्योविज्ञा-त-करणो विद्वद्भीरेयपदवीं प्रतिनित्युः श्रीजगदीशचन्द्रमिश्रोऽनन्दन्तेवासो परिग्रहेन हिन्दी-संस्कृतप्रेषोभाशु सम्पत्तया-अस्फोटन ग्रन्थान्तरज्ज्ञप्रतिपादन च सम्पत्तया स्फुटीकृतयानिति दर्पं दर्पं कस्य सचेतसो मनःसन्तोषं नावहति । अथ सामान्या अपरिदेयांशामुन्यास्याने व्यथित्वा विविष्टाया उप-पत्तयो बोधस्फूर्तयोभाषित्यस्य विनयभावे समुपनिबद्धाः सन्ति । कविदस्फुटायांनि वाक्यानि पदान्तरयोगेन साधु स्फोरितानि विद्यन्ते । सरससरलानि प्रसाद-भाषुप्रप्रसवनीयरमणीयानि समुच्छतद्गरसप्रवाहसन्दोहनुन्दितानि चमत्कारचञ्चुरानि सौरभसभारसंभूतानि सुमनः-पुञ्जराजिनानि हृदयानि पदानि व्याख्याने प्रयुक्तानि समबलोस्य येनः प्रसीदतिवाम् । मन्ये चेदृशगुणोपेतमपूर्वं संस्कारमिदं सज्जातम् । तदेतन्मनोविनिबद्धेभ्योऽन्तेरासिषहृतेभ्यो जनतासौजन्यविस्फुटितेभ्योऽप्रयं तोषकरं भूयात्, टीकाकारस्य स्वानुरूपं यशः प्राप्नुयाद् भूतभावनधीविरक्तवायकूपदेति समधिक कामयते ।

(२) श्री आनन्दनारायण शर्मा

हिन्दी विभाग : गणेशदत्त महाविद्यालय, बेगूसराय, मुंगेर

मुझे श्री जगदीशचन्द्र मिश्र संपादित साधुवाद "मुद्राराक्षस" देखने का सुयोग प्राप्त हुआ था, विद्यासदस्य के मुद्राराक्षस के इससे पूर्व भी एकधिक अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं । पर यह निःसन्देह सब अनुवादों को पीछे छोड़ गया है । श्री मिश्र जी ने अपनी इस 'विमला' व्याख्या में संस्कृत पद्यों के अन्वय और उद्गारों के अतिरिक्त हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद तो दिए ही हैं, टिप्पणियों द्वारा विशेष प्रसङ्गों को सविस्तर व्याख्या और काव्य सौन्दर्य का निर्देश भी किया है । इनने परिश्रम और अवधान पूर्वक प्रस्तुत किए गए अनुवाद कम देखने में आते हैं । अनुवाद की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है और वह मूल के वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखने में पूर्णतः समर्थ है ।

हिन्दी के साथ अंग्रेजी अनुवाद जोड़ देने से पुस्तक अहिन्दी-भाषिणों के लिए भी उपादेय बन गई है । मैं व्याख्याकार श्री मिश्र जी को उनके धर्म और वैदुष्य के लिए हार्दिक साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि अनविद्वार भविष्य में वे इसी प्रकार संस्कृत वाङ्मय के अन्य रत्नों को भी सामान्य जनो के लिए सुलभ बनायेंगे ।

(3) DR. JAYAMANTA MISHRA

*University Professor & Head, Department of Sanskrit,
Bihar University, Muzaffarpur.*

At present,

*Professor of Sanskrit, Indian Co-operation Mission,
Kathmandu, Nepal.*

“MUDRARAKSASA” is a unique play composed with a purely political theme. Due to subtle plot construction and well-knit scenes it has got an individual stamp.

Viśakhadatta, the author of the play, being an erudite scholar, is well acquainted with the technicalities of dramaturgy, astronomy and Nyaya Vaiśeṣika systems. He has therefore successfully woven the political theme together with the technicalities of different Sastras. Hence this play requires a good commentary to explain its subtlety. Shri Jagdish Chandra Mishra has done a valuable service to meet a long-felt demand of the students and teachers interested in the subject by presenting the useful commentary “Vimalā” and rendering it into English and Hindi. Rendering is always a difficult art but Shri Mishra has achieved great success. It is hoped that Shri Mishra's present annotation would meet the demand of readers.

(4) VISHVESHVAR PRASĀD SINGH

Principal, K. S. S. College, Lakhi Sarai, Monghyr

“MUDRARAKSASA” is an unparalleled work of Viśakhadatta. It is one of the great Sanskrit dramas in seven acts based on the political intrigues of Chanakya, the minister of king Chandra Gupta of Pataliputra, to win over Rakshasa to his side, who was a former loyal minister of Nandas. The drama is full of life, action and sustained interest, and represents curious state of public morals. Viśakhadatta's diction is admirably forcible and direct.

The present work of Shri Jagdish Chandra Mishra is unique in several essentials. Shri Mishra has adopted the most popular and appropriate version of the text. The English and Hindi Translation of the text is literal as well as idiomatic. The work of Shri Mishra is most useful for the scholars and students as well. All these peculiarities will take the Sanskrit text easily understandable. It is hoped that the commentary will meet the long-felt desideratum of the students and the general readers alike.

हिन्दो
मुद्राराक्षस

बालाकार
श्री जगदीशचन्द्र मिश्र

टीकाकृतंमङ्गलम्

(१)

दीनानाथसनाथितो गुणगणैः 'श्रीकीर्तिनाथो' बुध-
स्तातो मे च 'सरस्वती' भगवती 'माता' गृहे भास्वती ।
ध्यात्वा भूसुरभूषितं सुविमलं तत्पादपदं हृदा
मुद्राराक्षसनाटकस्य 'विमला' कुर्वे विमर्शान्विताम् ॥

(२)

विशाखदत्तकृतिनः कृतौ कृतपरिश्रमः ।
सचन्द्रो जगदीशोऽयं निस्तन्द्रस्तुनुते मुदा ॥

(३)

अन्तेवासिमिलिन्दवृन्दमहितं विद्वन्मरालाधितं
कीर्त्यामोदभरेविंभासितदिशं सद्भिः शिरोभिर्धृतम् ।
'गेनालाल'-सुधीपदाम्बुजमहं मूर्ध्ना समाराधयै-
स्तस्मै श्रीगुरवे समर्प्य 'विमला' नूत्नां सुधास्यन्दिनीम् ॥

(४)

चन्द्रन्ति चेतसि कला ललितानि तानि
यत्पादपङ्कजरत्नांसि रजोहराणि ।
अन्तःस्मृतान्यपि तमांसि यद्भिः क्षिपन्ति
तं 'कृष्णमोहन' गुरुं सततं स्मरामि ॥

॥ श्रीः ॥

मुद्राराक्षसम्

सटिप्पण 'विमला' व्याख्योपेतम्

प्रथमोऽङ्कः

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिऋता किं नु नामैतदस्या
नामैवास्यास्तदेतत्परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः ।
नारीं पृच्छामि नेन्दुं कथयतु विजया न प्रमाणं यद्वान्मु-
देंध्या निहोतुमिच्छोरिति सुरसरितं शाश्वमन्याद्विभोर्वः ॥ १ ॥

विमला

अन्वयः—का इयम् धन्या ते शिरसि स्थिता ?—शशिऋता । एतत् अस्या नाम नु
किम् ? अस्या नाम एव । तदेतत् ने परिचितमपि कस्य हेतोः । विस्मृतम् । नारीं पृच्छामि
इन्दुं न—यदि इन्दुः प्रमाणं न, विजया कथयतु । इति, देव्याः, सुरसरितम् निहोतुम्
इच्छोः विनोः शाश्वं व अभ्याम् ॥

व्याख्या—का=किनामरेया (who is by name), इयम्=इष्टितोचरीमृता
(this), धन्या=शुभा (blessed one), ते=तव (your) शिरसि=उत्तनाह्ने
(on head) स्थिता=विद्यमाना (resting) ।—शशिऋता=चन्द्रस्य मागविसेपः
(a lunar digit) । एतत्=एष (this here) अस्या.=स्त्रियः (woman's), नाम=
संज्ञा (by name) नु=(अन्यय) (A particle having an interrogative
force and implying some doubt) किम्=प्रश्नवाचकः (used interrogatively)
अयात्=Is that her name ? अस्या=मन्मस्तकाटङ्कनमृताया, नाम एव=संज्ञा एव
(That indeed is her name) तदेतत्=एष (this) ते=तव (your) परिचित-
मपि=विदितमपि (also familiar), कस्य हेतोः=केन हेतुना (How is), विस्मृतम्=
अपरिचितमिव (Forgot) नारीम्=स्त्रियम् (to woman), पृच्छामि=अनुनिच्छामि
(want to know), इन्दुम्=चन्द्रम् (to the moon) न=नहि (not)—यदि=
यद्वा (if) इन्दुः=चन्द्रः (The moon), प्रमाणम्=विश्वासावहम् (believe),

न = नहि (not) विजया कथयतु = भवसखी विजयैव वदतु (Let Vijaya tell) इति
 देव्या = पार्वत्या (wife of God Shiva, born as the daughter of the Hima-
 laya mountain) सुरसरितम् = गङ्गाम् (The Celestial river) निहोतुम् = गोपा-
 यितुम् (concealing), हृन्धोः = अभिलषितः (anxious) विभोः = म्यापकस्य (of
 Lord Shiva) साध्यम् = चातुर्यम् (trickery) वः = युष्मान् (all of you)
 अघ्नात् = पापात् (protect)

हिन्दी—(पार्वती) आपके सिर पर बैठो यह कौन भाग्यवती है ? (शिव)—चन्द्रकला ।
 (पार्वती)—क्या यही उसका नाम है ? (शिव) नाम ही तो, और इमने तो तुम परिचित
 भी थी—पता नहीं इने भुला कैसे गई ? (पा०) मैं इस चन्द्रमा को नहीं पूजता । उस औरत को
 पूजती हूँ । (शिव) औरत ! अगर तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं, तो तुम्हारी सखा विजया
 ही बोले । इस प्रकार देवी पार्वती के सन्देश-कटाक्षों से गङ्गा की रक्षा में आकुल भगवान् शिव
 की चातुर्य-पुम्हारी रक्षा करे ॥ २ ॥

English — O Lord ! Who is this fortunate one resting on your
 head ? shashikala (a lunar digit). Is that really her name ? That is,
 and you were well acquainted with it. How did you forget it ? I
 ask about the woman and not the moon.—If you do not believe in the
 moon, let Vijaya, (your attendant) tell you. May the trickery of
 such lord Shiva, anxious to conceal the celestial river Ganga from
 his wife Parvati, save you

टिप्पणी—यह उच्चा इस विमर्श से यह प्रत्यय लगाकर धन्य बना । धन्य शब्द से खलित्व
 में दाप् प्रत्यय पर 'धन्या' रूप का निर्माण हुआ । धन्या अर्थात् भाग्यवन्ता । पार्वती के द्वारा गङ्गा
 के लिए प्रयुक्त इस विशेषण में प्रथम पार्वती की ईर्ष्या ही अभिव्यक्त होती है । शिव अर्द्ध
 नारीधर हैं । उनके सम्पूर्ण वामाङ्ग पर पार्वता का अधिकार है । फिर—अपने से अधिक दिव्य
 उन्नतित्वरूप गङ्गा को पति के सिर पर अवस्थित देखकर, देवी की ईर्ष्या से जल नुन उठना भी
 स्वाभाविक ही है । अथवा, यहाँ 'धन्या' शब्द 'अधन्या' परक है । इससे निन्दा की अभिव्यक्ति
 होती है । पूज्य पति के सिर चढ़ने वाली नारी तो निन्दनीय है ही । व्यतिरेक लक्षण से इस
 अर्थ की स्पष्टाभिव्यक्ति है । किम्बा—'धन्या योपिता प्रलोभिका' इस वचन से—प्रलोभन शीला
 गङ्गा को अपने सिर पर चढ़ा रखा है, यह उपालम्भ भी स्वक्त होगा है । देवी पार्वती अगर
 'सर्वज्ञा' हैं तो ये सारे सबाद कविकल्पना के अतिरिक्त अर्थहीन ही हैं । परिचितमपि से =
 'परि' उपसर्गक 'चि' धातु से कर्म में वर्तमानार्थक 'क' प्रत्यय से (परि + चि + क) 'परिचितम्'
 बना । यहाँ 'ते' में 'करय च वर्तमाने' इस नियामक सूत्र से द्वारा 'अनुको कर्त्तरि षष्ठी' से
 षष्ठी विभक्ति हुई । कस्य हेतोः—'निमित्तकारणहेतुः सर्वमा प्रायदञ्जनम्' की नियामकता से
 'हेतो' में षष्ठी विभक्ति हुई । व्याकरण के नियम से को हेतु, क हेतुम्, केन हेतुना, कस्मै हेतवे,
 कस्मात् हेतो, कस्मिन् हेतौ इत्यादि प्रयोग भी चलते हैं । इसके लिए 'निमित्तादिप्रयोगे तेभ्य
 तत्समानाधिकरणशब्देभ्यश्च' इत्यादि के सन्दर्भ में 'षष्ठी हेतुप्रयोग' और 'सर्वनामप्रवृत्तीया च'
 इत्यादि सूत्रों पर नाम्न्य का विवरण दृश्य है

नारीं पृच्छामि नेन्दुम्—इसमें 'प्रच्छ' धातु द्विकर्मक है। देवी ने हमका प्रयोग प्रधान कर्म के अर्थ में ही किया है। पठन — न आखे उन औरत को पूछता हूँ न कि चन्द्रमा को—इस अर्थ का प्रतीति है। पित्रजा, इसे अप्रधान कर्म में प्रयुक्त जान कर समझत है कि उस नारी का नाम पूछा है। 'नि' उपसर्ग 'हु' धातु से तुमुन् प्रत्यय वरन पर निङोत्तुम् बना। इसका अर्थ छिनाना है। इस प्रकार न्व + लिङ् (आशिषि) धातु से रक्षा के अर्थ में 'अव्याज' प्रयुक्त है। **मुद्राराक्षसम्**—मुद्ररा गृहान राक्षसकथित्य ह्यो गन्ध मुद्राराक्षसम्। यहाँ उक्त विग्रह में 'अधिकृत्य ह्यतः प्रत्ये' सूत्र से आ प्रत्यय तथा 'यवदम्बान्' तुन् छाद्य' सूत्र से नपुंसकान्त कर 'मुद्राराक्षसम्' बना। हमका अर्थ है—मुद्रा अर्थात् अंगूठी में राक्षस जानक भ्यान्ति को पकड़न के मन्त्र-ध्वनि से एक स्तक प्रत्ये।

प्राचीनों ने निरिद्वन्द्वतुल्य अन्तरित्तनास के छिद्र प्रधारण में नदल का विधान किया है। इन नदल के आग्रा, ननन्करा और वस्तुनिर्देश रूप तान भेद हैं। महाकवि विशाखदत्त ने इस नाटक में अपने इष्टदेवता महादेव के पुण्यवर्धक आशीर्षचन रूप प्रधान कोटिक नदल का विधान किया है। इन नदल श्लोक के प्रत्येक शब्द एवं उनके अर्थ से नाटकाय वस्तु प्रतिध्वनित होता है। नदल श्लोक का उमानरेश्वर-संवाद भा नाटकाय प्रगाढार पर ही अवस्थित है।

नाट्य वस्तु में कनकदत्ता, प्रभाव और क्षमता होने के छिद्र—इस नाटक में नाटकीय तथ्यों के साथ नाट्यिक दृष्टियों की मननुरूप राजना का गर है। मुद्राराक्षस के सनम्य नाटकाय तथ्यों की इस नदल में स्पष्टतन अभिव्यक्ति है। कवि ने नाटकाय कनकदत्ता और प्रभाव-क्षमता का बीजा रोना नान्दा पद के इन दोनों नाट्यिक श्लोकों में विरक्त शिव में अनुरक्ति की उद्भावना कर—स्पष्ट रूप चित्र का तरह माना है। नाटकाय घटना प्रवाह की सृज्य वैधकता—बीतरा महादेव में सठनायकत्व का योजना से हा अभिव्यक्त है। इसी प्रकार नाटकाय संवाद का योजना में रोचकता तथा उसकी पूर्ण अन्विति इस नदल के उमा नरेश्वर-संवाद में स्पष्ट है।

संवाद-योजना में जात्रा-क प्रिलार और विषयान्तर की अपेक्षा सतिष्ठता और स्वभाविकता पर बल दिया जाता है। इनमें मूलतः प्रत्यक्ष घटनाओं का विवरण पूर्वशृणु के साथ आभासत रहता है। इन नदल श्लोक के नाटक योगी शिव में नाटक के बीतरा नायक चापत्य के चरित्र का आभास मिलता है। गद्दा और उमा के नरही जन्म प्रेमन्द ने चापत्य की धर्म और प्रेम का नाति का द्वन्द्व मूचित है। नाटक में वनाचन्य केतना विवना हा अधिक अन्वनिहित शास्त्र—उममें झुलुड और रोचकता भा उमा ही मनविष्ट होगी। शर्वनी की शर्मा दुक्त औखों से गद्दा की छिनाने की नाट्यिक घटना में चापत्य के द्वारा मलयनेत्र की औखों से चन्द्रात के छिन्नाय का स्पष्ट संकेत मिलता है। इस प्रकार रक्षार्थ तत्पर महादेव का कंगूड सद्दय ज्ञानाधिक्य के कंगूड का प्रतीक है। स्पष्ट है—नन्दाराठ के ये दो श्लोक अर्थव्यवस्था में ध्वनि प्रतिध्वनितों से परिपूर्ण एवं आकर्षक है। इनमें एक विविष्ट तालन—चमत्कारी ध्वनि से है।

कुछ प्राचीन नाट्यकार ने इसमें व्याख्याति अलङ्कार माना है। यह गूढाद्यप्रतापि अलङ्कार है। इसमें उप रहस्य के प्रकाश होने पर उसे किसी कहाने छिपाया जाता है। व्याज का अर्थ ही कहाना है। इसमें कला अपनी गद्यनाय वाद को छिपान के छिद्र देना युक्ति का सहाय होता है, जो वयार्थ नहा होती। यहाँ शङ्कर न 'अधिकता' रूप छय उक्ति के व्याज से छिद्रस्थित गद्दा रूप वस्तु का प्रेमन किया है।

कुछ आधुनिक व्याख्याकारों ने इसमें वक्राधिक अलङ्कार माना है। वक्राधिक का अर्थ है टेढ़ा कथन। वक्रा के अन्यायक वाक्य का यदि ओना काहू या दण्य के द्वारा अन्यायक कथना करता

है तो वहाँ वक्रोक्ति होती है। प्रस्तुत पद्य में पार्वती द्वारा प्रयुक्त शङ्कर के मस्तक स्थित नारी के प्रति जिज्ञासा का अर्थ उन्हें 'शशिकला' के रूप में प्रतीत होता है। साथ ही वक्ष्यमाण नाटकीय वस्तु को व्यञ्जना भी इससे ध्वनित होती है। अतः स्पष्टतः यहाँ वक्रोक्ति अलङ्कार है।

किन्तु, अगर मैं अपनी बात कहूँ, तो मुझ इसमें उल्टी गढ़ा बहता दिखाई देती है। इस विषमता के भीतर से मुझ व्यतिरेक की ध्वनि सुनाई पड़ता है। व्यतिरेक का अर्थ है विशेष प्रकार का अतिरेक या आधिक्य। अर्थात् गुणविशेष के कारण उपमान की अपेक्षा उपमेय में ही अधिक उत्कर्ष दिखाया गया है। दर-असल इसमें चमत्काराधान भी इसी अर्थवत्ता या उपमेयाधिक्य के कारण हुआ है। यहाँ उपमान गढ़ा से उपमेय शशिकला अपन विशिष्ट गुणों से बढ़ता प्रतीत होती है।

इसके साथ ही इसमें 'उत्प्रेक्षा' और 'अपद्युति' नामक अलङ्कारों के अङ्गाङ्गिभाव से 'सङ्कर' की भी ध्वनि है। यहाँ उत्प्रेक्षा का स्वरूप होगा—

पहले तो बस मैं ही मैं थी। भगवान् अञ्जनारीश्वर के आध शरीर पर मेरा ही आधिपत्य था। बामाङ्ग पर मेरा अधिकार और पूर्ण आधिपत्य की सब वहाँ चर्चा थी। सबकी धृष्टता का मैं ही एकमात्र आधार थी। पर अब तो सारा ठाठ ही बदल गया। मेरे वे सर्वाभ्यास के दिन सदा के लिए छूट गये। अब मुझे कौन पूछे ? मैंने तो आधे शरीर में ही अधिकार पाया था। यहाँ तो यह भई सुहागिन माथे पर चढ़कर ही हमरा रही है, जिसने सौन्दर्य के आम मुक्त जैसा सूरत वाली पानी भर। लोग बैठकर अब इसी की चर्चा करेंगे। जैसे, इसी कमक से खोर-खोर सा पार्वती विसूरने लगी हो।

और अपद्युति इस प्रकार—

हममें प्रकृत गढ़ा को छिपाकर अप्रकृत उपमानभूत शशिकला का स्थापन किया गया है। अर्थात् सच्ची बात को छिपाकर झूठी बात प्रकट की गई है। तभी तो यह प्रतीति है कि यह गढ़ा नहीं, शशिकला है—लोग भी तो ऐसा ही समर्थन।

फिर दोनों में अङ्गाङ्गिभाव सङ्कर या वारण यह है कि यहाँ अशक्ति के सहार हा उत्प्रेक्षा खरा है। क्योंकि यदि लोग गढ़ा को शशि न समझें तो फिर पावता को गढ़ा के विसूरने की काह बात ही नहीं रहती। उसका मान सम्मान ज्यों का त्यों बना रह जाता है। इसलिए अपद्युति का बल्यना उत्प्रेक्षा की जड़ नमाने में सहायता पड़वाती है। सहायन होने के कारण ही वह अङ्ग रूप में उपस्थित होती है। शल्लक दिखाकर उत्प्रेक्षा के प्रधान शङ्कार को निस्तार देता है। क्योंकि गढ़ा की शशिकला मान लेने की अपेक्षा, इसी कसक से पावता के विसूरन रहने में अधिक चमत्कार है।

दूसरी ओर, यदि पार्वती हेरान न होती तो गढ़ा को शशिकला माने जाने का कुछ भी गौरव नहीं रह जाता। अतः दोनों अलङ्कारों की आपस की अपेक्षा स्पष्ट है। यह अपेक्षा ही यहाँ साकयं या बीज है। अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षाऽपद्युति' की सम्मिलित ध्वनि है।

इसमें सङ्करावृत्त है। मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण हैं। तथा तीन बार मान मात अक्षरों पर यति है। अतः यहाँ सङ्ख्या नामक वृत्त है। इसकी परिभाषा है —

'प्रप्रेषाना त्रयेण त्रिमुनिवतिरुत्ता सङ्ख्या कीर्तितवम्'

५ ५ ५ ५ १ ५ ५ १ १ १ १ ५ ५ १ ५ ५ १ ५ ५
प न्या के वं स्थि ता व क्षि र सि छ दि क ला कि नु न भि त द स्था ।

अपि च—

पादस्याधिर्भवन्तीमवनतिमवने रक्षतः स्वैरपातैः,
सङ्कोचेनैव दोष्णां मुहुर्भिनयतः सर्वलोकातिगानाम् ।

दृष्टिं लक्ष्येषु नोप्रां ज्वलनकणमुचं यध्नतो दाहभीते-
रित्याधारानुरोधात्रिपुरविजयिनः पातु यो दुःखनृत्यम् ॥ २ ॥

प्रिमला

अन्यथाः—आविर्भवन्तीम्, अवनेः, अवनतिम्, पादस्य, स्वैरपातः, रक्षतः, सर्वलोका-
तिगानाम्, दोष्णान्, मुहुः, सङ्कोचेनैव, भिनयतः, दाहभीतेः, लक्ष्येषु, ज्वलनकणमुचम्,
यध्नतो, दृष्टिम्, न, यध्नतः, त्रिपुरविजयिनः, आधारानुरोधात्, इति, दुःखनृत्यम्, वा, पातु ।

व्याख्याः—आविर्भवन्तीम् = प्रादुर्भविष्यन्तीम् (Would have manifested)
अवनेः = भूमेः (of the earth) अवनतिम् = अर्धोगमनम् (bowing down) पादस्य =
वरणयोः (of the feet) स्वैरपातैः = मन्दविधेयैः (by gentle steps), रक्षतः =
परिहरतः (avoided), सर्वलोकातिगानाम् = अतिविस्तृतानाम् (beyond all the
world), दोष्णान् = मुञ्जानाम् (of his arms), मुहुः = प्रविचनम् (every moment)
सङ्कोचेनैव = संवेपेनैव (by the mere contraction), भिनयतः = अङ्गविधेयं
विधतः (gesticulated), दाहभीतेः = नयन किण्वात् जगतः दहनकङ्कणात्
(Through fear of a conflagration), लक्ष्येषु = दर्शनविषयेषु (on objects
of his gaze), ज्वलनकणमुचम् = अग्निस्फुरिष्ण्वर्पणघ्नीलाम् (emitted sparks of
fire) यध्नतो = चाराम् (fierce) दृष्टिम् = नेत्रम् (the third eye), न यध्नतः =
न धिपतः (did not fix on), त्रिपुरविजयिनः = शिवस्य (The conqueror of the
Tripura, Lord Shiva) आधारानुरोधात् = अङ्गविधेयनासाधयामृतमृतलादेरपः
पतनाद्यभावतात्पर्यात् (Through a regard for the arena), दुःखनृत्यम् = कष्ट-
तोऽनुष्ठीयमाननर्तनम् (Uneasy dance), वा = युष्मान् (all of you) पातु =
अवतु (protect).

हिन्दी—दही नहीं—(ताण्डवनृत्य के समय) बरतों के भावजों से वह भरती करी पंच
न जाय,—देखो सम्भावना से हर क्षण बचने-वचन, नाचनक्षिणा प्रदर्शित करने में हाथों के प्रसार
से कहीं लोक-लोकांतों का विनाश न हो जाय—अब तुम्हारे के सङ्कोच से हो नृत्य के भावों
को प्रदर्शित करने हुए—अग्नि स्फुरिष्ठों या ज्वालामुखों की निरन्तर कलत्रे रहने वाली लहरास्य
तोनरी आँख की बिना किनो कण्ठ पर टिकाने ही, अपना किसी वस्तु पर चीनरी आँख पारने ही
वह जलकर लान्न न हो जाय—इस सम्भावना से बचत हुए—रङ्गमंच की हर सीमाओं को नज़र
अन्तर्गत करने हुए—दुःख से नृत्य में निरत भगवान् त्रिपुरारी शिव का वह ताण्डवनृत्य तुम्हारी
रक्षा कर ।

English—Besides this—May the dance of Lord Tripurari, rendered
uncomfortable due to his kindly feeling for the stage, guard you;

the victor of Tripura (Shive) who avoided the bending of the earth by gentle steps at the time of his dance, which would have made obvious itself by the wilful fall of the foot, who often gesticulated by the absolute gesture of his arms that out reached all the world and for fear of a conflagration, did not fix his gaze on objects that emitted sparks of fire.

टिप्पणी—आविर्भवन्तीम् = आविस + भू + शतृ खियान्, तान् । यह शब्द अवन्ति की विशेषता प्रकट करता है । अतः यहाँ अविष्यत् काळ के लिए निश्चित आवदकता प्रतीत नहीं होती, फिर भी—'यति' की दृष्टि से यदि यह आवश्यक ही माना जाय तो—प्रथमा सामानाधि करण्य से 'वर्तमान समीपे वर्तमान वद्वा'—याकरण द्वारा की इस नियामकता से, सामीप्यार्थक वर्तमान प्रयोग से शतृ प्रत्ययान्त लट् का विधान मान करने पर कुछ आपत्ति नही रह जाती । 'रक्षत' का प्रयोग यहाँ परिहारार्थक है, व्यवहार में ऐसा प्रयोग विरल ही है ।

स्वैरपातै = हरणम् इति हर् + घञ् से सम्पन्न रूप है । 'आवे हर । 'पात' का अर्थ यहाँ 'पदक्षप' है । स्व हर एव 'स्वैरा' अर्थात् 'स्वम्यवस्थित तादृशा पाता अर्थात् अनिम्यवस्थित चरणक्षप । किन्ता अमरकोश में स्वैर का अर्थ 'मन्द' है—'मन्दस्वच्छन्दयो स्वैर' । इस अर्थ में 'त्वादीरेरिणो' सूत्र से वृद्धि कर करण तृतीया' से तृतीया विभक्ति का रूप सम्पन्न हुआ । सकोचनैव—से यह प्रकट होता है लात्वरत श्वर की मुगलों का पूर्ण अभिनय सम्भव नहीं । 'करणे तृतीया' से यहाँ भी तृतीया का विधान है ।

अमरकोश के 'भुजबाहु प्रवेष्टो दो' के अनुसार दोस् का अर्थ 'बाहु' होता है । 'पछन्नेत्यादि' सूत्र से दोस् का वैकल्पिक रूप दोषन् भी होता है । अतः 'दोष्णाम्' का प्रयोग यहाँ बाहु के अर्थ में वैकल्पिक ही है । **अभिनयत**—यहाँ ताण्ड्यार्थक आवश्यक अशुभाय अभिनय शब्द प्रयुक्त है । **सर्वलोककतिगानाम्**—सर्वलोका 'सर्वलोका' कर्मधारय समास तान् अतिगच्छन्ति इति मवलोक + अति + गन्, गमेर्ङ् । कर्त्ता के अर्थ में ङ प्रत्यय—तेषाम् सर्वलोककतिगानाम् यह शब्द यहाँ दोष्णाम् का विशेषण बनकर प्रयुक्त है । **ज्वलनकणमुचम्** = ज्वल + कर्त्तरि चुच्, ज्वलन = अभि । ज्वलन् कणान् जुञ्जतीति ज्वलनकण + मुच् + कर्त्तरि क्प्, ताम् ज्वलनकणमुचाम् । यह दृष्टि का विशेषण बनकर प्रयुक्त है । **दाहभीते** = दाहात् भीति तस्या दाहभीते । यहाँ 'हता पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति हृष । इस प्रयोग पर भट्टोजि दीक्षित का यह सिद्धान्त द्रष्टव्य है—'विनाश इति योगविभागात् अगुणप्रखियाम् च कश्चित्—भूमादग्निमान्, नास्ति घटोज्जुपलब्ध ।' आधार—आध्रियने अग्निम् अनेन वा इति, आ + धृ + घञ् अधिकरणे करणे वा आधार । आधारस्यानुरोध, आधारानुरोध तस्मात् आधारानुरोधात् 'हता । पञ्चमी' से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई । **दुःखनृत्यम्**—दुःखयतीति दुःखन् (पचायन्) दुःखन्-नृत्यम् । इसे दुःख-नृत्य इसलिए कहा गया है कि श्वर के इस नृत्य में सहि-सहार के अर्थ से न तो स्वतन्त्र पदक्षेप है, न बाहुओं का अनर्गल आसालन ही, दृष्टि पर पूर्ण नियन्त्रण है फिर भी नृत्य है । 'दुःखनृत्य' शब्द यहाँ श्लेषात्मक सकेतपरक है । सकेत का स्पष्टीकरण आगे करेंगे ।

किसी भी नाटक के लिए यथार्थ के साथ आदर्श का समन्वय जितना आवश्यक है, सम्मवन-रसोत्कर्ष के लिए संपर्ष भी उतना ही आवश्यक है । जिस नाटक में इस संपर्ष की

चेदना विदना हा नाश होना, उन्हें कुदृष्ट और रोचकता का जना हो गन्वार मनावेश हा। क्योंकि, वदना के विद्वान और सवादी के अर्थ-मूल्य की सर्वाधिक विवेचना कुदृष्ट में निहित रहती है। यह नाक मन्त्रों से सवादी तो है ही—इन्हें कुदृष्ट की रक्षा भी मन्त्र नावधानी से का है। रक्षा कौदृष्ट जहाँ चरन जाना पर पहुँचा है, वहा नाक का ना परिमोना आ गइ है। इन मार भावी को एक साथ म्नेट कर कवि विद्यावद्व ने प्रारम्भ के इन दो मन्त्रिक ज्नेकों ने हा अभिव्यक्त कर दिया है। इन दोनों पक्षों में आध्यात्मिक मन्त्र के व्याज से भगवान् शकर और उनके कृत्यों के रूप में मन्त्र मा-काय भ्याहार के मुखार हा म्नेत्रों (वाक्म एव राज्ञः) का प्रथम को गइ है। वाक्म, जो शान्ति के मुख है प्रथम पक्ष में आये है। भगवान् शकर ने किन कौदृष्ट से गया को मीरा की दृष्टि से बचाया है—ज्ना प्रकार वाक्म का कौदृष्ट चन्द्रमुख को मन्दरकुल से रक्षा करना—इस अर्थ की ध्वनि प्रथम श्लोक में है। इसी प्रकार दूसरा श्लोक मन्त्र मन्त्ररत्न द्वितीय मन्त्रा राज्ञः के लिए है। इसमें भगवान् शकर मन्त्रकर्म प्रारम्भ करत है और मन्त्ररत्न को ज्ञान में ढाल इत है। पुन मन्त्ररत्न पदमन्त्र, अनुशास्त्रि इत्यादिनाम और स्वस्मिन् नेत्रावलोचन से—जो स्वर ज्ने दुःख नृप के लिए प्रेरित करत है इस दृष्टि को महार से बचा छत है। ज्ना प्रकार नात्र-भेद राज्ञः ने एक आन्तोहन बलादा, विद्वाने मन्त्ररत्न को अपने पूर राजकाय परिवारों के साथ विरचित में ढाल दिया। किन्तु, मन्त्र में अपने दुःखनृप अर्थात् उद्योग कृत्यों से राज्ञः ने—जो बहुत पहले से ही ज्ने था—विगता दुर स्थिति को सुमाळ लिना। अथवा—वहाँ भी भगवान् शकर के इत मन्त्रकर्म में चरितनायक वाक्म के नाति-मन्त्र का आनास मिलता है।

इस श्लोक में भी सन्वराष्ट्र है। परिभाषा लिखा जा चुका है। जहाँ तक अलङ्कार का मश है—इसमें भी एकदम नहा। कुछ लोगो ने इसमें सन्वराष्ट्रयोक्ति माना है। अत्रिष्टयोक्ति सादृश्य गम अनेद प्रथम अष्टकान् नूतक अर्थात् अलङ्कार है। इसमें उमान के द्वारा उमनेर का कान होता है। अथवा—उमान उमनेर का निगरा कर उनके मश अनेद स्थापित करता है। वहाँ वरती का जवनाति से सन्वराष्ट्र नहा रहने पर ना सन्वराष्ट्र प्रविरतन के कारण एकाकारों ने सन्वराष्ट्रयोक्ति माना है। कुछ लोग इसमें 'परिचर' अलङ्कार मानत है। परिचर का अर्थ है वनकरा ना उत्कृष्ट मन्त्र। जहाँ विद्वानों का प्रयोग मानिमान किना जाता है, वहा यह अलङ्कार हाता है। इसमें उमनेर का प्रथम ही इस प्रकार किना जाना है कि रचना में मन्त्र उत्कृष्टाधान हा जाना है। किन प्रकार उमनेरों के द्वारा किना मन्त्र का रमणीयता बत जाना है, उमी प्रकार मानिमान विद्वानों से किना ना प्रकार के कथन में सौन्दर्य आ जाना है। सादृश्य गम भी यह है हा, मश ही मन्त्रोन्मादमन वर्ग के मन्त्रान विवेका वैचित्र से हा रक्षा सुम्य सन्वराष्ट्र रहता है। तो हा इस श्लोक के सुमा विद्वान हा मानिमान है, किन्तु—छासकर मानिमान विवेका की दृष्टि से विद्वान विद्वान का प्रथम हा अधिक चमत्कारक है। कुछ न इस श्लोक में 'अधिक' अलङ्कार माना है। इस अलङ्कार में जकार अथवा आधन में से किना एक के आधिक्य का वर्णन रहता है। यह एक विरोधमूलक अलङ्कार है। इसमें आधिक्य का मशय वर्णन न होकर कवि कल्पना प्रमूत या चमत्कारपूर्ण होत है। अत्यन्त भगवान् शकर के चरा पवन रूप आधेय का अग्नि रूप आधाराधय की अस्या अधिक वर्णन रहने के कारण हा अधिक अलङ्कार माना है। श्लोक में पाञ्चाली रोति एव प्रसन्न पुन है।

(नान्दयन्ते)

सूत्रधार—अलमतिप्रसङ्गेन । आज्ञापितोऽस्मि परिषदा यथाच त्वया
सामन्तवटेश्वरदत्तपौत्रस्य महाराजभास्करदत्तसूनो कवेविशाखदत्तस्य
कृतिरभिनय मुद्राराक्षस नाम नाटकम् नाटयितव्यमिति । यत्सत्य काव्यविशेष-
वेदिन्या परिषदि प्रयुञ्जानस्य ममापि सुमहान्परितोष प्रादुर्भवति । कुत —

विमला

व्याख्या—ना-यन्ते = नन्दयति आनन्दयति लोकानिति ना-दी तस्या अन्ते =
अवसाने (after the blessing), सूत्रधार = प्रधानमन्त्रि (a stage manager),
अतिप्रसङ्गेन = अतिविस्तरेण (with excessive talk) अलम् = व्यर्थम् (worthless)
परिषदा = गोप्या (council or audience) आज्ञापित = आदिष्ट (commanded by)
अस्मि = भवामि (am) सामन्त = चक्रवर्ती (The tributary prince) वटेश्वरदत्त
पौत्रस्य (grand son of Vatesvara Datta), महाराज = (महाराजति उपाधि)
(the holder of the title of Maharaja) भास्करदत्तसूनो = भास्करदत्तस्य
पुत्र (son of Bhaskar Datta) कवे = नाटकप्रणेतु (dramatist) विशाख दत्तस्य
कृति = विशाखदत्तस्य रचना (drama of Vishakhadatta) अभिनयम् = नवीनम्
(new), मुद्राराक्षस नाम नाटकम् = मुद्रयाऽङ्गुलिमुद्रया परिगृहीतो राक्षसो यत्र तद्वि-
कृतो प्रयो मुद्राराक्षसम्, नाम = तत्सङ्ग नाटकम् (drama called the
Mudrarakshasa) नाटयितव्यम् = अभिनेतव्यम् (to be staged) यत्सत्यम् =
अस्मद्विरचिताऽभिनयस्य दक्षतात् इष्यो भवतीति (certainly) काव्यविशेषवेदि-
न्याम् = काव्यस्य गुणदोषविशेषज्ञानम् (the audience knowing the excellence of
dram) परिषदि = सामाजिकसंसदि (audience, council) प्रयुञ्जानस्य = प्रयोष्य-
माणस्य, ममापि = अस्माकमपि (My also) सुमहान् परितोष = अतिसन्तोष (very
great satisfaction) प्रादुर्भवति = उत्पद्यति (feel), कुत (for) ।

हिन्दी—

(नान्दी की समाप्ति पर)

सूत्रधार—इसके सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक कुछ कहना व्यर्थ है । आपको ने हा मुझ आज यह
आज्ञा दिया है कि महाराज भास्करदत्त के पुत्र और सामन्त वटेश्वर के पौत्र नाटककार विशाख
दत्त की अभिनयकृति मुद्राराक्षस का अभिनय करो । और, सच तो यह है कि काव्य विशेषज्ञों
के सामने ही अपनी बला प्रदर्शित करने में कलाकार को सच्चा सन्तुष्टि मिलती है । क्योंकि—

(After the blessing)

English—Stage manager—Away with vehement talk I am
asked by the audience to represent a new drama 'Mudrarakshas' the
work of the poet Vishakhadatta, son of Bhaskaradatta the holder of
the title Maharaj, grand son of the tributary prince, Vatesvar datta,
Really I feel very great satisfaction, acting before a council capable
of appreciating merits of drama

चीयते बालिशस्यापि सत्त्वेऽपतिता कृषिः ।

न शालेः स्तम्भकरिता वसुगुणमपेक्षते ॥ ३ ॥

टिप्पणी—नान्दन्त=नन्दन नन्द 'नाव धनु' से धन प्रत्यय, नन्दस्य इयन् नान्दा 'वन्देदन्' मे अच् प्रत्यय कर रूप सम्बन्ध हुआ। अतिप्रसङ्गेन=प्र+सङ्ग+यन्=प्रसङ्ग, अति शक्ति प्रसङ्ग अतिप्रसङ्गेन, वहाँ 'करो कृतीका' से कृताया विभक्ति हुई। दूसरा 'अन्त' शब्द का ना म्ने संबोध है हा। अत्र कृताया विभक्ति होना हा चाहिये। आज्ञापितः—आज्ञापितः=आज्ञा—पित से वर्तने में क प्रत्यय लगाकर 'आज्ञापित' का सम्बन्ध हुआ। इसने 'अत्र' धनु है। परिपक्वा—'अत्र' उन्मत्त मर धनु से विष् प्रत्यय करने पर अधिकार-कारक ने परिपक्व कर हुआ। सामन्तः—कवि के विना नह नानन्त थ और पिता का महाराज का पदवा मिला थी। नै यथागत महाराज नहा थ। सुप्राराधमम्—इसकी सुवृत्ति यह किता जा हुआ है। यत् सत्यम्—यह एक अन्वय है और इसका अर्थ 'निश्चय' है। काव्यविशेषवेदिन्याम्—विशेषज्ञानसे नाव के अर्थ में विचार बना। काव्यस्य विचार वाक्यविचार न वैशि रति मिलि। यह परिपक्व का प्रतीति है। नाथ हा इसने यह भा मूखिन होना है कि यह नाक उच्च कर्तृ का है और अमिनेन है। प्रदरान्तर से यह काव्य प्रगुण ना है। प्रयुज्जानस्य—प्र पूर्वक पुन धनु से कटा के अर्थ में शान्त प्रत्यय लगाकर प्रयुज्जानस्य रूप बना। 'प्रानान्ता नृशेयस्य-पायसु' इस मूत्र मे आत्मनेपद हुआ। यह 'मन' का विरुद्धता बनलगा है।

निमलता

अन्वयः—बालिशस्यापि, कृषि, सत्त्वेऽपतिता चीयते। शाले, स्तम्भकरिता, वसुः गुण, न, अपेक्षते ॥ ३ ॥

व्याख्या—बालिशस्यापि=अज्ञातकृषिकस्य (even a foolish person), कृषि=कर्षणकर्म छद्मगया बीजम् (to scatter seeds) सत्त्वेऽपतिता=उत्कृष्टभूमौ प्रयुक्ता (fallen in a good ground), चीयते=वर्द्धते (thrive), शाले=धान्यस्य (of paddy), स्तम्भकरिता=प्रावुर्यम् (Luxuriant growth) वसु=बीजरोपकस्य (sower) गुण=कानुपादिकम् (merit) नन्वहि (not) अपेक्षते=इच्छति (to expect).

हिन्दी—जरा भूमि में अधिकतर में अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा बोये गये बीज भी लह-लहा उठता है। सन बालिशों में भूच्छर निकलने वाला धान, बीज बोने वाले किसान को योग्यता का भन्का नहीं रखता।

English—Scattered seeds grow profusely in fertile soil, even being sowed by an ignorant peasant. The clustered paddy does not expect any merit in the sower.

टिप्पणी—चान्त-कर्णकर्ता में वहाँ लट लटार का प्रयोग है। चीयते का अर्थ है अत्यन्त नावा में। बालिशत्व-बालि शत्रु इन विग्रह में 'ह' प्रत्यय से 'तत्पुरुषे द्विषि बहुलम् ६।३।१४' इस मूत्र से सतनी का अनुक्त 'र' और 'ल' का एकता से बालिश पद का सिद्धि हुई। 'बालिशश्च पित्री मूर्खे' इस मेदिनी कोश के अनुसार बालिश का अर्थ है मूर्ख। वहाँ इसका प्रयोग नट ने

अपने लिए किया है। यह केवल भट के विनय प्रदर्शन की उक्ति है। सत्सेत्र = से तात्पर्य है उर्वरा भूमि का अर्थात् यह प्रयोग सामाजिकों के लिए है। इस शब्द का प्रयोग परिपद की प्रशंसा में है। स्तम्भकरिता = 'स्तम्भ करोतीति' इस विग्रह में 'स्तम्भकृते' सूत्र से इन् प्रत्यय करके स्तम्भकरि बना। इसके बाद भाव में तत् प्रत्यय का रूप 'स्तम्भकरिता' बना।

अलङ्कार निर्देश में यहाँ भी विद्वानों में मतभिन्नता है। कुछ लोग इसमें अर्थान्तरन्यास अलङ्कार मानते हैं। यह अलङ्कार सादृश्यवर्ग अलङ्कारों के अन्दर गम्भीरम्याश्रय वर्ग का अलङ्कार है। जहाँ सामान्य का विशेष के साथ अथवा विशेष का सामान्य के साथ समर्थन किया जाय वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है। यहाँ पूर्वाक्षेप का परार्थ के साथ वैधर्म्य के द्वारा समर्थन रूप अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

कुछ की दृष्टि में इस श्लोक में दृष्टान्तालङ्कार है। इस अलङ्कार में उपमेय वान्य एव उपमान बाक्ष्यों तथा उसके साधारण धर्मों में विन्म प्रतिविम्बभाव होता है। इनमें किसी बात को कहकर उसकी पुष्टि के लिए तत्सदृश अन्य बात कही जाती है। उपमेय तथा उपमान दोनों के साधारण धर्म भिन्न भिन्न होने हैं, दृष्टान्त का अर्थ निश्चय भी होता है। प्रस्तुत वस्तु की असम्बन्ध प्रतीति ही निश्चय है। इसमें वर्णनीय विषय का उदाहरण द्वारा निश्चय होता है। इस लक्षण से जैसे अक्षरार्क उत्कृष्ट भूमि में निहित बीज बढता है—इस सामान्य के द्वारा या अप्रस्तुत के द्वारा उसी प्रकार इस विद्वत्सभा में मेरे द्वारा किये गये प्रयोग भी सफल होगा—इस विशेष या प्रस्तुत के प्रतिपादन से अप्रस्तुतप्रशंसा मूलक दृष्टान्त अलङ्कार हुआ। जैसे—उर्वरा भूमि में प्रयुक्त वृषि अर्थात् बीज—अनभिष्ट बीजरोपक के गुण की बिना अपेक्षा के ही फलानिश्चयोरपादक होता है, उसी प्रकार नर्तक के गुण की अपेक्षा किने बिना भी सभा में किया के आधारपात्रों के गुण से अभिनय की निपुणता रूप विन्मप्रतिविन्म की प्रतीति के कारण यहाँ दृष्टान्त अलङ्कार हुआ।

कुछ विद्वानों के मत में यहाँ निदर्शना अलङ्कार है। इस अलङ्कार में दो बाक्ष्यों में परस्पर सम्भव या असम्भव सम्बन्ध होने पर भी उपमा के द्वारा उनमें सम्बन्ध की करपना की जाता है। इसके द्वारा निश्चित रूप से सादृश्य का अभिव्यजन या प्रकटीकरण होता है। इस श्लोक में अनभिष्ट किसान के द्वारा की गया पत्ती में भी फलप्रतिपन्न की उत्पत्ति विन्मप्रतिविन्मभाव की प्रतीति है। इन दो असदृश प्रतीति होने वाले बाक्ष्यों में सादृश्य का निराजन कर उनमें सगति की स्थापना की गयी है। फिर इस दृष्टान्त के द्वारा मनामनों की गुणप्रतिपत्ति एव महदयता की चर्चा करते हुए स्वयं नटकर्तृक अनभिष्टता के द्वारा विनयशीलता का प्रदर्शन दृष्टान्त द्वारा प्रतिपादित होने के कारण निदर्शना अलङ्कार है।

इस श्लोक में प्रसादगुण एव वैद्यों की उक्ति है। कुछ लोग इसे अनुपपुष्टि कहते हैं। यथार्थत इसमें पद्यान्वयनामक वृत्त है। पद्यावयव में समपाद के चतुर्थ वर्ण के अनन्तर जाग होता है। अर्थात् पचम और सप्तमवर्ण एतु और षष्ठवर्ण गुरु होता है। प्रथम तृतीय पाद में तो वगण ही रहता है।

तथावद् इदानीं गृहं गत्वा गृहिणीमाहूय गृहजनेन सह सङ्गीतक-
मनुतिष्ठामि । (परिजन्यामलोक्य च) इमे नो गृहाः, तथावत् प्रविशामि ।
(नाट्येन प्रविश्यामलोक्य च) अने तत् त्रिभिदमस्मद्गृहेषु महोत्सव इव
हरयते । स्वस्वकर्मण्यधिकतरमभियुक्तः परिजनः । तथा हि—

विमला

व्याख्या—‘यावत्’ अथ शब्दोऽत्र वाक्यालङ्कारार्थः । तत्=तस्मात् कारणात् (For that, referring to something not present), इदानीं=सागन्तम् (even now), गृहं गत्वा=सर्वत्र प्राप्य (having gone home), गृहजनेन सह=परिजनेन सह (with the occupant of the house) सङ्गीतकम्=गानम् (Singing), अनुतिष्ठामि=करिष्यामि (Commence), परिज्यामलोक्य च=क्रियद्गूरु गत्वा दृष्ट्वा च (Going round and observing), नः=अस्माकम् (our), इमे गृहाः=सर्वानि (houses), नाट्येन=नट्येन नट्यावितोषेण (acting) प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (after entering) अये=आश्चर्यम् (Holla) तत्=इति वाक्यालङ्कारे, इदम् किम्=अपरं पर्यामि (what do I see) अस्मद्गृह=अस्मद्गृहे (in our house), महोत्सव इव=हर्षा-
तिष्ठ इव (as a great festival) हरयते=अवलोकयते (see), स्व स्वकर्मणि=स्वकीयस्वकीयकार्ये (in their respective duties) अधिकतरम्=अत्ययम् (excessive) अभियुक्तः=निवेष्टः (engaged) परिजनः=गृहजनः (house-hold attendants), तथाहि (Thus)

हिन्दी—बच्चा तो मन्त्रि घर बाहर घर के लोगों के साथ नाच के गीत का आयोजन कर (बूझकर और देखकर) यह वह रहा इनारा घर अच्छा नाचर चलै (अभिनेत्र के साथ प्रवेश कर और देखकर) । ओ ! यह क्या ! इनारे घर में तो लगता है काह बड़ा उत्सव हो रहा है । मना लोग अपने अपने कामों में बड़ हा मनोयोग से लगे हैं ।

English—Now having gone home, commence music with the inmates of house (going round and after looking) Here is our house. I enter (Acting entry and looking about) Hallo, what is this ! It seems as it were a great festival in our house. The inmates of house were highly engaged in their own works. Still.

टिप्पणी—‘यावत्’ का प्रयोग यहाँ अवधारणार्थक अन्वय के रूप में है । गृहजनेन=गृहस्थ-जन-गृहजनः इन गृहजनेन, यह जन शब्द व्यक्तिपरक शक्तिमान्तर है । ‘शक्रनाथिवादि’ से नष्टम यह लोग समान और ‘सहार्थे कृपादा’ से द्वितीया विधानकर ‘गृहजनेन’ रूप की निश्चिति हुई । स्वत्व कर्म ‘स्वकर्म’ यहाँ ‘न’ शब्द आत्मपरक ‘निज’ वाचक है । स्वत्व कर्म अस्मिन् रस निद्रा में ‘स्व’ का वाप्यान्तरक दित है । ‘अभि’ वस्तुर्गक ‘युद्’ यातु से कर्ता में ‘क’ प्रत्यय करने में ‘अभियुक्त’ बना ।

वदति जलमियं पिनष्टिगन्धानियमियमुद्गयते स्रजो विचित्राः ।

मुसलमिदमियं च पातकाले मधुरनुयाति कलेन हुंकृतेन ॥ ४ ॥

भवतु । कुटुम्बिनीमाहूय पृच्छामि । (नेपथ्याभिमुखमवलोक्य)

गुणवत्पुपायनिलये स्थितिहेतोः साधिके त्रिवर्गस्य ।

मद्भवननीतिविधे कार्याचार्ये द्रुतमुपेहि ॥ ५ ॥

विमला

अन्ययः—इयम्, जल, वहति, इयम्, गन्धान्, पिनष्टि, इयम्, विचित्रा, स्रजः, उद्गयते, इदम्, मुसल, पातकाले, मुहुः, कलेन, हुंकृतेन, याति ॥ ४ ॥

व्याख्या—इयम् = काचित् स्त्री (This one), जलम् = सलिलम् (water), वहति = आनयति (Carrying), इयम् = अपरा स्त्री (another woman), गन्धान् = गन्धद्रव्याणि (fragrant herbs) पिनष्टि = चूर्णयति (pounding), इयम् = अन्या- (This another), विचित्रा = नकवर्णा. (diversified), स्रजः = पुष्पमाला. (garlands), उद्गयते = प्रध्नाति (stringing together), इदम् = श्रवमाणं (this hearing), मुसलम् = मुसलदण्डं (a mace), पातकाले = धान्याद्युपरिपातनकाले (at the time of descent), मुहुः = असहृत् (repeatedly), कलेन = मधुरेण (with a sweet) हुंकृतेन = 'हुम्' इति शब्दविशेषेण ('hum' sound) याति = अनुकरोति (accomplishing) ॥ ४ ॥

भवतु = आस्ताम् (well), कुटुम्बिनी = गृहिणीम् (wife) आहूय = आवाहनं कृत्वा (Call) पृच्छामि = (ask her). नेपथ्यस्य = वेपथिनालयास्य (the attiring room) अभिमुखम् = सम्मुखम् (towards) अवलोक्य = दृष्ट्वा (Looking).

अन्ययः—इं गुणवति, उपायनिलये, स्थितिहेतोः, त्रिवर्गस्य साधिके, कार्याचार्ये, मद्भवननीतिविधे, द्रुतम्, उपेहि ॥ ५ ॥

व्याख्या—इं गुणवति = सप्रकृतिवगृहकार्यनैपुण्यादिगुणालङ्कृते (O the talented), उपायनिलये = गृहकर्मपाटवादिनिवासभूते (expert in devising expedients), स्थितिहेतोः = लोकयात्रासम्पादिनीम् (for the sake of existence), त्रिवर्गस्य-साधिके = धर्मार्थकामात्मकस्य निर्वाहयित्रि (provider of the three objects), कार्याचार्ये = कर्तव्यार्थोपदेष्टाकर्त्रि, (instructor in all duties), मद्भवननीतिविधे = अस्मद्गृहमन्वधिनीतिविधास्वरूपिणि (code of moral of my house) द्रुतम् = शीघ्रम् (Quick) उपेहि = समायच्छ (come) ॥ ५ ॥

हिन्दी—(सामने दीखने वाली) एक नटी तो पानी दो रही है । दूसरी, सुशिक्षित द्रव्यों को पीस रही है । तीसरी, अनेक रंग की मालायें गूथ रही है । इतना ही नशा—उपर वह मूसल गिरने के साथ-साथ नीली 'हुंकार' भरती हुई कुछ कूट रही है ॥ ४ ॥

जो हो—पानी को उलावर पूछता हूँ (नेपथ्य की ओर देखकर)

अरी ओ गुणवती ! गृहकार्य में चतुर गृहशान्ति के कारणस्वरूप, मेरे धर्म, अर्थ और काम

रूपों विषयों की साधिके ! कर्त्तव्यकर्त्तव्य की मार्गदर्शिके ! नेर घर की नातिविध ! कहाँ हो ?
 राम जाओ ।

English—This one is fetching water, another is pounding aromatic herbs, that one is stringing together diversified garlands, another is accompanying with a sweet 'hum' (a kind of sound) the mace at the time of its descent

Well, I will call my wife and ask her (Looking towards the decorating room) O the talented, the dwelling place of remedy, accomplishing of the group of three, which is the reason of stability of worldly life, admonisher of my all duties, the great learning of moral of my house Come soon

टिप्पणी—गन्धान् = 'गन्धद्रव्य' यहाँ गन्ध द्रव्य से तात्पर्य है सुगन्धित पानी-बूटियों, जो उस समय शृंगार प्रसादन के उपयोग में लाया जाता था । यह 'पिनष्टि' किया जा करने है तथादि विष्णु धातु से लट्ति में पिनष्टि बना है । उर उपसर्ग से प्रथम धातु के लट् लकार का 'उद्गमथत' रूप है । किन्तु यह अनाग्निनाम प्रयोग है । अनुयाति में जमरा वशात् सकर्त्तव्यता है । इस प्रकार हुन् + क्त + क प्रत्यय भाव में यह रूप सिद्ध है । सहायें मृताया से यहाँ मृताया विभक्ति हुई ।

'मधु' यह एक सुहाविरदार मसूत का प्रयोग माना जाता है । यह मधुषा अन्य का तरह विषयान्तर में प्रयुक्त होता है । कुम्भनत्वास्ताति 'कुटुम्भी' तस्य भार्या—'पत्नी' के अर्थ में यहाँ प्रयुक्त है ।

नेपथ्य —यह रंगभूमि का पिछला भाग है, जहाँ पात्र सजने हैं या विदाय करत हैं । इनमें मुख्य दृश्यों की सूचना दी जाता है ।

'गुणवत्तयुवायनिलयं' इत्यादि श्लोक में नाटककार ने सूरधार के द्वारा नाग का आवाहन किया है । इन आवाहन का कल्पना बड़ा ही मूल्य प्रमाण होता है । आरम्भ में इन आवाहन का कल्पना की कथ-ध्वनि से नाटककार की योग्यता का स्पष्ट ही पाठक का परिचय मिल जाता है । इस नाटक के चरितनायक नाट्य के द्वारा उनकी अनन्य सहचरा वृत्तावलीति के आवाहन का सुन्दर एवं नायिक उद्भावना रूप के द्वारा की गया है । पुस्तक के प्रारम्भ में इन आवाहन का समावेश कर कवि ने यहाँ पाठक के लिए इस नाटक के द्वार का उद्घाटन अविशेष से कर दिया है, वही सुन्दर इससे इन नाटक के निर्माता का साम्यता का पूर्वनाटिका भा स्पष्ट हो जाती है । नाटक का आरम्भ होने में हाथ इन पात्रों का विवरण यह सिद्ध कर देता है कि उनका स्वयंविदा अनेक किना सुष्ठुता हुआ है और किना सुन्दरित है । इसके ज्ञान का महाराज का मन तो विषय ही दे देता है और 'आवाहन' विवरण उस ज्ञान का प्रयोगोन्मुखता वा (Communicative) होने का । अर्थात् विषय का गरिमा हा उसके ज्ञान की इसका को नया सूचन करती, प्रत्युत नाटकीय रहस्य के विवेचन करने की उसका प्रौढ प्रविष्ट यह एक प्रमाण है कि वह दुम्हता को ब्रूकर वा छेडकर ही नहीं छोड़ देता, उसे मनाबल सा स्वच्छ वा दमन सा पारदर्शी तक बना डालने का क्षमता रखता है । विशाखदत्त ने इस छोट से पद्य में इस नाटक के विवेच्य विषय और प्रयोजन की एसी वैज्ञानिक अवधारणा का है कि उनके सफल नाटककार होने की बात हृदय में पैठ जाती है । ऐसे ही, आकाश का कुहरा इटने और नालिमा

के निखर उठने पर अधिकारा पड़ी की भा उठान मरने के लिए पर तोड़ने का अवसर मिल जाना है। नाटककार, दशक एवं पाठक सभी अपने अपने अधिकार को आरम्भ में ही समझ समझकर आगे बढ़ाने हैं।

हाँ, तो लाजिए इस श्लोक का प्रथम शब्द 'गुणवति' सूत्रधार के पक्ष में दया दाक्षिण्यादि गुणों से युक्त 'भार्या' का विशेषण है किन्तु, नाटककार का दृष्टिकोण कूटनीति से चाणक्य की चिरसहचरी कूटनीति परक है। उा शब्द यहाँ लिख है। नया के पक्ष में जहाँ यह शब्द दया, दाक्षिण्यादि जैसे नारीमुख्य गुण की प्रशंसा करता है—वहाँ यहा शब्द चाणक्य का राजनान शब्द में सम्बन्ध जुड़ते हैं कुछ अन्य अर्थ की प्रतीति कराता है। इस पक्ष में गुण से तत्पर्य राजनानि के इन ■ गुणों से हैं—(१) सन्धि, (२) विग्रह, (३) धान, (४) आसन, (५) सश्रय और (६) द्वैधीभाव।

विराधियों से कुछ छे डेकर समझौता करने का नाम सन्धि है। विग्रह का अर्थ अपकारपरक होना है। 'धान' से आक्रमण या स्थित का अवरोध होना है। आसन का तत्पर्य है परपक्ष की उपेक्षा करना। मध्य है—दूसरे की शरण लेना तथा द्वैधीभाव का अर्थ है एक के साथ झुलह करके उनकी सहायता से दूसरे से विग्रह करना। चाणक्य अपनी उसी कूटनीति का आह्वान करना है जिसके में छ गुण हैं।

दूसरा—इसी तरह लहराने अर्थ बाधा शब्द है—'उपायनिलये' नटी के पक्ष में उपाय का नाम अर्थ गृहसञ्चालन व्यवसाय में सुयोग्य गृहिणी है किन्तु, यहा शब्द जब चाणक्य की नाति परक अर्थ का ध्यान करता है तब—इसका अर्थ होना है—राजनाति ■ पञ्चाङ्ग भूत 'उपाय'। अर्थात् कार्याध्ययन करने का उपाय, कार्य को सिद्ध करने में उपयोगी द्रव्य का समग्र, देश और काल का निकषण, विपत्तियों को दूर करने के उपाय और कार्य सिद्धि का उपाय। कुछ राजनीतिज्ञों की दृष्टि में चार ही उपाय हैं। वे क्रमशः भेद, दण्ड, साम और दान हैं। चाणक्य का वह नाति जिसका आह्वान नाटककार कर रहा है—इन उपायों से परिपूर्ण है।

मद्भवननीतिविधे—नटी पक्ष में गृहकार्य दशा चतुर नारी अर्थ में प्रयुक्त है। किन्तु, यहा शब्द जब चाणक्य की नाति का संकेत करता है तब दूसरे ही अर्थ की प्रतीति होती है। वह अर्थ है—इस नाटक में प्रयुक्त सारी धनि प्रति धनियों चाणक्य की नाति (वेदा से सम्बन्धित है)।

स्थितिहेतो—स्थित इत्यु तस्य। 'हेतो' से प्रथमी विभक्ति हुई। यहाँ यह शब्द 'त्रिवर्गस्य' का विशेषण है। इसका अर्थ है (१) स्थिति—गृहिणी की व्यवस्थासम्बन्धी दशा (२) दूसरे पक्ष में राज्य की स्थिरता।

साधिके त्रिवर्गस्य—त्रयाणां वा त्रिवर्ग तस्य त्रिवर्गस्य। अर्थात् नटी के पक्ष में धर्म, अर्थ और काम की साधनभूता तथा चाणक्य नीति के पक्ष में—शुद्धि, स्थान और क्षयस्वरूपा।

कार्याचार्य—ते तत्पर्य है कार्य अर्थात् गृहकार्य तथा दूसरे पक्ष में राजनैतिक कार्य।

सूत्रधार के आह्वान में यहाँ, नाटककार की समस्त अनुभूति का भाव रूप में परिपाक है। इस नाटक की मूळनीति चाणक्य के चारित्र्य से उत्क्रान्त हुई है। यों, नाटकीयवृत्त के आवेष्टन से उसे सर्वथा अछूता नहीं कहा जा सकता, किन्तु, पक्ष से उठे पक्ष की तरह नाटकीय वृत्त की कगीनी डाँक पर यह चाणक्यनीति का झिला हुआ पाटल प्रभूत है। डाँक से जितना धूप फूल हा मचना है, इस नाटक से उठनी ही शब्द चाणक्य नीति की सम्भावना की जा सकती है।

(प्रविश्य)

नटी—अञ्ज, इन्द्रादि । अण्णापिओएण न अञ्जो अनुगुह्वातु । (आये, इत्यस्मि । आणानियोगेन मानार्थोऽनुगृह्वातु ।)

सूत्रवारः—आर्ये, तिष्ठतु तावदाणानियोगः । कथय किमयं भगवत्या तत्र ब्राह्मणाणामुपनिमन्त्रणेन कुटुम्बकमनुगृहीतमभिमतं वा भजनमतिथयः सम्प्राप्तान्, यत एष पाद्विरोधपरम्भः ?

नटी—अञ्ज, आमन्त्रिता नए भजयन्तो बद्धणा । (आर्ये, आमन्त्रिता मया भगवन्तो ब्राह्मणाः ।)

सूत्रवारः—कथय कस्मिन्निति ?

नटी—उपरज्जटि किल भजय चन्दो त्ति । (उपरज्यते किल भगवान् चन्द्र शत ।)

सूत्रवारः—आय, क एवमाह ?

नटी—एव तु पजरगामि जपो मन्तेदि । (एव खलु नगरवासिजनो मन्त्रयते ।)

मिमला

व्याख्या—(प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा = Entering)

नटी—आर्य = पूज्य (Respectable sir) इत्यस्मिन्पदा अहम् प्राप्ता (Here I am) आज्ञानुयोगेन = सामन्त्रदानेन (confiding with) माम् = अस्माकम् (me) आर्य = मान्यो भवान् (noble sir), अनुगृह्वातु = अनुकम्पया कृतकृपा विरोहि (May your honour favour me).

सूत्रवारः—आर्ये = मान्ये (Noble lady), तिष्ठतु = आस्ताम् (Let aside for a moment) तावत् = वाक्यालङ्कारार्थकः (so much), correlative of तावत्, आज्ञानियोगः = आज्ञाप्रदानम् (command for work), कथय = वद (tell me), किमयं = किमर्थमस्मिन् दिवसे (why today) अवस्था = स्वया (by you), तत्र भवताम् = पूज्यताम् (venerable), ब्राह्मणानाम् = विश्राम् (To a man belonging to the first of the four original castes) उपनिमन्त्रणेन = नियोगकरणेन (by having invited), कुटुम्बकम् = पौष्पवर्गः (family), अनुगृहीतम् = कृतार्थकृतः (favoured), अनिमन्त्रा = कान्दिता (esteemed), वा = अथवा (or), अतिथयः = अन्त्यागतः (guests), अवनम् = गृहम् (to our house), सम्प्राप्ताः = आगताः (come), यतः = यस्मात् (Because of), एष = साच्चत् इत्यन्तः (These) पाद्विरोधपरम्भः = पाद्विरोधयोगः (special preparation of meals).

नटी—आर्य = मारिष (My lord), मया (by me), भगवन्तः = पूजनीयाः (the worthy), ब्राह्मणा = विश्राम, आमन्त्रिता = नोडनार्थम् निमन्त्रिताः (invited).

सूत्रवारः—कथय = वद (Tell me), कस्मिन्निति = केन प्रयोजनेन (for what reason).

नदी—भगवान् चन्द्र=शशी (the moon), उपरज्यते=राहुग्रस्तो भविष्यति (will be eclipsed), किल=खलु (Trifling).

सूत्रधार—आर्ये=मान्ये (Noble lady), क=पुरुषविशेष. (who), एवम्=इदम् (like this) आह=कथयति (to say).

नदी—एवम्=इत्थम् (such), खलु=निश्चयेन (Indeed) नगरवासी=नगर-
वासनशीलः (Urban) जन.=लोक (People), मन्त्रयते=कथयति (to say).

हिन्दी— (रङ्गमञ्च पर आकर)

नदी—आर्ये ! मैं आ गयी । आदेश देकर मुझे अनुगृहीत करें ।

सूत्रधार—आर्ये ! मेरी आज्ञा की बात अभी रहने दो । सर्वप्रथम यह बताओ कि कुछ मान्य
ब्राह्मणों को तुमने आमन्त्रित किया है ? अथवा—बिन बुलाये कहाँ से स्नेहशाल अतिथिगण पधार
रहे हैं, जिनके लिए विशेष भोज की तैयारियाँ हो रही हैं ?

नदी—आर्य, मैंने ही कुछ पूज्य ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया है ।

सूत्रधार—क्यों ? क्या बात है ?

नदी—बुना है चन्द्रग्रहण होने वाला है ।

सूत्रधार—तुमने ऐसा किसने कहा ?

नदी—नागरिकजन तो ऐसा ही कह रहे हैं ।

(Entering)

The actress—Respectable sir, I have come. Let me work for your honour with your order.

Manager—Honourable lady, let my order stay for a moment, tell me first:—have you invited venerable Brahmanas to make our house sacred ? or if esteemed guests have themselves come to the house ?—That there are these special preparations of meals.

The actress—Lord ! I have invited the venerable Brahmanas.

Manager—All's right, but what was the occasion ?

The actress—for the moon is going to be eclipsed.

Manager—who says so ?

टिप्पणी—आर्य—अर्यते इति आर्य । 'रू' धातु से कर्म में ण्यत् प्रत्यय कर आदि शब्द की
सृष्टि करने पर 'आर्य' शब्द की निष्पत्ति होती है । इसका अर्थ 'मान्य' है । नाटक में सूत्रधार
और नदी के बीच 'आर्य' एवं 'आव' पारस्परिक सम्बोधन के रूप में व्यवहृत होता है । साहित्य
दर्पण में 'आर्य' शब्द का लक्षण लिखा है—

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन् ।

तिष्ठति प्रवृत्ताचारे स वै आर्य इति स्मृतः ॥

इसी प्रकार 'आर्ये' के लिए—'नाट्योक्तौ तु पुमानार्यः आर्ये तु भार्यमारिपौ—इति ।'

आज्ञानियोग.—आ + नि + बुज्, यावे नियोग । आज्ञापानामुपनिमन्त्रणेन—चन्द्रग्रहण की

सूत्रधार.—आर्यै, कृतधनोऽस्मि चतु पण्यद्वे ज्योतिःशास्त्रे । तत्प्रस्तव्यताम्
भगवतो ब्राह्मणानुदिश्य पाठः । चन्द्रोपरागम्यति तु केनापि मित्रलब्धासि ।
पश्य—

कूरग्रहः स केतुश्चन्द्रं सम्पूर्णमण्डलमिदानीम् ।

अभिभवितुमिच्छति वल्गात्..... (इत्यर्थाच्चे-)

(नेपथ्ये)

आ, क एष मत्रि स्थिते चन्द्रमभिभारितुनिच्छति बलात् ।

सूत्रधारः— रक्षत्येनं तु बुधयोगः ॥ ६ ॥

नदी—अज, को उण एमो धरणगोअरो भयिअ चन्ट माहाभिजो आगे
रक्षिदु इच्छति ? (आरं, स पुनरेप धरणगोचरो मूरा चन्टं प्रहाभियोगान्
रक्षितमिच्छति ?)

मूनधारः—आर्ये, इत्येत्य नरापि नोपलक्षितः । भवतु । भूयोभिमुक्तः स्वर-
व्याक्तमुपलक्ष्यते । ('अरग्रतः'—इत्यादि पुनस्तदेव पठति ।)

मनस पर पुरस्कार स्वयं महाराज भावन का विधान है। इस सम्बन्ध में 'धर्मसिन्धु' पृ० २७ एवं वाक्यस्वयं पृ० २१७ एवं २८ २९ हैं—'भवावस्थापकबुद्धि' ग्रहण चन्द्रसूर्ययोः। विद्यकर चन्द्रहा के समान भावन आकाशे वसित है। इस सम्बन्ध में भूव महाराज के विचार दर्ज हैं—

राहोथ द्दने दत्त धादुमाचन्द्रतारकम् ।

गुणैश्च सर्वकामैश्च पितृणां सुपतिष्ठति ॥

कुटुम्बकम्—'कुटुम्बना लङ्' कुटुम्बकम्' स्तार्थं नै कन् प्रत्यय, अतियि—अगति गच्छति
 तिष्ठति इति अगिथि, जत+इथि' अथवा—न विद्वन् दिदाया तथिपंस्त्व अर्त्ता अनिधि ।
 ननु लुटि नै आभि का परिभाषा इत् प्रकार है—

एकत्र तु निवस्यति यिर्माह्वयः स्मृतः ।

नित्यं हि स्थितो यस्मात् तस्मादिति यिदच्यत ॥

पाकविशेषः—पाकत्वविशेषः पाकविशेषः—विशुद्धः पाकः, तस्य आरम्भः । वि + शिप् + घञ्
नादे विशयः अर्थात् विशय रूप से काव्यजित् । उपरज्यते—वर + रज् + क्त्वं त कर्त्तॄन् 'उपर
क्यत्' गृह्य को उन्नाय कहते हैं । विक्रयार्थे लिङ्ग है—'उपरज्यस्तु पुंसि स्वात् राष्ट्रमासेऽर्थ-
वन्त्रयोः ।'

यिमला

व्याख्या—जायं=मान्य (noble lady), कृतश्रमोऽस्मि=परिश्रम कृतवानस्मि (have spent some labour on), चतुषष्टयङ्के=चतुर्विंशत्यष्टिचतुषष्टिः तस्य अङ्गानि प्रतिपाद्यप्रकारा यस्मिन् तस्योक्त तस्मिन् चतुषष्टयङ्के (sixtyfour branches), ज्योतिःशास्त्रे (The science of astronomy), उत.=तस्मात् (so), प्रवर्त्यताम्=पाकविनाय क्रियताम् (Let your preparation of meal start), भगवतः=श्रेष्ठान् (worthy), ब्राह्मणान्=विप्रान् (Brahmanas), उद्दिश्य=उद्देश्य कृत्वा (in

honour of), पाक = पाकविशेष (special food), चन्द्रोपराग प्रति = चन्द्रग्रहण-
प्रति (as to the eclipse of the moon) तु = किन्तु (but), केनापि = मिथ्या-
वादिना (by some one), विप्रलब्धासि = वञ्चितासि (you are deceived), परय =
अवलोकय (for see)

अन्वयः—स, क्रूरग्रह, केतु, इदानीम्, सम्पूर्णमण्डल, चन्द्र, बलात्, अभिभवितुम्,
इच्छति ॥ ७ ॥

इत्याख्या—स = असौ (That), क्रूरग्रह = पापग्रह (The malignant), केतु =
राहु एव केतुशब्देनात्र व्यपदिष्ट (planet) इदानीम् = अयुना (now), सम्पूर्णमण्डलम् =
परिपूर्णबिम्बम् (Full orb of the moon) चन्द्रम् = रजनीकरम् (To the
moon), बलात् = साहसेन (forcibly), अभिभवितुम् = आक्रमितुम् (to attack).

(एतद्वाक्यत स्तेपेण समलयकेतुराक्षसकर्तृकचन्द्रगुप्ताभियोगसूचनेन छिष्टार्थावगमा
देव कौटिल्यपात्रप्रवेशस्य वर्णनीयत्वेन छिष्टार्थे प्रतिपादयति) तथा च द्वितीयपक्षे यथा—

क्रूरग्रह = दृढव्यवहारासङ्ग (determined purpose), सकेतु = मलयकेतुसहित
(with Malayaketu), इदानीम् = साम्प्रतम् (at this time) सम्पूर्णमण्डलम् =
प्रजासमुदायम् (all the constituent parts of a kingdom), चन्द्रम् = चन्द्रगुप्तम्
(to Chandragupta), बलात् = मित्रादिसैन्यमाश्रित्य अथवा सामर्थ्यात् (perforce),
अभिभवितुम् = पराजितुम् (to attack) इच्छति = वाञ्छति (wishes)

(इति = एव (like this) अर्द्धोक्त = अर्द्ध एव सूत्रधारवचने सकोपमाह
(when half uttered))

नेपथ्ये = वेपरचनाभूमौ (In the dressing room), आ क एष किं नामकोऽसौ
(Ha, who is), मयि = चाणक्ये (Chanakya), स्थिते = विद्यमाने (living) ।

सूत्रधारः— बुधयोग = बुधनामकग्रहेण सह सम्बन्धः पदान्तरे, चाणक्यस्य
योग (conjunction of the planet Mercury, or Connection with the
wise Chanakya), पुन = चन्द्रम्, पदान्तरे चन्द्रगुप्तम् (The moon, or to
Chandragupta) रक्षति = चन्द्र राहुप्रसनात् वारयति, चन्द्रगुप्तपक्षे राहुपराभवात्
प्रापते (The Mercury or Chanakya saves, the Moon or Chandragupta)

नमो—आर्य = मान्य (My lord) धरणीगोचरो भूवा = भूमिस्थ सन् (having
shown himself on the earth), चन्द्रम् = इन्दुन् (The moon), महाभियोगात् =
राहुप्रासात् (from the attack of the planet) रक्षितुम् = प्रातुम् (to save),
इच्छति = प्राञ्छति (desires), एष पुन क = किं नामक ? (who is)

सूत्रधारः—आर्य = मान्ये (lady), यत् उक्त त्वया तत्तत्त्वमेव (to tell you the
truth), मयापि = अहमपि (by me—I too), नोपलब्धित = कोऽस्ताविति न ज्ञात
(did not know him), अबतु = अस्तु (well), भूय = पुन (again), अभिवृक्त =
सावधान सन् (being attentive), स्वरव्यक्तिसु = कण्ठरवण निदिष्टजनम् (the
identification of his voice), उपलप्स्ये = ज्ञास्यामि (I shall obtain).

(‘क्रूरग्रह’ इत्यादि पुन पठति = that well known Ketu, he repeats)

हिन्दी—आपें, ज्योतिष्शास्त्र के चँन्नों ज्यों के अध्ययन में पर्याप्त परिश्रम करने दिया है। इन्हींसे नान्य ज्ञानों के क्षेत्रों से मोक्ष का आचोवन करना चाहता तो क्यों, किन्तु, चन्द्रग्रहों के सम्बन्ध में किता ने मुझे ठग लिया है। देनो—

सूत्रा चन्द्रन इत्थं को वह शस्त्रह केतु (राहु) वस्तुतःक प्रसन्न बनाने की इच्छा कर रहा है—(इतना जाना कहा ही था कि) —

(नेत्रम्य में अंगुष्ठा पदों के शरीर से)

नह ! नेरे रहत वह कौन है जा चन्द्र को प्रसन्न ?

सूत्रधार— किन्तु, दुष्ट का ऐसा उद्योग परा है कि चन्द्र को रक्षा कर रहा है। १॥

नट्टी—स्वामी, इस परता नर रहने वज्रा यह कौन है जा चन्द्र को प्रहानिदोग ने बचने का इच्छा करता है ?

सूत्रधार—आपें, सब तो यह है कि मेरा ध्यान इस ओर था ही नहीं। अच्छा, एकबार फिर पढ़कर ध्यान से इसका कंठ स्वर पहचानूँ। ('कूरग्रह' इत्यादि शब्दों का पुनः पाठ करता है)—

English—*Manager* —Noble lady, I have done hard labour in the Science of astronomy with its sixty four branches; so let preparation of meal start for the worthy Brahmanas, but as to the eclipse of the moon, you are deceived by Some one.—See

That malignant planet wishes, perforce, to devour the moon, having the full orb. Or, that well known Ketu of Cruel (king Malayaketu) wishes forcibly to attack Chandra having the full mandala. (When half uttered)

(In the dressing room)

Ha ! Who is he that, while I live, wishes to overpower Chandra ?

Manager—But near presence of Mercury saves him. ॥ 6 ॥

Actress—Noble sir, who is that, being an inhabitant of the earth, wants to save the moon from planetary aggression ?

Manager—Noble lady, to tell you the truth, I did not mark him too Well, being observant again, I shall mark the revelation of his voice. (repeats the verse again—'कूरग्रह' etc).

टिप्पणी—चतुःपञ्चम्ये=पञ्चम्य के अनुसार ज्योतिष्शास्त्र के २४ अङ्ग एवं ४० उपाङ्ग हैं। शान्तों को मिलाकर ज्योतिष्शास्त्र के ६४ अङ्ग मान गये हैं। यद्यपि मूलतः ज्योतिष को तीन विभक्त्य ही कहते हैं और वे तीन अङ्ग हैं—(१) ज्योति, (२) हारा और (३) घटित। मूल धारा के इन कथन का तात्पर्य यह है कि जन्मे ज्योतिष के इन सना ज्यों का अध्ययन किया था। 'कूरग्रह' इत्यादि शब्दों शस्त्रार्थक है। इसके प्रत्येक उपाङ्ग के दो-दो अर्थ हैं। 'ग्रह'—'तृणवति रविचन्द्रमसि यत' इस विग्रह के अनुसार ग्रह का अर्थ यहाँ 'राहु' है। और 'अने वक्ष्य में जो दृष्ट है'—इस विग्रह के अनुसार ग्रह का अर्थ यहाँ 'राक्षस' है। सकेतुः—वह केतु कथार्थ केतु अन्ध यहाँ राक्षसक प्रयुक्त है। दूसरे अर्थ में—'नान के एकदश के उद्गा से सन्तुर्नान का

(नेपथ्ये)

आः ! क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति ।

सूत्रधारः—(आकर्ण्य) आर्ये, ज्ञातम् । कौटिल्यः ।

बोध होता है' इस निदम के अनुसार अपने सदस्यों के साथ 'मलयकेतु' का बोध होता है। चन्द्र—यह शब्द यहाँ एकपक्ष में चन्द्रमापरक है और दूसरे पक्ष में चन्द्रगुप्त का बोधक है। प्रवर्त्यताम्—प्र + कृत + णिच् कर्म में कामचारानुसारक लोट् लकार में यह रूप सिद्ध हुआ है। बुधयोगः—बुध + योग, 'बुध' का यहाँ दो अर्थ हैं एक तो ग्रहों के बीच यह सूर्य और धरणी के बीच का ग्रह है। इसका योग सर्वथा चन्द्रमा को ग्रहण से बचाता है ऐसा शास्त्रीय सिद्धान्त के साथ भौगोलिक तथ्य है। दूसरे अर्थ में बुध से तात्पर्य 'चाणक्य' का है, जिसका सयांग सदैव चन्द्र की सुरक्षा में सलग्न है और वह राक्षस एवं मलयकेतु के आक्रमण से बचाता है। शास्त्रीय सिद्धान्त से तात्पर्य 'गर्गसंहिता' से है। उसमें ग्रहण के सम्बन्ध में उल्लेख है कि पंचग्रह सयोग में ग्रहण नहीं लगता है। ये पञ्चग्रह हैं—सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शुक। इस न्याय्या के समर्थन में एक वचन है—

तत्तन्वदन्तस्मिन्धुनानुरूपो रूपोऽस्ति चिद्रूपतया बुधावयः ।

ययोगभाज न विभुमुदोपि विभुमुदःशुभविरोधयोधः ॥

धरणीगोचरोभूत्वा—इसका भी दो अर्थ हैं। इस धरती का निवासी होकर यह कौन है जो आकाशीय चन्द्र की रक्षा का दम्भ भरता है? अथवा—इस धरती पर कौन है जो मलयकेतु एवं राक्षस के कोपभाजन चन्द्रगुप्त की रक्षा का दम्भ भरता है? चन्द्रोपरागप्रति—'उपराग' शब्द का कोपगत अर्थ है 'ग्रहण'। अतः यहाँ चन्द्रस्य उपराग, चन्द्रोपरागः (प० त०) तन् 'चन्द्रोपरागम्'। यहाँ 'प्रति' शब्द के योग में—'कर्मप्रवचनीययोगे द्वितीया' विभक्ति हुई है। विप्रलब्धा—वि + प्र + लभ + क्त कर्मणि से न्युत्पन्न 'विप्रलब्धा' शब्द वा यहाँ अर्थ है ठगा जाना।

लगता है 'कूरग्रह'। इत्यादि श्लोक के प्रत्येक शब्द सकलन को उनके अर्थभरित की दृष्टि से ही नाटक के आरम्भ में स्वीकार किया गया है। परन्तु इस श्लोक के प्रत्येक शब्द इस नाटक की समस्त उद्भावनाओं और सभावनाओं को प्रकट करता है। श्लोकगत सभी शब्दों के छिद्र अर्थों का ध्यान रखकर ही सभवतः इसकी रचना हुई होगी। क्योंकि इसके प्रत्येक शब्द से दो अर्थों के अतिरिक्त नाटकीयता स्पष्टतः अभिव्यक्त होती है। 'कूरग्रह' और 'सवेतु' जैसे शब्दों का प्रयोग नाटक के आन्तरिक धर्मों को प्रकट करता है। 'कूरग्रह' इस नाटक का माधना पक्ष है और 'सवेतु' उसका व्यवहार पक्ष है। अतः इस श्लोक की संप्रयुक्तता स्पष्ट है। इन शब्दों के सयोजन की अन्वर्थधूमता समस्त नाटक में व्याप्त है। यह एक ही श्लोक नाटक के स्वरूप की उभारदार रेखाएँ स्पष्ट करता है—येमा किसी भी पाठक को लगेगा। अन्यथा—'कूरग्रह' केवल 'केतु' का विशेषणमात्र है।

विमला

व्याख्या—नेपथ्ये=वेपरचनामूमी (Behind the curtains)

आ. = आश्चर्यार्थकम् अव्ययम् (Ha), क एष. = मित्रामकोऽस्ती (who is he that), यो, मयि = चाणक्ये, स्थिते = विद्यमाने (while I live), चन्द्रगुप्तम् = दृष्टम् (to

(नदी भवं नाटयति)

सूत्रधारः—

कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन क्रोधाग्नीं प्रसभमदाहि नन्दवंशः ।

चन्द्रस्य ग्रहणमिति श्रुतेः सनाम्नो मौर्येन्द्रोद्विपदमियोग इत्यवैति ॥ ७ ॥

तहि आवां गच्छामः । (इति निष्क्रान्ता)

(इति प्रस्तावना)

Chandragupta), बलात्=प्रसभेन (forcibly), अभिमविशुम्=परामवितुम् (to overpower), इच्छति=वाञ्छति (wishes).

सूत्रधारः—(आकर्ण्य=श्रुत्वा (Listening) भार्ये=नान्ये (Noble lady), वान्म् = इदम् (I see), कौटिल्यः=चानक्यः (Chanakya).

(नदी भवं नाटयति = नदी त्राम व्यञ्जयति Actress gesticulates fear)

अन्वयः—येन, क्रोधाग्नीं, नन्दवंशः, प्रसभमदाहि, स, एष, कुटिलमतिः, कौटिल्यः, चन्द्रस्य, ग्रहणम्, इति श्रुतेः, सनाम्नो, मौर्येन्द्रो, द्विपदमियोग, इति, अवैति ॥ ७ ॥

ध्यातव्या—येन=हृतसायप्रतिज्ञेन ब्राह्मणेन (By whom), क्रोधाग्नीं=कोपानले (in the fire of his violent anger), नन्दवंशः=योगानन्दकुलम् (the race of the Nandas), प्रसभम्=हृतात् (By force), अदाहि=अग्निसात् हृतः (burnt-up), सः एष=नेपथ्यगतो जनः (That fellow), कुटिलमतिः=क्रूरस्वभावः (cruel hearted), कौटिल्यः=चानक्यः (Chanakya), चन्द्रस्य ग्रहणम् इति श्रुतेः=चन्द्र-ग्रहणशब्दश्रवणात् (hearing of suppression of Chandra), सनाम्नः=सुत्या-क्यस्य (Who bears the same name), मौर्येन्द्रोः=इन्दुगुप्तचन्द्रगुप्तस्य (moon like Maurya), द्विपदमियोगः=शत्रुणा आक्रमणम् (enemy attack), अवैति=जानाति (understands). ॥ ७ ॥

हिन्दी—

(नेन्य नै)

अरे, वह कौन है ? जो मेरे रहते चन्द्रगुप्त के परानव की हत्या करता है ।

सूत्रधार—(कान देकर) पता लग गया । भार्ये, वह कौटिल्य है ।

(नदी बनभाव हो जाती है)

हाँ, हाँ, वही कुटिलमति कौटिल्य, जिसने सन्तुर् नन्दवंश की बलात् अपनी क्रोध की आला में मरन कर डाला, वही 'चन्द्र' के ग्रहण' सन्तुर् 'मेरी बात सुनते ही चानकान्य के कारण 'चन्द्रगुप्त' के पर शत्रु का आक्रमण' सन्तुर्कर बिगड़ उठा है ।

अतः वहाँ से हम दोनों भाग चले (दोनों निकल जाते हैं)

(प्रस्तावना समाप्त)

English—

(In the dressing room)

Ah ! Who is he that while I am living, wants to attack Chandragupta ?

(ततः प्रविशति मुक्ता शिखा परामृशश्चाणक्यः)

चाणक्य — कथय । क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति ।

परय—

आस्यादितद्विरदशोणितशोणशोभाम्

संध्यारुणामिव कला शशलाञ्छनस्य ।

जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात् स्फुरन्तीम्

सो हर्तुमिच्छति हरे परिभूय दंष्ट्राम् ॥ ८ ॥

Manager— (Listening) Noble lady, understood, Kautilya

(Actress gesticulates fear)

Manager— Kautilya II is, by whom the lineage of Nanda was, forcibly burnt up in the fire of his violent anger. On hearing of the (चन्द्रस्य ग्रहणम्) catching of the moon, he understands by these two words that there is to be an attack by the enemy on Chandragupta, who has a similar name ॥ 7 ॥

So let us be off from this place (Exeunt)

(End of the commencement)

टिप्पणी—‘प्रसमम्’ का कुछ लोग ‘झटिति’ भी अर्थ करते हैं, किन्तु व्युत्पत्ति के अनुसार—‘प्रगता समा विचारो हरिमन् कमणि’ यही होना चाहिए । अदाहि—‘इह’ भाग्य से इह लकार ‘त’ प्रत्यय कर्म में अदाहि । मौर्येन्द्रो—मुराया अपत्य पुमान् मौर्य—‘मुरा’ शब्द से प्यय प्रत्यय करने से मौर्य बना, फिर ‘मौर्य इन्दुरिव’ मौर्येन्द्र । राजा नन्द को मुरा नामक एक शूद्रा दासी थी—उसी से उत्पन्न होने के कारण चन्द्रगुप्त को मौर्य कहा जाता है । यह एक पौराणिक कथा है । समानम्—समानम् नाम यस्य स समाना तस्य—समानस्य छन्दसि सूत्र से सिद्ध यह शब्द है । ध्रुते—यहाँ हेतु से पञ्चमी विभक्ति हुई है । भवेति—भव+इ लट् लकार ति’ प्रत्यय से ‘अवेति’ ।

प्रस्ताविता—प्र+लु+णिच्+जुन् ‘भावे विवाम्’ से प्रस्ताविता ।

विमला

व्याख्या—ततः = तदनन्तरम् (after that), मुक्ताम् = असंयताम् (unbound), शिखाम् = चूडाम् (Plume), परामृशन् = करेण स्पृशन् (touching with his hand) चाणक्य = कौटिल्य (Chanakya) प्रविशति = आगच्छति (enters),

चाणक्य — कथय = वद (tell me) क एष = किष्कामकोऽसौ (who is he) मयि स्थिते = चाणक्यविविधमाने (while I am living), चन्द्रगुप्तम् = मौर्यम् (Chandragupta), अभिभवितुम् = पराम्वितुम् (to attack), इच्छति = वाञ्छति (desires), परय = अवलोक्य (look here) —

नन्वय—‘क’, जृम्भाविदारितमुखस्य, हरे, मुखात्, आस्यादितद्विरदशोणितशोणशोभाम्, शशलाञ्छनस्य, सन्ध्यारुणाम्, कलाम्, इव, स्फुरन्तीम्, दंष्ट्राम्, परिभूय, हर्तुम्, इच्छति ॥ ८ ॥

अपि च—

नन्दकुलकालमुज्जयी कोपानलवहुलनीलधूमलताम् ।

अद्यापि वध्यमानां वध्यः को नेच्छति शिखां मे ॥ ९ ॥

व्याख्या—क=जनः (who is he), जृम्भाविदारितमुत्तस्य=शरीरालम्ब्यरि-
हारक - मुत्तप्यादानात्मकव्यापारविशेषेन (yawning) विदारितम्=प्रसारितम्,
(wide open), मुत्तरव=आननस्य (of his mouth), इरे=सिंहस्य (of the
lion), मुत्ताव=आस्थाव (from the mouth), आस्वादित=पीतः (tasted),
द्विरदसोजितम्=गजरक्तम् (the blood of the elephant), सोमान्=रक्तवर्णं (of red
colour), सोमान्=हविम् (lustre), सप्तलाम्बुनस्य=चन्द्रस्य (of the moon),
कलाम्=पौडशाशम् (a digit), इव=यथा (like), स्फुरन्तीम्=प्रकाशमानाम्
(shining), सन्ध्यादगाम्=सन्ध्यासमयेन इत्येव रक्तवर्णान् (tinted red by the
twilight), दृष्टान्=दृष्टानम् (teeth) परिभूय=भवमन्य (with insult or by force),
हर्षुम्=उन्मूलयितुम् (to snatch away), इच्छति=वाञ्छति (desires) ॥ ८ ॥

हिन्दी—(अपना ज़ुलुझ शिखा का हाथ से लुटते करत हुए चानक्य का प्रवेश)

शानक्य—राजानो, वह कौन है ? जो नर राव चन्द्रगुप्त नर भ्रमण करने का इच्छा
करता है । देखो—

वह कौन है ? जिसने भोजन के रूप में लुट चुके की जगह में लुट हुए लुट व चनक्य हुए
उन दोनों को उठा देने का हिम्मत करता है—जो हाथ के लाल-लाल लून के उच्छाट मार
के चुकने के कारण अब नो संध्याकाळीन चन्द्रकला के समान थोड़ी-थोड़ा लाली से लुट है ।

English—(Chanakya enters touching with his hand loose tuft
of hair on his crest)

Chanakya—Tell me, who is he that, while I am living, dares to
attack Chandragupta ? look here.

Who dares defiantly to extract from the mouth of the lion whose
jaws have been opened by yawning, the colour of which is red with
the blood of the elephant, just tasted by him, which appears like a
digit of the moon tinted red by the twilight ? ॥ 8 ॥

टिप्पणी—राक्षस के साथ नष्टकरे हुए दारा-चन्द्रगुप्त का पराजय अनुभव है, नहा केन्द्रान
विचार इन श्लोक का है । अन्तर्गतमन्त्रा अन्तर्गत है । वन्द्यवर्तिका वृत्त है ।

विमला

अपि च—(Moreover)—

जन्मयः—वध्य, क, नन्दकुलकालमुज्जयीम्, कोपानलवहुलनीलधूमलताम्, मे
शिखाम्, अद्यापि, वध्यमानान्, न, इच्छति ॥ ९ ॥

व्याख्या—वध्य=हन्तुम् योग्यः (deserves death), क=जनः (who),
नन्दकुलकालमुज्जयीम्=नन्दान्वयस्य कालसर्पिणीम् (like a female-Cobra
to the family of Nandas), कोपानलवहुलनीलधूमलताम्=कोप एव जनलः

अपि च—

उल्लङ्घयन् मम समुज्ज्वलतः प्रतापं

कोपस्य नन्दकुलकाननधूमकेतोः ।

सद्यः परात्मपरिमाणविवेकमूढः

कः शालभेन विधिना लभतां विनाशम् ॥ १० ॥

शार्ङ्गैस्व शार्ङ्गैरय !

कोपानलः=कोपवह्निः (fiery wrath) इव तस्य बहुला=अधिका (deep), नीला= कृष्णवर्णा (black colour), धूमलता (dark line of smoke), मे=मम (my), शिराम्=चूडाम् (tuft), अद्यापि=नन्दवंशध्वजेऽपि (even now), वध्यमानाम्= सयन्तुमारभ्यमाणाम् (being tied), चेच्छसि=नाभिलष्यति (does not wish).

हिन्दी—और भी—वह कौन मरना चाहता है ? जो सम्पूर्ण नन्दवंश के लिए, कालसर्पिणी बनी हुई, मेरी कोपवह्नि से निकली काले धुएँ की रेखा की तरह—अब तक बंध जाने वाली मेरी इस शिखा को अभी भी खुली देखना चाहता है ?

Moreover—Who is seeking his death, and even now does not want to see my tufted hair tied up which is like the female cobra to the race of Nandas and is the thick dark line of smoke of the fire of my anger ?

टिप्पणी—कथं—वधमर्हतीति कथं: 'अहं कृत्यतुल्य' इस सूत्र में वध धातु से यत् प्रत्यय कर रूप बना । अथवा—'इन्तुन् योग्यः' इस अर्थ में 'इनो वा वदथ' इस वार्तिक से 'इन्' धातु से यत् प्रत्यय करने के बाद वधादेश कर रूप सम्पन्न हुआ । नन्दकुलकालभुजङ्गीम्—नन्दस्य कुलम् 'नन्दकुलस्य कालभुजङ्गीम्' यहाँ नित्य समास हुआ तथा जात्यर्थक बीप् प्रत्यय है । कोप एव अनलः—कोपानलः, अर्थात् कोपोऽनल इव तस्य बहुला अधिका नीला कृष्णा धूमलता नामिव इति = कोपानलबहुलनीलधूमलताम् । यहाँ शिखा में कालभुजङ्गात्वं एव धूमलतात्वं के आरोप से तथा क्रोध में अनलत्वं के आरोप से एव-शिखा में धूमलतात्वं के आरोप से दिव्य शब्द निबधनमालारूपपरम्परित रूपकालङ्कार है । यहाँ गौरी रीति है तथा आर्या वृत्त है ।

विमला

अपि च (Moreover)—

अन्वयः—परात्मपरिमाणविवेकमूढः, कः, मम, समुज्ज्वलतः, नन्दकुलकाननधूम-केतोः, कोपस्य, प्रतापं, शालभेन, विधिना, उल्लङ्घयन्, सद्यः विनाशम्, लभताम् ।

व्याख्या—परस्य = शत्रोः (strength of enemy), आत्मनः=स्वस्य, (self), यत् परिमाणम्=मात्रा (the measure), विवेके=विविच्य ग्रहणे (in discrimination), मूढः=ज्ञानशून्यः (stupefied), कः=जन् (who is), मम=मामकीनस्य (my), समुज्ज्वलतः=दीप्तस्य (blazing), नन्दकुलकाननधूमकेतोः=नन्दवंशवनवह्नुः (in the form of the forest fire for the race of Nandas), कोपस्य=भगवत्स्य (of anger), प्रतापं=तेजः (flame) शालभेन विधिना=पतङ्गरिया (in the manner of a moth), उल्लङ्घयन्=अतिक्रामन् (crossing), सद्यः=तत्क्षण एव (at that time), विनाशम्=व्ययम् (destruction), लभताम्=प्राप्नोतु (to suffer.)

प्रयनोऽङ्कः]

(प्रविश्य)



शिष्यः—उपाध्याय, आज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स, उपवेष्टुमिच्छामि ।

शिष्यः—उपाध्याय, नन्विद्य सन्निहितवेत्तासन्नेव द्वारप्रकाष्टशाला । तद-
स्यानुपवेष्टुमहंत्युपाध्यायः ।

चाणक्यः—वत्स, कार्याभिनियोग एवास्मान् व्याकुलयति, न पुनरुपाध्याय-
सहस्रः शिष्यजने दुःशीलता । (नाट्येनोपनिश्च आत्मगतम्)

हिन्दी— कैं ना—

वह कैं ना ? जो अपनी कैं पराया शक्ति को मापने में असमर्थ है, तथा नन्दवश
का जाल के नि दाव में बना नेता काफ़ी क़द भरहटना करती हुआ पक्षों का तरह मरने
की उद्यत है ।

कैं ना शहर ' शहर '

English—Besides—Who is he ? who being at a loss to distinguish
between the measure of his own strength and that of others, is forth-
with to suffer destruction after the fashion of a moth crossing
the flame of my wrath—acting like fire to the forest of the race of
the Nandas? O ! Sarangarava Sarangarava

शिष्यः—नन्दकुलकाननधूमकेतोः—नन्दकुलम् नन्द कुलम् यथा तदुक्तं सनात
दुष्टा । तद्वदकानन वनस्य धूमकेतुः वहिः । यहाँ ना वही सनात दुष्टा । परात्मपरिणाम-
विवेकमूढ—परत्पक्षोः कानन स्वस्य च यः परिणामः द्रव्यवस्तुत्पत्तिरन्यतरकृत्यारम्भ-
करो ना तस्य विवेको तस्य विद्वत्कालम् तत्र मूलं अर्थात् इत्यमरः यः जनः । शालमेन—
शठनस्यानम् शठन, तेन शालमेन । यहाँ इदमर्थोऽस्ते अन्त्य करक मय सनत दुष्टा है ।

यहाँ नन्दकुल में काननत्वारोह हेतुभूत कोव में वहिल के भारी से छिट शय निवन्धन
परन्तरित कलकलार है । लय हा वहि में प्रविष्ट शठन की तरह कोरकनी भाग में प्रविष्ट
होने पुन निवृत्त होय यह विन्वन्धनवन्धन बोध होने से निदर्शनात्कार है । फिर एक ही लोक
में दोनों अन्धकार की उत्पत्ति रहने के कारण संसृष्ट मानक अन्धकार हुआ । यहाँ ना गैदी
रानि है । बोध हुआ है वन को रस है । इसमें वस्तुनिष्ठता वृत्त है । इसका उद्देश्य है—“अयं
वस्तुनिष्ठता वननाशकम्”

मिमला

व्याख्या— प्रविश्य=प्रवेश करवा (Entering)

शिष्यः—उपाध्याय=आचार्य (Revered Sir), आज्ञापय=कार्ये नियोजय (com-
mand me),

चाणक्यः—वत्स=हे वत्स (My child), उपवेष्टुम्=आसनप्रहीनुम् (for sitting)
इच्छामि=आम्हामि (I wish).

शिष्यः—उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), ननु=किमिति (implies cen-
sure), इयम् (this), सन्निहितम्=समीपस्थम् (near about), वेत्तासन्म्=

कथं प्रकाशतां गतोयमर्थः पौरैषु यथा किल नन्दकुलविनाशजनितरोपो राक्षसः पितृवधामर्षितेन सकलनन्दराज्यपरिपणनप्रोत्साहितेन पर्यंतकपुत्रेण मलयकेतुना सह संधाय तदुपगृहीतेन च महता म्लेच्छराजवलेन परिवृतो वृष-
लमभियोक्तुमुद्यत इति । (विचिन्त्य) अथवा—येन मया सर्वलोकप्रकाशनन्द-
घंशवधम् प्रतिज्ञाय निस्तीर्णा दुस्तरा प्रतिज्ञासरित्सोहमिदानीं प्रकाशीभवन्त-
मप्येनमर्थं समर्थः प्रशमयितुम् । कुतः—

वीरुवास्तरणम् (cane-seat), द्वारप्रकोष्ठशाला = गृहैकावयवप्रदेशः (at the entra-
nce of the gate yard), तत् = तस्मात् (so), अस्याम् = पुरोदरयमानायाम्
(there is it) उपवेष्टुम् = सज्जीभवितुम्, अर्हति = समर्थोऽस्ति (will please sit
there), उपाध्यायः = आचार्यः (The preceptor).

चाणक्य — वरसः = शिष्यः (Pupil) कार्ये = रिपुव्येदनव्यापारसमके कृत्येऽभिनियोगः
आसक्तता अस्मान् आकुलयति = व्याकुलम् करोति (It is only to work that distr-
act me), न पुनरुपाध्यायसहभू = न पुनः अध्यापकानाम् स्वाभाविकी, शिष्यजने =
स्वाद्यो शिष्ये, दुःशीलता = क्रूराचारः (It is not perverseness towards disci-
ples naturally to be found in preceptors), (नाद्वयेन = नद्व्यापारेण (act-
ing), उपविश्य = आसत्तं गृहीत्वा (Sitting), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself),
कथम् = केन प्रकारेण (How), अयमर्थः = संवादः (this matter), पौरैषु = पुरवासिषु
(among the citizens) प्रकाशताम् = वयातिम् गत = प्राप्तः (got abroad), यथा
किल (that), नन्दकुलविनाशजनितरोपो राक्षसः = नन्दराज्यवधोद्भूतकोप राक्षसः
(Rakshasa, whose anger is excited by the destruction of the family
of Nanda) पितृवधामर्षितेन = पितुः पर्यंतकस्य हननक्रुद्धेन (is angered by the
murder of his father), सकलनन्दराज्यपरिपणनप्रोत्साहितेन = सम्पूर्णनन्दराज्य-
स्य तत् परिपणनं शुक्रदेन अवस्थापनं तेन प्रोत्साहितेन प्रेरितेन (encouraged by
the offer of the entire kingdom of the Nandas), पर्यंतकपुत्रेण मलय-
केतुना सह साकं सन्धाय सम्मिश्रय (having allied himself with Malayaketu,
the son of Parvatak), तदुपगृहीतेन = संयुक्तेन (joined by), महता = विपुलेन
(A large), म्लेच्छराजवलेन = यवनसैन्येन (force of the Mlechchha princes),
परिवृत्तः = परिवेष्टितः (surrounded), वृषलम् = चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta),
अभियोक्तुम् = आक्रमितुम् (for attack), उद्यतः = कृतोद्योग अस्ति (is preparing),
विचिन्त्य (Thinking), अथवा = वा (or) येन मया = चाणक्येन (by whom),
सर्वेषु = न केवल पौरजनेषु (the whole world), प्रकाशम् = समग्रम् In presence of
all people) नन्दवधवधम् = नन्दकुलवधम् (destruction of the race of the Na-
ndas), प्रतिज्ञाय = प्रतिश्रुत्य (vowed), निस्तीर्णा = अतिक्रान्ता (crossed), दुस्तरा =
दुरतिक्रमा (insurmountable), प्रतिज्ञासरित् = प्रतिज्ञारूपा नदी (the river of the
solemn vow), स = तथाविधम् अहम् (I who), इदानीम् = अधुना (now),
प्रकाशीभवन्तमपि = प्रचार गच्छन्तमपि (publicly open too), एनमर्थम् = राक्षसा-

क्रमरूपम् (attack of Rakshasa), समयः = शक्तः (able), प्रशमयितुम् = निरा-
कर्तुम् (to counteract this matter) कुतः (why).

हिन्दी— (रङ्गमञ्च पर आकर)

शिष्य—गुरुदेव ! आज्ञा दाखिए ।

शानक्य—बाल, बैठना चाहता हूँ ।

शिष्य—भगवन्, दरवाजे की गल्ल में बैठक है और वहाँ बैठ का आग्रह रक्खा है नाराय
गुरुदेव, उसी पर बैठिये ।

शानक्य—राक्ष, कार्यों की व्यग्रता ही मुझे इस प्रकार आतुर करने रहती है,
एतद्दिनों के प्रति गुरुबनों की स्वभाविक दुःशास्त्र न समझ बैठना । (नारायण दक्ष से
बैठव हुए जात हा गार) आखिर ऐसे नगरिकों के साथ रह गाठ रँठ हो गया कि ममल
नन्दवध के विनाश से दुर्निव राक्षस पिता के वध से क्रोधान्व बने तथा तन्मूर्त नन्द-
साम्राज्य के स्वामित्व प्रशस्त का शर्त से प्रेरित किये गये पर्वतकपुत्र नल्यकपु से आ मिठा है,
और उनके अग्रिम मन्त्र राक्षसों का वर्ग देना से मन्त्र होकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने के
छिपे छुपनरतन है । (कुछ मोचकर) अथवा—मैं सो वह चात्तव हूँ—विश्वसे सारा दुर्निर्वा के
सानने का गया नन्दवध-विनाशक्य अग्रा दुलार प्रदिशाक्य नदी को तैर कर पार कर
दिना—तो फिर ठीक में बैठ इन सवालों को ज्ञान कर देने का शक्ति भी मुझ में है । क्योंकि—

English— (Entering)

Pupil—Revered Sir, command me.

Chanakya—My child, I want to sit down.

Pupil—Preceptor, at the entrance of the gate yard canseat is
indeed arranged there. So Revered sir, will please sit there.

Chanakya—My boy, it is only close engagement to work that
distract me and not naturally perverseness of preceptors towards
disciples (acting sitting saying to himself) How has this matter got abroad
among the citizens, that Rakshasa, whose anger is excited by the
destruction of the family of Nandas, having allied with Malayaketu,
the son of Parvataka, who is angered by the murder of his father
and is incited with the offer of the entire Kingdom of Nandas and
assisted by a large force of the Mlechcha princes is preparing to
attack Chandragupta (thinking) or—why I am able to counteract
this matter though going out—I, who, having first in the presence
all people vowed the destruction of the Nanda race, crossed the insur-
mountable stream of vow. For—

टिप्पणी—उपाध्याय—एतत्त्व अवावदत्तमात् इति उपाध्यायः, वर आह् पूर्वक इत् धातु
से 'इत्' से धन् प्रत्यय करने पर उपाध्याय रूप की सिद्धि है । आज्ञापयतु—आह् पूर्वक या
धातु से हेतुमग्नि चि का यह रूप है । काशमिदोक्त—अभि + जुञ् + धन्, याव ने अभियोग ।

यस्य मम—

श्यामीकृत्यानेन्दूरियुवतिदिशा संततैः शोकधूमे
कामं मन्त्रिद्रुमेभ्यो नयपवनहतं मोहभस्म प्रकीर्य ।

दग्ध्वा सभ्रान्तपोरद्विजगणरहिता नन्दवशप्ररोहान्
दाह्याभापन्नखेदाज्ज्वलन इव वने शाम्यति क्रोधवह्नि ॥११॥

व्याकुल्यति—वि + आ + कुल + अव कर्त्तरिभ्याकुल । व्याकुल करोति इति व्याकुल + णिच् + लृट्
तिप् । उपाध्यायसहभू—सह भवति उत्पन्न इति सहभू - सह + भू + क्तिप् कर्त्तरि सहभू ।

रिमला

अन्वय—यस्य, मम, क्रोधवह्नि, अरियुवतिदिशाम्, आग्नेन्दूर, सन्ततैः, शोक-
धूमे, श्यामीकृत्य, मन्त्रिद्रुमेभ्यः नयपवनहतम्, मोहभस्म, कामम् प्रकीर्य, सभ्रान्त-
पोरद्विजगणरहितान्, नन्दवशप्ररोहान्, दग्ध्वा, वने, ज्वलन इव दाह्याभावात्,
शाम्यति, न खेदात् ॥

व्याख्या—यस्य मम—क्रोध वह्नि = क्रोधानल (The fire of fury), अरियुव-
तिदिशाम् = शत्रुस्त्रीरुक्ताम् (In the form of the young wives of the ene-
mies), आग्नेन्दूर = सुतचन्द्रान् (the moon in the form of faces of quarters),
सन्ततैः = अविच्छिन्ने (continual), शोकधूमे = स्वामिचिरहोन्नबलेधूमे (smoke
of distress), श्यामीकृत्य = मलिनान् विधाय (to make dark), मन्त्रिद्रुमेभ्यः =
सचिवद्रुमेभ्यः (the trees in the form of the ministers), नयपवनहतम् =
नीतिवायुना भानीतम् (wafted by the wind of policy), मोहभस्म = अवि-
वेकभस्म (the ashes of insensibility), कामम् = यथेच्छम् (according to
wish) प्रकीर्य = बिक्षिप्य (scattered), सभ्रान्ता = उद्विग्ना (Frightened),
पोरा = पुरवासिनः (citizens), द्विजगणरहितान् (ब्राह्मणसमूहरहितान्, वा, पक्षि-
समूहशून्यान् (excepting the flocks of birds or brahmanas), नन्दवशप्ररोहान् =
नन्दवश एव घणु तस्य प्ररोहान् अङ्कुरान् (sprout of the bamboos in the form
of Nandas), दग्ध्वा = भस्मसात् कृत्वा (having burnt down) वने = अरण्ये (In a
forest), ज्वलन इव = वह्निनिव (like a fire), दाह्याभावात् = दाधुमन्यवस्तुनोऽभावात्
(from lack of further materials to burn), शाम्यति = विरमति (goes out),
न खेदात् = न हि धमात् (Not through exhaustion) ॥ ११ ॥

हिन्दी—मेरी यह क्रोधाग्नि, जिसने शत्रुओं की युवती विधवाओं की दिशाओं में उदित
मुखचन्द्र की, शोककी घनीभूतधूमराशि से जाला कर दिया जिसने अपनी चूटनीति को दबा द्वारा
नन्द के मन्त्रीरूपी वृक्षों पर किंकर्तव्यविमूढता की भस्म बिखर दी, जिसने भय से घबराये
हुए पक्षियों की तरह माग्नेवाले नागरिकों के अतिरिक्त नन्दवश के अङ्कुरों तक को जला दिया,
मेरी वही क्रोधाग्नि—दावानल की तरह अपने आप शान्त होने लगी है इसलिए नहीं कि वह
थक चुकी है, बल्कि इसलिए कि अब जलाने को ज्वलन में कुछ शेष नहीं है ॥ ११ ॥

English—My this—

The fire of fury (like fire in a forest) having by means of the

अपि च—

शोचन्तोऽवनतेर्नराधिपमयादिक् शब्दगर्भमुक्ते-

मान्मग्रासनतोऽवकृष्टमवशं ये दृष्टवन्तः पुरा ।

ते पश्यन्ति तथैव सम्प्रति जनानन्दं मया सान्धवं

सिंहेनैव गजेन्द्रमद्रिशिखरात् सिंहासनात्पातितम् ॥ १२ ॥

मोक्षमिदानीमस्तिप्रतिज्ञाभारोऽपि वृषलापेभ्यः शस्त्रधारयामि ।

continual smoke of distress to make dark the moons of the faces of the young wives of the enemies, having scattered over the trees of the mountains of Nandas, the ashes of insensibility wafted by the wind of my policy, and having burnt down the sprout of the bamboos in the form of Nanda. Excepting the flocks of frightened birds in the form of the citizens, now goes out not through exhaustion but from lack of further materials to burn.

टिप्पणी—सन्तनः=सन्तन+तन=सन्तन अथवा 'मनो वा नन्दित्वान्' से सन्तन अर्थात् सन्तनार्थक 'तन' वातु से क प्रत्यय करने पर इस रूप का सिद्धि है। आननेन्दुन्तः=आननानि इन्दव इव। इस विनह में कनकादय सनात हुआ। 'अस्ति नृपानादिभिः सानान्द्राप्रवागे' न रूप का सिद्धि है। श्यामाकुल्यः=श्यामान् श्यामान् कृत्वा' इस विनह में 'अभूतवज्रावे' से 'शिव' प्रत्यय कर रूप का सिद्धि हुई। निक्षार्य=विशुद्ध 'किं' वातु से स्वर प्रत्यय कर रूपसिद्धि है। उदा प्रकार 'मन्त्रेदुमेभ्यः' में 'मन्त्रिः' पर दुन्तः=दन्तः' इन विनह में विधना क्रिया से अनिद्रेव मन्त्रिदुन शब्दों में 'कर्म' यन् अनिद्रेव' से सम्प्रदान कारक हुआ।

इस श्लोक में—शोक में बहिल के आरोह, शोक में वृत्त, मन्त्रि में वृत्त, नम में पतनत्व, मोक्ष में नस्तत्व तथा नन्दवश में अकुरत्व के आरोह से साहचर्यक प्रकाश है। गौडा राट्टे, ओज गुा तथा सन्धरा वृत्त है।

विनता

अन्वयः—पुरा, ये, नराधिपमयात्, अवनते, शिक्शब्दगर्भः, मुक्तः, शोचन्तः, अवशान्, मान्, मग्रासनतः, अवकृष्टः, दृष्टवन्तः, सम्प्रति, ते जनान्, सिंहेन, गजेन्द्रम्, अद्रिशिखरादिव, मया, सान्धवम्, नन्दम्, सिंहासनात्, तथैव पातितम् पश्यन्ति ।

व्याख्या—अपि च=अन्यदपि (Furthermore), पुरा=प्राक्काले (within), ये=जनाः (People), नराधिपमयात्=मोगानन्दरासात् (through fear of the king), अवनतः=नप्राकृतः (cast down), शिक्शब्दगर्भः=शिक्शुपतिमिति शब्दो-गर्भेऽन्यन्तरे येषाम् तैः तयोक्तैः (with the words lie upon him), मुक्तैः=आननेः (with faces), शोचन्तः=शोक कुर्वन्तः (bewailing), अवशम्=प्रतिकर्तुंमशक्तम् (helpless), मान्=चानक्यम् (Chanakya), मग्रासनतः=प्रशस्तभाङ्गीय-वाङ्मयसनात् (from the front seat), अवकृष्टम्=दूरीकृतम् (dragged away), दृष्टवन्तः=अवलोकितवन्तः (formerly saw me), ते जनान्=लोकान् (people), सम्प्रति=अधुना (now), सिंहेन=मृगाधिपेन (by a lion), गजेन्द्रः=गजराजम्, (tusk), अद्रिशिखरादिव=पर्वतशृगादिव (like from the top of a hill),

येन मया—

समुत्खाता नन्दा नव हृदयरोगा इवः भुवः

कृता मौयै लक्ष्मीः सरसि नलिनी च स्थिरपदा ।

मया=चाणक्येन (by me), सान्त्वयम्=पुत्रपौत्रादिसहितम् (with his successors), नन्दम्=नृपम् (to the king Nanda), सिंहासनात्=नृपासनात् (from the throne) तथैव=तेन प्रकारेण (in the same way), पातितम्=भ्रंशितम् (pulled down), पश्यन्ति=समवलोकन्ते (how see) स=पूर्वोक्तकार्यसम्पादक, अहम् (I), इदानीम्=सांप्रतम् (now), अवसितप्रतिज्ञाभारोऽपि=समुत्तीर्णप्रतिश्रुति-भारोऽपि (the trouble of vow ended) वृषलापेक्षया=चन्द्रगुप्तानुरोधेन (out of consideration for Chandragupta) शस्त्र=नीतिरूपम् (the sword) धारयामि=धारणम् करोमि (handle)

हिन्दी—और भी—वे लोग जिन्होंने महाराज व लिए मुह में आवे धिक्कार' शब्द की भय के मारे मुह में ही दबाए, कुछ सोचते हुए विवश स्थिति में—मुझ प्रसस्तभादीय ब्राह्मण के आसन से हटायें जाते देखा, वे आज यह भी देखें—जैसे पहाड़ की चोटी से गजराज को धक्का देकर सिंह गिरा देता है, उसी प्रकार मेरे द्वारा सपरिवार नन्द सम्राट् को राजसिंहासन से बौने नाचे गिरा दिया जाता है ॥ १२ ॥

अपनी प्रतिष्ठा पूरी करने के बाद भी मैं चन्द्रगुप्त के लिये शस्त्र धारण करता ॥

English—Further more—

Those people who bewailing cast down, with faces, and to choke the voice of lie upon the king, due to the fear of king Nanda, only gazed upon me formerly, helpless as I was dragged away from the front seat, now they see the king Nanda with his successors pulled down by me, just in the same way from the throne like an elephant by a lion from the top of a hill ॥ १२ ॥

I, though the trouble of vow ended, still handle out the policy out of consideration for Chandragupta

टिप्पणी—नराधिप = नराणां अधिप = नराधिप, यहाँ पक्षी नःपुरव समास है। हममें 'पद्मी भवेन' से पद्मी विभक्ति हुई। इसी प्रकार चिकित्सदशार्थमुखी = चिकित्सक नृपतिमिति श-शान्तिभ्यतरे येषाम् से नवोत्तं मुखे उपलक्षिता "इत्यभूतलक्षणे से यहाँ तृतीया विभक्ति हुई।

यहाँ उपमानभूत सिंह का उपमेयभूत अस्मद् शब्द ने पतनरूप सामान्य धर्म का औपम्य वाचन इव शब्द के प्रतिपादन से आती पूर्णपमा अलङ्कार है। हममें बोर रस है। गीढ़ी रीति है और ओज गुण है। शादृशविधित छन्द है। वृत्तरत्नावर में इसका लक्षण है—“सूर्याश्विर्मसज-स्ततः ॥ गुरवः शार्दूलविक्रादितम् ॥”

निमला

अन्वय — (सोऽहम् शस्त्रे धारयामि यन मया) भुवः, हृदयरोगा, इव, नव नन्दा ॥ समुत्खाता, सरसि, नलिनीच, मौयैलक्ष्मी, स्थिरपदाकृता, कोपप्रायो द्वयोः, सार, द्वितयम्, फलम्, अभियुक्तेन, मनसा, द्विपति च सुहृदि च तुल्यम् विभक्तम् ॥ १३ ॥

द्वयोः सारं तुल्यं द्वितयमभियुक्तेन मनसा

फलं कोपप्रीत्योर्द्विपति च विभक्तं सुहृदि च ॥ १३ ॥

व्याख्या—देन मया=चाङ्कनेन (I by whom), हृदयस्य=चित्तस्य (of the heart), रोगाः=अन्नगता व्याधयः (cankers), इव=यथा (like), भुवः=पृथिव्याः (of the earth), नवनन्दाः=समुद्रनौगाः (The nine Nandas), समुत्खाताः=समुन्मूलिताः (have been uprooted), सरसि=कासारं (In a lake), नलिनी=कनडिनी (the lotus), इव=यथा (Like), मौर्यलक्ष्मीः=चन्द्रगुप्ते राज्यधीः (unto Maurya sovereignty), स्थिरपदा कृता=निश्चलस्थानमस्यादिता (has been made firmly established), कोप-प्रीत्योः=अनर्पस्नेहयोः (anger and love), द्वयोः=द्वययोः (of the two), सारं=न्याय्यम् (most excellent), द्वितयम्=द्विविधम् (twofold), फलम्=निष्प्रहाज्जुप्रहृष्टपरिणामम् (Fruit like pleasure and displeasure), द्विपति च सुहृदि च मित्रे च (The foe and the friend), तुल्यम्=मनानम् (equally), विभक्तम्=विभज्यस्यापितम् (has been divided), अभियुक्तेन=आग्रहवता (with an attentive), मनसा=हृदयेन (mind) ॥ १३ ॥

हिन्दी—मैं वही हूँ, जिनने—इन घरानों के हृदय मूलों का तरह नी के नौ नन्दों को उखाड़ फेंका। मौर्य में राज्यलक्ष्मी को उना तरह स्थिर कर दिया जैसे किना सरोवर में कनडिनीबद्ध है, और मैं पूरे ननोनाम के साथ साथ का एक उद्योगों के साथ एवं देन का परिणाम मित्रों के साथ मनान रूप से विभक्त कर चुका हूँ ॥ १३ ॥

English—1 by whom—The nine Nandas have been uprooted, like darts in the heart of the earth, Sovereignty has been firmly made established, in the Maurya like a lotus in a lake, and the proper twofold yield of the two things anger and love, has been equally divided with a careful mind between foe and friend. 13.

टिप्पणी—नवनन्दाः—नवनन्दा से तात्पर्य है, राजा नन्द और उनके आठ पुत्र। हृदो गा=हृदयस्य रोगाः हृदोग, 'वा शोकश्च न रोगः' से यह रूप सिद्ध है। द्वितयम्—दो अवयवों अल्प द्वा द्वि+तयन् प्रत्यय लगाकर द्वितयन् रूप बना। तात्पर्य यह कि निम्नह एव अनुग्रह रूप दो फल।

इस श्लोक के प्रथम चरण में 'हृदयरोग इव' में इव शब्द के उदाहरण से नन्दों के नृहृदोग का मनोवला से तुल्यत्वकाटकार है।

इस प्रकार उन्नतभूत नलिनी शब्द का, वसनेयभूत मौर्य शब्द का औनम्यवाचक इव शब्द का, स्थिरपदत्व रूप मानन्य धर्म के अनिवार्य से श्रौतापूर्विका अङ्कार है।

द्वयान एव चतुर्थ पाद के नन्दसमुन्मूलन से उसमें निम्नहालक कोप फल का मौर्यश्री के स्थिराचरण के द्वारा उन्हें अनुग्रहात्मकानुराग फल का कम से निर्देय होने के कारण दयानस्य नाम अङ्कार है।

अब इस श्लोक में इन सबों के सम्मिश्रण के कारण 'मलुष्टि' नाम अङ्कार है। इतने वैदना रसिते हुए। ओज गुण है तथा चित्कारिणी छन्द है, चित्कारिणी का लक्षण वृत्तरत्नाकर में लिखा है—“रसै रश्मिद्विधा यमनसमला यः चित्कारिणी।”

अथवा अगृहीते राक्षसे किमुत्सातं नन्दवंशस्य किं वा स्थैर्यमुत्पादितम् चन्द्रगुप्तलक्ष्म्याः (विचिन्त्य) अहो राक्षसस्य नन्दवंशे निरतिशयो भक्तिगुणः । स खलु कस्मिंश्चिदपि जीवति नन्दान्वयावयवे वृषलस्य साचिन्त्यं ग्राहयितुं न शक्यते । तदभियोगं प्रति निरुद्योगः शक्योऽवस्थापयितुमस्माभिः । अन्यैव बुद्ध्या तपोवनगतोऽपि घातितस्तपस्वी नन्दवंशीयः सर्वार्थसिद्धिः । यावदसौ मलयकेतुमङ्गीकृत्यास्मदुच्छेदाय विपुलतरं प्रयत्नमुपदर्शयत्येव । (प्रत्यक्षवदाकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा) साधु अमात्यराक्षस, साधु । साधु श्रोत्रिय, साधु । साधु मन्त्रिबृहस्पते, साधु । कुतः ?

विमला

व्याख्या—अथवा = पचान्तरे (or), अगृहीते = अनायसीकृते (being unescu-
red), राक्षसे = तदाख्यनन्दामात्ये (Rakshasa), नन्दवंशस्य = नन्दपरिवारस्य (The
race of Nandas), किमुत्सातम् ? = किं समुन्मूलितम् (totally destroyed),
किंवा = अथवा (or), चन्द्रगुप्तलक्ष्म्या = मौर्यसाम्राज्यः (sovereignty of Maurya),
स्थैर्यम् = नैश्चल्यम् (stability), किम् (what), उत्पादितम् = संपादितम् (has
been given), विचिन्त्य = चिन्तयित्वा (Thinking), अहो = आश्चर्यम् (oh),
राक्षसस्य = नन्दामात्यस्य (of Rakshasa), नन्दवंशे = नन्दान्वये (to the race
of Nanda), निरतिशये = अतिमहान् (unsurpassable), भक्तिगुणः = भक्तिरूपो
गुणविशेषः (devotion), सः = असौ (Rakshasa), खलु = निश्चयः (Indeed),
कस्मिंश्चिदपि = एकस्मिन्चिदपि (any member), जीवति = अस्ति विद्यमान इति यावत्
(living), नन्दान्वयावयवे = नन्दकुलोत्पद्ये (The race of Nanda), वृषलस्य =
चन्द्रगुप्तस्य (of Chandragupta), साचिन्त्यम् = मन्त्रित्वम् (the ministership),
ग्राहयितुम् = स्वीकारयितुम् (to accept), न शक्यते = न प्रभूयते (can not be
induced), तदभियोगं प्रति = राक्षसनिग्रहं प्रति (towards a expedition),
निरुद्योगः = श्ववसायशून्यः (inactive), अस्माभिः, अवस्थापयितुम् = वर्तितुम् (ren-
dered), शक्यः = योग्यः (able), अन्यैव, बुद्ध्या = धिया (In this very belief),
तपोवनगतोऽपि = तपस्तप्तु सेवितारण्योऽपि (though retired to the hermi-
tage), तपस्वी = तपसः (devout), नन्दवंशीयः = नन्दकुलोद्भवः (of the
family of Nanda), सर्वार्थसिद्धिः = तदाख्यः (Sarvarthasiddhi), घातितः =
विनाशितः (killed), यावत्, असौ = सर्वार्थसिद्धिः (still he), मलयकेतुमङ्गीकृत्य = मुह्यदा-
त्मजं स्वीकृत्य (by having accepted Malayaketu), अस्मदुच्छेदाय = अस्मानु-
च्छेत्तुम् (for our destruction), विपुलतरम् = महान्तम् (greater), प्रयत्नम् =
पेशम् (effort), उपदर्शयत्येव = करोत्येव (is making), प्रत्यक्षवत् = साक्षात्
दृष्टगोचरीभूता (as on something visible), आकाशे = गगने (on the sky),
लक्ष्यं बद्ध्वा = लक्ष्यं कृत्वा (Fixing his eye) साधु अमात्यराक्षस = सज्जनमन्त्रिराक्षस
(Bravo ! minister Rakshasa), साधु श्रोत्रिय साधु = साधुवेदाध्ययनशील साधु

प्रेम्भर्यादनपेतनीम्बरमयं लोकोऽर्थतः सेवते
तं गच्छन्त्यनु ये विपत्तिषु पुनस्ते तत्प्रतिष्ठाशया ।
मर्तुयं प्रलयेऽपि पूर्वसुकृतासंगेन निःसङ्ग्या
मस्त्याकार्यधुर्यं वहन्ति वृत्तिनस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः ॥ १४ ॥

अत एवास्माकं त्वत्समग्रं पुनः कथमसी वृषलस्य साचिव्यप्रद्वेणेन
सानुग्रहः स्यादिति । कुनः—

(oh learned Brahman well done), साधु, मन्त्रिवृद्धस्पते साधु, साधु अनाय
सुरगुरो साधु (Noble Brihaspati like minister, very noble,).

हिन्दी—अपना—जब तक राक्षस नेरी पकड़ में नहीं आ जाता, तब तक नन्दवश का हो
हाने का उकाड़ पका ! अपना चन्द्रगुप्त का राक्षसा ने हा कौनसी स्थिरता ला दी ! (कुछ
साचकर) आश्चर्य ! नन्दों के प्रति राक्षस को भक्ति भावितनी मटल है । जब तक नन्दवश का
एक ना बन्धे जावित है, वह चन्द्रगुप्त का मानविक कर्मा भा स्वाकार नहीं करा । इस सम्बन्ध
में जब तक उसे स्वर यह समझ में न आया कि इस दिशा में दिने गये उसके सारे प्रयत्न निरर्थक
हैं । इसा विचार से मने नन्द के एक सम्बन्धी होने के अनुरोध में वरत्ता सर्वार्थसिद्धि को मरवा
हाला । लेकिन इन्ते क्या हुआ ! नह तो नन्दकेतु की सहायता से, इन्ने विनष्ट करने के लिए
जोर अधिक जोर से प्रयत्नशील हो गया है । (प्रत्यक्ष की तरह आक्षेप में लक्ष्य करके)
शावस अनाय राक्षस, शावस मातृ-प्रियोन्मी शन्य, सचमुच शन्य है तू देवताओं के पुत्र
वन्य है । क्या कि—

English—But as a matter of fact, so long as the Rakshasa has not
been unsecured, what I have gained exterminating the race of the
Nanda, or what is the stability after making Chandragupta monarch?
(Thinking), oh, what an ample of devotion of the Rakshasa
to the race of Nanda is ? So long as even a single member of the
race of Nanda is living, he will, indeed, never accept to be the
minister of Chandragupta. As long he is not self thought that his
all tries would go in vain, I can not appoint him any where. Due
to this very thought, we got poor Sarvarthasiddhi to be killed, a
member of the race of Nanda, though he had joined the hermitary.
But he is trying our destruction more rapidly than first having
the help of Malayaketu. (Seeing sky as if seeing any visible of
object there) Daring, minister Rakshasa, daring, [Oh Brahman
praiseworthy, counsellor like Brihaspati, Well done ! for—

प्रिमला

अन्यथा—अयम् लोकः, प्रेमभर्यान्, अनपेतम्, ईश्वरम्, अर्थतः, सेवते । ये, पुनः
विपत्तिषु वननुगच्छन्ति, ते तत्प्रतिष्ठाशया । त्वादृशा वृत्तिनः, ये, मर्तुः, प्रलयेऽपि,
पूर्वसुकृतासंगेन, निःसङ्ग्या, मस्त्या, कार्यधुरान्, वहन्ति, ते दुर्लभा ।

व्याख्या—अयं लोक = एष संसारः (This world), ऐश्वर्यात् = सम्पत्तेः (with supremacy), अनपेतम् = अरहितम् (Not gone off), ईश्वरम् = प्रभुम् (Lord), अर्थतः = अर्थलाभहेतोः (for the sake of gain), सेवते = आश्रयति (serve), ये = जनाः (People), पुनः (again), विपत्तिषु = रिपुकृतव्यसनदुर्भित्तादिसमयेषु (in adversity), तमनुगच्छन्ति = तं परिचरन्ति (follow him), ते = जनाः (People), तत्प्रतिष्ठाप्तया = पुनः राज्यादिलाभाश्रया (in the hope of him coming back to power), खादृशाः = भवद्विधाः (of your type), कृतिनः = कुशलाः (blessed), ये = जनाः (who), भर्तु = स्वामिनः (of the master), प्रलयेऽपि = विनाशेऽपि (in the complete ruin) पूर्वसुकृतासन्नेन = पुराकृतसंरक्षणाद्य-विस्मरणेन (remembering past favours), निःसङ्गया = स्वार्थरहितया (from disinterested), भक्त्या = सेवया (devotion), कार्यधुराम् = कार्यभारम् (the burden of work) वहन्ति = धारयन्ति (bear), ते = जनाः (People), दुर्लभाः = कष्टलब्धाः (rarely are to be found) ॥ १४ ॥

अत एव = अलौकिकगुणवावादेव (Hence indeed), अस्माकम् (us), स्वत्-सम्प्रे = तदायत्तीकरणे (to secure you), यत्न = इच्छायाः (attempt), कथमसौ = केन प्रकारेण राज्ञा (How he), घृणलस्य = चन्द्रगुप्तस्य (of Chandragupta), साचिव्य-प्रहणेन = मन्त्रिस्वाङ्गीकारेण (by accepting the ministership), सानुग्रहः = कृतकृत्यः (disposed to favour), स्यात् = भवेत् (might be)

हिन्दी—दुनियाँ के सामान्य जन स्वार्थवश सर्वशक्तिसम्पन्न स्वामी की सेवा करते हैं, कुछ लोग विपत्तिग्रस्त स्वामी की भी सेवा इस आशा से करते हैं कि वे पुनः राज्यशक्ति प्राप्त करेंगे। किन्तु, विपत्ति हो अथवा सम्पत्ति, सर्वतोभावेन विनाश हो जाने पर भी स्वामी के पूर्वकृत अनुग्रहों को दाद देकर जो जन भक्तिपूर्वक अपने कार्यभार का निर्वाह करता है—ऐसा कृतज्ञ, तुम्हारी तरह दुनिया में किरल ही है ॥ १४ ॥

यही कारण है कि तुम्हें अपने पक्ष में लाने के लिए मेरा यह सारा प्रयास चक रहा है। मैं अपने को तभी कृतकार्य मानूँगा—जब तुम अपने मन्त्रित्व से चाणक्य को अनुगृहीत करोगे। क्यों कि—

English—Ordinary people serve their master so long as he is not divested of power for gain, those again who follow him in adversity, do so in the hope of his coming back to power, but rarely are to be found those workers of your type, who in memory of past favours, bear the burden of work out of disinterested devotion, even after the death of their lord. 14.

Hence indeed our attempt to get hold of you—how you might be settle to good will of Chanakya by accepting the ministership.

टिप्पणी—‘अर्थतः’ में ‘हेतोः’ से द्वितीया विभक्ति हुई है। इसी प्रकार ‘तम्’ में ‘कर्मप्रवचनाययोगे द्वितीया’ से द्वितीया विभक्ति हुई है। तत्प्रतिष्ठाप्तया—प्रति + स्था + अभ्वात् में

कृतः—

अप्राज्ञेन च कातरेण च गुणः स्यात्किमुक्तेन कः
प्रज्ञाविक्रमशालिनोपि हि भवेत्किं भक्तिहीनात्फलम् ।
प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये
ते नृत्या नृपतेः कलत्रमितरे संपत्सु चापत्सु च ॥ १५ ॥

प्रतिज्ञा' नर का निश्चित है। पूर्वमुक्तम्—पूर्व मुक्तम्, 'नर्य बाण्डव'—ना + मव + वन्, नाव नै रूप है जानइ, 'हर्ष' ने दुःख का विनाश है। निःसङ्गता—निर्गत सङ्ग यस्या ना, नरा, 'जननात्' मुनता'र'ने से रूप सम्भव है। कृतिन—इतनेमानन्ताति कृतिन । कार्यपुरा—कार्य रू नार कार्यता 'नृदूत'भूरे'त्याद से समानान्त अर् प्रत्यय करने के बाद व्यप् प्रत्यय करने से रूप सम्भव है। वहाँ जनन को अरुद्धा करने के बन्ध का व्यतिरेक से प्रविरादन होने के कारण व्यतिरेक जाहिर है। वहाँ जानरत है। वैद्यों रात्रि है तथा नापुन जा है। इन श्लोक में 'सादृशविक्रीडित' छन्द है। "सुशर्षर्षदि न मञ्जौ सततगाः सादृशविक्रीडितम्"

मिमला

अन्वयः—अप्राज्ञेन, च कातरेण च सानुरागेन, कः गुण स्यात्, प्रज्ञाविक्रमशालिनोपि, भक्तिहीनात्, किम् फलम्, भवेत्, येषा, प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिता, गुणा, ते, नृत्या नृपतेः, सम्पत्सु, आपत्सु च, भूतये इतरे, कलत्रम् ।

व्याख्या—अप्राज्ञेन=बुद्धिहीनेन (by unwise), कातरेण=अपराक्रमिणा (by a coward), सानुरागेन=भक्तिपुक्तेन (by devotion), नृत्येन=सेवकेन (by a servant), कः गुण=किं प्रयोजनम् (what is the use) स्यात्=भवेत् (would come), प्रज्ञाविक्रमशालिनोपि=बुद्धिसामर्थ्यशुक्लारवि, (endowed with wisdom and bravery), भक्तिहीनात्=पूज्यविषयकानुरागरहितात् (is devoid of loyalty), किम् फलम्=किम् प्रयोजनम् (what is the use), भवेत्=स्यात् (can come out), येषाम्=नृत्यानाम् (of a servant), प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिताः गुणाः=सकलाः गुणाः सन्ति (qualities of intelligence, bravery and devotion), ते नृत्या=ते सेवका (those servants), नृपतेः=राज्ञः (of the king), सम्पत्सु=अभ्युदयेषु (in prosperities), च=पुनः (again), आपत्सु=विपत्तिकालेषु (in adversity), नृपतेः=कल्याणाय अवन्ति (for the welfare), इतरे=अन्ये (others), कलत्रम्=धनप्राप्तिकामनया वनिता (like many wives). ॥ १५ ॥

हिन्दी—उद्दिष्टान एव कातर किन्तु सानुरागिणः सन्तु ते कः प्रयोजन ? इहा नन्दर बुद्धिमान एव शीर्षकमत्र किन्तु रात्रिभक्ति से हान सेवक से ना क्या प्रयोजन ? अन्ध्रा उषक तो व है, बिना बुद्धि, विद्वान और भक्ति दोनों का सम्बन्ध हो। जैसे तो वे सभी रात्रिभक्त हा कहलाते हैं, बिना भरा-पाया अच्छ और दुर दिनों में औरत की तरह राजा को हा करना पड़ता है ॥ १५ ॥

English—What is the need of such servants, who is neither wise nor energetic, though he is full of piety ? Simillary, what is the

तन्मयाप्यस्मिन् वस्तुनि न शयानेन स्थीयते यथाशक्ति क्रियते तद्ग्रहणं प्रति यत्रः । कथमिव । अत्र तावद्रूपलपर्वतकयोरन्यतरविनाशेनापि चाणक्यस्यापकृतं भवतीति विपकन्यया राक्षसेनास्माकमत्यन्तोपकारि मित्रं घातित-स्तपस्वी पर्वतक इति सञ्चारितो जगति जनापवादः । लोकप्रत्ययार्थमस्यैवार्थस्याभिव्यक्तये पिता ते चाणक्येन घातित इति रहसि त्रासयित्वा भागुरायणेनापवाहितः पर्वतकपुत्रो मलयकेतुः । शक्यः सन्वेप राक्षसमतिपरिगृहीतोऽपि व्युत्तिष्ठमानः प्रक्षया निग्रहीतुम् । न पुनरस्य निग्रहात्पर्वतकवधोत्पन्नं राक्षस्यायशः प्रकाशीभवत्प्रमार्ष्टुमिच्छामि । प्रयुक्ताश्च स्वपक्षपरपक्षयोरनु-रक्तापरक्तजनजिज्ञासया बहुविधदेशवेपभाषाचारसञ्चारवेदिनो नानाव्यञ्जनाः प्रणिधयः । अन्विष्यते च कुसुमपुरवासिनां नन्दामात्यसुहृदां निपुण प्रचार-गतम् । तत्तत्कारणमुत्पाद्य कृतकृत्यतामापादिताश्चन्द्रगुप्तसहोत्थायिनो भद्रभट-प्रभृतयः प्रधानपुरुषाः । शत्रुप्रयुक्तानां च तीक्ष्णरसदायिना प्रतिविधानं प्रत्य-प्रमादिनः परीक्षितभक्तयः क्षितिपतिप्रत्यासन्ना नियोजितास्तत्र तत्राप्यपुरुषाः ।

use of a wise and brave servant having no devotion ? Only those can bring about the prosperity of their king who are full of wisdom, dare and piety, remainings are equal to women both in calamity and thriving only to be brought up by the lord. 15.

टिप्पणी—अप्राप्तेन=ग्रहणं जानातीति प्रष्टुं । प्रपूर्वकं शाश्वतं से 'प्रे दा क' सूत्र से क प्रत्यय का यह रूप है । प्रष्टुं एव प्राष्टुः, स्वार्थेऽङ्, न प्राप्तेऽप्राप्तस्तेन अप्राप्तेन । प्रष्टाविक्रमशालिनः=प्रष्टा च विक्रमश्च प्रष्टाविक्रमौ ताभ्यां श्चान्वे इति प्रष्टाविक्रमशालिनः । 'दुष्पञ्चाती' इत्यादि सूत्र से 'निनि.' प्रत्यय कर यह रूप बना । भूतये—भूतिम् कर्तुम् इस विग्रह में 'तादर्थ्यं चतुर्थी' से चतुर्थी विभक्ति हुई ।

इस श्लोक में भी उपमेयभूत अनुरक्त बुद्धिहीन विक्रमशून्य की अपेक्षा वैसी भक्तिरहित बुद्धि पराक्रम की तरह कथन से 'व्यतिरेक' अलङ्कार है । वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण तथा 'सादृश्य-विक्रीडित' छन्द ई । छन्द वृद्धण पहले (५ ३७ में) लिखा जा चुका है ।

निमला

व्याख्या—तन्मयापि=तत्तस्मात्कारणात् मयापि (Therefore I too), अस्मिन्व-स्तुनि=राक्षसायसीकरणार्थके विषये (over this matter), शयानेन=असावधानेन (asleep), न=नहि (donot), स्थीयते=विद्यते (Lie), यथाशक्ति=तत्तत्साम-सारेण (as much as I can), तद्ग्रहणम् प्रति=राक्षसाधीनीकरणं प्रति (to se- cure him), यद्यः=प्रयासः (an effort), क्रियते (am making), कथमिव=केन प्रकारेण (How is), अत्र तावत्=अस्मिन् कर्मणि सत्तु (in this matter), वृषल-पर्वतकयोः=चन्द्रगुप्तचाणक्यमित्रयोः (Chandragupta and Parvatak), अन्यतर-विनाशेनापि=एकस्यापि विनाशेन (by the death of either of the two),

चानकस्यापकृतम् = चानकस्यापराधः, भवति = गच्छति (harm would be done to Chanakya), विषकन्यरा = विषनिर्मितबालिकया (a poison maid), राक्षसेन (by Rakshasa), अस्माकम् अत्यन्तोपकारिनिग्रम् = अस्माकं अतिशयकृत्यान्-सन्नादकमुहम् (our extremely obliging friend), तपस्वी = तापसः (Poor), पर्वतकः = पर्वतानकः (the king Parvatak), घातितः = मारितः (has been killed), इति, जनाद्वादः = लोकप्रवादः (scandalous report), जगति = संसारे (in the world), संचारितः = प्रवर्तयितः (to be circulated), लोकप्रत्ययार्थम् = सकलजनप्रतीत्यर्थम् (For the credence of people), अस्यैवार्थस्य = पर्वतक-बवानकवस्तुनः (Parvatak was killed), अभिम्यक्तये = प्रस्थापनाय (for circulation), पिता ते = तव जनकः (our father), चानक्येन घातितः = कौटिल्येन-हतः (was killed by Chanakya), इति रहसि त्रासयित्वा = एवं प्रकारेण भयमुत्पाद्य (having alone inspired fear in him), भागुरायणेन = मलयकेतुनिग्रवेशि-बागव्यप्रणिधिना (by Bhagurayan), अपवादितः = कटकाद्विसारितः (has been removed), पर्वतकपुत्रो मलयकेतुः (Malayaketa the son of Parvatak), शक्त्यः लब्धु एव = एवं वर्गीकर्तुम् स्वादिति (be subdued), राक्षसमतिपरिगृहीतोऽ-पि = राक्षसबुद्धिस्वीकृतोऽपि (by the counsels of Rakshasa), एव = मलयकेतुः (this), युत्तिद्वानाः = युद्धार्थं तत्परः सन् (making preparation for war), प्रज्ञया = बुद्ध्या (by the talent), निग्रहीतुम् = निवारयितुम् (for keeping in check), न पुनस्त्य = किन्तु न मलयकेतो, निग्रहात् = इननात् (by his arrest), पर्वतकवधोपपन्नं = पर्वतकविनाशादुत्पन्नम् (arising from the murder of Rakshasa), अपराधः = अवीर्तिम् (the scandal), प्रज्ञासीमवत् = संचार्यमाणम् (the infamy), प्रनाष्ट्वनिच्छानि = दूरीकर्तुम् वाञ्छानि (do not wish to put an end), प्रयुक्तश्च = नियुक्तश्च (also employed), स्वपक्षपरपक्षयोः = निजपक्षशत्रुपक्षयोः अनुरक्तापरकक्षनः = (the people that are attached to or disaffected towards our side or that of the enemy), जिज्ञासया = ज्ञानुनिच्छया (the desire of knowing), बहुविधदेशवेपनापाचारसंचारवेदिनः = बहुविधानां वेशानाम् यो वेपः परिच्छेदः, या च भाषा, आचारसंचाराश्च तान्विदन्ति ये ते (with various places, dresses, languages, manners and modes of dealing with), नानाव्यञ्जनाः = बहुविधवेशधारजर्झलाः (disguises), प्रणिधयः = गूढचराः (emissaries), अन्विष्यतेच = न्यूयन्ते च (and in search of), कुसुमपुरवापिनाम् = कुसुमपुरवास्तम्यानाम् (Dwelling of Kusumpur), नन्दानात्यमुह्वानम् = नन्दमित्रिबन्धू-नाम् (the minister and friends of the Nanda), निपुणम् = कुशलम् (skilled), प्रचारगतम् = कार्यप्रवृत्तिदृष्टावधिषाः (watched the works), तत्कारणमुत्पाद्य = भद्रमयादौ आश्लेषेन योजयित्वा (by creating various occasions), कृतकृत्यान् = सफलान् (success), आपादितः = गमिताः (completed), चन्द्रगुहसहोत्पादिनः = चन्द्रगुहान्युदनेनान्युदयवन्तः (that made common cause with Chandra Gupta), भद्रमयादयः = भद्रमयादिः (Bhadrabhatta and others), प्रधान-

पुरुषा = मुख्यकार्याधिकारिण (high officials), शत्रुप्रयुक्तानाम् = रिपुनियुक्तानाम् (employed by the enemy), तीक्ष्णरसदायिनाम् = विषदायिनाम् (poison employed), प्रतिविधानम् = प्रतिकार निवारणम् (counteracting), प्रत्यप्रमादिन = सावधाना (careful), परीक्षितमन्त्र्य = दृष्टानुरागा (trusted agents of tried loyalty), चित्तिपतिप्रत्यासन्ना = चन्द्रगुप्तसमीपवर्तिन (keeping near the person of the king), आसपुरुषा = विश्वस्तानुचरा (faithful servants), नियोजिता = नियुक्ता (appointed)

हिन्दी—और, मैं भी हम काम में सोया तो नहीं हूँ। दिन रात उसे पकड़ने के प्रयास में दयाशक्ति लगा हूँ। यह कैसे ?

हुनियों में यह लोकाववाद फैला दिया गया है कि राक्षस ने ही विषदाया का प्रयोग कर हमारे परम मित्र तपस्वी राजा पर्वतक की हत्या कर दी है, और, वह इसलिये कि चन्द्रगुप्त अववा पर्वतक इन दोनों में से किसी एक की मृत्यु से भी चाणक्य या सारा सल निगड जायगा। भागुरायण ने पर्वतकपुत्र मलयकेतु को एकान्त में, यह कहकर, डराकर, अलग भगा ले गया है कि तुम्हारे पिता को चाणक्य ने मरवाया है। राक्षस की सहायता पाकर यह मलयकेतु हमारे विरुद्ध समस्त उठ खड़ा हो, तो—शुक्ति से इसे बशवर्ती बनाया जा सकता है। फिर भी, मैं यह नहीं चाहता कि 'राक्षस ने पर्वतक की हत्या की है' यह फैलता हुआ लोकाववाद समय से पूर्व इस तरह शात हो जाय। और फिर—हमारे पक्ष में तथा शत्रुओं के पक्ष में यान अनुरक्त है। यह जानने के लिए—विविध देश, वेष, भाषा, आचार, संचार में कुशल गुप्तचरों को विभिन्न साधनों से सम्पन्न कर, नियुक्त कर दिया गया है। इतना ही नहीं, राजधानी कुमुदपुर में रहनेवाले नन्द के पुराने मन्त्रियों और मित्रों की हर गतिविधि पर निगरानी रखी जा रही है। चन्द्रगुप्त की उन्नति के साथ उन्नतिशील प्रधान राजपुरुष भद्रभगदि के द्वारा उन उन घातों को बनवा-बनवाकर जो कुछ भी किया जाना था कर हो दिया गया है। शत्रु प्रयुक्त ताक्ष्ण विषादि के प्रतिवार में समर्थ, पूर्ण परीक्षित एवं विश्वासपात्र जन ही महाराज की सेवा में हमारे द्वारा नियुक्त कर दिये गये हैं।

English—Over this matter, therefore, I too do not sleep, but I am making an effort to secure him as much as I can. How is that—

A scandalous report has been circulated in the world that—Devout Parvatak, our extremely obliging friend was killed by the Rakshasa through a poison maid, thinking that harm would be done to Chanakya by the death of either one of Chandragupta and Parvataka. To make this very thing obvious for the belief of the world Parvataka's son Malayaketu has been removed by Bhagurayana, having in alone inspired fear in him that his father was killed by Chanakya. This prince, making preparations against us, guided by the counsels of Rakshasa is capable of being checked by the force of my intellect. On the other hand I do not wish to put an end the infamy of Rakshasa arising from the assassination of Parvataka, which is spreading abroad, Emissaries too, conversant with various

अस्ति चास्माकं सहाध्यायि मित्रमिन्दुशर्मा नाम ब्राह्मणः । स चौशनस्यो दण्डनीत्यां चतुष्पष्टयङ्गे ज्योतिःशास्त्रे च परं प्रावीण्यमुपगतः । स नया क्षुपणक-
लिङ्गधारो नन्दवंशवधप्रतिज्ञानन्तरमेव कुसुमपुरमुपनीय सर्वनन्दामात्यैः सह
सत्यं प्राहितो विशेषतश्च तस्मिन् राक्षसः समुत्पन्नविश्रम्भः । तेनेदानीं
महत्प्रयोजनमनुष्ठेयं भविष्यति । तदेवमस्मत्तो न किञ्चित्परिहायते । वृषल
एव केवलं प्रधानप्रकृतिष्यस्मात्परापितराव्यतन्त्रभारः सततमुदास्ते । अथवा
चन्त्ययनभोगोदुःखैरनावारणैरपाकृतं तदेव राज्यं मुखयति । कुतः ?

places, dresses, languages, manners and modes of dealing with stran-
gers with the desire of knowing the people that are attached to
or disaffected towards our side or that of enemy, have been employed
by me. The actions of the ministers and friends of Nanda who
reside at Kusumpur are skilfully watched. Bhadrabhatta and others
high officials that made to further our interests by creating various
occasions. Trusted persons, ever careful to take standard against
men employed by Rakshasa to administer poison, and of tried
loyalty have been appointed to be near the king.

विमला

व्याख्या—अस्माकं सहाध्यायी = अस्माकं सर्तृभ्यः (our classfellow), मित्रम् =
सुहृद् (friend), इन्दुशर्मा नाम ब्राह्मणः = एतदाख्यो ब्राह्मणः (A Brahman Indu
Sharma by name) अस्ति (is), स च = असौ (he), चौशनस्यो दण्डनीत्याम् =
शुक्लशासनशास्त्रे (the science of polity of Usanas), चतुष्पष्टयङ्गे
ज्योतिःशास्त्रे च (and in the science of astronomy with its sixty four
divisions), परम् प्रावीण्यम् = अतिदक्षताम् (very great proficiency), उपगतः =
प्राप्तः (has acquired), स नया, क्षुपणकलिङ्गधारी = बौद्धसंन्यासिचिह्नयुक्तः (in
the dress of a Bauddha mendicant), नन्दवंशवधप्रतिज्ञानन्तरमेव = नन्दकुल-
मभूतविनाशमङ्कशरमेव (just after my vow to destroy the family of
Nanda), कुसुमपुरमुपनीय = पाटलिपुत्रमानीय (he was brought to Kusumpur),
सर्वनन्दामात्यैः सह = नन्दनन्दमन्त्रिभिः सह (with all the ministers of Nanda),
सख्यन्-मैत्रीम् (friendship), प्राहितः = स्वीकारितः (made to form), विशेषतश्च =
विशेषरूपेण च (and in particular), तस्मिन् = इन्दुशर्मणि (in him), राक्षसः =
तदाख्योनन्दामात्यः (the minister of Nanda), समुत्पन्नविश्रम्भः = संज्ञातविश्वासः
(very great confidence), तेन = इन्दुशर्मणा (by Indu Sharma), इदानीम् =
साम्प्रतम् (presently), महत् प्रयोजनम् = विशेषकार्यम् (an important work),
अनुष्ठेयम् भविष्यति = सम्पन्नं भविष्यति (will be rendered), तदेवम् = तस्मादुक्त-
प्रकारकोपान् कृते सति (so in this matter), अस्मत्तः = अस्माभिः (through us),
न किञ्चित् = किमपि न (nothing), परिहास्यते = परिहीनं न्यूनं न भविष्यति (will be

found wanting), वृषल एव केवलम् = चन्द्रगुप्त एव केवलम् (Chandragupta alone) प्रधानप्रवृत्तिषु = मुख्यमन्त्रिषु (the chief personage), अस्मासु = आरोपित अस्मासु न्यस्त (placed on us), राजतन्त्रभार = स्वराष्ट्रभरणस्य भार (responsibility of administering the kingdom), सततमुदारते = सर्वदा उदासीन सन् तिष्ठति (always remain apathetic), अथवा = वा (or), स्वयमभियोगदुःखैः = आत्मना कृत्यविषयकाग्रहसमुत्पन्नखेदैः असाधारणैः = विशेषैः, अपाकृतम् = रहितम्, यत्, राज्यम् = साम्राज्यम्, तदेव सुखयति = सुख करोति (rather, that sovereignty alone gives happiness, which is removed from the peculiar of application to work) कुत = for

हिन्दी—इन्दुशर्मा नाम का एक ब्राह्मण जो मेरा सहपाठी एवं मित्र है तथा जो शुक्र नाति मैं महारण्डित एवं ज्योतिष के बातों अहों में पारङ्गत है। उसे मैं नन्दवंश विनाश की ओर प्रतिष्ठा के बाद ही अपने साथ बौद्ध सन्यासियों के वप में कुसुमपुर लाया था। अभी वह समस्त नन्दमंत्रियों का तथा विशेषरूप से राजसूय या अन्तरङ्ग एवं विश्वासमाजन बना है। उनके द्वारा महत् प्रयोजन की सिद्धि का समय अब आया है। इस प्रकार किसी भी दृष्टि से मैं शिथिल नहीं हूँ। बटिनाद केवल यह है कि साम्राज्य का प्रधान चन्द्रगुप्त भी इन सारे राज्य संचालन के प्रपञ्चों को मुझ पर सौंप कर स्वयं निश्चिन्त सा है। शायद सचार्थ भी यही है कि वही राज्य वास्तव में कुछ सुख दे सकता है, जिसमें कार्या की असाधारण व्ययगता कहीं भी अवशिष्ट न हो। क्योंकि—

English—There is also my classfellow and friend, a Brahman Indu Sharma by name. He has to earn very great skilfulness in the science of polity of Ushanas and in the science of astronomy with its sixty four divisions. That person was, just after my vow to destroy the family of Nanda brought by me to Kusumpur in the dress of mendicant and made to form friendship with all the ministers of Nanda. Rakshasa has special confidence in him. Now an important work will have to be rendered by him. So in this matter nothing is wanting on our side. Chanakya alone, the king who to confide the responsibility of administering the kingdom to me, and always remains indifferent. Or that sovereignty alone gives happiness, which is relieved of the trouble of attention that is personal and not shared with others.

टिप्पणी—विषयः—विषयः या विषयः या वन्द्यः—शास्त्राधिकारि से सम्बन्धित पद लाया समास हुआ। परीक्षितभक्ति—परीक्षिता भक्ति येषां—बहुवचन समास। सहाय्यायि—सह अशीन इति—सह+अधि+इत्+णिनि सन्धुकारिणि वचरि से सिद्ध है। प्रादित—प्रद धातु से वर्मने भिज्नात् क प्रत्यय का यह रूप है। सुखयति—सुख करोति—तत्करोतीति से निन् या यह रूप है।

स्वयमाहृत्य भुञ्जाना बलिनोऽपि स्वभावतः ।
गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः ॥ १६ ॥

(ततः प्रविशति यमपटेन चरः)

प्रणमत् यमस्य चरणौ किं कार्यं देवतैरन्यैः ।
एष खल्वन्यभक्तानां हरति जीवं परिस्फुरन्तम् ॥ १७ ॥

विमला

अन्वयः—स्वय, आहृत्य, भुञ्जाना, नरेन्द्राश्च, गजेन्द्राश्च, स्वभावतः, बलिनोऽपि प्रायः, दुःखिताः सीदन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—स्वयम्=साक्षात् आत्मना (oneself), आहृत्य=संगृह्य (having seized) भुञ्जानाः 'उपभोग कुर्वाणाः (enjoying), नरेन्द्राश्च=राजानश्च (the kings), 'गजेन्द्राश्च=करिधेयाश्च (lords of elephants) स्वभावतः=प्रकृत्या (naturally), बलिनोऽपि=प्रायः पराक्रमिणोऽपीति यावत् (though possessed of strength) दुःखिताः=व्यथिताः. (discomfort), सीदन्ति=विलपन्ति (droop in discomfort) ॥ १६ ॥

हिन्दी—स्वभावतः पर्याप्त शक्तिशाली रहने पर भी गजराज और नगराज जब स्वयं खापनों को भुज्जकर उनका उपभोग करते हैं—तो ऐसे उपभोग से भी दुखी एवं थिर रह करते हैं ॥ १६ ॥

English—Lord of elephants and mighty kings though naturally strong yet they have to toil for their livelihood, generally droop in discomfort. 16.

टिप्पणी—स्वभावतः—स्वभावतः अथवा स्वभावतः स्वभावेन अर्थात् प्रकृत्या 'प्रकृत्या दिव्य' इत्यख्यानम्' से विहित श्रुतीया से 'तमि' प्रत्यय हुआ है। भुञ्जाना—उपभोग कुर्वाण—उपभोग करने से उह् प्रत्यय हिर—'नाच्छीत्यवशावचनशक्ति चानम्' से चानम् प्रत्यय हुआ।

इत धीक में दीनकालकार है। इन अलकार की कल्पना दीनकल्प पर हुए है। इन्हें प्रस्तुत में अवस्थित नावाग' धन अस्तुत को भी प्रकाशित करता है। अतः इन्हें प्रस्तुत का एव अस्तुत का एक धर्म तन्मन्व दित्तात वाता है। दानक अलकार में भी वन्नेय अर्थात् प्रस्तुत एव वननान अर्थात् अप्रस्तुत दोनों में धर्मत्व का कथन होया है। रत्नान्तर में रत्ना लब्ध है—“प्रकृतानामप्रकृताना चैकमाधारणधर्मान्वयो दीपकम्” दर्श त्व रात्र्यादि का आहृत्य कर उपभोग करने प्रस्तुत के तथा गजेन्द्राश्च अप्रस्तुत को एकधर्मता से कथन के कारण ही दीनक अलकार है। इनमें वेदनी रति है। कता रत्त है। नाशुर्वंशु है तथा अनुष्टुप् रत्त है। तथा वृत्तरत्नादरे—“वक्त्र नावाचसौ स्यातामन्येयोऽनुष्टुभि व्यातम् ।”

विमला

अन्वयः—यमस्य, चरणौ, प्रणमत्, अन्यैः देवतैः किं कार्यम्, एष खलु, अन्य-भक्तानाम्, परिस्फुरन्तम्, जीवम्, हरति ॥ १७ ॥

(पणमह जमस्स चलणे कि कज्ज ययहिं अ ण्णेहिं ।
एसो खु अण्णभत्ताण हरइ जीअ चडफटन्त ॥)

अपिच (अवि अ)—

पुरुषस्य जीवितव्यं विपमाद्भवति भक्तिगृहीतात् ।
मारयति सर्वलोकं यस्तेन यमेन जीवाम ॥ १८ ॥

(पुरिस्सस्स जीविदव्व विसमादो होइ भत्तिगहिआदो ।
मारइ सन्बलोअ जो तेण जमेण जीआमो ॥)

व्याख्या—तत = तदनन्तरम् (after that), प्रविशति = प्रवेश करोति (enters), यमपटेन = यमचित्रेण (with Yama's canvas) चर = दूत (a spy) यमस्य = धर्मराजस्य (Yama's) चरणौ = पदौ (the feet) प्रणमत = वन्दत (bowdown), अन्यै = यमभिन्नै (other) देवै = सुरै (deities), किं कार्यम् = किम् प्रयोजनम् (what is the use of), एष सखु = यम एष (he indeed), अन्य-भक्तानाम् = अपरदेवभक्तानाम् (the devotees of other deities), परिस्फुरन्तम् = प्रकटीभवन्तम् (struggling), जीवम् = प्राणात् (life), हरति = नाशयति (takes away) ॥ १७ ॥

हिन्दी— (उसके बाद यमपट के साथ दूत का प्रवेश)

चर—यमराज के चरणों में प्रणाम करो। इनर देवताओं को पूजने से क्या लाभ ? क्योंकि अन्य देवताओं के उपासकों के प्राण भी ये यमराज हर लेंगे हैं ॥ १७ ॥

English— (Then enters a Spy with Yamapata)

Spy—Bow down to the feet of Yama, what is the use of other deities ? He indeed takes away the struggling life of the devotees of other deities 17

विमला

अन्यय.—भक्तिगृहीतात्, विपमात्, पुरुषस्य, जीवितव्यम्, भवति, य, सर्वलोकम्, मारयति, तेन, यमेन, जीवाम ॥ १८ ॥

व्याख्या—भक्तिगृहीतात्=प्रभूतस्नेहसलोपितात् (propitiated by devotion), विपमात्=कूरादपि यमात् (from even the dreadful Yama) पुरुषस्य=प्राणि-मात्रस्य (Men's), जीवितव्यम्=जीवनम् भवति (obtain livelihood), य = यम (Yama), सर्वलोकम्=सकलप्राणिनम् (all people), मारयति=विनाश यति (kills), तेन=यमेन (by means of that Yama), जीवाम = अस्मि (we live) ॥ १८ ॥

हिन्दी—और भी—हम सबों की जिन्दगी सदैव इस भयंकर यमराज का भक्ति पर निर्भर करती है। वही यम जो प्राणिमात्र के लिये मृत्यु दे—हमारे जीवन का आधार है ॥ १८ ॥

यावदिदं गृहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायामि । (जाव एदं गेहं पविमिअ जमपड दंशअन्तो गीआटं गाआनि ।)

(इति परिभ्रमति)

गिष्यः—(विलोक्य) भद्र, न प्रवेष्टव्यम् ।

चरः—अहो ब्राह्मण, कस्येदं गृहम् । (हंहो बह्मण, कस्स एदं गेहं ।)

गिष्यः—अस्मान्मुपाध्यायस्य सुगृहीतनाम्न आर्यचाणक्यस्य ।

चरः—(विन्त्य) अहो ब्राह्मण, आत्मीयस्यैव नम धर्मभ्रातुर्गृहं भवति । तस्माद्देहि मे प्रवेगं यावत्तयोपाध्यायस्य यमपटं प्रसार्य धर्ममुपदिशामि । (हहो बह्मण, अत्तेदरेअस्स जेव्व नह धम्ममादुणो घरं होदि । ता देहि मे पवेसं जाव दे उयज्जाअस्स जमपड पमारिअ धम्म उपदिनामि ।)

English—Besides this—

Our life is always based on the devotion of Yama even terrible, We live by that Yama who kills all people. 18.

टिप्पणी—१७ वें श्लोक में अस्तुत यमराज के वरान से अस्तुत चाणक्य के वर्णन का गन्धत्व रहने के कारण अस्तुतप्रशंसा भट्टकार है । कुछ लोग 'अन्य देवताओं के सेवन की अपेक्षा यमराज की सेवा करना चाहे' ऐसे किञ्चान्त पूर्वार्द्धपत्र वाक्यार्थ के प्रति यम का अन्य देवदेवक मान्यताकृतान्तक पूर्वार्द्धपत्र वाक्यार्थ का हटकरन कथन से यहाँ कान्यलिङ्ग भट्टकार कहते हैं । यहाँ नो वैद्यों राते हैं । श्रान्त रत है । नापुत्रं गुा है । आचार्य है । उदाहरण—

"उत्सृजतस्तृणमा गोपेता भवति नेह विपत्ते यः ।

पष्टोऽयं नष्टू वा प्रथमेऽर्धे नियतनार्यायाः ॥" (वृ. र.)

१८ वें श्लोक में ना कुछ लोगों का दृष्टि में पूर्ववत् अस्तुतप्रशंसा भट्टकार है और कुछ की दृष्टि में उपदिनात्तक यमरूप हेतु से तत्त्वक के जीवनधारण प्रतिपादन के द्वारा विपना-ल्ट्टकार है ॥

विमला

व्याख्या—इदम्=पुराणसि (this), गृहम्=भवनम् (house) यावत् प्रविश्य=अन्तर्गता (enter), यमपटम्=कृतान्तचित्रम् (pictures of Yama), दर्शयन्=साक्षात् कारयन् (exhibiting), गीतानि गायामिन्मानं करोमि (sing my lays) इति परिभ्रमति (walks about).

गिष्यः—विलोक्य=दृष्ट्वा (seeing him), नद्र=सौम्य (gentleman) न=नहि (not) प्रवेष्टव्यम्=अन्तर्गन्तव्यम् (should not enter).

चरः—अहो ब्राह्मण=हे द्विज (O Brahmana), कस्य=किञ्चानधेयस्य (whose) इदं गृहम्=साक्षादुपलब्धमानं सदनं (वर्त्तते) (house is this).

गिष्यः—अस्माकं उपाध्यायस्य=अस्माकम् अध्यापकस्य (of our preceptor), सुगृहीतनाम्न=पुण्यव्रतकान्धियस्य (of auspicious name), आचार्यं=(the venerable) चाणक्यस्य=कौटिल्यस्य (of Chanakya).

शिष्य —(सकोधम्) धिक् मूर्ख ! किं भवानस्मदुपाध्यायादपि धर्मवित्तर . ।

चर —(विहस्य smiling) अहो ब्राह्मण = हे विप्र (O Brahman) आत्मीय
स्यैव मम = मत्सम्बन्धिन एव (it belongs to a relative my own), धर्मभ्रातृ =
राजकीयकृत्यसम्पादकस्य (spiritual brother), गृहम् भवति = सदन अस्ति
(house is), तस्मात् = कारणात् (for this), मे = मम (me) प्रवेशम् = अभ्यन्तर-
गमनाज्ञाम् (to enter), देहि = मार्गं मा कृण्वि (allow), यावत्काल, तव उपाध्याय-
स्य = तव गुरो (to your preceptor), यमपट प्रसार्य = कृतान्तचित्रं दर्शयित्वा
(will show the Yamapata), धर्मम् = शुभ वृत्तम् (something about duty),
उपदिशामि = कथयामि (I tell him)

हिन्दी—तबतक मैं इस घर में घुसकर यमचित्रों को दिखाते हुए, यमपाठा गाता हूँ ।
(घर को ओर घूमता हूँ)

शिष्य—(देखकर) पुरुष, यहीं घुसने की आज्ञा नहीं है ।

चर—हे ब्राह्मणदेव, आखिर यह घर है किसका ?

शिष्य—इसारे गुरु, स्वनामधेय चाणक्य का ।

चर—(हसकर) हे ब्राह्मणदेव, तब तो यह घर मेरे धर्मभ्रातृ का ही ठहरा । अतः
अब मुझ भीतर जाने दो । मैं तुम्हारे आचार्य के सम्मुख यह यमचित्र खोलकर उन्हें कुछ
धर्मापदेश दूँ ।

English—Why not let me enter in this home and sing a song
showing Yamapata (Moves round)

Pupil—(Seeing him) gentleman, It is not allowed to enter

Spy—O Brahman, who is the owner of this house ?

Pupil—Our preceptor honourable Chanakya of prosperous name

Spy—(Smiling) Then it is the house of my religious brother.
Let me go in side so that to tell your preceptor something about
Dharma showing this Yamapata

टिप्पणी—विलोक्य—वि पूर्वक 'लोक' धातु से क्यप प्रत्यय का यह रूप है । प्रवेष्टव्यम्—
प्र पूर्वक विश् धातु से कर्म में त-यत् प्रत्यय है । धर्मभ्रातृ —धर्मेण भ्राता—'सुसुपा' से समास ।
चाणक्य के समान म भी जीवों को धर्म का उपदेश देता हूँ—अन एक कमक होने के कारण
यहां भ्राता शब्द प्रयुक्त है । गृहार्थ यह है कि राजा चन्द्रगुप्त की सेवा हम दोनों एक साथ कर रहे
हैं, अन हम दोनों भाइय हैं ।

विमला

व्याख्या—शिष्य —[सकोधम् = सकोपम् (in anger)] धिक् स्वामिति शप
(Fie upon you), मूर्ख = ज्ञानशून्य (fool), अस्मादुपाध्यायात् अपि = अस्मद्-
गुरोरपि (than our preceptor), धर्मवित्तर = विशेषधर्मज्ञ (to be better conver-
sant with Dharma), भवान् = त्वम् (you), किम् = अस्तीति भाव (Do you)

चरः—अहो ब्राह्मण, मा कुप्य । न हि सर्वं सर्वं जानाति । तत्किमपि ते उपाध्यायो जानाति किमपि अस्मादस्मा जानन्ति । (हहो ब्रह्मण, मा कुप्य । न हि सर्वो सच्च जाणादि । ता किंनि ते उरग्माओ जाणादि मिव अहारिसा जाणन्दि ।)

शिष्य—मूर्ख, सर्वज्ञतामुपाध्यायस्य चोरयितुमिच्छसि ।

चरः—अहो ब्राह्मण, यदि तवोपाध्याय सर्वं जानाति तर्हि जानातु तावत्कस्य चन्द्रोऽनभिप्रेत इति । (हहो ब्रह्मण, जइ तव उरग्माओ सच्च जाणादि ता जाणादु दाव कस्मि चन्द्रो अणभिप्रेदो ति ।)

शिष्य.—मूर्ख, किमनेन ज्ञातेनाज्ञातेन वा ।

चरः—तवोपाध्याय एव ज्ञात्यति यदेतेन ज्ञातेन भवति । एव तावदेतान् जानासि कमलानां चन्द्रोऽनभिप्रेत इति । ननु परय (तव उरग्माओ एव जगिस्सदि ज इमिणा जाणिदेण होदि । तुम दाव एत्तिअ जाणासि कमलाण चन्द्रो अणभिप्रेदो ति । न पेक्ख ।)

कमलानां मनोहराणामपि रूपादिसंबदति शीलम् ।

सम्पूर्णमण्डलेऽपि यानि चन्द्रे विरुद्धानि ॥ १९ ॥

(कमलाण मण्डराण वि रूपाहितो विसयदई शील ।

सपुण्णमण्डलन्मि वि जाइ चन्दे विरुद्धाइ ॥)

चर—अहो ब्राह्मण (O Brahman), मा कुप्य = क्रोध न कुरु (No offence), नहि = न (not) सर्वं = निश्चितो जन (every one) सर्वम् = समग्रम् (every thing), जानाति = अवगच्छति (knows), तत् = तस्मात् कारणात् (so), ते = तव (your), उपाध्याय = गुरु (preceptor), किमपि = किञ्चित् (certain things), जानाति = अवगच्छति (knows), किमपि = किञ्चित् (something), अस्मादस्मा = मद्भिषा (like myself), जानन्ति = बुद्धयन्ते (know)

शिष्य—मूर्ख = अज्ञ (fool), सर्वज्ञताम् = सर्वं जानातीति सर्वज्ञस्तस्य भाव सर्वज्ञता, ताम् (omniscience), उपाध्यायस्य = गुरो (of our preceptor), चोरयितुम् = नास्तुम् वा अनङ्गीकर्तुम् (to deny), इच्छसि = अभिलष्यसि (to wish)

चर—अहो ब्राह्मण = ह विप्र (O Brahman), यदि = (if) तवोपाध्याय = ते गुरु (your teacher) सर्वं = अस्मिन् (every thing) जानाति = बुद्धयते (knows), तर्हि = तदा (then), जानातु तावत् (Let him know), कस्य = जनस्य (by whom), चन्द्र = रिषु (the moon), अनभिप्रेत इति = अप्रिय इति (is not liked).

शिष्य—मूर्ख = अज्ञ (fool) अनेन ज्ञातेनाज्ञातेन वा = कश्चन्दानभिधायीति ज्ञान-तोऽज्ञानतो वा (whether it is known or not), किम् = किमपि नास्ति (of what matters).

चर—तव=भवत (your), उपाध्याय एव=गुरुदेव (only preceptor), ज्ञास्यति=अवगमिष्यति (will know), यत्=एतस्य (its), एतेन, ज्ञानेन=बोधेन (being known), भवति, ख=भवान् (you), तावत्=एतावत्, जानामि=अवगच्छामि (simply know this much), कमलानाम्=पद्मानाम् (by lotuses), चन्द्र = बिबु (the moon), अनभिप्रत =अप्रिय (is not liked)

अन्वयः—मनोहराणामपि, कमलानाम्, शीलम्, रूपात्, विसवदति, यानि, सम्पूर्ण-मण्डले, अपि चन्द्रे, विरुद्धानि ॥ १९ ॥

व्याख्या—मनोहराणामपि=अधिकसौन्दर्यवतामपि (However lovely), कमलानाम्=पद्मानाम् (of lotuses), शीलम्=चरितम् (the character), रूपात्=आकारात् (with their form), विसवदति=सौन्दर्यसदृश न भवति (is inconsistent), यानि=कमलानि (lotuses), सम्पूर्णमण्डले=समग्रदिग्बे (full or bed), चन्द्रे=विधौ (to the moon), विरुद्धानि = विपरीतानि (opposed) ॥ १९ ॥

हिन्दी—शिष्य—(क्रोध के साथ) रे गुरु, तुम्हें चिन्ता है। क्या तू हमारे गुरु से भी अधिक धर्मज्ञ है ?

चर—ओ ब्राह्मणदेव, व्यर्थ क्रोध क्यों करते हो ? क्रोध भी आदमी यहाँ सर्वज्ञ नहीं है। कुछ तुम्हारे उपाध्याय को आता है, तो कुछ मेरे जैसे लोगों को भी आता है।

शिष्य—मूर्ख ! मेरे आचार्य की सर्वज्ञता भी छिपाना चाहता है ?
चर—ओ ब्राह्मण, यदि तुम्हारे गुरु ही सब कुछ जानते हैं, तो यह बताये कि चन्द्र किसे प्रिय नहीं है ?

शिष्य—देवकुरु, भला इस बात के जानने और न जानने से गुरु को क्या लाभ होगा ?

चर—ओ ब्राह्मण देवता, इस समाचार को जानने से क्या लाभ हो सक्ता है ? यह तुम्हारे गुरु ही जान सकते हैं। तुम तो केवल इतना ही जानने हो कि चन्द्र कमल को अच्छा नहीं लगता।

देखो ना—
कमल किन्ते छुद्र होते हैं और उसकी प्रकृति विरुद्ध विपरीत होती है। राक्षसपति राक्षस जब अपने सम्पूर्ण मण्डल में होता है तब भी यह उससे भुंदा भोटा होता है ॥ १९ ॥

English—*Pupil*—(In temper) Idiot ! are you more familiar in Dharma than our preceptor ?

Spy—You are useless in temper, O Brahman, None is well acquainted with a fact here Some thing is familiar with your preceptor where something is known to men like me ?

Pupil—Fool, do you not want to remain my preceptor in his omniscience

Spy—O Brahman, if your preceptor is really familiar with all, Let him ask if he knows by whom chandra (the moon) is disliked

Pupil—Idiot, what happens if it is known or unknown

Spy—Only, your preceptor himself, will know the advantage

वाग्व्यः—(आकर्ष्यो मगतम्) अये चन्द्रगुप्तादपरिच्छान् पुरुषान् जानामी-
त्युन्निष्प्रमतेन ।

शिष्यः—मूर्ख, किमिदमसवद्वमभिधीयते ।

वरः—अहो ब्राह्मण, सुसम्बद्धमेवैतद्भवेन् (हरो ब्रह्मण, सुसवद्व ज्ञेय
एव भवे)

शिष्यः—यदि किं स्यात् ।

वरः—यदि श्रोतुं जानन्त लभे । (यदि मुनिदु जाणन्त लहे)

वाग्व्यः—भद्र विप्रश्च प्रविश लप्स्यते श्रोतारं श्रोतार च ।

वरः—एष प्रविशामि । (प्रविशोपसृत्य च) जयतु आर्यः । (एनो
परिसामि । जेतु अत्रो)

of its being known. Only only this much is known to you that
Lotuses dislike chandra (the moon) See—

How much pleasant lotuses are to the mind but are of just
reverse nature, They even oppose a full orbed moon. 19.

विमला

व्याख्या—वाग्व्य—[आकर्ष्यं आत्मगतम् = धृत्वा सर्वस्मात्पुत्रम् Listening-
to himself] अये = सम्बोधननिदम् (Ha), चन्द्रगुप्तात् = वृषणात् (From
Chandragupta), अपरिच्छान् = विरिच्छान् वा विरुद्धान् (disaffected toward),
पुरुषान् = लोकां (people), जानामि = भवगच्छामि (knows) इति = इत्यम्
(that), अनेन = चरेण (by this spy), उत्पिबन् = कथितम् (has hinted).

शिष्य—मूर्ख = अज्ञ (Idiot), इदम् = एतत् (this), किम् (what), असम्बद्धम् =
असङ्गतम् (nonsense), अभिधीयते = वक्ष्यते (talk)

वर—अहो ब्राह्मण = हे विप्र (O Brahman), एतत् = इदम् (this), सुसम्बद्ध-
मेव = सुसङ्गतमेव (good sense), भवेत् = स्यात् (will be)

शिष्य—यदि = तव वचनं सुसंगतम् एव भवेत् तर्हि (if), किं स्यात् = किं भवेत्
(what).

वर—यदि (if), श्रोतुम् = श्रोतार (how to listen), जानन्तम् = श्रोतारम्
(that knew), लभे = प्राप्नोति (I get)

वाग्व्य—भद्र = साधो (good man), विप्रश्च = विप्रस्तम् (with confidence),
प्रविश = गृहाम्पन्तरमागच्छ (enter), लप्स्यते = प्राप्स्यते (will get), श्रोतारम् =
शृङ्खलन् (Listener), श्रोतार = जानन्तम् (an appreciator).

वर—एष प्रविशामि = इदानीमेव गृहाम्पन्तरमागच्छामि (Here I enter),
प्रविशोपसृत्य च = गृहं प्रविश्य समीपमेव च (Entering and approaching),
जय त्वार्यं = श्रेष्ठो भवान् विजयी भव (victory to your honour)

हिन्दी—वाग्व्य—(मुनकर आप ही जान) वर इसके कहने का अभिप्राय तो कुछ
ऐसा लगता है कि चन्द्रगुप्त के प्रति कौन-कौन अनुरक्त नही है !—मैं यह सवाव लाया हूँ ।

चाणक्यः—(विलोक्यात्मगतम्) कथमयं प्रकृतिचित्तपरिज्ञाने नियुक्तो निपुणः । (प्रकाशम्) भद्र, स्वागतमुपविश ।

चरः—यदार्थं आज्ञापयति । (ज अञ्जो आणवेदि) (भूमावुपविष्टः)

चाणक्यः—भद्र, वर्णयेदानीं स्वनियोगवृत्तान्तम् । अपि वृषलमनुरक्ताः प्रकृतयः ।

शिष्य—मूर्ख ! ऐसी असम्बद्ध बातें क्यों कर रहा है ?

चर—अहो ब्राह्मण देवना ! अभी अभी सारी बातें सुसम्बद्ध बन जाती हैं ।

शिष्य—यदि क्या होता ?

चर—यदि तुझे कोई समझने योग्य श्रोता मिल जाय ।

चाणक्य—भद्र ! भीतर चले आओ, यहाँ तुम्हें सुनने वाला और समझने वाला भी मिल जायगा ।

चर—मैं अभी आया (प्रवेश कर और पास जाकर) आर्य की विजय हो ।

English—Chanakya—(listening to himself) Oh it is hinted that this fellow knows the people who are disaffected towards Chandragupta

Pupil—Idiot, why this nonsense talk ?

Spy—Hallo Brahman, soon it will be of good sense.

Pupil—If what ?

Spy—If I get a person that knew how to listen

Chanakya—Here I enter (Entering and approaching) Victory to your Honour !

Spy—good man, enter freely you will get a person who will hear and understand.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[विलोक्यन्परि (observing), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself),] कथम्=केन प्रकारेण (How) अयम्=असौ (this), प्रकृतिचित्त-परिज्ञाने=प्रजाद्वयव्यवधाने (to know the mind of the subjects), नियुक्तः = प्रयुक्तः (appointed), निपुणः-। [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], भद्र=साधो (good man), स्वागतम्=शोभनागमनं भवतु (welcome), उपविश=तिष्ठ (sit down)

चर—यत् (as), आर्य=श्रेष्ठ (your Honour), आज्ञापयति=आज्ञां करोति (commands), [भूमावुपविष्टः (squats on the ground)]

चाणक्य—भद्र=साधो (gentleman), इदानीम्=अधुना (now), वर्णय=अभिधेहि (report), स्वनियोगवृत्तान्तम्=आत्माधिकारप्रवृत्तिम् (details of your work), अपि वृषलमनुरक्ताः=अपि तन्मोक्षं प्ररुच्यन्ते, वृषलमनुराग-वन्तः पुष्टा, किम्=के जनाः (Are the subjects attached to Vrishala)

चरः—अथ किम् । आर्येण खलु तेषु तेषु विरागधारणेषु परिहृतेषु सुगृहीत-
नामधेये देवे चन्द्रगुप्ते दृढननुरक्तः प्रकृतयः । किन्तु पुनरस्त्यत्र नगरे अमात्य-
राक्षसेन सह प्रथमं नत्सुपन्नस्नेहबहुमानाख्यं पुरुषा देवस्य चन्द्रधियः त्रिय
न सहन्ते । (अहं इः अत्रेण खलु तेषु तेषु विरागधारणेषु सुगृहीतेषु
सुगृहीतनामधेये देवे चन्द्रगुप्ते दृढं अपुरन्ताओ पक्षिदिआ किन्तु उण अधि
एव्य पजरे अमबरक्तमेण सह पडमं सनुपपण्णासिणेहं बहुमाणा तिप्पि (ण्णा)
पुरीना देवस्म चन्द्रसिरिणो सिरिं ण सहन्दि ।)

चाणक्यः—(सन्धेयम्) ननु उक्तस्य स्वर्जयित न सहन्त इति । भद्रः
अपि ज्ञायन्ते नामधेयनः ।

चरः—कथमज्ञातनामधेया आर्यस्य निवेद्यन्ते । (इह अज्ञाणिअणामहंआ
अत्रस्म पिवेदीअन्ति) ।

चाणक्यः—तेन हि श्रोतुमिच्छामि ।

चरः—नय किम् = अथ शब्दः स्वीकारार्थकोऽन्यदम् (what else), आर्येण =
नवता (by your Honour), खलु, तेषु तेषु = मूलपूर्वेषु (all those), विराग
धारणेषु = विरक्तिहेतुषु (causes of dissatisfaction), परिहृतेषु = दूरीकृतेषु
(being removed), सुगृहीतनामधेये = पुण्यानिधेये (of blessed name), देवे-
चन्द्रगुप्ते = राज्ञि मौर्ये (To his Majesty Chandragupta), दृढम् = अधिकम्
(firmly), अनुरक्ताः = स्नेहयुक्ताः (attached to), प्रकृतयः = प्रजाः (subjects),
किन्तु = परम् (but), पुनरस्त्यत्र (there are), नगरे = पुरे (in the city),
अमात्यराक्षसेन सह = राक्षसनाम्ना मन्त्रिणा सह (with minister Rakshasa),
प्रथमम् = पूर्वम् (before), सनुपपन्नस्नेहः = सजातानुरागः (affection and regard
for Rakshasa), बहुमाना त्रयः पुरुषाः = त्रयः (three persons), देवस्यन्द्राक्षः
(of the king), चन्द्रधियः = इन्दुकान्तेः (Prosperity of the moon), अयं
न सहस्ते = अम्युदय न सृज्यन्ति (Do not bear to see the prosperity of
Chandragupta).

चाणक्यः—[सन्धेयम् = कोपयुक्तम् (angrily)], ननु वक्तव्यमन्यो इत्य वक्तव्यम्
(rather say), स्वर्जयितम् = आत्मनोजीवनम् (their own lives), न सहन्ते
इति = न वाच्यन्ति (do not bear), भद्रः = साधो (good man), अपि ज्ञायन्ते
नामधेयतः = अपि प्रश्नवाचकः, जानतां बुध्यन्ते किम् (Do you know their
names) ?

चरः—कथम् = केन प्रकारेण (How), अज्ञातनामधेया = अनुदनामानः (I do
not know their names), आर्यस्य = भवतः (your Honour), निवेद्यन्ते = विज्ञा-
प्यन्ते (may I inform)

चाणक्यः—तेन हि, श्रोतुम् = ज्ञातुम् (to hear them), इच्छामि = वान्छामि
(I wish).

हिन्दी—चाणक्य—(देखकर बरने बर) बरे यह तो निपुण है, बिदे मैंने प्रवा

चर — शृणोत्वार्थं । प्रथमं तावदार्यस्य रिपुपक्षे बद्धपक्षपातं क्षपणको—
(सुणादु अजो । पढम दाव अजस्स रिपुपक्खे बद्धपक्खपादो खवणओ—)
चाणक्य — (आत्मगतम्) अस्मद्रिपुपक्षे बद्धपक्षपातं क्षपणक ।

जन की प्रकृति जानने के लिए नियुक्त किया था । (प्रकाश रूप से) भले आदमी आगे बैठ जाओ । स्वागत है ।

चर—जो आज्ञा श्रीमान् (भरती पर बैठ जाता है) ।

चाणक्य—भद्र, अब अपनी बात बतलाओ । चन्द्रगुप्त में प्रजा का अनुराग कैसा है ?

चर—प्रजा क्यों नहीं चाहेगी ? जब आपने अपराग के सभी कारणों को दूर कर ही दिया तो फिर हमारे स्वनामधन्य महाराज चन्द्रगुप्त में प्रजा जन की अनुरक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है । किन्तु इस शहर में तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनका राजस के प्रति पुराना प्रेम और सम्मान अभी भी चल रहा है । ये तीनों, महाराज चन्द्रगुप्त की सशुद्धि को सहन नहीं करते ।

चाणक्य—(आवेश में) तो यह कहो कि उन्हें अपनी जिन्दगी बर्बाद नहीं होती । भद्र, इनका नाम तुम जानते हो ।

चर—अगर नाम का पता न होता तो आपके पास मैं जाता ही क्यों ?

चाणक्य—उन्हें मैं सूचना चाहता हूँ ।

English—Chanakya—(Seeing, to himself), this is Nipunak, appointed by me to know the mind of subjects (Aloud) gentleman, welcome, sit down

Spy—Noble sir, as you command, (squats on the ground)

Chanakya—good man, now report the details of your work Are the subject attached to Chandragupta ?

Spy—yes, All causes of dissatisfaction being removed by your Honour, the subjects are firmly attached to Chandragupta of blessed name But even then in this city there are three persons who have already attachment and great regard for minister Rakshasa who do not bear to see the prosperity of Chandragupta

Chanakya—(angrily) Why rather say, they do not bear their own lives Do you know their names ?

Spy—How can I inform you, if I do not know their names ?

विमला

व्याख्या—शृणोत्वार्थं=भवान् आकर्णयन्तु (listen, Noble sir), प्रथमम् (at first), तावदार्यस्य=भवत (your) रिपुपक्षे=शत्रुदले (on the party of your enemies) बद्धपक्षपातं=कृतानुराग (fixed his affection) क्षपणक = बौद्ध-न्यासी (Baudha mendicant), जीवसिद्धि ।

चाणक्य—[सहर्षमात्मगतम्=सानन्द स्वगतम् (with joy to himself)] अस्मद्रिपुपक्षे=अस्मद् शत्रुदले (on the party of your enemies) बद्धपक्षपातं = कृतानु राग (fixed affection), क्षपणक = बौद्धसंन्यासी (Baudha mendicant)

चरः—जीवसिद्धिर्नाम स येन ना अमात्यराक्षसप्रयुक्ता प्रियकन्या देवे पर्वतेश्वरे समावेशिता । (जीवसिद्धी नाम सो जेण सा अमचरकरसप्पउत्ता प्रियकण्णा देवे पव्वदीसरे समावेनिदा) ।

चाणक्यः—(स्वगतम्) जीवसिद्धिः । एष तावदस्मत्प्रणिधिः । (प्रकाशम्) भद्र, अथापरं कः ।

चरः—आर्य अपरोऽप्यमात्यराक्षसस्य प्रियवयस्यः कायस्थः शकटदानो नाम । (अत्र अपरोऽपि अमचरकरससस प्रियवयस्यो रा अत्यो नभइदामो नाम ।)

चाणक्यः—(विद्वस्यात्मगतम्) कायस्थ इति लब्धी मात्रा । तथापि न युक्तं प्राकृतमपि रिपुमन्त्राणाम् । तस्मिन्मया सुहृद्भयना सिद्धार्थं कोपिनिश्चितः । (प्रकाशम्) भद्र, तृतीयमपि श्रोतुमिच्छामि ।

चरः—तृतीयोऽपि अमात्यराक्षसस्य द्वितीयमिव हृदय पुष्पपुराणिनामी मणिहारश्रेष्ठी चन्द्रनदानो नाम यस्य गेहे क्लृप्तं न्यासीकृत्य अमात्यराक्षसो नगरादपगन्तः । (तृतीयोऽपि अमचरकरससस दुर्गां द्विअं पुष्पपुराणिनामी मणिहारश्रेष्ठी चन्द्रनदासो नाम । जस्स गेहे क्लत्तं नासीकटुअ अमचरकरससो पअरादो अवहन्तो ।)

चरः—जीवसिद्धिर्नाम स=पुत्रधामद्वेष्टी (Jivasidhi by name), येन=इष-यकेन (by whom), अमात्यराक्षसप्रयुक्ता=तदाख्यमन्त्रिणाभ्यापारिता (by the minister Rakshasa by name was directed), सा विप्रकन्या=प्राणघातकारिणी कन्यका (the poison maid), देवे पर्वतेश्वरे=राशि पर्वतेश्वरे (against the king Parvatak), समावेशिता=सम्प्रयुज्य (employed)

चाणक्यः—[स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself).] एष=अयम् (this), जीव-सिद्धिः=पुत्रद्विधानः (Jivasidhi by name), अस्मत्प्रणिधिः=अस्मद्दूतदूतः (my emissary), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud),] भद्र=साधो (gentleman) अथापरं=द्वितीयः (second man) कः= (who is).

चरः—आर्य=श्रेष्ठ (Noble sir), अपरोऽपि=अन्योऽपि (next also), अमात्य-राक्षस्य=राक्षसनामो मन्त्रिणः (of minister Rakshasa), प्रियवयस्य=प्रियमित्रः वा परममुदत्तः (a dear friend), कायस्थः=लेखकः (Kayastha), शकटदासो नाम=नाम्ना शकटदास इति प्रसिद्धः (Sakatdas by name),

चाणक्यः—[विद्वस्यात्मगतम् (laughing-to himself).] कायस्थ इति लब्धी मात्रा=नास्मद्बलिष्ठ समावेनेति तात्पर्यम् (A Kayastha is a small matter), तथापि=अल्पत्वेऽपि (still), न युक्तम्=नोचितम् (in not proper), प्राकृतम्=सुदृढम् (an ordinary), रिपुम्=दनुम् (enemy), अवज्ञाणम्=उपेक्षितम् (to neglect), तस्मिन् मया=शकटदासे मया (on him by me), सुहृद्भयना=मित्र-न्यायेन (in the guise of a friend), सिद्धार्थकः=पुत्रद्विधानो दूतः (Siddharthak

by name), विनिश्चितः = नियुक्तः (appointed), [प्रकाशम् (aloud),] भद्र = साधो (good man), तृतीयम् (third man), श्रोतुमिच्छामि = श्रोतुम् वाञ्छाम् (I wish to hear)

चर.—तृतीयोऽपि = द्वितीयमपरम् (third man also), अमात्य राक्षसस्य = मन्त्रि-
राक्षसस्य (of the minister Rakshasa), द्वितीयमिव = मानसमिव (the
second heart like), पुष्पपुरनिवासी (inhabitant of Puspapur), मणि-
कारश्रेष्ठी = रत्ननिर्मातृवणिग् (Jewellers), चन्दनदासो नाम (Chandandas by
name), यस्य गृहे = यस्य सवने (in whose house), अमात्यराक्षसः (Minister
Rakshasa), कलत्रम् = भार्याम् (his family), न्यासीकृत्य = निक्षिप्य (left),
नगरादपक्रान्तः = पुरात् निर्गतः (escaped from the town)

हिन्दी—चर—सुनिप महाराज, इनमें सबसे पहला है क्षपणक, जिसे आपके शत्रु पक्ष में
बड़ा पक्षपात है।

चाणक्य—(प्रसन्नतापूर्वक) ओह, क्षपणक और हमारे शत्रुपक्ष का बड़ा पक्षपात ?

चर—जीवसिद्धि नाम का वही क्षपणक जो अमात्य राक्षस के सकेत पर देव पर्वतेश्वर
की इत्था के लिए विषकन्या को वहीं ले गया था ?

चाणक्य—(मन ही मन) जीवसिद्धि ! वह तो हमारा अपना आदमी है (व्यक्त)
बन्धा तो अब दूसरे का नाम बताओ।

चर—आर्य, दूसरा एक क्षफटदास नाम का कायस्थ है, और वह अमात्य राक्षस का
अन्तरङ्ग मित्र है।

चाणक्य—(मुस्कराते हुए मन ही मन) कायस्थ ! मला एक कायस्थ की क्या हस्ती ? फिर
भी यह शत्रु तो है ? और छोटे से छोटे शत्रु की भी अवहेलना उचित नहीं। इसीलिए उसके
पीछे मैंने सिद्धार्थ को उसका मित्र बनाकर छोड़ दिया है। (बोलकर) भद्र, तीसरे व्यक्ति
का भी नाम जानना चाहता हूँ।

चर—तीसरा भी अमात्य राक्षस के दूसरे हृदय की तरह, पुष्पपुर निवासी सुनारों में
श्रेष्ठ चन्दनदास है, जिसके घर अपने परिवार की ररर घर वह नगर से बाहर चला गया है।

English—Spy—May your honour Formost in the Baudha
Mendicant Jivasidhi, who has fixed his affection towards the side
of your enemy

Chanakya—(with joy to himself) A Baudha mendicant Jivasidhi,
who has fixed his affection on the party of our enemies

Spy—Jivasidhi is indeed the same that fixed upon the king
Parvataka the unlucky poison maid employed by minister Rakshasa.

Chanakya—(To himself) Jivasidhi, but he is our spy (Aloud)
Good fellow who is the second man ?

Spy—Noble sir, the second man is a Kayastha Sakatdas- who
is a dear friend of minister Rakshasa

Chanakya—(with a smile, to himself) A Kayastha is a small
matter, still it is not proper to neglect even an ordinary enemy
(aloud) gentleman I want to hear the third man.

चाणक्य.—(आत्मगतम्) नूनं सुहृत्तमः । न ह्यनात्मद्वयेषु राक्षसः कलत्रं न्यामीक्षरिष्यति । (प्रकाशम्) भद्रं, चन्दनदासस्य गृहे राक्षसेन कलत्रं न्यासीकृतमिति कथमयमन्यते ।

च० —आय इयमगुणिमुद्रा आर्यमगतार्थं करिष्यति । (अत्र इयं अगुलिमुद्रा अत्र अयमवस्थं करिष्यति ।) (इति मुद्रामर्पयति ।)

चाणक्य —(मुद्रामर्पणं गृहीत्वा राक्षसस्य नाम वाचयति । नमः स्वगतम्) ननु उच्यते राज्ञेय एवास्मिन्गुणिप्रणये संवृत्त इति । (प्रकाशम्) भद्रं, अगुलिमुद्राणिगम विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

च० —श्रणोन्मार्गं । अस्ति ताम्रह्वारणं पौराणचरितान्वेषणे निरुक्तं परमं प्रवशं परत्यानाशङ्कनीयेन अनन्य उमपट्टेन हिण्टमानो मणिहारत्रैद्विन्दनदासस्य गृहं परिधेऽस्मि । तत्र उमपट्टं प्रसार्य प्रयुक्तोऽस्मि गीतानि गातुम् । (मुणादु जज्ञो । अत्रि वाव जह अत्रेण पौराणचरितअण्णेषणे णित्तो परधरम्पवेसे परस्म जणासङ्गणिजेण इमिणा उमपट्टेण हिण्टन्तो मणिजारसेट्ठिण चन्दणदासस्स गेहं परिधेऽस्मि । तहि उमपट्टपत्तारिअ पत्ताद्धि गोराड गान्दु ।)

Spy—The third man is the second as it were, of heart minister Rakshasa is the jeweller, Chandandas, inhabitant of Puspapura, in whose house he left his family and escaped from the city

विमला

व्याख्या—वचनम्—[आत्मगतम्=स्वगतम् (To himself),] नूनम्=निश्चितम् (Indeed), सुहृत्तमं=परमस्नेही (the best friend), अनानसिद्धायु=अनानुसङ्गेयु (unworthy to himself), न न्यामीक्षरिष्यति=न स्थापयिष्यति (will not leave), हि=यतः (Because), राक्षसः, कलत्रम्=स्त्रिय (his wife), [प्रकाशं=मुत्पद्यमानं (aloud),] भद्रं=साधु (gentleman), चन्दनदासस्य गृहं=चन्दनदासस्य सङ्घे (In the house of Chandandas), राक्षसेन=सर्विवेन (by Rakshasa), कलत्रम्=स्त्रियम् (wife), कथं=केन प्रकारेण (how), अहं गम्यते=बुद्धयते (do you know), नासीकृतम्=स्थापितम् (left).

च०—आर्यं=पूज्य (Noble sir), इयम्=प्रत्यक्षदृश्यमाना (this), अङ्गुलिमुद्रा=नानाङ्कितनङ्गुलियकम् (signet ring), आर्यम्=पूज्यम् नवन्तम् (your honour), अवगतार्थम्=विज्ञातोद्भूतम्, करिष्यति=विवाध्यात (will acquaint), इत्यर्पयति=कथिषा ददाति (Delivers the ring)

चाणक्य—[मुद्रामर्पणं=अङ्गुलीयकं स्पर्शय (looking at the ring), गृहीत्वा=हस्ते विधाय (takes), राक्षसं नाम वाचयति=चन्दनान्यस्याभिधानं पठति (reads the name of Rakshasa), सहर्षम्=सानन्दम् (with joy), स्वगतम्=अनति स्पष्टम् (To himself), ननु=नो (oh), राक्षसपुत्रं चन्दनानाम् एव (Rakshas

himself), अस्मदङ्गुलिप्रणयी = अस्माकमङ्गुलिस्नेही (the love of my finger), संवृत्त इति = हस्तस्थ इति (has come in to my possession), वक्तव्यम् = कथितव्यम् (should say), (प्रकाशम् = Aloud), भद्र = साधो (goodman), अङ्गुलिमुदाधिरामम् = नामाङ्गुलिद्वलीयकस्य प्राप्ति (how you came by the ring), विस्तरेण = क्रमेण (in detail), श्रोतुमिच्छामि = वाकर्णितुम् अभिलापामि (I wish to know)

चर.—आर्य = पूज्यः (your Honour), शृणोतु = आकर्णयतु (may hear), आर्येण = पूज्येन (by your noble self), यावत् पौरजनचरितान्वेषणे = नगरिक चरितानुसरणे यावत् (to spy the action of the citizens), अहम् नियुक्तः अस्ति = अहम् नियोजितः अस्मि (being appointed), परस्य = अन्यस्य (of others), अनाशङ्कनीयेन = सन्देहायोग्येन (which excites no suspicion), परगृहप्रवेशे = अन्यसदनान्तर्गमने (in entering others houses), अनेन = प्रत्यक्षदृश्यमानेन (with this), यमपटेन = कृतान्तचित्रेण (Yama's canvas), आदिपठमाना = परिभ्रमन् (wandered about), मणिकारधेष्ठिनः = मणिकारवैश्यस्य (the jewel merchant), चन्दनदासस्य (of Chandandas), गृहम् = सदनम् (to the house), प्रविष्टोऽस्मि = प्रवेशं कृतोऽस्मि (I entered), तत्र = चन्दनदासालये (there), यमपटं = कृतान्तचित्रं, प्रसार्य (unfolded my yamapata), गीतानि गायामु, प्रवृत्तोऽस्मि = तरपरो भवामि (began to sing the songs)

हिन्दी—चाणक्य—(मन ही मन) निश्चय ही वह राक्षस का परम मित्र होगा । क्योंकि, अभिन्न मित्र के अतिरिक्त किसी अन्य के हाथों में वह अपने परिवार को नहीं सौंपता । (सुना-कार) राक्षस का परिवार इन दिनों चन्दनदास के घर ही में है—इस बात का निश्चय तुम्हें कैसे हुआ ?

चर—आर्य, वह अगूठी लीनिये, वह आपको सब कुछ बता देगी । (अगूठी हवाले कर देता है) ।

चाणक्य—(अगूठी देखकर, लेकर राक्षस का नाम पढ़ता है, प्रसन्नता के साथ अपने आप) और वहना या—अगूठी नहीं, स्वयं राक्षस ही मेरी अगुली की शोभा बनने को आ गया । (प्रकट) भद्र, अगूठी प्राप्ति वा वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनना चाहता हूँ ।

चर—आर्य सुनें, नागरिकों की हर गतिविधि का पता लगाने के लिए ही आपने मुझे नियुक्त किया था । इस यमपट के सहारे इधर उधर घूमता हुआ किसी के घर में प्रवेश करने में मुझ पर किसी को सन्देह नहीं होता था । एक दिन मैं घूमते घूमते चन्दनदास के घर जा पहुँचा और यमपट फैलाकर गीत गाने लगा ।

English—Chanakya—(To himself) Surely, he must be his best friend for Rakshasa will not leave his family with person unworthy of himself. (Aloud) Gentleman, how do you know that Rakshasa left his family in the house of Chandandas ?

Spy—Noble sir, this signet-ring will acquaint your honour with everything. (Delivers the ring)

Chanakya—(looking at the ring, takes it and reads the name

चापत्तः—ततः किम् ।

चरः—ततश्च एकस्मादपवरक्यात् पञ्चवर्षदेशीयः प्रियदर्शनीयशरीराकृतिः कुमारको बालत्वमुत्तमकौतूहलोत्सुकनयनो निश्चमितिं प्रवृत्तः । ततो हा निर्गतो हा निर्गत इति शब्दापरिग्रहनिवेदयिता तस्यैवापवरकस्याभ्यन्तरे स्त्रीजनस्योत्थितो महान् कलकलः । ततो एकदेशे अपवरकदेशे पञ्चारिभवेमीओ पिअदसणीअसरीराकृतीकुमारजो बालचपमुलहकोटुह्ताण्णुज्जणजणो पिअमिदु पड्त्तो । ततो हा पिग्गदेशे हा पिग्गदेशेति मङ्गापरिग्रहनिवेदयिता तस्स एव अपवरकस्य अन्तरे इति आजणस्स उट्ठिदेशे महन्तो कलअलो ।)

तत ईपद्द्वारदेशापितनुक्या एव्या त्रिया च कुमारको निष्प्रमत्रेय निर्भन्त्यावलम्बितः क्षेमनया बाहुलतया । तस्याः कुमारमरोधसभ्रनप्रचलितांगुलः करात्पुरुषांगुलिपरिणाहप्रमाणचटिता विगलितेयनगुलिमुद्रिका

of Rakshasa and joyfully to himself) I should say that Rakshasa himself has sought the love of my finger. (Aloof) Gentleman I want to hear in detail how you came by the ring.

Spy—Listen Noble sir, being appointed by you to spy the actions of the citizens. I wandered about showing this Yama's canvas which can not excite suspicion in entering other's house, thus I entered in the house of jeweller Chandandas There opening out the Yama's canvas, began to sing the song.

विमला

व्याख्या—काल्प—ततः किम् = ततश्चात् किमन्तु (What next)

चरः—ततन्त = दन्तन्तरम् (then), एकस्मादपवरक्यात् पञ्चवर्षदेशीयः = एकस्मात् गवा-
चात् पञ्चवर्षदेशीयः (from one of the apartments of the house a boy about
five years old), प्रियदर्शनीयशरीराकृतिः = मम्यकादस्याकारः (lovely and
pleasing form of body), कुमारकः = बालकः (A boy), बालत्वमुत्तमकौतूहलो-
त्सुकनयनः = शिशुत्वभावत्रं कौतूहलं विकसितनेत्रयुग्मः (with his eyes dilated
through curiosity, natural in a childhood), निष्प्रमत्रेयः = निर्भयः, प्रवृत्तः =
उद्यतः (began to come out), ततः = तदनन्तरम् (after that), हा निर्गतः हा
निर्गतः इति = इत्येव रूपः “ (Ah he has gone out, Ah he has gone out),
शब्दापरिग्रहनिवेदयिता = सन्देहमाश्रितनिवेदयिता (a great confused noise).
तस्यैवापवरकस्याभ्यन्तरे = तस्यैवगवाघनान्ये (inside the very apartment),
स्त्रीजनस्य = नारीजनस्य (from women), उत्थितदसमुत्पन्नः (arose), महान् कल-
कल = विदीपः अल्यकम्पनिः (voice of fright), ततः = ततश्चात् (after that), ईपद्-
द्वारदेशापितनुक्या = अल्पद्वारप्रदेशविहिताननेव (showed her face slightly

देहलीबन्धे पतिता उत्थिता तथा अनवबुद्धैव मम चरणपार्श्वे समागत्य
 प्रणामनिभृता कुलवधूरिव निश्चला सवृत्ता । मयापि अमात्यराक्षसस्य
 नामाङ्कितेति आर्यस्य पादमूल प्रापिता । तस्मादेवोऽस्या आगम । (तदो
 ईसिदारदेशदाविदमुदीए एकाए इत्थिआए सो कुमारओ णिकमन्तो एव
 णि भन्दिअ अवलम्बदो कोमलाए बाहुलदाए । तस्साए कुमारसरोधसभमण्य-
 चलिदगुलिदो करादो पुरिसअगुलिपरिणाहप्रमाणघडिआ रिअलिआ इअ
 अगुलिमुदिआ देहलीबन्धम्मि पडिआ उठ्ठिदा ताए अणवबुद्धा एव मम
 चलणपास समागच्छिअ पणामणिहुदा कुलरहु विह णिचला सवृत्ता । मए
 वि अमबरकखसस्स णामङ्किदेत्ति अज्जस्स पादमूल पाविदा । ता एसो इमाए
 आओ ।)

चाणक्य — भद्र, श्रुतम्, अपसर । नचिरादस्य परिश्रमस्यानुरूप फल-
 मधिगमिष्यसि ।

at the region of the door), एकया स्त्रिया = अद्वितीयया नार्या (by a lady),
 स कुमारक = डक्षविध शिष्य (that boy), निष्कामत्वेव = यद्विनिर्गच्छन्नेव (just
 as he was coming out), निर्भर्त्स्य = उपालम्भ्य (after being chid), अवल-
 म्बित = एत (was seized), कोमलया, बाहुलतया = भुजशाखया (with soft
 creeper like hand), तस्या = स्त्रिय (of that woman), कुमारसरोधसभम-
 प्रचलिताहुले = शिष्यचर्द्दिर्मनप्रतिषेधन्याकुलप्रकम्पिताहुले (the fingers of whose
 worked violently in her hurry for the arrest of the boy), करात् =
 हस्तात् (from hand), पुरुषाहुलिपरिणाहप्रमाणघटिता = वराहुलिप्रमाणनिमित्ता
 (made to suit the measure of the finger of a man) विगलितेयमहुलि-
 मुदिदा = च्युतेयम् नामाङ्कितागुलिमुद्रिका (slipped off from her hand this
 signet ring), देहलीबन्धे पतिता = द्वाराध प्रवेशभ्रष्टा (at the threshold), उत्थिता
 (rebounding), तथा अनवबुद्धैव = स्त्रिया अज्ञायमाना एव (unperceived by
 her) मम चरणपार्श्वे = ममपादसन्निधिम् (to the edge of my foot), समागत्य =
 समेत्य (reached), प्रणामनिभृता = प्रणतिविनिता (in the act of bowing),
 कुलवधूरिव = कुलवधूनेव (like noble born girl), निश्चला = सुस्थिरा (motionless),
 सवृत्ता = जाता (stopped), मयापि (I too), अमात्यराक्षसस्य नामाङ्कितेति
 राक्षसनामो मंत्रिण नामचिह्निता (engraved with the name of minister
 Rakshasa), आर्यस्य पादमूल = भवत चरणनिष्ठ (to the root of Noble sir's
 foot), प्रापिता = समानीता (brought), तस्मादेव = इत्येवम् रूप (so like
 this), अस्या अहुलिमुद्राया (its), आगम = लामोदन्तम् (the story of
 accession)

चाणक्य — भद्र = कुशलम् (goodman), श्रुतम् = सर्वमाकर्णितम् (all is
 heard), अपसर = गच्छ (now retire), न चिरात् = अतिशीघ्रम् (before long),

चरः—यदाच आज्ञापयति । (जं अञ्जो आपवेत् ।)

(इति निष्क्रान्तः)

अस्य परिधनस्य = अस्य उद्योगस्य (of your this labour), अनुरूपम् = मर्यादा (befitting), फलम् = परिणामम् (reward), अधिगमिष्यसि = प्राप्त्यसि (will get).

चरः—यदाच आज्ञापयति = मवान् यत् शासन करोति (As your Honour commands), [इति निष्क्रान्तः = रङ्गस्थानात् वहिरगतः (exit)]

हिन्दी—बागवत—ऊनके बाद क्या हुआ

चरः—दुआ यह कि लगन पाँच गान का एक मल्लोना दुन्दर लटका, बिमली मौन बाल मुलन चक्का से उठकर था घर के एक परदे के पाछे से बाहर निकलने लगा कि इनने में घर के नीचे रहने वाला औरतों को—'हाय यह तो बाहर चला गया—बाहर चला गया' की बरबाद से नारी आनकायाँ आनाज उठने लगी। इसी बीच दरवाजे के बाच से एक सारी ने झोंका और बाहर निकलते हुए उस बच्चे को हाँकर अपनी सोनल बाँहों में समेट लिया। बच्चे को पकड़ने की बरबाद में बेचारी को प्रचण्ड डँगली से यह भगूतो जो स्वयं किसी पुरुष के नाम की बनी हुई है—दरवाजे की देहली पर आ गिरा और पकड़ार उठ्यो, फिर उन नहिवा की नाइन हो न हो पाना और वह सोपे मेरे चरणों के पास ऐसे आकर रुक गया जैसे कोई कुछ-कुछ मनने प्रेयवनों के चरणों में प्रणामावनत हो खड़ा रुक जाती है। मैंने ना इन पर अनास्य राक्षस का नाम सुना हुआ देख कर आन की सेवा में लावतस्थित किया। कार्य, यह है इस भगूतो की मेरे हाथ लगने की कहानी।

बागवत—युव अच्छा, तुन ही मेने नारी कहानी। अब तुन का मकते हो। तुम्हें ज्ञान हो इस कार्य का यथोचित पुरस्कार मिल जाना।

चरः—जो आज्ञा (बाहर चला जाता है)

English—Chanakya—What further ?

Spy—Then I saw a pleasing and lovely boy of five years old coming out from the back of curtain of a room of the house. But soon a frightful noise of women inside the same room as 'Ah, he has gone out, ah, he has gone out' came out ; At the same time that child was caught hold of by the delicate hand of a woman, whose face came before me in adequately from the half opened door. Then this signet ring which is made clearly in the size of a man's finger; fell down from her hand, due to the movement in her fingers to catch hold of the child, at the threshold and rebounding it came near by my feet, which she could not know, as if a newly married girl bowing to elders. This is the full story of how ring came to me.

Chanakya—Gentleman, I have heard all, you may go, you will soon get prize of the whole difficulties in its accession.

Spy—Only your Honour commands.

(Exit)

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव !

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय आज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स मसीभाजनं पत्र चोपानय ।

(शिष्यस्तथा करोति)

चाणक्यः—(पत्र गृहीत्वा स्वगतम्) किमत्र लिखामि । अनेन खलु लेखेन राक्षसो जेतव्यः ।

(प्रविश्य)

विमला

व्याख्या—चाणक्य —शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव (Sarangrava, O Sarangrava).

[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)].

शिष्य —आज्ञापय = निदेशं कुरु (What are your commands)

चाणक्य —वत्स (Boy), मसीभाजनम् = मस्याधारपात्रम् (ink stand), च = पुनः (and), पत्रम् (piece of paper), आनय = सन्निकटे स्थापय (get me)

[शिष्यस्तथा करोति = (Pupil does accordingly)]

चाणक्य —(पत्र गृहीत्वा स्वगतम् = taking the paper to himself) अत्र = अस्मिन् पत्रे (In this letter), किम् (what), लिखामि (I write), अनेन = लेखेन (by this letter), राक्षस = एतन्नामकः जेतव्यः (to be conquered).

[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)]

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गरव, शार्ङ्गरव ।

(रङ्गमञ्च पर प्रवेश कर)

शिष्य—आज्ञा हो आचार्य,

चाणक्य—दावात और दागज नहीं से ले आओ तो ।

शिष्य— (ऐसा ही करता है)

चाणक्य—(पत्र लेकर आप ही आप) अब क्या लिखा जाय ? क्योंकि इसी पत्र से राक्षस विजय करना है ।

(प्रवेश कर)

English—Chanakya—Sarangrava, O Sarangrava.

(Entering)

Pupil—Command me sir,

Chanakya—Boy get me an ink pot and a piece of paper.

(Pupil does accordingly)

Chanakya—(Holding the leaf to himself) What shall I write on it ? Rakshasa is indeed to be conquered by this writing.

(Entering)

प्रतिहारी—जयत्वार्यं । (जेदु अजो)

चाणक्यः—(सहपंमात्मगतम्) गृहीतो जयशब्दः । (प्रकाशम्) शोणोत्तरे, किमानमनप्रयोजनम् ।

प्रतिहारी—आर्यं देवश्चन्द्रग्री शोर्षे कमलनुकुलाकारमञ्जलिं निवेश्य आर्यं विज्ञापयति । इच्छाम्यार्येणभ्यनुज्ञातो देवस्य परमेश्वरस्य पारलोकिकं कर्तुम् । तेन च धारितपूर्वाणि आभरणानि ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयामीति । (अज देवो चन्द्रसिरी सीसे कमलशुडलाआरमञ्जलिं निवेशिज अज विण्णवेद । इच्छामि अज्जेण अब्भगुण्णादो देवस्स पच्चडीसरस्स पारलोइअ कादु तेण अ धारिट-पुब्बाड आहरणाइ बहणाण पटिज्जंमिस्सि ।)

चाणक्यः—(सहपंमात्मगतम्) साधु धृपल ममैव हृदयेन सह समन्त्रं सन्निष्टवानसि । (प्रकाशम्) शोणोत्तरे उच्यते नामस्मद्वचनादृपल—साधु यत्स, अभिज्ञः सत्त्वति लोकव्यवहाराणां तदनुशील्यतामात्मनोऽभिप्रायः । किन्तु परमेश्वरधृतपूर्वाणि गुणवन्ति भूषणानि गुणवद्भ्य एव प्रतिपादनीयानि । तदहं स्वयमेव परीक्षितगुणान् ब्राह्मणान् प्रेषयामीति ।

प्रतिहारी—यतदर्थं आज्ञापयति । (ज अजो आणवेदि ।)

(इति निष्क्रान्ता)

विमला

व्याख्या—प्रतिहारी—जयतु=सर्वोत्कर्षय वर्धताम् (Victory to you), आर्यः=श्रेष्ठः (Noble sir).

चाणक्य—[सहपंम्=हर्षेण प्रमदेन सह वर्धमानम् सहर्षम् (with joy), आत्मगतम्=सर्वैरश्राम्यम् (to himself)], गृहीतः=प्राप्तः (accepted), जयशब्दः=अनीप्सितविजयशब्दः (the word of victory), [प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (Aloud)], शोणोत्तरे=सम्बोधनविशेषः (Sonottara), किम् (what is), आगमनप्रयोजनम्=आगमनकारणम् (the object of your coming)

प्रतिहारी—आर्यं=नाम्न्य (Your Honour), देवश्चन्द्रग्री=राजा चन्द्रगुप्त (esteemed Chandragupta), शीर्षं=मस्तके (forehead), कमलनुकुलाकारमञ्जलिम्=पङ्कजकलिकाकृतमञ्जलिम् (folded hands like a lotus bud), निवेश्य=निधाय (having placed), विज्ञापयति=निवेदयति (begs to inform), आर्यणं=नाम्न्येन (by noble sir), अभ्यनुज्ञातं=आदिष्टं सन् (permitted), देवस्य=राज्ञ (of the king), परवतेश्वरस्य (Parvateswar), पारलोकिकम्=परलोकाभिमुख्यम् कृत श्राद्धादिकम् कर्म (obsequial rites), कर्तुम् इच्छामि=विधातुम् इच्छामि (I wish), तेन च=परवतेश्वरस्य च (by him), धारितपूर्वाणि=पूर्वधारितानि (previously worn), आभरणानि=भूषणानि (ornaments), ब्राह्मणानाम्=विप्राणाम् (to the Brahmanas), प्रतिपादयामीति=समर्पयामीति (to present)

चाणक्य — [सहर्षम् = सानन्दम् (with joy), आत्मगतम् = अनतिस्पष्टम् (to himself),] साधुवृषल = गुणवन् मौर्य (Bravo, Vrishala), ममैव = मदीयेनैव हृदयेन = मानसेन सह = सार्धम् (with my heart), सम्मन्त्र्य = मन्त्रयित्वा (having consulted), सन्दिष्टवानसि = आदिष्टवानसि (have sent this massage), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)], शोणोत्तरे = प्रतीहार्या सम्बोधनमिदम् (Sonottara), अस्मद् वचनात् = मम वचनानुसारेण (in my words), वृषल = चन्द्रगुप्त (Chandragupta) उच्यताम् = अभिधीयताम् (let him be informed), साधु वत्स = भद्र मौर्य (well done, my boy), अभिज्ञ खल्वसि = कुशलोल्लसि (well acquainted with), लोकावहारानाम् = लोकाचाराणाम् (the ways of the world), तत् = तस्मात् कारणात् (for this), आत्मन = स्वस्य (self), अभिप्राय = तात्पर्यम् (desire) अनुष्ठीयताम् = अनुरूपम् क्रियताम् (do as you like), किन्तु = परम् (but), पर्वतेश्वरेण = मलयकेतुपित्रा (by Parvateswer), धृतपूर्वाणि = पूर्वघटानि (formerly), गुणवन्ति बहुमूल्यानि, वा उत्कृष्टानि (the excellent), भूषणानि = अलङ्करणानि (ornaments), गुणवद्भ्य एव = गुणशालिभ्य एव (worthy), प्रतिपादनीयानि = समर्पणीयानि (to be given), तदहम् (so I), स्वयमेव = साक्षादेव (myself), परीक्षितगुणान् = सद्गुणशालिन (of tried merits), ब्राह्मणान् = विप्रान् (Brahmins), प्रेषयामि = प्रेषयिष्यामि (will send)

प्रतीहारी—यदार्थं आज्ञापयति = भवान् यत् आज्ञा करोति (As noble sir, commands), (Exit)

हिन्दी—प्रतीहारी—(प्रवेश कर) विजय हो महाराज !

चाणक्य—(प्रसन्न होकर मन ही मन) विजय यह तो सचमुच मिल गयी । (व्यक्त) शोणोत्तरे । कैसे आयी ?

प्रतिहारी—महाराज ! कमल मुकुल की तरह अपने हाथों की प्रणामाञ्जलि को सिर से लगाकर सम्राट चन्द्रगुप्त ने निवेदन किया है कि यदि आप की आज्ञा हो तो मृत महाराज परित्यक्त का पारलौकिक कार्य सम्पन्न करा दिया जाय तथा उनके व्यक्तिगत आभूषणों को गुणवत् ब्राह्मणों के बीच बाँट दिया जाय ।

चाणक्य—(मन ही मन प्रसन्न होकर) शान्त चन्द्रगुप्त ! लगता है जैसे मेरे हृदय की सलाह लेकर ही तुमने यह आदेश दिया है । (व्यक्त रूप से) शोणोत्तरे ! मेरी ओर से महाराज से कहना—वे लोकाचार से पूर्ण परिचित हैं । अब जैसा उचित समझें करें । किन्तु एक बात—पर्वतेश्वर के आभूषण कोई सामान्य आभूषण नहीं है, उनके इश्वरीय पाव भी ऐसे ही गुणी होना चाहिये । मैं ऐसे योग्य एवं परीक्षित ब्राह्मणों को भेज रहा हूँ

प्रतिहारी—आपकी जैसी आज्ञा महाराज ! (बाहर निकल जाती है) ।

English—Wardress—Let subjugate to your worth sir

Chankya—(With joy to himself) Really, subjugate is received (With a clear voice) Sonottara, what is the cause of your coming here ?

Wardress—Sir, having a fold of hands of lotus on the head of the king Chandragupta beg to say you thus—I shall wish to perform,

चाणक्यः—शार्ङ्गरव, उच्यन्तामस्मद्वचनाद्विधाप्रसुप्रभृतयस्त्रयो भ्रातरः
वृषलात् प्रतिगृह्यभरणानि भयङ्गिरह द्रष्टव्य इति ।

शिष्यः—तथेति (निःसन्त) ।

चाणक्य —उत्तरोऽयं लेखार्थः । पूर्व. न्यमस्तु (विचिन्त्य) आ ज्ञातम् ।
उपलब्धवानस्मि प्रणिधिभ्यो यथा तस्य म्लेच्छराजलोकस्य मध्याप्रधानतमा
पञ्च राजानः परया सुदृत्तया राक्षसमनुवर्तन्ते । ते यथा—

with your order, the 'Shradha' of the king Parvateswar and to
distribute his ornaments among worthy Barhmanas.

Chanakya—(With joy—to himself) Well, you have sent this
communication to me as it were, after consulting my heart (With
a clear voice) Sonottara, you will inform the king Chandragupta in
my name—"well done, my boy, you are, really, well acquainted
with the public affairs, you have brought good, Do as you like (but
remember a thing) jewelries of the late Paravateswar are not simple,
the acceptors must be in equal, I am sending you such tried and
worthy Brahmanas.

Wardress—As your order sir, (Exit)

त्रिमला

व्याख्या—चाणक्य—शार्ङ्गरव=हे शार्ङ्गरव (O Sharngrav), अस्मद्वचनात्=नम-
वचनानुसारेण (in this my name), विधावतुप्रभृतयः त्रयः, भ्रातरः=सौदरा (the
three brothers Vishwabasu and others), वृषलात्=चन्द्रगुप्तात् (from
vrishala), प्रतिगृह्य=आदाय वा स्वीकृत्य (having recieved), भरणानि=
आभूषणानि (ornaments), भवद्भिः=सालङ्कारैरित्यर्थः (all of you), अहम्=
चाणक्यः (I), द्रष्टव्य इति=अवलोकितव्य इति (should see)

शिष्य —तथा (so be it) [इति निष्क्रान्तः (Exit)]

चाणक्य—उत्तरोऽयम्, लेखार्थः=लेखनीयस्यैतदलंकारत्रयमन्तिमो विषयः (this
shall form the latter part of the letter), पूर्वः=प्रथमः (the first),
कथम्=कीदृशः (what shall be), अस्तु=स्यात् । [विचिन्त्य=musing],
आः ज्ञातम्=आः निश्चितम् (Ah ! I have it), उपलब्धवानस्मि=ज्ञातवान् भवामि
(have learnt), प्रणिधिभ्यः=गूढदूतेभ्यः (from spies), यथा तस्य, म्लेच्छराज-
लोकस्य = म्लेच्छाधिपसैन्यस्य (the followers of the Mlechcha prince) मध्यात्
(out of), प्रधानतमाः=अतिशयेन प्रधानाः (principals), पञ्चराजानः=पञ्चनृपाः
(five kings), परया=उत्कृष्टया, सुदृत्तया=बहुतया (with great affec-
tion), राक्षसमनुवर्तन्ते=मन्दासामनुसरन्ति (follow Rakhasa), ते यथा
(they are) —

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गरव, जाओ और नेरीओर से विश्वासु प्रकृति तानों मास्को से कहो
कि सत्रा चन्द्रगुप्त से आभूषण उपहार में लोकार कर मुझ में भेंट करनी है ।

मोलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिः सिंहनादो नृसिंहः

काश्मीरः पुष्कराक्षः क्षत्रिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुपेणः ।

मेघारयः पञ्चमोऽस्मिन् पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजो

नामान्येषां लिखामि ध्रुवमहमधुना चित्रगुप्तः प्रमार्ष्टु ॥ २० ॥

(विचिन्त्य) अथवा न लिखामि पूर्वमनभिव्यक्तमेवास्ताम् नाश्रयेन
लिखित्वा) शार्ङ्गरयः ।

शिष्य—जैसी भाषा (बला जाता है) ।

षाणक्य—यह बात तो पत्र के अन्तिम भाग में आयेगी । प्रारम्भ क्या हो ? (कुछ सोच कर)
हौं, ध्यान में आया—गुप्तचरों के द्वारा मुझ मालूम हो चुका है कि म्लेच्छाधिपति (मलयकेतु)
के अनुयायी पाँच विशिष्ट राजा लोग राक्षस के बड़े मक्त अनुगामी बन रहे हैं । वे हैं—

English—Chanakya—Sarangraha, inform Vishwabasu in my name
and his three brothers to see me after accepting the ornaments as
gift from Chandragupta.

Pupil—Very good, sir (Exit)

Chanakya—This matter (of ornaments) shall be written in
the latter portion of the letter, but what should be the beginning ?
(Meditation) Now it is clear—I am informed by spies that five kings
among the friends of Mlechcha king (Malayaketu) are following
him with great courage They are —

विमला

अन्यथ—कौलूत, चित्रवर्मा, नृसिंह, मलयनरपति, सिंहनाद, काश्मीर, पुष्कराक्ष,
क्षत्रिपुमहिमा, सैन्धव, सिन्धुपेण, पृथुतुरगबल, पारसीकाधिराज, मेघारय,
पञ्चम, अस्मिन्, अहम्, अधुना, नामानि, लिखामि, चित्रगुप्त, प्रमार्ष्टु ।

व्याख्या—कौलूत = कुलुताधिपति चित्रवर्मा (King of the Kulut), मलयनर-
पति = मलयदेशाधिपति सिंहनादो नाम (the lion like king of Malaya),
काश्मीर, पुष्कराक्ष = काश्मीरदेशाधिप पुष्कराक्षो नाम (Pushkarkasha of
Kashmir), क्षत्रिपुमहिमा = क्षत्रुन्दम (has eclipsed the glory of his enemies),
सैन्धव = सिन्धुदेशाधिपति (king of Sindha), सिन्धुपेण = (Sindhukhen),
पृथुतुरगबल = प्रभूत अश्वसैन्य (with a large force of cavalry), पारसीका-
नाम् = वनायुदेशोद्भवनानाम्, अधिराज = अधिपति (the Persian king), मेघारयो
नाम (named Magha), एते पक्षराजान (the fifth of the party), एतपा
राजानम्, अस्मिन् = मेदयत्रे, अहम्, अधुना = साम्प्रतम्, ध्रुवम् = निश्चितम्, लिखामि (I
shall surely now write the names of these), चित्रगुप्त = चममन्त्री
(Chitrugupta), प्रमार्ष्टु = घालयतु (let Chitrugupta bolt them out), अर्थात्
एतत्पत्रं महीयलेखेनैव तेषां मरणं भविष्यति ॥ २० ॥

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय, आज्ञापय ।

चाणक्यः—वत्स. श्रोत्रियाश्चराणि प्रयत्नलिखितान्यपि नियतमस्फुटानि भवन्ति । तदुच्यतामस्मद्वचनात्सिद्धार्यकं । एभिरेक्षरैः केनापि कस्यापि स्वयं वाच्यमिति अदत्तवाह्यनामान लेख्यं शक्यं दासेन लेखयित्वा मामुपतिष्ठस्व । न चाक्षेप्यमस्मन् चाणक्यो लेखयतीति ।

[विचिन्त्य = (thinking)], अथवा न लिखानि (or rather, I will not write them), पूर्वम् = प्राक् (first), अनभिच्यक्तम् = अनतिस्पष्टम् (vague), एवास्ताम् = तिष्ठन् (let be), नाक्षेप्येन = नदोचितव्यापारविशेषेण (gesticulating), लिखित्वा = वर्णविन्यास कृत्वा (writing), सार्ङ्गरव (Sarngarava).

हिन्दी—कुटुबराज, चित्रवर्मा, मलयागिरि (नरकेनरी) सिन्धुनाद, काश्मीर का पुष्कराक्ष जो अपने शत्रुओं को पूर्णतः विनष्ट कर चुका है। सिन्धु का मिन्धुपेा और पाँचवा कुन्तवारों से मरुसिंह पारसीओं का राजा मेघ—इन पाँच नामों को मैं लिख रहा हूँ। अब तो यन्त्रराज के छवक चित्रगुप्त का सामर्थ्य हो ता ब आकर रहे मित्र दें ॥ २० ॥

(फिर कुछ सोचकर) अथवा—नहीं लिखना हूँ—प्रथम भाग कुछ-कुछ अस्पष्ट ही रहे तो अच्छा है। (नागकार बह से कुछ लिख कर) ओ सार्ङ्गरव ।

English—Chitravarma—the king of Kulut, the lion like king of Malaya—Singhnad, Puskaraksha of Kashmir, (who has destroyed his foes) Sindhusen of Sindhu and the fifth king Megha (with an ample cavalry force) of parsiks. I am writing five names. Let Chitrugupta blot out these names. 20

(Thinking) Or, I will not write the name. Let the first part remain obscure (Acting writing) Sarngarava.

टिप्पणी—इस श्लोक में पाञ्चाला राति है और ओव शुभ है। इनका रत्न वीर है। इनका वृत्त सन्तरा है। छद्मा पद छुट्टा जा चुका है। चित्रगुप्त द्वारा लिखित प्रमाणों के कारण मरन नूचि होटा है। अब हम श्लोक में ज्योपति अलङ्कार है। नाहितनदर्पण में इनका छद्मा है—‘दण्डापुष्पिक्यान्वार्थाजामोऽप्यपिचिरिष्यते ।’

विमला

व्याख्या—[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)].

शिष्यः—उपाध्याय = गुरुदेव (preceptor), आज्ञापय = आज्ञा कुरु (command me)

चाणक्यः—वत्स = पुत्र (My son), श्रोत्रियस्य = वेदपाठिनः (of a Shrotriya Brahman), अक्षराणि = लिखित वर्णः (the alphabets), प्रयत्नलिखितान्यपि = प्रयत्नविन्यस्तान्यपि (even written with care), निश्चयम् = निश्चितम् (must certainly), अस्फुटानि = अनतिस्पष्टानि (illegible), भवन्ति = जायन्ते (become),

शिष्य —तथा (इति निष्क्रान्तः) ।

चाणक्य—(स्वागतम्) हन्त जितो मलयकेतु ।

(प्रविश्य लेखहस्त)

सिद्धार्थक —जयत्वार्य । आर्य, अय स शकटदासेन लिखितो लेख ।

(जेतु अजो । अज अज सो सभइदासेण लिहिदो लेहो ।)

सत् = तस्मात् (so), अस्मद् वचनात् = मम वचनानुसारेण (in my name), सिद्धार्थक उच्यताम् = सिद्धार्थक अभिधीयताम् (Let Sidharthaka be told) एभिरेवै = एते (in these words), केनापि = जनेन कस्यापि सविधे (by some one to some one else in person), स्वयं वाच्यम् = साक्षादभिधेयम्, अदत्तम् = अलिखितम् (without having written), बाह्ये = पत्रेपरि, नाम = सज्ञा यस्मिन् तम् (any name on the out side) लेखम् = पत्रम् (letter) शकटदासेन (by Shakatdass), लेखयित्वा मामुपतिष्ठस्व = भस्मसमीपवर्तीभव (then come to me) नचाख्येयम् = नहि वक्ष्यम् (should not tell him), भस्मै = शकटदासाय (For Shakatdass), चाणक्यो लेखयतीति (Chanakya desires him to write)

हिन्दी—

(प्रवेश करके)

शिष्य—उपाध्याय, आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—इत्स, प्रवेशपूर्वक लिखे गये श्री श्रीरिष ब्राह्मण के हाथ के अक्षर निम्नित रूप से अक्षर हुआ करते हैं । तो मेरी ओर से सिद्धार्थक को कहना—पता नहीं यह पत्र किसका है ? और किसके नाम है ? किन्तु है व्यक्तिगत । देखे लख को शकटदास से लिखवाने मेरे पास उपस्थित होओ । और हाँ, उसे यह भी न मालूम होने पाये कि यह सब चाणक्य लिखवा रहा है ।

English—

(Entering)

Pupil—Order, Sir

Chanakya—My boy, the handwriting of a shrotriya, after all being written with care, is always illegible. So let Sidharthaka be known in my these words—'Meet me after having a personal letter from Shakatdass with the name of the sender and addressee. Further he should not be known that I am getting this letter to be written

टिप्पणी—स्वयं वाच्यम्—पत्र का अभिधेयार्थ लेखक या वाचक ही जानता है । प्रयत्न लिखितानि—पुराने समय में श्रीरिष विद्वाना को लिखने में अन्धास की कभी के कारण अने बड़ी त्राई होती थी ।

विमला

व्याख्या—शिष्य —तथा=भवदाज्ञानुसारेण करिष्यामि (As you command)

इति निष्क्रान्त = रक्षस्थानात् निर्गत (Exit)

चाणक्य —[स्वागतम् = सर्वैरन्नापम् (To himself), हन्त=हृद हर्षसूचकमभ्ययम् (Ha), जित (is subdued), मलयकेतु = पर्वतचरसुत (Malayaketu)

प्रविश्य, लेखहस्त=करे पत्रमादाय (letter in hand)

सिद्धार्थ —जयतु=सर्वोत्कर्षणवर्द्धताम् (Let conquer), आर्य = पूज्योभवान्

चाणक्यः—(गृहीत्वा) अहो दर्शनीयान्यक्षराणि । (अनुवाक्य) भद्र, अनया मुद्रया मुद्रयेनम् ।

सिद्धार्थकः—(तथा कृत्वा) आर्य, अर्य मुद्रितो लेख । किमपरमनुष्ठीयताम् । (अत्र अत्र मुद्रितो लेखो किं अवरं अनुष्ठीयताम् ।)

चाणक्यः—भद्र, कस्मिंश्चिद्गतजनानुष्ठेये कर्मणि त्वां व्यापारयितुमिच्छामि ।

(Noble sir, आर्य=मान्य (your Honour), शकटदासेनस्तत्राद्या कावस्थेन (Shaktadasa by name), अयम्=प्रत्यक्षदृश्यमानः (Here is), स=भवदुक्तः, लिखितो लेख=पत्रम् (the letter written))

गतरव—[गृहीत्वा=पत्रमादाय (Taking the letter)], अहो=आश्चर्यम् (oh), दर्शनीयानि=मनोज्ञानि (how beautiful), अक्षराणि=वर्णाः सन्ति (is the handwriting), [अनुवाक्य=वक्षिण (Having read)] भद्र=साधो (gentleman), अनया मुद्रया=राजसनामाद्रिताङ्गुलिमुद्रया (with this signet-ring), एनम् मुद्रय=पत्रम् अद्रय (seal it)

हिन्दी—निम्न—ऐसी जाह (ऐसा कहकर निकल गया)

चाणक्य—(अपने आप) हर्ष की बात है, मन्त्रकेतु जीन दिया गया ।

(लेख हाथ में लिए प्रवेश करके)

सिद्धार्थक—आर्य, जवो बर्ने । आर्य शकटदास द्वारा लिखित यह पत्र है ।

चाणक्य—(कहकर) अहा, पत्र के अष्ट देहने कायक है (पढ़कर) भद्र हा अगुठो से इस पत्र पर मुहर लगा दो ।

English—Pupil—As your Noble command sir, (Exit).

Chanakya—(Thinking to himself) Ha, Malayaketu is subjugated. (Enters taking a letter in his hand)

Siddharthaka—Let noble sir, victory. It is the letter written by Shaktadasa.

Chanakya—(Taking in his hand) What a fine handwriting ! (Reading silently) O boy ; seal it with this stamp.

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक—[तथा कृत्वा=मुद्रयित्वा (Doing so), आर्य=मान्य (Noble sir), अयम् मुद्रितो लेख=अयमद्रितः पत्रम् (Here is the letter with seal), अपरम्=अन्यत् (other), किम् (what), अनुष्ठीयताम्=क्रियताम् (is to be done).

गतरव—भद्र=साधो (gentleman), कस्मिंश्चिद्=कश्चित् (in a certain work), गतजनानुष्ठेये=सुदृज्जन कर्तव्यकार्ये (has to be done by a trusted person), त्वाम्=अगम् (to you), व्यापारयितुम्=नियोजयितुम् (to employ), इच्छामि=कामये (I wish).

सिद्धार्थक — सहर्षम्) आर्य, अनुगृहीतोऽस्मि । आज्ञापयत्वार्यं किमनेन दासजनेनार्यस्यानुप्रातव्यम् । (अज्ज अणुगिहिदोहि आणवेदु अज्जो कि इमिणा दासजणेण अज्जस्स अणुचिद्धिदब्ब ।)

चाणक्य — प्रथमं तावद्व्यस्थानं गत्वा घातका सरोपदक्षिणाक्षिसङ्कोचसङ्गा ग्राहयितव्या । ततस्तेषु गृहीतसङ्क्षेपे भयापदेशादितस्ततः प्रदुतेषु शकटदासो व्यध्यस्थानादपनीय राक्षसं प्रापयितव्यम् । तस्माच्च सुहृत्प्राणपरितुष्टात्पारितोषिकं प्राह्यम् । राक्षस एव कचित्कालं सेवितव्यः । ततः प्रत्यासन्नेषु परेषु प्रयोजनमिदमनुष्ठेयम् । (कर्णे एवमेवम् ।)

सिद्धार्थक — [सहर्षम्=सानन्दम् (with joy)], आर्यं=मान्य (Noble sir), अनुगृहीतोऽस्मि=अनुकम्पितोऽस्मि (I am favoured) । आज्ञापयत्वार्यं=भवान् निदेशम् करोतु (Let noble sir, Command) अनेन दासजनेन=अनुचरेण (by this slave), आर्यस्य=पूज्यस्य (of your sir), किमनुष्ठातव्यम्=किम् विधातव्यम् (what has to be done)

हिन्दी—सिद्धार्थक—(बैसा करके) आर्य यह पत्र चिह्नित हो गया । दूसरा कौन सा काम किया जाय ?

चाणक्य—भद्र किसी विषयनोय व्यक्ति के द्वारा करने योग्य किसी कार्य में तुम्हें लगाना चाहता हूँ ।

सिद्धार्थक—(प्रसन्नतापूर्वक) अनुगृहात हूँ । आर्य आज्ञा दें आपके इस दास को क्या करना चाहिये ?

English—*Siddhorthaka*—(Doing so) Here it is the sealed letter Arya Command more

Chanakya—There is a work which, I think should be entrusted to a faithful person for which I want to engage you

Siddhorthaka—(Happily) It is your good will for me sir, command this slave for the work to be done

विमला

व्याख्या—चाणक्य — प्रथमम्=पूर्वम् (In the first), तावत्=तावच्छब्दो वाक्यालङ्कारे, व्यध्यस्थानम्=प्राणदण्डप्रदेशम् (the place of execution), गत्वा=प्राप्य (you go to), घातका=हननशीला चाण्डाला (the executioners), सरोपदक्षिणाक्षिसङ्कोचसङ्गा=सङ्कोपदक्षिणाक्षिसङ्कोचसङ्केतम् (with the angry contraction of the right eye), ग्राहयितव्या=गोचयितव्या (understand), ततः=तदनन्तरम् (after that), गृहीतसङ्क्षेपे=ज्ञातसङ्क्षेपे (having understand the sign), तेषु=घातकेषु (executioners), भयापदेशात्=भयस्याजात् (under the pretence of fright), इतस्ततः=चतुर्दिक्षु (hither and thither) प्रदुतेषु=पलायितेषु (fled), शकटदास (Shakatdasa), व्यध्यस्थानात्=प्राणदण्डभूमे

सिद्धार्यक — यदार्थं आज्ञापयति । (ज अजो आणवेदि ।)

चाणक्य — शार्ङ्गरेव शार्ङ्गरेव ।

(प्रविश्य)

शिष्य — उपाध्याय, आज्ञापय

चाणक्य — उच्यतामस्मद्वचनात् कालपाशिको दण्डपाशिकश्च यथा वृपल

(from the place of execution), अपनीय = हटाना (has to be removed), राक्षस प्रापयितव्य = राक्षसम् नेतव्य (taken to Rakshasa), सुहृत्प्राणपरितुष्टात् = (being pleased at your having saved the life of his friend), तस्मात्, पारितोषिकम् प्राहम् = हर्षतुचकद्रव्यादिदानम्, प्राहम् (Reward has to be accepted from him) राक्षस एव = नक्षत्रमाय एव (Rakshasa himself), कश्चित् कालम् = कियत् समय (for some time), सेवितव्य = आश्रितव्य (should then serve), ततः = तत्पश्चात् (when), प्रपासच्छ्रेणुः = समीपवर्तिणु (near), परेषु = शत्रुषु (enemies), इदम् प्रयोजनम् = इदम् कार्यम् (this business), अनुष्ठयम् = कर्त्तव्यम् (should execute), [कर्ण एवमेवम् (whispers in to his ears)],

हिन्दी — चाणक्य — सर्वप्रथम शूरी के स्थान पर जाकर क्रोध ने अपनी दाह बाख को दवान हुए पहल बाधकों को अपना सकेत सनभा देना । जब वे तुम्हारे सकेत सनस जाय और नागों बर के नार हवर-उपर भाग खड हों तब शकटदास को वहाँ से बचाकर राक्षस के वहाँ पहुँचा देना । मित्र के प्राणों को रक्षा से प्रसन्न राक्षस तुम्हें अवश्य ही कुछ पुरस्कार देगा — उसे स्वीकृत कर लना, और कुछ दिन इस प्रकार सेवा सुधूषा मा करते रहना । फिर जब छत्र तुम्हारा बड़ी तरह नज्दका बन जाय तब ऐसा करना (कान ने ऐसे-ऐसे) ।

English — Charak) — At first go to the execution-place and make all executioners understand the sign of your contracted right eye due to anger and as they will understand your sign and begin to be dispersed under fear, take Sakatdasa to Rakshasa safely. Accept the award from Rakshasa for the overjoy at saving his friend's life and serve him for a few days in the same manner. As you understand your enemies closer to you perform this work (whispers in his ears)

मिमला

व्याख्या — सिद्धार्यक — यदार्थं आज्ञापयति = (As Noble sir Command)

चाणक्य — शार्ङ्गरेव, शार्ङ्गरेव, (Samgarava O, Samgarava)

[प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा (Entering)]

शिष्य — उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), आज्ञापय = आदेशम् देहि (Command me).

चाणक्य — उच्यताम् = कथ्यताम् (say), अस्मत् वचनात् = मद् वचनानुसारेण (in

समाज्ञापयति य एष क्षपणको जीवसिद्धिर्नाम राक्षसप्रयुक्तो विषकन्यया पर्वतकं घातितवान् स एनमेव दोषं प्रख्याप्य सनिकारं नगरान्निर्वास्यतामिति ।

शिष्यः—तथा (इति परिक्रम्य)

चाणक्यः—वत्स, तिष्ठ तिष्ठ । योऽयमपरः कायस्थः शकटदासो नाम राक्षसप्रयुक्तो नित्यमस्मच्छरीरमभिद्रोग्धुमिह प्रयतते स चाप्येन दोषं प्रख्याप्य शूलमारोप्यतां गृहजनश्चास्य बन्धनागारं प्रवेश्यतामिति ।

my name), कालपाशिको दण्डपाशिकश्च = (Kalpasika and Dandpasika), यथा (that), चण्डगुप्तः = चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), समाज्ञापयति = निदेशं करोति (gives the orders), य एष क्षपणकः = बौद्धसन्यासी (He, the mendicant), जीवसिद्धिर्नाम = तदाश्रयः चाणक्यप्रतिनिधिः (known as Jivasidhi), राक्षसप्रयुक्तः = राक्षसनियुक्तः (employed by Rakshasa), विषकन्यया (with a poison-girl), पर्वतकम् = तदाश्रयराजानम् (The king Parvateswar), घातितवान् = विनाशितवान् (had killed), सः = भूसौ (He), एनमेव, दोषम् = अपवादम् (crime), प्रख्याप्य = संकीर्त्य (after proclaiming), सनिकारम् = सतिरस्कारम् (with indignities), नगरात् (from the city), निर्वास्यताम् = निःसार्यताम् (be expelled).

शिष्यः—तथा = यथाज्ञापयतीत्यादि (so be it), [इति परिक्रम्य (goes round the stage)]

हिन्दी—सिद्धार्थक—आपकी जैसी आज्ञा आचार्य ।

चाणक्य—शाह्रारव, ओ शाह्रारव । (प्रवेश करके)

शिष्य—आचार्य आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—मेरी ओर से कालपाशिक और दण्डपाशिक नामक दोनों जहादों को कहा जाय कि चन्द्रगुप्त आज्ञा देते हैं कि राक्षस के द्वारा नियुक्त जिस जीवसिद्धिनामक बौद्ध सन्यासी ने विषकन्या के द्वारा पर्वतक को मार डाला था, वह इस अपराध को घोषित करके तिरस्कारपूर्वक इस नगर से निकाल दिया जाय ।

शिष्य—जो आज्ञा (ऐसा कह कर घूमकर) ।

English—Pupil—As your noble Command; Sir, (Exit).

Chanakya—Sarnagarava, Sarnagarava ! (Entering)

Pupil—Order, sir.

Chanakya—Say Kalpasik and Dandpasik in my name, that Chandragupta has ordered—Drive that mendicant Jivasidhi out of the city ignominiously announcing publicly his crime that he had killed Pervateswar by a poison girl being fomented by Rakshasa.

Pupil—So be it (starts to proceed)

विमला

व्याख्या—चाणक्य—वत्स (my boy), तिष्ठ तिष्ठ = भास्ताम् ? (wait), योऽयमपरः = द्वितीयः (that other man), शकटदासो नाम = शकटभिधानः (Shakatdasa

शिष्यः—तथा (इति निष्क्रान्तः)

बाणन्यः—(चिन्ता नाटयित्वा आत्मगतम्) अपि नाम दुरात्मा राक्षसो गृहीत ।

सिदार्यकः—आर्य गृहीत । (अत्र गृहीतो)

बाणन्यः—(सहर्षनात्मगतम्) हन्त गृहीतो राक्षसः (प्रक्षारम्) भद्र, कोऽयं गृहीतः ?

by name), कायस्थः=चित्रगुरुमजानीयः (a Kayastha), निष्पन्=प्रतिदिनम् (everyday), अस्मद्भारिन्=मत्कारमिव (our person), अभिद्रोशुन्=विनाशयितुम् (to harm), दह, प्रयत्ने=उद्योग करोति (attempts), स चापि=सकट-
दामार्जरी (Sakatdasa also), एव दोषन्=अवबाधम् (his guilt), प्रख्याप्य=प्रकृत्य (the publication of this), गृह्यन्=जह्यन्, आरोप्यताम्=स्थाप्यताम् (should also be implied), गृहजनश्चास्य=पुनः सकटदामस्य कलत्रादिकम् (his household), बन्धनागारम्=कारागृहं, प्रवेरयताम्=निविष्यताम् (Put in to prison).

शिष्यः—तथा=यथाज्ञापयति तथा करोमि (So be it), [इति निष्क्रान्तः (Exit)].

हिन्दी—बाणन्य—वाह, देखो ! राक्षस के द्वारा निजुत सकटदाम नामका यह कान्हा या हनेजा इनारे द्वारा से ग्रेह करने के लिए इस नगरी में प्रचलित है, वह भी इसी दोष का प्रयोग करके कलत्र पर क्या दिया जान और इसके परिवार के व्यक्तियों को भी बन्धन में डाल दिये जान ।

शिष्य—ओ भद्रा (ऐसा कह कर निकल गया) ।

English—*Chankya*—Wait for some time my boy. And this other man Sakatdasa an unfortunate Kayastha, who always tries to harm our life being fomented by Rakshasa, is to be executed after announcing his crime publicly and imprison all his family members.

Pupil—As your noble Command; sir (Exit)

टिप्पणी—दम्पत्य=पति + त्वं ते + चङि + त्वि + लृट् । आरोपयन् = आ + लृट् + त्वि + लोट् + त्वन् नि + क्त । 'अस्मद्भारम्' से कन्धस्य का भाव होता है । यह 'अभिद्रोशुन्' किंवा का कर्म है । 'कुशुद्रास्तुष्टयः' कर्म से इसका रूपसिद्धि है । अग्नि वनमर्क दुह वात से उत्पन्न दम्पन का यह रूप है । प्रवेरयन् = प्र + वि + त्वि + लोट् + त्वन् कर्म से निष्पन्न रूप है । बन्धनागारम् = बा + लृट् + त्वि + लोट् + त्वन् कर्म से प्रयोग ।

निमला

व्याख्या—बाणन्य—[चिन्ताम् = स्मरणम् (anxiety), नाटयति = करोति (acting), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself), दुरात्मा = दुष्टात्मा ('wicked'), राक्षसः (Rakshasa), अपिनाम गृहीतः = वसीमृतो जवेदिति (can be taken).

सिदार्यकः—आर्य=नाम्न्य (Noble sir), गृहीतः=स्वीकृतः मया इति (taken),

बाणन्यः—[सहर्षम् = सानन्दम् (joyfully), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself), हन्त (Oh), गृहीतः = वसीकृतः (is taken), राक्षसः (Rakshasa),

सिद्धार्थक.—गृहीत आर्यसन्देश ! तस्माद् गमिष्यामि कार्यसिद्धयै ।
(गिहीदो अजसन्देसो ता गमिस्स कज्जसिद्धोए ।

चाणक्य.—(सागुलिमुद्र लेखनमप्यित्वा) गम्यताम् । अस्तु ते कार्यसिद्धि ।
सिद्धार्थक.—तथा (तह) (इति निष्क्रान्तः ।)

(प्रविश्य)

शिष्य —उपाध्यायऽकालपाशिको दण्डपाशिकश्च उपाध्याय विज्ञापयतः ।
इदमनुष्ठीयते देवस्य चन्द्रगुप्तस्य शासनमिति ।

चाणक्यः—शोभनम् । वत्स, मणिकारश्रेष्ठिन चन्दनदासमिदानी द्रष्टु-
मिच्छामि ।

शिष्य.—तथा (इति निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इत इतः श्रेष्ठिन् ।

[प्रकाशम् (Aloud)], भद्र = साधा (gentleman), कोयम् गृहीत = को वशीकृत
इति (what is this that is taken)

सिद्धार्थक —गृहीत = (is taken), आर्यसन्देश = भवत वाचिकम् (your
Honour's instructions), तस्मात् कार्यस्य = भग्नोद्यस्य (therefore of the
work), सिद्धयै = निष्पत्त्यै (for the success), गमिष्यामि = यास्यामि (I will go)

चाणक्य —[सागुलिमुद्र लेखनपत्रम् (Letter with the signet ring), अर्पयित्वा =
समर्प्य (delivering)], गम्यताम् = प्रस्थायताम् (you may go), त = तव
(your), कार्यसिद्धि = अभ्योदयलभ. (obtain success in your work), अस्तु =
भवतु (May)

सिद्धार्थक —तथेति (May it be so) (Exit)

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (Entering)]

शिष्य —उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), कालपाशिको दण्डपाशिकाश्च इमौ
वृत्तौ (Kalpasika and Dandpasika), उपाध्यायम् = आचार्यम् (to your
Honour), विज्ञापयत = प्रार्थयत (beg to request), देवस्य = राज्ञ (of the
king), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य (Chandragupta), शासनम् = आज्ञाम् (the
command), इदमनुष्ठीयते = क्रियते (they will execute)

चाणक्य —शोभनम् = युक्तम् (very well), वत्स = शार्ङ्गरव (my son), मणि-
कारश्रेष्ठिनम् = वैश्यजातीयम् (The head jeweller), चन्दनदासम् = राजसमुद्भूतम्
(Chandandasa), इदानीम् = सम्प्रति (Now), द्रष्टुम् = अवलोकितुम् (to see),
इच्छामि=वान्छामि (I wish)

शिष्य —तथेति (well), [निष्क्रम्य = इच्छाशालान वहिर्निर्गम्य (Exit), चन्दन-
दासेन सह (with Chandandas), प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा (reenter)], इत इत
श्रेष्ठिन् (This way, this way O Banker)

हिन्दी—चाणक्य—(चिन्ता मुद्र में अपने आर) क्या दुरात्मा राक्षस पकड़ा जायेगा ?
सिद्धार्थक—आर्य पकड़ लिया गया है । (अर्थात् ग्रहण कर लिया गया)

चाणक्य—(प्रसन्नमुख अशने जाय) हर्ष की बात है राजस पकड़ लिया गया (व्यक्त)
भद्र ! यह कौन पकड़ लिया गया ?

चन्दनदासः—(स्वगतम्)

चाणक्येनारुणेन सहसा शब्दायितस्यापि जनस्य ।
निर्दोषस्यापि शङ्का किं पुनर्मम जातदोषस्य ॥ २१ ॥
(चाणक्यमि अवरुणे सहसा सहापिदस्स वि जणस्स ।
णिदोसस्स वि सङ्का किं उण मह जादोसस्स ॥)

सिद्धार्यक—कार्ये का संदेश इदमङ्गन कर लया गया । तो जब कार्य की छिद्रि क छिद्रि जाता है ।

चाणक्य—(मुद्राङ्गन पत्र को हाथ में दृष्ट हुए) मुद्धार कर का छिद्रि हो ।

सिद्धार्यक—जो भाडा (देखा कह कर चला गया) ।

(प्रवेश करके)

शिष्य—उनाश्याय, काठपाठिक एवं दण्डपाठिक आचार्य से निवेदन करत है कि नरा राज चन्द्रगुप्त की आज्ञा आज्ञा पालन को जा रहा है ।

चाणक्य—बहुत अच्छा । बल, इस मनन सेठ चन्दनदास को देखना चाहता है ।

शिष्य—जो भाडा (निकट कर चन्दनदास के साथ प्रवेश करके) सेठ का दशर से, दशर से काशर ।

English—*Chanakya*—(Showing anxious-to himself), still, can that wicked Rakshasa be subjugated.

Sidharthaka—taken sir

Chanakya—Very well, Rakshasa is taken (speaking obviously) Who is taken my boy ?

Sidharthaka—I meant to say that your command was obvious to me and then I proceed to perform my mission

Chanakya—(giving the letter with the signet-ring) you may go. May you get success in your mission.

Sidharthaka—May it be so (Exit)

Pupil—(Entering) Sir, Kalpasika and Dandpasika beg to say that they will immediately perform the order of His Highness Chandragupta.

Chanakya—Thank you my boy, I want to see the jeweller Chandandas.

Pupil—As you command sir (Entering after sometime with Chandandas) this way, this way O merchant

निमला

चन्दनदास —[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)]

अन्यथा—अवरुणे, चाणक्यन, सहसा, शब्दायितस्य, निर्दोषस्य, अपि, जनस्य, शङ्का, जातदोषस्य, नम, पुनः, किम् ॥ २१ ॥

तस्माद्भणिता मया धनसेनप्रमुखा निजनिवेशसंस्थिताः कदापि चाणक्य-
हतको गेहं मे विचाययति । तस्मादवहिता निर्वहत भर्तुरमात्यराक्षसस्य
गृहजनम् । मम तावद् यद्भवति तद्भवत्विति । (ता भणिता मया धनसेनप्रमुखा
निजनिवेशसंस्थिताः कदापि चाणक्यकहदओ गेहं मे विचिण्णावेदि । ता अवहिता
निव्वहेह भट्टिणो अमच्चरक्ससस्स घरअण । मह दाव जं होदि त होदु त्ति ।)

व्याख्या—अकरुणेन=करुणाशून्येन (being heartless), चाणक्येन=कौटिल्येन
(Chanakya), सहसा=छटिति (accidentally), शब्दायितस्य=आहूतस्य
(called), निर्दोषस्य=निरपराधस्य (though innocent), अपि शब्दोऽत्र शब्दार्थ
ग्रहणार्थम्, जनस्य=लोकस्य (a person), शङ्का=सन्देहः (entertains fear),
जातदोषस्य=उत्पन्नापराधस्य (have committed a crime), मम=चन्दनदासस्य
(I who), पुनः=मुहुः, किम्=किम् वक्तव्यम् (How much more). ॥ २१ ॥

हिन्दी—चन्दनदास—, मन ही मन)

निर्दोष चाणक्य के द्वारा एकाएक बुलाये जाने पर किसी निरपराध व्यक्ति का भी दिल
शक्ति हो उठेगा और मैं तो फिर एक अपराधी व्यक्ति ही हूँ ॥ २१ ॥

English—Chandandas—(to himself).

Even the heart of an innocent person becomes afraid of untimely
call from Chanakya due to his heartlessness, what Can I say of my-
self being a Criminal. 21.

टिप्पणी—जातदोषस्य=जात उत्पन्न, दोष अपराधः यस्मिन् असौ जातदोष कृतापराधः
इत्यर्थः । अर्थात् राक्षस के परिवार को अपने घर में छिपा कर रखने के कारण चन्दनदास अपने
को अपराधी समझ रहा है । शब्दायितस्य—शब्द कारितः इति शब्द + क्यङ् + भिच् + क्त,
कर्म में प्रयुक्त । इस श्लोक में अर्थापत्ति अलंकार है । इसमें दण्डापूपिकान्याय से अन्य अर्थ का
ज्ञान होता है । अर्थापत्ति प्रमाण में अनुपपन्नमान अर्थ को देखकर उसके उपपादक अर्थ की कल्पना
की गई है । सरस्वतीकण्ठाभरण में लिखा है—

“प्रत्यक्षादिप्रतीतोऽर्थो यस्तथा नोपपद्यते । अर्थान्तरस्य गमयति अर्थापत्तिं वदन्ति-
ताम् ॥” इसी प्रकार इसमें आर्वा छन्द है । लक्षण यथा—

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि । अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ।

विमला

व्याख्या—तस्मात्=कारणात् (Therefore), मया भणिता=मया कथिता (I have
warned), धनसेनप्रमुखा.=धनसेनप्रभृतयः (Dhansena and others), निज-
निवेशसंस्थिताः=स्वशासनविद्यमानाः (living in my house), कदापि=कस्मिंश्चिदपि
काले (any moment), चाणक्यहतकः (wretched Chanakya), गेहम्=भवनम्
(house), विचिनोति=परीक्षते (searches), तस्मात्=कारणात् (७०), भर्तुः=
स्वामिनः (our master), अमात्यराक्षसस्य (Minister Rakshasa), गृहजनम्=
कलत्रादिकम् (member of the household), अवहिताः=संरक्षिताः समतः (with
care), निर्वहत=निष्कासयत (remove), मम तावद्, यद्भवति=यदस्ति, तद्भवतु=
तदस्तिवाच्यं (Let come what may unto me).

शिष्यः—भोः श्रेष्ठिन्, इत इतः ।

चन्दनदासः—अयमागच्छामि । (अग्रमागच्छामि ।) (उभौ परिक्रामतः) ।

शिष्यः—(उपमृत्य) उपाध्याय, अय श्रेष्ठो चन्दनदासः ।

चन्दनदान.—अयन्नायं (जेदु अज्जो)

चाणस्यः—(नाट्येनाप्रक्षोभ्य) श्रेष्ठिन्, स्वागतमिदमासनमास्यताम् ।

चन्दनदामः—(प्रापस्य), किं न जानात्यर्थः यवानुचित उपचारे हृदयस्थ परिभयावपि मन्ददुःखमुत्पादयति । तस्मादिहैवोचिताया भूमायुपनिशामि ।

शिष्य—भा श्रेष्ठिन् (O, merchant), इत इत (This way, This way)

चन्दनदान — अयम् = अहम् (I), आगच्छामि = आतोऽस्मि (am coming)

[उभौपरिक्रामत=शिष्यचन्दनदामावगच्छतम् (Both turn round)]

हिन्दी—अ ने द्वारा अने घर न रहने काउ बनगुन आदि को कहा जा चुका है कि जब कहा इस दुष्ट चाणस्य द्वारा घर नगला हा—पावधान हाकर ग्वाना बनाए राक्षस के परिवार को हटा दो । अब तुन पर जो बात, बात जाव ।

शिष्य—इसर, ठेठ जा, इसर ।

चन्दनदास—यह ना रहा हू ।

(दोनों घूमते हैं)

English—So I have made aware my family members and Dhansena of uncertain search of house made by wicked Chanakya and to replace carefully the family of our master, Minister Rakshasa. Later, I have no anxiety for my any fate.

Pupil—This way. O merchant, this way

Chandandasa—I am following the same

(Both move round the stage)

निम्न

व्याख्या—शिष्य—[उपसृत्य=समीपमागत्य (approaching)], उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), अयम् (here is), श्रेष्ठो चन्दनदासः (merchant Chandandasa)

चन्दनदास—आर्य=मान्यः (noble sir), अयत्तु=सर्वोत्कर्षाय वृत्तंताम् (Let prosper)

चाणस्य —[नाट्येन=नाट्येचितव्यापार वित्तोपेय (acting) अवलोक्य=इष्टु (seeing)], श्रेष्ठिन्=भो चन्दनदाम (O merchant), स्वागतम्=मुष्टभागमनं ते भवतु (Welcome), इदम्=साक्षात् दृश्यमानम् (here is), आसनम् (seat), आस्यताम्=उपविशताम् (be seated)

चन्दनदास—[प्रणम्य=प्रणाम कृत्वा (Bowing)], आर्यः=मान्योभवान (Noble sir), किं न जानाति=न ज्ञायते (is not aware), यवानुचितम्=अनुक्तम् (undeserved), उपचारः=सत्कारः (courtesy), हृदयस्थ (to the

(किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो हिअ अस्स परिहवादोवि महन्त दु खमुप्पादेदि । ता इह जेव उचिदाए भूमिए उवविसामि ।)

चाणक्यः—भोः श्रेष्ठिन्, मा मैत्रम् । संभावितमेवेदमस्मद्विधैः भवतः । तदुपविश्यतामासन एव ।

चन्दनदासः—(स्वगतम्) उपक्षिप्तमनेन दुष्टेन किमपि । (प्रकाशम्) यदार्य आज्ञापयति । (इत्युपविष्टः) (उपविस्तमणेन दुष्टेन किंवि । ज अज्जो आणवेदि ।)

चाणक्यः—भोः श्रेष्ठिन् चन्दनदास, अपि प्रचीयन्ते संन्यवहाराणां वृद्धिलाभाः ।

heart), परिभवादपि = तिरस्कारादपि (even indignity), दुःखम् = बलेशम् (pain), उत्पादयति = जनयति (gives), तस्मात् = अतः (so), इदैह = अत्रैव (here is), उचिताधाम् = योग्याधाम् (proper), भूमौ = पृथिव्याम् (on the ground), उपविशामि (I sit down).

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन्=भो चन्दनदास (O, merchant), मा मैत्रम् = अनेन प्रकारेण मा वद (do not speak so), अस्मद् विधै = माहसै. (our stamp), सह = साङ्गम् (with), भवतः = तव (your), इदम् = व्यवहारः (this), संभावितमेव = युक्तमेव (indeed proper), ततः = अतः (so), उपविश्यताम् स्थानम् गृह्यताम् (take your seat), आसन एव (on the seat itself).

चन्दनदास —[स्वगतम् = अरमगतम् (to himself), अनेन = चाणक्येन (by this), दुष्टेन (villain), किमपि = समापराधादिकम् (something is), उपक्षिप्तम् = क्षातम् (started), [प्रकाशम् = (Aloud)], यदार्य = यद्भवान् निदेशं करोतु (As noble sir, commands), (उपविष्टः = Sits down)

चाणक्य. —भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास (O merchant Chandandasa), अपि (also), व' = तुष्माकम् (of your), संन्यवहाराणाम् = क्रयविक्रयानां वाणिज्यानाम् (mercantile transaction), वृद्धिलाभाः (profit), प्रचीयन्ते = वर्द्धन्ते (improve).

हिन्दी—दिप्य—(पास में जाकर) उवाध्याय, यह सेठ चन्दनदास है ।

चन्दनदास—आर्य को जय हो ।

चाणक्य—(अभिनय के साथ देख कर) सेठ जी, स्वागत है—यह आसन है इस पर बिराजिए ।

चन्दनदास—(प्रणाम करके) क्या श्रीमान् नहीं जानते हैं कि अयोग्य सम्मान तिरस्कार से भी अधिक दुःख हृदय में उत्पन्न करता है ! अतः यहाँ भरती पर अपने योग्य आसन ग्रहण कर रहा हूँ ।

चाणक्य—मेठ जी, नहीं ऐसा नहीं । हमारे जैसे व्यक्तियों के द्वारा आपका यह सम्मान चरित हो है । अतः आसन पर ही बैठिये ।

चन्दनदास—(अपने आप) जल्द इस दुष्ट ने कुछ मेरा अरमान ताड़ डिया है (मुनाकर) आर्य की जैसी आज्ञा (देखा वह कर बैठ गया) ।

चन्दनदासः—(स्वागतम्) अत्यादरं शङ्कनाय । (प्रकाशम्) अथ किम् ।
आरित्यं प्रसादेन अलङ्घिता ने यमिञ्चा । (अचादरो मङ्कुणीओ । जइड
अत्रस्म एसाएण अलङ्घिता ने यमिञ्चा ।)

चाणक्य —न खलु चन्द्रगुप्तदोषा अतिक्रान्तपाथिगुणानधुना स्मारयन्ति
प्रकृती ।

चन्दनदासः—(कर्णो पिघाय) शान्तं पापम् । शारदनिशातमुद्गतनेत्रं
पूर्णनारन्द्रेण चन्द्रत्रिपाधिकं नन्दन्ति प्रकृतम् । (सन्त पाय । नारजणि-
सानमुगाएण मिअ पुणिना चन्दण चन्द्रमिरिणा अट्टिअ णन्दन्ति पदिदिओ) ।

चाणक्य—शे सेठे चन्दनदास, तुम्हा न्वे नार का कर बड रहा है न ?

English—Pupil—(approaching) Sir, Here is merchant Chand-
andasa.

Chandandasa—Let victory your Honour, sir

Chanakya—(Seeing him with aching) Welcome O, merchant.
Please be seated on this seat

Chandandasa—(Bowing) No sir, Do you not know that the respect
given to an unable person is more painful to him than the direct
insult ? This very ground is proper for me. Let me sit here.

Chanakya—Do not say so. This respect to you given by a man
like me is appropriate. Come and be seated in the chair

Chandandasa—(To himself) O, the villain has commenced some-
thing (aloud) As your order sir, (sits down)

Chanakya—O, merchant, you must be deriving more and more
profit in your business

विमला

चन्दनदास —[स्वगतम् = (To himself)], अत्यादरं = अतिशयसत्कार (extreme
courtesy), शङ्कनीयं = अनिष्टसूचकं (raises suspicion), [प्रकाशम् (Aloud)],
अथ किम् = (why not), आरित्यं = नवन (of your Honour), प्रसादनं =
इष्टया (by favour), मे = मन (my), वार्ताया (business), अलङ्घिताः =
निम्नं नृदा सन्ति (goes on uninterrupted)

चाणक्य —चन्द्रगुप्तदोषा = मैर्यापराधा (the lapses of Chandragupta),
अतिक्रान्तपाथिगुणान् = अतातनन्दप्रभृतिनृपुणान् (the virtues of the king
departed), अमुना = इदानीम् (now), न खलु (do not indeed), प्रकृतम् =
प्रकृतिनि (the subjects), स्मारयन्ति (remember)

चन्दनदास —[कर्णोपिघाय = तत्र (बाधाय Blocking his ears)], शान्तम्
पापम् = श्राव्यम् (god forbid), शारदनिशातमुद्गतनेत्रं = शारदनिशादितनेत्रं
(rising in an autumnal night), पूर्णिमाचन्द्रण = पौर्णमासीन्दुना (like

चाणक्यः—भो श्रेष्ठिन्, यद्येव प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः ।

चन्दनदास—आज्ञापयतु आर्य । किं कियदस्माज्जनादिष्यत इति ।
(आणवेदु अज्जो किं कित्तिअ इमादो जणादो इच्छीअदि त्ति ।)

चाणक्य—भोः श्रेष्ठिन्, चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम् । यतो नन्दस्यै-
वार्थरुचेरर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव ।

चन्दनदास —(सहर्षम्) आर्य अनुगृहीतोऽस्मि । (अज्ज अणुमाहीदोहि ।)

चाणक्य—भो श्रेष्ठिन्, स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवतीति ननु भवता
प्रष्टव्या स्मः ।

full moon), चन्द्रधियाधिकम् = अतिशयम् (greater with Chandrasri),
प्रकृतयः = प्रजा (subjects), नन्दन्ति = मोदन्ते (pleased with)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), यद्येवम् = चन्द्रगुप्ते अधिकानुरागसत्त्वे
(if so), प्रीताभ्यः = प्रसन्नाभ्यः (contented), प्रकृतिभ्यः = प्रजाभ्यः (from
their subjects), प्रतिप्रियम् इच्छति (expect some benefit), राजानः =
मृपतयः (The kings)

चन्दनदास —आर्य = मान्य (Noble sir), आज्ञापयतु = निदेश करोतु (command
me), कियत् = किंपरिमाणम् (what and how much), अस्मात् जनात् = मत्तः
(from this person), इष्यत इति = अप्येत इति (is expected)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), चन्द्रगुप्तराज्यमिदम् = इदम् चन्द्रगुप्तस्य
राज्यम् (this is the reign of Chandragupta), न नन्दराज्यम् (and not of
Nanda), यतः (for), नन्दस्यैव (alone Nanda), अर्थरुचे = धनाभिलाषिण
(greedy of wealth), अर्थसम्बन्धः = धनसम्पर्कः (the prospect of money),
प्रीतिम् = हर्षम् (pleased), उत्पादयति = जनयति (gives), चन्द्रगुप्तस्य तु (to
Chandragupta), भवताम् = युष्माकम् (your), अपरिक्लेश एव = दुःखाभाव एव
(absence of distress)

चन्दनदास —[सहर्षम् (with joy)], आर्य = मान्य (Noble sir), अनुगृहीतोऽ-
स्मि = कृतार्थोऽस्मि (highly obliged)

चाणक्य —भो श्रेष्ठिन् (O merchant), स चापरिक्लेशः = क्लेशाभावः (absence
of distress), कथम् = केन प्रकारेण (how that), आविर्भवति = जायते (is
manifested), ननु भवता = त्वया (you), प्रष्टव्या स्मः = जिज्ञासितव्या (ought
to have ask)

हिन्दी—चन्दनदास—(स्वगत) अत्यधिक आदर शब्दों के बोध होता है । (प्रकट)
और क्या ? आर्य की कृपा से मेरा व्यापार अशुभित है ।

चाणक्य—इस समय चन्द्रगुप्त के दोष प्रजाओं की दिवंगत राजा नन्द को स्मरण तो नहीं
कराने हैं ?

चन्दनदासः—आज्ञापयतु आर्यः । (आणवेदु अञ्जो ।)

चन्दनदास—(कानों को ढक कर) पान शान्त हा । शरद को रान में धूनन के बाद को तरह चन्द्रजुत से प्रवाहें प्रसन्न ह ।

चाणक्य—जेठ चन्दनदास ' अगर यह बात नच ह या रावा ना करना नदुष्ट प्रजा से कुछ मतलब रखत है ।

चन्दनदास—अदर दाविद बाचार्य ' क्या जँर किडना इस बन से चाह जा रहा ह ?

चाणक्य—मेठ जा, यह चन्द्रजुत का राज्य है नन्द का नहीं । क्योंकि धन को कामनावाड नन्द को हा धन का वन्द्यध्व प्रसन्न रख करछा था, चन्द्रजुत को तो आर लोगों के दुख का न होना ही प्रसन्नदायक है ।

चन्दनदास—(प्रसन्नपूर्वक) आर्य, अनुशील ह ।

चाणक्य—ठठ जा, और यह दुख का न होना कैसे अभिन्नक होता है ? वह आनक द्वारा घुलने योग्य है ।

English—Chandandasa—(To himself) I am awe-stricken by his extreme interest even in the business. (Aloud) Why not ? No disturbance may take place in my trade with the grace of your Honour.

Chanakya—Do the faults of Chandragupta not cause the meditation of the virtues of the previous king for the public now ?

Chandandasa—(Taking his hands to his ears) God excuse. The matter is just reverse. Subjects of the Kingdom of Chandragupta are more pleased than with the vision of full moon rising in an autumnal night ?

Chanakya—If so, O merchant, the king expects a benefit in return from his pleased subordinates

Chandandasa—Order your Honour, what and how much is needed from this slave.

Chanakya—O merchant, It is the reign of Chandragupta not of Nanda, who expected wealth from his subjects for his pleasure due to his greed Only the wellwishes from men like you are enough for Chandragupta

Chandandasa—(out of joy) your Honour, I am unable to express my thanks to him for your such favour.

Chanakya—Chandandas, I was thinking about a question from you for me as to how that good will should be expressed.

विमला

व्याख्या—चन्दनदास —आर्य=मान्यः (Noble sir), आज्ञापयतु=निर्देश कर (command).

चाणक्यः—सत्प्रेप्तो राजनि अविरुद्धाभिवृत्तिभिर्वतितव्यम् ।

चन्दनदासः—आर्य कः पुनरधन्यो राजा विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते ।
(अज को उण अधण्णो रण्णा विरुद्धोति अज्जेण अवगच्छीआदि ।

चाणक्यः—भवानेव तावत् प्रथमम् ।

चन्दनदासः—(कर्णों पिधाय) शान्तं पापं शान्तं पापम् । कीदृशस्तृणाना-
मग्निना सह विरोधः । (सन्तं पाव सन्तं पावं । कीदिसो तिणाण अग्निणा
सह विरोहो ।)

चाणक्यः—अयमीदृशो विरोधः । यत्स्वमद्यापि राजापथ्यकारिणः अमात्य-
राक्षसस्य गृहजन स्वगृहे रक्षसि ।

चाणक्य —सत्प्रेप्तः=समाप्तः (Briefly), राजनि=नृपतौ (to the king),
अविरुद्धाभिः=अनुकूलाभिः (not hostile), वृत्तिभिः=व्यवहारैः (in a manner),
वत्तितव्यम्=स्थातव्यम् (has to conduct)

चन्दनदास —आर्य=मान्य, भवान् (Noble sir), कः (who), पुनरधन्यः=
भाग्यहीन (wretch), राजा विरुद्धः (as hostile to the king), आर्येण=पूज्येन
(by your Honour sir), अवगम्यते=ज्ञायते (considered).

चाणक्य.—तावच्छब्दो वाक्यालङ्कारे, प्रथमम्=पूर्वम् (In the first), भवान एव
(you yourself)

चन्दनदास.—[कर्णों पिधाय=stopping (his ears)], शान्तम् पापम्, शान्तम्
पापम्=अवाप्त्यमित्यर्थः (Heaven forbid such a thing), तृणानाम्=शाक्यानाम्
(grasses), अग्निना सह=पावकेन सह (with fire), कीदृशः=क इव (what
kind of), विरोधः=विद्वेषः (hostility)

चाणक्य —अयमीदृशो विरोधः. (The hostility is of this kind), राजापथ्य-
कारिणः=नृपानिष्ठविधायिनः (inimically towards the king), अमात्यराक्षसस्य
(of the minister Rakshasa), गृहजनम् (The family), स्वगृहम्=निजसदनम्
(in your house), अभिनीय=स्थापयित्वा, अद्यापि (still to day), रक्षसि=
प्रायसे (keep in)

हिन्दी—चन्दनदास—आदेश दें आर्य ।

चाणक्य—सत्प्रेप्त में राजा के प्रति अनुकूल आचरणों से व्यवहार करना चाहिये ।

चन्दनदास—आर्य ऐसा कौन अमाया है ? जो आपको दृष्टि में राखदोही है ।

चाणक्य—सबसे पहले तो स्वयं आप ही ।

चन्दनदास—(कानों की ढक कर) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो, तृणों (घासों) की आग से
दुर्मनी वैभी ?

चाणक्य—ऐसा कि तुमने आज भी राखदोही अमात्य राक्षस के परिवार को अपने
घर में शरण दी है ।

English—Chandandasa—Order please.

चन्दनदानः—आर्यं अलीकमेतत्केनाप्यतभिजेन आयस्य निवेदितम् । (अत्र अलीक एव केनापि अपाभिज्जेण अजस्स पिवेदिदम् ।)

चाणक्यः—भोः त्रेष्टिन्, अलमाशङ्क्या । भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणाम-
निच्छतामपि गृहेषु गृहजन निक्षिप्य देशान्तरं प्रव्रजन्ति । ततस्तत्प्रच्छादनं
दोषमुत्पादयति ।

चन्दनदानः—एष नु इदम् । तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य
गृहजनं इति । (एष ण्णेद । तस्सि समये आसि अल्लभरे अमच्चरक्खसस्स
घरअणो त्ति ।)

चाणक्यः—पूर्वमनृतमिदानीमानीदिति परस्परारिरोचिनी वचने ।

चन्दनदासः—एतारदेनास्ति मे राक्षसलम् । (एत्तिअ जेअ अत्थि मे
वाआच्छलम् ।)

चाणक्यः—भो त्रेष्टिन्, चन्द्रगुप्ते राजन्यपरिग्रहशूलानाम् । तत्समर्पय
राक्षसस्य गृहजनम् । अच्छलं भरतु भरतः ।

Chanakya—In brief, a subordinate should not belong to an enemy to the king.

Chandandasa—Sir, what wretch is he, who is considered as a hostile by your Honour ?

Chanakya—You are the first.

Chandandasa—(Stopping his ears) Excuse God such sin. What sort of enemy the straw bear with the fire ?

Chanakya—This sort of enemy that you are still hiding the family members of Minister Rakshasa in your house who is the life-foe of king Chandragupta.

निमला

व्याख्या—चन्दनदासः—आर्यं=मान्य (sir), अलीकम्=असत्यम् (an untruth),
एतद् (this is), केनापि=कस्यचिदपि (by some one), अनभिज्ञेन=अनार्येण
(ignorant of fact), आर्यस्य=मान्यस्य (your Honour), निवेदितम्=कथितम्
(told)

चाणक्यः—भो त्रेष्टिन् (O merchant), अलम्=अपर्ययम्, आशङ्क्या=भयम् (away
with alarm), भीताः=उत्ता- (Frightened), पूर्वराजपुरुषाः=पूर्वराजनृत्थाः
(the servants of the former king), पौराणाम्=पुरवासिनाम् (citizens),
अनिच्छतामपि=अननिलक्षितामपि (even unwilling), गृहेषु=सदमसु (in the
house), गृहजनम्=गृहादिभ्यः (The members of their household),
निक्षिप्य=स्थापयित्वा (to leave), देशान्तरम्=अन्यदेशम् (other countries),
प्रव्रजन्ति=गच्छन्ति (depart for), ततस्तत्, प्रच्छादनम्=गोपनम् (The hiding
of them afterwards), दोषम्=अपराधम् (guilt), उत्पादयति=जनयति
(attaches)

चन्दनदास — एवं तु इदम् = भो इदमेवं युक्तम् (so is this indeed), अस्मद्गृहे = मम सद्ने (in my house), अमात्यराक्षसस्य गृहजनः (the household members of minister Rakshasa), तस्मिन् समये (at that time), आसीत् (were)

चाणक्य — पूर्वम् = प्रथमम् (At first), अनृतमिदम् = इदमसत्यम् (untruth this is), सम्प्रति = अधुना (now), आसीत् = अवर्तत (were), इति वचने = वाक्ये (statements), परस्परम् = अन्योन्यम् (mutually), विरोधिनी (contradictory).

चन्दनदास — ऐतावदेव = पूर्वापरविरोधरूपमेव (There is only this) मे = मम (My), वाक्कुलम् = वचनध्याजः (verbal fraud), अस्ति (is)

चाणक्य — भो धेष्टिन् (O merchant), चन्द्रगुप्ते = मौर्ये (Chandragupta), राजनि = शासके (being king), छुलानाम् = व्याजानाम् (of fraud), अपरिग्रहः = अनवकाशः (no adoption), तत् (so), समपर्यं = देहि (give up), राक्षसस्य गृहजनम् (household members of Rakshasa), भवतः तव (yourself), अक्वुलम् = अकापव्यः (clear of dishonesty), भवतु = अस्तु (Let be)

हिन्दी — चन्दनदास — आर्य, यथावत् स्थिति से अनभिष्ट किसी मूर्ख ने आपको यह मिथ्या सूचना दी है।

चाणक्य — सेठ जी, आश्चर्य-वर्ष है। पूर्व राजा के व्यक्ति भयभीत होकर न चाहने वाले नागरिकों के घर अपने परिवार को रखकर दूसरे देश को चले जाते हैं। उसके बाद उनको छिपाना ही अपराध होता है।

चन्दनदास — यह बात ऐसी ही है। अमात्य राक्षस का परिवार हमारे घर में उस समय था।

चाणक्य — पहले 'असत्य' है और अब 'वा' ऐसे वचन परस्पर विरोधी हैं।

चन्दनदास — वस इतना भर ही मेरा वाक्कुल है।

चाणक्य — सेठ जी, चन्द्रगुप्त के राज्य में छल के लिए कोई स्थान नहीं है। राक्षस के खो पुत्रादि को समर्पित कर दो फिर तुम्हारा कथन भी निरुद्ध हो जायगा।

English — Chandandasa — Wrong, your honour is informed by a wrong source

Chanakya — O, Merchant, do not be afraid The officials of the former king start for another city having their family members even in the house of a unwilling citizen due to fear. But it is hostile when it is performed secretly.

Chandandas — you are correct sir, Really, for sometimes, the family members of minister Rakshasa got shelter in my house

Chanakya — First you said 'it wrong' and now you say 'It was' your these two types of version have created a contrast between themselves.

Chandandas — Sir, I have not committed the mistake in reality; but it is due to lack of command on words.

चन्दनदानः—आर्यं ननु विज्ञापयामि आसीदस्मद्गृहे अनात्यराक्षसस्य गृहजन इति । (अत्र णं विष्णवे नि आसि अद्य चरे अनञ्चरस्त्वस्स घरअणी त्ति ।)

चाणक्यः—अथेदानीं क्व गतः ?

चन्दनदासः—न जानामि । (न जाणामि)

चाणक्यः—(स्मित कृत्वा) क्व न ज्ञायते नान । भोः श्रेष्ठिन्, शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतीक्ष्यतः ।

Chanakya—Such guilts are not tolerable in the reign of Chandragupta; O, merchant Be out of hostility having send the family of Rakshasa under my subjugation.

विमला

व्याख्या—चन्दनदान —आर्यं=मान्य (Noble sir), विज्ञापयामि=निवेदयामि (I say), आसीद् अस्मद्गृहे=नम सद्ये आसीत् (were in my house), तस्मिन् समये (at that time) अनात्यराक्षसस्य गृहजनः (The household members of minister Rakshasa)

चाणक्यः—अथ (well), इदानीम्=अधुना (now), क्व=कुत्र (whither), गतः=जातः (gone)

चन्दनदासः—न जानामि (I do not know)

चाणक्य—[स्मित कृत्वा=(smiling)], क्वम्=केन प्रकारेण (why), न ज्ञायते-नान=न जानानीत्यर्थः (not known), भो श्रेष्ठिन् (O merchant), शिरसि=मस्तके (overhead), भयम्=कष्टम् (the danger), तत्प्रतीक्षाः=निवृत्तुपायः (remedy), अतिदूरे (is very far)

चन्दनदास—[स्वगतम्= To himself]

हिन्दी—चन्दनदास—आर्य निवेदन तो कर रहा हूँ—अनात्य राक्षस का परिकार मेरे घर में था ।

चाणक्य—और अब कहाँ चला गया ?

चन्दनदास—नहीं जानता ।

चाणक्य—(मुसकुराकर) क्यों नहीं जानते हैं ? हे श्रेष्ठिन्, सड़क शिर पर है और उसको दूर करने का उपाय दूर है ।

English—*Chandandasa*—Sir, have I not stated that previously the family members of Minister Rakshasa were in my house (but not now).

Chanakya—Where have they gone now ?

Chandandasa—I do not know.

Chanakya—[having a false smile] How do you not know ? O merchant, the danger stands over your head and the remedy is very far.

अन्यच्च नन्दमिव विष्णुगुप्तः—

(इत्यर्धोक्ते लज्जा नाटयित्वा) चन्द्रगुप्तममात्यराक्षसः समुच्छेत्स्यतीति मामैव मस्था । पश्य—

विक्रान्तैर्नयशालिभिः सुसचिवैः शीर्षकनासादिभिर्-

नन्दे जीवति या तदा न गमिता स्थैर्यं चलन्ती मुहुः ।

तामेकत्वमुपागतां द्युतिमिव प्रह्लादयन्तीं जगत्

कश्चन्द्रादिव चन्द्रगुप्तनृपतेः कर्तुं ध्यवस्येत् पृथक् ॥ २२ ॥

विमला

व्याख्या—अन्यच्च = अपरमपि (Besides as), नन्दमिव (like Nanda) विष्णुगुप्तः (Vishnugupta), [इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयित्वा (blushing at this half utterance)], चन्द्रगुप्तम् (to Chandragupta), अमात्यराक्षसः (Minister Rakshasa), समुच्छेत्स्यति = समुन्मूलयिष्यति (will extirpate), मामैव मस्था = मेव जानीहि (do not think so), पश्य = अवलोकय (see)—

अन्यथा—तदा, नन्दे, जीवति, मुहुः, चलन्ती, या, श्री, विक्रान्तैः, नयशालिभिः, वक्रनासादिभिः, सुसचिवैः, स्थैर्यम्, न, गमिता । द्युतिम्, इव, एकात्मम्, उपागतम्, जगत्, प्रह्लादयन्तीम्, ताम्, चन्द्रात्, इव, चन्द्रगुप्तनृपतेः, पृथक्, कर्तुम्, कः, ध्यवस्येत् ॥ २२ ॥

व्याख्या—तदा = तस्मिन् समये (at that time) नन्दे जीवति = नन्दराजनि-
विद्यमाने (when Nanda lived), मुहुः = अक्सकृत् (often), चलन्ती = चलायमाना
(unsteady), या श्री = या राजलक्ष्मीः (Sovereignty), विक्रान्तैः = वीरैः (brave),
नयशालिभिः = नीतिनिपुणैः (skilled in politics), वक्राः = कुटिला नासा = नासिका-

१. अत्र कश्चिदधिक पाठ —

चन्दनदासः—(स्वगतम्)—

उपरि घनं घनरटितं दूरे दयिता किमेतदापतितम् ।

हिमयति दिव्योपधयः शीर्षं सर्पः समाविष्टः ॥

(उपरि घण घनरटितं दूरे दृष्ट्वा किदमेददावटितम् ।

हिमयति दिव्योसहिओ सीस्से सप्पो समाविष्टो ॥

चाणक्यः—चन्द्रगुप्तममात्यराक्षसः समुच्छेत्स्यतीति मेव मस्थाः ।

पश्य—

चन्दनदास—(अपने आप) झिर पर सर्प सवार हो और सजीवनीवृद्धी हिमालय पर्वत पर हो, ऊपर मेघ गरज रहा हो और प्रिया कोसों दूर हो । (ठीक इसी प्रकार मेरी दुर्दशा तो अब आ ही गयी) ।

चाणक्य—बेसे ही अमात्य राक्षस चन्द्रगुप्त को भी सत्यानाश में मिला देगा । भूल कर भी ऐसा न समझना सेठ । देखो—

अपि च—

आस्वादितद्विरदशोपितशोभां (इति पूर्वांकं पठति)

यस्य तैः वक्रनासादिभिः=वक्रनासप्रभृतिः (Vakranasa and others), सुसन्निविः= सुसन्निविः (eminent minister), स्वयम्=स्वयम् (be firm), न गमिता= न प्रापिता (could not be made), द्युतिम्=कान्तिम् (delight), इव=यथा (like), दृक्त्वम्=अभिन्नताम् (consolidated), उपागताम्=प्राप्ताम् । उगताः= संसारम् (to the world), प्रह्लादयन्तीम्=आनन्दयन्तीम् (delighted), ताम्= राज्यधियम् (Sovereignty), चन्द्रात्=चन्द्रमसः (From the moon), इव= यथा (like), चन्द्रगुप्तनृपते=चन्द्रगुप्तनृपतेः (From the king Chandragupta), वृषक्=निष्क्रम (to separate), कचुम्=विधानुम् । क=अन- (who), व्यवस्येत्= प्रयत्नेत् (can attempt) ॥ २२ ॥

हिन्दी—और फिर दूसरी बात यह भी है, जैसे नन्द को विष्णुदत्त मन्दूख .. (इतना आवाज करने पर लज्जा का अभिन्नता करके) चन्द्रगुप्त को अपना स्वामी राक्षस मन्दूख विनष्ट कर देगा—ऐसा नव मननो । देखो—

उस समय राजा नन्द के आवेश रहने पर बार-बार बचप रहने वाला राक्षसों को बार-बार काटनेवाला वक्रनास प्रभृति श्रेष्ठ मन्त्रियों के द्वारा भा स्मरण प्राप्त नहीं कराया जा सकी, चौदवा की तरह अभिन्नता को प्राप्त हुए सत्तर को आनन्दविनोद कराया हुआ, वस राक्षसों को चन्द्र की तरह चन्द्रगुप्त से अलग करने का कौन साहस कर सकता है ॥ २२ ॥

English—*Chanakya*—Besides, as Nanda is annihilated by Vishnugupta (showing his bashfulness) forget it that Rakshasa will exterminate Chandragupta. Remember—

Who is to separate Chandragupta from the Sovereignty. like moon light from the moon, Who wants to bind the prosperity of kingdom in unity and delight for the subjects, which was disturbed under the rule of king Nanda inspite of the presence of several courageous, politics experts and eminent ministers, such as Vakranasa and others. 22.

टिप्पणी—'विक्रान्तनन्दशक्तिभिः' इत्यदि श्लोक में वक्रनासप्रभृति इति एव चन्द्र उच्यते का वक्रनासप्रभृति श्री भक्त चन्द्रगुप्त उच्यते सान्त्वय धर्म का चन्द्र आह्लादकत्वत्त आनन्दवाचक इव उच्यते के वादना से यहाँ अर्थात् पूर्णमनाद्वैत हुआ । नहिन्दवर्षा में इन्का लब्धा है—

'ता पूर्णं यदि मानान्धर्मे आनन्दवाचि च । वक्रनास चोपनाम भवेदाप्य निज पुनः ॥
श्रीश्री देवता वाः उच्यते 'इत्यदि । इन्ने लब्धा राति है, ओम्ना है, वीर रम है उवा शार्ङ्ग-विक्रान्त उच्यते है । उच्यते का लब्ध है—मूर्तवैशेषिक न. मर्तवैशेषिक न. मर्तवैशेषिक न. ॥ २२ ॥

पिनला

व्याख्या—अपि च=अपरमपि (Moreover), आस्वादितद्विरद-इति पूर्वांक पठति । (Who desires to snatch away & 1/3 Sloka).

चन्दनदास — (स्वगतम्) फलेन सवादितमस्य विकथितम् । (फलेण सवादित से विकथितम्)

(नेपथ्ये कलकल)

चाणक्य — शार्ङ्गरव, ज्ञायता किमेतत् ।

शिष्य — तथा । (इति निष्क्रम्य पुन प्रविश्य) उपाध्याय, एष राज्ञश्चन्द्रगुप्त स्याद्वा राजापथ्यकारी क्षपणको जीवसिद्धि सनिकार नगराग्निर्वास्यते ।

चाणक्य — क्षपणक अहह । अथवा अनुभव राजापथ्यकारित्वस्य फलम् । भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास एवमयमपथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा । तत्क्रियता पथ्य सुहृद्वच । समर्प्यता राक्षसगृहजन । अनुभूयता चिर मित्रिणो राजप्रसाद ।

चन्दनदास — नास्ति मे गेहे अमात्यगृहजन । (णत्थि मे गेहे अमघ घरअणो ।)

चन्दनदास — [स्वगतम् (to himself)], फलेन=फलैः (with result), सवादितम् = सद्गमम् (has been made consistent) अस्य विकथितम् = अस्यात्म श्लाघा (His bragging)

[नेपथ्ये कलकल = वेपथ्यनालये लोकाना रव (A confused noise in the dressing room)]

चाणक्य — शार्ङ्गरव (Sharngrava), ज्ञायताम् = बुध्यताम् (ascertain), किमेतत् = किं हेतुकोऽय जनरव इति (what noise it is)

शिष्य — तथा (As you command) [इति निष्क्रम्य पुन प्रविश्य (Exit and re-enter), उपाध्याय = आचार्य (Preceptor) एष = असी (It is), राज्ञ = भूपते (of his majesty), चन्द्रगुप्तस्य = चूपलस्य (Chandragupta), आज्ञया = आदेशेन (by the command), राजापथ्यकारी = राजद्रोही (a traitor to the king), क्षपणक = बौद्धसम्यासी (Baudh mendicant) जीवसिद्धि = एतद्वाच्य (Jivasidhi) सनिकारम् = सतिरस्कारम् (with disgrace) नगरात् = पुरात् (From the city), निर्वास्यते = निष्कारयत (is being expelled)

चाणक्य — क्षपणक = सुण्डी (The mendicant) अहह = काश्याविचारकशब्द (Alas) अथवा = वा (or) राजापथ्यकारित्वस्य = राजद्रोहविधाधिक्यस्य (being treacherous to the king), फलम् = परिणामम् (result) अनुभवतु = भुनक्तु (reap), भो श्रेष्ठिन् चन्दनदास (O merchant Chandandasa) एवम् = अनेन प्रकारेण (in this way), अयम् = एष (is this) राजा = नृपति (The king), अपथ्यकारिषु = राजद्रोहीषु (upon traitors), तीक्ष्ण = तीव्र, दण्ड = शासन (a grim punisher), तत् = तस्मादेतो (Thus) पथ्य = दत्तम् (the whole some) सुहृद्वच = मित्रकथनम् (advice of friend), क्रियताम् = विधीयताम् (act up), राक्षसगृहजनम् = राक्षसकलत्रादिकम् (the household members of Rakshasa), समर्प्यताम् = मदायतीक्रियताम् (surrender), मित्रिण = मित्र-

(नेपथ्ये पुनः कलकलः)

चाणक्य—शार्ङ्गरव, ज्ञायता किमेतत् ।

शिष्यः—तथा । (इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य) [उपाध्याय, अयमपि राजापथ्यसर्वेषु कार्यस्य शक्यदासः शूलमारोपयितुं नीयते ।

विच (manifold), राजप्रसाद = नृपानुराग (royal favour), विरम् = बहु-
कालम् (for a long time), अनुभूयताम् (enjoy)

चन्दनदास—मे गृहे = मम सदन (in my house), अमास्यगृहजन = राजस
कलत्र (The family of minister Rakshasa), नास्ति (is not)

हिन्दी—चन्दनदास—(अपने भाग) कहलवा ने सच्ची गल्ल को परिहार कर
दित ना है ।

(नेपथ्य में शोर-गुल)

चाणक्य—शार्ङ्गरव, हाउ करो यह क्या है ?

शिष्य—जैसी आज्ञा (निहलकर और फिर प्रवेश करके) आचार्य यह राजा चन्द्रगुप्त को
आज्ञा से राजद्रोह मान्य हो जीवसिद्धि तिरकारपूर्वक नगर से बाहर निकाला जा रहा है ।

चाणक्य—अच्छ, अच्छा । अच्छा, राजद्रोह का यह योग्य । हे ठेठ चन्दनदास, राज
द्रोहियों को राजा इस प्रकार शास्त्र दण्ड देने वाला है । अब निज की हितकर बातें मान लो
और बहुत दिनों तक अद्भुत राजरुप का अनुभव करो ।

चन्दनदाम—मेरे घर में कमात्य राजस का परिवार नहीं है ।

English—Chandandasa—(To himself) His success has accom-
plished his boasting

(A noise behind the stage)

Chanakya—O Sharngrava, see what is the matter ?

Pupil—As your command. (Exit and coming back) Sir, by the
order of His Highness Chandragupta the hostile Baudh mendicant
Jivasidhi is being truned out of the city very ignominiously.

Chanakya—Such a deed with the Baudh Mendicant ! But seems
to be correct get the result of deceit. O merchant, see the hardness
of our king with the traitors Act up according to a friend's advice.
Surrender the family of minister Rakshasa and enjoy the royal
favours for a long time

Chandandasa—The family of Minister Rakshasa is not in my
house.

विमला

[नेपथ्ये पुनः कलकलः (Again a noise behind the stage)]

ध्यायसी—चाणक्य—शार्ङ्गरव (Sharngrava) ज्ञायताम् बुद्धयताम् (See),
किमेतत् (what is this)

चाणक्यः—स्वकर्मफलमनुभवतु । भोः श्रेष्ठिन् एवमयं राजापथ्यकारिषु तीक्ष्णदण्डो राजा न मर्पयिष्यति राक्षसकलत्रप्रच्छादनं भवतः । तद्रक्ष परकलत्रेणात्मनः कलत्रं जीवितं च ।

चन्दनदासः—आर्यं किं मे भयं दर्शयसि सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम् । (अज्ज किं मे भयं दावेसि । सन्तं वि गेहे अमच्चरक्खसस्स धरअण ण समप्पेमि किं उण असन्तं ।)

चाणक्यः—चन्दनदास, एष ते निश्चयः ?

चन्दनदासः—वाढम् । एष मे निश्चयः । (वाढं एसो मे निश्चओ ।)

शिष्यः—तथा (verywell) [इति निष्क्रम्य पुनः प्रविशतिः (going out and coming back)], उपाध्याय=आचार्य (Preceptor), अयमपि (this = also), राजापथ्यकार्यैव=राजद्रोही एवं (another traitor), कायस्थ. शकटदासः (Kayastha Shakatdasa), शूलम्=लौहनिर्मितमायुधम् (stake), आरोपयितुम्, मीयते=तक्षिकदं प्राप्यते (being taken away for being impaled)

चाणक्य—स्वकर्मफलम्=निजकार्यपरिणामम् (the consequence of his deeds) अनुभवतु=प्राप्नोतु (let enjoy), भो श्रेष्ठिन् (O, merchant), एवमयं राजा=अनेन प्रकारेण एषः (thus is this), राजापथ्यकारिषु=राजद्रोहिषु (upon traitors), तीक्ष्णदण्डोः=उग्रप्रासन. (a grim punisher), न=नहि (Not), मर्पयिष्यति=सहिष्ये (will brook), भवतः=तव (your), राक्षसेति=राक्षस्य (Rakshasa's), कलत्रम्=भार्याम् (wife), प्रच्छादनम्=गोपनम् (concealment), सत्=तस्मात्कारणात् (thus), रक्ष=प्राहि (save), परकलत्रेण=राक्षसगृहजन-समर्पणेन (by delivering up another's wife), आत्मनः=स्वस्य (your own), कलत्रं=स्त्री (wife), च=पुनः (and) जीवितम् (Life),

चन्दनदास.—आर्यं भाग्य (sir), मे=मम् (to me), भयम्=भ्रमम् (intimidated), दर्शयसि किम्, अवलोकयसि किम् (do you point out), गेहे=सदने= (In my house), अमात्यराक्षसस्य गृहजनम् (the family of minister Rakshasa), असन्तमपि=अवर्तमानमपि (even if existing), न समर्पयामि=न प्रदास्यामि (would not give up), किंपुनरसन्तम्=अविद्यमानम् (what to say when non-existent).

चाणक्य.—एष=असौ (this), ते=तव (your), निश्चयः=प्रतिज्ञा (resolve), Chandandas.

चन्दनदास—वाढम्=स्वीकारार्थकमन्वयम् (Certainly), एष=असौ (This is), धीरः=दृढ. (Firm), मे=मम (my), निश्चयः=प्रतिज्ञा (resolve)

हिन्दी—चाणक्य—शार्ङ्गेरव दात वरो अब क्या है ?

शिष्य—जैसी आज्ञा (निकलकर फिर प्रवेश कर) आर्य यह भी राजद्रोही कायस्थ शकट-दास राजाश से शूल पर चढ़ाने के लिये ले जाया जा रहा है ।

चाणक्यः—(स्वगतम्) नाथु चन्दनदास साधु ।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परस्वदेने जनः ।

क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना ॥ २३ ॥

(प्रकाशम्) चन्दनदास. एष ते निःश्वसः ।

चन्दनदासः—वाडम् । (वाडम्)

चाणक्य—अब तुम दोनों का कुछ भाग । बैठो, इस प्रकार राजपूतों के विरुद्ध में कठोर दण्ड देने काज यह राजा तुम्हारे द्वारा राक्षस की पक्षा का विनाश जाना चाहता रहा । अब दूसरे का का जो संग कर जनो का भेद करने वादन की रक्षा करो ।

चन्दनदास—आप, क्या कुछ मन दिखला रहे हैं । अब जो घर में जनात्म राक्षस का परिवार है नहीं, अगर मेरे घर में होगा तो तो नहीं संगत ।

चाणक्य—चन्दनदास, क्या वह तुम्हारा निःश्वस है ?

चन्दनदास—हाँ महाराज, वह इनका इह निःश्वस है ।

English—Chanakya—Sharagrava, See what is again ?

Pupil—As your order sir, [Exit and coming back] Sir, there is another traitor—Kayastha Shakatdas by name—who is being carried to be executed.

Chanakya—Let him enjoy the result of his own deeds. O, merchant, it is the hard punishment of our king for the traitor, Do not hope for the forgiveness concealing the family of Rakshasa. If you want good for your wife and life; reach the wife of Rakshasa to the rule.

Chandandasa—Sir, do you threaten me in such a manner ? I would not have delivered them to you, even if they would have been present, what can I say when they are not present.

Chanakya—Chandandasa, is it your resolve ?

Chandandasa—Yes, it is my firm resolve.

विनला

व्याख्या—चाणक्य—[स्वगतम् (to himself)] साधु चन्दनदास साधु (bravo Chandandasa bravo)

अन्यः—परस्वदेने, अर्थलाभेषु, सुलभेषु, इदानीम्, दुष्करम्, शिविना, विना, क, जन, कुर्यात् ॥ २३ ॥

व्याख्या—परस्वदेने=परकीय समर्पणे (another's distress), अर्थलाभेषु=अर्थस्य घनस्य प्रयोजनस्य वा लाभो=प्राप्तयः तेषु (accessible gifts of wealth) सुलभेषु=सुलभप्राप्त्येषु सत्सु (easily), इदानीम्=सम्प्रति (in this time), इदम्=एवं (this), दुष्करम्=दुश्चेन करणीयम् (so hard to be done), शिविना=राजानक्षेत्रीनरदेवाधिपेन विना (King Shiva no longer existing) क=त्वदन्यः क जन, कुर्यात्=सम्पादयेत् (who can do this) ॥ २३ ॥

चाणक्यः—(सक्रोधम्) दुरात्मन्, दुष्टवणिक्, अनुभूयता तर्हि नरपतिक्रोधः ।
चन्दनदासः—सजोऽस्मि । अनुतिष्ठतु आर्य, आत्मनोऽधिकारसदृशम् ।
(सज्जोह्यि । अणुचिद्वदु अज्जो अत्तणो अहिआरसस्सि ।)

चाणक्य—शार्ङ्गरा उच्यतामस्मद्वचनात्कालपाशिको दण्डपाशिरुद्ध ।
शीघ्रमय दुष्टवणिक् निगृह्यताम् । अथवा तिष्ठतु । उच्यता दुर्गपालो विजयपालः
गृहीतगृहसारमेन सपुत्रकलत्र सयम्य तावद्रक्ष यावन्मया वृपलाय कथ्यते । वृपल
प्रास्य प्राणहर दण्डमाज्ञापयिष्यति ।

[प्रकाशम् = (Aloud)], चन्दनदास (Chandandas), एष (this), ते = तव
(your), निश्चय = प्रतिज्ञा (resolve)

चन्दनदास — वादम् = निश्चयम् (Undoubtedly),
हिन्दी—चाणक्य—(अपने आप) शारास चन्दनदास, शारास ।
दूसरे की वस्तु को समर्पित कर देने पर, मामानी से अर्थलाभ होने पर भी, इस समय इस
बठिन कार्य को राजा शिवि ये बिना कौन कर सकेगा ? ॥ २४ ॥

[प्रकट] चन्दनदास क्या, यही तुम्हारा निश्चय है ?

चन्दनदास—हाँ ।

English—Chanakya—(To himself) Bravo Chandandas, bravo.

When the acquisitions of money are easy by delivering up what
belongs to another, who except the king Shivi can do this hard
work now 23

[Aloud] Chandandas is this your resolve

Chandandas—undoubtedly

टिप्पणी—इस श्लोक में राजा शिवि ने ऐसा किया था एक बलिगुग में तुमने ऐसा
किया—यहाँ उपमानभूत शिवि की अपेक्षा उपमेय चन्दनदास के आधिक्य वर्णन से व्यतिरेकात्मक
है । बिन्हीं की दृष्टि में प्रशस्त कीर्तिशाली महाराज शिविचरित का प्रसुनाङ्गव्य के कारण उदात्ता
चक्रार प्रसादगुण, वैदर्भी रीति एवं अनुष्टुप् छन्द है ।

निमला

चाणक्य —[सक्रोधम् = सक्रोपम् (in anger)], दुरात्मन् = क्रूरहृदय
(vilehearted), दुष्टवणिक् = क्रूरवैश्य (wicked merchant), तिष्ठ = स्थितताम्
(wait) तर्हि = तदा (then), नरपतिक्रोध = नृपामर्ष (the king's wrath),
अनुभूयताम् = उपलभ्यताम् (feel)

चन्दनदास —सज्जोहिम = उद्यतोऽस्मि (I am ready), आर्य = मान्य (Noble
man), आत्मनोऽधिकारसदृशम् = स्वाधिकारानुरूपम् (as befits his post), अनु-
तिष्ठतु = विदधानु (Let do)

चाणक्य —शार्ङ्गरा (O Sharngarava), अस्मद्वचनात् = मम कथनानुसारेण
(in my words), कालपाशिको दण्डपाशिकश्च = दूतद्वयम् (Kalpasika and
Dandapasika), उच्यताम् = अभिधीयताम् (tell), शीघ्रम् = द्रुतम् (quick),

शिष्यः—यदाज्ञापयत्युपाध्यायः । श्रेष्ठिन्, इत इतः ।

चन्दनदासः—आर्य अयमागच्छामि । (स्वगतम्) दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विनारो न पुरुषदोषेण । (अत्र अयमागच्छामि । दिष्टिआ मित्तकलेण मे विपासो ण पुरिसदोसेण ।)

(परिक्रम्य शिष्येण सह निष्क्रान्तः)

चाणक्यः—(सहर्षम्) हन्त लब्ध इदानीं राक्षसः । कुतः ?

अयम् = एवः (this), दुष्टवणिक् = दुष्टवैरवः (wicked merchant), निगृह्यताम् = दण्डयताम् (be punished), अथवा = वा (or), तिष्ठतु (stay), दुर्गपालको विजयपालकः = उभौ दूतौ (both the keepers), उच्यताम् = कथ्यताम् (tell), गृहीत-गृहसारम् = आर्यप्रीकृतसद्नधनारूपम् (seized the valuables in his house), एनम् this one), सपुत्रकलत्रम् = पत्नीपुत्रसहितम् (with his wife and the son), सयन्म = बद्ध्वा (bound), तावत् = तावत्कालम् (until), रक्ष = रक्षाय (keep), यावन्मया (by me), वृषलाय वुन्यते = मौर्याय निवेज्यते (report is made to Vrishala), वृषल एव = मौर्य एव (Chandragupta himself) अस्य = चन्दनदासस्य (Chandandasa's), प्राणहरम् = जीवनाशकम् (the sentence of death), दण्डम् = निग्रहम् (punishment), आज्ञापयिष्यति = विधास्यति (will pass).

शिष्यः—उपाध्यायः = आचार्यः (preceptor), यदाज्ञापयति (as command), श्रेष्ठिन् (O merchant), इत इतः (This way O merchant this way).

चन्दनदासः—आर्य = मान्य (Noble sir), अयमागच्छामि (I am coming), [स्वगतम् (to himself)], दिष्ट्या = भाग्येन (luckily) मे विनाशः = ममपापः (my death), मित्रकार्येण = सुहृद्व्ययोजनेन (in friend's cause), न = नहि (not), पुरुषदोषेण (through human failings), [परिक्रम्य शिष्येण सह निष्क्रान्तः (Exit with pupil)]

चाणक्यः—[सहर्षम् = सनुदम् (with glee)], हन्त (Ha), लब्धं = प्राप्तं (secured), राक्षसः (Rakshasa), इदानीम् = सामयतम् (now), कुतः How:—

हिन्दी—चाणक्य—(कोषपूर्ण करद्वय, दुष्टवणिक् राजकोष का कल भोगी ।

चन्दनदास—नैवार हू । श्रानान् अपने अधिकार के अनुरूप कार्य करें ।

चाणक्य—शास्त्रव्य, मेरा ओर से कालराक्षिक एव एण्डपाक्षिक से कहो—शीघ्र हो इस दुष्ट वणिक् को पकड़ के अथवा—दुर्गपाल एव विजयपाल से कहो कि जब तक मेरे कहने पर इसे राजा के द्वारा प्राणक्षण्ड न दिया जाय तब तक इसकी सारी सम्पत्ति छीन कर, इसे पत्नी और पुत्र के साथ बन्धक रखा जाय ।

शिष्य—जैसी आज्ञा आपकी आचार्य ! इधर से आइय सेठ जी, इधर से ।

चन्दनदास—आर्य मैं आ रहा हू । (स्वगत) सौमान्य से मित्र कार्य से मेरा विनाश हो रहा है न कि अपने दोष से ।

त्यजत्यन् प्रियवत्प्राणायथा तस्यायभापदि ।
तथैवास्यापि प्राणा नूनं तस्यापि न प्रिया ॥ २४ ॥

(घूम कर शिष्य के साथ निकल गया)

चाणक्य—(प्रसन्नता से) अब राक्षस पकड़ में आ गया । क्योंकि—

English—*Chanakya*—(In anger) oh villain wicked merchant then feel the wrath of the king

Chandandas—I am ready Let your Honour do as befits your post

Chanakya—Sharngrava, say in my words to Kalpasika and Dand pasika Let this wicked merchant be punished immediately Or wait Let Vijayapal the jail superintendent be told-keep this one with his wife and son bound the valuables in his houses seized until report is made by me to Chandragupta, who himself will pass the sentence of death upon him

Pupil—As preceptor command, O merchant this way

Chandandas—I am coming sir, (to himself) Fortunately my death would be in friend's cause and not for any fault of mine, common to man [Exit with pupil]

Chanakya—(With joy), Ha, Now Rakshasa is in my hand For

विमला

अथवा—यथा, तस्य भापदि, अयम्, प्राणान्, अप्रियवत्, त्यजति, तथा एव, अस्य, आपदि, तस्य, अपि, प्राणा, नूनम्, न, प्रिया ॥ २४ ॥

व्याख्या—यथा=येन प्रकारेण (Just as), तस्य=राक्षसस्य (Rakshasa s), आपदि=विपत्तौ (in distress) अयम्=चन्दनदास (this) प्राणान्=अमृत (life), अप्रियवत्=अप्रियवस्तु इव (as a hated thing), त्यजति=जहाति (sacrifices), तथा=तेन रूपेण (in the very same way), एव=हि (indeed), अस्य=चन्दनदासस्य (chandandasa s), आपदि=विपत्तौ (in calamity), तस्य=राक्षसस्यापि (Rakshasa's too), प्राणा=असव (life), नूनम्=अवरयमेव (surely) न प्रिया=न रक्षणीया भविष्यन्ति (will not be agreeable) ॥ २४ ॥

हिन्दी—जिस प्रकार उस राक्षस की विपत्ति में यह अपने प्राणों को अप्रिय वस्तु की तरह त्याग रहा है निश्चय ही हमारी विपत्ति में उसको भी अपने प्राण अप्रिय होंगे २५ ॥

English—Just as this one sacrifices his life as a hated thing, in this very same way, when he is in calamity, surely life will not be agreeable to him also 24

टिप्पणी—रस नोक में जेने चन्दनदास राक्षसकृत्य के रक्षणार्थ प्राणत्याग करने के लिए समुपन है उसी प्रकार चन्दनदास के उद्धार के लिए निश्चय ही राक्षस भी अपने प्राणों को समर्पित

(नेपथ्ये कलकलः)

चाणक्यः—शार्ङ्गरेव, शार्ङ्गरेव !

(प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय, आज्ञापय ।

चाणक्यः—ऋमेव कलकलः ।

(निष्क्रम्य, विभाज्य पुनः प्रविश्य)

शिष्यः—उपाध्याय एष सन्तु शकटदास वध्यमान वध्यभूमेरादाय सम-
पन्नान्तः सिद्धार्थकः ।

चाणक्यः—(स्वगतम्) साधु सिद्धार्थक, कृतं कार्यारम्भ ! (प्रकाशम्)
प्रसह्य क्षिप्तपन्नान्तः, (मन्त्रोधम्) वत्स उच्यता भागुरायणो यथा त्वरित
समायेति ।

(निष्क्रम्य प्रविश्य च)

शिष्यः—(मरिषाडम्) उपाध्याय, हा धिक् कष्टमपन्नान्तो भागुरायणोऽपि ।

करा, ऐसा भाव रहने के कारण उल्लेख अलंकार है । क्योंकि यहाँ उल्लेखोक्ति के चरित्र की
समावना है और समावना निम्न और संदेश की स्थिति है । इस प्रकार यहाँ उच्यते और
जनान की समावना के कारण उल्लेखालङ्कार है । यथा—समावनेनपथ्येष्टा प्रहृतस्य परेण
यत्' (का० प्र०)

इसी प्रकार यह उक्तता तरह और वह इसका तरह मात्प्राय करण—ऐसा कहने से परस्पर
वननानोनेनभाव रहने के कारण उचना अलंकार भी है । जैसे—‘उभयोः समानमेक गुणादि-
सिद्धं मन्त्रोधमेकत्र’ अर्थ अन्यत्र तथा नाप्यते सोमा—काम्यालङ्कार । इसने वैदनी राति,
प्रसाद हुआ एव अनुदुम् छन्द है ।

निमला

[नेपथ्ये कलकलः = (Noise behind the stage)]

व्याख्या—चाणक्यः—शार्ङ्गरेव, शार्ङ्गरेव = वत्स (O Sharngrava, Sharngrava.
[प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा (Entering)]

शिष्यः—उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), आज्ञापय = आदेश देहि (Let
command).

चाणक्यः—ऋमेव कलकलः (What noise is this)

शिष्यः—[विभाज्य = क्वचित् विचार्य (noticing)], उपाध्याय = आचार्य
(Preceptor), एष = अयम् (this), सिद्धार्थकः (Sidharthaka), वध्यभूमेः =
प्राणदण्डस्यानात् (from the place of execution), वध्यमानम् = सयम्यमानम्
(was to be killed), शकटदासम् = तदामानम् कायस्थम् (to Sakatdasa),
आदाय = गृहीत्वा, अपन्नान्तः = पलायितः (has escaped).

चाणक्यः—[स्वगतम् (To himself)], साधु सिद्धार्थक (Well done
Sidharthaka), कार्यारम्भः = अम्यादानम् कृतः विहितः (the beginning of the

चाणक्य — (स्वगतम्) ब्रजतु कार्यसिद्धये । (प्रकाशम्, सक्रोधमिव) वत्स,

work is made), [प्रकाशम् (Aloud)], प्रसह्य = हठात् (by force), किमपक्रान्त = किम् पलायित (what has he gone away), [सक्रोधम् = सक्रोधम् (in anger)], वत्स = पुत्र (child), उच्यताम् = अभिधीयताम् (say), भागुरायणम् = तत्प्राप्तकदूतम् (to Bhagurayan), यथा त्वरितम् = शीघ्रम् (should immediately), सभावय इति = निगूह्य आनय इति (overtake him)

[निष्क्रम्य (having gone out), च = पुन (and) प्रविश्य = (reentering)]
शिष्य — [सविषादम् = सखेदम् (sorrowfully)], उपाध्याय = आचार्य (Preceptor), हा धिक बहम् = हा दु खम् (Alas, what a misfortune), भागुरायणोऽपि (Bhagurayan too), अपक्रान्त = पलायित (has run away)

हिन्दी — (नेपथ्य में कोलाहल)

[चाणक्य—शाङ्गरव, ओ शाङ्गरव । (प्रवेश करके)

शिष्य—गुरुदेव, आज्ञा दीजिए ।

चाणक्य—यह कैसा कोलाहल है ?

शिष्य—(निकल कर पुन प्रवेश कर) आचार्य, यह सिद्धार्थक वधभूमि से बच किये जाते हुए शकटदास को लेकर भाग गया ।

चाणक्य—(अपने आप) सिद्धार्थक ने अपना काम आरम्भ कर दिया है । (प्रफट रूप में) क्या, अचानक लेकर भाग गया ? (क्रोध के साथ) वत्स, भागुरायण से जारर कहो—शीघ्रतः शीघ्र उसे पकड़ने का प्रबन्ध करो ।

(निकल कर पुन प्रवेश कर)

शिष्य—(खर के साथ) आचार्य, हाय बड़ा दुःख है, भागुरायण भी भाग गया ।

(noise behind the scenes)

English—Chanakya—Sharngrava, O Sharngrava (entering)

Pupil—Let Preceptor command

Chanakya—What noise is this ?

Pupil—(Noticing) Preceptor, here has Sidharthaka escaped from the place of execution having carried with him Sakatdasa who was going to be killed

Chanakya—(To himself) Well done, Sidharthaka the beginning of the work is made (Aloud) what has he gone away by force ? (angrily) child, tell Bhagurayana that he should overtake him immediately

Pupil—(Going out and reentering) Alas, sir what a misfortune ! Bhagurayan also has run away.

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[स्वगतम् (To himself)], कार्यसिद्धये = कृत्यसम्पादनाय (for success in the work), ब्रजतु = गच्छतु (Let him go), [प्रकाशम् =

उच्यन्तामस्मद्वचनाद्भद्रभट - पुरुषदत्त - डिङ्गरात - बलगुप्तराजमेन - रोहिताक्ष-
विजयवर्माणां शीघ्रमनुमृत्य गृह्यतां दुरात्मां भागुरायण इति ।

शिष्यः—तथा । (इति निष्क्रम्य पुनः श्रमिष्व नमिषादम्) हा विद्,
कष्टं सर्वमेव तन्ममाकुलीभूतम् । तेषां सन्तु भद्रभटप्रभृतयः प्रथमतस्तुपत्यै-
वापक्रान्ताः ।

चाणक्यः—(स्वगतम्) सर्वेषामेव शिष्याः पन्थानः सन्तु । (प्रचारान्)
यन्म. अल दिपादेन । पश्य—

मुस्पष्टम् (Aloud), मक्रोपनिष=सक्रोपनिष (as if in anger), वस=पुत्र
(child), अस्मद्वचनात्=महास्वयानुसारेण (in my words), उच्यन्ताम्=अभि-
धीयन्ताम् (to say), भद्रभट=Bhadrabhatta, पुरुषदत्त=Parushdatta,
डिङ्गरात=Dingarata, बलगुप्त=Balagupta, राजमेन=Raj-en, रोहिताक्ष=Rohi-
taksha, विजयवर्माणां=Vijayaverman, शीघ्रम=द्रुतम् (quick), अनुमृत्य=
सन्निपत्य गच्छा (Pursue), निगृह्यमान् (arrest), दुरात्मा=दुष्टदयः (villain),
भागुरायणः=Bhagurayana.

शिष्यः—तथा (so be it). [इति निष्क्रम्य पुनः श्रमिष्व सविषादम् (going
out and re-entering sorrowfully)], हा=वेदे, विद्=दुःखम्, कष्टम्=
क्लेशम्=Alas, what a calamity सर्वमेव=सकलमेव (The whole)
तन्मम्=प्रजासमूहम् (machinery), आकुलीभूतम्=पीडितम् वर्तते (is in
confusion), तेषां भद्रभटादयोऽपि (They too Bhadrabhatta and others),
प्रथमतस्तुपत्यै=(The first), उपत्यै=प्रभात एव (this morning), अपक्रान्ताः=
पलायिताः (ran away).

चाणक्यः—[स्वगतम्=अस्माकम् (To himself)], सर्वेषां (In all respect)
पन्थानां=मार्गाः (their way), शिवम्=कल्याणम् (prosperous), सन्तु=नवन्तु
(be), [प्रचारान्=मुस्पष्टम् (Aloud)], वस=पुत्र (the son) दिपादेन=वेदेन
बलम्=स्वयम् (do not be dejected), परम्=अवलोक्य (see).

हिन्दी—चाणक्य—[अपने भाव] वे सब चाणक्यके के लिए कहें । (प्रष्ट रूप में नाना
शब्द के साथ) वस, मेरी बेटी से भद्रभट, पुरुषदत्त, डिङ्गरात, बलगुप्त, राजमेन, रोहिताक्ष
और विजयवर्मा से कहो कि आज रात कर उस नाच को बहुत है ।

शिष्य—जैसा जन्म (कष्ट वा कष्ट और छि दुःख के साथ) हा, हा कष्ट है, पूरा
दुःख हो अन्तर्भव हो गया । वे भद्रभटदि आ आते रहते दुःख में ही रहित नुहें है ।

चाणक्य—[अपने भाव] पर सर्वेषां कल्याण हो (प्रष्ट रूप में) बल, लक्ष करना
वर्ष है । देखो—

English—Chanakya—(To himself) let him go for success in the
work. (Aloud as if in anger) Child, say to Bhadrabhatta, parush-
datta, Dingarata, Balagupta, Rajena, Rohitaksha and Vijayaverman

ये याता. किमपि प्रघार्य हृदये पूर्व गता एव ते

ये तिष्ठन्ति भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमा ।

एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका

नन्दोन्मूलनदृष्टीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥ २५ ॥

that I command them to pursue the villain Bhagurayana and arrest him quickly

Pupil—So be it (going out and re entering with sorrow) Alas, what a calamity ! oh, the whole machinery is in confusion, they too Bhadrabhatta and others were the first to go away this morning

Chanakya—(To himself) In all respects their way may be prosperous (Aloud) Child, do not be dejected See —

विमला

अन्वय —ये, किमपि, हृदये, प्रघार्य, याता, से पूर्वम्, एव, गता, ये, तिष्ठन्ति, ते, अपि, कामम्, गमने, प्रकामोद्यमा, भवन्तु, तु, साधनविधौ, सेनाशतेभ्यः, अधिका, नन्दोन्मूलनदृष्टीर्यमहिमा, केवलम्, एका, मम, बुद्धि एव, मागात् ॥ २५ ॥

व्याख्या—ये = भागुरायणादयः जनाः (those), किमपि = मदिष्टमनिष्ट वा (some scheme), हृदये = मनसि (at heart), प्रघार्य = विचार्य (having formulated), याता = गता (have gone), से = जनाः (they), पूर्वमेव = हृदये प्रधारणसमये एव (before it), गता = याता (has already gone), ये = जनाः (those), तिष्ठन्ति = अत्र वर्तन्ते (still remain), तेऽपि = ते जना अपि (they also) कामम् = पथेऽद्यम् (by all means), गमने = नि सरणे (In going), प्रकामोद्यमा = प्रयत्नशीला (try), भवन्तु = सन्तु (be), तु = किन्तु (but), साधनविधौ = कार्यसम्पादने (in the accomplishment of desired objects), सेनाशतेभ्यः = शतसेनाभ्यः (a hundred armies), अधिका = श्रेष्ठा (more than), नन्दोन्मूलनदृष्टीर्यमहिमा = नन्दविनाशे प्रत्यक्षीकृतशक्तिप्रभावा (power was witnessed at the extirpation of the Nanda), केवलमेका = अद्वितीया (by itself), मम = चानक्यस्य (Chanakya s), बुद्धि = मति (my intellect), एव (only), मागात् = न गच्छतु (not forsake me), ॥ २५ ॥

हिन्दी—जो भागुरायणादिक हृदय में कुछ रखकर गये हैं, वे पहले ही जा चुके हैं। जो लोग ठिके हैं, वे भी अपनी इच्छा के अनुसार जाने के लिए प्रयत्नशील हैं। किन्तु, कार्यसाधन विधि में निपुण सेवकों सेना से अधिक, नन्दों के विनाश में प्रदर्शित कर चुके हैं अपनी शक्ति की महिमा जिसने ऐसी केवल मेरी बुद्धि मुझसे अलग न जाय ॥ २५ ॥

English—Those that have left cherishing something at heart, are indeed gone beforehand, let those also who still remain, by all means try to go away, just as they live Let only my intellect,

(उवाच) एष दुरात्मनो भद्रभटप्रभृतीनाहरामि । (प्रत्यक्षवाद्यरो लक्ष्यं बद्ध्वा, आत्मगतम्) दुरात्मन् राक्षस, क्वेदानीं गमिष्यसि । एषोऽहमचिराद्भवन्तम्—

स्वच्छन्दमेकचरमुज्ज्वलदानशक्ति-
मुत्सेकिना मदयलेन विगाहमानम् ।
बुद्ध्या निगृह्य वृषलस्य कृते क्रियाया-
मारयण्यकं गजमिव प्रगुणीकरोमि ॥ २७ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति मुद्रालामो नान प्रथमोऽङ्कः



which by itself is more than a hundred armies in the accomplishment of desired objects and the greatness of whose prowess was seen in the destruction of the Nandas, not forsake me. 26.

टिप्पणी—'किञ्चिद्' से तात्पर्य हुआ कि मैं कि नागने वाले पक्षे वदेरन देकर गये हैं जो मेरे सिन और कोर नहीं जानता। नागाद—'नाकि दुष्' पा० नू० १।१।१७१ और 'न नाह योग' पा० सू० ६।४।७५ से मृत् के कागज का निषेध है। यहाँ सकल कार्य सम्पादन में हेतुभूत बुद्धि का वातनाशरहित स्वरूप होने के कारण वास्तविक बलधार है और सेनासदस्य बनमान बननेभूत बुद्धि के आधिक्य प्रतिपादन से व्यतिरेक बलधार है। पुनः दोनों का सम्मिलन रहने के कारण सत्पुष्टि बलधार हुआ। क्योंकि यहाँ टिलकपुत्र की तरह दो स्वयं बलधार निवेष्टे हैं। इसका उद्धरण है—“संश्रु संसृष्टिरेषाम् भेदेन यदिह स्थितिः” एतने वाच्य सीते है, जोब हुआ है तथा गार्हपत्यिकारित छन्द है।

निनला

व्याख्या—[उवाच आकाशे लक्ष्य बद्ध्वा=Rising and fixing his gaze in the sky], एष=असौ (This), दुरात्मनः=वीरान् (viles), भद्रभटप्रभृतीन् (Bhadrabhatta and others), आहरामि=(I bring back), [आत्मगतम्=(To himself), दुरात्मन् (O vile), राक्षसः=(Rakshasa), इदानीम्=अनुना (now), क्व=कुत्र (where), गमिष्यसि=यास्यामि (will go), एषोऽहम् (here I), अचिरात्=सोमन् (ere long), भवन्तम्=त्वाम् (to you).

अन्यथाः—उज्ज्वलदानशक्तिम्, एकचरम्, स्वच्छन्दम्, उत्सेकिना मदयलेन, विगाहमानम्, आरयण्यकम्, गजम्, द्वय, बुद्ध्या, निगृह्य, वृषलस्य कृते, क्रियायाम्, प्रगुणीकरोमि ॥ २७ ॥

व्याख्या—उज्ज्वला=प्रसिद्धा, प्रशसनीया वा दानशक्ति वितरण—सामर्थ्यम् गजपदे मदपरण-सामर्थ्यम् यस्य तयोक्तम् (brilliant powers of gift), एकचर = स्यक्तस्वजनवर्गं गजपदे स्यक्तयूथं सन् (all alone), स्वच्छन्दम्=निरङ्कुशम् (boastful), उत्सेकिना=गर्वहेतुना, मदबलेन=दर्पप्रभावेण गजपदे मदजल प्रभावेण (strength of pride), विगाहमानम् अस्मद् विनाशाय चेष्टमानम्, गजपदे सरसि अरण्ये वा आलोढनम् कुर्वन्तम् (wandering), आरण्यकम्=व-यम् wild), गजम्=हस्तिनम् (elephant), इव=यथा (just as) बुद्ध्या=नीतिनिपुणया (with brilliant), निगृह्य=सकृद्य (should catch) वृषलस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta), कृते=अर्थ (for), क्रियायाम्=मन्त्रिकार्यं गजपदे भारवहन कर्मणि (ready to work), प्रगुणीकरामि=वशोक्तेमि गजपदे काय योजयामि (I will render) ॥ २७ ॥

(इति निष्क्रान्ता सर्व) (Exeunt omnes)

प्रथमोऽङ्क समाप्त (End of act I)

हिन्दी—(उठकर आकाश की ओर देखकर) यह मैं उस दुष्टाना भद्रभट प्रभृति को पकड़ता हूँ । (अपने आप) दुरात्मन् राक्षस, अब कहाँ भागेगे ? यह मैं भी शीघ्र ही तुमको—

प्रशसनीय दानशक्तिवाल, गजपक्ष में प्रशस्त मदजल बहानेवाल, अपने वर्ग को छोड़कर अकेले घूमनेवाले, स्वच्छन्द मतवाला बना देनेवाले दर्प के प्रभाव से गजपक्ष में—मदनल के प्रभाव से हमारे पक्ष को बिनष्ट करने की चेष्टा करनेवाले—गजपक्ष में आलोढन करनेवाले, जगदी हाथी के समान, बुद्धि से वशवर्ती बनाकर चन्द्रगुप्त के लिए मजो कार्य में, गजपक्ष में—भार ढोने के कार्य में इठाव, गजपक्ष में बाँधकर लगाता हूँ ॥ २७ ॥

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं)

सुद्राक्षस नामक प्रथम अङ्क समाप्त

21/11/2019

English—(Rising and fixing his gaze at the sky) Here I bring back vile Bhadrabhatta and others (To himself) wicked Rakshasa where will you escape now ?

❑ evil Rakshasa, where can you go now? Here shall I arrest you by my intellect and make you to serve Vrishala, as you are doing alone on your choice. Whose strength to defend is great and who are laying out deep position in your profuse pride, similarly as one should catch by device and make to serve a wild elephant, who wanders all alone in freedom, who has a great power to cast rut and who rambles through the high spirits of strength of youthful power.

टिप्पणी—गजमिव भवन्तं प्रगुणीकरोमिः—इमं श्लोक का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मदनस जगली गन्धराज पुक्ति से फकट कर भारवाहक बनावे जाने हैं उसी प्रकार मोनि से तुन्दों भी वसुवर्त्तों बनाकर चन्द्रगुप्त का मन्त्रिपद स्वीकार करने के लिए विरस कर देंगा । **एकचरम्**—इमं शब्द का तात्पर्य यह है कि राजा नन्द से सम्बन्धित होने के कारण हम मना एक हैं, केवल तुम्हें एक देने हो जो अपने परिवार को भी छोड़कर अलग भूम रहे हो । **विगाहमानम्**—वि+√वाह+मानच् से विभक्त्यादि कार्य कर रूप सम्भव है । **आरण्यकम्**—अरण्य+कुन् से विभक्त्यादि कार्य कर रूपसिद्धि है ।

इमं श्लोक में श्लेषनूतक करना अच्छा है । यहाँ अन्य हाथी के साथ राक्षस की तुलना की गयी है । दोनों में एक दूसरे के साथ साहचर्य की स्थापना की गयी है । साहचर्य के कारण हमने जो मीन्द्रशानुभूति होती है उसी की प्रधानता है । चायों कहें गजवर्त्त का राक्षस के साथ साहचर्य ही करना के प्राण है । इमना लड़ा काव्यप्रकाश में कहा गया है—‘साधर्म्य-सुवमाभेदे ।’ इमं श्लोक में वैदर्भी रीति है, मोज गुण है एवम् वगन्ततिलका वृत्त है । ‘जेया वसन्ततिलका तभजा जगी म.’

मुशराक्षस प्रथम अङ्क की ‘विमला’ व्याख्या समाप्त ॥



द्वितीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशत्याहि तुण्डिक)

आहितुण्डिक—

जानन्ति तन्त्रयुक्तिं यथास्थितं मण्डलमभिलिखन्ति ।

ये मन्त्ररक्षणपरास्ते सर्पनराधिपात्रुपचरन्ति ॥ १ ॥

(जाणन्ति तन्त्रयुक्तिं जहद्विअ मण्डल अहिलिहन्ति ।

जे मन्त्ररक्षणपरा ते सप्पणराहिवे उवचरन्ति ॥)

प्रिमला

ततः = तत्पश्चात् (after that), प्रविशति (enter), आहितुण्डिक (Snake catcher), आहितुण्डिकः = सर्पक्रीडनोपजीवी, धर्म (Snake catcher) —

अन्वयः—ये, तन्त्रयुक्तिम्, यथास्थितम्, जानन्ति, मण्डलम्, च, अभिलिखन्ति, मन्त्ररक्षणपरा, ते, सर्पनराधिपौ, उपचरन्ति ॥ १ ॥

व्याख्या—ये=नरा (those who) तन्त्रयुक्तिम्=औषधस्योपायम् राजपक्षे
स्वराष्ट्रचिन्तनस्योपायम् (१—the application of antidotes, २—The
judicious management of state affairs, administration of one's own
state), यथास्थितम्=यथावत् (properly), जानन्ति=विदन्ति (know),
मण्डलम्=वर्तुलाकारं महेन्द्रादिदेवतायन्त्रम्, राजपक्षे—द्वादशविधराजमण्डलम् अथवा
सप्तमहत्तिकम् राष्ट्रम् (१—in the case of the snake means the enchanted
circle which a serpent-charmer draws round a snake to keep it
within limits, २—in the case of the king this may mean the circle of
the constituent parts of a kingdom, or the band of twelve kings),
च=अपि (also) अभिलिखन्ति=भूमौ अङ्कयन्ति, राजपक्षे—विचारयन्ति (draws
round on earth or properly mark out) मन्त्ररक्षणपरा = मन्त्रैः = गहदादि
मन्त्रैः यत् रक्षणम्, आत्मरक्षणम्, तदेव परमप्रधानम् ययाम् तादृशा, राजपक्षे—
मन्त्राणाम् गुप्तमन्त्राणाम्, रक्षणे, आपने, परा = तत्परा (devoted to the
observance of spells, or—versed in preserving state secrets), ते=
तादृशा जना (those), सर्पनराधिपौ=सर्पश्च नराधिपश्च, सर्पनराधिपी उपचरन्ति=
व्यवहरन्ति (१—prescribe remedies २—deal with, serve) ॥ १ ॥

हिन्दी—सर्प के पक्ष में—जो सर्पोंधि की युक्ति से परिचित है, जो महेन्द्रादि देवताओं
के मण्डल को चित्रित करने में समर्थ है, तथा गहदादि मन्त्रों के द्वारा आत्मरक्षण में उत्तर है—
ये ही सर्प के साथ व्यवहार करने में समर्थ ॥ १ ॥

(आचर्यो) आर्य, किं त्वं भणसि कस्त्वनिति । आर्य, अहं खनु आहितुण्डिओ जीर्णविषो नाम । किं भणामि अहमपि अहिना खेलितुनिच्छामि । (अत्र किं तुमं भणसि ओ तुमं त्ति । अत्र अहं खनु आहितुण्डिआ विण्णविसो णाम । किं भणामि । अहं पि अहिणा खेलिटुं इच्छामि त्ति ।)

सुभाभे पञ्च नै—ओ राष्ट्रचिन्तन का दुष्टियों से परेचित है, जो मानविक राजचक्र का वृत्तचक्र सामाज्य से बाहर नहीं होने देत, तथा जो राजकायवैयक्तिक लक्ष्यमात्रों को दूर रखने में तयार हैं, वे हा किता राजा के साथ व्यवहार करने में समर्थ हैं ॥ १ ॥

English—In the case of the snake means :—

Those who know the application of antidotes, who draw the enchanted circle in the right way, and who are devoted to the observance of spells can deal with a snake.

In the case of the king :—

Those who are conversant with the plans or policy to be followed in the administration of a kingdom, who prescribe the proper course of conduct for or properly mark out i. e. hold in check, the circle of king, and who are versed in preserving state secrets, can manage a king to be cautiously approached like a snake, I.

टिप्पणी—आहितुण्डिओ—सँपेरा—अहं=सर्पस्य, गुण्डेन=गुह्यतः, दाव्यादि=कायार्थ, अहि आहितुण्डिओ । आहितुण्डिओ त्वं ते 'टक्' प्रत्यय, पुनः विनस्त्यदि कार्यं ते सन्तुष्ट रूप 'आहितुण्डिओ' है । नाटक में यह पात्र राजस का दुष्टपर है तथा इसका नाम विराट्पुत्र है । सँपेरे के रूप में इसका नाम आभिवेष है ।

मण्डलम्—इस शब्द का दो अर्थ हैं (१) तैररा बना खल दिखाने के पूर्व नम्र पञ्चर बायों ओर एक गड्ढा खोद देना है; दूसरा यह कि सर्प वृक्ष से बाहर नहीं जा सके (२) १२ राष्ट्यों के समूह को ना मण्डल कहत है । इस प्रथम श्लोक के अन्तिम शब्द दिष्ट है विनके दोनो अर्थ हैं । एक तैररा के अर्थ में और दूसरा राजनीति के अर्थ में । साहचर्यपूर्ण गन्तारान्य अन्तर्गत होने के कारण इस श्लोक में तुल्यवर्गता अच्छा है । क्योंकि एक ही वाक्य में अनेक उदाहरणों का वर्णन कर नाटककार ने एक वर्णानुसृत्य स्थिति बनाई है । काव्यालङ्कार में इसका उदाहरण है—“विशिष्टेन साम्प्रार्थनिककालिक्रियारोपस्तुत्ययोगिता” वैदर्भा राजे है, प्रसाद दुःख एव 'अना' शब्द है ।

निमला

व्याख्या—[(आकाशे=से At the sky)] आर्य=मान्य (Noble sir),—खनु=भवान् (you), किं (what), भणसि=कथयसि (do ask),—‘कस्त्वनिति’=किनान्वेषस्त्वम् (who are you), आर्य=मान्य (sir), अहम् (I), सत्तु=निश्चयः (Indeed), आहितुण्डिओ=सर्पक्षेपोपजातो (Snake-bearer), जीर्णविषो नाम=जीर्णविषनाम्ना प्रसिद्धः (Jurnavisha by name), किं भणसि=किम् कथयसि (what say you),—अहमपि (I too), अहिना=सर्पेण (with snake), खेलितुम्=

अथ कतरा पुनरार्यो वृत्तिमुपजीवति । किं भणसि राजकुलसेवक इति । ननु खेलति एव आर्योऽहिना । कथमिव । अमन्त्रौपधिकुशलो व्यालप्राही प्रमत्तो मतङ्गजारोही लब्धाधिकारो जितकाशी राजसेवक इत्येते त्रयोऽप्यवश्य विनाशमनुभवन्ति । कथं दृष्टमात्रोऽतिश्रान्त एषः । (पुनरावाशे) । आर्य, किं त्वं भणसि किमेतेषु पेटकसमुद्गमेष्विति । आर्य, जीविकायाः सम्पादकाः सर्पाः । किं भणसि प्रेक्षितुमिच्छामीति । प्रसीदत्वार्यः अस्थानं खलु एतत् । तद्यदि कौतूहलं एहि एतस्मिन्नावासे दर्शयामि । किं भणसि इदं खलु भर्तुरमात्यराक्षसस्य गृहं

क्रीडितुम् (to play), इच्छामि=चान्क्षामि (wish), अथ=अनन्तरम् (well), पुनः आर्यः=भवान् (Noble sir), कतराम्=काम् (what), वृत्तिम्=जीविका (Profession), उपजीवति=समवलम्बते (follow), किं भणसि=किं कथयसि (what do you say),—राजकुलसेवकोऽस्मिन् नृपान्वयाश्रितः (an attendant at the royal household), ननु=निश्चयार्थकः (Indeed), आर्य=पूज्यः (Noble sir), अहिना=सर्पेण (with snake), खेलति एव=क्रीडत्येव (is playing already), कथमिव=केन प्रकारेणेति (how), अमन्त्रौपधिकुशलः=मन्त्राश्रयधयश्च मन्त्रौपधयः तासु कुशलः निपुणः मन्त्रौपधिकुशलः न मन्त्रौपधिकुशलः अमन्त्रौपधिकुशलः, मन्त्रेषु=गान्धादिकेषु, भोपधिषु=ईश्वरमूलकादिषु चात्रः (Not versed in mantra and herbs), व्यालप्राही=व्यालोपजीवी (The Snake charmer), मत्तः=प्रमत्तः (without the knowledge of restraining), मतङ्गजारोही (one who mounts on an intoxicated elephant), लब्धाधिकारः=प्राप्ताधिकारः (invested with authority), जितकाशी=जयोद्धतः (proud of his success) राजसेवक=नृपपरिचारकः (the king's servant), एते त्रयः=(these three), अवश्यम्=निश्चितम् (surely), विनाशम्=मृत्युम् (death), अनुभवन्ति=प्राप्नुवन्ति (suffer), कथम्=केन प्रकारेण (how), दृष्टमात्रोऽतिश्रान्तः=दर्शनप्राप्तोऽतिश्रान्तः (has vanished as soon as seen), एषः=आकाशस्थ पुरुषः (this), [पुनरावाशेः (Again at the sky)], आर्य किम् त्वम् भणसि (What does your Honour say),—एतेषु दृश्यमानेषु (in these), पुटसमुद्गमेषु=मन्त्रा-समुद्गमेषु (in covered baskets), आर्यः=मान्यः (sir), जीविकाया सम्पादकाः=वृत्तिनिर्वाहकाः (that give me a living), सर्पाः=श्वनिनः (Snakes), किं भणसि=किं कथयसि (what say you), प्रेक्षितुमिच्छामि=दृष्टुम् चान्क्षामि (I want to see them), आर्यः=मान्यः (sir), प्रसीदतु=प्रसन्नोभव (please excuse me), अस्थानं खलु एतत्=प्रेषणार्थं परवैतत् स्थानमयुक्तम् (this is really unsuitable place), तद्यदि=(If), कौतूहलम्=सर्पप्रीतावलोकनोरुकण्ठा (have curiosity), एहि=आगच्छ (come), एतस्मिन्नावासे=अयुस्मिन्गृहे (in this house), दर्शयामि=अवलोकयामि (I will show), किं भणसि (what do you say),—इदम् साक्षात्-

नास्त्यस्मादशानामिह प्रवेश इति । तेन हि गच्छत्वार्थः । मम पुनर्जीविकायां प्रसादेन अस्तीह प्रवेशः । कथमेयोऽपि अतिश्रान्तः । (अहं कटर उपाज्जो वित्ति उपाज्जिदि । किं भण्णसि राअडलसेयकोद्धि त्ति । ण खेलदि एत्थ अज्जो अहिणा । कहं पिअ । अमन्तोमहिउसलो वालग्गाही पनत्तो मतद्गआरोही लद्धाहिआरो जिदधानी राअसेयओ त्ति एहे तिण्णि पि अवस्स पिणासमणुओन्ति । कहं दिट्ठमेत्तो अदिक्कन्तो एत्तो । अज्ज किं तुम भण्णसि कि एदेसु पेडालसमुग्गएसु त्ति । अज्ज जीयिआए सपायआ सप्पा । किं भण्णसि पेक्खिदुमिच्छामित्ति । पत्तोइदु अज्जो । अट्ठाण तु एअ । ता इअ कोइहलं एहि एदस्सि आयासे वसेमि । किं भण्णसि एअ तु भट्ठिणो अमच्चरक्खसस्स गंहं पयि अस्सरिसाण इह पवेसो त्ति । तेण हि गच्छदु अज्जो । मम उण जीयिआए पसादेण अत्थि एत्थ पवेसो । कथं एसोपि अतिकन्तो ।)

हर्यमानम् (this is), स्रुतु=निश्चितम् (Indeed), भर्तु=स्वामिनः (his Lordship), अमात्यराक्षस्य (Minister Rakshasa), गृहम्=सदनम् (the house), अस्मादशानाम्=मद्भिषानाम् (people like us), इह=अस्मिन् गृहे (in this house), प्रवेश=आगम (admision), नास्ति=न विद्यते (have not), तेन=इतुना (then), हि=यतः, वार्य=भवान् (Noble sir), गच्छतु=प्रवतु (may take your departure), जीविकाया=वृत्ते. (profession), प्रसादन=उपायन (through), मम (my), इह=अस्मिन् गृहे (in this house), अस्ति प्रवेश=आगमनम् वर्तते (there is admision here), एयोऽपि=अयमपि (he too), कथम्=केन प्रकारेण (how), अतिश्रान्त=अन्तर्हित (has disappeared)

हिन्दी—(आकाश का ओर देखत हुए) कार्य, क्या पूछना चाहत हो ? मैं कौन हूँ ? मैं एक सर्परा हूँ, नाम है मेरा जाविश । कार्य, क्या पूछ रह हो ? “मैं साँ से खोजना चाहता हूँ” । तो कार्य तुम हो कौन ? मुझारा जाविका के साधन क्या हैं ? क्या कहा ? “राज कुल का सेवक हूँ” अब तो कार्य साँ से क्या हा रह हो । “कैसे” ? जन्म और मरण के नियम मैं अनमन्य करी, नदमच हाथ पर चलेवाला अन्तःकरण एक नहावत, कबिकार के नष्ट मैं कर बनादत एक राक्षसक—इन दोनों का मृत्यु अनपेक्षणी है । अरे, यह क्या ? एक मौल देखा नहा कि गायब । (फिर आकाश में) कार्य, क्या कहा आपने ? “रन बन्द पिरारियों में क्या है ?” कार्य मेरी जाविका के साधन नहीं हैं, क्या कह रह हो ? “देखना चाहता हूँ” कार्य, क्या करें, यह दिखाने को चाह नहा है । यदि उत्काठा है तो आओ, रस घर में दिखलाता हूँ । क्या कह रह हो ?—“यह स्वामी अनाथ राक्षस का घर है । इनारे बेटे लोगों का रस घर में प्रवेश नहीं है ।” ता अज्ज वओ । मेरा तो जाविका को कता से रस घर में ना प्रवेश है । क्या कह नौ चला गया ?

English—(At the sky) What do you ask me sir, “who I am ?” I am a Snake charmer, Jirnavisha by name Do you say ? That you too wish to play with a serpent ? Well, what profession does Noble

(स्वगतम्, सस्कृतमाश्रित्य) अहो आश्चर्यम् । चाणक्यमतिपरिगृहीत चन्द्रगुप्तमवलोक्य विफलमिव राक्षसप्रयत्नमगच्छामि । राक्षसमतिपरिगृहीत मलयकेतुमवलोक्य चलितमिवाधिराज्याच्चन्द्रगुप्तमवगच्छामि । कुतः ?

sir follow ? What do you say ? That you are an attendant at the royal household ? Well, Noble sir, is indeed playing with a Snake already You want to know, 'how ?' The Snake charmer not versed in mantras and herbs One who mount on an intoxicated elephant without the knowledge of restraining it and a servant of the king who brags of success on getting into office—These three surely suffer death Oh he has vanished from my sight the moment he was seen ! (again looking at the sky) Do you ask sir, 'what are in these covered baskets ?' The Snakes that give me a living Noble sir Do you say you wish to see them ? Please excuse me sir, this is really an unsuitable place. So if you have the curiosity, come, I will show them in this house. What does your Honour say ? "This is indeed the house of his lordship minister Rakshasa, there is no admission of people like us here" Then let Noble sir pass. By virtue of my profession there is admission for me here How now ? He, too, has gone away !

निमला

व्याख्या—(स्वगतम् सस्कृतमाश्रित्य = अनतिस्पष्ट 'वैवधानीमवलम्ब्य') (To himself, speaking in sanskrit)

अहो = विरमयसूचकम् (Oh), आश्चर्यम् = चिन्तम् (wonder), चाणक्यमतिपरिगृहीतम् = कीदृश्यसुद्विपरिचालितम् (guided by the intellect of chanakya), चन्द्रगुप्तम् = वृषटम् (Chandragupta), अवलोक्य = दृष्ट्वा (seeing), विफलमिव = वित्तमिव (as futile), राक्षसप्रयत्नम् (Rakshasa's attempt), अवगच्छामि = सम्भावयामि (I consider), राक्षसमतिपरिगृहीतम् = राक्षसबुद्ध्या परिचालितम् (by the counsel of Rakshasa), मलयकेतुम् (Malayaketu), अवलोक्य = दृष्ट्वा (seeing), चलितमिव = पृथग्भूतमिव (as almost deposed), अधिराज्यात् (from his supreme power), चन्द्रगुप्तम् = वृषटम् (Chandragupta), अवगच्छामि = सम्भावयामि (look upon), कुतः = (For) —

हिन्दी—

(अपने आप सस्कृत में)

केमा आश्चर्य है ? एक ओर अब चाणक्य की कृपापति वा अनुमरण करने हुए चन्द्रगुप्त को देखना है तो ऐसा लगता है मानो राक्षस के सारे प्रयत्न व्यर्थ होने जा रहे हैं । और दूसरी ओर, राक्षस की बुद्धि से परिचालित मलयकेतु को देखना है तो लगता है, चन्द्रगुप्त के परमाज्ञा से खड़े चले हों । क्योंकि—

क्षोण्डिल्यधोरञ्जनिवद्धमूर्तिं नन्ये स्थिरं मोर्यनृपस्य लक्ष्मणम् ।

उपायहस्तेरपि राक्षसेन विरुध्यनाणामिव लक्षयामि ॥ २ ॥

English— (To himself, speaking in Sanskrit)

Oh wonder ! seeing Chandragupta led by the intellect of Chanakya, I consider the attempt of Rakshasa to be futile; while seeing Malayketu guided by the counsels of Rakshasa, I look upon Chandragupta as almost deposed from his empire. For :—

टिप्पणी—भक्तों के बड़ा—से नाचनेवाले का नाम है। इन्हें ब्रह्म भक्तों का जोर देकर भक्तों का इस प्रकार बतों काटा है कि भक्तों का नाम ही है कि जोर उठते हैं वह का रहा है। नाच का यह एक ऐसा विधि है, जिसमें एक ही तन में भक्तों का पात्रों का वचन काटा है। उक्त उक्त—उक्त यह है कि यह उक्त तन एक उक्त काटे का पात्र है। उक्त उक्त का वचन काटा हुआ है, उक्त उक्त में काटा है। भावितान्ता—भावितान्ता का नाम भक्तिगत। 'राज' उक्त उक्त 'उक्त' उक्त उक्त, उक्त उक्त का नाम उक्त उक्त में भक्तिगत उक्त से उक्त उक्त का वचन काटा है।

बिनाला

अन्वयः—कैटिल्यधारनुनिचदमूर्तिम्, नीर्यनूरस्य, लक्ष्मीम्, स्थिराम्, मन्त्रं,
धरि राक्षसेन, उपायहस्तैः, निरूप्यमाजान्, इव, लक्ष्यं ॥ २ ॥

ध्यालया—चैतन्यस्य=ज्ञानस्य (Chanakya's), धा=बुद्धिः (the talent), सा एव रज्जु=बन्धनम् (Rope), तथा निवद्धा=सयता (tied down), मूर्च्छि=देहः (Form), नौर्धनृत्य=राज्यः चन्द्रगुप्तस्य (king Maurya's), लक्ष्मण=राज्यभिरम् (Royalty), स्थिरान्=निश्चलान् (as stable), मन्ये=मनावरामि (I consider), अत्र=तथा (but), राक्षसेन=भनात्पराक्षसेन (by Rakshasa), उपारहस्ते=मानदानादिकरकरेः (with his hands in the form of plans), निहृष्यमानान्=भ्रुकृष्यमानान् (being dragged), इव=यथा (as if), लब्धे=तर्कयामि (I consider)

हिन्दी—आत्म का कुदेवता रक्षा में वही सुरक्षित रात्रि में वही रक्षा का नरक
मन्त्र है। वही रात्रि के द्वारा वचनका हार्मो से खिन्ना जन्म दुःख दख रहा है। २॥

English—I consider the Royalty of king Maurya as stable with her form tied down by the rope in the form of Kautilya's wit. I also notice her as if being dragged along by Rakshasa with hands in the form of expedients ?

टिप्पणी—आनन्द—सामानाधिक उपाय काट करे गये हैं—साम, दान, भेद और
 उन्मत्त। “भेदो दण्डः सामं दानमिदुपायश्चतुष्टयम्” इस श्लोक में चतुष्टय नामों की रूप
 रचना का चिह्नित करने के लिये सामानाधिक उपाय के द्वारा उल्लेख किया गया है।

तदेवमनयो बुद्धिशालिनो. सुसचिवयोर्विरोधे सशयितेव नन्दकुललक्ष्मी ।

विरुद्धयोर्भृशमिव मन्त्रिमुखयो

महावने वनगजयोरिवान्तरे ।

अनिश्चयाद् गजवशयेव भीतया

गतागतैर्ध्रुवमिह खिद्यते श्रिया ॥ ३ ॥

तद् यावदमात्यराक्षसं पश्यामि । (इति परिश्रम्य स्थितः)

योंक यहाँ उपमा में ही उपमेय एवं उपमान में सादृश्य दिखलाया गया है। यद्यपि यहाँ आधार एक ही है—फिर भी उसी में उपमेय एवं उपमान का बोध होनेपर भी इसमें उपमान की प्रगति उत्कृष्ट रूप से हुई है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षा स्पष्ट है —“सभावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परेण यत्” काव्यप्रकाश। इसी प्रकार इस श्लोक में उपजाति छन्द है —“अनन्तरोदीरित-लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ता”

विमला

तत्=तस्मात्कारणात् (so), एवम्=इत्थम् (like this), अनयो=आणवय-राक्षसयो (these two), सुनयशालिनो=सुनीतिविदो (resourceful worthy), सचिवयो=अमात्ययो (ministers), विरोधे=वैरत्ये (in the conflict), नन्दकुल-लक्ष्मी=राज्यश्री (sovereign power), सशयिता इव=सन्देहाकुलेव (in suspense), लक्ष्यते=अवगम्यते (looks)

अन्वयः—महावने, वनगजयो, इव, मृशम्, विरुद्धयो, मन्त्रिमुखयो, अन्तरे, इह अनिश्चयात्, भीतया, गजवशया, इव, श्रिया, गतागतै, ध्रुवम्, खिद्यते, इव ॥ ३ ॥

व्याख्या—महावने=दुर्गमकानने (in a large forest), वनगजयो=वन्य-हस्तिनो (wild elephants), इव=यथा (like), भृशम्=अत्ययम् (fully), विरुद्धयो=प्रारब्धविरोधयो (opposed), मन्त्रिमुखयो=अमात्यप्रेष्यो (these two leading ministers), अन्तरे=मध्ये (between), इह=राजनीतिपुट्टे (here), अनिश्चयात्=अनिर्णयात् (through uncertainty) भीतया=व्रस्तया (frightened), गजवशया=हस्तिन श्रिया (a female elephant), इव=यथा (like), श्रिया=मौर्य-राज्यलक्ष्म्या (goddess of weath), गतागतै=गमनागमनै (crossing over and recrossing), ध्रुवम्=अवरयम् (sure), खिद्यते इव=विलक्ष्यते इव (the bewildered) 3

तत्=तस्मात्कारणात् (Therefore), अहम् (I), अमात्यराक्षसम्=राक्षसनाम मन्त्रिणम् (Minister Rakshasa), पश्यामि=प्रेक्षे (see)

हिन्दी—तो हम प्रचार इन दोनों बुद्धिवाली योग्य मंत्रियों में विरोध होने पर नन्दकुल की राजलक्ष्मी सदायश्चरन्ती हो गयी है।

जिम प्रकार महावन में दो जाती हाथियों के एक दूसरे से लड़ जाने पर बोर हथिनी, दोनों में किसी भी हार जान का निश्चय न कर पाने के कारण कभी एक के पास और कभी दूसरे के पास आती जाती शिथिल दिखाई पण्टी है, उसी प्रकार नदों की कुल्लुमान राज्यलक्ष्मी इन दोनों परस्पर विरुद्ध महामंत्रियों के बीच किसी एक की भी हार जान का निर्णय न कर

(ततः प्रविशन्वामनस्य पुनरेषानुगम्यमानः मचिन्नो राक्षसः ।)

गमनः—(नवाप्यन् ।) कष्ट भोः कष्टम् ।

वृष्णीनानामिव नीतिविक्रमगुणव्यापारशान्तद्विषां

नन्दानां विपुले कुलेऽकरुणया नीतिं नियत्या जयम् ।

चिन्तावेशसमाकुलेन मनसा रात्रिदिवं आप्रतः

सैवयं मम चित्ररुर्मरचना निश्चिं विना वतते ॥ ४ ॥

पान के करार बना सब के पान मँर बना दूसर के पान ब्रन्, मन्दा-बन् कबल कुछ हा दवा रहा है । ३ ।

मैं तब तक बनाम राक्षस का इलाका हूँ । (कुछ करण चकर कर जाता है ।)

English—So in the conflict of these two able ministers the sovereign power of the Nanda family is, as if it were in suspense,

The bewildered fortune is surely much tured in this case, by crossing over and recrossing through indecision between these two leading ministers strongly opposed to each other, like a female elephant frightened in a large forest between two wild elephants 3.

Now let me see minister Rakshasa.

(Turns about and waits)

द्विप्यपी—अमुत्र स्वक ने ना जल्दया मल्लकार है तथा मचिरा जन्द है । छन्द का छन्द है —जनी सत्री मिते मचिरा कुनई । समप्रिता=सन् + २ शी + मच्, माव सज्ज राणा मन्दा शति—मन् + शतृच् + गृत्ते रूप की छिद्रि ।

विनला

ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति (enter), आसन्नस्य=आसने तिष्ठति या स तथोक्त (seated), पुरुषः=बहुचरं (by a man), अनुगम्यमानः (followed), सचिन्तः=मसोक्तः (in an anxious mood)

राक्षस—सवाप्यन्=माधुनेत्र (In tears), कष्टम् माः कष्टम्=Alas, oh, alas)

अनुयाः—वृष्णीनान्, २ नीतिविक्रमगुणव्यापारशान्तद्विषां नन्दानान्, विपुल, कुले, अकरुणया, नियत्या, जयम्, नीति, चिन्तावेशसमाकुलेन, मनसा, रात्रिदिवम्, आप्रतः, मम, मा एव, दयम्, चित्ररुर्मरचना, निश्चिन्, विना, वतते ॥ ४ ॥

व्याख्या—वृष्णीनान्=वृन्दान् (Vrishnā), इत्यवया (like), नीति=नीति-नीति (Polity), विक्रम=वैराग्य (Valour), तौ एव गुणौ (qualities), व्यापारः=प्रयोगः (by the application of), शान्ता=शान्तिम् गमिता (had- vanquished), द्विषः=द्विषा (enemies), नन्दानान्=नन्दकुलोपशानान् राजान् (family of Nandas), विपुले=विशाले (the vast), कुले=कुले (race), अकरुणया=दयाहितया (relentless), नियत्या=नियतेन (by fate), जयम्=

अथवा—

नेदं विस्मृतभक्तिना न विषयव्यासङ्गमूढात्यना

नैते ते भ्रातृप्राणप्रच्युतिभीरुणा न च मया नात्मप्रतिष्ठार्थिना । दापनीयं प्रति ०४
 २८८५१३
 अत्यर्थं परदास्यमेत्य निपुणं नीतौ मनो दीयते
 देव स्वर्गगतोऽपि शात्रवधेनाराधित स्यादिति ॥ ५ ॥

विनाशम् (destroyed), नीते=प्रापिते (having been driven), चिन्ताया (anxiety), आवेशेन=प्रसक्त्या (by intense), समाकुलेन=पट्रेण (Agitated), मनसा=चेतसा (with १ mind), रात्रिन्दिवम्=अहर्निशम् (day and night), जाग्रत=अनिद्रितस्य (keep wakeful), मम=राक्षसस्य (my), सा=यादृशी नन्दसमये सादृशी एव (that), एव=हि, इयम्=एषा (this), चित्रकर्मरचना=विचित्रकार्यनिमित्ति, अन्यत्र आलेख्यकर्मनिर्माणम् (practising or using of diplomatic skill), भित्तिम्=कुलम्, पृष्ठे स्वामिरूपमाश्रयम् (wall, or, a back ground), विना=परित्यज्य (without), वर्त्तते=वसति (is) ॥ ४ ॥

हिन्दी—(हमके बाद पुरुषानुगत चिन्तामग्न आसन पर बैठा राक्षस का प्रवेश)

राक्षस— आँखों में आसू भरकर) अरे ! बट है, बग बट है ।

यदुवशियों की तरह साम, दाम आदि नाति तथा पराक्रमरूपी गुणों के प्रयोग से शान्त कर दिया है शत्रुओं को जिन्होंने ऐसे नन्द के विशाल कुल को, निष्ठुर भाग्य के द्वारा नाश को प्राप्त करा दिये जाने पर, चित्ता के प्रभाव से आकुल मन से रात दिन जागने लगे—मेरी वही यह विचित्र रचना आश्रय (स्वामी और पक्ष में दिवाल) के बिना हो गया है ॥ ४ ॥

English—(Then enter Rakshasa seated in an anxious mood, followed by an attendant)

Rakshasa—(In tears) The vast family of Nandas, who like the vrishnis, had vanquished their enemies by the application of the virtues of polity and valour, have been driven to extinction by relentless Fate, I, who am keeping wakeful day and night with a mind tossed by intense anxiety, have my practising of painting or using of diplomatic skill, done in the same way without a back ground or a wall to paint upon 4

टिप्पणी—इस श्लोक में विषय एवं विभावना अलङ्कार है । यथा—“विभावना विना हनु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते” दानो मिल्वर मखटि अलवार है । प्रसाद गुण, पाञ्चालारानि एवं शार्दूलविभीरुत छंद ह ।

निमलता

अन्वय.—परदास्यम्, एत्य, नीतौ, मन, अश्रयम्, निपुणम्, दीयते इदम्, विस्मृत भक्तिना, न, विषयव्यासङ्गमूढात्मना, न, च, प्राणच्युतिभीरुणा, मया, न, आत्मप्रतिष्ठार्थिना, स्वर्गगत, अपि, देव, शात्रवधेन, आराधित, स्यात्, इति ॥ ५ ॥

व्याख्याः—परदारयन्=अन्यस्य दामनान् (slavery of another), एय=ग्राह्य (accepting), नीतौ=राजनीतौ (to politics), मन=चेतः (heart), अत्यर्थम्=अत्यन्तम् (very), निपुणम्=सावधानम् (carefully), दीयते=व्याप्रियते (is being), इदम्=नीतौ मनोदानम् (it is), विस्मृतमक्षिना=विचित्रासुरितानुराग-स्तेन (have forgotten loyalty), न=नहि (not because), विपरेषु=भोगेषु, ध्यानम्=समस्त अनपेक्ष मूढः=विवेकशून्यः, आत्मा=अन्तःकरणम् यस्य तपोऽन विषय-व्यापन-मूढा नना (in the enjoyment of the objects of senses), न=नहि (not), च=पुनः (again), प्रागव्युत्तिमोहगा=अमृतान् नाशान्नेन (afraid of the loss of life), नया (by me), न=नहि (not), आत्मप्रतिष्ठाधिना=स्वमहत्वाभिलाषिना (desirous of self glorification), स्वर्गागतः=परलोकगतः (goes to heaven), अपि देव=स्वामी नन्द (His majesty), शात्रवधेन=रिपुविनाशेन (by the destruction of his enemies), आराधितः स्वात्=सन्तोषितः भवेत् (may be propitiated) 5

हिन्दी—अथवा—

यह नहीं कि मैं नेरे अन्दर मग्न हो रहा हूँ, यह भी नहीं कि मेरा मन विषयों में अकुल हो गया है। यह भी नहीं कि मैं मृत्यु के भय में अकुल हूँ। यह भी नहीं कि मुझे किसी भी प्रकार की सत्कारिक प्रशंसा का अभिलाषा है। दूसरों की राजा स्वीकार करके भी मेरा मन राजनीति में इसलिये अकुल है कि दिव्य राजा नन्द मेरे द्वारा किये गये शत्रु विनाश से किना प्रकर कुछ दुःख हो सकें। ५।

English—Or—

It is not because I have forgotten my Loyalty, not because my heart is engrossed in the enjoyment of the objects of senses, not because with a dread of the loss of life, nor again with a hankering after personal glory, that I have closely and carefully devoted my attention to politics, but because His majesty though gone to heaven might be served by the destruction of his enemies. 5.

टिप्पणी—विस्मृतमक्षिना—विस्मृताः मक्षि- अनेन इति विग्रह में पूर्वार्ध को 'तानान्ये नमुकृन्' से नमुकृत्वाक्य वनादर निमित्त्यदि कार्य वे रूपसन्ध्या विषयव्यासङ्गमूढा नना—विषयेषु स्तान्ध विषयव्यासङ्ग अत्यर्थम् आत्मा यस्य देव विषयव्यासङ्गमूढा नना—विषयों का अमर्ल से नहि आभावात्। आत्मप्रतिष्ठा—प्रतिष्ठित्वनरा इति प्रति+स्था+अक् कर प्रत्ये। शात्रवधेन—शत्रुवध इति शत्रु+अ+वधे प्रत्ये शात्रवध इति व, शात्रवधः देन शात्रवधेन।

इति श्लोक में परिलक्ष्या अकार एव शार्ङ्गविकीर्तित छन्द है। प्रसाद गुा एव पाञ्चाशो रति है।

शृङ्गारकर में शार्ङ्गविकीर्तित का लक्ष्य है—'सूर्यायैर्मसजस्ततः स गुरवः शार्ङ्ग-विकीर्तितम्।'

(आकाशमवलोक्यन् साक्षम् ।) भगवति कमलालये, भृशमगुणज्ञाऽसि ।

कुत ।

हेच्छ

आनन्दहेतुमपि देवमपास्य नन्दं

सत्ताऽसि किं कथय वैरिणि मौर्यपुत्रे ।

दानाम्बुराजिरिव गन्धगजस्य नाशे

तत्रैव किं न चपले प्रलयं गताऽसि ॥ ६ ॥

विमला

व्याख्या—आकाशम्=खम् (the sky), अवलोक्यन्=पर्यन् (looking towards), साक्षम्=सरोदनम् (with tears in his eyes), भगवति=पेश्वर्य-
शालिनि (mighty), कमलालये=पद्मालये (Resider in lotus), भृशम्=अत्यन्त
(extremely), अगुणज्ञासि=ज्ञानशून्यासि (unappreciative of merit),
कुत (how)

अन्वय.—हे चपले, कथय, आनन्दहेतुमपि, देवम्, नन्दम्, अपास्य, वैरिणि,
मौर्यपुत्रे किं सत्तासि, गन्धगजस्य, नाशे, दानाम्बुराजिरिव, तत्रैव, किम् न, प्रलयम्,
गतासि ॥ ६ ॥

व्याख्या—हे चपले=चञ्चले (O fickle one), कथय=ब्रूहि (tell), आनन्द-
हेतुमपि=सुखकारणमपि (though source of delight), देवम्=स्वामिनम् (His
majesty), नन्दम्=नन्दनामानम् नृपम् (Sire Nanda), अपास्य=परित्यज्य
(forsaking), वैरिणि=रिपौ (to enemy) मौर्यपुत्रे=सप्तमीपुत्रे चन्द्रगुप्ते
(the son of begotten Mura), किम्=कथम् (why), सत्तासि=अनुरक्तासि
(have become attached), गन्धगजस्य=मद्व्याविहस्तिन (of a scent
elephant), नाशे=मरणे सति (at the death), दानाम्बुराजिरिव=मदजलपतिरिव
(like the line of scor water), तत्रैव=नन्दनाशकाले एव (at that very
time), किम् न=कथम् (why not), प्रलयम्=नाशम् प्राप्तासि=गतासि (vanish
for ever) ॥ ६ ॥

हिन्दी—(भरी आँखों से आकाश की ओर देखते हुए) देवि लक्ष्मी, तुम गुर्ग को विह्वल
जानने वाली नहीं हो । क्योंकि—

भरी चपल, आनन्द के कारण स्वरूप महाराज नन्द को छोड़कर बलबानो उनके शत्रु चन्द्र
गुप्त में क्यों अनुरक्त हो गयीं । तुझ तो अपने महाराज के साथ कैसे ही मर जाना चाहिय था जैने
किसी मतवाल हाथी के मर जाने पर उसके साथ उसकी मदपारा भी सूख जाती है ॥ ६ ॥

English—(Looking toward the sky with tears in his eyes),
Mighty, Resider in lotus, you are extremely unappreciative of
merit—How—

Tell, O fickle one, why are you attracted towards the enemy
(of Nanda) Chandragupta, inspite of the source of your delight

अपि च अतभिजाते. अनुत्तरी

८

पृथिव्यां किं दुग्धाः प्रथितकुलजा भूमिपतयः

पतिं पापे मौर्यं यदसि कुलहीनं वृत्तवती । अनुत्तरी

प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला

अनुत्तरी

पुरन्ध्रीणां प्रजा पुरुषगुणविज्ञानविमुक्षी ॥ ७ ॥

Why did you not vanish at that very time, like the line of ichor water vanishing at the death of a scent elephant ? 6.

द्वितीयः—यथा—नञ् + क + ज्ञ ने मिद्वल्ल मत्ता । आनन्दहेतु — आनन्दस्य हेतु आनन्दहेतु । दमलाद्ये—कन्यानि कन्या अस्या, कन्यालया । कन्यालया एकना का क नान ई—कना प्रजापति प्रजा, कन्या आर्हतिप्रिया—ननरकोय । अगुणजा—गुणात् जानने एवे गुणा, क, कर्तारि रूप गुणा ।

दानान्पुराणि का तरह नन्दनार्थक इव उष्ट से व्यक्त का दानान्पुराणि के साथ तुल्य व प्रविशान से यहाँ उदना अलकार है । मय ही 'आनन्दहेतु' शब्दस्य उन्नति विद्यता पद का आभिप्रायसेन अभिधान से परिकर अलकार है । अतः इस श्लोक में परिकर अलकार से मन्द उदना अलकार है । वेदनीं राते, प्रसाद गुा तथा वसन्ततिलका वृत्त है । उक्ता लङ्गा—उक्ता वपन्ततिलका तमजा जगौ मः ।

निमला

७ अनुत्तरी
अनुत्तरी-५४८

व्याख्या—अपि च=किञ्च (moreover), अतभिजाते=अतकुल-सम्भूते (you baseborn one).

अन्वयः—हे पापे, पृथिव्याम्, प्रथितकुलजा, भूमिपतयः, दुग्धाः, किं, यत् त्वं, कुलहीनम्, मौर्यम्, पतिम्, वृत्तवती, असि, वा, काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला, पुरन्ध्रीणाम्, प्रजा, प्रकृत्या, पुरुषगुणविज्ञानविमुक्षी ॥ ७ ॥

व्याख्या—पापे=पापिनि (O, sinful), किमिति प्रश्ने (why), पृथिव्याम्=भूमौ (on the earth), प्रथितकुलजा=प्रख्यातवंशोत्पन्नाः (born of illustrious races), भूमिपतयः=नृपतयः (all kings), दुग्धाः=अग्नौ भस्मीभूताः (reduced to ashes), यत्=यस्मात् कारणात् (that), त्वम् (you), कुलहीनम्=नीच-कुलोत्पन्नम् (low extraction), मौर्यम्=मुरापुरम् (outcast son of Mura), पतिम्=वह्मभम् (sponse or lord) वृत्तवती=स्वीकृतवती असि (have chosen), वा=अथवा (or), काशप्रभवम्=काश-तृणजातम् यत् कुसुमम्=पुष्पम् तस्य प्रान्तः=अप्रमाणं तद्वत् चपला=चञ्चला (fickle like the tip of flowers that grow on Kasa), पुरन्ध्रीणाम्=कामिनीनाम् (women's), प्रजा=बुद्धिः (the mind), प्रकृत्या=स्वभावेन (by nature), पुरुषाणाम्=आश्रयभूतानाम् जनानाम् (men's), गुणः=शौर्यादयः गुणाः (the merits), तेषां विज्ञाने=परिज्ञाने (to the appreciation), विमुक्षी=वामा धर्यात् आप्रहृष्ट्या पराङ्मुखी भवतीति (is averse). ॥ 6 ॥

अपि च अविनीते, तदहमाश्रयोन्मूलनेनैव त्वामवामा करोमि । (विचि-
न्य ।) मया तावत्सुदृत्तमस्य चन्दनदासस्य गृहे गृहजन निक्षिप्य नगरान्नि-

हिन्दी—और मा अकुलीने—

औरी पापिनि, क्या पृथ्वी पर प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न सभी राजे मर गये, थे कि तुमने
अकुलीन मौर्य को पति के रूप में चरण दिया ? अथवा—(इसमें तुम्हारा क्या दोष) काश कुक्षुम के
छोर के समान चंचल स्त्रियों की बुद्धि ही स्वभावतः पुरुषों के गुणों को पहचान में असमर्थ
होती है । ७॥

English—Moreover, O illegitimate woman Are all kings
on the earth died, that you have selected Chandragupta, a base born
as your lord ? Or—the brain of a woman is naturally unstable like
the lip flowers of Kasa in appreciating the merits of man 7.

टिप्पणी—कुलहीनम्—‘मुरा नामक घृष्ट दासी के गर्भ से चन्द्रगुप्त वा जन्म हुआ था,
अतः उसका नाम ‘मुद्राया उत्पन्न’ इस व्युत्पत्ति के अनुसार ‘मौर्य’ हुआ । अतः वह राजा होते
हुए भी अकुलीन है । पुरन्ध्रीणाम्—पुरम् गेहम् धारयतीति धरतीति वा पुरन्ध्री = सुन्दर स्त्री ।
पुर + √धृ + धिप् + लृप् + लृप् + विभक्ति कार्य । काशप्रभव—काश प्रभवस्यस्मात् इति
प्र + नृ + भप् अयादाने प्रभव । विमुञ्जी—विमुञ्चन् मुखन् अस्या इति विमुञ्जी ।

इस श्लोक में अर्धान्तरन्यास अलङ्कार है । भगवति वमलालये इत्यादि राक्षस के वितर्क
प्रतिपादनरूप नामाङ्ग है । प्रकृष्टेत्यादि पराङ्ग सामान्य से पृथिव्यान् इत्यादि पूर्वाङ्गमक
विशेष के समर्थन से यही अर्धान्तरन्यास अलङ्कार है । क्योंकि यहाँ सामान्य बात कहकर
उपमा विशद से समर्थन किया गया है यह सादृश्य गर्भ अलङ्कारों के अन्तर्गत गन्दीपश्चात्प्रय
क्त का अलङ्कार है । इसमें यद्यपि दोनों खण्ड स्वतन्त्र हैं फिर भी दोनों में समर्थन के द्वारा
सादृश्य की स्थापना है । इसका लक्षण साहित्यदर्पण में—“सामान्य वा विशेषेण विशेषस्तौ वा
यदि । नार्द्रं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते । साधर्म्येणनरेणार्धान्तरन्यासोऽप्यथा तत् ।” और
फिर वह ‘प्रान्तवपला’ यहाँ प्रान्त इव चरला इस विग्रह से उपमा अलङ्कार से सज्ज अर्धान्तर
न्यास है । इसमें वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण एवं प्रगल्भ शब्द के अधिक्य बचन से अधिक पदत्व
दोष भी है । शिखरिणी वृत्त है । लक्षण पहले लिखा जा चुका है ।

प्रिमला

व्याख्या—अपि च = अन्यथा (moreover), अविनीते = दुःस्वभावे (o ill bred
one), तत् = तस्मात् कारणात् (for that), आश्रयस्थ = मौर्योत्पन्नवृद्धाश्रयस्थ (of
your shelter), उन्मूलनेनैव = विनाशेनैव (by destroying), त्वाम् = सवतीम्
(you), अवामाम् = निष्फलाभीष्टाम् अहम् करोमि = अहम् सम्पादयामि (I will de-
feat you in your object), [विचिन्त्य = कश्चित् विचार्य (Reflecting)] मया ता-
वत् (I, for myself), सुदृत्तमस्य = मित्रवर्यस्य (of my best friend), चन्दन-
दासस्य (Chandandasa's), गृहे = सद्ने (in house), गृहजनम् = कलत्रम्
(my family), निक्षिप्य = न्यासीकृत्य (in keeping), नगरात् = पुरात् (from

गच्छता न्याय्यमनुष्ठितम् । कुतः । कुसुमपुराभियोगं प्रति अनुशासीनो राक्षस
इति तत्रत्यानामस्माभिः सहैककार्याणां देवपादोपजीविना नोद्यमः शिथिली-
भविष्यति । चन्द्रगुप्तरारीरमभिद्रोघुमस्मत्प्रबुक्तानां तीक्ष्णरसदायिनामुपसं-
प्रहार्य परकृत्योपजापार्य च मरुता कोशसंचयेन स्थापितः शकटदासः । प्रतिश-
णमरातिवृत्तान्तोपलब्धये तत्सहतिभेदनाय च व्यापारिताः सुहृदो जीवसिद्धि-
प्रमृतयः । तत्किमत्र बहुना ।

the town), निर्गच्छता = निःसरता (while marching out), न्याय्यम् = सनुष्ठितम्
(right thing), अनुष्ठितम् = विहितम् (did), कुतः = किं कारणमिति (why),
कुसुमपुरस्य = पारलिपुरस्य (Kusumpura), अभियोगम् = आक्रमणम् (to an
attack), प्रति (on) अनुशासनम् = अवधानम् (in not indifferent), देवपादः =
नन्दप्रधानसचिवः (Rakshasa), इति = अस्मादेतोः (for this), तत्रस्थानम् =
तत्रस्थाने वसन्तानाम् (staying there), देवपादोपजीविनाम् = देवानुचाराणाम् (adhe-
rents of His majesty), अस्माभिः सह (with us), एककार्याणाम् (with
a common object), उद्यमः = चेष्टा (the efforts), न = नहि (not), शिथिली-
भविष्यति = मन्दः ममद्यते (will slacken), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य, अरीरम् =
देहम्, अभिद्रोघुम् = विघ्नायुम् (to injure the person of Chandragupta),
अस्मत्प्रबुक्तानाम् = ममेरितानाम् (employed by me), तीक्ष्णरसदायिनाम् =
तीक्ष्णरसम् विषम् ददति तच्छीलं इति तीक्ष्णरसदायिनस्तेषाम् तीक्ष्णरसदायिनाम्
(to administer poison), उपसंप्रहार्यम् = संचयार्थम् (for keeping), पर-
कृत्योपजापार्यम् = परस्य = शत्रोः (enemies), कृत्यम् = कार्यम् (secret doing),
तस्य उपजापः = मङ्गलः (for communicating), महता = प्रबुरेण (vast), कोश-
संचयेन = धनराशिना (supply of fund), स्थापितः = निदुक्तः (has been station-
ed), शकटदासः (Sakatdasa), प्रतिशणम् = अनवरतम् (every moment),
भरातिवृत्तान्तोपलब्धये = शत्रु-वृत्तान्तं प्राप्तये (to get full news of the enemies),
तत्सहतिभेदाय = शत्रुमेतन्मङ्गलम् (to break up their confederacy), व्या-
पारिताः = निदुक्ताः (have been employed), सुहृदः = मित्राणि (friends),
जीवसिद्धिप्रमृतयः = जीवसिद्धिमुखाः (Jivasiddhi and others), तत् = तस्मात्
कारणात् (so), किमत्रबहुना = अधिकेनास्मिन् किम् ? (why waste more words
on this matter ?).

हिन्दी—और भी—

आ दुहाउ, अब मैं तुम्हारा आचार ही नष्ट कर तुम्हें लक्ष्मणसिंह में पिरोऊ कर दवा हूँ ।
(कुछ सोचकर) पता लगा है कि मैंने वो अपना परिवार करने निज चन्दनदास के घर रख कर
पायलिजु छोड़ा, वह अच्छा ही किता । क्योंकि इन्हे इनार सहकारी स्तानेमर्त्यो का गतिविधि
में शिथिलता नहीं आने पादेगी । वह अनुभव करके कि पायलिजु पर आकरना के सम्बन्ध में रख
सकटदास मैं ना राक्षस के प्ररतन दिक्कत नहीं है । चन्द्रगुप्त के दरार पर आवात पहुचाने के लिए
इनार दाता निदुक्त विरघधि देनेवालों का सहा करने के लिए और शत्रुओं के कार्यों का नेद

इष्टात्मजः सपदि सान्वय एव देव

शार्दूलपोतमिव यं परिपोष्य नष्ट ।

तस्यैव वृद्धिचिशिखेन भिनन्नि मर्म

वर्माभवेद्यदि न दैवमदृश्यमानम् ॥ ८ ॥

बतलाने के लिए विशाल कोठराक्षि के साथ शकटदाम वहाँ रख दिया गया है । प्रत्येक क्षण शत्रुओं के समाचारों को जानने के लिए और उनके संगठन को छिन्न भिन्न करने के लिए जीवसिद्धि आदि मित्र लगा दिये गये हैं । तो इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ ?

English—And further, O ill bred one, I am failing you by destroying your shelter (Thinking) I have done good in having my family in the house of my best friend Chandandas, at the time of coming out of the city Because, Rakshasa is not still disappointed at the attack on Kusumpur, thinking this all inhabitants of Kusumpur will never be looser in action of His majesty Nanda Sakatdas is deputed there with a vast supply of treasure for the maintenance of the persons appointed by us to administer poisonous medicines and to injure the body of Chandragupta and communicate us the secrets matter of enemy. Jivasidhi and other friends are engaged to inform us every news of enemy at every moment and to destroy their unity So what is to say more in this matter ?

टिप्पणी—आश्रयोन्मूलनेन—आश्रयते इति 'आ' उपसर्गपूर्वक 'धि' धातु से वर्म में णिच् प्रत्यय कर तृतीयान्त यह रूप है । अकामाम्—अनाप्त काम अनया अथवा असिद्ध काम अस्या इत्यादि । देवपाद्—देवपादान् उपजीवन्ति आश्रित्य वृत्तयन्ति इति देवपाद्+उप+जीव+णिनि+कर्त्तरि तात्पर्ये । तेषां । उप+जीव, उपसर्गवशात् सकर्तृत्वम् से सकर्मक है और 'महासावचनैश्च' से नित्य समाप्त हुआ । कोपसञ्चयेन—सञ्चितेन कोपेन इस विग्रह में सहायक तृतीया विभक्ति हुई । प्रतिघणम्—'घणे घण इति' इस विग्रह में 'योग्यता वीप्सा पदार्थनति वृत्ति सादृश्य यथार्थ'—इस सूत्र से वीप्सा के अर्थ में अव्ययीभाव समाप्त हुआ । तत् सहति—सन्+हन्+क्तिन् भाव के अर्थ में सहति रूप की सिद्धि । अश्रति—इसमें तादर्थ्यक चतुर्थी विभक्ति हुई है । शकटदाम और जीवसिद्धि—ये दोनों ही चापल्य के गुणवत् हैं । जिन्हें राक्षस भ्रमवश अपना मित्र मान रहा है ।

विमला

अन्वयः—इष्टात्मज देव, यम, शार्दूलपोतम्, इव, परिपोष्य, सपदि, सान्वय नष्ट, तस्य, एव, मर्म, वृद्धिचिशिखेन भिनन्नि, यदि, अदृश्यरूपम्, दैवम्, एव, न वर्मा भवेत् ॥ ८ ॥

व्याख्या—इष्टात्मज=इष्टा=प्रिया, आत्मजा=पुत्रा यस्य असौ इष्टात्मजः (हेतुगर्भ विशेषणमिदम्) (fond of sons), देव=स्वामीनन्द् (sire), यन्=

द्वितीयोऽङ्कः]

(ततः प्रविशति कञ्जुमी)

कञ्जुमी—

नृपति

के समस्त

कामं नन्दमिव प्रमथ्य जरया चाणन्यनीत्या युया

धर्मो मौर्य इव क्रमेण नगरे नीतः प्रतिष्ठा मयि ।

नं संप्रत्युपचीयमानमनु मे लब्धान्तरः सेवया

लोभो राक्षसपञ्जयाय यतते जेतुं न शक्नोति च ॥ ९ ॥

चन्द्रगुप्त (Chandragupta) शार्ङ्गलोपेतम्भ्याम्रसावकम् (a tiger cub), इव = यथा (like), परिवेष्य = परिपाल्य (having brought up), सप्रति = सप्रति (suddenly), सान्ध्या = सकुलः (with the whole family) नष्ट = विनाश प्राप्त (perished), तस्य = नन्दविनाशदेवुनस्य चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta), एव = मरिचि (just so), मर्म = मर्मिस्थानम् (vital part of the body), बुद्धिबिरिन्नेन = नदिबानेन (with the arrow of my wit), निनदि = विदारयामि (I shall rend), यदि = चेत् (if), अदृश्यरूपम् = अप्रत्यक्षम् (invisible), इवम् = भाग्यम् (fate), एव = माहात् (quite), न वर्मानवेत् = कवचरूपम् न स्यात् (will not serve as an armour). ॥ ८ ॥

हिन्दी—मित्र नृपति नन्द पितृ कद्रुन को सिंह जवक का तरह पालकर, राज हा प्रकृ नष्ट हो गये, उस चन्द्रगुप्त के मनस्वान को हा ने बन बुद्धिमान बाने हा ने देन करा । वरुन शून्य भाग्य ही कवच बनकर वरुन रक्षा ने न का ला हा ॥ ८ ॥

English—I shall rend with the arrow of my wit the vital parts of that very person whom, I am fond of sons, having brought up, like a cub of a tiger, suddenly perished even with the whole family, if invisible fate will not serve as an armour. 8.

टिप्पणी—नृपति—नरि + १, पुत्र + पति । नष्ट—नष्ट + क्त-विभक्ति कारम् । निनदि—निनिधार्क वर्धमानकालिक प्रगो है । अदृश्यरूपम्—न दृश्य अदृश्य अदृश्य रूपस्य वत् अदृश्यरूपम् । “शार्ङ्गलोपेतमिव यम्” यहाँ मानाव धर्म है तथा स्तोत्रादिक विनाशक औन्मन्यवक ‘इव’ उपर के साथ ‘अने’ ‘यम्’ उपर बाध्य चन्द्रगुप्त, वर्धमान शार्ङ्गलोपेत तथा इन सभी के बाध्यत्व से यहाँ पूर्णता अद्भुत है ।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने शार्ङ्गलोपेत के आरोप से चक्र जड़कर है । इस प्रकार वर्धमान नृपति के दो से इस चक्र ने सन्निधि अद्भुत है । वृत्ति विधानों का इष्टि में परवृत्ति अनिचर व्यापक वर्धमान कवच में दैवत्व के आरोप से इन श्लोक में परिणत अद्भुत है । पादाजो राज, वाच्य एव वस्तुविशेषा इति है—‘इत्य वस्तुविशेषा वर्धमान वर्धमान’ ।

विमला

[ततः प्रविशति कञ्जुमी = (Then enters the Chamberlain)] कञ्जुमी = अन्तःपुराचार्य (Chamberlain) :—

अन्वयः—आनन्दनीत्या, युया, जरया, नन्दम्, इव, कामम्, प्रमथ्य, क्रमेण नगरे-

मौर्यं, इव, मयि, धर्मं, प्रतिष्ठाम्, नीतं, सम्प्रति, (मलयकेतो) सेवया उपचीयमानम्, तम्, अनु, लब्धान्तरं, राक्षसवत्, मे, लोभं, जयाय, यत्नते, च, जेतुम्, न, शक्नोति ॥ ९ ॥

व्याख्या—चाणक्यनीत्या=कौटिल्यनयेन (by Chanakya's policy), यथा=इव (as) जरया=वृद्धावस्था (by old age), नन्दमिव=नन्दराजमिव (like Nanda) कामम्=विषयाभिलाषम् (passion), प्रमथ्य=उपमर्द्य (eradicated) क्रमेण=शून्यं शून्यं (gradually), नगरे=पुरे (in the city), मौर्यं=चन्द्रगुप्त (Chandragupta), इव=यथा (as), मयि=जान्छौ (in me), धर्मं=सुकृतम् (piety), प्रतिष्ठाम्=स्थितिम्, नीतं=प्रापित (firmly established), सम्प्रति=अधुना (now), सेवया=शुश्रूषया (through service), उपचीयमानम्=वर्द्धमानम् (in growing) तम्=चन्द्रगुप्तम् (to Chandragupta), अनु=लक्ष्य-कृत्य (aiming at), लब्धान्तरं=प्राप्तावसर (having got an opportunity), राक्षसवत् (like Rakshasa), मे=मम (my) लोभं=ससारिकी-द्धा (avarice), जयाय=विजयाय (for victory), यत्नते=प्रयत्नते (is trying) च=किन्तु (but), जेतुम्=पराभवितुम् (in conquering) न शक्नोति=न समर्थो भवति (does not succeed) ॥ ९ ॥

हिन्दी—

(इसके बाद कन्वुको प्रवेश करता है)

चाणक्य को नीति के समान वृद्धावस्था के द्वारा नन्द के समान प्रिय वासना को नष्ट करके कमल नगर में चन्द्रगुप्त के समान मुझमें धर्म कर्म प्रतिष्ठा को प्राप्त कर दिया गया। इस समय सेवा के द्वारा बढ़ते हुये उस चन्द्रगुप्त को लक्ष्य करके अवसर पाकर राक्षस के समान मेरा लोभ जीतने के लिये कोशिश कर रहा है किन्तु जीतने में समर्थ नहीं हो पा रहा है ॥ ९ ॥

English—(Then enters Chamberlain)

Chamberlain—The piety (Dharma) is introduced in me by the old age as the policy of Chanakya destroyed Nanda and crowned Chandragupta in the city of Kusumpur, being free from all desires and passions. Now, it is trying to subjugate me after getting an opportunity of Rakshasa is doing to win Chandragupta getting the help of (Malayaketu), but both are not successful.

(Rather the policy of Chanakya made Chandragupta the king after destroying Nanda and Rakshasa in search of a Chance to subjugate him but is not successful, similarly the old age has establish piety in me destroying my passions)

My greed after getting a chance from my service to Malayaketu in lieu of money, is trying to win that propriety but is not getting success 9

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा एवं समासोक्ति अलंकार हैं। वैदभी रीति एवं प्रसाद गुण हैं तथा शादृशविकीर्तित छन्द है।

(परिक्रम्योपसृत्य च ।) इदममात्यराक्षसस्य गृहम् । प्रविशामि । (प्रवि-
श्यावलोक्य च ।) स्वस्ति भवते ।

राक्षस — आर्य, अभिवादये । प्रियवदक, आसनमानीयताम् ।

पुष्प — एत आसनम् । उपविशतु अञ्जो । (इदमासनम् । उपविशतु
आर्यम् ।)

कञ्चुक् — (उपविश्य ।) कुमारो मलयकेतुरमात्यं विज्ञापयति । चिरात्प्रभृ-
त्याः परित्यक्ताचितमस्कार इति पाठ्यते मे हृदयम् । यद्यपि सहसा स्वामि-
गुणा न शक्यन्ते विस्मृतुं तथापि मद्दिज्ञापना मानयितुमर्हत्यार्यम् ।
(इत्याभरणानि प्रदर्श्य ।) इमान्याभरणानि कुमारेण स्वशरीरावधार्य प्रेषि-
तानि धारयितुमर्हत्यामात्य ।

राक्षस — आर्यं जात्रले, विज्ञाप्यतामस्मद्वचनात् कुमार । विस्मृता एव
भवद्गुणपक्षपातेन स्वामिगुणा । किंतु—

विनंता

व्याख्या—परिक्रम्य = सचयं (going round), च = पुन (and), उपसृत्य =
समापमेय (walking forth), इदम् = प्रत्यक्षदृश्यमानम् (this is), अमात्यराक्षसस्य
(minister Rakshasa's), गृहम् = सदनम् (house), प्रविशामि = अभ्यन्तरम्
गच्छामि (I will enter), (प्रविश्य = प्रवक्ष्यामि (Entering) च = पुन (and),
अवलोक्य = दृष्ट्वा (looking about) भवते = तुभ्यम् (to you), स्वस्ति =
कल्याण (prosperity)

राक्षस — आर्यं = शिरः (sir), अभिवादनं = प्रणमामि (I bow), प्रियवदक
(Priyambadak), आसनम् = आस्तरणम् (seat), आनीयताम् (bring).

पुष्प — इदम् (Here is), आसनम् = आस्तरणम् (a seat), आर्यं = मान्य
(venerable sir), उपविशतु = समासीना भवतु (may sit down)

कञ्चुक् — [उपविश्य = उपवसनम् कृत्वा (sitting down)], कुमारः = परवत्सलपुत्र
(Prince), मलयकेतु (Malayaketu), अमात्य = मन्त्रिणम् (to minister),
विज्ञापयति = निवेदयति (requests), चिरात् प्रभृति = बहुदिवसत् (for a long
time), आर्यं = भवान् (your Honour), परित्यक्तः = वर्जितः (has left off),
उचितमस्कारः = योग्यालङ्कारम् (personal decorations), इति = इतो (that),
मे = मन (my), हृदयम् = चित्तम् (heart) पीड्यते (is grieved) यद्यपि
(though), स्वामिगुणः = राज्ञः दयादाक्षिण्यादिगुणा (the merit of the
master), सहसा = ह्यत्र (at once), विस्मृतम् = विस्मरणम् कृतम् (forgotten),
न शक्यन्ते (cannot be), तयारि (yet), मद्दिज्ञापना = मत्प्रार्थनाम् (my
request), मानयितुम् = स्वाकर्तुम् (to entertain), अर्हत्यार्यम् (will be pleased
to honour), इति = इत्युक्त्वा (to saying), आभरणानि = अलङ्कारानि (the

ornaments), प्रदर्श्य=दर्शयित्वा (showing him) इमानि=प्रत्यक्षदृश्यमानानि (these), आभरणानि=अलङ्करणानि (ornaments), कुमारेण=मलयकेतुना (by the prince), स्वशरीरात्=निजकायात् (from his person), अवतार्य (having taken them off), प्रेषितानि (have been sent), भामात्य = भवान् (Noble sir), धारयितुमर्हति=(will please put on)

राक्षस—आर्य=मान्य (Noble sir), जाजले=कज्जकिन् (O Jajali), अस्मवद्वचनात्=मदुक्त्या (in my name), कुमार =मलयकेतु (to the prince), विज्ञाप्यताम्=निवेद्यताम् (respectfully say) विस्मृता एव=अविदितप्राया एव (have already been forgotten), मया (by me), स्वामिगुणा = प्रभो गुणा= (merits of my lord), भवद्गुणपक्षपातेन (through my attachment to your Highness merits), किन्तु=तथापि (However) —

हिन्दी—(घूमकर और पास जाकर) यह अमात्य राक्षस का घर है चल् भीतर । (प्रवेश करके और देखकर) कस्याण हो महामात्य

राक्षस—आर्य प्रणाम करता हूँ । शिरनदक, आसन लाओ ?

पुरुष—यह आसन है । आर्य बैठें ।

कज्जकी—(बैठकर) कुमार मलयकेतु आपसे निवेदन करते हैं—आर्य ने बहुत दिनों से शरीर के उचित साज शृङ्गार को छोड़ दिया है, इसीसे हमारा हृदय दुखी हो रहा है । यद्यपि एका एक स्वामी (नन्द) के गुण भुजाये नहीं जा सकते फिर भी यह प्रार्थना अवश्य स्वीकृत हो (इतना कहकर आभूषणों को दिखाकर) ये आभूषण कुमार ने अपने शरीर से उतार कर भेजा है । अमात्य इसे धारण करें ।

राक्षस—आर्य, जाजल । मेरी ओर से कुमार को कृपया यह निवेदित कर दिया जाय कि उनके गुणों के प्रति मेरे अनुराग ने महाराज नन्द के गुणों को भुला सा दिया है । किन्तु,

English—(Walking round and going nearer) This is the house of Minister Rakshasa. I will enter (Entering and looking) Blessing to you

Rakshasa—Noble sir, I bow, Priyambadak, bring a seat.

Man—This is a seat. Let Noble sir be seated

Chamberlain—(Sitting) prince Malayaketu requests your Honour—My heart is distressed that your Honour has left off your personal dressing for a long time Though the merits of lord (Nanda) are not be forgotten soon (by you), yet, my request is acceptable (you should accept my request) (after talking such, showing ornaments) These ornaments are given to you by prince (Malayaketu) casting off from his body, which is capable of being put on (let you put these on)

Rakshasa—Worthy Jajali, respectfully say to the prince in my name—from an appreciation of your virtues, the merits of lord Nanda have already been forgotten by me;—However.—

न तान्निर्वीर्यं परपरिभवाक्रान्तिकृपणे

वद्दाम्यङ्गेरेभिः प्रतनुमपि सस्काररचनाम् ।

न यावन्निक्षेपक्षपितरिपुचक्रस्य निहितं

सुगाङ्गे हेमाङ्क नृवर तत्र सिंहासनमिदम् ॥ १० ॥

प्रिमला

अन्यत्र—हे नृवर, यावत्, निःशेषपितरिपुचक्रस्य, तव हेमाङ्कम् इदम्, सिंहासनम्, सुगाङ्ग, न, निहितम्, तावत् परपरिभवाक्रान्तिकृपणे, निर्वीर्य, एभिः, अङ्गैः, प्रतनुम्, अपि, सस्काररचनाम्, न, वहामि ॥ १० ॥

व्याख्या—हे नृवर=हे राजन् (O best of men), यावत्=यावत्कालम् (so long), निःशेषम्=सम्पन्नम् (completely), यथा स्यात्तथा, क्षपितम्=नाशितम् (destroyed), रिपुचक्रम्=शत्रुसमूहम् (the circle of enemies), तव=ते (your), हेमाङ्कम्=सुवर्णमण्डितम् (golden), इदम्=एतत् (this), सिंहासनम्=राजासनम् (throne), सुगाङ्गे=एतन्नामके राजप्रासादे (in the Suganga palace), न=नहि (not), निहितम्=स्थापितम् (placed), तावत्=तावत्कालम् (as), परे=शत्रुभिः (by the enemies), य परिभव=तिरस्कार (indignities), तत्र या आक्रान्ति=आघात (placing upon), तत्र=रूपगैः=दीनैः (pitiable), अत एव निर्वीर्ये=तज्जहीनैः (powerless), एभिः=मदीये (these my) अङ्गैः=अवयव (limbs), प्रतनु=अत्यल्पम् (slightest), अपि सस्काराणाम्=आभूषणानाम् (ornaments), रचना=विन्यासम् (decoration), न वहामि=न धारयामि (will not wear). ॥ १० ॥

हिन्दी—हे नरपटु । शत्रु के द्वारा पराभव से अवशन्न और निर्वीर्य हो चुके इस शरीर पर मैं तब तक कुछ भी आभूषण धारण नहीं करूँगा, जब तक कि तुम्हारे सम्मुख शत्रुओं को आनूल नष्ट करने वाला नष्टक मैं तुम्हारा स्वार्थिहासन प्रतिष्ठित नहीं कर दूँगा । १० ।

English—I will not wear the slightest decoration on these my limbs which are powerless and miserable through the heaping of indignities by the enemy, so long as O best of men, this golden throne of your Highness, with the circle of your enemies completely destroyed, is not placed in the Suganga palace 10

टिप्पणी—जाबल—जाबलिन् का अर्थ है स्त्रु । जाबलन अपत्य पुमान् धनि जाबलिन् + अम् जाबल इन् प्रत्यय का लोप 'नलद्धित' से हुआ है । जाबलत्वं गोत्रापत्यन् पुमान् इति जाबल + इत् अवयव द्विज प्रत्यय से। स्त्रु रूप जाबल अथवा जाबलायनि—'अदीचा वृद्धा दातन्' से रूप की श्रद्ध । जाबलि शब्द कब्रुकी के लक्ष प्रयुक्त होता है । निर्वीर्य—निःशक्त, शून्य, शून्यस्ते शून्य निर्वीर्य अथवा शून्यान् व्यक्ति । आक्रान्ति—आ घ्राण सेकन् धातु + चिन् प्रत्यय विनयकाद कार्य से रूप सन्ध । निःशेष—निःशेष अथवा यस्मिन् तत्र यथा तथा निःशेष

कञ्चुकी—अमात्ये नेतरि सुलभमेतत्कुमारस्य । तत्प्रतिमान्यता कुमारस्य प्रथमः प्रणयः ।

राक्षसः—आर्य, कुमार इवानतिक्रमणीयवचनो भवानपि । तदनुष्ठीयते कुमारस्याज्ञा ।

कञ्चुकी—(नाट्येन भूषणानि परिधाप्य ।) स्वस्ति भवते । साधयाम्यहम् ।

राक्षसः—आर्य, अभिवादये ।

(कञ्चुकी निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—प्रियवदक, ज्ञायता कोऽस्मद्दर्शनार्थी द्वारि तिष्ठतीति ।

पुरुषः—अमघो आणवेदि त्ति । (परिक्रम्य आदितुण्डिक दृष्ट्वा ।) अज्ज, को तुमम् । (यदमात्य आज्ञापयतीति । आर्य, कस्त्वम् ।)

‘क्षपणक्रिया’ की विशेषता बतलाता है । सुगात्रे—पाटलिपुत्र के तत्कालीन राजमहल को सुगात्र कहा जाता था । विष्ठापनम्—वि + ष्ठा + भिच् + लुट् + पुण्यगन् + टाप् + विभक्ति कार्यम् ।

इस श्लोक में निर्वाहदि सत्कार रचना परित्याग रूप उपयुक्त विशेषण के कथन से इस श्लोक में परिकर नामक अलङ्कार है । यथा—“उक्तविशेषणैः सामिप्रायै परिकरो मतः ।” साहित्यदर्पण ।

जिस प्रकार उपकरणों के द्वारा किसी वस्तु की रमणीयता बढ़ जाती है, उसी प्रकार इस श्लोक में उक्त सामिप्राय विशेषणों के प्रयोग से राक्षस के कथन में सौख्य आ गया है । अतः सादृश्य गर्भ के गन्धौपम्यवर्ग के अन्तर्गत विशेषण वैचित्र्य से सम्बन्धित रहने के कारण यहाँ परिकर अलङ्कार हुआ है । ओज गुण तथा पाञ्चाली रीति है । शिखरिणी छन्द है । यथा—“रसे रद्वैदिच्छन्ना धननसभला ग शिखरिणी ।”

विमला

ध्याख्या—कञ्चुकी—अमात्ये = मन्त्रिणि (minister), नेतरि = नायके सति (is the leader or guiding), एतत् (this is), कुमारस्य = मलयकेतो (for the prince), सुलभम् = सुकरम् (is easy), तत् = तस्मात् कारणात् (therefore), प्रतिमान्यताम् = स्वीकृत्यताम् (be granted), कुमारस्य = मलयकेतोः (of the prince), प्रथमः = मुख्यः (the first), प्रणयः = प्रार्थना (request)

राक्षसः—आर्य = मान्य (Noble sir), कुमार इव = मलयकेतुरिव (like the prince), अनतिक्रमणीयवचनः = अनुकृषणीयशासनः (cannot be disregarded), भवानपि = त्वमपि (you too)

कञ्चुकी—[(नाट्येन = नटोचितव्यापारेण = gesticulates), भूषणानि = अलङ्कारणानि (ornaments), परिधाप्य = सन्निवेश्य (putting on), स्वस्ति भवते = तुभ्य वक्ष्यामि भूयात् (Blessing unto thee), अहम् (I), साधयामि = कार्यसम्पादनाय गच्छामि (retire)

राक्षसः—आर्य = मान्य (sir), अभिवादये (I bow).

कञ्चुकी (Chamberlain), निष्क्रान्तः (departs)

आहितुण्डिकः—भद्र, अहं तु आहितुण्डिको जिष्णुमिनो नाम । इच्छामि
जनस्य पुरतो सप्तेहिं खलितुम् (भद्र, अहं खन्वाहितुण्डिको जीर्णविषो
नाम । इच्छाम्यनात्यस्य पुरतः सप्तेः खलितुम् ।)

राक्षस—प्रियवदक (Priyambadak), ज्ञायताम्=बुध्यताम् (ascertain),
कः=किनामकः (who is), अस्मद्दर्शनार्थी=महर्षनानिलापकः (desirous of
seeing me), द्वारि=प्रतिहारनूमौ (at the door), तिष्ठति=वर्त्तते (waits)

पुरुष—अनात्य (minister), यत्=यावत् (as), आज्ञापयति=आदिशति
(command), [(परिभ्रम्य=turning), आहितुण्डिकम्=सर्पशोभनजाविनम्
(Snake charmer), दृष्ट्वा=अवलोक्य (observing)], आर्य=मह्य (Noble
sir), त्वम्=भवान् कः=किनामकः (who are you).

हिन्दी—कबूकी—अनात्य, आने के लिये मैं कुनार के द्वार में खड़ा हूँ ।
भद्र कुनार के प्रथम द्वार को खोलें ।

राक्षस—नाम्यवर, कुनार की ओर दूर आने के बचन भी अनुष्ठानाय हैं । अतः नाम को
मैंने कुनार का आदेश ।

कबूकी—(आनन्द को पहनाने का अभिनय करते हुए) कहें हो अनात्य, मैं जा
रहा हूँ ।

राक्षस—आह, आने को मैं प्रार्थन कर रहा हूँ ।

(कबूकी का प्रस्थान)

राक्षस—प्रियवदक, जाओ, पना छान्ने, कौन द्वार पर निठने के लिये खड़ा है ।

पुरुष—अनात्य को ऐसा आदेश (घुनकर द्वार को देखकर) आर्य, तुम कौन हो ?

English—Chamberlain—Minister guiding, it is easy for the
prince to accomplish. So, let first request of prince be granted.

Rakshasa—Worthy sir, as of the prince, your words too cannot
be disregarded. Therefore this first request of the prince be granted.

Chamberlain—(acting the putting on of the ornaments) Blessings
unto thee I take my departure.

Rakshasa—Venerable sir, I bow (Chamberlain departs).

Rakshasa—Priyambadaka, ascertain, who waits at the door
desiring an interview with me.

Man—As minister commands (going round and observing the
Snakes charmer) sir, who are you ?

विमला

व्याख्या—आहितुण्डिक—भद्र=कृप्यामिन् (gentle), अहं तु आहितुण्डिकः=
सर्पशोभनजीवी (I am a Snake charmer), जीर्णविषो नाम=जीर्णविषाविधानः
(Jirnavisha by name), अनात्यस्य पुरतः=मन्त्रिराद्यसस्याग्रे (before the

पुरुष — चिट्ठ जाव अमघस्स णिवेदेमि ! (राक्षसमुपसृत्य ।) अमघ, एसो खु सप्पजीवी इच्छदि सप्प वसेदुम् । (तिष्ठ यावदमात्यस्य निवेदयामि । अमात्य, एष खलु सर्पजीवी इच्छति सर्पं दर्शयितुम् ।)

राक्षस — (वामाक्षिस्पन्दन सूचयित्वा आत्मगतम् ।) कथं प्रथममेव सर्प-दर्शनम् । (प्रकाशम्) प्रियवदक, न न कौतूहलं सर्पेषु । तत्परितोष्य विसर्जयैनम् ।

प्रियवदक — तथा ! (इत्युपसृत्य ।) अज्ज, एसो खु दे दसणकज्जेण अमघो पसाद करोदि । ण उण सप्पदसणेण । (आर्य, एष खलु ते दर्शनकार्येणामात्यं प्रसाद करोति । न पुन सर्पदर्शनेन ।)

minister), सर्पै = नागै (with Snakes) खेलितुम् = खेलितुम् (to play), इच्छामि = वाञ्छामि (I wish)

पुरुष — यावत् = यत्कालपर्यन्तम् (till), अमात्यस्य निवेदयामि = मन्त्रिणं विज्ञापयामि (inform the minister), तिष्ठ = आस्ताम् (wait), [(राक्षसमुपसृत्य = मन्त्रिणं समीपं प्राप्य (approaching Rakshasa), अमराय = मन्त्रिन् (Minister), एष खलु = अयम् (Here is) सर्पजीवी = भाहितुण्डिक (Snake charmer), सर्पश्च = नागम् (Snakes), दर्शयितुं (to show), इच्छति = वाञ्छति (wishes)]

राक्षस — [(वामाक्षिस्पन्दनम् = सख्यनेत्रस्येपरकम्पनम् (quivering of the left eye), सूचयित्वा = अभिनयं कृत्वा (acting) आत्मगतम् = स्वगतम् (To himself), प्रथममेव = पूर्वमेव (at the very first), सर्पदर्शनम् = व्यालोवलोकनम् (the sight of Snake), कथम् = कस्मात् कारणात् (how so), [(प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (loud)] प्रियवदक (Priyambadak) न = अस्माकम् (we) सपु = नागेषु (in Snakes), कौतूहलम् = आसक्त्यम् (curiosity), न = नहि (no), तत् = तस्मात् कारणात् (so), एनम् = व्यालोपजीविनम् (him), परितोष्य = सतुष्टं कृत्वा (satisfy), विसर्जय = इतो वहिष्कुरु (let him go)]

प्रियवदक — तथा = भवदीयं निदेशं करोमि (so be it) [(इत्युपसृत्य = समीप-गता (Approaching)], आर्य = मान्य (sir), एष खलु = अयम् (here), ते = तव (your), दर्शनकार्येण = सर्पकीदनकार्येण (work of Exhibition), अमराय = राक्षस (minister), प्रसादं करोति = उपहारम् ददाति (favour by giving reward), न पुन (but not), सर्पदर्शनेन = सर्पकीदनं दृष्ट्वा (with a look at the Snakes)

हिन्दी — सँपेरा — मद्र म जीर्णविष नामक सँपेरा हू । मैं अमात्य के सामने सर्पों का खेल दिखाना चाहता हू ।

पुरुष — खो, जब तक तुम्हारी बात अमान्य से निवेदित करता हूँ । (राक्षस के पास जाकर) आर्य, यह सँपेरा सर्प दिखाना चाहता हूँ ।

आहितुण्डिकः—भद्रमुह, विष्णवेति अमञ्च ण केवल अह सप्पनीयो, पाउड-
क्यो लु अहम् । ता जइ मे दसणेण अमञ्चो पमाड ण करोदि ता एट पत्तअ
वाचेदु त्ति । (भद्रमुख विज्ञापयमानात् न केवलमह सर्पनीयो, प्राकृतकविः
सन्त्यहम् । तस्माद्यादि मे दर्शनेनामात् प्रसाद न करोति तत्रा एतत्प्रक
वाचयत्विति ।)

प्रियवदकः—(पत्र गृहीत्वा राक्षसमुपगम्य ।) अञ्ज, एमो लु अमञ्च विष्ण-
वेदि ण केवल अह सप्पनीयो । पाउडक्यो लु अहम् । ता जइ मे अमञ्चो
दसणेण पसाड ण करोदि तत्रा एट पि दाव पत्तअ वाचेदु त्ति । (जारं, एष
सन्त्यहमात् विज्ञापयति न केवलमह सर्पनीयो । प्राकृतकविः सन्त्यहम् । तस्मा-
द्यादि मे अमात्या दर्शनेन प्रसाद न करोति तत्रा एतदपि वात्प्रक वाचय-
त्विति ।)

राक्षसः—(पत्र गृहीत्वा वाचयति ।)

राक्षसः—(बाँरा अँल फल्क रहा है—अन हो आर) सर्वप्रथम सर्प का हो दर्शन क्यों
(प्रकृत रूप में) प्रियवदक, साँस देखने में हमारा उत्कृष्ट नहीं है । मउ इसका समुद्र करके
विदा कर दो ।

प्रियवदकः—जैसा कहा (इसका बाद तँवर के पास जाकर) माने, तुम्हारे दिलान के कार्य
से क्लेश यह पारिवर्तक है रह है । साँस को देखकर नहीं ।

English—Snake charmer—Gentle, I am a Snake charmer/Jirnavisha
by name I want to play with Snakes before the minister

Man—Wait, till I inform the minister (approaching Rakshasa)
Minister, here is a Snake charmer wishes to show Snakes

Rakshasa—(Acting the quivering of the left eye to himself)
How so, at the very first, there is the sight of Serpents ! (aloud)
Priyambadak, we have no curios ty to see Serpents, so satisfy him
and dismiss

Priyambadaka—So be it (approaching) Sir, the minister shows
you his favour by giving this reward for your work of exhibition,
but not for a look at the Serpents.

विमला

व्याख्या—आहितुण्डिक—भद्रमुख=कल्याणमुख (Gentle sir), अमायन्=
मन्त्रिणम् (minister), विज्ञापय=निवेदन (inform), अहम् (I) न केवलम्=
(not only), सर्पनीयो=आहितुण्डिक (exhibiter of Serpents), अहम् सलु
(I am really), प्राकृतकविः=प्राकृतविद् (a prakrit poet), तस्मात्=
तस्मात् कारणात् (so), यदि (if), मम (me), अमायन्=मन्त्रिणम् (minister),

दर्शनेन = सर्पक्रीडावलोकनेन (with a sight), प्रसादं न करोति = उपहारं न ददाति (will not favour), तदा (then), एतत् पत्रकम् (this sheet), वाचयितुम् = पठितुम् (let him read).

प्रियवदक — [पत्रम् (letter), गृहीत्वा = नीत्वा (taking), राक्षसम् (Rakshasa), उपसृत्य = समीपगत्या (approaching)], आर्यः = मान्य (Noble sir), एष खलु = अयम् (this man), अमात्यम् विज्ञापयति = मन्त्रिणम् प्रार्थयति (requests Your Honour), अहम् (I), न केवलम् (not only), सर्पजीवी (Snake charmer), अहम् खलु (I indeed), प्राकृतकविः = भाषाकोविदः (Prakrit poet), तस्मात् (therefore), यदि (if), मे = मम (me), अमात्यः = राक्षसः (Rakshasa), दर्शनेन = सर्पक्रीडावलोकनेन (favour me with a sight), प्रसादं न करोति = प्रसन्नो न भवति (will not favour), तदा (then), एतदपि = (at least), तावत्पत्रकम् (this letter), वाचयितुं (let him read).

राक्षसः—पत्रम् (letter), गृहीत्वा = नीत्वा (taking), वाचयति (reads).

हिन्दी—आहितुष्टिक—भद्रमुख, अमात्य से निवेदन कर दो कि मैं केवल सँपेरा ही नहीं हूँ, अपितु प्राकृत भाषा का कवि भी हूँ। तो यदि हमको दर्शन देकर अमात्य कृपा नहीं करते हैं तो जरा इस पत्र को ही पढ़ लें।

प्रियवदक—(पत्र लेकर राक्षस के पास पहुँचकर) आर्य, यह सँपेरा आप से निवेदन कर रहा है, कि मैं केवल सँपेरा भर ही नहीं हूँ। अपितु प्राकृत भाषा का कवि भी हूँ। तो यदि मुझे दर्शन देकर अमात्य कृपा नहीं करते तो जरा इस पत्र को ही पढ़ लें।

राक्षस—(पत्र लेकर पढ़ता है)—

English—Snakecharmer—Gentle sir, inform minister that I am not only Snake charmer, but also a really Prakrit poet. Therefore if minister will not favour me with a sight, then let him read this letter.

Priyambadaka—(Taking the letter and approaching Rakshasa) Sir, he requests you, saying—"I am not only Snake charmer but also a prakrit Poet, so if the minister does not favour me with a sight he will at least read this letter."

Rakshasa—(Takes the letter and reads it).

टिप्पणी—परितोष्य—परि + तुष् + शिप् + ल्यप्, विभक्ति कार्यं। भद्रमुख—भद्र मुख-
मस्य इति भद्रमुखः। दर्शनकायम्—दृश् + शिन् + क्तुच्, भावे दर्शनम्। दर्शनरूपं कार्यम् दर्शन-
कार्यम् तेन दर्शनकार्येण।

पाऊण निरवसेसं कुसुमरसं अत्तणो कुसलदाण ।

जं उगिरेइ भमरो अण्णाणं कुणइ तं कज्जं ॥ ११ ॥

(पीत्वा निरवशेष कुसुमरसमात्मन कुशलतया ।

यदुद्गिरति भ्रमरः अन्येषा करोति तत्कार्यम् ॥)

(विचिन्त्य स्वगतम् । अयेः कुसुमपुरवृत्तान्तज्ञे, भवत्प्रणिधिरिति गाधार्यः । कार्यन्यप्रत्यान्मनसः प्रभूतत्वाच्च प्रणिधीना विस्मृतम् । इदानीं स्मृतिरुपलब्धा । व्यक्तमाहितुण्डिक्कञ्जद्वाना विराधगुप्तेनानेन भवितव्यम् । (प्रसाराम् ।) प्रय-
वदकः, प्रवेशयैनम् । सुकपिरेप । श्रोतव्यमस्मात् सुभाषितम् ।

विमला

अन्वयः—भ्रमरः, आत्मन कुशलतया, निरवशेषम् कुसुमरसम्, पीत्वा, यद्
उद्गिरति, तत्, अन्येषाम्, कार्यम्, करोति ॥ ११ ॥

व्याख्या—भ्रमर=मधुकर पक्ष स्वरा (black bee, also meaning a Spy),
आत्मन = स्वस्य (its), कुशलतया = नैपुण्येन (by skill), निरवशेषम् = समग्रम्
(completely), कुसुमरसम् = पुष्पागाम् मधु, एषे कुसुमपुरस्य रहस्यम् (honey
of flowers—important news from Kusumpur), पीत्वा = पान कृत्वा (drunk
up), यद्व्यक्तिमपि, उद्गिरति = बहि निस्तारयति, एषे कथयति (gives out-
says), तद्व्यतिरिक्तम् (that), अन्येषाम् = स्तानामन्यजनानाम्, एषे स्वाम्यादीनाम्
(of others—or of lords), कार्यम् = हितम्, करोति = विदधाति, (serves the
purpose) ॥ ११ ॥

हिन्दी—मधुनक्को, एष में गुह्यकर बननो विपुला से सन्नी फूल के रस को, एष में कुसुम
पुर के रहस्य को पीकर एष में—जानकर, जो बाहर निकलता है, एष में—कहता है, वह दूसरों का,
एष में—स्वामी का हित करता है ॥ ११ ॥

English—That which the black bee (Spy) gives out after
having, by its skill, completely drunk up (having known) honey
of flower (important news from Kusumpura) serves the purpose
of others (of Lords) 11

टिप्पणी—भ्रमर = भ्र + कृ (३०), विमलिकार्ये । इत श्लोक में आकाशिक भ्रमरकर्तृक
कुसुमरस कमक पान के बाद एष के उद्गिरता से आकाशिक बनने कुसुमपुर वृत्तान्त कथन को
प्रदाति में अस्तुप्रसूता नामक अन्वय है । 'अस्तुप्रसूता या न सैव प्रस्तुताप्रया'—
काव्यप्रकाश । वैदनी राति, प्रमाद गुण एव आर्यो वृत्त है ॥ ११ ॥

व्याख्या—[विचिन्त्य = विचार्य (thinking), स्वगतम् = अनतिस्पष्टम् (To
himself), अये = कोमलालापेऽभ्ययमिदम् (ah), कुसुमपुरवृत्तान्तज्ञः = कुसुमपुरोदन्त-
वेत्ता (knows the news of Kusumpura), भवत्प्रणिधिः = दूत (he is my
Spy), इति = गाधार्यः = गीतिकायास्तात्पर्यम् (the drift of the verse is),

प्रियवदक—तथा । (इत्याहितुण्डिकमुपसृत्य ।) उपसर्पदु अजो । (उप-
सर्पतु आर्यः ।)

आहितुण्डिक —(नाट्येनोपसृत्य विलोक्य च स्वगतम् । संस्कृतमा-
श्रित्य ।) अयममात्यराक्षसः । स एष

धामां चाहुलतां निवेक्ष्य शिथिलं कण्ठे विवृत्तानना

रुन्धे दक्षिण्या बलात्रिद्वितयाऽप्यह्ने पतन्त्या मुहुः ।

गाढालिङ्गनसङ्गपीडितमुखं यस्योद्यमाशङ्किनी

मोर्यस्योरसि नाधुनापि कुरुते वामेतरं श्रीः स्तनम् ॥ १२ ॥

(प्रकाशम् ।) जेदु अमचो । (जयतु अमात्य ।)

कार्यव्यवहारात् मनस = कृत्याकुलत्वात् (through destruction of mind from work), च=पुन (and), प्रणिधानम् प्रभुतत्वात्=चराणामाधिक्यात् (largeness of the number of Spies), विस्मृतम् (have forgotten), इदानीम् =अधुना (now), उपलब्धा=प्राप्ता (recovered), स्मृति (memory), व्यक्तम्=स्पष्टम् आहितुण्डिकरुन्धनम्=न्यालोपमीविषयाज्ञेन (disguised as Snake charmer), विराधगुप्तेन (Viradhgupta), अनेन भवतिष्यम्=चरेण भवितव्यम् (this must be), [प्रहाशम् (aloud)], प्रियवदक (Priyambadaka), एनम् = चरम्, प्रवेश्य = मात्सनिधिं प्रापय (usher him in), एष = सुकवि (he is a fine poet) अस्मात् =सुक्थ (from him), सुभाषितम् =सुवाक्यम् (fine sayings), श्रोतव्यम्=आकर्णनीयम् (must listen)

हिन्दी—(सोचकर अपने आप) अये, कुसुमपुर के समाचार ही जानने वाला आपका गुप्तचर हूँ—इस गाथा का यही अर्थ है । मन के कार्यों में व्यग्र होने के कारण तथा गुप्तचरों की अधिकता से भूल गया । अब स्मरण आ गया । स्पष्ट ही सेंपरे के देश से इसको विराधगुप्त होना चाहिए । (प्रकट रूप में) प्रियवदक, इसको भीतर लाओ । यह अच्छा कवि है । इससे श्रुतियां सुननी हैं ।

English—(Reflecting to himself), Ah, the drift of the verso is—"I am your Spy and know the news of Kusumpura." I forgot it on account of my mind being engrossed in my work and of the large number of my Spies Now memory is recovered This must be Viradhgupta, disguised as a Snake-charmer (Aloud) Priyambadaka usher him in, he is good poet, I will hear from him good sayings

विमला

व्याख्या—प्रियवदक —तथा=तथाज्ञापयतु (as you command sir), [इत्याहितुण्डिकमुपसृत्य (approaching the Snake charmer),] उपसर्पतु आर्य =गच्छतु-भवान् (may Your Honour come in).

आहिदुग्धेक—[नाटयेनोपसृज्य विदोष्य च स्वगतम् । संस्कृतमाश्रित्य (acting advance and looking about to himself, adopting Sanskrit).] अयम् = एषः (this), अमात्यराक्षसः (minister Rakhasa), म=असौ एषः (He is) :—

अन्वयः—यस्य, उद्यमाशङ्किनी, श्रीः, वामान्, बाहुत्तान्, कण्ठे, शिथिलम्, निवेश्य, विवृत्तानना, बलात्, स्कन्धे, निहितया, अपि, मुहुः, अङ्गे, पतन्त्या, दक्षिण्या, गाढालिङ्गनमङ्गपण्डितमुत्तम्, वामेतरम्, स्ननम्, अयुना, अपि, मौर्यस्य, उरसि, न, कुरुते ॥ १२ ॥

व्याख्या—यस्य=नीतिज्ञस्य राज्ञस्य (Rakhsas's), उद्यमाशङ्किनी = उद्योगभीता (afraid of whose efforts), श्रीः=मौर्यावलम्बी (the goddess of wealth), वामान्=दक्षिनेतरान् (left), बाहुत्तान्=भुजवर्तीम् (arm), कण्ठे=गालप्रदेशे (neck), शिथिलम्=भ्रगादम् (loosely), निवेश्य=स्थाप्य (twin'd), विवृत्तानना=पटावृत्तमुखा (her face turned away), बलात्=हृदात् (forcibly), स्कन्धे=मौर्यस्य स्कन्धप्रदेशे (on shoulder), निहितया=दत्तया (having kept), अपि=(also) मुहुः=वारं वारम् (again and again), अङ्गे=अङ्गे (on lap), पतन्त्या=पतन्त्या (falling down), दक्षिण्या=वामेतरया (right) भुजवर्तीया (creeper like arm), गाढम्=हृदम्, यत् आलिङ्गनम्=परिभ्रमः तस्य सङ्गेन सन्निभेन पण्डितम्=चिपिटीङ्गनम्, मुत्तम् वृत्तुक्तम्=अग्रभागः यस्य नादशः=वामेतरम्=दक्षिणम्, स्ननम्=हृदम् अर्थात् (being herself in close contact), अयुनापि=अद्यापि (even now), मौर्यस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), उरसि=वक्षसि (with the bosom), न कुरुते=न स्थापयति (does not bring) ॥ १२ ॥ [प्रकाशम्=स्वप्नम् (aloud), अमात्यः (Minister), जयतु (May conquer)].

हिन्दी—जिस राजस के डमोरे से बदनपर राजकुमारी अपनी बायां भुजलता को चन्द्रगुप्त के गले में लिपिल रूप से बांधकर, दुह फेरकर—बलात् कण्ठ पर रखता मनी, बार-बार गद्द में गिरने वाली दाहिनी भुजलता से कुछ बड़ राजकुमारी कंधे पर चिने गये आलिङ्गन के दबाव से चिन्न हो गया है स्नान निश्चय ऐसा दाहिना स्नान काब ना चन्द्रगुप्त को जडा से नहीं हटा रही है ॥ १२ ॥

English—Afraid of whose efforts, the Goddess of wealth, having her creeper-like left arm winding loosely round the neck of Chandragupta, with her turned face and right arm regularly falling down on her lap, though forcefully placed on the shoulder, does not even now bring her right nipple on the thorax of Chandragupta, which is compressed by close embracement. (Aloud) Let minister prosper. 12.

टिप्पणी—जति कलादिहित रहने पर भी अनुरागव्यवहार का अनिनी की तरह राजकुमारी प्रियतम चन्द्रगुप्त के द्वारा आलिङ्गित कर्तव्यधारण से राजकुमारी के प्राकृतिक रहते पर भी व्याकृतिक अनुरागहीन नादिक कर्तव्य नोचिनाचुरितिक इह आलिङ्गनव्य काराभाव

राक्षसः—(विलोक्य ।) अये विराध—(इत्यर्धोक्ते ।) ननु विरूढरमधुः ।
प्रियवदक, भुजंगैरिदानीं विनोदयितव्यम् । तद्विश्रम्यतामितिः परिजनेन । त्वमपि
स्वाधिकारमशून्यं कुरु ।

प्रियवदकः—तथा । (इति सपरिवारो निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—सखे विराधगुप्त, इदमासनम् । आस्यताम् ।

(विराधगुप्तो नाट्येनोपविष्टः ।)

राक्षसः—(निर्वर्ण्य ।) अये, देवपादपद्मोपजीविनोऽवस्थेयम् । (इति
रोदिति ।)

विराधगुप्तः—अलममात्य, शोकेन । नातिचिरादमात्योऽस्मान् पुरातनीम-
धस्थामारोपयिष्यति ।

राक्षसः—सखे, घर्णय कुसुमपुरवृत्तान्तम् ।

के समारोपन से इस श्लोक में समासोक्ति मलकार है । यह समासोक्ति उद्यमाशङ्कित पदार्थहेतुक
काव्यलिङ्ग से संकीर्ण है । परोक्तिर्मेदकैः द्रष्टव्यः समासोक्ति—का० प्र० । इसमें पाश्चात्ती रिनि,
प्रसादगुण एव शार्दूलविकीर्णित छन्द है ।

विमला

व्याख्या—राक्षस—[विलोक्य=दृष्ट्वा (observing)], अये विराध=एतदाख्यः
(Ha Viradh), [इत्यर्धोक्तेः (when halfuttered)], ननु विरूढरमधु=विरूढानि
प्रवृद्धानि रमधुणि पुरुषास्वस्थरोमाणि यस्य स विरूढरमधुः (with beards grown
indeed), प्रियवदक (Priyambadak), भुजंगैः=सर्पैः (with Snakes),
इदानीम्=सम्प्रति (now), विनोदयितव्यम् (have to enjoy), तत् (so),
इत्तः (from this place), परिजनेन=स्वजनेन (attendants), दिश्रम्यताम्
(let go and rest), त्वमपि (you too), स्वाधिकारम्=आत्मनियोगम् (your
post), अशून्यम् कुरु=प्रतिपाठय (do not vacate).

प्रियवदक—तथा (as your Honour command), [इति सपरिवारः=
सपरिजनः (with attendants), निष्क्रान्तः=निर्गतः (departs).]

राक्षस.—सखे विराधगुप्त=मित्र विराधगुप्त (friend Viradhgupta), इदम्=
एतत् (this), आसनम्=आस्तरणम् (seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (sit
down)

[विराधगुप्तः (Viradhgupta), नाट्येन=नटन्यापारेण (acting), उपविष्टः
(sitting down)]

राक्षसः—[निर्वर्ण्य=दृष्ट्वा (Eyeing close)], अये आश्रयम् (alas), देवपादप-
द्मोपजीविनः=देवस्य=राज्ञो नन्दस्य पादपद्मम्=चरणकमलम् उपजीवतीति देवपादप-
द्मोपजीवी तस्य (a servant of His majesty), इयम्=एतादृशी (this), अवस्था=
दशा अस्ति (should be the condition), [इति रोदिति=क्रन्दति (weeps)].

विराधगुप्तः—अमात्य, विस्तीर्णः सलु कुसुमपुरवृत्तान्तः । तत्कृतः प्रभृति वर्णयामि ।

विराधगुप्तः—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), अलम्=व्यर्थम् (useless), शोकैः=खेदेन (with this sorrow), नातिचिरात्=अतिदीर्घम् (Ere long), अमात्यः=मन्त्री (minister), अस्मान् (us), पुरातनम्=प्राक्, सदृशम् (former), अवस्थाम्=स्थानम् (position) आरोपयिष्यति=प्रापयिष्यति (will restore)

राक्षसः—सखे=मित्र (friend), कुसुमपुरवृत्तान्तम्=कुसुमपुरोदन्तम् (news of Kusumpur), वर्णय=कथय (report)

हिन्दी—राक्षस—(देखकर) अरे, विराध,—(देखा जाया करने पर) ओह, इसको राजा ना जरा देखो किन्तु तरह बड़ आह है । प्रियवदक, इस समय छीनों से मन बहलाव करना है, वो नौकर-चाकर यहाँ से आकर विमान करें । तुम भा मरने कर्तव्य को पूर्ण करो ।

प्रियवदक—बैठी आइया (देखा कह कर परवार के साथ चला गया)

राक्षस—मित्र विराधगुप्त, यह आसन है, बैठो ।

(विराधगुप्त अभिनयपूर्वक बैठता है)

राक्षस—(नवी प्रकार देखकर) अरे, महाराज नन्द के चरणमियों की यह अवस्था ?

(देखा कहकर रोता है)

विराधगुप्त—अमात्य, शोक करना व्यर्थ है, शीघ्र ही आप इन लोगों को हमारी पुरानी अवस्था प्राप्त करा देंगे ।

राक्षस—मित्र, कुसुमपुर के सनाचार का वर्ण करो ।

English—Rakshasa—(observing) Ah ! Viradh—(here he breaks off) with beards grown indeed Priyambadaka, we have to enjoy with Snakes. so let the servants retire you too not vacate your post.

Priyambadaka—So be it (Exit with attendants).

Rakshasa—Friend, Viradhgupta, here is a seat, sit down.

(Viradhgupta acts sitting down)

Rakshasa—(closely marking him) Alas ! such is the condition of a servant of His majesty (Weeps)

Viradhgupta—Away with sorrow minister Erelong your Honour will restore us to our former position

Rakshasa—Friend report the news of Kusumpura.

प्रिमला

व्याख्या—विराधगुप्तः—अमात्य=मन्त्रिन् (minister), विस्तीर्णः=प्रचुरम् (very long), सलु=निश्चयेन (indeed), कुसुमपुरवृत्तान्तः=कुसुमपुरोदन्तः (news of Kusumpura), तत्कृतः=तस्मात्-कारणात् (therefore), कुतः प्रभृति=कस्मादारभ्य (from where), वर्णयामि=वर्णयामि (shall I narrate)

राक्षसः—सखे, चन्द्रगुप्तस्यैव तावन्नगरप्रवेशा प्रभृति अस्मत्प्रयुक्तैस्तीक्ष्ण-
रसदादिभिः किमनुष्ठितमित्यादित श्रोतुमिच्छामि ।

विराधगुप्तः—एष कथयामि । अस्ति तावच्छक्यवनकिरातकाम्बोजपारसी-
कबाह्लोकप्रभृतिभिश्चाणक्यमतिपरिगृहीतैश्चन्द्रगुप्तपर्वतेश्वरबलैरुदधिभिरिव प्रल-
योच्चलितसलिलैः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरम् ।

राक्षसः—(शस्त्रमाकृष्य ससम्भ्रमम् ।) अयि, मयि स्थिते कः कुसुम-
पुरमुपरोत्स्यति । प्रवीरक प्रवीरक, क्षिप्रमिदानीम् ।

राक्षसः—सखे = अभिन्नहृदय (Friend), तावत् = प्रथमम् (at first), चन्द्र-
गुप्तस्य (Chandragupta's), नगरप्रवेशात् प्रभृति = पुरप्रवेशमारभ्य (with the
entry of the city), अस्मत्प्रयुक्तैः = अस्मन्नियुक्तैः (employed by me), तीक्ष्णरस-
दायिभिः = विषप्रदानशीलैः (administerers of poison), किमनुष्ठितम् = किं
कृतम् (what has been done), इत्यादित (from the very beginning),
श्रोतुम् = भाकर्णितुम् (to hear), इच्छामि = वाम्नामि (I wish)

विराधगुप्तः—एष = अहम् (I) कथयामि = वर्णयामि (begin), चाणक्यमतिपरि-
गृहीतैः = कौटिल्यबुद्धिसंचालितैः (by the direction of Chanakya), शक्यवन-
किरातकाम्बोजपारसीकबाह्लीका प्रभृतिरादियं पण ते तथोक्तास्तैस्तथोक्ते (Sakas, Yav-
anas Kiratas, Kambojas, Parasikas, Bahlikas and others), चन्द्रगुप्तपर्वतेश्वर-
बलैः = मौर्यपर्वतेश्वरबलैः (by the forces belonging to Chandragupta and
Pervateswar), प्रलयोच्चलितसलिलैः = प्रलयकालसंचालिततोयैः (with their
waters overflowed at the time of universal destruction), उदधिभिः =
समुद्रैः (by the seas), समन्तात् = सर्वतः (on all sides), उपरुद्धम् = वेष्टितम्
(blocked), कुसुमपुरम् = तदाख्यनगरम् (Kusumapura), अस्ति = वर्तते =
(was).

राक्षसः—[शस्त्रमाकृष्य = असि बहिष्कृत्य (drawing his sword), ससम्भ्रमम् =
सम्प्रेक्षम् (in great haste)], अयि = सम्बोधनमिदम् (well), मयि स्थिते = विद्यमाने
(while I am living), कः = किनामकः पुरुषः (who), कुसुमपुरम् (Kusumpura),
उपरोत्स्यति = सैन्यैः वेष्टयिष्यति (dares blockade), प्रवीरकः प्रवीरक-तत्काले
सचिहितानुचरसंज्ञेयम् (Praviraka O, [Praviraka], विप्रम् = शीघ्रम् (then
quick), इदानीम् = सप्रति (now)

हिन्दी—विराधगुप्त—अगाध, कुसुमपुर की खबर लम्बी है । कहाँ से प्रारम्भ करूँ ?

राक्षस—मित्र, पहले चन्द्रगुप्त के नगर में यथानिधि प्रवेश कर चुकने के पश्चात्, हमारे विष
देनेवाले गुप्तचरों ने क्या सब किया ?—इन बातों को प्रारम्भ से सुनना चाहूँगा ।

विराधगुप्त—तो कहता हूँ—प्रलयकाल में उठनाते जलवाले समुद्रों की तरह, चाणक्य की
उक्ति से संचालित, शक्य, वन, किरात, काम्बोज, पारसीक, बाह्लीक आदि चन्द्रगुप्त एवं पर्वतेश्वर
की सेनाओं के द्वारा कुसुमपुर चारों ओर से घेर लिया गया ।

प्राकारं परितः शरासनधरेः त्रिप्रं परिक्रम्यतां
द्वारेषु द्विरद्वैः प्रतिद्विपघटाभेदक्षमेः स्थापयताम् ।
त्यक्त्वा मृत्युभयं प्रहर्तुमनसः शत्रोर्वले दुर्बले
ते निर्यान्तु मया सहैकमनसो येषामभीष्टं यशः ॥ १३ ॥

विराधगुप्त —अनाथ, जलमावेगेन । वृत्तमिदं वर्ण्यते ।

राक्षस—(दृष्ट्वा निश्चलं च भवेत् नै,) अरे, मेरे रहने कौन कुसुम्पुर को बरता ?
प्रवीरक, प्रसारक ' क्षमि इमं मनसः —

English—*Viradhgupta*—Minister, the story of Kusumpur is long, so where from I shall narrate it ?

Rakshasa—Friend, I wish to hear from the very beginning, what has been done by the administrators of poison employed by us, after the formal entry of Chandragupta in the city

Viradhgupta—Here I begin, the city of Kusumpura was blockaded on all side by the forces of Chandragupta and Parvateswar led by the counsels of Chanakya—by Salas, Yavanas, Kiratas, Kambojas, Parsikas, Valhikas and others as by the oceans with their water over flows at the time of the world's final destruct on

Rakshasa—(Drawing his sword in haste) Well, who will besiege Kusumpura while I am living ? Praviraka, O Praviraka ! quickly now —

विमला

अन्वय—शरासनधर, प्रकारम्, परितः, त्रिप्रं, परिक्रम्यताम्, प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः, द्विरद्वै, द्वारेषु, स्थापयताम्, येषाम्, यशः, अनाष्टम्, ते, मृत्युभयम्, त्यक्त्वा, शत्रोः, दुर्बले, बले, एकमनसः, प्रहर्तुमनसः, मया सह, निर्यान्तु ॥ १३ ॥

प्राकारा—शरासनधरैः=बाणुकैः (archers), प्राकारम्=प्राचीरम् (rampart), परितः=परिमन्त्रात् (round), त्रिप्रं=श्रुति (quickly), परिक्रम्यताम्=परिक्रम्यताम् (move), प्रतिद्विपघटाभेदक्षमेः=सत्रुहस्तिसन्निविदारणयमर्थाः (capable of dispersing the array of enemy-elephants), द्विरद्वै=द्विस्त्रिभिः (elephants), द्वारेषु=प्रवेशनामेषु (at the gates), स्थापयताम्=अवस्थानम् स्थापयताम् (be posted), येषाम्=वीराणाम् (those), यशः=कीर्ति (fame), अभीष्टम्=प्रियम् (ambitious), ते=वीरा (they), मृत्युभयम्=मरणभोनिम् (the fear of death), त्यक्त्वा=परित्यज्य (giving up), शत्रोः=रिपो (of the enemy), दुर्बले=दुर्बलीने (weak), बले=पैम्मे (the force), एकमनसः=समानचेता (united in mind), प्रहर्तुमनसः=प्रोदक्षाना (attacking), मया सह=राक्षसेन साकम् (with me) निर्यान्तु=बहिर्निःसरन्तु (march out) ॥ १३ ॥

राक्षस—(नि श्वस्य ।) कष्टवृत्तमिदम् । मया पुनर्ज्ञातं म एवाय काल इति । (शस्त्रमुत्सृज्य) । हा देव नन्द, स्मरामि ते राक्षस प्रति प्रसादातिशयम् । त्वमत्र सङ्ग्रामकाले—

शुभा

विराधगुप्त—(अमात्यः=मन्त्रिन् Minister), आवेगेन=कोधन (with agitation), अलम्=व्यर्थम् (away), इदम् (it is), वृत्तम्=वृत्तान्त (the past), वर्ण्यते=अभिधीयते (is being described)

हिन्दी—सभी धनुर्धर आँधी के चारों ओर चक्कर काटें और हमारे हाथी जो शत्रुओं की गजपदा को भेदन करने में समर्थ हैं—हर पाटक पर स्थिर कर दिये जाय । जिन्हें यश प्रिय है—जो हृदय से हमारे साथ हैं, मृत्यु के भय से मुक्त होकर शत्रु की दुर्बल सेना पर आक्रमण करने के लिए मेरे साथ निकल आवें ॥ १३ ।

विराधगुप्त—अमात्य, क्रोध करना व्यर्थ है । यह तो मैं अतीत की घटना सुना रहा था ।

English—Let archers move rapidly round this rampart Let elephants capable of dispersing the array of enemy—elephants be posted at the gates, let those to whom fame in ambition, giving up the fear of death, united in mind with me, are bent upon attacking the weak force of the enemy, march out with me (13)

Viradhgupta—Minister, away with agitation It is the past being described

टिप्पणी—परिक्रम्य—परि + क्रम + ल्यप् से रूप की सिद्धि । प्राकारम्—प्रक्रियते इति योग में द्वितीया विभक्ति है । शरासनधरे शरा अश्वन्ते एभि इस विग्रह में शर + अस + ल्युट् करन शरासनानि तेषाम् धरा 'कर्मण्यण्' से अण् प्रत्यय कर विभक्त्यादि कार्य से शरासनधरा की सिद्धि । प्रवृत्तमनस—प्रवृत्तुं मन एवम् इस विग्रह में वृत्तामनसोरपि, से म का लोप है । दुर्बल—दुःस्थितानि बलानि अस्य, दुर्बल तस्मिन् दुर्बले । येषामभीष्टम्—अभि + इष्ट् + क्त + कर्मणि क्तमाने—'कस्य च वर्त्तमाने' से यही । इस श्लोक में स्वभावोक्ति तथा वाग्वल्लिङ्ग अलङ्कार सब शार्ङ्गलविक्रीडित छन्द् है । वीर रस स्थायीभाव, गौडी शैति एव ओज गुण है ।

रिमला

ध्यातया—राक्षस—[नि श्वस्य = (sighing)], कष्टम्=दुःखम् (alas), इदम् (this is), वृत्तम्=वृत्तान्त (past event), मया (I, however), पुनर्ज्ञातम्=अवगतम् (imagined), स एवाय काल इति=कुसुमपुरावरोधनसमयो वर्त्तते (it was the same time now), [शस्त्रम्=शस्त्रम् (the sword), उत्सृज्य=परित्यज्य (dropping down)] हा देव नन्द=हा राजन् नन्द (oh king Nanda) स्मरामि=चिन्तयामि (remember), ते=तव (your), राक्षस प्रति=स्वप्रधानसचिव प्रति (towards Rakshasa), प्रसादातिशयम्=अतिशयप्रसन्नताम् (excessive graciousness), त्वमत्र (you), सङ्ग्रामकाले=युद्धसमये (at the time of battle) —

ययैषा मेघनीला चरति गजवट्य राक्षसस्तत्र याया-
देतत्पारिप्लवान्मप्लुति तुरगवलयं वार्यतां राक्षसेन ।
पक्षीनां रक्षसोऽन्तं नयतु वलमिति प्रेषयन्महामात्रा-
मज्ञासोः प्रीतियोगात्स्थितमिव नगरे राक्षसानां सहस्रम् ॥१२॥

उपपत्तिः—यत्र, एषा, मेघनीला, गजवट्य, चरति, तत्र, राक्षसः, यायाद् पारि-
प्लवान्मप्लुति, एतत्, तुरगवलयं, वार्यतां, पक्षीनां, वलम्, राक्षसः,
अन्तम्, नयतु, इति, नद्यम्, आज्ञाम्, प्रेषयन्, प्रीतियोगात्, नगरे, राक्षसानाम्, सहस्रम्,
इव, स्थितम्, अज्ञासो ॥ १२ ॥

व्याख्या—यत्र=यस्मिन् स्थाने (where), एषा=इयमाना (this), मेघनीला=
पयोद्वयं (like a mass of cloud), गजवट्य=हस्तिमन्दः (line of elephants),
चरति=भ्रमरति (move), तत्र=तस्मिन् स्थाने (there), राक्षसः (Rakshasa),
यायाद्=अवराद्धुन् गच्छेत् (let Rakshasa go), पारिप्लवान्मप्लुति=पारिप्लवम्=
चञ्चलम् तत् अन्तः जलम् तस्य प्लुतिः=प्लवनम् इव प्लुतिः यस्य तादृशम् (bound-
ing like rushing waters), एतत्=पुरो द्रवमानम् (this), तुरगवलयम्=अश्वसेनम्
(force of cavalry), राक्षसेन वार्यताम्=निर्वापताम् (be checked by
Rakshasa), पक्षीनाम्=पदातिनाम् (infantry), वलम्=मेनाम् (force),
राक्षसः (Rakshasa), अन्तम् नयतु=समातिन् प्रापयतु (let destroy),
इति=इत्थम् (like this), नद्यम्=राक्षसाय (for me), आज्ञाम्=आदेशम्
(order), प्रेषयन्=कुर्वन् (despatched), प्रीतियोगात्=प्रेमसम्बन्धात् (with affec-
tion) नगरे=कुसुमपुरे (in Kusumpur), राक्षसानाम् सहस्रम्=सहस्रमक्षिकान्
राक्षसान् (a thousand of Rakshasas), इव=वया (like), स्थितम्=वर्तमानम्
(were stationed), अज्ञासोः=अनस्था (understood)

हिन्दी—राक्षस—(कौनो जंगल में) कह है, यह राजा बल्लभ का बान है। मैं दा
सन का यह बड़ा सन है। (हमारे छोटे) हा नारायण नन्द, राजस के प्रति उनके लड़ा
विषय का नारा करता हूँ। और इस सनान के सन ।—

यहाँ यह मैंने के सनान नावा यह सनूँ और बड़ा रहा है, यहाँ राजस जाय।
चञ्चल प्लवन् के सनान दाव ना बल्ले बाँटा लोगों का यह सन राजस के द्वारा राजस
जाय। पैदल चञ्चल बाँटा मेना को राजस नष्ट कर। इस प्रकार बाँटा पर बाँटा देवे हुए, मुझे
बल्ले मैंने और नन्द देवे ये मैंने इस बल्ले में एक नन्दे इकर राजस बल्ले
जाय हो ॥ १४ ॥

English—Rakshasa—(Sighing), Alas, it is a past event ' I
however, imagined that it was the same time now. (dropping
down the weapon) Oh king Nanda, Rakshasa remembers your
excessive love. For you at the time of battle —

Sending out order after order to me such as :—Where this
line of elephants like a mass of clouds, move, there let Rakshasa

विराधगुप्तः—ततः समन्तादुपरुद्धं कुसुमपुरमवलोक्य बहुदिवसप्रवृत्तमनि-
महदुपरोधवैशसमुपरि पौराणां परिवर्तमानमसहमाने तस्यामप्यवस्थायां पौर-
जनापेक्षया सुरङ्गामेत्यापकान्ते तपोवनाय देवे सर्वार्थसिद्धौ स्वामिविरहात्प्रशि-
थिलीकृतप्रयत्नेषु युष्मद्वलेषु जयघोषणाभ्याघातादिसाहसानुमितेष्वन्तर्नगरवासिषु
पुनरपि नन्दराज्यप्रत्यानयनाय सुरङ्गया बहिरपगतेषु युष्मासु चन्द्रगुप्तनिधनाय
युष्मत्प्रयुक्त्या विपक्व्यया घातिते तपस्विनि पवतेश्वरे ।

राक्षसः—सखे, पश्याश्चर्यम् ।

go, let this troop of cavalry bounding like rushing waters be
chucked by Rakshasa, let Rakshasa destroy the body of infantry,
you, through affection, thought as if a thousand of Rakshasas
were stationed in this city. (14)

टिप्पणी—एक राक्षस में ही हजार राक्षसों के कृत्य की सम्पादनशीलता के कारण 'राक्षस-
सहस्रमिव ना स्थितमशस्त्री,' इस विशिष्ट के कारण सामान्यधर्म-उपमान, उपमेय और औपम्य-
वाचियों के बीच में एक का, दो या तीन के अनुपादान से तुल्योपमा है —साहित्यदर्पण में इसका
लक्षण है —

तुल्य सामान्यधर्मादेरेकस्य . यदि वा द्वयोः ।

त्रयाणां चाऽनुपादाने धौर्ध्वार्थं सापि पूर्ववत् ॥

फिर 'राक्षसाना सहस्रमिव' में वाच्योपेक्षा रहने के कारण 'सखि' अलङ्कार है । इसमें भोज गुण,
लाटी रीति एवं स्रग्भरा वृत्त है । छन्द का लक्षण—'ब्रम्हैवांना ब्रवेण त्रिनुनियतिपुता स्रग्भरा
कीर्तितेयम्'

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त —ततः=तत्पश्चात् (after that), समन्तात्=सर्वतः (on
all sides), उपरुद्धम् =संस्थाक्रान्तम् (besieged), कुसुमपुरम् (Kusumpura),
अवलोक्य =दृष्ट्वा (seeing), बहुदिवसप्रवृत्तम् =कतिपय-दिन-प्रचलितम् (had
already continued for many days), अतिमहत्=अतिबहुलम् (very great),
उपरोधेन=निरोधेन (the siege), वैशसम् =कष्टम् (hardships), पौराणाम् =
नागरिकाणाम् उपरि (on the citizens), परिवर्तमानम् =नित्य नवीनम् (ever-
recurring) असहमाने =सोढुमसर्थे (not bearing to), तस्यामपि अवस्थायाम् =
असहनदशायाम् (even in those circumstances), पौरजनापेक्षया =नगरवासि-
जनानुमत्या (out of regard for the citizens), सुरङ्गाम् =गुप्तवर्त्म (a tunnel),
एत्य =प्राप्य (came to), अपकान्ते =गते सति (having left), तपोवनाय =
तपोवनं गन्तुम् (for the hermitage), देवे =राज्ञि (sire), सर्वार्थसिद्धौ
(Sarvarthasiddhi), स्वामिविरहात्=अनुविच्छेदात् (absence of their master),
प्रशिथिलीकृतप्रयत्नेषु =मन्दीकृतोद्योगेषु (slackened their efforts), युष्मद्वलेषु =
भवसैन्येषु (your forces), जयघोषणाभ्याघातादिसाहसानुमितेषु =जयस्य चन्द्र-

गुप्तविजयस्य, घोषणा=द्विष्टिनाघातपूर्वकविज्ञापनम् तस्याम् ये व्याघातादयः=वाघा-
दयः तेषाम् तेषु वा यत् साहसम्=दुष्करकर्म, तेन कारणेन, अनुमितेषु=ज्ञातेषु, ज्ञातभावेषु
अर्थात् परिज्ञातनन्दानुरोधेषु (by their daring acts, such as their obstruction
to the proclamation of victory), अन्तर्नगरवासिषु=पुराम्यन्तरवासिषु
(residents within the city), पुनरपि (again), जन्द्रान्धप्रत्यानयनाय=
नन्दनृपतिराज्यायचीकरणाय (for the recovery of the kingdom of Nanda),
सुरङ्ग्या=गुप्तवर्मना (by the tunnel), बहिरपगतेषु=बाह्यप्रदेशं गच्छात्सु (having
gone out), युष्मानु=नवसु (you too), चन्द्रगुप्तनिधनाय=मौर्यविनाशाय (for
the destruction of Chandragupta), युष्मत्पुत्रकुला=महप्रेरितया (employed
by you), विरक्तम्यया=विषनिर्मितकम्यया (with the poison girl), घातिते=
विनाशिते (having been killed), तपस्विनि=तपश्चरगर्वाळे (poor), पर्वतेश्वरे
(Parvateswer).

राक्षसः—सखे=मित्र (Friend), आश्चर्यम्=अद्भुतम् (the wonder), परम्=
अवलोक्य (see).

हिन्दी—विराधगुप्त—इसके बाद कुसुम्पुर को चारों ओर घिरा हुआ देखकर, नागरिकों
के ऊपर बहुत दिनों से चढ़नेवाले निष्ठ नये-नये, घेरें में होने वाले अत्यन्त कष्ट को सहन न करने
के कारण, उस अवस्था में भी नागरिकों के प्रति अनुराग के कारण जब महाराज सर्वार्थसिद्धि एक
मुरग के द्वारा तपोवन के छिपे भाग निकले, तब स्वामी के अभाव में आरक्षी सेना के प्रयत्न ढीले
पड़ गये । फिर भी नगर के नौतर वर्चमान व्यक्तियों के द्वारा विजय घोषणा में अब भी कुछ
बांटे जा रहे थे । मन्द के राज्य को पुनः अतिथित करने के छिपे मुरग के रास्ते से आरक्षे बाहर
निकल जाने पर, चन्द्रगुप्त को मारने के लिये आरक्षे द्वारा प्रयुक्त विषकन्या से बेचारे पर्वतेश्वर की
हत्या कर दी गयी ।

राक्षस—मित्र देखो आश्चर्य !

English—Viradhgupta—There upon when sure Sarvarthasiddhi,
seeing Kusumpura besieged on all sides and not bearing to see the
great hardship of the siege entailed on the citizens, which had
already continued for many days; came to a tunnel, out of regard
for the citizens even in those circumstances having left for the
hermitage, our forces, slackened their efforts greatly owing to
the absence of their master; you with the residents with in the city,
by their daring acts, such as there obstruction to the proclamation
of victory; when you, too, escaped by the tunnel for the recovery of
the kingdom of Nanda, poor Parvateswera having been killed by
the poison-girl employed by you for the destruction of Chandragupta.

Rakshasa—Friend, see the wonder :—

कर्णेनेव विपाङ्गनैकपुरुषव्यापादिनी रक्षिता

हन्तुं शक्तिरिवार्जुनं बलवती या चन्द्रगुप्तं मया ।

सा विष्णोरिव विष्णुगुप्तहतकस्यात्यन्तिकश्रेयसे

हैडिम्बेयमिवेत्य पर्वतनृपं तद्वध्यमेवावधीत् ॥ १५ ॥

प्रिमला

अन्वय — कर्णेन, इव, मया, अर्जुनम्, इव, चन्द्रगुप्तम्, हन्तुम्, बलवती एकपुरुष-
व्यापादिनी, शक्तिः, इव, या, विपाङ्गना, रक्षिता, सा, विष्णो, इव, विष्णुगुप्तहतकस्या,
आरयन्तिकश्रेयसे, तद्वध्यम्, हैडिम्बेयम्, इव, पर्वतनृपम्, एव, एतय, अवधीत् ।

व्याख्या—कर्णेन=राधापुत्रेण (by Karna), इव=यथा (like), मया=राक्षसेन
(by me), अर्जुनम् इव=पार्थमिव (like Arjuna), चन्द्रगुप्तम्=मौर्य राजानम् (to
Chandragupta), हन्तुम्=व्यापादयितुम् (for killing), बलवती=अत्यन्त प्रबला
(powerful), एकपुरुषव्यापादिनी=एकपुरुषव्यापिनी (the killer of a single
individual), शक्तिरिव=आयुधविशेष इव (like a weapon 'Shakti' by
name), या=विशिष्टा, विपाङ्गना=विषकन्या (poison girl), रक्षिता=स्थापिता
(reserved), सा=विषकन्या (that poison girl), विष्णोरिव=श्रीकृष्णस्यैव
(as of Vishnu), विष्णुगुप्तहतकस्या=दुष्टबाणव्यस्य (of cursed Vishnugupta),
आरयन्तिकश्रेयसे=सार्वकालिककल्याणाय (of the great good luck), तद्व-
ध्यम्=श्रीकृष्णस्य वधाहम् (smote the great interest of Vishnu), हैडिम्बेयम्=
मीमपुत्रघटोरकचम् (the son of Hidimba), इव=यथा (like), पर्वतनृपम्=पर्वतेश्वरम्
राजानम् (Parvateswar), एव=हि, एतय=प्राप्य (getting) ॥ १५ ॥

हिन्दी—जैसे कभी एक व्यक्तिविशेष का सहार करनेवाली कर्ष को अमोघ शक्ति ने—जिसे,
अर्जुन को मारने के लिए ही सुरक्षित रख दिया गया था—हिडिम्बा के पुत्र घटोत्कच का जान
ले लो, जो कृष्ण की आँखों का कौम था और अन्त में कृष्ण का ही कल्याण किया, उसी प्रकार
एक ही व्यक्ति का बध करने के लिए, हमारे द्वारा प्रयुक्त विषकन्या ने,—जिसे चन्द्रगुप्त की
हत्या करने के लिए सुरक्षित रक्खा गया था—राजा पर्वतक के प्राण ले लिये, जिसे बाणव्य ही
मरवा डाला । इतने लो बाणव्य का ही कल्याण हुआ ॥ १५ ॥

English—The potent poison maid, the killer of single individual,
that was reserved by me to kill Chandragupta, like the powerful
missile, the one man slayer, which was kept in reserve by Karna
in order to kill Arjuna, did, for the lasting benefit of cursed Vishnu-
gupta, as of Vishnu, came in contact with king Parvataka, like
Hidimba's son that was his her own nature (१५)

टिप्पणी—हैडिम्बेयम्—हिडिम्बा + दक + विभक्तिकार्थम् । एतय—एण् + स्वप् + तुयागम,
विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप । आरम्भ वैयत्यपूर्वक अनर्थसम्भवरूप यहाँ विषमालङ्कार है । फिर वह
'कर्णेनेव' इत्यादि में सादृश्यार्थक 'इव' शब्द के रहने से पूर्वापेक्षा अङ्गीकार सकोर्ण है । वेदभी
रोति, माधुर्य गुण तथा सादृश्यान्वित छन्द है । छन्द पहले लिखा जा चुका है ।

विराधगुप्तः—अमात्यं, दैवस्यात्र कामचारः, किं क्रियताम् ।

राक्षसः—ततस्ततः ।

विराधगुप्तः—ततः पितृवधत्रासादपक्रान्ते कुमारे मलयकेती विश्वामिते पर्वतकभ्रातरि वैरोचके प्रकाशिते च चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशे चाणक्य-
केन आहूयाभिहिताः सर्व एव कुसुमपुरनिवासिनः सूत्रधारा यथा सांयत्मारिका-
देशादधरात्रसमये चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो भविष्यति । ततः पूर्वद्वारात्प्र-
भृतिं संस्क्रियतां राजभवनमिति । ततः सूत्रधारैरभिहितम्—‘आर्य, प्रथममेव
दैवस्य चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशानुपलब्ध सूत्रधारेण दाहवर्मणा कनक्तोरण-
न्यामादिभिः संस्कारविशेषैः संस्कृतं प्रथमराजभवनद्वारम् । अस्माभिरिदानीमभ्य-
न्तरे संस्कार आयेय’ इति । ततश्चाणक्यवदुना अनादिष्टेनैव सूत्रधारेण संस्कृतं
राजभवनद्वारमिति परिशिष्टेनैव सुचिरं दाहवर्मणो दाह्य प्रशस्याभिहितम्—
‘अचिरादस्य दाह्यस्यानुरूपं फलमधिगमिष्यसि दाहवर्मन् ।’

विमला

व्याख्या—विराधगुप्तः—अमात्यः=मन्त्रिन् (Minister), अत्र=पर्वतेश्वरवधे (here),
दैवस्य=भाग्यस्य (of fate), कामचारः=स्वेच्छाचारिता (freak in the matter),
अत्र=अस्मिन् विषये, किम् क्रियताम् (what could be done ?)

राक्षसः—ततस्ततः=तदनन्तरम् (Next what next ?)

विराधगुप्तः—ततः=तत्पश्चात् (after that), पितृवधत्रासात्=तातविनाशभयात्
(frightened at the murder of his father), अपक्रान्ते=पलायिते (had
fled), कुमारे=शिशौ पर्वतराजसुते (prince Malayaletu), विश्वामिते=आश्वा-
मिते (lured in to confidence), पर्वतकभ्रातरि=पर्वतकसहोदरे (the brother
of Parvataka), वैरोचके=तस्मान्नि (Vairochaka by name), प्रकाशिते=प्राख्या-
यिते (publicly announcced), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य (Chandragupta's) नन्द-
भवनप्रवेशो=नन्दगृहसन्निवेशः (the entry in to the palace of King
Nanda), चाणक्यहृतकेन=विष्णुगुप्तविद्वेपिना (by the cursed Chanakya),
आहूय=आकार्यं (called), अभिहिता=कथिता (informed), सर्व एव=निश्चित एव
(all together), कुसुमपुरनिवासिनः=कुसुमपुरवास्तव्याः (resident in Kusum-
para), सूत्रधारा=शिल्पज्ञा (the Carpenters), यथा सायत्सरिकादेशात्=
दैवज्ञकथनात् (according to the direction of Astrologers), अर्द्धरात्रसमये=
निशार्द्धकाले (at midnight), चन्द्रगुप्तस्य=गृहस्य (Chandragupta's),
नन्दभवनप्रवेशो=नन्दगृहसन्निवेशः (entry into the palace of King Nanda),
भविष्यति (will take place), ततः=तस्मात् कारणात् (therefore), पूर्व-
द्वारात् प्रभृति=ययमद्वारादारभ्य (with the eastern gate), राजभवनम्=गृहम्
(royal palace), संस्क्रियताम्=संस्कारयुक्तं विधीयताम् (let the palace
be decorated), ततः=तत्पश्चात् (after that), सूत्रधारैः अभिहितम्=कथितम्

(the Carpenters said), आर्यं (Sir), प्रथममेव=प्रागेव (previously), देवस्य=राज्ञः (the king), चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), नन्दभवनप्रवेशमुपलभ्य=नन्दसदनसन्निवेशं ज्ञात्वा (known entry into the palace of Nanda), सूत्रधारेण=शिल्पिना (by the Carpenter), दाशवर्णमा (Daruvarma by name), कनकतोरणन्यासादिभिः=कनकस्य=सुवर्णस्य तोरणम्=बहिर्द्वारम् तस्य न्यासः=सन्निवेशः आदिर्येषां ते—तैः (construction of golden arches), सस्कारविशेषैः=रचना-विशेषैः (with special), सस्कृतम्=सस्कारयुक्तं कृतम् (had decorated), प्रथमराजभवनद्वारम् (front gate of the royal palace), अस्माभिः (by us), इदानीम्=अधुना (now), अभ्यन्तरे=अन्तराले (in the interior), सस्कार आधेयः=सस्कारं सम्पादनोय (make the decorations), ततः=तत्पश्चात् (after that), चाणक्यबटुना=दुष्टकौरिक्येन (by Chanakya), अनादिष्टेनैव=अदेशमप्राप्तवतैव (without being ordered), सूत्रधारेण=शिल्पिना (Carpenter), दाशवर्णमा=तन्नाम्ना (Daruvarma by name), सस्कृतम्=सज्जीकृतम् (decorated), राजभवनद्वारम्=नृपगृहद्वारम् (the gate of the palace), परितुष्टेन=संतुष्टेन (to be pleased), सुचिरम्=बहुकालम् (for a long time), दाशवर्मण (Daruvarma), दाक्ष्य=नैपुण्यम् (cleverness), प्रशस्य=प्रशंसाम् कृत्वा (be lauding), अभिहितम्=कथितम् (said)—अचिरात्=शीघ्रम् (before long), अस्य दाक्ष्यः=अस्य नैपुण्यः (for this cleverness), अनुरूपम्=सदृशम् (fitting), फलम्=परिणामम् (reward), अधिगमिष्यसि=प्राप्स्यसि (will receive), दाशवर्मन्= (O Daruvarma)

हिन्दी—विश्वगुप्त—अमाय, यहाँ देव की स्वेच्छाचारिता है, क्या किया जाय ?

राक्षस—हाँ तो उसके बाद फिर ?—

विश्वगुप्त—उसके बाद कुमार मलयकेतु पितृवश की सूचना से डर कर भाग गया । परंतक के भार्ये ने रोचक की विश्वास दिला दिया गया कि तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा । जनता में बोझा करा दी गयी कि महाराज नन्द के राजमहल में भद्र चन्द्रगुप्त का प्रवेश होगा । पादलिपुत्र के शिल्पियों की बुलवाकर कह दिया गया कि ज्योतिषियों की गणना के अनुसार आज आधी रात को नन्दगृह में चन्द्रगुप्त प्रवेश करेंगे । इस उपलक्ष्य में राजदुर्ग की, प्रथम द्वार से आरंभ कर अन्त तक सजा देने की आज्ञा शिल्पियों को मुना दी गयी । शिल्पियों द्वारा यह सुनने ही, चाणक्य को बुला दिया गया कि कुछल बलाकार दाशवर्मा ने चन्द्रगुप्त के नन्द भवन प्रवेश समाचार पाने ही नाना प्रकार की सजावटों, जैसे कि स्वर्ण तोरण की स्थापना इत्यादि से राजदुर्ग का प्रथम द्वार सजा दिया और भवन की भीतरी भाग की भी सजावट बरनी बाकी रह गयी है । इस पर दुष्ट चाणक्य ने दाशवर्मा की चातुरी को प्रशंसा करने हुए, जैसे काफी प्रसन्न हो—बहा, बिना मेरे आदेश के ही तुमने राजभवन को सजा दिया ! इसका फल तुम्हें शीघ्र ही मिलेगा ।

English—Vradhgupta—Minister, it is fates' frack in the matter, What could be done ?

Rakshasa—Next, what next ?

राजन.—(सोद्वेगम् । सखे, कुतः प्राणव्ययतोऽपि परितोष । अफलमनिष्टफलं वा दान्यमर्पणः प्रयत्नमगच्छामि । यदनेन बुद्धिमोहादयत्नराज भक्तिप्रकर्षान्नि-
योगकालमप्रतीक्षमाणेन जनितप्राणव्ययतोऽप्येतत्सिद्धयलवान्विकल्प । ततस्ततः ।

Viradna—Then, prince Malayketu, being afraid to the murder of his father; seceded and Vairochaka, the brother of Parvataka, had been lured in to confidence, the entry of Chandragupta into the palace of the Nanda was publicly announced. When the cursed Chanakya summoned all the Carpenters of Kusampara and addressed them as—"According to the instructions of the astrologers the entry of Chandragupta in the palace of Nanda comes off at midnight. So, let the decoration be started from the eastern gate of the palace. Then the Carpenters remarked—"Noble sir; after hearing the entry of His Majesty Chandragupta in the palace of Nanda, Daruvarma has specially decorated it (the main eastern gate) by the placement of golden gateways and alike, Let us now decorate the interior." Then the fellow Chanakya, as it were pleased that the gate was decorated by Daruvarman without any order, bestowed a long eulogy on the fore-right of Daruvarman and said—"O Daruvarman, you will be awarded before long for this your fore-right."

टिप्पणी—सावत्सरिक—मवलम्बित कथयन्ति बोधयन्ति वा इति मवलम्बित+ठन् इति सवलम्बित—इमने 'कालाठन्' से ठन् प्रत्यय कर पुन 'ठ' को इक् विभक्त्यादि कार्य सावत्सरिक रूप की सिद्धि । कनकतोरण—तोरण—मुख्यद्वार को कहते हैं । कनकत्व तोरण, वस्त्र न्याय से आदिवेषाम् । आधेय—आ+धा+धत्, कर्त्तृ ने आधेय रूप की सिद्धि । अन्तु रूपम् फलम्—यह शब्द यहाँ अन्तर्द्वार रूप में प्रयुक्त है अर्थात् बैरा कायें होगा वही के अन्तु रूप में वही फल प्राप्त होगा । अर्थात् इस गलती का परिणाम—उसकी मृत्यु है ।

मिमला

व्याख्या—राजन—[सोद्वेगम्=सोद्वेगम् (with anxiety)], सखे=मित्र (Friend), कुतः=कस्मात् (whence), प्राणव्ययतोः=अल्पबुद्धिमत् विष्णुगुप्तस्य (to the brat Chanakya), परितोष=सन्तोष (satisfaction), अफलम्=निष्फलम् (fruitless), वा=अथवा (or), अनिष्टफलम्=अशुभफलम् (bore bitter fruits), दारुवर्मणः (Daruvarma's), प्रयत्नम्=प्रयास (efforts), अगच्छामि=जानामि (I think), यत्=यस्मात् कारणात् (for), अनेन=दारुवर्मणा (by Daruvarma), बुद्धिमोहात्=मतिभ्रमात् (through foolishness), अथवा=वा (or), राज-भक्तिप्रकर्षात्=राज भक्त्याधिक्यप्रदर्शनात् (through excess of devotion to the king), नियोगकालम्=प्रेरणासमयम् (time or order), अप्रतीक्षमाणेन=

विराधगुप्तः—ततश्चाणक्यहतकेनानुकूललग्नशार्द्धरात्रसमये चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो भविष्यतीति शिल्पिनः पौरांश्च गृहीतार्थान् कृत्वा तस्मिन्नेव क्षणे पर्वतेश्वरभ्रातरं वैरोचकमेकासने चन्द्रगुप्तेन सहोपवेश्य कृतः पृथ्वीराज्य-विभागः ।

राक्षसः—किमातिसृष्टः पर्वतकभ्रात्रे वैरोचकाय पूर्वप्रतिश्रुतो राज्यार्ध-विभागः ।

असहिष्णुता (not waiting), जनितः = समुत्पादितः (must have been aroused), चाणक्यवटोः = दुष्टकौटिल्यस्य (of the devil Chanakya), चेतसि = हृदये (in mind), बलवान् विकल्प = सुदृढा सम्देहः (a strong suspicion), ततस्ततः = (चीन्सायां श्रुक्तिः) तदनन्तरम् किम् जातम् ? (what next)

विराधगुप्त — ततः = तदनन्तरम् (after that), चाणक्यहतकेन (cursed fellow, Chanakya), अनुकूललग्नवशात् (favourable juncture of stars), अर्द्धरात्र-समये = मध्यनिशीथे (at midnight), चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशो (entry of Chandragupta into the palace of Nanda), भविष्यति (will take place), शिल्पिनः = शिल्पविद्यावत् (Carpenters), पौरांश्च = पुरवासिनः (citizens), गृहीतार्थान् = अवगताभिप्रायान् (understand), कृत्वा = विधाय (made), तस्मिन्नेव क्षणे = नन्दभवनप्रवेशसमये (at that very time), पर्वतेश्वरभ्रातरम् = सोदरम् (brother of Parvateswar), वैरोचकम् = तक्षामानम् (Vairochaka), एकासने = एकोपवेशने (on the same throne), चन्द्रगुप्तेन सह = वृषलेन सह (with Chandragupta), उपवेश्य = संस्थाप्य (seated), कृतः पृथ्वीराज्यविभाग = सम्पादितः पृथ्वी एवं राज्यम् तस्य अर्द्धभागः (divided between them the sovereignty of the world).

राक्षस — किंवा = किञ्च (what), पर्वतकभ्रात्रे = पर्वतेश्वरसोदराय (for the brother of Parvateswar), वैरोचकाय (to Vairochaka), पूर्वप्रतिश्रुतः = प्राक् प्रतिज्ञातम् (pre-promised), राज्यार्ध-विभाग (half of the kingdom), भत्ति सृष्टः = वृत्तः (had been given away)

हिन्दी—राक्षस—(उद्देग के साथ) मित्र, नीच चाणक्य को सतोष वहाँ ! दाहवर्मा के प्रयत्न को निष्फल अथवा अग्रिय परिणाम देनेवाला समझ रहा हूँ । क्योंकि मनिभ्रम से अथवा राजभक्ति को अधिकतर से, आशा आने की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने जरूर चाणक्य के मन में एक महान् सम्देह उत्पन्न कर दिया होगा । हाँ फिर क्या हुआ !

विराधगुप्त—उसके बाद नीच चाणक्य के द्वारा—'अनुकूल मुहूर्त के कारण अभी रात के समय चन्द्रगुप्त वा नन्द के महल में प्रवेश होगा'—इसकी घोषणा शिल्पियों और नागरिकों के बीच कर, उसी मुहूर्त में पर्वतेश्वर के भाई वैरोचक को चन्द्रगुप्त के साथ एकामन पर बैठकर पृथ्वी के राज्य का हिस्सा बाँट दिया ।

राक्षस—क्या पर्वतक के भाई वैरोचक को पहले से वादा किया हुआ राज्य का आधा भाग दे दिया गया !

विराधगुप्तः—अयं किम् ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) नियतमतिधूर्तेन चाणक्यवदुना तस्यापि तपस्विनः कमप्युपांशुमभ्याकृत्य पर्वतेश्वरविनाशेन जनितमयशः प्रमाद्विमेया लोकप्रसिद्धिरुपचिता । (प्रहसम् ।) ततस्ततः ।

English—*Rakshasa*—(with anxiety), Friend, whence can there be satisfaction in the case of that brat Chanakya. I think the Daruvarma's efforts were fruitless or even bore bitter fruits as through delusion of excess of loyalty, by his not waiting till he received the order, a strong suspicion must have been aroused in the mind of the devil, Chanakya, what next ?

Viradhgupta—Then that, cursed Chanakya, having made the artisans and the citizens understand that the entry of Chandragupta would take place at midnight owing to a favorable stars, and that very moment a division of the world empire was made by making Parvataka's brother Vairochaka sit on the same throne with Chandragupta.

Rakshasa—What, was half share of the kingdom that had already been promised, given away to Parvataka's brother Vairochaka ?

विमला

व्याख्या—विराधगुप्तः—अयं किम् = इत्थं भर्दारम्भम् (yes, it was).

राक्षसः—[स्वगतम् = (To himself), नियतम् = निश्चितम् (surely), अतिधूर्तेन = अनिशटेन (very wily), चाणक्यवदुना (by brat Chanakya), तस्यापि तपस्विनः = (that poor fellow too), कमपि = अनिर्दिष्टमपि उपायवचम् = रहस्यहननम् (some sort of secret murder), आकृत्य = निश्चित्य (assuredly), पर्वतेश्वरविनाशजनितस्य = पर्वतेश्वरवधोत्पन्नस्य (caused by the murder of Parvataka), अयशः = अकस्मिन् (the infamy), प्रमाद्विमेयम् = प्रमादनाशम् (for wipe out), एषा लोकप्रसिद्धिः = एषा जनप्रकाशना (report among the public), उपचिता = परिकल्पिता [प्रकाशनम् = स्पष्टम् (aloud)], ततस्ततः = ततश्चात् (after that) ?

हिन्दी—विराधगुप्तः—क्या ?

राक्षसः—(अपने को) अवश्य ही अपने पूर्व दुष्ट चाणक्य के द्वारा उस वैश्य का ना कोर गुप्त अथवा विचार कर, पर्वतेश्वर के वध से उत्पन्न अकस्मिन् की निम्ने के विषय, जगो ने यह कथना फैलाया गया है । (प्रहस्यते) उसके बाद, उसके बाद ।

English—*Viradhgupta*—What else.

Rakshasa—(To himself) Surely after having planned some sort of secret murder for that poor fellow too, this report among the public in order to wipe away the ill-repute caused by the

विराधगुप्त — ततः प्रथममेव प्रकाशिते रात्रौ चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशे कृताभिषेके किल वैरोचके विमलमुक्तामणिपरितोषविरचितचित्रपटमयवार-
बाणप्रच्छादितशरीरे मणिमयमुकुटनिविडनियमितरुचिरतरमौली सुरभिकुसुम-
दामप्रैकद्वयभासितविपुलवक्षस्थले परिचिततमेरुप्यनभिज्ञायमानाकृतौ चाण-
क्यहृतः सादेशाच्चन्द्रगुप्तपवाद्या चन्द्रलेखानाम गणत्रशामारुह्य चन्द्रगुप्तानुयायिना
राजलोकेनानुगम्यमाने देवस्य नन्दस्य भवनं प्रविशति वैरोचके युष्मत्प्रयुक्तेन
दाक्षवर्मणा सूत्रधारेण चन्द्रगुप्तोऽयमिति मत्या तस्योपरि पातनाय सजीकृत
चन्द्रतोरणम् । अत्रान्तरे वह्निर्निर्गृहीतवाहनेषु स्थितेषु चन्द्रगुप्तानुयायिषु नृपेषु
युष्मत्प्रयुक्तेन चन्द्रगुप्तनिपादिना वररुकेण कनकदण्डिकान्तर्निहितामसि-
पुत्रिकामाकृष्टकामेनावलम्बिता करेण कनकशृङ्खलावलम्बिनो कनकदण्डिका ।

murder of Parvataka by that very wily brat Chanakya (Aloud)
Next what next

टिप्पणी—प्रतिष्ठ — प्रति + √सृज + क + विभक्तिकार्यम् । आकलय — आ + √
कल + णिच् + ल्यप् । प्रमार्दम् — प्र + √मृज + तुप् । प्रसिद्धि — प्र + √सिध् + क्तिन् +
विभक्तिकार्यम् । उपविता — उप + √वि + क + टाप् ।

विमला

व्याख्या—विराधगुप्त — ततः = तदनन्तरम् (after that), प्रथममेव = पूर्वमेव
(previously), प्रकाशिते = प्रचारिते (having been announced) रात्रौ =
निशायै (at night), चन्द्रगुप्तस्य नन्दभवनप्रवेशः = मौर्यस्य नन्दगृहसन्निवेशः (Chandra-
gupta's entry into the palace of Nanda), कृताभिषेके = कृतस्न-
पने (with coronation performed), वैरोचके (Vairochaka by name),
विमलानाम् = स्वच्छानाम् (of bright), मुक्तामणीनाम् (pearls), यः परिषेप =
परितः विन्यासः (moving about) तेन विरचितः = रचितः (formed),
चित्रपटमयः = नानावर्णवस्त्रनिष्पन्नः (speckled rope), यः वारबाणः = कवचः (an
armour), तेन प्रच्छादितम् = आवृत्तमितम् (was covered), शरीरम् = शरी-
रम् (body) यस्य तस्मिन् मणिमयति = मणिस्त्रचितेन (set with jewels), मुकुटेन =
किरीटेन (diadem), निविडम् = दृढम् (the close fitting), यथा स्वास्तथा,
नियमिताः = सयता (restrained), रुचिरतराः = अतिशोभना (more graceful),
मौल्यः = केशाः (Hair on the crown of head) यस्य तादृशे, सुरभिः = सुगन्धि-
(sweet smelling), यत् कुसुमदामः = पुष्पमाला (garland of flowers),
तस्य वैकट्यम् = तिर्यग्धारणम् (placed cross wise), तेन अवभासितम् =
सुशोभितम् (glittered) विपुलम् = विस्तीर्णम् (broad), वक्षस्थलम् = उर-
स्थलम् (bosom), यस्य तादृशे, परिचिततमेरुपि = अतिनयेन मस्तुतेरपि (the
most intimate too), अनभिज्ञायमाना = अनवगम्यमाना (not being recogni-
sed), आकृतिः = आकारः (from), यस्य तस्मिन्, चाणक्यहृतः सादेशात् = निन्दित

विष्णुगुप्तनिदेशात् (at the command of the vile Chanakya), चन्द्रगुप्तोप-
वाद्याश्च=चन्द्रगुप्तवाहननूताम् (Chandragupta's mount), चन्द्रलेखनान्
(Chandralekha by name), गजवशान्=गजस्त्रीम् (the female-elephant),
आरुह्य=तद्रूपरि स्थित्वा (had mounted), चन्द्रगुप्तानुगमिनः=मौर्यानुगमिनः
(followers of Chandragupta), राजलोकेन=नृपत्रयेण (by the princes),
अनुगम्यमाने=अनुयायनान् (being followed), देवस्य=राज्ञः (sire), नन्दस्य
(Nanda's), भवनम्=सदनम् (palace), प्रविशति=अन्दन्तरं गच्छति (going
to enter), वरोचके (Vairochaka), तुष्मत्प्रयुक्तेन=त्वत्प्रयुक्तेन (directed
by you), दारुवर्णना (Daruvarma), सूत्रधारोऽयम्=निर्माता (Carpenter),
चन्द्रगुप्तोऽयम् (this is Chandragupta), इति मत्वा=एव ज्ञात्वा (believing
him), तस्योपरि (on him), पातनाय=प्रक्षेपणाय (to drop down), सज्जी-
कृतम्=सज्जितम् (ready), यन्त्रतोरणम्=यन्त्रमञ्जितम् बहिर्द्वारम् (mechanical-
gateway), अत्रान्तरे (in the mean time), बहिर्निगृहीतवाहनेषु=बाह्यवर्तमान-
वादिषु (having stopped outside with their mounts checked), स्थितेषु
चन्द्रगुप्तानुयायिषु नृपेषु (the attendant princes of Chandragupta), तुष्म-
त्प्रयुक्तेनैव=त्वत्प्रयुक्तेनैव (employed by you), चन्द्रगुप्तनिपादिना=मौर्यहस्तिन-
केन (Chandragupta's driver), वरारकेन (by Vararaka), कनकदण्डिकायाः=
लघुमौर्वणदण्डस्य (the golden staff), अन्तः=मध्ये (within), निहितम्=
स्थापितम् (concealed), असिपुत्रिकाम्=दुरिकाम् (knife), अवलम्बिता=गृहीता
(taken up), करेण=हस्तेन (in his hand), कनकशृङ्खलावलिम्बिनी=आस्या-
वलिम्बनान्स्वर्णहारेत्यर्थः (hanging by the golden chain), कनकदण्डिका=
स्वर्णदण्डः (gold stick).

हिन्दी—विराटगुप्त—और जब कि समा लोग नन्दनवन में अन्दरति के अवसर पर
चन्द्रगुप्त प्रवेश के समय में अगत हो चुके—वरोचक पर आस्थानिके कर दिया गया।
स्वच्छ मौलियों के चारों ओर खड़े थे निर्मित नाना रंग वाले बर्तों से बने कवच से पूर्ण नदी
हुरं देहवाले, नीलों से निर्मित मुकुट से इत्यादिक बड़े हुए अत्यन्त सुन्दर केन्द्र-
वाले, छात्रा पर लहराते अति सुन्दर पुष्पाङ्गुली के धारा करने वाले—वरोचक समा
लगने लगा कि प्रतिदिन के निरन्तरवाले अति परिचित व्यक्ति को ऐसे में पहचान नहीं—हुट
चात्तप के आदेश से—चन्द्रगुप्त को निजी शयिनी चन्द्रलेखा पर आस्थान शहर, चन्द्रगुप्त
के हाथगानी राजा के पाठे-पाठे चले हुए नन्दनवन में प्रवेश कराय। प्रारम्भ दिया कि
आरके द्वारा निजुक्त हस्तिकार दारुवर्ण ने, उसे 'नदी चन्द्रगुप्त है' ऐसा समझकर, उस पर
गिराने के लिए करने स्वर्णा सोहन दन्त को उठा लिया। चन्द्रगुप्त के अनुगमन राजा
हो अतः ही देखा करने करने सवारियों को बाहर हो रोकने लगे। इसा साथ आरके द्वारा
निजुक्त चन्द्रगुप्त के नहावत वरर ने सोने की लता के मातर छिरा कटार निहाउने के लिए
सोने की अजार से उच्छ्रित, उस सोने का छडा का मूठ पकड़ा।

English—Viratgupta—Then as the entry of Chandragupta in
the palace of Nanda was announced previously at night; Vairochak

राक्षस.—उभयोरप्यस्थाने यत्न ।

विराधगुप्त.—अथ जघनाभिघातमुत्प्रेक्षमाणा गजबधूरतिजवनतया गत्यन्तर-
मारूढवती । प्रथमगत्यनुरोधप्रत्याकलितमुक्तेन प्रभ्रष्टलक्ष्य पतता यन्त्रतोरणेना-

was made to go through the appearance of crowning ceremony and when he (Vairochaka), whose body was covered with an armour like kingly dress made of different colours of shiny pearls and gems textured cross-wise, whose head seemed more pleasing due to the close fitting crown of many precious jewels, on whose chest was full of garlands of smelling flowers and who was quite unrecognisable even by most intimated person, had mounted, at the order of mean Chanakya, the female elephant of Chandragupta to whom he used to often ride, Chandralekha with some princes, the usual attendants of Chandragupta, was entering the palace of Nanda, Carpenter Daruvarman, being directed by you, was ready to drop his mechanical gateway on him believing him Chandragupta In the mean time, attendants of Chandragupta restrained the out side, when Varvarak, the driver appointed by your Honour of Chandragupta become ready to draw out the concealed dagger in a golden stick which was suspended by a golden chain in his hand

टिप्पणी—असिपुत्रिका—असे पुत्रिका इव पुत्रिका—यहाँ यह एक diminutive के रूप में व्यवहृत है। बर्बरक—यह चन्द्रगुप्त का खास महावत है। वस्तुतः यह राक्षस का प्रतिनिधि है। इसकी निशुक्ति उसने सिर्फ चन्द्रगुप्त वध के लिए ही की थी। अवलम्बिता—भव + लम्ब + क्त + टाप् विभक्त्यादि कार्य से रूपसिद्धि। वैकचधम्—विवक्ष्य भवन् इति विवक्ष्य + यत् वैकक्ष्यन् । चन्द्रगुप्तोपवास—उप् + वृ + ण्यत् से कर्म में उपवास रूप की सिद्धि। यन्त्रतोरणम्—‘यन्त्रकलितम् मुक्तं वा’ इस विग्रह से विभक्त्यादि कार्य से सिद्धि वनकदण्डि वायाम् अन्तर्निहिता—दण्ड एव इति दण्ड + कन् + स्वार्थे + टाप् छिद्याम् दण्डिका—कनकस्य दण्डिका। तस्या अन्त तस्मिन् निहिता, अववा अन्त मध्ये निहितः इति अन्तर + नि + धा + क्त कर्म में अन्तर्निहिता।

पिमलु

व्याख्या—राक्षस—उभयो द्वयो (of both), अस्थाने=अनवसरे (the wrong place), यत्न=उद्योग. (the attempts)

विराधगुप्त—अथ=अनन्तरम् (There at), जघने=नितम्बे (on the hips), अभिघात.=प्रहार. (heavy blow), तम् उत्प्रेक्षमाणा=सम्भावयन्ती (anticipa-
ting), गजबधू=कारिणी (she elephant), अतिजवनतया=अतिशयवेगेन
(with very quick-steps), गत्यन्तरम्=अभिगतिम् (different gait),

कृष्टरूपाणीव्यप्रपाणिनासादयन्ने चन्द्रगुप्ताशया वैरोचकं हतस्तपस्वीध्वरकः ।
ततो दारुवर्मणा यन्त्रतोरणनिपातनादात्मवयमाकलय्य पूर्वमेवोत्तुङ्गतोरणस्थल-
माहूढेन यन्त्रघट्टनबीज लोहकीलकमादाय हस्तिनीगत एव हतस्तपस्वी
वैरोचकः ।

आरुढवती=मनाधितवती (took to), प्रथमगत्यनुरोधेन=मन्दगमनापेक्षया (with reference to the previous speed), आदौ प्रत्याकलितम्=गृहीतम् पश्चात् मुक्तम्=सञ्चालितम् (loosened and released), प्रभ्रष्टलक्ष्यम्=व्युत्पलक्ष्यम् (wide of mark), पतता (fell), यन्त्रतोरणेन=तोरणरूपेणनिर्मितयन्त्रविशेषेण (by the late way that was worked by mechanism), आकृष्टा=कनकदण्डाया निःसारिता (was drawn), या कृपाणी=अग्निपुत्रिका (poniard), तस्याम् व्यग्र=व्याप्तन (clenched), पानि=करः (hand), यस्य असौ, अनासादयन् अग्राप्नुवन्=(ere reached), चन्द्रगुप्ताशया=नौर्यबुद्ध्या (in expectation of Chandragupta), वैरोचकम्=वृत्तहामानम् (Vairochaka), हतः=विनाशितः (was killed), तपस्वी=धराकः (poor), ध्वरकः (Varvaraka), ततः=तत्पश्चात् (after that), दारुवर्मणा (Daruvvarman), यन्त्रतोरण निपातनात्=यन्त्र-तोरणप्रहरणात् (for letting the gate way down), आत्मवधमाकलय्य=स्वविनाश निश्चिप (expected his own death), पूर्वमेव=प्रागेव (even before), उत्तुङ्गतोरणस्थलम्=अतिशयोक्तं यहिद्वारस्थानम् (top of a lofty archway), आरुढेन=प्रसवता (mounted), यन्त्रघट्टनबीजम्=यन्त्रसंचालनकारणं लोहकीलकम् (The iron bolt by which the mechanism), आदाय=गृहीत्वा (having taken up), हस्तिनीगत एव=करिणीपृष्ठ समागत एव (was seated on the female-elephant), तपस्वी वैरोचकः (poor Vairochaka), हतः=विनाशितः (killed).

हिन्दी—राक्षस—दोनों का ही प्रयत्न अनुचित स्थान पर हुआ ।

विराडगुप्त—और दब, दह हुआ कि—अग्ने पुष्टे पर काशाय की बाइका से बत हथिनो ने बहुत तापता मैं अग्नी चाल दशापी—उसकी प्रथम चाल के अनुमान से पकड़कर छोड़ गये—निशाना चूककर यन्त्रतुल्य तोरण से गिरत हुए बस बचारे ध्वरक का हा जान ल डो, जिसके दांनों हाथ चन्द्रगुप्त के हाने का उन्नाद से कार खींचकर निकालने में हा पते थ । उसके बाद, पहल से हा, तोरा की जैका जगह पर चढ़ हुए दारुवर्मा ने, यन्त्रतुल्य तोरा के गिराने के अनुरानन्तर अग्ने बध का आइका से तोरा का बट में लगा यह का काट उखाड़ हा—जिससे दाया पर दब बचारे वैरोचक की ही हत्या हा गयो ।

English—*Rakshasa*—Both attempted in the wrong time.

Viradgupta—Then she she-elephant seemed to be anticipated by any coming attempt as she changed herself in a quick speed. And the gateway—which was based on the calculation of the previous speed of the she-elephant fell on Vervaraka with the dagger

राक्षसः—कष्टम् । अनर्थद्वयमापिततम् । न हतश्चन्द्रगुप्तो हतो वैरोचक-
वर्वरकौ द्वेन । अथ सूत्रधारो दारुवर्मा कथम् ।

विराधगुप्तः—वैरोचकपुरःसरेण पदातिलोकेनैव लोष्टघातं हतः ।

राक्षसः—(साक्षम् ।) कष्टम् । अहो वत्सलेन सुहृदा दारुवर्मणा वियुक्ताः
हमः । अथ तत्रत्येन भिषजा अभयदत्तेन किमनुष्ठितम् ।

विराधगुप्तः—सर्वमनुष्ठितम् ।

राक्षसः—(सहर्षम् ।) किं हतो दुरात्मा चन्द्रगुप्तः ।

विराधगुप्तः—अमात्य, देवान्न हतः ।

राक्षसः—(सविषादम् ।) तत्किमिदानीं कथयसि सर्वमनुष्ठितमिति ।

drawn in his hand to attempt on Vairochaka, knowing him Chandragupta, and he died. And expecting his own execution due to the let fall of arch, Daruvarman, who had reached to the uppermost part of the arch, pulled the iron key for the performance of mechanism of the gateway, which caused the death of poor Vairochaka (in the same position, as he was sitting on the elephant).

निमला

व्याख्या—राक्षस —कष्टम् = दुःखम् (Alas!), अनर्थद्वयम् = अनिष्टद्वयम् (two misfortunes), आपत्तिम् = सम्प्राप्तम् (have happened), न हतश्चन्द्रगुप्तः = मौर्यो न विनाशितः (Chandragupta is not killed), द्वेन = भाग्येन (by fate), वैरोचकवर्वरौ (Vairochaka and Varveraka), हतौ = विनाशितौ (are killed), अथ = अनन्तरम् (now), सूत्रधारः = शिल्पी (Carpenter), दारुवर्मा (Daruvarman), कथम् = केन प्रकारेण अस्तीति (how did).

विराधगुप्तः—वैरोचकपुरःसरेण = वैरोचकाग्रगामिना (marched before Vairochaka), पदातिलोकेनैव = चरणगेन लोकेन (by the foot-man), लोष्टघातम् (hit with brick-bats), हतः = विनाशितः (killed).

राक्षस —[सासुम् = नेत्रजलेनमहितम् (with tears in his eyes)], कष्टम् = दुःखम् (Alas!), वत्सलेन = प्रीतिमता (the loving), सुहृदा = मित्रेण (friend), दारुवर्मणा (Daruvarman), वियुक्ता स्म = विरहितास्म (bereaved), अथ = अनन्तरम् (now), तत्रत्येन = तत्रवास्तव्येन (living there), भिषजा = वैद्येन (by the physician), अभयदत्तेन = तन्नाम्ना (Abhayadatta), किमनुष्ठितम् = किं कार्यम् कृतम् (what was done).

विराधगुप्तः—सर्वम् = सकलम् (All), अनुष्ठितम् = सम्पादितम् (was done).

राक्षसः—[सहर्षम् = सप्रसन्नम् (with joy)] किम् (what?), हतः = मृतः (killed), दुरात्मा = दुष्टः (wicked), चन्द्रगुप्तः = गुपलः (Chandragupta).

विराधगुप्तः—अमात्यः = मन्त्रिन् (Minister), देवात् = भाग्यात् (by fate), न हतः = न मृतः (was not killed)

विराधगुप्तः—अमान्य, क्षन्पितमनेन योगचूर्णमिश्रितमौषधं चन्द्रगुप्ताय । तत्प्रत्यक्षोद्भूता चाणक्यहतकेन कनकभाजने वर्णान्तरमुपलभ्याभिहित-
श्चन्द्रगुप्त—वृषल, सविषमिश्रमौषध न पातव्यम्' इति ।

राक्षस—[सविषादम् = सखेदम् (sorrowfully)], तव = तस्मात् (then), इद-
नीम् = अधुना (now), सर्वं नुष्ठितम् = सर्वं कार्यं सम्पादितम् (all was done),
किं कथयसि (why do you say)

हिन्दी—राक्षस—बग कट है, दो अनर्थ एक साथ, चन्द्रगुप्त का मारा गया नहीं, नाम
ने वैरोचक और वररक मार दिये । अच्छा, हिन्दी दारुवर्मा का क्या समाचार है ?

विराधगुप्त—वैरोचक के पैदल बटने बाळ मनुषियों ने पत्थर मार-मार कर उनको
जान ल डाला ।

राक्षस—(अँखों में आँसू भरकर) बड़ा दुःख है । हाँ ! मरने के दो निज दारुवर्मा
ने भी साथ छेड़ दिया । अच्छा, वहाँ वर्मान वैद अन्यदण ने क्या दिया ?

विराधगुप्त—सब कुछ दिया गया ।

राक्षस—(नतब्रत पूर्वक) क्या दुष्टता चन्द्रगुप्त को समाप्त कर दिया गया ?

विराधगुप्त—अनाथ ! नाम्य से नहीं मारा गया ।

राक्षस—(मन्त्रोद्य के साथ) तो फिर क्यों कह रहे हो “नव कुछ पूरा कर दिया गया ”

English—*Rakshasa*—Oh, what a double misfortune at the same time ? Chandragupta is not killed while the fortune killed Vairochaka and Varvaraka ! Yes, what is to Daruvarma ?

Viradnagupta—He was killed by stones by the fore marching persons of Vairochaka.

Rakshasa—(With tears in his eyes) Ah ; we have lost our one more dearest friend, Daruvarma What has done the physician-
Abhayadatta living there ?

Viradnagupta—All was done.

Rakshasa—(With joy) What ? Is the wicked Chandragupta killed ?

Viradn—Minister, by luck, he was not killed

Rakshasa—(Sorrowfully) Then why do you say now “all was done ”

मिमला

व्याख्या—विराधगुप्त—अमान्य=मन्त्रिन् (Minister) अनेन=वैद्येन (by this),
योगचूर्णमिश्रितमौषधम्=विषचूर्णमयुक्तमौषधम् (a medicine mixed with a
treacherous powder), चन्द्रगुप्ताय=वृषलाय (for Chandragupta), कल्पितम्=
प्रयुक्तम् (had prepared), तत्प्रत्यक्षोद्भूता=परिक्षोभयता (inspecting it), चाणक्य-
हतकेन=विष्णुगुप्त दुष्टेन (by wicked Chanakya), कनकभाजने स्वर्णपात्रे (in

राक्षस—शठ स्वस्वसौ बटु । अथ स वैद्यः कथम् ।

विराजगुप्त—तदेवौषधं पायितो मृतश्च ।

राक्षस—(सविषादम् ।) अहो महान्विज्ञानराशिरुपरत ! अथ तस्य शयनाधिकृतस्य प्रमोदकस्य किं वृत्तम् ।

a golden cup), वर्णान्तरमुपगतम्=अन्य वर्णमुपगतम् (a change of colour), उपलब्ध=ज्ञात्वा (having noticed), अभिहित=उक्त (said), चन्द्रगुप्त=चण्डगुप्त (Maurya), वृषल=मौर्य (O Chandragupta), सविषमौषधम्=विषमिश्रित मेघजम् (this is poisoned medicine), न पातम्बम् (must not be taken)

राक्षस—असौ=अयम् (He is), खलु=निश्चयम् (indeed), बटु=ईषद् विष घात—कर भस्ति (wily fellow), अथ=अनन्तरम् (after that), स=असौ (that), वैद्य=भियज (physician), कथं=केन प्रकारेण (how did)

विराजगुप्त—तदेव=विषमिश्रितमेव (the same), औषधम्=भेषजम् (medicine) पायित (compelled to drink), उपरतश्च=मृतश्च (and died)

राक्षस—[सविषादम्=सखेदम्=(sorrowfully)] अहो (Alas !), महान्=श्रेष्ठ (great) विज्ञानराशि=चिकित्साविषयकज्ञानाकर (treasure of knowledge), उपरत=मृत (is lost) अथ=अनन्तरम् (that) शयनाधिकृतस्य=शयनेनियुक्तस्य (employed in his bedroom), प्रमोदकस्य=गुप्तचरस्य (of Promodaka), किम् वृत्तम् (what became ?)

हिन्दी—विराजगुप्त—अमात्य, इसने तो चन्द्रगुप्त को मारने के लिए योगचूर्ण से मिलाई गयी औषध तैयार की थी। साने के पान में उसका निरोक्षण करते समय—उसका बदलता रंग देखकर, इस दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा—वृषल, यह औषधि विषमिश्रित है। इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

राक्षस—कैसा दुष्ट है यह चाणक्य ! बताओ उस वैद्य पर क्या सीती ?

विराजगुप्त—उसी ही वह औषधि पीनी पड़ी और जान से हाथ धोना पड़ा।

राक्षस—(विषण्णता के साथ) ओह, खूबने बड़े वैज्ञानिक का ऐसा अन्त, अच्छा तो बताओ उसके शयनकक्ष के अधिकारी प्रमोदक का क्या हुआ ?

English—Viradhgupta—Minister, he had prepared a medicine mixed with a powder for killing Chandragupta But wicked Chanakya inspecting it, having noticed change of colour in a golden plate said this to Chandragupta—Vrishala, this is poisoned medicine, it must not be drunk

Rashtasa—He is wily fellow indeed, what of the physician ?

Viradhgupta—He was compelled to drink the same medicine and died

Rakshasa—Alas ! A great treasure of knowledge is lost and what became of Promoda, who was employed in his bed room ?

विराधगुप्तः—यदितरेषाम् ।

राक्षसः—(सोद्वेगम् ।) कथमिव ।

विराधगुप्तः—स खलु मूर्खस्त्वं युष्माभिरतिमृष्ट मद्भान्तमर्थराशिमाप्य नहता व्ययेनोपभोक्तुमारब्धवान् । ततः कुतोऽव मूयान्वनानाम इति पृच्छय-
मानो यदा राक्ष्यभेदान्वद्भनगमत्तदा चाणक्यहृतकेन विचित्रवधेन व्यापा-
दितः ।

राक्षसः—(सोद्वेगम् ।) कथमपि देवेनोपृता वयम् । अथ शयितस्य
चन्द्रगुप्तस्य शरीरे प्रहृतुमस्मि प्रयुक्तानां राजगृहस्थान्तर्भित्तिमुत्खानेत्य प्रथममेव
निवसता बीभत्सुः शत्रूणां को वृत्तान्तः ।

विराधगुप्तः—अनान्य दारुणो वृत्तान्तः ।

प्रिलता

व्याख्या—विराधगुप्तः—यदितरेषाम् = यदन्येषाम् (The same of others).

राक्षसः—मल्लोद्वेगम् (Anxiously), कथमिव=केन प्रकारेण (How so ?)

विराधगुप्तः—स = अमौ (that), खलु = निश्चयेन (indeed), मूर्खः = ज्ञानशून्य
(fool), युष्माभिः = भवद्भिः (by you), अतिमृष्टम् = दत्तम् (given), मद्भान्तम् =
प्रचुरम् (the large) अर्थराशिम् = धनसमूहम् (amount of money),
अवाप्य = प्राप्य (having obtained), महता = प्रभूतेन (with great), व्ययेन =
अर्थस्यापगमेन (expense), उपभोक्तुम् = निवृष्टम् (enjoy), आरब्धवान् = आरब्धवान्
(began to), ततः = तदनन्तरम् (then), कुतो = कस्मात् (how), अप्यन् = प्रसोदकः
(he), नूयान् (accession), धनराशम् = अर्थाधिगमः (of immense wealth),
इति पृच्छमानः = जिज्ञासमानः (questioned), यदा (when), राक्ष्यभेदान् =
अन्योन्यविरुद्धवचनानि (divergent statements), बहुन् = अनेकानि (several),
अगमत् (made), तदा (where upon), चाणक्य इतकेन = दुष्ट चाणक्येन (by
cursed Chanakya), विचित्रवधेन = अनेकविधवधेन (by an indescribably),
व्यापादितः = मारितः (was killed).

राक्षसः—[सोद्वेगम् = समग्रमम् (Sorrowfully)], कथम् (How), अपि (here
too), वधेन = भाग्येन (by fate), उपहतावयम् = धयम् विनाशिता (we have
been disappointed), अथ शयितस्य = अनन्तरम् निद्रितस्य (well, lying
down on his bed), चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), शरीरे = देहे (on body),
प्रहृतुम् = शस्त्रप्रहारकर्तुम् (to slay), अस्मिन् प्रयुक्तानाम् = मन् प्रयुक्तानाम् (emp-
loyed by us), राजगृहस्य = राजमवनस्य (royal palace), अन्तर्भित्तिं सुरङ्गाम् =
अभ्यन्तर्भित्तिं शिखरे (a recess in the wall), पुरम् = प्राप्य (having got in),
प्रथममेव निवसता = तिष्ठताम् (previously living in), विभत्सुः शत्रूणां
(Bivatsaka and others), को वृत्तान्तः = किं वृत्तान्तमिति (what news of)

विराधगुप्तः—अनान्य = अन्विन् (Minister), दारुणः = कठिनः (terrible),
वृत्तान्तः (news).

राक्षस —(सावेगम् ।) कथं दारुणो वृत्तान्तः । न खलु विदितास्ते तत्र निवसन्तश्चाणक्यहतकेन ।

विराधगुप्त —अमात्य, अथ किम् । प्राक् चन्द्रगुप्तप्रवेशाच्छयनगृहं प्रविष्ट-
मात्रेणैव निपुणमप्रलोचयता दुरात्मना चाणक्यहतकेन कस्माच्चिद्विचिच्छिद्रा-

हिन्दी—विराधगुप्त—जी अन्य लोगों का हुआ ।

राक्षस—(गहराहट के साथ) कैसे ?

विराधगुप्त—आप से प्राप्त अपार धनराशि का उस मूर्ख ने अपण्य के साथ उपभोग करना प्रारम्भ कर दिया । उसके बाद—‘वह बिछाळ धन की प्राप्ति वहाँ से हुई’ ऐसा पूछे जाने पर—उसने परस्पर विरोधी बयान दिये । तब दुष्ट चाणक्य ने विचित्र बष से उसे भी मार डाला ।

राक्षस—(घबड़ाकर) क्या वहाँ भी भाग्य के डारो हम मारे गये ? अच्छा, सोचे में चन्द्रगुप्त के शरीर पर प्रहार करने के लिए—मेरे द्वारा नियुक्त भीतरी दिवाल के अन्त सुरक्ष में पहले से निवास करने वाले विमत्सक आदि का क्या हाल है ?

विराधगुप्त—अमात्य, भयङ्कर वृत्तान्त है ।

English—Viradhgupta—The same as of others

Rakshasa—(In alarm) How is that ?

Viradhgupta—That fool, having obtained the vast amount of money given by you began to enjoy at great expence And when questioned as to how he came by so much wealth, he made many contradictory statements, whereupon that cursed Chanakya ordered him to be killed in a fearful way

Rakshasa—(Sorrowfully) How ! here too, we have been disappointed by fate and what news you bring of Bibhatsaka and others, who were employed by us to slay Chandragupta when lying down on his bed, and who having previously got in were living in a hole within the wall of the palace ?

Viradhgupta—Terrible news, Minister !

निमला

व्याख्या—राक्षस —[सावेगम् = सखलेसम् = with agitation)], कथम् = कुतः (How), दारुण = दुःखप्रदः (sorrowful), वृत्तान्त = उद्गन्त (news) न खलुविदितास्ते = न ज्ञातास्ते किम् (they were not found), तत्र निवसन्त = वासं कुर्वन्त (living there), चाणक्य हतकेन = दुष्ट चाणक्येन (by the villain Chanakya)

विराधगुप्त —अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), अथकिम् = ते विदिता एव (what else), प्राक् चन्द्रगुप्त प्रवेशात् = मौख्यसन्निवेशात् (before Chandragupta's the very entry), शयनगृहम् = निद्रागृहम् (bedroom), प्रविष्टमात्रेणैव = सन्निवेशमात्रेणैव (moment), चाणक्येन दुरात्मना = दुष्टचाणक्येन (by the villain Chanakya),

गृहीतभक्षाययां निष्प्रानन्तीं पिपीलिकापङ्क्तिमवलोक्य पुरुषगर्भमेतद्गृहमिति
गृहीतार्थेन दाहितं तच्छयनगृहम् । तस्मिन् दह्यमाने धूमावरदृष्टयः प्रथम-
पिहितनिर्गमनमार्गमनधिगम्य द्वारं सर्व एव बीभत्सादयो तत्रैव नष्टाः ।

राक्षसः—(नासम् ।) कष्टं भोः, कष्टम् । सखे, परं दैवसंपददुरात्मनश्चन्द्र-
गुप्तिवत्स्य । कुतः ।

निपुणमवलोकयतां निरीक्षितेति (a searching look about), कस्माच्च नि-
क्षिप्तात्=केनापि कुक्षरभ्यात् (from some crevice in the wall), गृहीतभक्षा-
ययाम्=भक्षाययाम् (with fragments of boiled rice), निष्प्रानन्तीम्=
निर्गच्छन्तीम् (issuing), पिपीलिकापङ्क्तिम्=पिपीलिका ध्रेणीम् (a line of ants),
अवलोक्य=दृष्ट्वा (having seen), पुरुषगर्भमेतत्=पुरुषयुक्तेतत् (had people
within), गृहमिति=सदनमिति (the house), गृहीतार्थेन=निश्चिततत्पर्येण
(truth guessed), दाहितम्=मस्मसाकृतम् (to be burnt down), तच्छयन-
गृहम्=तद्विद्याभवनम् (that bedroom), तस्मिन्=सयनगृहे च दह्यमाने=
मस्मसात् कृतेति (while it was being burnt), धूमावरदृष्टयः (with eyes
closed by smoke), प्रथमम्=पूर्वम् (before), दाहितं=निर्मितं (constructed),
निर्गमनमार्गम्=निस्सरणपथम् (the way out), अनधिगम्य=अप्राप्य (not
having reached), द्वारम् (door), सर्व एव (even all), बीभत्सादयो
(Bibhatsaka and others), उदहनम्=अग्निम् (the fire), उपगम्य=प्राप्य
(having got), तत्रैव (there), नष्टाः=विनष्टाः (perished).

राक्षसः—[साक्षुम्=with tears in his eyes], कष्टम् भोः कष्टम्=(Terrible,
O, Terrible), सखे=मित्र (friend), परं=अवलोक्य (see), दैवसम्पदम्=
भाग्यसम्पदम् (profusion of luck), दुरात्मनश्चन्द्रगुप्तसद्वत्स्य (of the vile-
hearted and the wicked Chandragupta), कुतः=कस्मात् (For) :—

हिन्दी—राक्षस—(सन) क्या मरकर बचाना ? वहाँ रहते हुए हुए चानक के द्वारा
बान तो नहीं टिढ़ गये ?

बिराद्युक्त—मनास ! और क्या ? चन्द्रगुप्त के प्रवेश से पूर्व उसके सयनागार में प्रविष्ट
होते ही चारों ओर देखकर बैठे ही दिवाङ्ग के एक छेद में चारों के कपड़े की दोड़ी हुई
चीटियों की बाहर निकलती क्षार पर उसकी दृष्टि पड़ी, उसने तब किया कि वहाँ कुछ लोग
छिपे पड़े हैं—कहः उसने उस घर में आग लगा दी । बिना रुक रुक सके उसके सबकी काँखें
जलते हुए घर में हुए से देना भर नहीं कि उन्हें वहाँ से निकल भागने का वह रास्ता ईद्वये
न निज सका किन्तु उन लोगों ने पहल से ही रुक रक्खा था । फलस्वरूप उसके सब वहाँ जलकर
मर गये ।

राक्षस—(आँखों में आँसू भरकर) क्या है, मित्र दुष्टान्ता नाच चन्द्रगुप्त की भाग्य सम्पत्ति
को तो देखो । क्योंकि—

English—*Rakshasa*—How a bad news ? Has villain Chanakya
traced him living there ?

कन्या तस्य वधाय या विषमयी गूढं प्रयुक्ता मया
 देवात्पर्वतकस्तया स निहतो यस्तस्य राज्यार्धदत् ।
 ये शस्त्रेषु रसेषु च प्रणिहितास्तैरेव ते घातिता
 मौर्यस्यैव फलन्ति पश्य विविधधेयांसि मन्नीतयः ॥ १६ ॥

Viradgupta—Minister, the same happened, the wicked soul Chanakya, entered the bed-room before the entry of Chandragupta and after seeing a continuous line of ants carrying boiled rice in their mouth from a hole of the wall, being firm for the presense of men hidden in the room, he ordered the bed-room to be set on fire—as it began to burn—all those, Bibhatsaka and others, were unable to find out the previously constructed outlet due to the obstruction of smoke and being enveloped in the flames, perished

Rakshasa—Grievous, a grievous. Friend, look at the excess of good luck of the evil Chandragupta. For :—

विमला

व्याख्या—अन्वयः—मया, तस्य, वधाय, या, विषमयी, कन्या, गूढम्, प्रयुक्ता, मया, देवात्, सः पर्वतक, निहतः, यः, तस्य, राज्यार्धं दत्तम्, ये, शस्त्रेषु, च, रसेषु, प्रणिहिता, ते, तैः, एव, घातिताः, पश्य, मन्नीतयः, मौर्यस्य, एव, विविध धेयांसि, फलन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—मया=राक्षसेन (by me), तस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), वधाय=नाशाय (for death), या विषमयी=विषपूर्णशरीरा (a poisoned body), कन्या=अविवाहिता युवतिः (the maid), गूढम्=प्रहृष्टम् (had secretly), प्रयुक्ता=नियुक्ता (employed), मया=विषकन्या (by that girl), देवात्=संयोगात् (through fate), स=असौ (that), पर्वतकः (Parvataka), निहतः=मृत्युं प्रापितः (were killed), यः=पर्वतकः (who), तस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), राज्यार्धदत्=राज्यार्धभाक् (was to claim half of his kingdom), ये=जना (people), शस्त्रेषु=आयुधप्रयोगेषु (in the matter of weapons), च=पुनः (and), रसेषु=विषप्रयोगेषु (to use poisons), प्रणिहिता=प्रेरिताः (were employed), ते=जना (people), तैः=तैश्चर्याः (by those very means), एव=निश्चये (indeed), घातिताः=विनाशिता (killed), पश्य=अवलोक्य (see), मन्नीतयः=ममोपायाः (my schemes), मौर्यस्य एव=चन्द्रगुप्तस्यैव (to Chandragupta himself), विविध=अनेक (many), धेयांसि=मन्त्रालानि (blessings), फलन्ति=प्रतिपाद्यन्ति (a rich harvest) ॥ १६ ॥

हिन्दी—मैंने जिस विषकन्या को मौर्यस्य के लिए भेजा था, वह उसी के राजा के भापे के अधिकारी को मार गयी। और मैंने जिन लोगों को शस्त्र और विष के द्वारा उन्हें मारने

विराघगुप्तः—अमात्य, तथापि खलु प्रारब्धमपरित्याज्यमेव । परय ।

प्रारम्भ्यते न खलु विघ्नमयेन नीचैः

प्रारम्भ्य विघ्नविद्वता विरमन्ति मध्याः ।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः

प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति ॥ १७ ॥

क छिप लाया था—व इधियाह और जहर उन्हा के छिप प्राणवानक सिद्ध हुए । देवचा ने मेरा सारी नातका नय के पय न बरदान बन गया ॥ १६ ॥

English—The poison maid, who was employed by me to kill Chandragupta, killed Parvataka, who was the owner of his half of the kingdom. And persons, who were appointed by me to kill him by weapon and poison, are made to suffer death by those very means. Just see, my all the schemes are blessed to Chandragupta. (16)

टिप्पणी—विघ्नमयी—विघ्न+मय+क्रीप् विभक्त्याय कार्य से रूप सम्पन्न है । यातिता—इन्+णिन्+क्त+विनक्ति कार्य । प्रणिहिता—प्र+णि+धा+क्त+विनक्तिकार्य । राज्याद्धन्—राज्यत्व अर्द्धन् राज्याद्धन् । द्वयसम्पदम्—द्वय सम+पद+विष्+भावे सम्पद ।

इन श्लोक में विष्कन्वा प्रेरणाजनक नाति प्रयोग के द्वारा दो प्रतिकूल पक्षों के संचयन में चतुर्कार उत्पन्न किया गया है । उन वहाँ विरमाहकार है । विघ्न विरोधनूलक अलङ्कार माना जाता है । इन श्लोक में नेदनों राति, नाधुर्य गुण एवं शार्ङ्गविक्रीडिन छन्द है ।

विमला

विराघगुप्त —अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), तथापि=नीतिबैध्व्येऽपि (still), खलु=निश्चयेन (indeed), प्रारब्धम्=प्रकान्तम् (undertaken), अपरित्याज्यमेव=परित्याज्य योग्यम् न (must not be given up), परय=अवलोकय (see)

अन्यथा—नीचै, विघ्नमयेन, न, खलु, प्रारम्भ्यते, मध्या, प्रारम्भ्य, विघ्नविहिता, विरमन्ति, उत्तमगुणा, विघ्नै, पुन, पुन, प्रतिहन्यमाना, अपि, प्रारब्धम् न, परित्यजन्ति ॥ १७ ॥

व्याख्या—नीचै=अधमै (Mean man), विघ्न भयन=अन्तरायभीत्या (from fear of obstacles), न=नहि (not), खलु=निश्चयेन (indeed), प्रारम्भ्यते=प्रारम्भ्यते (set to work), मध्या=मध्यमा (average people), प्रारम्भ्य=प्रारम्भ्यता (begin), विघ्नविहिता=अन्तराय प्रताडिता (confronted with difficulties), विरमन्ति=कार्यम् त्यजन्ति (desist), उत्तमगुणा=श्रेष्ठा (Men of best energy), विघ्नै=अन्तरायै (by difficulties), पुन पुन=मुहुर्मुहु (again and again), प्रतिहन्यमाना=प्रताडिता सन्तोऽपि (assailed), अपि=अपि (also), प्रारब्धम्=प्रारब्धम् (undertaken), न परित्यजन्ति=न त्यजन्ति (do not give up) ॥ १७ ॥

अपि च ।

किं शेषस्य भरव्यथा न वपुषि क्षमां न क्षिपत्येव यत्

किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेरप्यस्ते ॥ यन्निश्चलः ।

किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन्कृपणवच्छ्लाघ्यो जनो लज्जते

निर्व्यूढं प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोत्रवतम् ॥ १८ ॥

हिन्दी—विराधगुप्त—कुछ हो भविष्यत् जो काम हाथ में लिया गया है, उसे छोड़ा नहीं जा सकता । कहा भी है—

नीचजन विनों के भय से किसी भी कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते, । प्रारम्भ करके विनों के द्वारा प्रताडित होने पर मध्यम लोग रुक जाते हैं, किन्तु, विनों से बार बार प्रताडित होते हुए भी आरम्भित कार्य को उत्तमजन नहीं छोड़ते ॥

English—Viradhgupta—Minister, still, what is undertaken must not be given up See

Mean men set not to work from fear of obstacles : Average people desist after commencing difficulties, but Men of superior merit though again and again assailed by difficulties, do not give up what is once undertaken 17

टिप्पणी—परित्याज्यम्—परि + त्यज् + ण्यत् कस्यि परित्याज्य । विनभयेन—वि + हन् + क् करण वमर्थे विप्र तरमात् भयम्, 'हेतौ' से तुलीया विभक्ति । 'विरमन्ति' में परस्मैपद 'व्याज परिभ्योरम' से हुआ है ।

इस श्लोक में पूर्णोपमाकाङ्क्षार है । कुछ लोग इसमें अविरत एक कुछ लोग अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार मानते हैं । इसमें नैदनी रीति, प्रसादगुण एवं वसन्ततिलका वृक्ष है । वक्ष्य है —

‘उक्तावसन्ततिलकातमप्राज्ञगौरव’

रिमला

अन्वयः—शेषस्य, वपुषि, किम्, भरव्यथा, न, यत्, एष, क्षमा, न, क्षिपति, वा, किम्, दिनपते, परिश्रम, न, अस्ति, यत्, निश्चल, न, अस्ति, किन्तु, श्लाघ्य, जन, अङ्गीकृतम्, कृपणवत्, उत्सृजन्, लज्जते, हि निर्व्यूढम्, एतत्, सताम्, गोत्र-वतम्, ॥ १८ ॥

व्याख्या—शेषस्य=शेषनामस्य (Sesha's), वपुषि=शरीरे (on body), किमितिप्रश्ने (what) भर-व्यथा=भार पीडा (pain of burden), न=नहि (not), यत् (that), एष=शेषनाम (he) क्षमाम्=पृथिवीम् (the earth), न=नहि (not), क्षिपति=पातयति (throw off), वा=अथवा (or), किम् दिनपते=सूर्यस्य (the Sun's), परिश्रम=श्रान्ति (toil), न=नहि (not), अस्ति=भवति (does), यत् (that), निश्चल=स्थिर (motionless) न=नहि (not), अस्ते=अस्ति (does), किन्तु (but), श्लाघ्य=प्रशंसनीय (praise worthy), जन=लोक (people), अङ्गीकृतम्=स्वीकृतम् (undertaken),

राक्षसः—सखे, प्रारब्धमपरित्याज्यमिति प्रत्यक्षनेवैतद्भूयताम् । ततस्ततः ।

निराशयुतः—ततः प्रभृति चन्द्रगुप्तशरीरे सहस्रगुणप्रसक्तश्चाणक्यहतक एव
एतदीदृश भवतीत्यन्विष्य निगृहीतयान्पुरनिवासिनो युष्मदीयानात्पुरुषान् ।

कृपणवत्=दीनवत् (like a mean hearted man), उत्सृजन्=परित्यजन् (to lay aside), लज्जते=त्रपाननुभवति (blushes), हि=यत, निर्व्यूढम्=निर्वाह (to carry), एतत्=(this), सताम्=सज्जनानाम् (of the worthy), गोत्र-
घतम्=कुलघतम् (the family vow) ॥ १८ ॥

हिन्दी—अर भा—

शुभना क शरीर पर क्या भार का पीडा नहीं है ? जो इसे फक नहा देता है, अथवा—
क्या तुम को परिश्रम नहीं होना, जो वह स्थिर नहा होना ? किन्तु, दशसनीय व्यक्ति स्थाकृत को
उर वन्तु को कायर का नरह छोड़ना हुआ लज्जित नहीं होना, क्योंकि प्रारम्भित कार्य का
निर्वाह करना मज्जनों का कुलधर्म है ? ॥ १८ ॥

English—Moreover —

Is there no pain of burden in the body of Sessa, that he does not throw down the earth ? Or—does not feel the Sun fatigued that he does not sit down motionless ? But a praiseworthy man blushes to lay aside, like a mean hearted person, what he has once undertaken To carry their undertaking to their end—this is indeed, the family vow of the good. 18.

टिप्पणी—राक्षस—उद्+√लृञ्+लृट्+लुनादि कार्य से रूपसिद्धि । निर्व्यूढम्—
निर्+वि+√वृञ्+क्त (नावे) विभक्ति कार्य । छाष्य—√धाप्+ष्यत् (क्तनि)
विभक्त्यादिकार्य से रूपसिद्धि । इस श्लोक में अर्धान्तरन्यास अकार एव शार्ङ्गलविकीर्तित छन्द
है । प्रमादगुण एव वैदनी रीति है ।

निमला

व्याख्या—राक्षस—सखे=ह मित्र (friend), प्रारब्धम्=प्रस्तुतम् कार्यम्
(have undertaken), अपरित्याज्यम्=परित्यागोऽप्यस्यम् (not giving up),
एतत् (that), भवताम्=युष्माकम् (you), प्रमथमेव=समथमेव (before
your eyes), ततस्ततः=तदनन्तरम् किम् अतिस (what further)

निराशयुत—ततः प्रभृति=तस्माद्विषयादारभ्य (since then), चाणक्यहतक=
दुष्ट चानक्यः (the cursed Chanakya), चन्द्रगुप्तस्य शरीरे=मौर्यस्य विप्रदे
(regarding the person of Chandragupta) सहस्रगुणप्रसक्त=सहस्रम् अधिक
गुणा यस्मिन् कर्मणि तत्सहस्रगुणम् सहस्रगुणान् यथास्यात् तथा (thousand times
more), अप्रमत्त=सावधान (careful), एभ्यः एव=इत्थुमपुरवासिराजसाधुजनभ्यः
एव सदृशम् (from them), एतत्=विषयक्यादि प्रयोगारूपम् इदं=अनिष्टम्,
भवति=जायते (then such attempts originated), अन्विष्य=समृग्य (after
learning on enquiry), निगृहीतवान्=आयत्तीकृतवान् (arrested), पुरनिवासिनः=

राक्षस—(सोद्वेगम् । कथय कथय के के निगृहीताः ।

विराधगुप्त—प्रथम तावत्क्षपणको जीवसिद्धिं सनिकार नगरान्निर्वासितः ।

राक्षस—(स्वगतम् ।) एतावत्सह्यम् । न निष्परिमह स्थानभ्रशः पीडयिष्यति । (प्रकाशम् ।) वयस्य, किमपराधमुद्दिश्य निर्वासितः ।

विराधगुप्त—एष राक्षसप्रयुक्त्या विपकन्यया पर्वतेश्वर व्यापादितवानिति ।

कुसुमपुर वास्तव्यान् (residing in the city), युष्मदीयान् (your), आत्मपुरुषान् = विश्वासिन लोकान् (trusted agents)

राक्षस —[सोद्वेगम् = सन्नासम् = (with concern), कथय कथय वीप्सायाम् द्विरुक्ति) (tell me), के के = किन्नामका (who were), निगृहीता = इण्डिता (arrested)

विराधगुप्त —प्रथमम् = आदौ (In the first), तावत् = वाक्यालङ्कारे प्रयोग, क्षपणक = बौद्ध सन्यासी विह्वधारी (the mendicant), जीवसिद्धि = तन्नामकः (Jivasiddhi), सनिकारम् = सतिरस्कारम् (with indignities), नगरात् = पुरः (from the city), निर्वासित = निष्कासित (was expelled)

राक्षस —[स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself), एतावत् = जीवसिद्धि निष्कास्तनम् (this much), सह्यम् = सहनयोग्यम् (is bearable), निष्परिमहम् = विपयाशक्तिशून्यम् (one who owns nothing), स्थानभ्रशः = वासस्थानपरित्याग (expulsion from residence), न = नहि पीडयिष्यति = व्यथा करिष्यति (will not pain), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)] वयस्य = मित्र (friend), कम् = किमभिधेयम् (on what), अपराधम् = दोषम् (charge), उद्दिश्य = निश्चित्य (with reference), एष = क्षपणक (he) निर्वासित = निष्कासित (was expelled)

विराधगुप्त —एष = अतौ (that), राक्षसप्रयुक्त्या (employed by Rakshasa), विपकन्यया = विपनिर्मितयालिक्या (poison girl), पर्वतेश्वरम् = तन्नामकराजानम् (Parvateswar), व्यापादितवान् = विनाशितवान् (was killed)

हिन्दी—राक्षस—मित्र ! प्रारम्भित कार्य छोड़ने योग्य नहीं होता,—यह आप लोगों के सामने ही है। उसके बाद ?

विराधगुप्त—तभी से छत्र हस्त दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के शरीर की रक्षा में हजारों गुणा अधिक सावधानी की है। और, इन सबों की जड़ यही छोग है—ऐसा निगाह बर—खोजकर उसने नगरी में रहने वाले आप के विश्वस्तजनों को बंद कर दिया।

राक्षस —(पक्काइय के साथ) बतलाओ, बतलाओ, बोन-बोन पकड़े गये ?

विराधगुप्त —सर्वप्रथम तो बौद्ध सन्यासी जीवसिद्धि की बड़ी हो बेइज्जती के साथ शहर से बाहर निकाल दिया गया।

राक्षस—(स्वगत) यहाँ तक तो बढ़ास्त करने योग्य है। बिना परिवार वाले का तो स्थान का परित्याग पीकित करेगा नहीं (प्रकाश रूप में) बिल्कु, मित्र विस अपराध में उसे यह सजा मिली !

राक्षसः—(स्वगतम् ।) साधु कौटिल्य, साधु ।

परिहृतमयशः पातितमस्मासु च घातितोऽर्धराज्यहरः ।

एकमपि नीतिबीजं बहुफलतमेति यस्य तव ॥ १९ ॥

(प्रकाशम् ।) ततस्ततः ।

विराधगुप्त—रत्त अराध ने कि राक्षस द्वारा प्रदुक्त विचित्रता ते इतने हा पर्वतपर क मान हरे है ।

English—Rakshasa—Friend, you can see that we are not giving up what we have under taken Next what next ?

Viradhgupta—The cursed Chanakya, a thousand fold more vigilant regarding the person of Chandragupta since then, has arrested your trusted agents residing in the city, on enquiry that such attempts originated from them

Rakshasa—(With concern) Tell me, oh tell me, who were arrested ?

Viradhgupta—In the first place, the mendicant Jivasidhi was expelled from the city with renomy.

Rakshasa—(To himself) This much is bearable. Loss of place will not pain one who owns nothing (aloud), Friend, with reference to what was he expelled ?

Viradhgupta—That he killed Parvatswar with poison-maid employed by you.

विनला

व्याख्या—राक्षस—[स्वगतम्=आत्मगतम् (To himself)], साधु=सम्यक् कृतम् (excellent), कौटिल्य=विष्णुगुप्त (Chanakya), साधु=त्वया सम्यक् कृतम् (well done)

अन्वयः—अर्धराज्यहर, घातित, अयशः, परिहृतम्, अस्मासु, पातितम्, यस्य, तव, एकमपि, नीतिबीजम्, बहुफलतम्, एति ॥ १९ ॥

व्याख्या—अर्धराज्यहर=प्रतिज्ञातार्धराज्याधिकारा (the sharer of half the kingdom), घातितः=मृत्युप्रापित (had killed), अयशः=तदुत्तरा दुष्कृतिम् (infamy), परिहृतम्=दूरीकृतम् (removed), अस्मासु=मयि (upon us), पातितम्=समर्पितम् (have cast), यस्यतव=चाणक्यस्य (you of whom), एकमपि=केवलमपि (even a single), नीतिबीजम्=नय अङ्गुर-कारणम् (germ of policy), बहुफलतम्=अनेकविध परिणामनायम् (bears multifarious fruit) ॥ १९ ॥

[प्रकाशम्=स्पष्टम् (also id)], ततस्ततः=तदन्तरम् किम् (what next)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) साधु, साधु, साधु ।

विराधगुप्त — ततश्चन्द्रगुप्तशरीरमभिदोग्धुमनेन व्यापारिता दारुवर्मादय इति नगरे प्रख्याप्य शकटदासं शूलमारोपितम् ।

राक्षसः—(साक्षम् ।) हा सखे, शकटदास, अयुक्तरूपस्तवायमीदृशा मृत्युः । अथवा स्वाम्यर्थमुपरतो न शोच्यस्त्वम् । वयमेवात्र शोच्या ये नन्दकुलविनाशोऽपि जीवितुमिच्छामः ।

विराधगुप्तः—अमात्य, स्वाम्यर्थ एव साधयितव्य इति प्रयतसे ।

आध राज्य के अधिकारी पर्वतक को मारकर, अपने ऊपर आने वाले अपयश को दूर कर— हम पर डाल दिया—तुम्हारे एक भी नातिबीन अनेक प्रकार के फलों को दे रहा है ॥ १९ ॥
(झुनाकर) उसके बाद ?

English—Rakshasa—(To himself) Well done, you Kautilya, excellent

Ramoving infamy dodged and cast upon us, while at the same time the sharer of half the kingdom is done away with You of whom even a single germ of policy bears multifarious fruit 19

(Aloud), what next

टिप्पणी—सहस्रगुणम्—सहस्रगुणा यस्मिन् कर्मणि तत् यथा तथा । निष्परिमहम्—परि + मद् + अप् कर्म में 'परिमद्' निरस्त परिमद् अनेन—'इगुपथस्येत्यादि' पत्व विभक्त्यादि कार्य से रूप की सिद्धि ।

नातिबीन के अनेक फलोत्पादकत्व में हतुभूत—'अपहनमयश्च' इत्यादि का पदार्थत्व के साथ यथन से इस शोक म काम्यलिङ्ग अलङ्कार है । उदाहरण जैसे—

‘हेतोर्वाक्य पदार्थत्वे काम्यलिङ्गमुदाहृतम्’

इसमें वेदभी रीति और प्रसादगुण है तथा आर्वाचुष है । जैसे लक्षण—

यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथास्तृतीयेऽपि

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥

निमला

व्याख्या—विराधगुप्त — तत = तदनन्तरम् (after that), चन्द्रगुप्तशरीरम् = चूपलस्य देहम् (body of Chandragupta), अभिदोग्धुम् = अभिनिघासितुम् (to injure), अनेन = शकटदासेन (by him), व्यापारिता = नियोजिता (had been employed), दारुवर्मादय (Daruverma and others), इति=इत्येतद् वृत्तम् (this news), नगरे=पत्तने (in the city), प्रख्याप्य = उद्घोष्य (proclaiming) शकटदास = सत्तामकः (Sakatdas), शूलम्=लौहदण्डम् (an iron spit), आरोपित = स्थापित (put to)

राक्षस — [साक्षम्=(with tears)], हा सखे शकटदास = कष्टम् ह मित्र शकटदास (Alas ! friend Sakatdas), अयुक्तरूप = अयोग्य (unfit), तव (your), अयम् = एष (this), ईदृश = एतद्विध (such), मृत्यु = मरणम् (death), अथवा = वा (or), स्वाम्यर्थम् = प्रभु कारणम् (for master's cause), उपरतः =

राक्षसः—सखे,

अस्माभिरमुमेधार्थमात्मन्य न जिजीविषाम् ।

परलोकगतो देवः कृतघ्नैर्नानुगम्यते ॥ २० ॥

कथ्यतामपरम्यापि सुदृढचमनस्य शरणे सञ्जोऽस्मि ।

संस्कृत

मृतः (dead), त्वम् (you), न शोच्य = शोचितुं योग्य (not to be pitied),
वपनेव (we alone), अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), शोच्या = शोक-
योग्याः (to be pitied), वे = वयम् (we), नन्दकुल विनाशोऽपि = नन्दकुल
व्यपेति (even after the race of Nanda is destroyed), जीविषुम् = प्राणिषुम्
इच्छाम् = अभिलषाम् (wish to live)

विराडगुप्त—अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), स्वाम्यर्थ एव = प्रभुकार्यमेव (in the
interest of your master), भाषयितव्य इति = सम्पादयितव्य इति हेतोः (has
to be served), प्रयतन्ते = चेष्टन्ते (are working)

हिन्दी—विराडगुप्त—तुम्हारे बाद, हम शक्यताम ने चन्द्रगुप्त पर आगत करने के
लिए राक्षसों प्रकृति को निरुद्ध किया था—नगर में ऐसी बाधा कर के शक्यताम को
‘हो’ पर बना दिया ।

राक्षस—(मैंने नें मर्नु नर कर) हार निव शक्यताम, तुम्हारी इस तरह को नृप
कद्विष है । कदवा—स्वामी के लिए श्रेष्ठ दुःख करने योग्य नहीं हो, इस नियम में
हम ठीक हा शोक करने योग्य है, जो नन्दकुल के विनाश हो जाने पर जो जाने का इला
करते हैं ।

विराडगुप्त—अमात्य, ‘स्वामी का कार्य सम्पादन है’—इतिहेतु ही आगत करने
कर है ।

English—Viradgupta—Then Sakatdas put to the stake procla-
ming in the city that Daruvarma and others were instigated by
him to plot against the life of Chandragupta.

Rakshasa—(With tears), Alas ! friend Sakatdas; such a death
quite undeserved by you Or—you who dead in master's cause,
must not be mourned for But accursed in the life of me who
wishes to live even at the extinction of the race of Narda.

Viradgupta—Minister, you are working, solely in the interest
of your master

मिमला

व्याख्या—राक्षस—मित्र मित्र (Friend) —

अन्वयः—अमुम्, अर्थम्, एव, अवलम्ब्य, जिजीविषाम्, न, कृतघ्नैः, अस्माभिः, पर-
लोकगत, देवः, न, अनुगम्यते ॥ २० ॥

व्याख्या—अमुम् = अवश्यम् (this), अर्थम् = कार्यम् (object), एवम्
धारणे अवलम्ब्य = आश्रित्य (clinging), जिजीविषाम् = जीवनेच्छाम् (desire to

विराधगुप्तः—एतदुपलभ्य चन्दनदासेनापवाहितममात्यकलत्रम् ।

राक्षसः—क्रूरस्य चाणक्यवटोर्विरुद्धमयुक्तमनुष्ठित तेन । .

विराधगुप्तः—आमात्य, नन्वयुक्ततरः सुहृद्द्रोहः ।

live), न = नहि (not), कृतघ्ने = अकृतघ्नैः (ungrateful), अस्माभिः = राक्षसादिभिः (by us), परलोकगतः = स्वर्गप्राप्तः (gone to the other world), देव = जन्द (sire), न अनुसम्यते = न अनुश्रियते (is not being followed) ॥ २० ॥

कथ्यताम् = उच्यताम् (tell), अपरस्यापि = अन्यस्यापि (others also), सुहृद्भ्यसनस्य = मित्रदुस्सव्य (disasters to friend), ध्वजे = आकर्णने (to listen), सज्जोऽस्मि = तत्परोऽस्मि (I am prepared)

हिन्दी—राक्षस—मित्र,

मैं कितना कृतघ्न हूँ कि अपने स्वामी का मैंने अनुगमन नहीं किया । तुम ठीक ही कहते हो कि मैं उस स्वर्गवासी की इच्छा किस तरह पूरी हो—इसी उद्देश्य से जी रहा हूँ—न कि जीने की इच्छा से ॥ २० ॥

यहो, मैं दूसरे मित्र की विपत्ति को सुनने के लिए प्रस्तुत हूँ ।

English—Rakshasa—Friend,

His Majesty gone to the other world, is not being followed by us, ungrateful as we are, clinging not to a desire to live, but to this very object. 20.

Proceed, I am ready to hear of the misfortune of other friends also.

टिप्पणी—जिजीविषाम्—जीवितुमिच्छा इति जीव + सन् + अ, भावे जिजीविषा, तान् जिजीविषाम् ॥

कृतघ्ने—कृ + क्त कर्मणि कृतम् तव इति विस्मरणेन इति कृत् + √हन् क्त कर्त्तरि कृतघ्नः तै कृतघ्ने ।

इस श्लोक में परलोकगत राजा के अनुगमन में हेतुभूत कृतघ्नता का और स्वामी कार्य साधन का पदार्थत्वेन कथन से कान्यारिक्त अलङ्कार है ।

दूसरा—अप्रसन्नपूर्वक उक्त स्वामीकार्य के सम्पादनात्मक वस्तु का परलोकगत राजा के अनुगमन के निराकरण से परित्यक्ता अलङ्कार भी है । फिर दोनों के समावेश से सवृष्टि अलङ्कार है । इसने वैदर्भी रीति, मात्रार्थे उण, कश्च रस ध्व अनुष्टुप् छन्द दे ।

विमला

ध्यात्वा—विराधगुप्त—एतदुपलभ्य=इदं श्रुत्वा (hearing of this), चन्दन-दासेन (by Chandandas), अमात्यकलत्रम् = राक्षस गृहजनम् (minister's wife), अपवाहितम् = स्थानान्तरम् प्रापितम् (was sent away)

राजस—क्रूरस्य = दुष्टस्य (cruel fellow), चाणक्यवटोः = विष्णुगुप्तस्य (Chanakya's), विरुद्धम् = प्रतिकूलम् (against), तेन (by him), अयुक्तम् = असमुचितम् (improper), अनुष्ठितम् = कृतम् (what is done)

विराधगुप्त—अमात्य=मन्त्रिन् (Minister), ननु= (but), सुहृद्द्रोह = मित्रविरुद्धाचरणम् (to betray a friend), अयुक्ततरः = अन्याय्यतरः (would have been worse)

राक्षस.—ततस्ततः ।

विराधगुप्त—ततो याच्यमानेन न समर्पितममात्यकलत्रं यदा तदातिक्रुपितेन चाणक्यपुत्रेण—

राक्षस—(सोद्वेगम् ।) न खलु व्यापादितः ।

विराधगुप्तः—न हि । गृहीतगृहसारं सपुत्रकलत्रो बन्धनागारे निक्षिप्तः ।

राक्षस—ततस्ततः = तदनन्तरम् (Next, what next)

विराधगुप्त—ततः=तदनन्तरम् (Next), याच्यमानेन=प्रार्थनानेनापि (even on being requested), अनेन=चन्दनदासेन (by him), यदा (when), अमात्यकलत्रम्=राक्षसकी (minister's wife), न समर्पितम्=न दत्तम् (did not give up), तदा (then), अतिक्रुपितेन=अतिक्रुधेन (by the enraged), चाणक्यपुत्रेण=विष्णुसेन (brat Chanakya)

राक्षस—[सोद्वेगम्=सन्नायम्=In alarm], न खलु (Not surely), व्यापादितः=मारितः (killed)

विराधगुप्तः—नहि=(Not indeed), गृहीतगृहसारं=आरुगृहस्थितसकल-धनम् (with all his property sequestered), सपुत्रकलत्रं=सौपुत्रसहितम् (with son and wife), बन्धनागारं=कारागृहं (into prison), निक्षिप्तः=स्थापितः (he was sent),

हिन्दी—विराधगुप्त—इह सब सुनकर चन्दनदास ने आरुके परिवार को मार डाला ।

राक्षस—यह करके तो उसने केवल आरु का राज्य के विरुद्ध दुश्मनी नोड ली ।

विराधगुप्त—अमात्य, निवश्री और अधिक अनुचित होता ।

राक्षस—उसके बाद, उसके बाद ।

विराधगुप्त—तब मैंने पर भी जब उस चन्दनदास ने अमात्य के परिवार को समर्पित नहीं किया तब अत्यन्त क्रुध उस आरु के द्वारा—

राक्षस—(घबराह के साथ) नार डाल तो नहीं पड़ा ?

विराधगुप्त—नहीं । बन्धनस्थित रख करके पुत्र-पत्नी के साथ जेल में डाल दिया गया ।

English—Viradhgupta—On hearing of these, minister's wife was sent away by Chandandas.

Rakshasa—He did wrong, in going against that cruel fellow, Chanakya.

Viradhgupta—But Minister, betray to a friend is more improper.

Rakshasa—Next, what next.

Viradhgupta—Next, when he did not give up minister's wife even on being requested, then by the enraged brat Chanakya —

Rakshasa—(In alarm) Surely not killed ?

Viradhgupta—Cast into the Jail with his son and wife and with his all property sequestered.

राक्षसः—तत्किं परितुष्टः कथयसि अपवाहितं राक्षसकलत्रमिति । ननु वक्तव्यं सयमितः सपुत्रकलत्रो राक्षस इति ।

(प्रविश्य ।)

पुरुषः—जेदु अमच्चो । एसो क्खु सअड्ढासो पडिआरभूमिं उवड्ढिदो ।
(जयतु अमात्यः । एष खलु शकटदासः प्रतिहारभूमिमुपस्थितः ।)

राक्षसः—भद्र, अपि सत्यम् ।

पुरुषः—किं अलिअ अमच्चपादेसु विनिवेदेमि । (किमलीकममात्यपादेषु विनिवेदयामि ।)

राक्षसः—सखे विराधगुप्त, कथमेतत् ।

विराधगुप्तः—अमात्य, स्यादेतदेव यतो भग्न्य रक्षति भवितव्यता ।

राक्षसः—प्रियवदक, किमद्यापि चिरयसि । क्षिप्रं प्रवेशयैनम् ।

पुरुषः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

विमला

राक्षस —तत्किम्=(how then), परितुष्टः=सन्तुष्टः (with satisfaction), कथयसि=ब्रवीषि (do you say), अपवाहितम्=अन्यत्र स्थापितम् (was removed), अनेन (by him), राक्षसकलत्रम्=राक्षसपत्नीम् (minister's wife), इति=एवम् (this), ननु वक्तव्यम्=कथितव्यम् (really, should say), सपुत्रकलत्रो राक्षसः (with wife and son Rakshasa), सयमितः=सम्बद्ध (was put into iron)

(प्रविश्य=entering)

पुरुष —जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्तताम् (Let prosper), अमारय (minister), एष खलु=असौ (here is), शकटदासः=तथाभावा कायस्थ (Sakatdasa), प्रतिहार-भूमिम्=द्वारदेशम् (at the door), उपस्थितः=आगतः (come)

राक्षसः—भद्र (Gentle), अपि सत्यम्=(is it true) ?

पुरुष —किम् (what), अलीकम्=असत्यम् (a falsehood), अमात्यपादेषु=मन्त्रिचरणेषु (to the minister), विनिवेदयामि=कथयामि (can I report)

राक्षस —सखे=हे मित्र (O friend), विराधगुप्त (Viradhgupta), कथमेतत् (how is this)

विराधगुप्त —अमात्य=मन्त्रिन् (minister), एवम्=अनेन प्रकारेण, एतत्, स्यात्=भवेत् (It may be so), यत् (for), भवितव्यता=भाग्यम् (fate), भग्न्यम्=भवस्य भावि (the blessed), रक्षति=पालयति (guards)

राक्षसः—प्रियवदक (Priyambadaka), किमद्यापि (why do you now), चिरयसि=विलम्बसे (tarry), क्षिप्रम्=शीघ्रम् (quickly), एनम् (him), प्रवेशय (usher in)

पुरुष —तथा (so be it), इति निष्क्रान्तः (exit).

(प्रविष्टः सिद्धार्थकः शकटदासः ।)

शकटदासः—(स्वगतम् ।)

इदं नौर्यमिव प्रतिष्ठितपदं शूलं धरिष्याः स्थले
तल्लक्ष्मीमिव चेतनाप्रमथिनीमुन्मुच्य बध्यन्नजम् ।
शुत्वा स्वान्यपरोपपैत्रविपमानाघाततूर्यस्वना-
द्य ध्वस्तं प्रयमाभिघातकटिर्न यत्तन्मदीयं मनः ॥ २६ ॥

हिन्दी—राक्षस—उह क्यों उन्मुट होकर बह रहे हो कि राक्षस का परिवार नष्ट दिया गया—कहना चाहिये—राक्षस को-पुत्र के साथ रेंव गया ।

(प्रवेश करके)

पुरुष—अनाथ, बुरा हो—रह शकटदास दरवाजे पर उत्सिद्ध है ।

राक्षस—मद्र क्या यह सत्य है ?

पुरुष—क्या अनाथ के चरणों में अनाथ निबधन कर्मका ?

राक्षस—निज विराधगुप्त यह कैसे ?

विराधगुप्त—अनाथ, सब कुछ समझ है, नाचो की रक्षा स्वर धिरे करता है ।

राक्षस—निबधक, क्यों आज भा विडम्ब कर रहे हो ? शत्रु मन्दर ठाको ।

पुरुष—पैसा जाना, (पैसा बटकर निकल गया)

English—*Rakshasa*—Then how do you say with satisfaction that minister's wife was removed ? Really you should say *Rakshasa* is arrested with son and wife.

(Entering)

Servant—Victory to the minister, *Sakatdasa* is waiting at the door.

Rakshasa—Gentleman ! is that true ?

Servant—Can I report a falsehood to the minister ?

Rakshasa—Friend, *Viradgupta*, how is this ?

Viradgupta—Minister, it may be so, for fate guards the blessed.

Rakshasa—*Priyambadak*, why tarry even now ? Quickly usher him in.

Servant—so be it (exit)

विमला

(प्रविष्टः = enter, सिद्धार्थकः = (*Sidharthaka*), च (and) शकटदासः = (*Sakatdasa*).

शकटदासः—(स्वगतम् = to himself)

अन्वयः—प्रतिष्ठितपदम्, नौर्यम्, इव, धरिष्याः, स्थले, शूलम्, इदम्, तल्लक्ष्मीम्, चेतनाप्रमथिनीम्, बध्यन्नजम्, उन्मुच्य, स्वान्यपरोपपैत्रविपमानम्, आघाततूर्यस्वनम्, शुत्वा, मदीयम्, यत् मनः, न, ध्वस्तम्, तत् प्रयमानिघातकटिर्न, मन्त्रे ॥ २६ ॥

व्याख्या—प्रतिष्ठितपदम्=सत्यापितराज्यशासनम् (firmly established), मौर्यम् =चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), इव=यथा (like), घरिण्या =पृथिव्या (the earth), स्थले=तले (on), शूलम्=वधसाधनभूतम् लौहम् (the stake), दृष्ट्वा=अवलोक्य (on seeing), तत्त्वप्समीम्=मौर्यराज्यधियम् (the sovereignty of Maurya) इव यथा (like), चेतनाप्रमथिनीम्=सज्ञाबिलोपिनीम् (pains consciousness), वध्यस्तज्जम्=वध्यमालम् (the garland tied round the head), दम्मुच्य=परिधाय (takes), स्वामिनः प्रभो उपरोधेन हिसनेन रौद्रा घोरा विषमा अध्वास्या, तान् इति स्वाम्युपरोधरौद्रविषमान् (as terrific and dismal as at the time of the dethronement of the lord), आघात=वध्यभूमि (killing place), तस्य दूर्यस्वना=पटहृष्वनयः (the sound of the trumpets), श्रुत्वा=आकर्ण्य (having heard), अपि यत् मदीयम्=मामकीनम् (my), मन=हृदयम् (heart), न भ्वस्तम्=न विदीर्णम् (did not breakdown), अतः तत् प्रथमा=पूर्वमाप्ता (the previous), ये अभिघाता=अनर्थपरम्परा (strokes), ते कठिनम्=कठोरम् (the hardened), आसीदित्यहं जाने (methinks) ॥ २१ ॥

हिन्दी—(शकटदास और सिद्धार्थक का प्रवेश)

शकटदास—(अपने आप)—

स्थिर शासन वाले चन्द्रगुप्त के समान पृथ्वी के ऊपर दृढ़ता से गड़े हुए शूल को देखकर, चन्द्रगुप्त की लक्ष्मी के समान चेतना को विनष्ट कर देने वाली वध्यमाला को देखकर, स्वामी के उल्लाह चेंके जाने के समय भयवर एवं असह्य बध बाजे के शब्दों को सुनकर भी मेरा मन नहीं पटा—बह इसलिए कि पहले के भयङ्कर बलों से कठोर हो गया—देता मैं नानता हूँ ॥ २१ ॥

English—(Enter Sakatadas and Sidharthaka)

Sakatadasa—(To himself)—

That my heart, having seen to put to death by spitting on stakes, strongly planted in the ground like Maurya firmly established on the earth, suspending from the head the garland that takes away consciousness like the sovereignty of Maurya, and hearing the beating of the drums of execution grim and discordant, like a sound as terrific and dismal as at the time of dethronement of the lord, did not break down, because it was hardened by previous strokes (21)

टिप्पणी—चिरयसि—चिर+यिच् (नाम्नात्)+इट्+सिप् विभक्तिकार्यं से सम्पन्नरूप, भ्वस्तन्—√भ्वस्+क्त+विभक्ति कार्यं से रूप सम्पन्न ।

स्वाम्युपरोध-उप+रुध्+घञ् भावे उपरोध-विभिन्ना समेग्य इतिविषमा—'सम' के सकार को 'घु'निर्द्भुव्यं ऋषि झुतिसमा' से परब, पुन 'रौद्रश्च ते विषमाय' कर्मधारय समास कर विभक्त्यादि कार्यं से सम्पन्न रूप स्वाम्युपरोधेन रौद्रविषमा की सिद्धि । आघात—आ सम्भक् हननम् इति—आ+हन्+घञ् भावे आघात ।

इस श्लोक में 'उपमा' एवं 'उपरोधा' के संयोग से 'सच्छिष्ट' कलङ्कार है । छन्द ई—शार्दूल विकीर्णित ।

(उपसृत्यारलोक्य च सहर्षम् ।) अवममात्यराक्षसस्तिष्ठति । य एषः—

अक्षोणभक्तिः क्षीणेऽपि नन्दे स्वाम्यर्थमुद्वहन् ।

पृथिव्यां स्वामिभक्तानां प्रमाणे परमे स्थितः ॥ २२ ॥

(उपसृत्य ।) जयत्वमात्य ।

विमला

व्याख्या—[उपसृत्य = समीपमेत्य (advancing), अवलोक्य = दृष्ट्वा (noticing), च = पुनः (and), सहर्षम् = सप्रसादम् (with joy)], अवम् = असौ (here), अमात्य = मन्त्री (minister), राक्षसः (Rakshasa), तिष्ठति = उपविष्टः आस्ते (sits).

अन्वयः—नन्दे, क्षीणे, अत्रि, अक्षीणभक्तिः, स्वाम्यर्थम्, उद्वहन्, पृथिव्याम्, स्वामिभक्तानाम्, परमे, प्रमाणे, स्थितः ॥ २२ ॥

व्याख्या—नन्दे = नरनाम्न स्वामिनि (Nanda himself), क्षीणे = सान्त्वयं विनष्टे (even at the demise), अपि (also), अक्षीणभक्तिः = अनम्वद्भक्तिः (unabated devotion), स्वाम्यर्थम् = प्रभोः प्रयोजनम् (the cause of his master), उद्वहन् = उद्वहन् (bearing up), पृथिव्याम् = भूतले (on the earth), स्वामिभक्तानाम् = भर्तुः श्रद्धासमन्वितानाम् (loyal to their master), परमे = उच्चष्टे (the highest), प्रमाणे = दृष्टान्ते (standard), स्थितः = ईर्त्तमानः (stands) ॥ २२ ॥

उपसृत्य = समीपं गत्वा (advancing), अवलोक्यः (let minister prosper).

हिन्दी—(पास आकर तथा प्रसन्नता के साथ देखकर)

यह अमात्य राक्षस बैठा है । जो—

नन्द के विनष्ट हो जाने पर भी अनम्वद् भक्तिराला, स्वामी के कार्य को धारण करता हुआ, पृथ्वी पर स्वामिभक्तों के अनुगुण दृष्टान्त के रूप में स्थित है ॥ २२ ॥

(सनीस आकर) जय हो स्वामी ।

English—(Going near and seeing with joy)

Here is minister Rakshasa, he who, even at the demise of Nanda, upholding the unabated devotion for the cause of his master, stands on earth like the highest standard of those who are devoted to their lord (22)

(Approaching) victory to the minister !

टिप्पणी—श्रीः—√श्चि+क+दीर्घ+विभक्त्यादि कार्यं से सन्धः । उद्वहन्—उद्+√वह्+उद् प्रत्यय विभक्त्यादिकार्यं से सन्धः ह्य । स्थितः—√स्था+क+विभक्ति कार्यं से सन्धः ।

नन्दान्तररूपी कारण के नहीं रहने पर भी रामश्च को भक्ति को बध्नात्कारुण्य कार्यालसि के कारण इस श्लोक में विभावना अलङ्कार है । यथा—

“विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिरुच्यते”

राक्षस—(विलोक्य सहर्षम् ।) सखे शकटदास, दिष्टथा कौटिल्यगोचर-
गतोऽपि त्व दृष्टोऽसि । तत्परिष्वजस्व माम् ।

(शकटदासस्तथा करोति ।)

राक्षस—(चिर परिष्वज्य ।) इदमासनमास्यताम् ।

(शकटदासो नाट्येनोपविष्टः ।)

राक्षस—सखे शकटदास, अथ कोऽय मे ईदृशस्य हृदयानन्दस्य हेतु ।

शकटदास—(सिद्धार्थक निदिश्य ।) अनेन प्रियसुहृदा सिद्धार्थकेन घात-
कान् विद्राव्य वध्यस्थानादपहृतोऽस्मि ।

कुछ लोगों की दृष्टि में—नन्द के जीवित रहने पर शत्रु निर्यातनरूप कार्य के असम्पादन से उसके नष्ट हो जाने पर, उसकी भक्ति को क्षीणता में उस कार्य का सम्पादन असम्भव होने के कारण—नन्द के होने पर भी राक्षस की भक्ति को अक्षीणता—राक्षसनिष्ठ नन्दान्वय विषयक अनुराग की क्षीणता में भी प्रभु-वार्ध साधन का परार्थत्वेन कथन रहने के कारण यहाँ कान्दलिङ्ग भरह्वार है । लक्षण—“हेतोर्वाक्यपरार्थत्वे कान्दलिङ्ग निगद्यते ।”

इस श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है । लक्षण यथा—

श्लोके षष्ठ गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् । द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्व सप्तम दीर्घमन्ययो ॥

विमला

व्याख्या—राक्षस—[विलोक्य=दृष्ट्वा (seeing), सहर्षम्=सानन्दम् (with joy)], सखे शकटदास=मित्र शकटदास (Friend Sakatdas), दिष्टथा=भाग्येन (luckily), कौटिल्यगोचरगतोऽपि=भाग्यसमीपम् प्राप्तोऽपि (though fallen into the clutches of Kautilya), दृष्टोऽसि=अवलोकितोऽसि (I see you), तत्=तस्मात् कारणात् (therefore), मां परिष्वजस्व=आलिङ्ग (embrace me).

(शकटदास=Sakatdasa, तथा करोति does accordingly)

राक्षस—[चिर परिष्वज्य=बहुकालमालिङ्ग्य (Embracing long), इदम्=एतत् (Here), आसनम्=उपवेशनार्थमास्तरणम् (a seat), आस्यताम्=उपविश्यताम् (sit down)]

शकटदास =Sakatdas, नाट्येन=अभिनयेन (gesticulating), उपविष्ट = (sit down).

राक्षस—सखे शकटदास (Friend Sakatdas), अथ=वाक्यालङ्कारे प्रयोग, मे=मम (my), हृदयानन्दस्य हेतु=मानससुखस्य कारणम् (author of delight to heart), ईदृशस्य=अनुपमस्य (such), कोऽयम् (who is)

शकटदास—[सिद्धार्थकं निदिश्य (pointing to Sidharthaka)], अमात्य (minister), प्रियसुहृदा=प्रियमित्रेण = अनेन (by this dear friend), सिद्धार्थकेन (Sidharthaka), घातकान्=हंसकान्= (executioners), विद्राव्य=सताड्य (put to flight), वध्यस्थानात्= (from the place of execution), अपहृतोऽस्मि=समानीत अस्मि (have been led away)

गञ्जन.—(सहर्षम् ।) भद्र सिद्धार्थक, किं पर्याप्तमिदमस्य प्रियस्य । तथापि गृह्यताम् । (स्वगात्रादवतार्य भूषणानि प्रयच्छति ।)

सिद्धार्थक—(गृहीत्वा पादयोर्निपत्य, स्वगतम् ।) अअ कस्तु अत्रोपदेशो । होदु । न करिस्सम् । (प्रसादम् ।) अमच, एत्थ पढमपदिहस्स णत्थि केमि

हिन्दी—राक्षस—(दसहर मनवतानूक) नित्र शकटदास, सीमाग्य से, चाक्य के हाथ में जहर भी तुम देख गये हो । तो झुट्ठ कालिङ्गन करो ।

(शकटदान बैठा ही करता है)

राक्षस—(देर तक कालिङ्गन कर चुकने के बाद) यह आसन है, बैठो ।

शकटदास—(शकटदास अभिनय के साथ बैठ जाता है)

राक्षस—नित्र शकटदान, मेरे हृदय का आनन्द—दिहने सनव कर दिखाया ?

शकटदास—(सिद्धार्थक को ओर लकड़ करत हुए) इस प्रिय नित्र सिद्धार्थक के द्वारा बचिसे का नाकर—वध्यस्थान से बचाकर यहाँ तक लाया गया है ।

English—*Rakshasa*—(Seeing him with joy) Friend ! Sakatdas, luckily again I see you, though you fell into the clutches of Chanakya, therefore, do you embrace me !

Sakatdas—(Does accordingly)

Rakshasa—(Embracing long) Here is a seat, sit down (Sakatdas gesticulating and sitdown) Well, Friend ! Sakatdas, who is the author of such delight to my heart ?

Sakatdas—(Pointing to Sidharthaka) I have been led away from the place of execution by this dear friend, Sidharthaka who put the executioners to flight.

निमल्ला

व्याख्या—राक्षस—[सहर्षम् (with joy)].

भद्रसिद्धार्थक=कल्याणिन् (Good Sidharthaka), अस्मिन्बद्धतस्य (for this), प्रियस्य=अतिशयानन्दस्य (pleasure), इदम्=मया दीयमानम् (is this), पर्याप्तम्=व्यथेच्छम् (enough), किम् (what), तथापि=तस्य अपवादोऽपि (still), गृह्यताम्=ग्रहण क्रियताम् (take these)

[स्वगात्रात्=निजशरीरात् (from his body), अवतार्य=उन्मुख्य (takes off), भूषणानि=(Ornaments), प्रयच्छति=ददाति (offers)]

सिद्धार्थक—[गृहीत्वा=आदाय (taking), पादयोः=चरणयोः (at feet), निपत्य=तिरः स्याज्य (falling), स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)]

अयम् सत्तु नार्यापदेशः=आगच्छसिवा (is the advice of my lord), सन्तु=अस्तु (well), तथा करिष्यामि=तथाऽनुशस्यानि (I will act accordingly),

परिचिदो जत्थ एद अमच्चस्स । पसाद णिक्खविअ निब्बुदो भविस्सम् । ता
इच्छामि अह इमाए मुद्दाए मुद्धिद अमच्चस्स एव्व भण्डाआरे ठाविदुम् । तदा
मे पओअण तदा गेद्धिस्सम् । (अय खलु आर्योपदेश । भवतु । तथा करि-
ष्यामि । अमात्य, अत्र प्रथमप्रतिष्ठस्य नास्ति कोऽपि परिचित । यत्रेमममात्यस्य
प्रसाद निक्षिप्य निर्वृतो भवामि । तस्मादिच्छाम्यहमेतया मुद्रया मुद्रितममात्य-
स्यैव भाण्डागारे स्थापयितुम् । यदा मे प्रयोजन तदा ग्रहीष्यामि ।)

[प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], अमात्य=मन्त्रिन् (minister), अत्र=अस्मिन्
स्थाने (this place), प्रथमप्रविष्टस्य=अभूतपूर्वागमनस्य (a new comer),
नास्ति=न वर्तते (have no), कोपि=(any body), परिचित=सुहृद् (acquaint-
tance), यत्र=यस्मिन् जने (to whom), इमम्=भवता दीपमानम् (this),
अमात्यस्य (minister's), प्रसादम्=अनुग्रहम् (favour), निक्षिप्य=संस्थाप्य
(entrust), निर्वृत=सुखी (free from care), भवामि (be), तस्मात्=तस्मा-
द्धेतो (therefore), एतया=भवदीयया (with this), मुद्रया=अङ्गुलिमुद्रया
(seal ring), मुद्रितम्=चिह्नितम् (after having sealed), अमात्यस्यैव=
सचिवस्यैव (in minister's), भाण्डागारे=कोषगृहे (treasury), स्थापितुम्=
निक्षेप्तुम् (to deposit), इच्छामि=अभिलषामि (I wish), यदा=यस्मिन् काले
(when), मे=मम (my), प्रयोजनम्=कार्यम् (an occasion), तदा (then),
ग्रहीष्यामि=आवास्यामि (I will take)

हिन्दी—राक्षस—(प्रसन्नतापूर्वक) मद्र सिद्धार्थक, तुम्हारे किये गये इस म्रिद कार्य के
लिए क्या यह पर्याप्त है ? फिर भी—इसे ग्रहण करो । (अपने शरीर से उतार कर आभूषणों को
देता है ।)

सिद्धार्थक—(लेकर, पैरों पर गिरकर अपने आद) यह आर्थ का उपदेश हो ई । अच्छा
बैसा ही कहें । (प्रकट रूप में) अमात्य, इस नगरी में पहले पहल आया हूँ—यहाँ, मेरा एक
भी परिचित नहीं है जिसके यहाँ आपके इस प्रसाद को रखकर निक्षिप्त होऊँगा । अब इसे
इस अंगुठी से मुद्रित करके अमात्य के ही कोषागार में सुरक्षित रखना चाहता हूँ । जब
आवश्यकता होगी—इसे ले लूँगा ।

English—Rakshasa—(Joyfully) Gentle friend, 'Sidharthaka, is this
enough for such favour ? Still take these (taking off the ornaments
from his body and gives them to Sidharthaka)

Sidharthaka—(Accepting and falling down at his feet)—Such,
indeed, is the instruction of my lord I will act accordingly (aloud)
Minister, as I come here for the first time, I have no acquaintance
with whom I can entrust these ornaments and may feel relieved
So I wish to have these placed in master's treasury with this seal I
will take them away when there is occasion for them.

राक्षस — भद्र, को दोष । शकटदास, एव क्रियताम् ।

शकटदास — यदाज्ञापयत्यमात्य । (मुद्रा विलोक्य जनान्तिष्ठम् ।) अमात्य,
भवन्नामाङ्कितश्च मुद्रा ।

राक्षस — (विलोक्यात्मगतम् ।) सत्यं नगराग्नि-प्रामतो मम हस्ताद्वाङ्मया
उत्कण्ठाविनोदार्थं गृहीता । तत्त्वमस्य हस्तमुपागता । (प्रकाशम् ।) भद्र
सिद्धार्थक, कुतस्त्वचेयमधिगता ।

मिमला

व्याख्या—राक्षस—भद्र=कृपयाग्नि (gentle), का दुःप=हानि (what
harm) शकटदास (Sakatdas), एव क्रियताम् = अथ यदभिधाति तद्विधायताम्
(do so)

शकटदास—यदाज्ञापयत्यमात्य=यत् सचिव निर्दिशति (As minister comma
nds), [मुद्राम् = वङ्गलीयकम् (ring), विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at), जनान्तिष्ठम् =
भस्परम् (aside)], अमात्य = सचिव, (minister), इयम् मुद्रा (this ring), भवन्नामा-
ङ्किता = स्वनामचिह्निता (engraved with your name)

राक्षस — [विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at it), सत्यम् = यथार्थम् (in truth),
नगरात् = पुरात् (from city), निष्क्रामत = वहिर्निसरत (was coming out),
मम हस्तात् = मदीयकरात् (from my hand), वाङ्मया = मम स्त्रिया (my wife),
उत्कण्ठाविनोदार्थम् = उन्मनस्स्वप्रशमनार्थम् (as a souvenir), गृहीता = आत्ता
(took it), तत् = तस्मात् कारणात् (so), कथम् = केन प्रकारेण (how), अस्य =
सिद्धार्थकस्य (Sidharathaka's), हस्तम् = करम् (hand), उपगता = प्राप्ता (reach)
[प्रकाश = सुस्पष्ट (Aloud)], भद्र सिद्धार्थक (gentle Sidharthaka), कुत = कस्मात्
(from) त्वया = भवता (you) इयम् = मुद्रा (this ring) अधिगता = प्राप्ता
(get)

हिन्दी—राक्षस—भद्र, क्या दोष है ? शकटदास, जैसे यह कहता है कर दो ।

शकटदास—आप को वैसी आज्ञा (आठू को देखकर सिद्धार्थक जो आज्ञा में राजस से)
अमात्य, यह आठू, आपके नाम से अङ्कित है ।

राक्षस—(देखकर अपने आप) वास्तव में नगर से निकलते समय इनारे हाथ से आठूनी ने
अपनी वेदना प्रशमनार्थक इसे ले ली थी । तो कैसे इसके हाथ में आ गयी ? (प्रकट रूप में) भद्र
सिद्धार्थक, यह तुम्हारे हाथ कैसे लगी ।

English—Rakshasa—Gentle, what is the harm Sakatdas do so

Sakatdasa—As your Honour Commands (looking at the seal ring
aside) minister, this seal is engraved with your name

Rakshasa—(looking at it—to himself) To be sure, when I left the
city my wife took it from my hand as a Souvenir How could it then
come into his hand ? (aloud) Friend Sidharathak, whence did,
you get it ?

सिद्धार्थक—अथ कुसुमपुरे मणिआरसेष्टी चन्दनदासो नाम । तस्स गेहद्वारपाडसरे पडिदा मए आसादिदा । (अस्ति कुसुमपुरे मणिकारधेष्टी चन्दनदासो नाम । तस्य गेहद्वारपरिसरे पतिता मया आसादिता ।)

राक्षस —युज्यते ।

सिद्धार्थक —अमच्च, एथ कि जुज्जइ । (अमात्य, अत्र किं युज्यते ।)

राक्षस —भद्र यन्महाधनाना गृहे पतितस्यैवविधस्योपलब्धिरिति ।

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक —कुसुमपुरे (At Kusumpura), मणिकारधेष्टी=वैश्यजातीय- (a jeweller), चन्दनदासो नाम (Chandandas by name), अस्ति (is), तस्य = चन्दनदासस्य (Chandandasas), गेहद्वारपरिसरे=भवनप्रतीहारभूमौ (near the door of his house), पतिता=अस्ता (fallen), मया आसादिता=मया प्राप्ता (was found by me)

राक्षस —युज्यते (That is right)

सिद्धार्थक —अमात्य=मन्त्रिन् (minister), अत्र=अस्मिन् विषये (in this) किं युज्यते (what is right ?)

राक्षस —भद्र=कल्याणिन् (good man), यत=यस्मात् (for), महाधनानाम् = प्रचुरविभयशालिनाम् (very rich man's), गृहे=सदने (house), पतितस्य = अस्तस्य (fallen), एवविधस्य = महामूल्यस्य वस्तुन (such a thing), उपलब्धिरिति = प्राप्ति भवत्विति (should be found),

हिन्दी—सिद्धार्थक—कुसुमपुर में चन्दनदास नामक एक जोहरी है । उसके घर के दरवाजे के पास पड़ी हुई यह मिट्टी थी ।

राक्षस—ठीक है ।

सिद्धार्थक—अमात्य, इस विषय में क्या ठीक है ?

राक्षस—भद्र, बड़े पनी लोगों के घर में गिरी ऐसी मूल्यवान वस्तुओं की उपलब्धि ठीक ही है ।

English—*Siddharthaka*—There is a jeweller at Kusumpura, Chandandas by name It was found by me fallen near the door of his house

Rakshasa—That is right

Siddharthasa—Minister, what is right in this ?

Rakshasa—Goodman, that such a valuable thing should be found fallen somewhere in the house of excessively rich

शकटदासः—सखे सिद्धार्थक, अमात्यनामाङ्कितेय मुद्रा । तदितो बहुतरेणार्थेन भवन्तममात्यस्तोषयिष्यति । दीयतामेया ।

सिद्धार्थकः—अत्र, ण पसादो एसो उं इमाए मुद्राए अमच्चो परिग्गहं करोत्ति । (इति मुद्रामर्पयति ।) (आर्य. ननु प्रसाद एषः यदस्या मुद्राया अमात्यः परिग्रहं करोतीति ।

शकटः—सखे शकटदास, अनयैव मुद्रया स्वाधिकारे व्यवहर्तव्यं भवता ।

विमला

व्याख्या—शकटदासः—सखे सिद्धार्थक (Friend Sidharthaka), इयम् मुद्रा = अङ्गुलिमुद्रा (this ring), अमात्यनामाङ्कितः=मन्त्रिरावसनामाङ्कितः (stamped with minister's name), तदितः=तस्मान्मुद्रानूत्यात् (so from this), बहु-तरेण=अनुरेण (much exceeding), अर्थेन=धनेन (with money), भवन्तस्=त्वाम् (to you), अमात्यः=सचिवः (minister), तोषयिष्यति=आनन्दयिष्यति (will satisfy), दीयतामेया=भवदीया मुद्रा वित्तयिताम् (give it to him)

सिद्धार्थकः—आर्य=मान्य (noble sir), ननु प्रसाद एष=ननु एष सम्प्रापः (it is a favour), यत्=यस्मात् (that), अस्या मुद्राया=अस्या अङ्गुलिमुद्रायाः (by this ring), परिग्रहं करोति=स्वीकरणेन प्रसन्ना जनयति (accepts), [इति मुद्रा अर्पयति=वदति (Delivers the ring).]

शकटः—सखे शकटदास (Friend Sakatdas), अनयैव मुद्रया (with this very ring), स्वाधिकारे=स्वनियोगे (in your office), भवता=त्वया (by you), व्यवहर्तव्यम्=व्यवहारः कर्तव्यः (carrying out the business).

हिन्दी—शकटदास—निज सिद्धार्थक, यह अंगूठी अमात्य शकट के नाम से आंकृत है तो इस अंगूठी के अधिक मूल्य से अमात्य तुम्हें सन्तुष्ट कर देंगे । यह दे दो ।

सिद्धार्थक—आर्य, यह तो परम कृपा है कि अमात्य इस अंगूठी को स्वीकार कर रहे हैं (देता कहकर अंगूठा देता है)

शकट—निज शकटदास इसी अंगूठी से आनके द्वारा करने अधिकार के विषय में व्यवहार करना चाहिये ।

English—Sakatdas—Friend, Sidharthaka, this ring is stamped with minister's name : Give it to him The minister will satisfy you with money much exceeding.

Sidharthaka—Well noble sir, it is a favour that minister accepts this ring. (delivers the ring).

Rakshas—Friend, Sakatdas with this very seal you are to carry out the business of your office.

शकटदास — यदाज्ञापयत्यमात्य ।

सिद्धार्थक — अमच्च, विण्णवेमि । (अमात्य, विज्ञापयामि ।)

राक्षस — ब्रूहि विश्रब्धम् ।

सिद्धार्थक — नाणादि एव्व अमच्चो जह चाणक्यवडुकस्स विप्पिअ कदुअ पत्थि पुणो पाटलिउत्ते पवेनोत्ति इच्छामिअह अमच्चलणे एव्व सुस्सूसिदुम् । (जानात्येवामात्यो यथा चाणक्यवडुकस्य विप्रिय कृत्वा नास्ति पुन पाटलिपुत्रे प्रवेश इति इच्छामिअह अमात्यस्य चरणावेव शुश्रूषितुम् ।)

राक्षस — भद्र, प्रिय न । किंतु त्वदभिप्रायापरिज्ञानान्तरितोऽयमस्मदनुनय । तदेव क्रियताम् ।

विमला

व्याख्या — शकटदास — अमा य = सचिव (minister) यदाज्ञापयति (as commands)

सिद्धार्थक — अमाय = मन्त्रिन् (minister), अत्र = अस्मिन् विषये (In this matter), किमपि विज्ञापयामि = किमपि निवेदयामि (I have a request to make)

राक्षस — ब्रूहि = कथय (speak out), विश्रब्धम् = विश्वासपूर्वकम् (Unreservedly),

सिद्धार्थक — अमाय सचिव (minister), जाचात्येव = अवगतव्येव (knows), यथा = यद् (that) चाणक्यवडुकस्य = दुष्टचाणक्यस्य (the brat Chanakya), विप्रियम् कृत्वा = विरोधम् विधाय (serving an unpleasant turn), नास्ति = (does not), पुन (again), पाटलिपुत्रे प्रवेश इति = कुसुमपुरे स्थिति इति (entrance into Patliputra), तदहम् (so I), अमात्यस्य = भवत एव चरणौ (your feet), शुश्रूषितुम् = सेवाम् कर्तुम् (to serve at), इच्छामि = वंछामि (wish)

हिन्दी — शकटदास — आपकी जैसी आज्ञा ।

सिद्धार्थक — अमात्य, मुझे आपसे कुछ निवेदन करना था ।

राक्षस — विश्वासपूर्वक कहो ।

सिद्धार्थक — आप तो जानते ही हैं कि दुष्ट चाणक्य के साथ शत्रुता मोल लेकर अब मैं पाटलिपुत्र नहीं जा सकता । अतः मैं आपके चरणों की सेवा करना चाहता हूँ ।

English — Sakatidas — As your Honour commands

Siddharthaka — Minister, I have a request to make

Rakshasa — Speak out unreservedly

Siddharthaka — The minister knows full well that when any one has given offence to the brat Chanakya, he has no entrance into Patliputra again So I wish to serve at minister's feet

विमला

व्याख्या — राक्षस — भद्र = इच्छामिन् (good man), प्रियम् = इष्टम् (pleased), न = अस्माकम् (to us), किन्तु = परञ्च (but), त्वदभिप्रायापरिज्ञानेन = त्वदाज्ञया-बोधनेन (ignorance of your wishes), अन्तरितः = तिरोहित (suppressed),

सिद्धार्थक—(सहर्षम् ।) अनुगृहीतोऽस्मि । (अनुगृहीतोऽस्मि ।)

राक्षस—शकटदास, विधामय सिद्धार्थकम् ।

शकटदास—तथा । (इति सिद्धार्थकेन सह निष्क्रान्तः)

राक्षस—सखे विराधगुप्त उपायं वृत्तरोपम् । अपि क्षमन्तेऽस्मदुपनाय चन्द्रगुप्तप्रकृतयः ।

विराधगुप्त—अनान्य, वाद क्षमन्ते यथाप्रकाशमनुगन्धन्तेऽपि ।

राक्षस—मखे किं तत्र प्रकाशम् ।

अपम् (this), अस्मदनुपनाय=अस्माकमनुरोध (our request), तदैव क्रियताम् (do so then)

सिद्धार्थक—[सहर्षम्=सप्रसादम् (joyfully)], अनुगृहीतोऽस्मि=(I am favoured)

राक्षस—शकटदास (Sakatdas), विधामय सिद्धार्थकम् (let Sidharthaka rest)

शकटदास—तथा (It be so), [इति सिद्धार्थकेन सह निष्क्रान्तः=exit with Sidharthaka)]

राक्षस—सखे विराधगुप्त=मित्र विराधगुप्त (friend Viradhigupta), वृत्तरोपम्=अवशिष्टकथाम् (the remainder of tale), वर्णय=कथय (tell), अपि क्षमन्ते=सह्यन्त किम् (do tolerate), अस्मदुपनाय=अस्माकूपान्योन्यमेवम् (our overtures), चन्द्रगुप्तप्रकृतयः=मौर्यप्रजा (the subjects of Chandragupta)

विराधगुप्त—अमाय=मन्त्रिन् (Minister), वादम्=स्वाकारार्थकमप्ययम् (they do), क्षमन्ते=(tolerate undoubtedly), यथा प्रकाशम् अनुगच्छन्त्येव (as in current they even accept them)

राक्षस—सखे=मित्र (Friend), तत्र=तस्मिन् स्थाने (there), किं प्रकाशम् (what is current)

हिन्दी—राक्षस—मित्र इन पसन्द है । किन्तु तुम्हारे अभिप्राय को न मानने के कारण ही नेरी और से नानेदन नहा किया जा सका । तो ऐसा ही करो ।

सिद्धार्थक—(प्रसन्नपूर्वक) इतार्थ हो गया ।

राक्षस—मित्र शकटदास, सिद्धार्थक को विधान कराओ ।

शकटदास—असी आज्ञा (ऐसा कहकर सिद्धार्थक के साथ निकल जाता है)

राक्षस—मित्र विराधगुप्त, श्रेय वृत्तान्त सुनाओ । क्या चन्द्रगुप्त की प्रजा इनारे द्वारा छूट की बीज लेकर मदकाने का राज सस्य करती है ।

विराधगुप्त—करती क्यों नहीं ? चा'क्य या चन्द्रगुप्त के परस्पर विराध के प्रकाशित होने पर अनुसरण ही करती है ।

राक्षस—मित्र वहाँ क्या प्रकाश में आया है ?

विराधगुप्तः—अमात्य, इदं तत्र प्रकाशम् । मलयकेतोरपक्रमणात्प्रभृति कुपितश्चन्द्रगुप्तश्चाणक्यस्योपरीतिं चाणक्योऽप्यतिजितकाशितयाऽसहमानश्चन्द्रगुप्तं तैस्तैराज्ञाभङ्गैश्चन्द्रगुप्तस्य चेतःपीडामुपचिनोति । इत्थमपि ममानुभवः ।

राक्षसः—(सहर्षम् ।) सखे विराधगुप्त, गच्छ त्वमनेनैवाहितुण्डिकच्छद्मना पुनः कुसुमपुरम् । तत्र मे प्रियमुद्वेतालिकव्यञ्जनः स्तनकलशो नाम प्रतिवसति । स त्वया मद्रचनाद्वाच्यः यथा चाणक्येन क्रियमाणेष्टाज्ञाभङ्गेषु

English—*Rakshasa*—Good man, we are pleased at this. It was our ignorance of your wishes that prevented us from making this request to you. Do so then.

Sidharthaka—(Joyfully) I am favoured.

Rakshasa—Sakatdas, let Sidharthaka rest.

Sakatdasa—It be so (exit with Sidharthaka).

Rakshasa—Friend, Viradhgupta, tell the remainder of story. Do the subjects of Chandragupta tolerate our overtures.

Viradhgupta—Minister, they tolerate undoubtedly. They are acting in pursuance of them, as certain things are being revealed.

Rakshasa—Friend, what are the things that are being revealed there.

चिमला

विराधगुप्तः—अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), इदम् (this), तत्र = कुसुमपुरे (there), प्रकाशः = भेदः (reveal), मलयकेतोः अपक्रमणात् प्रभृति पलायनादारभ्य (ever since Malayaketu's escape), कुपितः = क्रुद्धः (has got angry), चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), चाणक्यस्योपरीतिः = चाणक्यस्योपरि (with Chanakya), चाणक्योऽपि (Chanakya too), अतिजितकाशितया = अतिगर्विततया (in extreme arrogance), असहमानः = अशाम्यन् (does not bear this), चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta), तैस्तैराज्ञाभङ्गैः = चन्द्रगुप्तबलेशजनकनिदेशपाठनैः (with various acts of disobedience), चन्द्रगुप्तस्य = (Chandragupta's), चेतःपीडाम् = हृदयस्य व्यथाम् (pains the heart), उपचिनोतीति = उत्पादयतीति (produces), इत्थमपि ममानुभवः (such is my impression too).

राक्षसः—[सहर्षम् (with joy)], सखे विराधगुप्त (friend Viradhgupta), त्वम् (you), गच्छ (go), अनेनैव = पूर्वाङ्गीकृतेनैव (in this very), आदितुण्डिकच्छद्मना = व्यालोपजीविश्याजेन (disguise of a Snake charmer), पुनः (again), कुसुमपुरम् (Kusumpura), तत्र (these), मे = मम (my), प्रियमुद्वेदः = प्रियः सखा (dear friend), वैतालिकव्यञ्जनः = मागधस्य लिङ्गधारी (disguised as a bard), स्तनकलशो नाम (Stankalas by name), प्रतिवसति = निवसति (lives), स = अस्मी (he) त्वया (by you), मद्रचनाद् (in my name), वाच्यः = अभि-

चन्द्रगुप्तः समुत्तेजनसमर्थः श्लोकैरुपश्लोकयितव्यः, कार्यं चातिनिभृत करमकह-
स्तेन सन्देष्टव्यमिति ।

विराधगुप्तः—यदाज्ञापयन्वन्मात्यः । (इति निष्क्रान्तः ।)

घातव्यः (tell him), यथा चाणक्येन (by Chanakya), क्रियमानेषु=विधीयमानेषु
(will be committing act), आज्ञामग्रेषु=निदेशान्वायातेषु (of disobedience),
चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Maurya), समुत्तेजनसमर्थः=मनुदीपनयोग्यः (to inflame
his spirit), श्लोकैः=पद्यैः (with stanzas), उपश्लोकयितव्यः=स्तोतव्य (should
praise), कार्यं च=स्वकीयकृत्यमपि (business), निमृत्तम् (the profoundest
secrecy), करमकहस्तेन=करमकद्वारा (through Karvaka), सन्देष्टव्य इति=
प्रेषयितव्य इति (will have to send),

विराधगुप्तः—अमात्यः=सचिवः (minister), यदाज्ञापयति (as commands),
इति निष्क्रान्तः (Exit).

हिन्दी—विराधगुप्त—अमात्य, वहाँ यह प्रकाश में आया है कि मलयकेतु के भागने के
समय से ही चन्द्रगुप्त चाणक्य के ऊपर कुपित है । चाणक्य भी विजय से अत्यन्त गर्वीला होने के
कारण चन्द्रगुप्त को बर्दाश्त न करता हुआ, उन-उन आज्ञाओं को मानने से अस्वीकार कर देने
के कारण चन्द्रगुप्त के विषय की पीड़ा को उत्पन्न कर रहा है । ऐसा भी मेरा अनुभव है ।

राक्षस—(प्रमत्ततापूर्वक) मित्र विराधगुप्त, इसी सँघरे के रहाने से तुम पुन कुसुमपुर
आओ । वहाँ माद के बेशकाब स्तनकलश नामक इनारा प्रिय मित्र निवास करता है । तुन
उसको मेरी तरफ से कहना कि चाणक्य के द्वारा आज्ञाओं के भंग किये जाने पर उसे जिव करने में
समर्थ होकों के द्वारा चन्द्रगुप्त की स्तुति की जानी चाहिए और अपने कार्य को अत्यन्त गुप्त रूप
से करमक के हाथ भेजना चाहिए ।

विराधगुप्तः—अमात्य की वैनी आज्ञा । (यह कहकर निकल जाता है)

English—*Viradhgupta*—Minister, this is what has come to
light there, that Chandragupta has got angry with Chanakya, ever
since Malayaketu's escape. Chanakya too elated by success, intolerant
of Chandragupta, by frequent supercession of orders aggravates the
mortification of his soul. Such is my experience too.

Rakshasa—(With joy), Friend, *Viradhgupta*, you go again to
Kusumpur in this very disguise of Snake-charmer. There lives my
dear friend, Stanankalash by name, disguised as a bard. He has to
be told by you this in my name—whenever supercession of orders
is being made by Chanakya. Chandragupta has to be lounded in verses
capable of rousing him thoroughly and the work has to be reported
very secretly through the hand of Karvaka.

Viradhgupta—As your Honour commands. (exit)

पुरुषः—(प्रविश्य ।) अमच्च, एसो कखु सअडदासो विण्णवेदि । एदे कखु तिणिण अलकारसजोआ विकीअन्दि । ता पच्चखीकरोट्टु अमच्चो । (अमात्य, एष खलु शकटदासो विज्ञापयति एते खलु त्रयोऽलकारसयोगा विक्रीयन्ते । तस्मात्प्रत्यक्षीकरोत्वमात्य इति ।)

राक्षसः—(विलोक्य ।) अहो महार्हाण्याभरणानि । भद्र, उच्यतामस्म-
द्वचनाच्चकटदासः परितोष्य विक्रेतार गृह्णतामिति ।

पुरुषः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—यावदहमपि कुसुमपुराय करभक प्रेषयामि । (उत्थाय ।) अपि
नाम दुरात्मनश्चाणक्याच्चन्द्रगुप्तो भिद्येत । अथवा सिद्धमेव नः समीहित
पश्यामि । कुतः—

विमला

व्याख्या—पुरुष.—[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)], अमात्य=मन्त्रिन् (minister), एष खलु (here is), शकटदासः = पतदास्य भवत्सुहृत् कायस्थः (Sakatdas), विज्ञापयति = निवेदयति (reports), एते खलु = (that these), त्रयोऽलङ्कारसंयोगा = महार्हास्त्रयोऽलङ्काराः (three well made ornaments), विक्रीयन्ते (are going to be sold), तस्मात् = तत् (so), अमात्यः = सचिवः (minister), प्रत्यक्षीकरोतु = पश्यतु (let inspect)

हिन्दी—पुरुष—अमात्य शकटदास ने निवेदन किया है—तीन मूखवान आभूषण कोई बेचने आया है । पहले अमात्य उन्हें जरा देख लें ।

English—Man—(entering) Minister, Sakatdasa informs you that these three ornaments are going to be sold, and you should examine them yourself.

विमला

व्याख्या—राक्षस.—[विलोक्य = पर्य (seeing them)], अहो = आश्चर्यम् (Oh), महार्हाणि = अधिकमूल्यानि (very precious), अभरणानि = अलङ्कारानि (ornaments), [प्रकाशम् (aloud)], भद्र = कल्याणिन् (good man), उच्य-
ताम् = कथ्यताम् (tell), अस्मद्वचनात् (in my name), शकटदासः (Sakat-
dasa), विक्रेतारम् = विक्रेयकारिणम् (seller), परितोष्य = सतोष्य (should satisfy), गृह्णतामिति = आदीयन्तामिति (buy them).

पुरुष —तथा (As your Honour commands), [निष्क्रान्तः (exit)]

राक्षस —यावत् कालम् अहमपि (I too), कुसुमपुराय (for Kusumpura), करभकम् = तन्नामानं चरम् (Karavaka), प्रेषयामि = प्रहिणोमि (will send), [उत्थाय = (rising)], अपि नाम (would), दुरात्मनश्चाणक्यात् = दुष्टचाणक्यात् (from the vile Chanakya), चन्द्रगुप्तः = कृपलः (Chandragupta), भिद्येत = वेमनस्य प्राप्नुयात् (would be a split), अथवा = वा (or), सिद्धमेव = सफलमेव

मौर्यस्तेजसि सर्वभूतलभुजामाज्ञापको वर्तते
 चाणक्योऽपि मदाध्यादयमभूद्राजेति ज्ञातस्मयः ।
 राज्यप्राप्तिहृत्कार्यमिदमपरं तीर्णप्रतिज्ञार्णवं
 सोदादात् कृतकृत्यतैव नियतं लब्धान्तरा भेत्यति ॥ २२ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

(इति द्वितीयोऽङ्कः)

(already fulfilled), न=अस्माकम् (our), सनीहितम् =चान्दितम् (desire),
 पर्यामि= अबलोक्यामि (I see), कृतः=for.

हिन्दी—राक्षस—(देखकर) जो बहुत बड़ा मूर्ख है । (प्रकट रूप में) यह मैंने
 भोर से शक्यता से बोले—बैचने वाले को यथेष्ट रूप देकर उसे छोड़ दें ।

पुरुष—मैनी काश । (ऐसा कहकर चला गया)

राक्षस—उस तक मैं जो काम का इन्तजुन ने बना है । (ठहर) क्या इरादना चानक्य
 से चन्द्रगुप्त मलग किया जा सकेगा ? कदा कने ननोरथ को पूरा हुआ ही देखता हूँ ।

English—*Rakshasa*—(Seeing them) Oh, these are ornaments
 of great value. Gentleman, let Sakatdasa be informed in my name
 that he should satisfy the seller and buy them.

Man—As you command. (exit)

Rakshasa—I too will send Karavaka to Kusumpura. (Rising)
 Would there be a split between Chandragupta and the vile Chanakya
 or—I consider my desire as already fulfilled. For—

विनला

अन्वयः—मौर्यः, सर्वभूतलभुजाम्, आज्ञापकः, तेजसि, वर्तते, चाणक्यः, अपि,
 मदाध्यात्, अयम्, राजा, अभूत्, इति, ज्ञातस्मयः, राज्यप्राप्तिहृत्कार्यम्, एकम्,
 तीर्णप्रतिज्ञार्णवम्, अपरम्, लब्धान्तरा, कृतकृत्यता, एव, निपतम्, सोदादात्,
 भेत्यति ॥ २३ ॥

व्याख्या—मौर्यः=चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), सर्वभूतलभुजाम् आज्ञापकः=
 सकलभूपतीनाम् शासनकर्त्ता (ruling over all the kings of the world),
 तेजसि=प्रतापे (imperious), वर्तते=आस्ते (has become), चानक्यः अपि
 (Chanakya also), मदाध्यात्=अम साहाय्यात् (through my support),
 अयम्=अमौ (he), राजा=नृप (king), अभूत्=जातः (became), इति
 ज्ञातस्मयः=सज्ञातगर्वः (the feeling of satisfaction), राज्यप्राप्तिहृत्कार्यम्=

राज्यलाभेन सफलम् (by his acquisition of the kingdom), एकम् = चन्द्र-
गुप्तम् (Chandragupta), तीर्णप्रतिज्ञार्णवम् = पूर्णप्रतिज्ञमिति (successfully
cross the sea of his vow), अपरम् = द्वितीयम् (next), लब्धान्तरा =
प्राप्तावकाश (gained his object), कृतकृत्यता एव = चरितार्थता एव (very
consciousness), नियतम् = अवश्यम् (sure), सौहार्दात् = मित्रभावात् (from
their friendship), भेरस्यति = विघटयिष्यति (alienate them) ॥ २३ ॥

हिन्दी—चन्द्र सभी राजाओं को आज्ञा देने वाला तेजस्वी है। चाणक्य भी—‘मेरा
आजय पाकर यह शासक हुआ है’ ऐसा सोचकर गर्वीला बना है। एक राज्य मिल जाने से
सफल, दूसरा प्रतिज्ञासागर को पार कर देने से सन्तुष्ट—अब दोनों ओर सफलता ही है—जो
अवसर आने पर दोनों की मित्रता भङ्ग कर सकते हैं ॥ २३ ॥

English—Maurya, ruling over all the kings of the world, has
become imperious. Chanakya, again, cherishes the pride—this
man has become king through my support. The very consciousness
of having gained the end will, with a loop-hole found, surely divert
from friendship, the one happy by his acquisition of the kingdom,
the other by his having successfully crossed the sea of his vow (23)

टिप्पणी—इस श्लोक में यथासंख्य नाम अलङ्कार एवं शार्दूलविकीरित छन्द है।

मुद्राराक्षस द्वितीय अङ्क की ‘विमला’ -वाक्या समाप्त।



तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति कञ्चुकी ।)

कञ्चुकी—(सनिर्वेदम्)

रूपादीन् विषयाभिरूप्य करणैर्येरात्मलाभस्त्वया

लग्नस्तेष्वपि चक्षुरादिषु हताः स्वार्थावबोधक्रियाः ।

अङ्गानि प्रसभं त्यजन्ति पटुतामावाधिषेयानि ते

न्यस्तं मूर्ध्नि पदं तथैव जरया तृष्णे मुधा ताम्यसि ॥ १ ॥

विमला

(ततः प्रविशति कञ्चुकी = Enter the Chamberlain)

कञ्चुकी—(सनिर्वेदम् = (dejectedly)

अन्वयाः—हे तृष्णे, यै, करणै रूपादीन्, विषयान्, निरूप्य, स्वया, आत्मलाभ, लग्न, तेषु, चक्षुरादिषु, अपि, स्वार्थावबोधक्रिया, हता, ते, आज्ञाविधेयानि, अङ्गानि, प्रसभम्, पटुताम्, त्यजन्ति, जरया, तव, एव, मूर्ध्नि, पदम्, न्यस्तम्, मुधा, ताम्यसि ॥१॥

व्याख्या—तृष्णे=हे स्पृह (O Desire), यै करणै =चक्षुरादिभिः ज्ञानेन्द्रियैः (operations of perceiving), रूपादीन्=रूप रस-गन्ध स्पर्श-रसदान् विषयान्=ज्ञानेन्द्रियप्राप्तान् पदार्थान् (their own objects), निरूप्य=भोग्यतयाऽवधार्य (has been placed) स्वया=तृष्णया (by you), आत्मलाभ =आलोपलब्धिः (self production), लग्न=प्राप्त (gained), तेषु=तव आत्मोपलब्धिस्थलेषु (in them), चक्षुरादिषु=दृष्टिरसनादिषु (eye and others), अपि (also), स्वार्थावबोधक्रिया=स्वार्थस्य, निजविषयस्य, य अवबोध ज्ञानम्, तद्रूपा या क्रिया=व्यापार अर्थात् स्वविषयग्रहणसामर्थ्यम् (the function of perceiving their own objects), हता =विनष्टा (have been lost), ते=तव (your), आज्ञाविधेयानि=आदेशवशम्वदानि (obedient to your commands), अङ्गानि=कर्मेन्द्रियाणि (organs of action) त्यजन्ति=मुञ्चन्ति (given up), जरया=वृद्धावस्थया (old age), तव=भवतः-(your) एव, मूर्ध्नि=प्रसभे (on head), पदम्=चरणम् (foot), न्यस्तम् =अर्पितम् (has been placed), मुधा=व्यर्थमेव (in vain), ताम्यसि =माद्यसि (pine now) ॥ १ ॥

हिन्दी—(इसके बाद कञ्चुका प्रवेश करता है)

कञ्चुकी—(खद के साथ)—

हे तृष्ण, विनष्ट ज्ञानेन्द्रियों से रूपादि विषयों को प्राप्त करके, उसने अपना अस्तित्व प्राप्त किया—
वन चक्षुरादि इन्द्रियों ने भी अपने-अपने विषयों के ज्ञान प्राप्त करने की क्षमताएँ नष्ट हो

(परिक्रम्याकाशे) भो भोः सुगान्धरासादाधिकृता पुरुषाः, सुगृहीतनामा देवश्चन्द्रगुप्तो वः समाज्ञापयति—'प्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवरमणीय कुसुमपुरमवलोकयितुमिच्छामि । तत्संस्क्रियन्तामस्मदर्शनयोग्याः सुगान्धरासादोपरिभूमयः' इति । (पुनराकाशे) किं ब्रूथ 'आर्य, किमिदित एवायं देवस्य कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः' इति । आः दैवोपहृता, किमनेन वः सद्यः प्राणहरेण कथोपोद्धातेन । शीघ्रमिदानीम्—

तुम्हारी आज्ञा का पालन करने में तत्पर ये तुम्हारे कर्मेन्द्रिय और हृत्वा अपनी दृष्टता खो चुके हैं । अब तो तुम्हारा का पैर तुम्हारे ही सिर पर पड़ चुका है । अब भला-बुराई ही चञ्चल हो रही हो ॥१॥

English—(Enter the Chamberlain)

Chamberlain—(dejectedly) O desire, old age has placed its foot on your head—in vain your regret; as the operations of perceiving their self production have been decayed with an eye to those very organs of sense, the eyes and others, with the help of which you have gained your object, by perceiving the object of sense such as form and others, the action organs, previously which were your obedient have perforce lost their energy.

टिप्पणी—इस श्लोक में समासोक्ति एवं विभावना अलंकार हैं तथा शार्दूलविकीर्ण छन्द है । लङ्गण पड़े लिखा जा चुका है ।

विमला

व्याख्या—[परिक्रम्याकाशे = सचर्य विपत्ति = (moving in the sky)], भो भोः = अभिप्रेतार्थबोधने • सम्बोधनपदम् (Oh, ho), सुगान्धरासादे = सुगान्धराभवने (Suganga palace), अधिकृता = नियुक्ता. (employed), पुरुषाः = अनुचराः (servants), सुगृहीतनामा = प्राप्त स्मरणीयाभिधानः (His majesty), देवः = राजा (sire), चन्द्रगुप्त, वः = युष्मात् (all of you), समाज्ञापयति = निदिशति (commands)—प्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवरमणीयम् = आरम्भितारदर्पणमासाध्यप्रतिविशेषाधिकमनोशम् (more charming with the Kaumudi-festival commenced), कुसुमपुरम् = पाटलिपुत्रम् (Kusumpura), अवलोकयितुम् = द्रष्टुम् (to see), इच्छामि = वान्छामि (I wish), तद्वत्तस्मात् कारणात् (so), संस्क्रियन्ताम् = अलङ्कियन्ताम् (decorate), अस्मदर्शनयोग्याः = मदवलोकनीयाः (for our reception), सुगान्धरासादोपरि भूमय = उपरिष्ठात् प्रदेशाः (the upper terraces of Suganga), [पुनराकाशे = Again looking in the sky], आर्य = भान्यो भवान् (sir), किं ब्रूथ = किं कथयथ (what do you say), किमिदित एव = अज्ञात एव (does not know), अयम् (this), देवस्य = चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः = तारदर्पणेंदुपूजनारम्भकोत्सवनिषेधः (the festival has been forbidden), आः दैवोपहृता = भाग्येन विनष्टाः (Ah

आलिङ्गन्तु गृहीतधूपसुरभीन् स्तम्भान् पिनद्वस्रजः

संपूर्णेन्दुमयूखसंहतिरुचां सञ्चामराणां धियः ।

सिंहाङ्गासनधारणाच्च सुचिरं संज्ञातमूर्च्छामिव

क्षिप्रं चन्दनवारिणा सकुसुमः सेकोऽनुगृह्णातु गाम् ॥ २ ॥

ill fated beings), किमनेन=किमे येन (what is by), व=युस्माकम् (you), सद्यः प्राणहरेण=जीवविनाशकेन (entails instant loss to life), कयोपोद्धतेन=वार्त्ताप्रमत्तेन (reference to a subject), क्षीघ्रम् (quickly), इदानीम्=अधुना (now) :-

हिन्दी—(चारो ओर घूमकर आकाश की ओर देखकर) देवराजनामदा के अधिकारियों प्रातरन्तरांतर महाराज चन्द्रगुप्त आदेश देन हैं—“प्रच्छेद कौनसे नदीसत से अत्यन्त रम्य कुसुमपुर की देखना चाहता हूँ। अब महाराज के स्वागत के अनुकूल महल की ऊपर की छतों को नया बाँजा जाय। (फिर आकाश की ओर देखकर) क्या कह रहे हो आर्य—कदा महाराज को पता नहीं कि कौनसे नदीसत पर रोक लगा चुकी है ?” ओ माय्य के मारों, क्यों ऐसी कथा छेद बैठे हो, जिससे आल ही आल तुम्हारे जान पर आ चढ़ती है

English—(turning round and looking into the sky) Oh, All of you officials employed at the Suganga palace, Sire Chandragupta of auspicious name commands you thus —I wish to see a sight of Kusumpura more charming with the Kaumudi festival commenced. Therefore you should decorate the upper floors of the Suganga palace for our reception (Again looking into the air) What do you say ? Do you say, “Sire, does not know that the festival has been forbidden ?” Ah, you illfated fellow, what is gained by you by this reference to a subject that entails instant loss to life Quickly now, :-

निमला

अन्वयः—पूर्णैन्दुमयूखसंहतिरुचाम्, सञ्चामराणाम्, धियः, पिनद्वस्रजः, गृहीतधूपसुरभीन्, स्तम्भान्, आलिङ्गन्तु, च सकुसुमः, चन्दनवारिणा, सेकः, सुचिरम्, सिंहाङ्गासनधारणात्, संज्ञातमूर्च्छाम्, इव, गाम्, क्षिप्रम्, अनुगृह्णातु ॥ २ ॥

व्याख्या—पूर्णैन्दुमयूखसंहतिरुचाम्=चन्द्रकिरणधवलानाम् (the lustre of enmassed beams of the full moon), सञ्चामराणाम्=चमरीश्रेष्ठपुष्पानाम् (the glow of fine Chamaries), धियः=कान्त्यः (beauty of bright), पिनद्वस्रजः=अवस्रजः (having fastened round), स्रजः=पुष्पमालिका (garlands), येषु तादृशम्=गृहीतधूपसुरभीन्=सेवितधूपसुगन्धयुक्तान् (fragrant by being fumigated with incense), स्तम्भान्=गृहस्थूपाः (the pillars), आलिङ्गन्तु=उपरिलिप्यन्तु (let embrace), च=पुनः (and), सकुसुमः=पुष्पमिश्रितः (mixed with flowers), चन्दनवारिणा=मलयजजलेन (with Sandal water), सेकः=

किं ब्रूय-‘आर्य, इदमनुष्ठीयते देवस्य शासनम्’ इति । भद्रा, त्वरध्वम् । अयमागत एव देवश्चन्द्रगुप्तः । य एषः-

सुविधब्धैरक्षैः पथिषु विषमेष्वप्यचलता

चिरं ध्रुयंणोढा गुरुपि मुचो याऽस्य गुरुणा ।

धुरं तामेवोच्चैर्नवचयसि वोढुं व्ययसितो

मनस्वी दम्यत्वात् स्थलति च न दुःखं वहति च ॥ ३ ॥

सिंचनम् (sprinkling), सुषिरम् = बहुकालम् (has been long time), सिंहाङ्कासनधारणात् = राजासनवहनात् (under the weight of the lion-emblem throne), सञ्जातमूर्च्छामिव = उत्पद्यतेतनाशून्यमिव (like in a swoon), गाम् = पृथिवीम् (the earth), क्षिप्रम् = शीघ्रम् = (quickly), अनुगृह्णातु = सम्भावयतु (let favour) ॥ २ ॥

हिन्दी—पूतन के चाँद की किरणों के समान चमकीले, सुन्दर चाँदों से छिटकने वाली छदायें मानों सुगन्धित धूपों से सुरभित और लटकती मालाओं से झरोभित अट्टालिका के स्तम्भों का आलिङ्गन करे । इतना ही नहीं फूलों की सुवास मिश्रित चन्दनजलवा न छिटकाव देता सर्वत्र शीघ्र किया जाय जैसे सिंह के पंजे की भाँति पड़े राजसिंहासन के दीर्घकालीन भार से दबरी गोरूपी यह परती एकबार उच्छ्वसित हो उठे ॥ २ ॥

English—Let the glow of fine Chanaries having the lustre of enmassed beams of the full-moon quickly embrace the pillars, fragrant by being fumigated with incense, and having garlands fastened round them, let also sprinkling with Sandal water mixed with flower quickly favour the earth that is in a swoon as it were by the long weight of the lion-emblem throne (2).

टिप्पणी—अपिनद-अपि + √नद् + क्त कर्मणि रूप, अपिनद या पिनद । सम्पूर्णमुत्पल-सहितरूपान्—सम्पूर्णसकलकलायुक्तं यः इन्दुः चन्द्रः तस्य मन्त्राः चन्द्रिका तेषां वा सहति.—सम् + √नद् + क्तिन् भावे, सहति समवायः तस्या इत्क कान्तिरिव कान्ति यस्य तादृशानाम् । तैक.—सिच् + घञ् + विभक्तिकार्यं । प्रतिवेध.—प्रति + सिञ् + घञ् + विभक्तिकार्यं ।

इतं श्लोक के पूर्वार्ध में समासोक्ति एव परार्ध में उत्प्रेक्षा मन्त्रार है तथा इत्तं शार्दूल-विकीर्णित है । लक्षण लिखा जा चुका है ॥ २ ॥

विमला

किं ब्रूय = किं कथयन्ति (what do you say), आर्य, (sir), इदम् (this), अनुष्ठीयते = क्रियते (being obeyed), देवस्य = राज्ञः (His majesty), शासनम् = आदिष्टम् (command), भद्रा = कथयाणिनः (gentlemen), त्वरध्वम् = शीघ्र-ताम् कुरुत् (hasten), अयम् = असौ (here), आगत एव = सम्प्राप्त एव (has indeed arrived), देवश्चन्द्रगुप्तः = राजा मौर्यः (Jire Chandragupta), च एष (he it is) —

अन्वयः—विषयेषु, अपि, पथिषु, अचलता, धुर्येण, अस्य, गुरुणा, सुविधम्यैः, अङ्गैः, गुरु, अपि, या, चिरं, ऊढा, तानेव, उच्चैः, युवो, धुरम्, नववयसि बोधुम्, व्यवसितं, न, एष, मनस्वी, दम्पत्वात्, दुःखम्, बहति च, न, स्वलति च ॥ ३ ॥

व्याख्या—विषयेषु=उदितेषु (on rough), अपि (also), पथिषु=मार्गेषु (path), पथे=राज्यसंचालनेषु (political situation), अचलता=धैर्यवत्ता (gravity), पथे=भारोद्बहनकुशलेन धुर्येण=राज्यभारसंचालनकुशलेन (able to bear the responsibility) पथे=धुरिसंयोजितेन (accustomed to bear the yoke), अस्य=चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), पथे=वृषभस्य (bull's), गुरुणाम्पित्रानन्देन (by his father) पथे=वयं श्रेष्ठेन (by elder) सुविधम्यैः=विश्वसनीयः (well confident), पथे=रक्षैः (trusty), अङ्गैः=राज्यावयवैः अमात्यादिभिः (the members of the political body), पथे=अवयवैः (limbs), गुरु=महती अपि (trained or experienced), या=युः चिरम्=बहुकालम् (long time), ऊढा=मचालिता (bear up), तानेव=पूर्वएतानेव उच्चैः=महतीम् (heavy), धुरम्=भारम् (burden), नववयसि=नवीनावस्थाम् (youthfulness), बोधुम्=घारयिषुम् (bearing), व्यवसितं=तत्परः (ready), न एष, मनस्वी=महोत्साह (wise), पथे=बलवर्षित (resolute), दम्पत्वात्=अनतिप्रौढत्वात् (inexperience), स्वलति=दुष्टिम् करोति (does mistake), पथे=भ्रमयति (to fall down), च=किन्तु (but), न=नहि (not), दुःखम्=बलेशम्, बहति=प्राप्नोति (bears it with difficulties) ॥ ३ ॥

हिन्दी—आ दृष्ट रह हो मार्ग, महाराज का = ये दूरा देश जा रहा है। मग, बल्दी करा। महाराज का ही गये हैं। जो यह—

विषयनीय, (पथ में दुष्ट) राज्य के बहुत सचिवदि (पथ में=अवयवों से) अटित (पथ में=ऊँचे-नाचे) राज्यरत्न के संचालन में (पथ में=रास्ते पर) जो न विचलित होने बाध (पथ में=भारवहन करने में दुष्ट) राज्य के भार को बहन करने बाधे (पथ में=धुरी में जुड़ हुए) इस चन्द्रगुप्त (पथ में=नया बैल) के पित्रानन्द के द्वारा (पथ में=प्रीति वृषभ के द्वारा) पृथिवी का महान नी जो भार (पथ में=बूझा) बहुत दिनों तक बहन किया गया (पथ में=देरें गयी) उसी महान भार को (पथ में=बूझा को) नवीन अवस्था में बहन करने के लिए तत्पर नववयस्यी चन्द्रगुप्त (पथ में=बूढ़ नववृषभ) अत्यधिक प्रीति होने के कारण गलती करता है (पथ में=घिसलता है) किन्तु दुखी नहीं होता ॥ ३ ॥

English—What do you say?—Here, Noble sir, Sire Chandragupta's command is being obeyed. Hasten, good fellows here, Sire Chandragupta has indeed arrived. He it is—

Who being strong minded, has resolved to bear up, even in his prime youth, that very yoke of (responsibility of governing) the earth which, though heavy, was for a long time borne by his sire, like a trained bull (experienced and able) who did not stop amidst

(नेपथ्ये ।)

इत इतो देवः ।

(ततः प्रविशति राजा प्रतीहारी च)

राजा—(स्वगतम् ।) राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महद-
प्रीतिस्थानम् । कुतः ।

परार्थानुष्ठाने रहयति नृपं स्वार्थपरता

परित्यक्तस्वार्थो नियतमयथार्थः क्षितिपतिः ।

परार्थश्चेत् स्वार्थादभिममततरो हन्त परवान्

परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः ॥ ४ ॥

even on rough paths (trying situations) on account of his firm limbs
(with well trusted ministers), he stumbles on account of his youth-
ness (in experience) but bears it lightly without difficulties. (3),

टिप्पणी—इत इतोके में समासोक्ति अलंकार तथा शिखरिणी छन्द है । छन्द का लक्षण
यथा—‘रसै रुद्रैरिदृक्षा यममसलभाः गं शिसरिणी’

विमला

(नेपथ्ये = वेशरचनालये (In the dressing room)

इतो इतो देवः = अनेव यथा आगच्छतु (This way), देवः = भवान् (sire).

राजा—[स्वगतम् = (To himself)], राजधर्मानुवृत्तिपरस्य = राजधर्मानुसरण-
वृत्तचित्तस्य (intent upon observing the duties of king), नृपतेः = राज्ञः
(the king's), महत् = अधिकम् [(great), अप्रीतिस्थानम् = अनृपयास्पदम् (a
source of great trouble), राज्यम् हि नाम (a kingdom is indeed),
कुतः = for —

अन्वयः—परार्थानुष्ठाने, स्वार्थपरता, नृपम्, रहयति, परित्यक्तस्वार्थः, नियतम्,
अयथार्थः, क्षितिपतिः, चेत्, परार्थं, स्वार्थात्, अभिममततरो, हन्त, परवान्, परायत्तः,
पुरुषः, प्रीतेः, रसम्, कथमिव, वेत्ति ॥ ४ ॥

व्याख्या—परार्थानुष्ठाने = परप्रयोजनसम्पादने (in serving others), स्वार्थ-
परता = स्वप्रयोजनसाधनप्रवृत्तिः (self interest), नृपम् = राजानम् (to the
king), रहयति = त्यजति (forsakes), परित्यक्तस्वार्थः = परित्यक्तस्वसुखादिप्रयोजनम्
(abandoned his self-interest), नियतम् = निश्चितम् (decided), अयथार्थः =
असत्यभूतः (is not true), क्षितिपतिः = भूपालः (lord of the earth) चेत् = यदि
(if), परार्थः = परप्रयोजनम् (other's interest), स्वार्थात् = स्वप्रयोजनात् (from
self-interest), अभिममततरो = प्रियतरः (more preferable), हन्त (alas),
परवान् = पराधीनः (dependent), परायत्तः = पराधीनः (controlled man),
पुरुषः = जनः (man), प्रीतेः = सुखस्य (of pleasures), रसम् = ज्ञानन्दम् (the
flavour), कथमिव = केन प्रकारेण (how), वेत्ति = जानाति (know). ॥ ४ ॥

अपि च । दुराराध्या हि राजलभीरात्मनद्विरपि राजभिः ।

कुत—

तीक्ष्णादुद्विजते मृदो परिमवत्रासाद्य सतिष्ठते

मूर्खं द्वेष्टि न गच्छति प्रणयितामत्यन्तविद्वत्स्वपि ।

शूरेभ्योऽप्यधिकं विभेत्युपहसत्येकान्तभीरुनहो

धूर्तलब्धप्रसराय वेशवनिता दुःखोपचर्या भृशम् ॥ ५ ॥

हिन्दी—

(नेटव्य)

हथर से नहाराध हथर से—

(राजा साप में प्रीतिहारी)

राजा—(मन ही मन) कर्तव्यगान्न में तद्वर राजा के लिए राज्य महान कष्ट का कारा है । क्योंकर—

राजा यदि परोरकार में हो दिन-रात तद्वर रहे तो वह अपने स्वार्थ की पूर्ति से वञ्चित रह जायेगा और यदि वह स्वार्थ का भावना से रहित हो जाय तो वह भूमि का पत्र हो रह जाय और यदि मनुष्य पराधीन की वृत्ति को सचनुच स्वार्थभावना से श्रेयस्कर मान ले— फिर तो वह सर्वथा पराधीन, पराक्रिड हो जाय और—पराधीन को क्या मज्जन आवन में प्रेम नाम की कर वस्तु है ना ? ॥ ४ ॥

(Behind the scenes)

English—This way, this way, Sir.

(Then enter the king and warder)

The king—(To himself) Sovereignty is indeed a source of great trouble to the king inasmuch upon observing the duties of a king.

In serving other's end self-interest forsakes the king and the king, who abandons personal interest, is not the lord of the earth in the real sense of the term : If other's interest is preferable to self-interest, then, alas ! the king has a master to serve, how can he know the flavour of pleasures ? (4)

टिप्पणी—इस श्लोक में काम्बलिक अलङ्कार तथा शिखरिणी छन्द है ।

विमला

अपि च = अन्यदपि (more over), आत्मवद्वि = स्थिरमानसै (by self controlled), अपि (also), राजभिः = कृपे (kings), राजलक्ष्मी = राज्यध्री (the goddess of wealth), दुराराध्या = क्लेशेन सेव्या (is hard to serve), कुत = for —

अन्वयः—तीक्ष्णात्, उद्विजते, मृदो, परिमवत्रासात्, न, सन्तिष्ठते, मूर्खान्, द्वेष्टि, न गच्छति, प्रणयिताम्, न गच्छति, शूरेभ्यः, अप्यधिकं, विभेति, एकान्तभारुन्, उपहसति, अहो, लब्धप्रसरा, वेशवनिता, इव, धा.. मृशम्, दुःखोपचर्या ॥ ५ ॥

अन्यच्च । कृतककलहं कृत्वा स्वतन्त्रेण किञ्चित्कालान्तरं व्यवहर्तव्यमित्या-
र्योदेशः । स च कथमपि मया पातकमिवाभ्युपगतः । अथ वा शश्वदार्योपदेश-
सस्त्रियमाणमतयः सदैव स्वतन्त्रा वयम् । कुतः ।

व्याख्या—तीक्ष्णात्=उग्रस्वभावात् (from austere), उद्विजते=उद्विग्ना-
भवति (shrinks), मृदौ=कोमलस्वभावे राजनि (in the mild nature),
परिभवत्रासात्=अन्यकृतानादरभयात् (from fear of insult), न=नहि (not),
सन्तिष्ठत=स्थितिम् लभते (does not abide), मूर्खान्=अज्ञान् (fools),
द्वेष्टि=दूरेष पृथु जहाति (hates), अत्यन्तविद्वद्भ्यु=भूरिविद्याशालिभ्यु (the
most learned), अपि (also), प्रणयिताम्=अमुरामभावम् (love), न गच्छति=
न प्राप्नोति (not bears), शूरेभ्यः=वीरेभ्यः (the brave), अभ्यधिकम्=अत्यधि-
कम् (exceedingly), विभेति=भयकरोति (dreads), पद्मान्तभीरुन्=अतिभय-
शीलान् (the ever timid), उपहसति (scoffs), अहो=आश्चर्यम् (oh !), लब्ध-
प्रसरा=प्राप्तपुष्टता (has gained ascendancy), वेशवनिता=वेश्या (a harlot),
इव=यथा (like), श्री=राज्यलक्ष्मीः (goddess of wealth), भृशम्=अत्यर्थम्
(very), दुःखापचर्या=कष्टसेन्या (difficult to please) ॥ ५ ॥

हिन्दी—और भी—

समाहित चित्तवाले राजाओं के लिए भी राजलक्ष्मी कष्ट से आराध्य है । क्योंकि लक्ष्मी—

उग्र स्वभाव वाले राजा से उद्विग्न होती है । कोमल स्वभाव वाले के पास तिरस्कार के
भय से अच्छी तरह नहीं टिकती है । मूर्खों से द्वेष करती है । अति विद्वान् से भी प्रेमभाव नहीं
करती है । अत्यन्त वीरों से भी घबड़ाती है । अधिक डरौक का उपहास करती है । आश्चर्य है,
अति घृष्टा, वेश्या के समान राजलक्ष्मी कष्ट से प्रसन्न होनेवाली है ॥ ४ ॥

English—Moreover —

The Goddess of wealth is hard to please even by kings with a
command over self For .—

From the stern, she shrinks In the mild, she does not abide
from fear of insult Hates a fool, she cultivates no friendship to the
most learned, the brave—she dreads mightily The ever timid, she
scoffs The Goddess of wealth, Ho ! like a harlot, that has gained
ascendancy is extremely hard to please (5)

टिप्पणी—दुराराध्या—आ + √राष् + णिन् (स्वार्थे) ण्वत्, कर्मणि आराध्या—इत्तेन
आराध्या । सन्तिष्ठते—सम् + स्था—‘समवप्रविभ्य स्था’ से आत्मनेपद हुआ है ।

इस श्लोक में कान्यलिंग एवं उपमा अलङ्कार हैं तथा शार्दूलविकीरित छन्द है ।

निमला

व्याख्या—अन्यच्च=अपरमपि (moreover), कृतककलहम्=कृत्रिमविवादम्
(a mock quarrel), कृत्वा=विधाय (getting up), स्वतन्त्रेण=अनायत्तेन (inde-
pendently), किञ्चित्=कियत् (some), कालान्तरम्=समयम् (time), व्यवहर्त्त-

इह विरचयन् साध्वीं शिष्यः क्रियां न निवार्यते
त्यजति तु यदा मार्गं मोहात्तदा गुरुकुशः ।
विनयरुचयस्तस्मात् सन्तः सदैव निरकुशाः
परतरमतः स्वातन्त्र्येभ्यो वयं हि पराङ्मुखाः ॥ ६ ॥

मयन् = वर्तितव्यम् (have to be managed), इति = एव (like this), आर्यस्य = मान्यस्य (preceptor), आदेशः = अनुदेश (command), स च = आदेशः (that order), क्यमपि = केनापि प्रकारेण (any how), मया (by me), पातकमिव = निन्द्यकर्मैव (this like a sin), अभ्युपगतः = स्वीकृत (accepted), अथवा = वा (or), शब्दः = सर्वदा (always), आर्यापदेशसरित्पयमानतयः = चागम्यनिर्देश-विशोध्यमानबुद्धयः (being constantly corrected and improved by preceptor's instructions), सदैव = अनवरत (always), एव, वयम् (we), स्वतन्त्रा = स्वाधीनाः स्म (independent)

हिन्दी—अर मो—

नार्य चात्त्य को मो कडा है कि वनते दुल बनावी कडा करना पडा, स्वतन्त्र बनना पडा, शक्ति का भार कुछ समय तक स्वयं समालना पडा। कुछ जानबूझ कर यह पार करना पडा। अथवा—निरन्तर आर्य के उपदेश से मुझसे बुर भुके बात बनने से बडा स्वतन्त्र हा है। क्योंकि—

English—Moreover —

It is the command of my preceptor that I should manage independently for sometime, while after getting up a mock quarrel with him. I accepted it with a great difficulty as if it was a sin, or, we are always independent with our views being constantly corrected and improved by preceptor's instructions. For —

टिप्पणी—कृतककलहः—कृत एव कृतक तादृश कलहः = कृतककलह बनावी कलह ।
स्वान्तर—स्व मान्य तन्त्र प्रशानन्त्य । मया वा ।

अवबर्हवन्मम्—वि + अव + ह + तत्त्व माव तन्त्र विनक्ति कार्य से रूप सम्प्र ।

विमला

अन्वयः—इह, साध्वीम्, क्रिया, रचयन्, शिष्यः न निवार्यते, तु, यदा, मोहात्, मार्गम्, त्यजति, तदा, गुरुः, अकुशः, तस्मात्, विनयरुचयः, सन्तः, सदा, एव, निरकुशाः, अतः, परतरम्, स्वातन्त्र्येभ्यः, वयम्, हि, पराङ्मुखाः ॥ ६ ॥

व्याख्या—इह = अस्मिन् लोके (in this world), हि = यतः (indeed), साध्वीम् = न्याय्याम् (right way), क्रिया = कार्यम् (work), रचयन् = कुर्वन् (doing), शिष्यः = शिष्यः (pupil), न निवार्यते = न प्रतिषिध्यते (not check), तु = किन्तु (but), यदा = यस्मिन् काले (when), मोहात् = अज्ञानात् (through delusion), मार्गम् = सपथम् (the proper path), त्यजति = जहाति (strays), तदा = तस्मिन् काले (then), गुरुः = आचार्यः (Preceptor), अकुशः = निरामकः (a curb),

(प्रकाशम् ।) आर्य वैहीनरे, सुगाङ्गमार्गमादेशय ।

कञ्चुकी—इत इतो देवः । (नाट्येन परिक्रम्य ।) अयं सुगाङ्गप्रासादः ।
शानैरारोहतु देवः ।

राजा—(नाट्येनारुह्य, दिशोऽवलोक्य ।) अहो शरत्समयसंभृतशोभानां
दिशामतिरमणीयता । कुतः ।

सरमात्=पुत्रमात् कारणात् (therefore), विनयरुचयः=विनये गुरुकृतशिष्ये
(according to the instruction of preceptor), रुचिः=प्रीतिः (interest),
येषाम् तादृशाः, सन्तः=सदाचारजमाः (good men), सदैव=सर्वदा एव (always),
निरङ्कुशाः=स्वतन्त्राः (free from restraint), अतः (so), परस्परम्=अधिकम्
(more), स्वातन्त्र्येभ्यः=स्वतन्त्रताभ्यः (to any independence), वयम् (we),
हि=निश्चये (indeed), पराङ्मुखाः=विपरीताः (averse) ॥ ६ ॥

हिन्दी—निश्चय ही इस ससार में हुआ शुभकिया को करता सदाचारी शिष्य रोका नहीं
जाता । किन्तु, जब शिष्य अज्ञानवश मार्ग छोड़ता है, तब गुरु निबन्धक होता है । अतः गुरु
के बतलाये मार्ग में रुचि रखनेवाले सुन्दर आचरण करने वाले शिष्य हमेशा स्वतन्त्र है ।
इससे अधिक स्वतन्त्रता के हम विपरीत हैं ॥ ६ ॥

English—In this world a pupil is not checked doing a good
work. The preceptor is a curb when he strays from the proper
path through delusion, hence, good men with a liking for discipline
are always curbless. We for our part are averse to any indepen-
dence other than this, (6).

टिप्पणी—व्यवहृत्तव्यम्—वि+अव+√हृ+तव्य+विभक्तिकार्यं । स्वातन्त्र्येभ्यः—
स्वतन्त्र+भ्यम्+पञ्चमीबहुवचने विभक्ति कार्यं ।

इस श्लोक में परिणाम अलङ्कार एवं हरिणी छन्द है । उदाहरण यथा—अलङ्कार—
आरोप्यमाणस्य प्रकृतोपयोगित्वे परिणामः—अलङ्कारसर्वस्व । छन्द—नसमरसला गं पद्मेदै-
र्यतिर्हरिणीमता—वृत्तरत्नाकर ।

विमला

व्याख्या—[प्रकाशम्=व्यक्तम् (aloud)], आर्य=मान्य (Sir), वैहीनरे=
कञ्चुकिन् (Vaishinari), सुगाङ्गमार्गः=सुगाङ्गहर्म्यपथम् (way to the Suganga
palace), आदेशय=दर्शय (show me).

कञ्चुकी—इत इतः (this way, this way), देवः=मान्यः (sire)

[नाट्येन=अभिनयेन (acting), परिक्रम्य=परिक्रमां कृत्वा (going round),]
अयं सुगाङ्गप्रासादः=एष सुगाङ्गसौधः (this is the Suganga palace),
शानैः=मन्दम् (slowly), देवः=पूज्यः (sire), आरोहतु=उपरिष्टात्तनुमर्हतु
(let ascend).

राजा—[नाट्येन=मनोचितव्यापारविशेषेण (acting), आरुह्य=सौधोपरिप्रदेश
प्राप्य (ascent), दिशः=कुक्षुभः (the quarters), अवलोक्य=दृष्ट्वा (obser-

शनैः श्यानीभूताः सितजलधरच्छेदपुलिनाः

समन्तादाक्षीर्णाः कलविरुतिभिः सारसकुलेः ।

चिताश्चित्राकारैर्निशि विकचनक्षत्रकुमुदै

नभस्तः स्पन्दन्ते सरित इव दीर्घा दश दिशः ॥ ७ ॥

ring)], अहो = आश्चर्यम् (Oh !), सारससमयेन (by the autumnal season), सम्भृता = उपचिताः सोमाः विभृतयः यासां (with grace added), दिशाम् = आद्यानाम् (the quarters), अतिरमणीयता = प्रभूतसौन्दर्यम् (the beauty).

हिन्दी—(प्रकट रूप में) अहो, बेहोतर सुगाङ्ग का मार्ग निर्दिष्ट कीजिए ।

कञ्जकी—नहराज, इधर से, इधर से । (कमिनर के साथ चारों ओर घूमकर) वह सुगाङ्ग नानक राजमहल है । नहराज बारे से इस पर चढ़ ।

राजा—(राजा कमिनरपूर्वक चक्कर लगा दिशामें को देखकर) अहो ! इतल बहुत के कारा बना दुर्ग शोभावाले दिशामें की अत्यन्त रमणीयता है । क्योंकि—

English—(Aloud) Sir ' Vathimari, show the way to Suganga palace.

Chamberlain—This way, Sire, this way, (acting going round) This is the palace Suganga. Let my lord ascend slowly,

The king—(acting ascent and observing the quarters) Oh, the extreme beauty of the quarters with grace added by the autumnal season ! For :—

विमला

अन्वयः—शनैः, श्यानीभूताः, सितजलधरच्छेदपुलिनाः, कलविरुतिभिः, सारसकुलेः, समन्तात्, आक्षीर्णाः, निशि, चित्राकारैः, विकचनक्षत्रकुमुदैः, चिताः, दीर्घाः, दश दिशः, सरिताः, इव, नभस्तः, स्पन्दन्ते ॥ ७ ॥

व्याख्या—शनैः = क्रमशः (gradually), श्यानीभूताः = कृशीभूताः (shrinking up), सितजलधरच्छेदपुलिनाः = स्रक्तामयतटानीव वासां ताः, सरिष्वे—वालुका-मयतटानि यामां ताः (having the strips of white clouds for sand-banks), कलविरुतिभिः = मधुरैः अम्यच्छब्दैः (with swarms of sweetly cackling swans), सारसकुलेः = सारससमूहैः (flocks of herons), समन्तात् = सर्वतः (all round), आक्षीर्णाः = व्याप्ताः (having crowded), निशि = रात्रौ (at night), चित्राकारैः = विविधप्रकारैः (various forms), विकचनक्षत्रकुमुदैः = प्रफुल्लितारामण्डलकैरवालीव तैः (with fine looking lily-like stars unveiled), चिताः = व्याप्ताः, दीर्घाः = विशाला (long), दशदिशः = दशकाशाः (the ten quarters), सरितः इव = नद्यः इव (like ten rivers), नभस्तः = आकाशात् (from the sky), स्पन्दन्ते = निःसरन्ति (flowing) ॥ ७ ॥

हिन्दी—शरत्काल की नदियाँ दिशामें की तरह नीर दसों दिशाएँ नदियों का भाँति लगा रहा है । एक ओर सर्वत्र मधुर स्वरवाले सारसों का पक्षियों से कभी भरे चमकते बाजुका-

अपि च—

अपामुद्भूतानां निजमुपदिशन्त्या स्थितिपदं

दधत्या शालीनामवनतिमुदारे सति फले ।

मयूराणामुग्रं विषमिव हरन्त्या मदमहो

कृत. कृत्स्नस्यायं विनय इव लोकस्य शरदा ॥ ८ ॥

पुत्र ऐसे शान्त पड़े हुए हैं मानो धवल मेघखण्ड हो और दूसरी ओर हसी प्रकार धवल मेघों के टुकड़े ऐसे नि शब्द दिखाई दे रहे ह मानो नदीपुलिन हों । एक ओर इस रात में खिले हुए विष्वविचित्र कुमुदों से भरी हुई नदियाँ ऐसी लगती हैं—मानो तारों से भरी दिशायेँ हों और दूसरी ओर आकाश की दिशाएँ ऐसी लगती ह मानों कुमुद से भरी सरिताएँ हों ॥ ७ ॥

English—Gradually shrinking up, having the strips of white clouds for sand-banks, crowded all round with swarms of sweetly cackling Swans, and thick-set at night with asterism of various forms like so many full blown lily flowers, the extensive ten directions flow down from the sky like ten long rivers (7)

टिप्पणी—श्यामीभूता—श्याम+भू+√भू+क+विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप ।
आकीर्णा—आ+√कृ+क+विभक्ति कार्य से सम्पन्न रूप । चिता—√चि+क विभक्तिकार्य ।
इस श्लोक में उपमेयोपमा एवं इलेय जलवार है तथा शिखरिणीछन्द है । लक्षण लिखा जा चुका है ।

विमला

अन्वय.—अहो, उद्भूतानाम्, अपाम्, निजम्, स्थितिपदम्, उपदिशन्त्या, शालीनाम्, उदारे, फले, सति, अवनतिम्, दधत्या, मयूराणाम्, उग्रम्, मदम्, विषम्, इव, हरन्त्या, शरदा कृत्स्नस्य, लोकस्य, अयम्, विनय, कृत, ॥ ८ ॥

व्याख्या.—अहो=आश्चर्यम् (Oh !), उद्भूतानाम्=प्रवृद्धानाम् (had over flows), अपाम्=जलानाम् (water), निजम्=स्वायम् (natural), स्थिति पदम्=मर्यादाम् (bond), उपदिशन्त्या=शिक्षयन्त्या (has been taught) शालीनाम्=धान्यानाम् (paddy), उदारे=प्रभूते (stalks), फले=परिणामे सति=जाते (becoming mature), अवनतिम्=नम्रताम् (bend low), दधत्या=कुर्वन्त्या (doing), मयूराणाम्=शिखिनाम् (the Peacocks), उग्रम्=तीव्रम् (excessive), मदम्=गर्वम् (lust), विषम् इव=गरलमिव (as poison), हरन्त्या=दूरीकुर्वन्त्या (depriving), शरदा (Autumn), कृत्स्नस्य=समग्रस्य (the whole), लोकस्य=ससारस्य (the world), अयम् (this), विनय = नम्रता (manners), कृत इव=शिक्षित इव (to have imparted to proper training) ॥ ८ ॥

हिन्दी—आश्चर्य है—पानी के बहाव को मानो मर्यादा में रहने की शिक्षा देती हुई, पान से भरी शालियों को मानो नम्रता की दीक्षा देती हुई, मयूरों के मद को भयकर विष की तरह उतारती हुई, सरद ऋतु मानो सारी दुनियाँ को विनय का पाठ पढ़ा रही है ॥ ८ ॥

इमामपि—

मर्तुस्तया कलुषितां बहुबलमस्य
मार्गे कथंचिद्वतार्यं तनूमवन्तीम् ।
सर्वात्मना रतिकयाचतुरेष द्वृती
गङ्गां शरन्नयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम् ॥ ९ ॥

English—Oh, it seems that Autumn to have imparted a proper training to the whole world, pointing out their natural place and location to water that had overflowed, imparting stoop to paddies the crop becoming mature, removing the peacock of their excessive lust as of virulent poison. (8)

टिप्पणी—इस श्लोक में अल्पज्ञ तथा काम्यद्विग्न मरुद्धार है जिसका लक्ष्य पक्ष लब्धता या युद्ध है । निश्चय ही छन्द है । इसका भी लक्ष्य लब्धता या युद्ध है ।

विमला

अन्वयः—शरत्, रतिकयाचतुरा, द्वृती, इव, कलुषिताम्, तनूमवन्तीम्, गङ्गाम्, सर्वात्मना, प्रसन्नाम्, बहुबलमस्य, मर्तुः, मार्गे, कथञ्चित्, अवतार्यं, सिन्धुपतिम्, नयति, ॥ ९ ॥

व्याख्या—इमामपि (also)

शरत् (Autumn), रतिकयाचतुरा=प्रणयकयाप्रवीणा (adept in love-matters), द्वृती=सञ्चारिका (a female messenger), इव=यथा (like), कलुषिताम्=आविलाम् (turbid in rainy season), नायिकापक्षे रक्षाम् (displeased), तनूमवन्तीम्=वीणीभवन्तीम् (thinning), गङ्गाम्=सुरसरिताम् (Ganga), सर्वात्मना=सर्वप्रकारेण (all over), प्रसन्नाम्=निर्नलाम् (pleased), बहुबलमस्य=अनेकसरिप्रियस्य, नायिकापक्षे अनेकभार्यस्य (many wives), मर्तुः=पत्युः (husband), मार्ग=वचितपथे (proper path), कथञ्चित्=केनापि प्रकारेण (in any way), अवतार्यं=भानीय (to bring), सिन्धुपतिम्=सागरम्, पक्षे पतिम् (the sea or husband), नयति=प्रापयति (leads), ॥ ९ ॥

हिन्दी—और यह भी—

नाचे दिखाद देनेवाणी यह भी, जो अब तक वर्षा के कलुषित जल से भरा हुआ था—नहीं रहा था, नाना करने प्रियजन से खाली कोर मुँहपुलाया नायिका हो, इस समय अपनी स्वानायिक धारा में अपने निर्दिष्ट मार्ग पर बहता हुआ देखा प्रसन्न । उल्टा बनी हुई—इस शरद के द्वारा स्मृति से मिटने के लिए के बारे में जा रही है, जैसे किताब पुराना के द्वारा समझा-झुटा कर कोर लूटी नायिका, ननोनालिन्य नूली हुई प्रियमित्र के लिए उ जारी जा रही हो ॥ ९ ॥

English—Also—

Like a female messenger adept in love matters, the Autumnal season, having with great difficulty brought Ganga, who was so

(समन्तान्नाम्नेनावलोक्य ।) अये, कथमप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सव कुसुमपुरम् । आर्य वैहीनरे, अथास्मद्वचनादाघोषित कुसुमपुरे कौमुदीमहोत्सव ।

कञ्चुकी—अथ विम् ।

राजा—तत्किं न गृहीतमस्मद्वचन पौरैः ।

कञ्चुकी—(कर्णौ पिधाय ।) शान्त पाप शान्त पापम् । पृथिव्यामस्त्रलित-पूर्व देवस्य शासन कथ पौरेषु स्खलिष्यति ।

राजा—तत्कथमप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवमद्यापि कुसुमपुरम् ।

much unhappy (had become turbid in rainy season) with her husband for his having many wives, to the proper path as she grew thinning (shrank within its bed) leads her in a completely pleased-mood to the sea (9),

टिप्पणी—इत इलोक में उपमा बलद्वारा यह बसन्त तिलका वृत्त है । दोनों का लड़पन लिखा जा चुका है ।

विमला

व्याख्या—[समन्तात्=चतुर्विध (all round), नादवेन=भङ्गधात्मकेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (observation), अये (Ha), कथम्=कस्मात् कारणात् (how is it), अप्रवृत्त=अनारब्ध (uncommenced), कौमुदीमहोत्सव = शारदीयस्य (The Kaumudi festival), कुसुमपुरम्=पाटलिपुत्रम् (Kusum pura) आर्य=मान्य (noble sir), वैहीनरे (Vaihinarī), अप=अनन्तरम् (after that), अस्मद्वचनात् (in my name), आघोषित=प्रख्यापित (proclaimed), कुसुमपुरे=पाटलिपुत्रे (at Kusumpura), कौमुदीमहोत्सव=शारदीयस्य (the celebration of Kaumudi festival)

कञ्चुकी—अथ किम्=एवमित्यर्थ (What else), (yes) ?

राजा—तत्किम् (Is it then), अस्मद्वचनम् (my command), पौरैः = पौरजनैः (by the citizen), न गृहीतम्=न कृतम् (not respected)

कञ्चुकी—[कर्णौ पिधाय=श्रवणौ आवृत्य (blocking his ears), शान्तम् पापम्=वीप्सायां क्षिरकिं (Begone sin), पृथिव्याम्=भूमौ (in the whole world), अस्त्रलितपूर्वम्=अनुलक्षितपूर्वम् (never ineffective), देवस्य=भवत (sire), शासनम्=निदेश (command), पौरेषु=पुरवासिजनेषु (among the citizens), कथम्=केन प्रकारेण (how), स्खलिष्यति=(could be ineffective)

राजा—तत्=तस्मात् (Then), कथम्=केन हेतुना (how), अप्रवृत्तकौमुदीमहोत्सवम्=अनारब्धशारदपूर्णचन्द्रोत्सवम् (has not commenced the Kaumudi festival), अद्यापि=साम्प्रतमपि (even now), कुसुमपुरम्=पाटलिपुत्रम् (Kusumpuram)

धूतैरन्योन्यमानाः स्फुटचतुरकथाकोविदं वंशनायौ

नालं कुर्वन्ति रथ्याः पृथुजघनमराकान्तिमन्दैः प्रयातैः ।

अन्योन्यं स्पर्धमाना न च गृहविभवैः स्वामिनो मुक्तशङ्काः

साकं स्त्रीभिर्भजन्ते विधिममिलपितं पार्वणं पोरमुख्याः ॥ १० ॥

हिन्दी—(चारों ओर ध्वनिध के साथ देखकर) अरे, क्या कुसुमपुर में कौमुदी महोत्सव प्रारम्भ नहीं हुआ है ? कार्य वैहीनरे, क्या हमारा भाइ उ कुसुमपुर में कौमुदी महोत्सव की घोषणा कर दा थी ?

कम्बुकी—कौरे क्या ?

राजा—तो फिर क्या ? नगरियों ने हमारी आज्ञा स्वीकृत नहा की ?

कम्बुकी—(धनो को देखकर) पार कान्त हो, पार शान्त हो । पृथ्वा पर क्या स्थिति न होनेवाला महाराज को आज्ञा मला नगरियों ने कैसे स्तब्ध होयी ?

राजा—ता कैसे आज भी प्रारम्भ नहीं हुआ है कौमुदी महोत्सव विसर्जने देहा कुसुमपुर है ।

English—(acting observation all round) Ah, how is it, that Kusumpura goes with the Kaumudi festival uncommenced ? Venerable Vashinari, was not the Kaumudi festival proclaimed in Kusumpura at our command ?

Chamberlain—What else (yes).

King—Why then have not the citizens obeyed our command ?

Chamberlain—(Stopping his ears) Begone sin, Begone sin, Sure's command never has been disobeyed in the whole world. How it be disobeyed by the citizens ?

King—How is it then that the festivities have not been commenced in Kusumpura ?

विमला

अन्यथा—स्फुटचतुरकथाकोविदे, धूर्त, अन्वयमाना, वंशनाय, पृथुजघन-मराकान्तमन्दै, प्रयातै, रथ्या, नालङ्कुर्वन्ति, गृहविभवश्च, अन्योन्यम्, स्पर्धमानाः पोर-मुख्या, स्वामिनः, मुक्तशङ्काः, स्त्रीभिः, साकम्, अमिलपितम्, पार्वणम्, विधिं, न, भजन्ते ॥ १० ॥

व्याख्या—स्फुट = स्पष्ट (free), चतुरा = कुशलः (clever), वाः कथाः = प्रत्यवाचाः (conversation), तासु कोविदः = कुशलः (skilled), धूर्तः = विद्वेः (by puns), अन्वयमानाः = अनुगम्यमाना (followed), वंशनाय = वारविड-सिन्धः (harlots), पृथुजघनमराकान्तमन्दै = पृथोः = स्थूलस्य (compar), जघनस्य = शीर्षटिमानस्य (hips), यो मारः = गुल्फा (weight), तस्य आशान्त्या = आरोपेण (with step), मन्दै = अलसः (slow), प्रयातैः = गतिभिः (with their gaits), रथ्या = विस्त्रिताः (the streets), नालङ्कुर्वन्ति = न क्षोभन्ते (do not grace), गृहविभवैः = गृहसम्पत्तिभिः (the wealth of

houses), ॥ = पुनः (again), अन्योन्यम् = परस्परम् (with one another), स्पर्द्धमाना = स्पर्द्धाकुर्वन्त (vying), पौरमुख्या = पुरवासिना श्रेष्ठा (the leading citizens), स्वामिन = गृहस्वामिन (sovereign's), मुक्तशङ्का = निर्भोका (free from misgivings), स्त्रीभिः = वनिताभिः (women), साकम् = सह (with), अभिलषितम् = चिरचान्छितम् (in the desired), पार्वणम् = पर्वणि = काचित्त्रया पूर्णमास्या भव = पार्वणम् = शरदपूर्णिमासम्बन्धनम् (falling on the fullmoon day), विधिम् = महोत्सवम् (festivity), न = नहि (do not), भजन्ते = सेवन्ते (partake) ॥ १० ॥

हिन्दी—स्पष्ट और चतुरतापूर्ण प्रणय कथाओं में प्रवीण धूर्तों के द्वारा अनुसरण की जाती हुई वेदवादी विशाल जंघाओं के भार के आरोपण से अपनी मन्द्यगति से राजमार्गों की अलङ्घन नहीं कर रही हैं। धूर्तों के देश्वरों के द्वारा परस्पर स्पर्द्धा करते हुए नागरिकों में श्रेष्ठ गृहस्वामी निमग्न होकर स्त्रियों के साथ चिराकांक्षित शरदपूर्णिमा के उत्सव को नहीं मना रहे हैं ॥ १० ॥

English—Public women followed by pimps beaux skilled in free and clever talk do not grace the streets with their gaits slow on the weight of their hips, nor do the leading citizens vying with one another in the richness of their house and being free from misgivings partake, along with their women, in the desired festivity falling on full moon day 10

टिप्पणी—(१) अस्खलितपूर्वम्—स्खल + क कर्त्तरि स्खलित । पूर्वम् स्खलितम्—'भूतपूर्वं चरद्' इस सूत्र से पूर्व शब्द का परनिपात हो गया, इसका विग्रह है—न स्खलितपूर्वम्—अस्खलितपूर्वम् ।

(२) 'कौति' इति कुशब्दे + विच् कर्त्तरि कौ, पुन, देशि इति विच् + क कर्त्तरि विद् को वेदस्य विद् = कौविद् ।

(३) अन्वीयमाना — अनु + इ + शानच्, कर्मणि = अन्वीयमाना ।

(४) 'वेशो वेश्यागृहस्थि च' तस्य नाम्नी वेश्यानां, अर्थात् वेश्या ।

(५) स्वामिन—स्वधनमस्यास्तोति स्व + आमिन् मरक्थे स्वामिन् प्रातिपदिकादिकार्ये से स्वामिन ।

(६) पर्वणि भव पार्वण — पर्वन् 'तत्र भव' से अण् प्रत्यय आदि वृद्धि, प्रातिपदिकादि कार्य पार्वण ।

(७) प्रयुजघन—विशाल जंघावालो जाती श्रेष्ठ मानी जाती है ।

(८) मुक्तशङ्का—इससे तात्पर्य यह है कि राजा की ओर से बीसुदी महोत्सव मनाने के आदेश के कारण धनप्रदक्षण में धन छिन जानि की कोश आशङ्का नहीं है ।

किसी भी प्रसूत महोत्सव में बाराहनाओं का राजमार्ग में गमन तथा पुरवासियों वा स्त्रियों के साथ विहरण स्वाभाविक है। अतः इस दलोक में उक्त प्रकार की स्वभाविक क्रियाओं के वर्णन करने के कारण 'स्वभावोक्ति' अलङ्कार है तथा सम्भरा नामक छन्द है। इन दोनों के उद्योग है—

कञ्जुकी—एतमेवैतन् ।

राजा—किमेतन् ।

कञ्जुकी—देव, इदम् ।

राजा—स्फुट कथय ।

कञ्जुकी—प्रतिषिद्धं कौमुदीमहोत्सवः ।

राजा—(ननोधम्) आ केन ।

कञ्जुकी—देव, नातः परं विज्ञापयितुं शक्यम् ।

राजा—न खलु आञ्चानक्येनापहतः प्रेक्षकाणामतिशयरमणीयञ्चक्षुषो विषयः ।

कञ्जुकी—देव, कोऽन्यो जीवितुकामो देवस्य शासनमतिवर्तेत ।

वधा—अङ्कुर—'स्वभावोक्तिरुद्धार्यस्वकिराकूपवर्णनम्'

छन्द—'अन्मैद्याना त्रयेण त्रिनुनियतियुता सत्परा कीर्तितेयम्'

व मला

व्याख्या—कञ्जुकी—एवम्=भवता यथोक्तम् तथैव (It is), एव (indeed), एतत्=उत्सवविधानम् (this).

राजा—किम् (what is), एतत् (it).

कञ्जुकी—देव = महाराज (Sure), इदम् = एतत् (it is this).

राजा—स्फुटम् = स्पष्टम् (clearly), कथय (speak).

कञ्जुकी—प्रतिषिद्धः = निषिद्धः (has been prohibited), कौमुदीमहोत्सवः = शारदोत्सवः (Kaumudi festival).

राजा—[सत्परा = सत्परा (with warmth)], आः (Ha), केन (by whom).

कञ्जुकी—देव = महाराज (Sure), अतः परम् = इतोधिकम् (beyond this), विज्ञापयितुम् = सूचयितुम् (be reported), न शक्यम् = न युज्यम् (can not).

राजा—न खलु (can not), आर्य = मान्यः (the noble), चाणक्येन = कौटिल्येन (by Chanakya), अपहतः = प्रतिषिद्धः (have deprived), प्रेक्षकाणाम् = दर्शकानाम् (the spectators), अतिशयरमणीयः = अतिमनोज्ञः (excessively delightful), चाक्षुषः = नेत्रस्य (of sight), विषयः = दृश्यपदार्थः (object).

कञ्जुकी—देव = महाराज (My lord), कोऽन्यः = चाणक्यादतिरिक्तः (who else), जीवितुकामः = जीवनाभिलाषी (with a desire to live), देवस्य = भवतः (of your majesty), साम्यन् = निदेशन् (command), अतिवर्तेत = अतीत्य वर्तेत (would over-rule).

हिन्दी—कञ्जुकी—देता ही है यह ।

राजा—यह क्या है !

कञ्जुकी—महाराज यह ।

राजा—शोणोत्तरे, उपवेष्टुमिच्छामि ।

प्रतीहारी—देव, एदं सिंहासनम् । देव, इदं सिंहासनम् ।

राजा—(नाट्येनोपविश्य ।) आर्यं वैहीनरे, आर्यचाणक्यं द्रष्टुमिच्छामि ।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः ।)

(ततः प्रविशति आसनस्थः स्वभवनगतः कोपानुविद्धां
चिन्तां नाट्यंश्चाणक्यः ।)

चाणक्यः—कथं स्पर्धते मया सह दुरात्मा राक्षसः ।

राजा—साफ साफ बतलाओ ।

कञ्चुकी—कौमुदी महोत्सव रोक दिया गया है ।

राजा—(क्रोध के साथ) आ ! किसके द्वारा ।

कञ्चुकी—महाराज, इससे अधिक निवेदन करना समभव नहीं है ।

राजा—आर्य, चाणक्य के द्वारा तो नहीं ! दर्शकों की इच्छा का अत्यन्त रमणीय विषय रोक दिया गया !

कञ्चुकी—महाराज, जीने की अभिलाषा रखने वाला दूसरा कौन महाराज की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है ?

English—Chamberlain—It is just so

King—What is that ?

Chamberlain—My lord it is this.

King—Speak clearly.

Chamberlain—The kaumudi festival has been prohibited

King—(Angerily), Ha by whom ?

Chamberlain—My lord, beyond this can not be reported.

King—Really, by noble Chanakya has not been deprived the spectators of an excessively delightful object of sight

Chamberlain—Sire, who else with a desire to live can transgress the command of your majesty.

विमला

व्याख्या—राजा—शोणोत्तरे (Sonottara), उपवेष्टुम् (to sit down), इच्छामि= चान्छामि (I wish)

प्रतीहारी—देव=महाराज (Sire), इदम् (here is), सिंहासनम् (throne).

राजा—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), उपविश्य (sitting down)], आर्यः=मान्य (noble), वैहीनरे (Vahinari), आर्यं=मान्य (venerable), चाणक्यम्=कौटिल्यम् (chanakya), द्रष्टुम् (to see), इच्छामि (I wish)

कञ्चुकी—देव=महाराज (my lord), यदाज्ञापयति (as command), इति-निष्क्रान्तः (to exit), ततः=तदनन्तरम् (then), प्रविशति (enters),

आसनस्यः=आस्तरणारूढः (on a seat), स्वन्नवनगतः=निजगृहप्राप्तः (in his own house), कोपानुविद्धाम्=ऋषसहिताम् (in an angry mood), चिन्ताम्=स्थितिम् (meditation), नाटयन्=अभिनयन् (acting), चाणक्यः=कौटिल्यः (Chanakya)] ~

चाणक्य—कथम्=कुत, केन प्रकारेण वा (How so), दुरात्मा=दुष्टात्मा (wicked-souled), राक्षसः (Rakshasa), मया सह=आत्मना साथम् (with me), स्पृष्टे=मध्यपासवैकल्यम् इच्छति (keeps up rivalry).

हिन्दो—राजा—शोभेउरे 'बैठना चाहता हूँ ।

प्रतिहारो—नहाराज, वह सिंहासन है ।

राजा—(अभिनय के साथ बैठकर) आर्य, वैशाले, आर्य चाणक्य को देखना चाहता हूँ ।

कञ्जकी—नहाराज की बेटी भाया (देखा कड़कर निकल गया)

(उसके बाद अपने घर में आसन पर बैठा हुआ क्षोभपूर्व चिन्ता का अभिनय करता हुआ चाणक्य प्रवेश करता है) ।

चाणक्य—मेरे साथ दुष्टात्मा राक्षस किस प्रकार स्पर्धा करता है ?

English—King—Sonottara, I wish to sit down.

Warder—Sire here is your throne.

King—(acting sitting down) venerable Vathinari, I wish to see the noble Chanakya.

Chamberlain—My lord as you command. (Exit).

(Then enter Chanakya on a seat, in his own house, acting meditation mixed with anger).

Chanakya—How so the vile hearted Rakshasa keeps up rivalry with me ?

टिप्पणी—(१) विज्ञापयितुम्—वि+ज्ञा+यिच्+तुञ्च्, सामान्यतः यह रूप 'आज्ञापयितुम्' का उलट है ।

(२) जीवितुञ्जानः—जीवितुञ्जानः अस्व । यहाँ पर 'जीवितुञ्ज' के प्रकार का लोप 'जुम्मेदवरनः कृत्वे तुञ्काममन्योरपि' इस कारिका के अनुसार हुआ है ।

(३) उरवशुमिच्छामि—उर+विच्+तुञ्च्—इसने राजा अपने हृदयस्व कोष को अभिनय कर रहा है ।

(४) अनिवर्त्तयति—अनि+वृत्+लिट्+ईत्, इच्छित् अथवा समावनायान् लिट् है ।

(५) कोपानुविद्धाम्—अनु+व्यध्+क्त+कर्त्ता अनुविद्धः । क्रोधेन अनुविद्धान्=क्रोध-रहितान् ।

(६) दुरात्मा—आत्मन् यहाँ दुष्टितरक है । दुष्ट आत्मा अथ इति दुर्द्विः । यहाँ चाणक्य राक्षस के प्रति दार्ष्टिक क्रोध प्रकट करत दोहता है । जबकि राक्षस हानोतिष्ठ है, फिर भी उद्युत के अवलम्बन के कारण ही चाणक्य उसे ऐसा कड़कर कोषता है ।

कृतागा कौटिल्यो भुजग इव निर्याय नगरं-

यथा नन्दान्दत्त्वा नृपतिमकरोन्मौर्यवृषलम् ।

तथाहं मोर्येन्दो. श्रियमपहरामीति कृतधी

प्रकर्षं मद्बुद्धेरतिशयितुमेव व्यवसित ॥ ११ ॥

—कौटिल्यो ६३

विमला

अन्वय —कृतागा, कौटिल्य, भुजग, इव, नगरात्, निर्याय, यथा, नन्दान्, हत्वा, मौर्यवृषलम्, नृपतिम्, अकरोत्, तथा अहम्, मोर्येन्दो, श्रियम्, अपहरामि, इति, कृतधी, एव, मद्बुद्धे, प्रकर्षम्, अतिशयितुम्, व्यवसित ॥ ११ ॥

व्याख्या—कृतम् = आधरितम्, आग अपराध यस्मिन् तादृशः सन् (after being insulted), कौटिल्य चाणक्य (Chanakya), भुजग = सर्प (Snake), इव = यथा (like), नगरात् = कुसुमपुरात् (from the capital town), निर्याय = निर्गत्य (went out), यथा = येन प्रकारेण (as), नन्दान् = नवनन्दान् (the Nandas), हत्वा = विनाश्य (destroyed), मौर्यवृषलम् = चन्द्रगुप्तम् (Vrishala, son of Mura), नृपतिम् = राजानम् (a king), अकरोत् = व्यधात् (made), तथा = तेनैव प्रकारेण (so), अहम् = चाणक्य (I), मोर्येन्दो = चन्द्रगुप्तस्य, श्रियम् = राजलक्ष्मीम् (the sovereignty from the moon like maurya), अपहरामि = अपनयामि (wrench) इति = इत्थम् (like this) कृतधी = कृतनिश्चय (resolved), एव = मम दातुभूत राक्षस (he), मद्बुद्धे = मम्मते (my own genius), प्रकर्षम् = श्रेष्ठताम् (excellence), अतिशयितुम् = अतिक्रमितुम् (is attempting), व्यवसित = तत्पर (to surpass) ॥ ११ ॥

हिन्दी—कौटिल्य का जब अपमान हुआ था, उसने एक कुचले गये साँप की तरह नगर से बाहर निकलकर नन्द का उन्मूलन कर दिया था और चन्द्रगुप्त को उसी जगह प्रतिष्ठित कर दिखाया था। उसी प्रकार—मैं चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी को अपहृत करूँगा—इस प्रकार सोचने वाला यह राक्षस मेरी बुद्धि की उत्कृष्टता को लापने के लिए तत्पर है। ११ ॥

English—As Kautilya who being insulted, went out of the capital town like an molested snake, destroyed the Nandas and raised Vrishala, son of mura to the throne, so shall I wrench the fortune of the moon like maurya Thus resolved he is attempting to surpass the excellence of my own genius 11

टिप्पणी—(१) भुजग —भुजेन कुटिल्यत्वा गच्छतीति । भुज्+गम्+ङ+कर्तरि प्रयोग ही भुजग आरे भुजगम् वा 'सिद्धि' खच प्रत्यय स होता है। 'भुजग इव' कहने का तात्पर्य यथा यह प्रतीत होता है कि जैसे कुचला हुआ साँप कुचलने वाले से अपना बदला लेकर ही दम लेता है। उसी प्रकार अपमानित कौटिल्य ने अपना बदला ही लेकर दम लिया।

(२) प्रकर्षम्—प्र+कृप्+धत्+भावे प्रकर्षं तम्, प्रवर्णम् ।

(३) अतिशयितुम्—अधि+शी+तुमुन्—उपसर्ग के कारण ही यहाँ सकर्मकत्व हुआ ।

(आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा ।) राक्षस राक्षस, विरम्यतामस्मादुर्व्यसनात् ।

उत्सिक्तः कुसचिवदृष्टराज्यभारो

नन्दोऽसौ न भवति चन्द्रगुप्त एषः ।

चाणक्यस्त्वमपि च नैव केवलं ते

साधर्म्यं मदनुकृतेः प्रधानवेरम् ॥ १२ ॥

(४) भवति—वि + भव + भू + क्त + कर्त्तरि प्रयोग है ।

(१) अक्षराणि—यहाँ चाणक्य कथन का उत्तर्य प्रश्न दो पक्षों में दो है—(१) नन्द का निनग और (२) चन्द्रगुप्त को राजा बनाना ।

(२) इत्यादि राक्षस 'अधुकोहन् गृहारन्ने इकोहन् गृहभञ्जे' इस न्याय के अनुसार नैर्य का अकार करने के लिए प्रयत्नशील है । उसको इस दृष्टि पर चाणक्य का यह श्लोक परिहस है ।

इन श्लोक में 'नन्दा' अलङ्कार एवं द्वितरीय छन्द है ।

विमर्श

[अकाशे = शून्ये (in the sky), लक्ष्यं बद्ध्वा = fixing his glance], राक्षस-राक्षस=वीर्याया द्विरङ्गि भो राक्षस=हे सुबुद्धे (Rakshasa-Rakshasa), अस्माद्=अनुष्मात् (from this), दुर्व्यसनात्=दुष्टन्यापारात्=(vain pursuit), विरम्यताम्=निवृत्त्यताम् (stop).

अन्वयः—एष, चन्द्रगुप्त, उत्सिक्तः, कुसचिवदृष्टराज्यभारः, असौ, नन्द, न भवति, च, त्वमाप, चाणक्यः, नव, प्रधानवेरम्, केवलम्, ते, मदनुकृते, साधर्म्यम् ॥ १२ ॥

व्याख्या—एष=अयम् (this one), चन्द्रगुप्त=चुपलः (Chandragupta), उत्सिक्तः=उद्धतः (haughty), कुसचिवदृष्टभारः=कुसचिवैः=कुसितमन्त्रिभिः (by bad ministers), दृष्ट=संचालितः (were managed), राज्यभारः=शामनकार्यम् (state affairs), यस्य तादृशः अयौ=एष (this), नन्दः नन्दाक्ष्यः नृपः (king Nanda), न भवति=नास्ति (is not), च=युः (and), त्वमपि=तव राक्षसोऽपि (you too), चाणक्यः=कौटिल्य (Chanakya), नव=नासीति (is not), प्रधान-वरम्=परिवृत्तद्वेषः (enmity to the principal person), केवलम्=एकमात्रम् (only), ते=तव (your), मदनुकृते=ममानुकरणस्य (in imitation of myself), साधर्म्यम्=सादृश्यम् (point of resemblance). ॥ १२ ॥

हिन्दी—(आकाश को ओर एकद्वी लगाकर) राक्षस, इन निष्कल प्रदात हैं एक जाओ ।

गवील दुस्तिन नवियों से संचालित राज्यभार बाटा वह नन्द—यह चन्द्रगुप्त नहीं है और तुम भी चाणक्य नहीं हो । इन प्रधान वैर का कारण केवल तुम्हारा मेरे अनुकरण का समानधर्म है ॥ १२ ॥

English—(Fixing his glance) Rakshasa, O Rakshasa stop from this vain pursuit —

This one is Chandragupta, not that howghty king Nanda whose affairs of state were managed by bad ministers You too are not

(विचिन्त्य ।) अथ वा नातिमात्रमत्र वस्तुनि मया मनः खेदयितव्यम् । कुत — मद्भृत्यैः किल सोऽपि पर्वतसुतो व्यातः प्रविष्टान्तरैः ।

उद्युक्ताः स्वनियोगसाधनविधौ सिद्धार्यकाद्याः स्पशाः ।

कृत्वा संप्रति कैतवेन कलहं मौर्येन्दुना राक्षसं

भेत्स्यामि स्वमतेन भेदकुशलस्त्वेप प्रतीपं द्विपः ॥ १३ ॥

गार्हपत्यमिति

—certainly Chanakya, enmity to the principal person is the only point of resemblance in your imitation of myself 12

टिप्पणी—(१) दुर्ध्वसनात्—व्यस्यते—क्षिप्यते अनेन इति—दुर् + वि + २/भस् + ल्युट् कारणे विभक्त्यादि कार्यं, पुन -दुष्टं व्यसनम् दुर्ध्वसनात् तस्मात् दुर्ध्वसनात् । यहाँ—‘जुगुप्सा-विरामप्रमादार्थानामुपसरवानम्’ इस वाकिक से पचमो विभक्ति हुई है ।

(२) कुसचिवद्वष्टराज्यभार —‘कुसचिवै इष्ट राज्यभारो यस्य तादृश’ दिव्यु राक्षस के लिए चाणक्य द्वारा प्रयुक्त यह शब्द यहाँ उचित प्रतीत नहीं होगा । क्योंकि स्वयं चाणक्य ने प्रथम अङ्क के २३ वें श्लोक में नन्दमंत्रियों की प्रशंसा की है । इस श्लोक में नन्द मंत्रियों को विक्रान्त, नयशास्त्रिन् और सुसचिव कहा गया है ।

(३) त्वमपि चाणक्य नैव—चाणक्य के इस कथन में उसकी नीति निपुणता एवं क्षमता पर उसका अभिमान व्यक्त होता है ।

(४) साधर्म्यम्—सधर्म + ध्यम् + विभक्ति कार्य से रूपसिद्धि ।

‘उत्सिक्त’ एवं कुसचिव इन दो विशेषणों के साभिप्राय कथन से यहाँ परिकर अलङ्कार है । यह सादृश्यार्थ के गण्यौपम्याश्रय वर्ग के अन्तर्गत विशेषण वैचित्र्य सम्बन्धी अलङ्कार है । प्रकरण सम्बद्ध साभिप्राय विशेषण रहने के कारण यहाँ कथन का सौन्दर्य यहाँ एक ओर, तर्कालम्बक वृत्तिप्रधान प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर विशेषणों का साभिप्राय कथन उपयुक्त अर्थ के अनुरूप सटीक बैठा है । इसका लक्षण काव्यप्रकाश में लिखा है—

‘विशेषणैर्यस्याकृतैरुक्ति परिकरस्तु क’—का० प्र० १०।११८

। इस श्लोक में ‘प्रह्विणी’ छन्द है । इसका लक्षण—‘व्याशाभिर्मनजरता प्रह्विणीयम्’

विमला

[विचिन्त्य=विमृश्य (reflecting)], अथवा=किंवा (or), अत्रवस्तुनि=अस्मिन्, राक्षसकर्तृकमौर्येण्मूलने (in this matter), मया=आमना (by me), अति-मात्रम्=अतिशयम् (too much), मनः=चित्तम् (mind), न=नहि (not), खेदयितव्यम्=प्रोभास्पद विषयम् (need not be troubled), कुत=(why) —

अन्वयः—प्रविष्टान्तरैः, मद्भृत्यैः, स, पर्वतसुत, अपि, व्यातः, किल, सिद्धार्य-काद्याः, स्पशाः, स्वनियोगसाधनविधौ, उद्युक्ताः, संप्रति, मौर्येन्दुना, कैतवेन, कलहम्, कृत्वा, एष, स्वमतेन, भेदकुशलम्, प्रतीपम्, राक्षसम्, हि, द्विपः, भेत्स्यामि ॥ १३ ॥

व्याख्या—प्रविष्टान्तरैः = प्रविष्टम् = आयत्तीकृतम् अन्तः = अन्तःकरणम् यस्तः = वशी-कृतशत्रुहृदयः (gained heart), मद्भृत्यैः = मद्भुजैः (my servants), स = अस्मी (that), पर्वतसुतः = मलयकेतुः (The son of Parvataka) अपि = (also) व्यातः =

परिवृत्तः (Circumvented), किल्बिन्निग्रये (indeed), सिद्धार्थकायाः=सिद्धार्थकप्रमृतयः (Sidharthaka and others), स्वभाः=गूडगुरुयाः (Spies), स्वनिर्योगसाधनविधौ स्वनिर्योगस्व=निर्वाकर्मयः (their mission), साधनविधौ=निष्पादनविधौ (in the matter of carrying out), उद्युक्ताः=सत्पराः (are engaged), सम्प्रति=अधुना (now), मौरेन्दुना=चन्द्रगुप्तेन सह (with the moon like maurya), कैतवेन=व्याजेन (by my cunning causing), कलहम्=विवादम् (quarrel), कृत्वा=विधाय (do), एष=असौ (this), स्वमतेन=स्वबुद्ध्या (according to his own idea), भेदकुशलम्=भेदारोपणे प्रवीणम् (clever at alienation), प्रतीपम्=प्रतिकूलम् (opposite), राक्षसम् (Rakshasa), हि=निश्चयेन (indeed), द्विप=सत्रोः (form the enemy), भेदस्यामि=वृथक् करिष्यामि (I shall separate) ॥ १३ ॥

हिन्दी—(मोचकर) अथवा इस विषय में मुझे अपने मन को अत्यधिक दुखी नहीं करना चाहिए । क्योंकि —

शत्रुओं के हृदय में प्रविष्ट मेरे अनुचरों के द्वारा यह पर्वतकुल नष्टकेतु भी पिरा है । निश्चय हा सिद्धार्थक प्रकृति गुह्यकर अपने कार्य को सन्तुष्ट करने में तत्पर है । सम्प्रति चन्द्रगुप्त के साथ बनायी जाड़ा करके मैं अपनी बुद्धि से, पूर बाढ़ने में चतुर शत्रु राक्षस को अवरय हो शत्रु अर्थात् नष्टकरके से बचाना दूंगा ॥ १३ ॥

English—(Reflecting) Or my mind need not be troubled too much by me in this matter. For,—

That son of Parvata, has been circumvented by my servants, who have gained his confidence; my spies, Sidhartharka and others are engaged in the matter of carrying out their mission. Clever at alienation as I am I shall now having falsely picked up a row with the moon-like maurya, in no time separate Rakshasa who is plotting against me and who, according to his own idea, is a master of the art of creating discord, from the enemy. 13.

टिप्पणी—(१) वृत्तः—वृत् + वृत् + क + विभक्ति कार्य से सन्तुष्ट रूप है । वृत्तः 'वृत्' धातु समाध्यायक दिशदिगन्तरे है । 'कटिरे वर्त्तमाने' के अर्थ में यह अकर्मक धातु है ।

(२) मौरेन्दुना—'चन्द्रार्थे लुनीना' से लुनीया विभक्ति हुई है ।

(३) मन्दकलैः—से यहाँ वात्सल्य है—नागरादन प्रकृति गुह्यचरों से ।

(४) एष भेदस्यामि—इस बात का प्रतीक है कि चातक्य को अपनी कौटिल्यनोति पर पूर्ण विश्वास है ।

इस दृष्टिकोण में 'मौरेन्दुना' यहाँ कर्मधारय एवं जन्यति समास द्वय को समावृत्ता से बना किया हुआ कल नष्टकार जानना चाहिए । इसमें 'कटिरे वर्त्तमाने' वृत्त है जिसका अर्थ लुकावा हुआ है । मोदी रीति एवं जोड़ गुण है ॥ १३ ॥

(प्रविश्य ।)

कञ्चुकी—कष्ट खलु सेवा—

भेतव्यं नृपतेस्ततः सचिवतो राज्ञस्ततो बहुभा-

दन्येभ्यश्च वसन्ति येऽस्य भवने लब्धप्रसादा विटाः ।

देन्यादुन्मुखदर्शनापलपनैः पिण्डार्थमायस्यतः ^{कञ्चुकी}

सेवा लाघवकारिणीं कृतधियः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः ॥ १४ ॥

विमला

कृतकृति

[प्रविश्य—प्रवेश कृत्वा (entering)]

कञ्चुकी—सेवा=परकीया परिचर्या (service), कष्ट खलु=बलेशरूपैव (misery indeed)—

अन्येभ्यः—नृपते, भेतव्यम्, ततः, सचिवतः, ततः, राज्ञः, बहुभावा, अन्येभ्यः, च ये, लब्धप्रसादा, विटा, अस्य, भवने, वसन्ति । देन्यात्, उन्मुखदर्शनापलपनैः, पिण्डार्थम्, आयस्यतः, लाघवकारिणीम्, सेवाम्, कृतधियः, स्थाने, श्ववृत्तिम्, विदुः ॥ १४ ॥

उपाख्या—नृपते=राज्ञः (of the king), भेतव्यम्=शङ्कितव्यम् (to be afraid), ततः=तदनन्तरम् (then), सचिवतः=अमात्यात् (of his minister), ततः=तदनन्तरम् (then), राज्ञः=नृपते (king's), बहुभावः=प्रियजनत्वात् (of his favourite), अन्येभ्यः=एतद्व्यतिरिक्तेभ्यः (of others), च=अपि (also), ये लब्धप्रसादाः=प्राप्तानुग्रहाः (gained favour), विटा=धूर्ता (pimps), अस्य=राज्ञः (king's), भवने=गृहे (in the palace), वसन्ति=निवसन्ति (dwell), देन्यात्=दीनभावात् (From penury), उन्मुखदर्शनापलपनैः=उन्मुखम्=उपग्रीवम्, दर्शनानि=अवलोकनानि (looking up), अपलपनानि=आटुवचनानि (by his entreating), पिण्डार्थम्=प्राप्तार्थम् (for bread), आयस्यतः=बलेन कुर्वत (toiling), लाघवकारिणीम्=नोचरविधायिनीम् (imparts meanness), सेवाम्=शुभ्र्याम् (service), कृतधियः=विद्वान् (learnedmen), स्थाने=युक्तमेव (rightly), श्ववृत्तिम्=कुक्कुरस्य जीविकाम् (dog's life) विदुः=कथयन्ति (tell) ॥ १४ ॥

हिन्दी—

(प्रवेश करके)

कञ्चुकी—सेवाशुचि बड़ी दुःसहायिनी है ।

सबप्रथम राजा से डरना चाहिए, उसके बाद मंत्री से, उसने बाद राजा के प्रियजनों से तदनन्तर दूसरे लोगों से भी जो धूर्त हैं, राजा के कृपापात्र हैं तथा राजभवन में निवास करते हैं । दीनतावश ऊपर मुँह करके देखने तथा आटुकारिताओं से उदरपूर्ति के लिए कष्ट उठाते हुए अनुचर की तुच्छ करने वाली सेवा को विद्वानों ने उचित ही कुत्ते की वृत्ति कहा है ॥ १४ ॥

English—

(Entering)

Chamberlain—Service is indeed misery —

First of all a servant has to be afraid of a king, then of his minister, then of his favourite and also of others pimps who dwell in his palace having gained his favour. Rightly the learned men

(परिग्रम्यावलोक्य च ।) इदमार्वाणक्यगृहम् । यत्प्रतिशामि । (प्रवि-
ग्यावलोक्य च) । अहो राजाधिराजमन्त्रिणो विभूतिः । तथाहि—

उपलस्यद्वलमेतद्वेकं गोमयानां

वटुमिच्छपटानां बहिषां स्तूपमेतत् ।

शरणमपि समिद्धिः शुष्यमाणाभिगमि-

कुम्भार्थविनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥ १५ ॥

regard the service, which degrades a man, of one who from penury
plods for bread by his entreating looks and mis-representation
through helplessness as a dog's life. 14

टिप्पणी—(१) तेना—'अनरकाय' के अनुसार 'तेना शत्रुधिरास्यादा' अर्थात् तेना
जुते का वृत्ति की तरह है। अतः विद्वानों ने इसे अत्यन्त गहिरा नानकर कहिष्ठत किया है—
'द्विनो वृत्तिः स्तुता तेना गहिरन् तद्विवेचननन्'

(२) अन्तुदरुनानरकनै—'अन्तु' दुष्ट करिन् तत्र अन्तुचन, अन्तुच यथा स्यात्
तथा दर्शनम्—अनर की ओर दुष्ट करके देखना, जैसे जुते देना करत है। इसी प्रकार अन्तु
अन्तुमात्र अन्तुचनन्—निम्नमाणा या बाधकरीता है।

(३) स्थाने—यह एक स्थान है, जिसका कार्य कुछ या पदार्थ होता है।

(४) इस श्लोक में अन्तुच की निवेद वरित है। इसमें तथा और अन्तुचवृत्ति की
समानावर्तमाना गना है। अन्तुचरा के लिए अन्तुच और अन्तुच दोनों ही अगने स्थानों के
ज्ञानने ज्ञानन आचरा करते हैं।

इस श्लोक में तेना की वृत्ति सिद्ध करने के लिए अन्तुच करत वाक्य के अर्थ में दिया
गना है। इस प्रकार अन्तुच न कार्य और करत का वरित होता है, जो प्रकार अन्तु-
वैचित्र्य के द्वारा इस श्लोक चतुर्धारावित्त अन्तुच किया गना है। अतः यहाँ अन्तुच
अन्तुच है तथा इसमें अन्तुचवित्त अन्तुच है। अन्तुच—'इत्येवमन्तुचवित्त अन्तुच
निगन्ते।' अन्तुच का अन्तुच अन्तुच है। अन्तुच रानि एव अन्तुच अन्तुच है।

विमला

[परिग्रम्य=परिग्रमां कृत्वा (going round), अवलोक्य=दृष्ट्वा (observing),
च=पुनः (and), इदम्=एतत् (this is), आर्यस्य=आर्यस्य (Noble), चाणक्यस्य=
चौटिक्यस्य (Chanakya's) गृहम्=सदनम् (house), यावत् (let), प्रविशानि=
प्रवेशं करोमि (enter), [प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा (entering), च=पुनः (and),
अवलोक्य=दृष्ट्वा (observing)], अहो=आश्चर्यम् (Oh), राजाधिराज (the king
of kings), मन्त्रिणः=मन्त्रिवर्य (minister's), विभूतिः=ऐश्वर्यम् (affluence),
तथा हि (Thus) —

अन्वयः—गोमयानाम्, वेदकम्, एतत्, उपलस्यद्वलम्, वटुनि, उपलस्यद्वलम्,
बहिषान्, एतत्, स्तूपम्, शुष्यमाणाभि, अभि, समिद्धि, विनमितपटलान्तम्, जीर्ण-
कुड्यम्, शरणम्, अपि, दृश्यते ॥ १५ ॥

तत्स्थाने सत्त्वस्य वृषलोचश्चन्द्रगुप्त इति । कुत —

व्याख्या—गोमयानाम् = करीषाणाम् (cow dung cakes), भेदकम् = विदारकम् (for breaking) एतत् (this), उपलशकलम् = प्रस्तरखण्डम् (a piece of stone), वटुभिः = शिष्यैः (by disciple), उपहृतानाम् = आनीतानाम् (brought), चर्हिषाम् = कुशानाम् (the holy Kusa grass), एतत् (this), स्तूपम् = समूह (a stack), शुष्यमाणाभिः = शुष्यन्तीभिः (for drying) आभिः = पुरोवर्त्तिनीभिः (appears), समिद्धिः = यज्ञीयकाष्ठैः (holy sticks), विनमितपटलान्तम् = विनमित = नम्रीभूत (bent down), पटलान्तः = छदिप्रान्त (its roof), यस्य तादृशम्, जीर्णम् = विशीर्णम् (old) कुक्ष्यम् = भित्ति (wall), यस्य तादृशम्, शरणम् = गृहम् (house), अपि (also), दृश्यते = अवलोक्यते (appears) ॥ १५ ॥

हिन्दी—(घूमकर और देखकर) यह आर्य चाणक्य का घर है । जब तक प्रवेश करता हूँ । (प्रवेश कर तथा देखकर) सम्राट् के मन्त्री की महिमा अद्भुत है । जैसे कि —

उपलों को ताड़ने वाला यह परस्पर का डुकड़ा है । शिष्यों के द्वारा लाये गये पवित्र कुशों का यह ढेर है । सूखती हुई समिधाओं से झुके हुए छप्पर के किनारे तथा कटी पुरानी दीवारों वाला यह सामने घर भी दिखलाई पड़ रहा है ॥ १५ ॥

English—(Going round and observing), This is noble Chanakyas house Let me enter (entering and observing) Oh, the affluence of king of kings. Thus —

Here is a piece of stone for breaking cow dung cakes, here is a heap of Kusa grass brought by young disciples, the shed too is being seen with dilapidated 'walls and the corners of the roof bent down by there holy sticks exposed for drying 15

टिप्पणी—(१) उपलशकलम्—इससे यह सूचित होता है कि चाणक्य सत्यतः एक वीर-राज पुरुष है । क्योंकि उसके पास एक उपल भी पूरा नहीं, उसका डुकड़ा है । उपलस्य शकलम्—'उपलशकलम्' ।

(२) उपहृतानाम्—उप + √ हृ + क्त + पञ्चोपसृचने विभक्तिकार्यम् ।

(३) शरणम्—शृ + लृट् विभक्तिकार्यम् ।

(४) विनमित—वि + नम् + णिच् कर्मणि विनमित ।

(५) गोमयानाम्—गो पुरोषम् इति गो + मयट्, तेषाम् ।

इस दृष्टिकोण में स्वभावोक्ति अलङ्कार है तथा मालिनी छन्द है । ■ व का लक्षण—'मनमय-ययुतेयम् मालिनीभोगिलोकैः'

इस दृष्टिकोण में वैदनी रीति एवं प्रसाद गुण है ।

विमलम्

तत् = तद्मात् विभूतिनैरपेक्षयात् (Therefore), अस्य = प्रधानसचिवचाणक्यस्य (to him) देव = महाराज (sire), चन्द्रगुप्त (Chandragupta), वृषल = मुरागाभेदमवस्थायात् वृषल इति (simply Vrishala), सत्यम् = निश्चयेन (indeed), स्थाने = युक्तम् (right), कुत = for —

स्तुवन्ति धान्तास्याः क्षितिपतिमभूतंरपि गुणेः

प्रवाचः कार्पण्याद्यद्वितयवाचोऽपि पुण्याः ।

प्रभावन्तृष्णायाः स खलु सकलः स्यादितरया

निरीहानामाशस्तृणानिव तिरस्कारविषयः ॥ १६ ॥

अन्वयः—अद्वितयवाचः, अपि, पुरुषाः, यत्, कार्पण्यात्, प्रवाचः, धान्तास्याः, अभूतैः, अपि, तद्गुणैः, क्षितिपतिम्, स्तुवन्ति, सः, खलु, सकलः, तृष्णायाः, प्रभावः, इतरया, निरीहानाम्, ईशः, वृग्मः, इव, तिरस्कारविषयः, स्यात् ॥ १६ ॥

व्याख्या—अद्वितयवाचः=सत्यवचनशीलाः (truthful speech), अपि (also), पुरुषाः=जनाः (men) यत् कार्पण्यात्=दैन्यात् (Through helplessness) प्रवाचः=वाचालाः (belaud) धान्तास्याः, धान्तम्=धनमुक्तम् (tired), वास्पम्=मुखम् (mouths), वेपाम् तादृशाः, अभूतैः=अविद्यमानैः (unpossessed), अपि (also), तद्गुणैः=भूपतिविसिष्टताभिः (king's qualities), क्षितिपतिम्=भूपतिम् (to king), स्तुवन्ति=उपरलोकयन्ति (praise), स खलु=निश्चितम् (indeed), सकलः=सम्पूर्णः (all that), तृष्णायाः=चनलिप्तायाः (of desire), प्रभावः=महिमा स्यात् (is the might) इतरया=अन्यथा (otherwise), निरीहानाम्=चनतृष्णारहितानाम् (who are free from desire), ईशः=राजा (Lord), वृग्मः=घाषम् (grass), इव=यथा (like), तिरस्कारस्य=अनादरस्य (of disregard), विषयः=पात्रम् (an object), स्यात्=भवेत् (be) ॥ १६ ॥

हिन्दी—कहा रहके ईश महाराज चन्द्र-प्र को वृक्म कहा जाना उचित ही है। क्योंकि :- जो रहना निःसह ईशके लिए कोरों की राजे महाराजे दू-के समान है। अन्यत्र तो सर्व तृष्णा का प्रभाव परिलक्षित होता ही है, क्योंकि बड़े-बड़े सम्पन्न ही और बड़स्तो लोग ईश को ध्यान तक ही श्रुतिमय नहीं करते—अतः दोनदावश बाबाक बने हुए—राजाओं को ईश प्रकृता के पुल बाँधते रहा करते हैं ॥ १६ ॥

English—But it is proper that to him Sire Chaadragupta is only a Vrishal. For :-

That persons who speak the truth, indulge in words through helplessness and belaud the lord with mouths tired even for qualities, which he does not possess,—all that indeed the full power of desire. Otherwise to those, whose desire is gone completely a king is an object of disregard like straw. 16

टिप्पणी—(१) वृक्मेक—वृक्क+वद्+‘वद्’ द्विगे क्त्वं से क्त्वं प्रत्यय लगाकर बना सिद्ध रूप है। निःसह होने के कारण चन्द्र-प्र को वाक्त्रय वृक्क कहाँ वृक्क मुरा मानक दानी-वर्ग से उत्तर के नाते ‘वृक्’ सम्बोधन किया है।

(२) अविद्यमान—उप या तथा = सर्व, विनश्वर तथा अस्याः विनाश=नश्वरता, नविद्यमान = उत्पन्न, तादृशी, बागेश्वर, उत्पन्नचन्द्रोक्तः ।

(३) सकलः—कदाचित् बहु सम्पूर्ण ।

(विलोक्य सभयम् ।) आये, तदयमार्यचाणक्यस्तिष्ठति ।

यो नन्दमौर्यनृपयो. परिभूय लोक-

मस्तोदयाद्यदिशदप्रतिभिन्नकालम् ।

पर्यायपातितहिमोष्णमसर्वंगामि दे०

धाम्नातिशाययति धाम सहस्रधातः ॥ १७ ॥

(४) तिरस्कार—तिरस्+कृ+घञ् भावे तिरस्कार या तिरकार—‘तिरसोऽन्यतरस्याम्’ से सिद्ध रूप है ।

(५) प्रभाव—प्रकृष्टो भाव प्रभाव प्राप्तिश्च—यहाँ ‘शृणी भुवोऽनुपसर्गे’ से घञ् वा निषेध हुआ है ।

सत्त्ववादिषों के भी असत्य वचनों से राजस्तुति रूप विरुद्ध स्थिति के कारण ‘विरोधाभास’ अलंकार है । फिर, राजे महाराने गुण की तरह बीतराग व्यक्तियों के लिए हैं यहाँ ‘इव’ के साथ स्पष्टत उद्गमा अलंकार है । अतः इस श्लोक में विरोधाभास एक उपमा के सम्पर्क से ‘सत्त्वहि’ नामक अलंकार है । क्योंकि दोनों ही अलंकार तिल तण्डुल की तरह एक दूसरे से मिले हैं । इसका लक्षण है—

‘सेष्टा सत्त्वहिरेतेषाम् भेदेन यदिह स्थितिः’ का० प्र० ११।१२९।

‘हमने’ शिखरिणी’ छन्द है, जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है । इसमें वैदभी रोति यव प्रसाद गुण है ।

विमला

[विलोक्य = दृष्ट्वा (looking), सभयम् = भयेन सह (with awe), अये = आश्चर्यम् (Ah), तदयम् = सत्त्वासावयम् (here), आर्य चाणक्य = ग्रेष्ठविष्णुगुप्त (Honourable chanakya), तिष्ठति = वर्त्तते (is)]

अन्वयः—य, लोकम्, परिभूय, नन्दमौर्यनृपयो, अप्रतिभिन्नकालम्, अस्तोदयौ, प्रतिदिशन्, असर्वंगामि, पर्यायपातितहिमोष्णम्, सहस्रधातः, धाम, धाम्ना, अतिशाययति ॥ १७ ॥

व्याख्या—य = चाणक्य (who), लोकम् = नन्दामार्यादिकम् (the world), परिभूय = स्वनीत्या तिरस्कृत्य (defying) नन्दमौर्यनृपयो = नन्दचन्द्रगुप्तराजो (of the king Nanda and Marurya) अप्रतिभिन्नकालम् = एककालम् (the same time), अस्तोदयौ = नाशोन्नयने (the rise and fall of the kings), प्रतिदिशन् = कुर्वन् (directed), असर्वंगामि = सर्वत्राप्रसरणशीलम् (which does reach all), पर्याय पातितहिमोष्णम् = पर्यायेण = क्रमशः (by turns), पातितम् = प्रसारितम्, विनाशितम् वा (let down), हिमम् = शैत्यम् (cold), उष्णम् = आतपश्च (heat), येन तादृशम्, सहस्रधातः = सूर्यस्य (of the thou sand rayed Sun), धाम = तेजः (splendour), धाम्ना = तेजसा (causes his glory), अतिशाययति = अतिक्रामति (to surpass) ॥ १७ ॥

हिन्दी—(देखकर भय के साथ) गरे । यही वह आर्य चाणक्य बैठे है ।

(जानुभ्यां भूमौ निपत्य ।) उच्यते ।

वागम्यः—वैहीनरे, किमागमनप्रयोजनम् ।

भूमौ—आयं, प्रपतससभ्रमेविलितभूमिपालमालिमालामाणिक्यशकल-

विष्टने छेक को विरस्तृत कर, एक हो काठ में मन्द तथा नीचे दोनों राजानों का शून्य-
कृत दह उदर करते हुए—सर्वत्र न पहुँच सकने वाले कल्प- फैलाया है काठ और गनों को
बिन्ने—एसे सहस्रारेण मूर्त के उब को ना करने केब से जात्र लिदा है ॥ १७ ।

English—(Looking with awe) Ah ! here is his Honour
Chanakya.

Who defying the world directed the same time, the rise and
fall of the kings Maurya and Nanda and thus causes his glory to
surpass the splendour of the thousand-rayed Sun which does not
reach all and by whom heat and cold are let down in alternate
succession. 17.

टिप्पणी—(१) उच्यते—उः अगमिति उच्यते—यहाँ कनधारय समाप्त है ।

(२) लोचम्—छा हो २ ई-सूर के उब में सकार और वाक्प के उब में मन्दानादि ।

(३) परिमृद—परि + मृ + क्त्विन् विमृत्तपदि कार्य से सम्बन्ध कर ।

(४) पदाय—परि + आ + इ + क्त्विन् अया अय + क्त्विन् भाव पदानः ।

(५) हिमोष्णम्—हिमवत् शब्द हिमोष्णम् अथवा हिमोष्ण-विमृतिविद्व चानपिच्छ-तद्विषे
से सिद्ध रूप ।

(६) अतिरागदति—अति + आ + गि + क्त्विन् ।

(७) बान्ना—'अनुके कर्तरे ददायां स यही ददाना विनाचि दुर है ।

इस श्लोक में अतिरेक अन्वय से उच्चां अतिरंगीत अन्वय है । अतिरेक अन्वय
में वनान को अन्वय वनेय के वक्ता का वान रहता है । इस रूप में प्रतिपादक श्लोक में
इष्टानुमानित वाक्प के द्वारा करने केब से सूर के उब को ना अतिरंगित करने के कारण
वनान मूर्त को अन्वय वनेय वाक्प के उब में अधिक वक्ता विस्तारित गया है । अन्व
यहाँ अतिरेक अन्वय है । पुनः

इस श्लोक में वाक्प के उब को इस तरह ब्याख्याकर कहा गया है कि वह वनान का
लोभा का रहस्य कर गया है । इसमें वनान वाक्प का उब वनेय मूर्त के उब को निपट
गया है । अन्वय वनान के द्वारा हा वनेय मूर्त का दान होता है । अन्व यहाँ अतिरेक उच्चां
अतिरंगीत अन्वय है । इसमें अन्व वनानविद्व है । अन्व लिखा ना चुका है । इसमें
वाक्प रात्रि एव अन्व होता है ।

विमला

व्याख्या—जानुभ्याम् (with the knee), भूमौ (the ground), निपत्य
(touching), वाग्यः=नाम्यः (noble sir), जयतु=विजय लभस्व (let prosper).

वाक्प—वैहीनरे (Vahinari), आगमनप्रयोजनम्=आगमनकारणम् (object
of your coming), किम् (what is).

कञ्चुको—आर्यः=नाम्यः (noble sir), प्रपतिससभ्रमेति—प्रपतः=कृतप्रगमाः

शिखापिशङ्गीकृतपादपद्मयुगलः सुगृहीतनामधेयो देवश्चन्द्रगुप्त आर्यं शिरसा प्रणम्य विज्ञापयति—‘अकृतक्रियान्तरायमार्यं द्रष्टुमिच्छामि’ इति ।

चाणक्यः—वृषलो मां द्रष्टुमिच्छति । वैहीनरे, न खलु वृषलश्रवणपथं गतोऽयं मत्कृतः कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः ।

कञ्जुकी—आर्ये, अथ किम् ।

चाणक्यः—(सकोपम् ।) आः, केन कथितम् ।

(after having saluted) (अतएव) ससंभ्रमेणः स्वरया (through haste) डडलितानि = जातकम्पानि (are shaken), यानि भूमिपालानाम् = राज्ञाम् (of kings), मौलिमालासु = चूषापङ्क्तिषु (on the crest), यानि माणिक्यदाकलानि = रत्नखण्डानि (the pieces of rubies), तेषाम् शिखाभिः = किरणैः (by the rays), पिशाङ्गीकृतम् = पिङ्गलीकृतम् (rendered brown), पादपद्मयुगलम् = चरण-कमलद्वयम् (couple of lotus feet), यस्य सः सुगृहीतनामधेयः = प्रातःस्मरणीय-नामधेयम् (auspicious name), यस्य सः देवः = महाराजः (sire), चन्द्रगुप्तः = वृषलः (Chandragupta), आर्यम् = भवन्तम् (to your Honour), शिरसा = उत्तमान्त्रेण, (with his head), प्रणम्य = प्रणिपत्य (having saluted), विज्ञापयति = निवेदयति (says), अकृतक्रियान्तरायम् अकृतः = अविहितः (without), त्रियायाम् = धार्मिककर्मणि (to daily rites), अन्तरायः = विघ्नः (interference), यस्य ताम् = आर्यम् द्रष्टुम् = प्रेषितुम् (to see), इच्छामि = वान्छामि (I wish).

चाणक्य—वृषलः = चन्द्रगुप्तः (Chandragupta), माम् = चाणक्यम् (me), द्रष्टुम् = प्रेषितुम् (to see), इच्छति = वान्छति (wishes), वैहीनरे (Vaihīnari), न खलु = न हि (it is not), अयम् = एषः (This), मत्कृतः = अस्मद्विहितः (by me), कौमुदीमहोत्सवः = क्षारवर्षणचन्द्रनिमित्तकोत्सवः (Kaumudi festival), प्रतिषेधः = निषेधः (prohibition), वृषलश्रवणपथं गतः = चन्द्रगुप्तकर्णप्राप्तः (has reached the ears of Vrishala).

कञ्जुकी—आर्ये = मान्यो भवान् (Noble sir), अथ किम् = एवमिति (It has), (yes).

चाणक्य—[सकोपम् = सकोपम् (in anger)], आः (Ha), केन (by whom), कथितम् = निवेदितम् (told).

हिन्दी—(दोनों पुटनों से भूमि पर गिरकर) आर्य की विजय हो ।

चाणक्य—वैहीनरे, वैसे आना हुआ ?

कञ्जुकी—आर्ये, प्रणाम करने में शीघ्रतावश चञ्चल राजाओं के मुकुटों की पंक्ति पर स्थित रत्नों के टुकड़ों की किरणों से डाल पीला कर दिये गये हैं दोनों चरणकमल जिनके ऐसे प्रातः-स्मरणीय महाराज चन्द्रगुप्त आपको विनतमस्तक होकर निवेदन करते हैं कि—“यदि किसी कार्य में विघ्न न हो तो आपको देखना चाहता हूँ ।”

चाणक्य—वृषल, मुझको देखना चाहता है । वैहीनरि, कहाँ उसके कान में तो यह खबर नहीं पड़ गयी कि कौमुदी महोत्सव पर यह रोक मने लगाई है ?

कञ्जुकी—आर्य और क्या ?

कञ्चुकी—(सभयम् ।) प्रसीदत्याय । स्वयमेव सुगाङ्गप्रानादगतेन देवेना-
बलोनितनप्रवृत्तकौमुदीनहोत्सव पुरम् ।

चाणक्य—आ, ज्ञातम् । ततो भयङ्गिरन्तरा प्रोत्साह्य कोपितो वृपल ।
किमन्यन् ।

(कञ्चुकी भय नाटयस्तूष्णीमधोमुखस्तिष्ठति ।)

चाणक्य—अहो, राजपरिवनस्य चाणक्योपरि प्रद्वेषपञ्चपात । अयं क
वृपल ।

कञ्चुकी—(भय नाटयन् ।) आर्य, सुगाङ्गनातेन देवेनाहमार्जपादमूल
प्रेषितः ।

चाणक्य—(उत्थाय ।) सुगाङ्गनागमादेशय ।

कञ्चुकी—इत इत आर्य ।

(उर्मा परिक्रमन्तः ।)

चाणक्य—(कोव के साथ) हा, किसने करा ?

English—(Falling on his knees)—Victory to you sir

Chanakya—Vaihinari, what is the object of your coming ?

Chamberlain—Sir, sire Chandragupta of blessed name, whose
couple of lotus feet is rendered brown by the rays of the pieces of
rubies on the crest of kings, shaken in the act of their hasty saluta-
tion, respectfully bows to your Honour and says—"I wish to see
Noble preceptor without interference to his daily rites."

Chanakya—Chandragupta wants to see me ? Vaihinari, is it
not, indeed, the prohibition of Kaumudi festival by me reached the
ears of Chandragupta ?

Chamberlain—It has sir, (yes)

Chanakya—(In anger) Ha, by whom told.

विमला

व्याख्या—कञ्चुकी [सभयम्=भवेन सहितम् (in fright)], आर्य=नाम्नो भवान्
(noble sir), प्रसीदन्तु=असन्नो भवतु (please), स्वयमेव=साक्षादेव (himself),
सुगाङ्गप्रानादगतेन=सुगाङ्गप्रानादगतेन (sitting on the Sugang palace),
देवेनाज्ञा (sire), अवलोकितम्=दृष्टम् (saw), अप्रवृत्तम्=अमारम्भ (uncom-
menced), कौमुदीनहोत्सवम्=क्षरत्पूर्णचन्द्रमहोत्सवम् (Kaumudi festival),
पुरम्=कुसुमपुरम् (Kusumpura).

चाणक्य—आ=इह्यामुचकमन्वयम् (Ah), ज्ञातम्=अवगतम् (understand
it), तत=तदनन्तरम् (then), भवति=युष्माभिः (by you), अन्तरा=अन्तरे
(at this), प्रोत्साह्य=उद्दीप्य (incited), कोपित=कोपितः (angered), वृपल=
चन्द्रगुप्त (Chandragupta)

[कञ्चुकी = (Chamberlain), भयम् = fear, नाटयन् = अभिनयन् (acting), तूष्णीम् = (in silence), अधोमुखः = (down with face), तिष्ठति = (stands)].

चाणक्य—ओहो = आश्चर्यम् (Oh), राजपरिजनस्य = नृपानुचरस्य (attendants of the king), चाणक्यस्योपरि = विष्णुगुप्तोपरि (towards Chanakya), प्रद्वेष-पक्षपातः = विद्वेपे आसक्तिः (the side of hatred), अथ = रात्र्यालङ्कारार्थकप्रयोगः (now), वृषलः चन्द्रगुप्तः (Vrishala), कुत्र वर्तते (where is).

कञ्चुकी—[भयम् = साध्वसम् (fear), नाटयन् = अभिनयन् (acting)], आर्यः = श्रीमान् (noble sir), सुगाङ्गप्रासादगतेन = सुगाङ्गदुर्गस्थितेन (sitting on the Suganga palace), देवेन = राज्ञा (by the king), अहम् (I), आर्यपाद-मूलम् = भवचरणसमीपम् (your Honour's feet), प्रेषितः = प्रापितोऽस्मि (sent me).

चाणक्यः—[दधाय = (Rising)], सुगाङ्गमार्गम् = सुगाङ्गदुर्गपथम् (the way of Suganga), आदेशय = दशय (lead)

कञ्चुकी—इतः इतः = अनेन मार्गेण (by this way), आर्यः = श्रीमान् (Your Honour).

[उभौ = द्वौ (both), प्ररिक्रामतः = walk on)]

हिन्दी—कञ्चुकी—(डरते हुए) आर्य, प्रसन्न हों। स्वयं महाराज ने सुगाङ्ग महल की छत से जाकर देखा कि नगर में कहीं भी कौमुदी महोत्सव नहीं मनाया जा रहा है।

चाणक्य—ओह, अब समझा! तुम लोगों के द्वारा बीच में ही येरे विशद चन्द्रगुप्त को भड़का कर क्रुद्ध कर दिया गया है। और क्या?

(कञ्चुकी भय का अभिनय करता हुआ चुपचाप नीचे मुख किए खड़ा रहता है)

चाणक्य—अहो, राजा के परिजनवर्ग का चाणक्य के ऊपर द्वेष के विषय में पक्षपात है। अच्छा, अब बतलाओ वृषल कहाँ है?

कञ्चुकी—(डरते हुए से) आर्य, मुझे तो महाराज ने सुगाङ्ग प्रासाद से यहाँ भेजा था।

चाणक्य—(चठकर) सुगाङ्ग का मार्ग बतलाओ।

कञ्चुकी—इधर से, इधर से, आर्य। (दोनों निकल जाते हैं)

English—Chamberlain—(in fright) please, Noble sir, sire, himself saw that the festival uncommenced in the town, when he went to the Suganga palace.

Chanakya—Ah, I understand it, Vrishala was incited and angered by you all, what else?

(Chamberlain stands mute with face down cast acting fear)

Chanakya—Oh the feeling of hatred by the attendants of the king towards Chanakya! Now where is Vrishala?

Chamberlain—(acting fright) sir, His majesty, who was in the Suganga palace sent me to Your Honour's feet.

Chanakya—(Rising) Lead the way to Suganga.

Chamberlain—This way, this way, sir. (Both walk on).

कञ्चुकी—एष सुगाङ्गप्रसादः ।

चाणक्यः—(नाट्येनावस्थावलोक्य च ।) अरे, सिंहासनमध्यास्ते वृषलः ।
साधु साधु ।

नन्दैर्वियुक्तमनरेक्षितराजैः ३५२—
रध्यासितं च वृषलेन वृषेण राजान् ।

विमला

इत्याल्या—कञ्चुकी—एष=अयम् (this), सुगाङ्गम्=(Sugangam), प्रासादम्= हर्म्यम् (palace), जनैः=मन्दम् (slowly), आरोहतु=उपरि गच्छतु (let go up), आर्यः=श्रीमान् (noble sir).

चाणक्यः—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), अवलोक्य=इष्ट्वा (noticing)], अये=इदम् कोमलालापे सम्बोधनम् (ah), सिंहासनम्=नृपासनम् (on the throne), अध्यास्ते=अधितिष्ठति (is seated), वृषलः=मौर्यः (Vrishala), साधु साधु= (very good, very good).

हिन्दी—कञ्चुकी—यह सुगाङ्ग राजमहल है । आर्य, धीरे से ऊपर चढ़ें ।

चाणक्य—(अभिनय के साथ चढ़कर और देखकर) अरे, वृषल सिंहासन पर बैठा है । बहुत अच्छा, बहुत अच्छा ।

English—Chamberlain—This is the Suganga palace. Let noble sir, gently go up.

Chanakya—(Acting ascent and noticing), Ah Vrishal is seated on the throne. Very good-very good.

टिप्पणी—(१) प्रणतिसतप्रनमित्यादि—‘प्रणतौ’ प्रणामकरणे वः मन्त्रनः त्वरा तेन ‘सनुचिन्तानि’ जातप्रकम्पानि यानि ‘भूमिराढाना मौलिषु’ चूडास्तु स्थिताना ‘माळानाम्’ नागिक्वशकलानि ‘रत्नखण्डानि तेषां शिखामिः’ किरणैः ‘पिङ्गशीकृतम्’ पिङ्गशीकृतम् ‘पादपद्म-पुण्ड्रं चरणारविन्दद्रवम् वक्ष्य तादृशः’ ये सारे चन्द्रगुप्त के विशेषण हैं । तात्पर्य यह कि समी राजगण शत्रुता से चन्द्रगुप्त को प्रणाम करना चाहते हैं । विनत राजाओं के शिरस्थित मुकुट के नागिनागिक्वादि से निम्नतः किरणों से चन्द्रगुप्त के दोनों चरणकन्दल ढाल हो जाते हैं ।

(२) अकृतक्रियान्तरायन्—तात्पर्य यह कि ‘यदि किसी कार्य में विघ्न न हो तो’ अन्तः= मध्ये, अयन्न् इति-अन्तर+अय+वन् माने अन्तरायः विघ्नः । क्रियायाः अन्तरायः । अकृतः क्रियान्तरायः येन तन्, यह आर्य का विशेषण है ।

(३) अन्तरा—यह एक अव्यय है जिसका अर्थ है अवकाश, बीच में या अवसर पाकर ।

(४) प्रोत्साह—प्र+उत्+सह्+णिच्+त्यप् ।

(५) विद्वेषपक्षपातः—विद्वेषे पक्षपातः=आसक्ति-कर्मधारय सनास ।

(६) सिंहासनम्—यहाँ ‘अभिधीव्यासा कर्म’ इस सूत्र से आधार को कर्मत्व प्राप्त है ।

(७) अध्यास्ते—अधि+आस+उट्+ते—अध्यास्ते ।

विमला

अन्वयः—सिंहासनम्, अनपेक्षितराजराजैः, नन्दैः, वियुक्तम्, च, राजान्, वृषेण,

सिंहासनं सदृशपार्थिवसंगतं च

प्रीतिं परां प्रगुणयन्ति गुणा ममैते ॥ १८ ॥

वृषलेन, अभ्यासितम्, सदृशपार्थिवसंगतम्, च, एते, गुणा, मम, पराम्, प्रीतिम्, प्रगुणयन्ति ॥ १८ ॥

व्याख्या—सिंहासनम्=नृपासनम् (The throne), अनपेक्षित = अनारत (disregarded), राजराज=कुबेर (kubera), ये तादृशैः नन्दैः=नन्दनृपतिभिः (from the Nandas), वियुक्तम्=विरहितम् (vacated), च=पुन (and), राज्ञाम्=नृपाणाम् (among kings), वृषेण=श्रेष्ठेन (the foremost), वृषलेन=चन्द्रगुप्तेन (by Vrishala), अभ्यासितम्=अधिष्ठितम् (has been occupied), सदृशम्=अनुरूप (worthy), य=पार्थिव=राजा (the king), तेन संगतम्=युक्तम् (is joined), च=पुन (and), एते=उक्तास्त्रय (these), गुणा=व्यापारा (good occurrences), मम=माणव्यस्य (me), पराम्=उत्कृष्टाम् (supreme), प्रीतिम्=प्रसन्नताम् (joy), प्रगुणयन्ति=जनयन्ति (produce). ॥ १८ ॥

हिन्दी—सिंहासन—कुबेर की भी परवाह नहीं करने वाले नन्दों से विछुड़ गया, तथा राजाओं में श्रेष्ठ चन्द्रगुप्त के द्वारा अधिष्ठित हुआ, और अपने अनुरूप राजा से युक्त भी हुआ है—ये गुण मेरी प्रसन्नता को अत्यधिक बढ़ा रहे हैं ॥ १८ ॥

English—The throne wrested from the Nandas, who disregarded even Kubera has been occupied by Vrishala the best of kings and it has been joined to a worthy king. These virtues produce supreme satisfaction in me 18.

टिप्पणी—(१) सिंहासनमभ्यासितम्—‘अधिशीर्स्वासां कर्मे’ से द्वितीया विभक्ति हुई। अधि + आस् + ते।

(२) सदृशपार्थिवसंगतम्—नन्द दुर्भयसनी थे। यह राजसिंहासन उनसे बलविन हो या—राजोचित सभी गुणों से सम्पन्न चन्द्रगुप्त को पाकर आज सिंहासन भी भव्य है।

(३) प्रगुणयन्ति—प्रगुण + णिच् (नाम धातु) + अन्ति। प्रदत्तो गुण अस्मिन् इति प्रगुण।

(४) एते गुणा—ये तीन गुण—(क) नन्द से वियुक्त, (ख) चन्द्रगुप्त से युक्त (ग) उपयुक्त राजा से संयुक्त।

सिंहासन का उचित नृप के साथ संयोग प्रदर्शन के कारण यहाँ सम नामक अलङ्कार है। सम वा अर्थ समान है। जहाँ दो अनुरूप पदार्थों के परस्पर योग्य सम्बन्ध वा वर्णन हो वहाँ सम नामक अलङ्कार होता है। इस श्लोक में सामान्य अर्थ की क्रिया के द्वारा उपमान को उपमेय ने समता दिखलाई गयी है। सिंहासन एवं उसके अनुरूप राजा अर्थात् उपमेय तथा उपमान में सभी प्रकार से समता प्रदर्शित करने के लिए छत्र के उपमेय को उत्कर्षवर्ती विशेषताओं वा उल्लेख किया है। मुख्यतः यहाँ दो पदार्थों के श्लेषणीय ढरहों में औचित्यपूर्ण समता प्रदर्शित की गयी है। अतः यहाँ ‘सम’ नामक अलङ्कार है। इसका लक्षण है —

“समं योग्यतया योगो यदि समावित फलित”। वा० प्र०

इसमें वस्तुस्थिति वा छन्द है जिसका लक्षण है—

(उपसृत्य ।) विजयता वृषलः ।

राजा—(आसनादुत्थाय ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति । (इति पादयोः पतति ।)

चाणक्यः—(पाणौ गृहीत्वा ।) उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वत्स ।

आ शैलेन्द्राच्छिलान्तस्खलितसुरनदीशोऽक्रासारशीतात्
तीरान्तान्नैकरागस्तुरितमणिद्वयो दक्षिणस्यार्णवस्य ।

‘उच्छ वसन्ततिलका तमजा जगौ म.’ ।

रत्नेन वैदनीं राति एव प्रसाद उा है ।

विमला

[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching), विजयताम् = विजय लभस्व (Let prosper), वृषलः = मौर्यः (Vrishala)

व्याख्या—राजा—[आसनात् = सिंहासनात् (from his seat), उत्थाय (rising)], आर्यः = श्रीमान् (Noble sir), चन्द्रगुप्तः = मौर्यः (Chandragupta), प्रणमति = प्रणमनम् करोति (bows to you), [इति पादयोः = चरणयोः (at his feet), पतति (falls)]

चाणक्य—[पाणौ = करे (by the hand), गृहीत्वा = ग्रहणम् कृत्वा (taking up), उत्तिष्ठ-उत्तिष्ठ (arise, arise), वत्स = पुत्र (my child).

हिन्दी—(समीप जाते हुए) विजयी बनो वृषल ।

राजा—(सिंहासन से उठकर) आर्य, चन्द्रगुप्त प्रणमन कर रहा है (पैसा कहकर पैरों पर गिरता है)

चाणक्य—(हाथों में लेकर) उठो, उठो बेटा ।

English—(Advancing) Prosperity to you, Vrishala !

King—(Rising from the throne) Venerable sir, Chandragupta bows unto you, (falls at his feet)

Chanakya—(Taking up by the hand) Arise, arise my son—

टिप्पणी—(१) विजयताम्—‘विपराम्या जै’ से आत्मनेपद हुआ ।

(२) वत्सस्य—अप + स + क्त्वा, ल्यप् तु प्राग्व ।

विमला

अन्वयः—शिलान्तः, स्थलितसुरनदीश्रीकरासारशीतात्, आशैलेन्द्रात्, नैकरागस्तुरितमणिद्वय, दक्षिणस्य, अर्णवस्य, तीरान्तात्, आगत्य, आगत्य, मीतिप्रगत-नृपशते, तव, चरणयुगस्य, अगुलीरन्ध्रभागा, दक्षत्, एव, चूडारत्नाशुभर्मा, क्रियन्ताम् ॥ १९ ॥

व्याख्या—शिलान्तः स्थलितेति—शिलानाम्-प्रस्तरखण्डानाम् (rocks), अन्तः = मध्ये (among), स्थलिता=विशीर्ण (dropped down), या सुरनदी=गगा (celestial river), तस्याः शीकरः=जलकणः (spray), तेषाम् आसारः=

आगत्यागत्य भीतिप्रणतनृपशतैः शम्भुदेव क्रियन्तां

चूडारत्नाशुगर्भास्त्व चरणयुगस्याङ्गुलीरन्ध्रभागाः ॥ १९ ॥

निरन्तरवर्षणम् (the showers) तेन शीतात् = शीतलात् (cooled) आ शैलेन्द्रात् =
अहिमालयात् (from the lord of mountains), नैकरागेति—न एका नैका =
बहुविधाः (diverse), रागाः=वर्णा (colours), यासां ता स्फुरितानाम्=प्रकाश-
मानानाम् (flashing), मणीनाम्=रत्नानाम् (with gems), रुच = कान्त्य
(having lustres), यस्मिन् तादसस्य, दक्षिणस्य दक्षिणदिग्बन्धिन (the southern),
अर्णवस्य=समुद्रस्य (ocean), तीरान्तात्=तटसमीपात् (of the shores),
आगत्य आगत्य=पौन पुन्येन समेत्य (coming again and again), भीत्या=
भयेन, (in awe), प्रणतानि=प्रणामार्थं नम्रीभूतानि (bow), नृपशतैः = राजसमूहैः
(by hundreds of kings) तव=चन्द्रगुप्तस्य (Your Honour), चरणयुगस्य=
पादयुगलस्य (feet), अङ्गुलीनाम्=चरणशास्त्रानाम् (toes), रन्ध्रभागा = छिद्र-
प्रवेशा (between the hole) सशदेव=सर्वदैव (always), चूडारत्नानाम्=मुकुट-
स्थितमणीनाम् (gems on crest), अश्व=किरणा (the luster), गर्भे =
अन्तराले (an inner apartment), येषाम् तादशा, क्रियन्ताम्-विधीयन्ताम्
(may perform)

हिन्दी—शिलाखण्डों के बीच में गिरी हुई गङ्गा के जलशीकरों की निरन्तर वर्षा से
शीतल बने हिमालय से लेकर—विभिन्न वर्णों से रञ्जित रत्नादि की किरणों से दीक्ष्यमान
दक्षिण समुद्रतटों से—आ आ कर, भय से अतमस्तक राजाओं के मुकुटमणियों की शान्ति से
सबदा गुम्हारे दोनों चरणों की अङ्गुलियों के छिद्राश भरते रहें ॥ १९ ॥

English—May hundred of kings coming again and again from
the lord of hills cooled by the showers of spray of the celestial river
Ganga playing about among its rocks, as well as from the shores of
the southern ocean having lustres of gems shining in diverse colours,
bow to your feet in awe and ever make the interstices of the toes
of your feet filled with the lustre of the gems on their crest. 19

टिप्पणी—(१) अनुप्राहयितुम्—अनु + प्रह् + णिच् + तुमुन् ।

(२) उपात्तुम्—उप् + आच् + लभ् + तुमुन् ।

(३) नियुक्ता—नि + युज् + क्त + विभक्तिकायन् ।

(४) शैलेन्द्रात्—शैलानाम् इदं लक्षणया राजा शैलेन्द्र हिमालय' तस्मात् शैलेन्द्रात्
'पञ्चमपाङ्क्तिभि' इति सूत्र से आच् के योग में पञ्चमी विभक्ति हुई है ।

(५) नैकराग—न एक नैक नृपर्थेन नञ्शब्देन 'सुप्पुषा' से यहाँ समास हुआ है ।
नैकश्च नैकान् नैकान् में श्वशेष समास है ।

(६) क्रियन्ताम्—यहाँ आशीर्वाद के अर्थ में 'आशिषि लिङ्लोटौ' से श्रोत डकार है ।

(७) चूडारत्नाशुगर्भा—मङ्गादिका आशुतिष्ठण में रहने के कारण सप्तम्यत्वगर्भ शब्द
का पर निपात हुआ है ।

राजा—आर्यप्रसादादनुभूत एव सर्वम् । तदुपविशत्वार्यः ।

(उर्मा यथोचितमुपविष्टो ।)

चाणक्य — वृषल, किमर्थं ययमाहूताः ।

राजा—आर्यस्य दर्शनेनात्मानमनुप्राप्तुमित्युम् ।

चाणक्यः—(सस्मितम् ॥) अलमनेन प्रश्रयेण । न निष्प्रयोजनमधिकारयन्तः प्रभुभिराहूयन्ते ।

राजा—आर्य, कौमुदीनगोत्तरप्रतिषेधस्य किं फलमायं पश्यति ।

चाणक्यः—(स्मितं कृत्वा ।) उपालब्धुं तर्हि ययमाहूताः ।

इतः श्लोक ने कुछ टिप्पणियों की कल्पित से चरित्रचित्रण के छिद्रों का भरना—एक के गुण से दूसरे के गुणों का प्रति के करार 'उद्गार' मानक बलकार है । उद्गार दश—'एकस्य गुणोपायाम्नाम् उद्गारोऽप्यस्य तौ यदि ।' कुचलानन्द—१३३, छन्द सगरा ई—उद्गार लिखा जा चुका है ।

विमला

व्याख्या—राजा—आर्यप्रसादात्=भवतोऽनुग्रहात् (through the favour of your sir), सर्वम्=सकलम् (all), अनुभूत एव=प्राप्यत एव (is being already enjoyed), तत्=इति के (so), आर्यः=धीमान् (Your Honour), उपविशतु=आस्ताम् (may sit down), [उर्मा=द्वौ (both), यथोचितम् (according to rank), उपविष्टौ (sit down)]

चाणक्य — वृषल=मौर्य (Vrishala), किमर्थम्=किंविचित्तुहितम् (why did), वयम् (we), आहूताः (have been summoned)

राजा—आर्यस्य=आर्यस्य (your Honour's), दर्शनेन=निरीक्षणेन (with sight), अनुप्राप्तुमित्युम्=प्रसन्नतास्पदम् कर्तुम् (to bless), आत्मानम्=जीवम् (myself)

चाणक्य —[सस्मितम्=हास्ययुतम् (with a smile)], अनेन=एतेन (with this), प्रश्रयेण=विनयेन (humility), अलम्=अपर्यम् (away), प्रभुभिः=राजभिः (by the kings), अधिकारयन्तः=कार्यकारिणः (officers), निष्प्रयोजनम्=निर्हेतुकम् (without purpose), आहूयन्ते=आहूयन्ते (are not summoned).

राजा—आर्य (noble sir), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य (in forbidding the Kaumudi festival), किम् फलम्=किं परिणामम् (what benefit), आर्यः=भवान् (Your honour), पश्यति (see) ?

चाणक्य—[स्मितं कृत्वा=with smile], तर्हि=तदा (then), वयम् (we), उपालब्धुम्=तिरस्कृतुम् (for censure), आहूताः=आहूयिता (has been summoned).

हिन्दी—राजा—आर्य का हृदय से सब कुछ अनुभव किया जा रहा है । वो आर्य बैठें । (दोनों प्रधानों बैठ गये) ।

राजा—शान्त पापं शान्तं पापम् । नहि नहि । विज्ञापयितुम् ।

चाणक्यः—यद्येव तर्हि विज्ञापनीयानामवश्यं शिष्येण स्वैरुचयो न निरोद्धव्याः ।

राजा—एवमेतत् । कः सदेहः किन्तु न कदाचिदार्यस्य निष्प्रयोजना प्रवृत्तिरित्यस्ति नः प्रभावकाशः ।

चाणक्यः—वृषल, सम्यग्गृहीतवानसि न प्रयोजनमन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टत इति ।

चाणक्य—वृषल, हमें बुलाया किस लिये था ?

राजा—आर्य के दर्शन से अपने को अनुगृहीत करने के लिए ।

चाणक्य—(मुस्कराहट के साथ) रहने दो इस विनय प्रदर्शन को । राजे अपने अधिकारियों को बेमतलब नहीं बुलाया करते ।

राजा—आर्य, कौमुदी महोत्सव पर रोक लगाने में आपका क्या अभिप्राय था ?

चाणक्य—(मुस्कराकर) तो उलाहना देने के लिए हम बुलाये गये हैं ?

English—King—Through Your Honour's favour all this is being already enjoyed please let sir sit down. (Both are accordingly seated).

Chanakya—Vrishala, why did you summon me ?

King—To bless myself with Your Honour's sight.

Chanakya—(With a smile) Away with this humility. Officers are not summoned by the kings without any purpose.

King—Your honour, what benefit does noble sir see in forbidding [the Kaumudi festival] ?

Chanakya—(With smile) You have then summoned me for censure ?

बिमला

व्याख्या—राजा—शान्तम् पापम् (begone sin), शान्तम् पापम् (begone sin), नहि, नहि (no, not at all), विज्ञापयितुम् (only for representation),

चाणक्य—यदि = यदा (if), एवम् (so), तर्हि=तदा (then), विज्ञापनीयानाम्=गुरुणाम् (to whom those representation is to be made), अवश्यम्=निश्चयम् (indeed), शिष्येण=अन्तेवासिना (by a pupil), स्वैरुचयः=स्वतन्त्रेच्छा (uncontrolled tastes), न=नहि (not), निरोद्धव्याः=प्राहन्तव्याः (to be checked).

राजा—एवमेतत् (it is so), कः सन्देह (no doubt), किन्तु (but), न कदाचित् (never), आर्यस्य (preceptor's), निष्प्रयोजना=निर्हतुका (aimless), प्रवृत्तिः (tendency), इति=एवं, न =अस्माकम् (our), प्रभावकाशः भस्ति=पृथक्पृथक् भस्ति (is scope for question).

राजा—आर्य, अत एव शुश्रूषा मां सुखरयति ।

चाणक्यः—वृषल, श्रूयताम् । इह सत्त्वर्थशास्त्रकारलिखितां सिद्धिनुपवर्णयन्ति—राजायत्तां सचिवायत्तामुभयायत्तां चेति । ततः सचिवायत्तनिद्वेस्तत्र किं प्रयोजनान्वेषणेन । यतो वयमेवात्र नियुक्ता वेत्स्यामः ।

(राजा सकोपं मुखं परावर्तयति ।)

(नेपथ्ये वैतालिकी पठनः ।)

चानक्यः—वृषल (Vrishala), सम्यक्=साधु (rightly), गृहीतवानसि=अबनतवानसि (have understood), प्रयोजनम्=कार्यम् (aim), अन्तरा=अनवेष्टमागः (without), चाणक्यः=बिष्णुगुप्तः (Chanakya), स्वप्नेऽपि=निद्राया-मपि (even in a dream), न चेष्टते=नोछुट्टे (dose not stir).

हिन्दी—राजा—आन जान्त हो, आन जान्त हो । नहीं नहीं, नात्र निवेदन करने के लिए ।

चाणक्य—यदि ऐसा है तो शुरुओं को सचन्द प्रवृत्ति से रिपों द्वारा नहीं रोचो जानी चाहिए ।

राजा—वात पसा हा है । इसने रुदेह क्या ? किन्तु, कार्य क्या करेंगी कार्य निःप्रयोजन नहीं हो सकता है । अतः प्रल का अवकाश था ।

चाणक्य—वृषल, तुमने ठीक ही समझा है । प्रयोजन के बिना तो चानक्य स्वप्न में भी रुई चेष्टा नहीं करता है ।

English—King—Begone sin ! Begone sin ! No not at all, only for representation.

Chanakya—If so, then uncontrolled tastes of those to whom the representation is to be made, by no means to be checked by a pupil.

King—It is so, no doubt. But your honour never does a thing aimlessly. So there is scope for my question.

Chanakya—Vrishala, you have understood it rightly, without an aim, Chanakya does not stir even in a dream.

विमला

व्याख्या—राजा—आर्य=मान्यो भवान् (Noble sir), अतएव (for this), माम् (makes me), शुश्रूषा=श्रवणच्छा (desire to hear), सुखरयति=बहुं प्रवर्तयति (speak).

चानक्य—वृषल=मौर्य (Vrishala), श्रूयताम्=आकर्ष्यताम् (listen), इह=अस्मिन् लोके (in the world), सत्त्वर्थनिश्चयन (indeed), अपेक्षाकारा=नीति-शास्त्रप्रेतारः (writers on politics), त्रिविधान्=त्रिरूपकारम् (three forms), सिद्धिम् (administration), उपवर्णयन्ति=बुधन्ति (mention), राजायत्ताम्=नृपाधीनाम् (resting with the king), सचिवायत्ताम्=अमात्याधीनाम् (resting

with the ministers), उभयायत्ताम्=राज्ञ मन्त्रिणश्चाधीनाम् (that dependent upon both), ततः=तत्पश्चात् (then), तव=भवत (your), सविवायत्तसिद्धे=अमास्याधीनोपपत्ते (who depend upon your minister), अन्वेपणेन=जिज्ञासया (inquiring), किम् प्रयोजनम् (what are the reasons), यत (for), वयमेव (alone I), अत्र=अस्मिन् विषये (In this matter), नियुक्ता वरस्यामि=कार्यानुगुणेन वसिष्ठ्यामहे (employed will act)

राजा—[सकोप इव=सक्रोध इव (as if in anger), मुखम्=भाननम् (face) परावर्तयति=अन्वसो नयति (turns away)]

[नेपथ्ये=(in the dressing room), वैतालिकौ (two bards), पठत (sing)]

हिन्दी—राजा—आय इसीलिये सुनने की इच्छा मुखको बाचाल बना रही है।

छाणक्य—वृषल सुनो। हम ससार में अर्थदायककार तीन प्रकार की सिद्धि का वर्णन करते हैं। (१) राजा के अधीन, (२) मन्त्री के अधीन और (३) दोनों के अधीन। मन्त्री के अधीन सिद्धि के विषय में तुम्हारा प्रयोजन को खोजने से क्या लाभ? क्योंकि हम ही इस विषय में निरुक्त हुए जानेंगे।

राजा—(राजा क्रोध के साथ मुँह को घुमा देता है)

(नेपथ्य में वैतालिक पढ़ते हैं)

English—King—Venerable sir, for this very reason, a desire to hear makes me garrulous

Chanakya—Vrishala, listen, in this matter Writers on politics speak of three kinds of administration in this world—(1) resting with king, (2) resting with the ministers, (3) resting with both. What have you, then who depend upon your minister, to do with inquiring into reasons of a thing? For we ourselves, Officer in the matter shall know

King—(Turns away his face in anger)

(Two bards sing in dressing room)

टिप्पणी—(१) अनुमाहयितुम्—अनु + प्रह् + णिच् + तुमुन् ।

(२) उपालभ्युम्—उप् + आल् + लभ् + तुमुन् ।

(३) विशापयितुम्—वि + शप् + णिच् + तुमुन् ।

(४) अत्रा—अन्वय है—इसका दो अर्थ है—बीच में और बिना ।

(५) नियुक्ता—नि + युज् + क्त + विभक्ति कार्य ।

(६) प्रश्रयेण—प्र + श्रि + अच् भावे—प्रश्रयेण ।

(७) तुम्हा—प्रोत्तुमिच्छा इति लु + त् + सन् + अ, भावे कियान् ।

(८) मुखरयति—मुखमस्ति अस्य महत् इति मुख + र मत्वर्थे नावाळ । मुखर करोतीति मुखर + णिच् (नामधातु) + ळ् + तिप् ।

(९)—राजायत्ताम्—आ + यत् + क्त = आयत्ता राज्ञ आयत्ता राजायत्ता ।

garland of white skulls like moon beam, laughs of which the lustre of is like that of series of swans, and which is thus like the unusual autumnal season 20

शरस्पचे —

अन्यथा—भस्म, अभिभवन्त्या, काशपुष्पक्षुब्धा, आकाशम्, शुक्लयन्ती, शीताशो अशुजालैः, ऐभीम्, कृत्तिम्, जलधरमलिनाम्, क्लिरनती, कापालीम्, स्रजम्, ह्रव, धवलाम्, कौमुदीम्, उद्बहन्तीम्, हास्यधीराजहंसा, अपूर्वा, ऐशी, तनु, हव, शरद् व, वलेशम्, हरतु ॥ २१ ॥

व्याख्या—भस्म=भूतिम् (ashes), अभिभवन्त्या=तिरस्कुर्वन्त्या (having defeated), काशपुष्पक्षुब्धा=काशकुसुमका-त्या (with the lustre of Kasa flowers), आकाशम्=गगनम् (the sky), शुक्लयन्ती=भासयन्ती (whitening), शीताशो=चन्द्रस्य (the moon's), अशुजालैः=किरणसमूहैः (with the mass of rays), ऐभीम्=गजसम्बन्धिनीम् (the elephant's), कृत्तिम्=चर्म (hide), ह्रव=वया (like) जलधरमलिनाम्=पयोदमलिनताम् (dark like cloud), क्लिरनती=विनाशयन्ती (injuring), कापालीम्=कपालनिमिताम् (of skulls), स्रजमिव=मालामिव (like garland), धवलाम्=शुभ्राम् (white), कौमुदीम्=चन्द्रिकाम् (moon light), उद्बहन्तीम्=धारयन्तीम् (bearing), हास्यधीरिव राजहंसा यस्यां तादृशी=(displaying its swans like beauteous smiles), अपूर्वा=लोकोत्तरा (unusually), ऐशी=ईश-सम्बन्धिनी (lord Shiva's), तनुरिव=मूर्तिरिव (like the body), शरद् (the Autumnal season), व=युष्माकम् (your), वलेशम्=कष्टम् (trouble), हरतु=दूरीकरोतु (remove), ॥ २० ॥

प्रथम वैतालिक—

हिन्दी—भस्म को तिरस्कृत करने वाली वायु के फूलों की छवि से आकाश को धवल बनाने की, चन्द्रमा की किरणों के समूह से गजचर्म के समान मेवों की मलिनता को नष्ट करती हुई, नरनुण्डों की माला के शुभ्र चाँदनी को धारण करती हुई, हास्य की शोभा के समान राजहंसों की पक्षिवाली, शिव की मूर्ति की तरह यह अद्भुत शरद् ऋतु आपके पक्ष को दूर करे । २० ॥

English—First Bard —

Whitening the sky with its ashen hue that surpasses the brightness of Kasa flowers, counteracting the impression of the elephant hide like space dark with clouds by means of the streaming rays of the moon, bearing the bright moon light like a white garland of skulls and displaying its swans like beauteous smiles may the Autumnal season, thus unusually accounted, like the body of lord Shiva, remove your trouble 20

अपि च ।

प्रत्यग्रोन्मेपजिह्वा क्षणमनभिमुखी रत्नदीपप्रभाणा-

मात्मन्यापारगुर्वी जनितजललला जृम्भितेः साङ्गभङ्गे ।

नागाङ्गं मोक्षमिच्छोः शयनमुरु फणाचक्रवालोलोपधानं

निद्राच्छेदामिताभ्रा चिरमवतु हरेर्दृष्टिराकेकरा वः ॥ २१ ॥

टिप्पणी—(१) वैतालिकै—विविध कनेक शब्द विज्ञात न चरति एते—इन विन्दु में एक प्रत्यय 'ठ' को इच्छादेश विभक्त्यादि कार्य के बाद वेतालिक । इसके द्विवचन में वैतालिकै । इन दोनों में प्रधान चातुर्व्यसनी का प्रतिनिधि है और दूसरा राक्षस द्वारा प्रेषित 'सनकज' है ।

(२) शुक्लदन्ती—शुक्ल करोतीति शुक्ल + णिन् + जन् पुन कौटिल्य ।

(३) इनः गज तस्य इदम् इति विग्रह में अन् प्रत्यय आदि अच् की ध्वनि विभक्त्यादि कार्य से सन्तुष्ट रूप देमीन । यह गजानन का चर्न है जिसे तान्त्रिक मृत्यु के मन्त्र शब्द धारण करते हैं ।

(४) हास्यश्रीराजहसा—हास्यस्य श्री हास्यश्री रावहस इव, वनमिदिकर्तृपारपक्षनास सा अस्ति अस्याम् एति हास्यश्रीराजहस + अच् मत्स्ये । जराद आये ही रावहस गानसरोवर से लौट आया है ।

(५) यह श्लोक दिष्ट है । इनका एक अर्ध शब्द के पक्ष में तथा दूसरा अर्ध शब्द के पक्ष में है ।

इस श्लोक में वचना भलकार एवं सम्परा दृष्ट है ।

विमला

अन्वयः—फणाचक्रवालोलोपधानम्, उरु, नागाङ्गम्, शयनम्, नाक्षुम्, इच्छोः, हरेः, प्रत्यग्रोन्मेपजिह्वा, क्षणम्, रत्नदीपप्रभाणाम्, अनभिमुखी, साङ्गभङ्गे, जृम्भितेः, जनितजललला, आत्मन्यापारगुर्वी, निद्राच्छेदामिताभ्रा, आकेकरा, दृष्टि, वः, चिरम्, अवतु ॥ २१ ॥

व्याख्या—फणाचक्रवालोलोपधानम् = स्त्र्यामण्डलोपवर्धम् (the group of hoods for the pillow), उरुम् = ह्रस्व (the wide), नागाङ्गम् = भुजगशेखररूपम् (of the Serpent's body), शयनम् = शय्याम् (bed), मोक्षमिच्छुम् = of leaving, इच्छोः = अभिलषतः (desirous), हरेः = विष्णोः (of Hari), प्रत्यग्रोन्मेपजिह्वा = नवोन्मीलनलला (dull from recent opening), क्षणम् = कीदृशत्वालम् ('an 'ha. moment'), रत्नदीपप्रभाणाम् = भुजगीशरस्थमीशप्रदीप-कान्तीनाम् (from the beaming luster of the jewel lamps), अनभिमुखी = असंमुखी (averse to face), साङ्गभङ्गे = अङ्गभङ्गसहितैः (with stretchings of limbs), जृम्भितैः = निद्राक्षेपापहारकमुत्सृज्यादानात्मक्यापारैः (by yawning), जनितजललला = संजाताश्रुक्षणा (produced drops of tears), आत्मन्यापारगुर्वी = दशाना नकरवक्रियासमया (tardy in performing their function), निद्राच्छेदा-मिताभ्रा = निद्रामक्षितिरक्ष (reddish at the corners from break of sleep), आकेकरा = अर्धनिमीलिता दृष्टि. (half closed), दृष्टि = चक्षुः (eyes),

द्वेतीय—

सत्त्वोत्कर्षस्य धात्रा निधय इव कृताः केऽपि कस्यापि हेतो-

जैतारः स्वेन धात्रा मदसलिलमुचां नागयूथेश्वराणाम् ।

व = युष्मान् (you), चिरम् = बहुकालम् (for ever), अवतु = रक्षतु (may guard) ॥ २१ ॥

हिन्दी—और भी—

तत्काल नींद खुलने के कारण सन्मुख देखने में अममर्ष, क्षणभर भी जो रत्न दीपों को प्रभा को सहन नहीं कर सपनी, किञ्चित् बक, जागन समय अङ्गुष्ठों और जम्हाइयों के कारण जिसमें कुछ भ्रष्ट बूढ़े भर आई हैं, अपने व्यापार में शिथिल, निद्राभग के कारण कुछ रक्तान्—इस जागरण वेला में दोषनाग के फणों का तक्रिया एव विद्याशन बनाकर सोने वाले भगवान् विष्णु को—अधतुली ओंखें आपको रक्षा करें ॥ २१ ॥

English—Moreover :—

May the halfclosed eyes of Hari when about to leave his wide bed of the Serpent's body having the group of hoods for its pillow guard you for ever 1—The eyes which are dull from recent opening, which are for the moment averse to face the light of gems, which are tardy in performing their function in which drop of tears have been brought up by yawns with stretchings of limbs and which are reddish at the corners from break of sleep. 21.

टिप्पणी—(१) आकेकरा—‘इष्टिराकेकरा किञ्चित् स्फुटापाद्मे प्रसारिता’ के अनुसार ‘अर्द्ध निमोलित’ ओंखों को ‘आकेकरा’ कहते हैं। इस इष्टि के विस्तार के सम्बन्ध में लिखा है—‘आवेकरा दुरालोके विच्छेदप्रेक्षितेषु च’ ।

(२) यह श्लोक कार्तिक पूर्णिमा को पढ़ा गया है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को चार महीने के बाद भगवान् विष्णु निद्रा त्याग कर जगते हैं। इसी स्थिति में उनको अलस ओंखों का वर्णन है। “देते विष्णुः सदाऽप्यडे कार्तिके च वितुष्यते ।”

इस श्लोक में—रत्न में दीपत्व वा, नागाङ्ग में शय्यात्व का, कणाचक्रावाह में उपधानरत्न के समारोपण से रूपक अलङ्कार है, जैसे—‘रूपक रूपितारोपे विषये निरपह्नवे ।’ पुनः भगवान् विष्णु को ओंखों की स्वाभाविक क्रिया के वर्णनों से ‘स्वभावोक्ति’ अलङ्कार है। यथा—‘स्वभावोक्ति दुर्द्वार्यस्वक्रियारूपवर्णनम्’ फिर दोनों के संयोग एक साथ रहने के कारण यहाँ ‘सदृष्टि अलङ्कार’ है। ‘स्रग्भरावृष्ट’ एव प्रसाद गुण तथा छाटी रोति है।

विमला

अन्ययः—नृवर, धात्रा, सत्त्वोत्कर्षस्य, केपि, कस्यापि, हेतोः, निधयः, इव, कृताः, मदसलिलमुचाम्, नागयूथेश्वराणाम्, स्वेन, धात्रा, जैतारः, मृगाणाम्, अधिपतयः, इव, दंष्ट्राभङ्गम्, न सहन्ते, व्यथमानाबलेषां, सार्वभौमाः, स्वादृशाः, नृपतयः, आज्ञाभङ्गम् न, सहन्ते ॥ २२ ॥

दंष्ट्रामङ्गं नृगणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा

नाज्ञानङ्गं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः ॥ २२ ॥

व्याख्या—नृवर=हे नरनाथ (O best of men), घात्र=विधिना (by the Creator), पात्रोत्कर्षस्य=व्यतिराजस्य (exuberance of power), केऽपि=लोक-
विश्वगमहिमानः (supremely eminent), कस्यापि हेतोः=कर्मैः चिदपि प्रयोज-
नाय (with some object), निधय=आकराः (repository), इव=यथा
(like), कृताः=सृष्टाः (made), नदसलिलनुचान्=नदघाविवान् (of rut-
shedding), नागदूधेश्वरान्=इस्तिषूयस्वीनाम् (of the leader of herd
of tuskers), स्वैव=निजैव (by self), धाम्ना=तेजसा (might), जेतारः=
जयिनः (conquerors), नृगणाम् अधिपतय=सिंहाः (the lord of beast),
इव=यथा (like), दंष्ट्रामङ्गम्=दन्तोत्पादनम् (the breaking of their jaws),
न सहन्ते=न मर्षन्ति (do not put up with), तथैव=व्यक्तमानावलेपाः=
प्रसिद्धस्वाभिमानदर्पाः (sense of self steam and pride), सार्वभौमाः=
सार्वभौमीश्वराः (universal sovereigns), त्वादृशाः=त्वाद्दृशाः (like you),
नृपतयः=नरेंद्राः (the king), आज्ञामङ्गम्=आज्ञाप्यावाकम् (supercession
of orders), न सहन्ते=न वनन्ते (do not put up with). ॥ २२ ॥

दूता—

हिन्दी—हे नरेश, विषाज के द्वारा कुछ लोग किसी कारण से तेज की उत्पत्ति के
समय बना दिखे गये हैं, जिस प्रकार नदबल्लासी गज सन्तों के अधिपतियों के विवेक
नृगणिन अपनी शक्ति बचाते जाने को सहन नहीं कर सकते, वही प्रकार तुम्हारे समान सिद्ध
स्वाभिमानों एवं तेजस्वी लोग अपना आज्ञा का नङ्ग नहीं बर्दाश्त कर सकते हैं ॥ २० ॥

English—Second bard :—

O you best of men, universal sovereigns made dy the creator
as the repository of the exuberance of power with pride and self
respect manifest like yourself, whoever they are do not, for any
reasons whatsoever put up with the infringement of their command,
just as the lords of beast who by their own might are conquerors
of the leaders of herd of tuskers emitting the fluid of ichor, do
not brook the breaking of their jaws 22.

टिप्पणी—(१) निधय—निरोधने—स्थापने एव इस विन्द ने नि+धा+कि=
'कर्मनिष्ठ करने व' ।

(२) कर्माणि इती—'कर्मदेवताओं व' से कहा किमिति इति ।

(३) नदसलिलनुचान् तथा नागदूधेश्वरान्—'कर्मदेवताः इति' से कुछ लोग ने परो है ।

(४) व्यक्तमानावलेपाः—व्यक्त—वि+अङ्+त कर्माणि । मन+घन् भावे मानः ।
अवलेप—अव+लि+घन् भावे—मानव्य अवलेप्य व्यक्तों देश से ।

(५) त्वादृशाः—तथैव दृश्यन्ते । इस विन्द ने 'त्वादृशे इतिगोचरे' से कन् ।

अपि च ।

भूषणाद्युपभोगेन प्रभुर्भवति न प्रभुः ।

परैरपरिभूताश्चस्त्वमिव प्रभुरुच्यते ॥ २३ ॥

चाणक्य — (स्वगतम् ।) प्रथमं तानद्विशिष्टदेवतास्तुतिरूपेण प्रवृत्तशरद्गुण-
प्रख्यापनमाशीर्षचनम् । इदमपरं किमिति नावधारयामि । (विचिन्त्य ।)
आ, ज्ञातम् । राक्षसस्याय प्रयोग । दुरात्मन् राक्षस, दृश्यसे भो जागति खलु
कौटिल्य ।

(६) सार्वभौमा — सर्वभूदेरीश्वरा अथवा सर्वभूमौ विदित्वा इति सार्वभौमा । इस विग्रह
में सर्वभूमि से अणु प्रत्यय — 'अनुशक्तिकारीनाम्' से उभयपद की वृद्धि विभक्ति कार्य ।

(७) श्लोक २२ और २३ राक्षस के अणिधि 'स्तनकलश' द्वारा पठित है ।

इस श्लोक में उपमेया तथा उपमा अलंकार एवं सन्ध्या वृत्त है ।

विमला

अन्यथ — भूषणाद्युपभोगेन, प्रभुः प्रभु न भवति, परैः, अपरिभूताश्च, त्वम्, इव,
प्रभु, उच्यते ॥ २३ ॥

व्याख्या — भूषणाद्युपभोगेन = अलङ्काराद्युपभोगेन (by bearing of orna-
ment), प्रभु = राजा (A lord), प्रभु = यथार्थ राजा (the king in real sense),
न भवति (does not become), अपितु अपरिभूताश्च = अस्पर्शितादेव (whose
command is not slighted), परैः = अन्यैः (by others), त्वमिव =
यथा त्वम् तथा (like you), प्रभु = राजा (the king), उच्यते = कथ्यते
(is said) ॥ २३ ॥

हिन्दी — और भी —

भूषणादि का उपभोग करने से ही कोई राजा यथार्थ में राजा नहीं होता है । दूसरों के
द्वारा भीतररुत आका वाटा तुम्हारे जैसा राजा ही राजा कहलाता है ॥ २३ ॥

English — Moreover —

A lord is not the lord by reason of the enjoyment of ornaments
etc. Rightly is he called king who like yourself has his order
not superseded by others 23

टिप्पणी — इस श्लोक में उपमा अलंकार एवं अनुष्टुप छन्द है ।

विमला

व्याख्या — चाणक्य — [स्वगतम् = आत्मगतम् = (To himself)], प्रथमम् = प्राक्
(the first), तावत् = यावत्कालद्वारे विशिष्टदेवतास्तुतिरूपेण = विशिष्टा चासी देवता
विशिष्टदेवता तस्या स्तुति सैव रूपन्तेन (in the form of the praise of
the supreme deities), प्रवृत्तशरद्गुणप्रख्यापनम् = उपस्थितशरद्गुणकीर्तनम्
(describing the autumnal season), आशीर्षचनम् = भाषीर्षादा (blessing),
इदम् = एतत् (this), अपरम् = द्वितीयवैतालिकोक्त (other), किम् (what is),

राजा—आये वैहीनरे, आभ्या वेतालिकाभ्या सुवर्णशतसहस्र दापय ।

कन्बुकी—यदाज्ञापयति देवः (इत्युत्थाय परिक्रामति ।)

चाणक्य—(सक्रोधम् ।) वैहीनरे, तिष्ठ न गन्तव्यम् । वृषल, किमय-
मस्थाने महानर्थोत्पन्नः ।

भावधारयामि=न जानामि (I do not know), [विचिन्त्य=विचार्य=(after reflecting)], आ ज्ञातम्=ईर्ष्या सूचकमभ्ययम् (Ah I see), राक्षसस्य=रक्ष-
सचिवस्य (Rakshasa's), आयम्=एतत् (It is), प्रयोग=चन्द्रशुभमुपेक्षयितु
प्रयोग (the intrigue), आ (Ah), दुरात्मन्=दुर्जित (vile), राक्षस
(Rakshasa), इत्यमे=निरोध्यते (detected), जागर्ति=स्वकार्ये सावधानस्तिष्ठति
(is wide awake), क्षतु=निश्चयेन (to be sure), कौटिल्या (Kautilya)

राजा—आयं वैहीनरे=(Noble vaishinari), आभ्याम्=नेपथ्यस्थिताभ्याम्
(these), वेतालिकाभ्याम्=स्तुतिपाठकाभ्याम् (two bards), सुवर्णशतसहस्रम्
शतसहस्रसंख्यकम् सुवर्णमुद्रामकम् पारितोषिकम् (a hundred thousand
gold coins), दापय=(let be given)

कन्बुकी—यदाज्ञापयति देवः (As sure commands), [इति उरपायम् (He
rises), परिक्रामति=goes round)]

हिन्दी—चाणक्य—(अपने आप) प्रथम वैतालिक द्वारा कहा गया तो विशिष्ट देवता
परक स्तुति से प्रभुत सरद श्रुति के उर्गे को प्रकट करने वाला आश्चर्यजन है । यह दूसरा
क्या है ? नहीं सन्देह पा रहा हूँ । (सोचकर) आ, सन्देह गया है । यह राक्षस का कार्य है ।
अब दुरात्मन् राक्षस, देख लिये गये हो, कौटिल्य जा रहा है ।

राजा—आयं, वैहीनरे, इन दोनों वैतालिकों को सौ हजार सुवर्ण मुद्राएँ दिल्वा दो ।

कन्बुकी—नहारान को पैसी काता । (ऐसा कहकर ठठकर धूमता है)

English—Chamkya—(To himself) The first is a blessing in
the form of the praise of the supreme deities and indeed a
pronouncement of benediction descriptive of the attraction of Autumn.
What this other is I do not understand (after reflecting), Ah I see,
it is intrigue of Rakshasa ! Vile Rakshasa, you are detected, Ah ,
Kautilya to be sure, is wide awake

Cing—Noble Vaishinari, let a hundred thousand gold coins be
given unto these two bards

Chamberlain—As sure commands (He rises and goes round)

निमला

व्याख्या—वाक्त्व—[सक्रोधम्=सक्रोधम् (Angry)], वैहीनरि (Vai-
hinari), तिष्ठ=स्थायताम् (stop), न गन्तव्यम् (do not go), वृषल=वृष-
(Vrishala), किम्=किमर्थम् (why), अस्थाने=असत्तात्रे (on an unworthy
object), अयम्=एत (this), महान्=व्यवहारः (large), व्ययः=व्ययः
(expenditure of money) .

राजा—(सकोपम् ।) आर्येणैव सर्वत्र निरुद्धचेष्टाप्रसरस्य मे बन्धनमिव राज्यं न राज्यमिव ।

चाणक्य.—वृषल, स्वयमभियुक्तानां राज्ञामेते दोषाः सम्भवन्ति । तद्यदि न सहसे ततः स्वयमभियुज्यस्व ।

राजा—एते स्वकर्मण्यभियुज्यामहे ।

चाणक्य—प्रियं न । वयमपि स्वकर्मण्यभियुज्यामहे ।

राजा—[सकोपम्=सक्रोधम् (with heat)], आर्येण=पूज्येनभवता (by Your Honour), एवम्=वैतलिकोदेश्यकार्यत्यागवत् (like), सर्वत्र=सर्वतः (all round), निरुद्धचेष्टा प्रसरस्य=प्रतिहतोद्योगावसरस्य (course of action is checked), मे=मम (my), राज्यम्=प्रजाधिपत्य (kingship), बन्धनमिव=कारागृहं सदृशमिव (like prison), न राज्यमिव=न कारागृहादतिरिक्तमिव (not like a kingdom).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), स्वयमभियुक्तानाम्=राजकार्येष्वस्वतन्त्राणाम् (do not attend personally to their duties), राज्ञाम्=नृपाणाम् (of those kings), एते=इमे (these), दोषा (evils), सम्भवन्ति=जायन्ते (attend), तद्=तस्मात् कारणात् (so), यदि (if), न सहसे=न चमसे (can not bear), ततः=तदा (then), स्वयम्=साध्यात् (yourself), अभियुज्यस्व=राजकार्यसम्पादने-त्तरपरोभव (attend personally to work)

राजा—एते=वयमितिषेधः (Here we), स्वकर्मणि=राजकार्ये (in our work), अभियुज्यामहे=स्वतन्त्राभवाम (attend).

चाणक्य—प्रियम्=अस्माकमिष्टम् (This please me), वयमपि (we too), स्वकर्मणि (to our duty), अभियुज्यमहे (attend to work)

हिन्दी—चाणक्य—(क्रोध के साथ) बेहीनरे, स्को, नहीं जाना है । वृषल, अनुचित स्थान में इतनी बड़ी राशि का व्यय क्यों ?

राजा—(क्रुपित होकर) इस प्रकार हर स्थान में मेरी हर गतिविधि पर आर्य के प्रति बन्धों से यह राज्य मेरे लिये अब राज्य नहीं, एक बंधन ही अधिक बन गया है ।

चाणक्य—हाँ वृषल, स्वयं राजतन्त्र का संचालन न करने वाले राजाओं में ये दोष उत्पन्न हो जाते हैं । तो यदि सहन न कर सकते तो स्वयं अपना काम सम्हालो ।

राजा—ये हम अपने कर्तव्य में सलग्न होते हैं ।

चाणक्य—बड़ी अच्छी बात है । हम भी अपने कर्तव्य में सलग्न होते हैं ।

English—Chanakya—(Angrily) Stop Vashinari, don't go Vrishala why this large expenditure of money on an unworthy object.

King—(With heat) Kingdom is like bondage to me when my actions thus checked in every case by Noble preceptor, it is not like kingship at all.

राजा—यद्येव तर्हि कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य तावत्प्रयोजनश्रोतुमिच्छामि ।
चाणक्य—वृषल, कौमुदीमहोत्सवानुष्ठानस्य किं प्रयोजनमित्यहमपि
श्रोतुमिच्छामि ।

राजा—प्रथमं तावन्ममाज्ञाव्याघातः ।

चाणक्य—वृषल, ममापि तयाज्ञा व्याघात एव कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य
प्रथमं प्रयोजनम् । कुत —

Chanakya—Yes Vrishala, such evils are but the lot of those kings who are personally inattentive to their work. So if you cannot bear them, attend yourself to your duties.

King—Here we attend to our work.

Chanakya—This please me, we too attend to our work.

विमला

व्याख्या—राजा—यद्येवम् (if so), तर्हि (then), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य
(prohibition of the Kaumudi festival), तावत्प्रयोजनम् (the utility),
श्रोतुमिच्छामि (want to hear)

चाणक्य—वृषल=मौर्य (Vrishala), कौमुदीमहोत्सवानुष्ठानस्य (of observ-
ing the Kaumudi festival), किम्प्रयोजनम् (what reasons), इत्यहमपि
(this I too), श्रोतुमिच्छामि (wish to hear)

राजा—प्रथमम्=प्राक् (First), तावत् (indeed), मम आश्रयः (my),
आज्ञा=आदेशः (command), व्याघातः=भङ्गः (the violation)

चाणक्य—वृषल=मौर्य (Vrishala), ममापि=आश्रयनोऽपि (mine too),
तवाज्ञाभ्याघातः=तवादेशाप्रतिपालनम् (the interruption of your order),
एव=निश्चयः (indeed), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधस्य (the prohibition of
the Kaumudi festival), प्रथमम्=प्राथम्यम् (first), प्रयोजनम्=फलम् (utility),
कुत (For)

हिन्दी—राजा—यदि ऐसा है तो कौमुदी महोत्सव के रोकने जाने का प्रयोजन इनका
चाहता है ।

चाणक्य—वृषल, मैं भी कौमुदीमहोत्सव मनाने का प्रयोजन क्या है ? जानना चाहता हूँ ।

राजा—सर्वप्रथम तो मेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं होना चाहिए ।

चाणक्य—वृषल, मेरा भी प्रयोजन कौमुदीमहोत्सव रोकने का यही था कि तुम्हारी आज्ञा
का उल्लंघन हो । क्योंकि—

English—*King*—If so then I want to hear the Utility of the prohibition of the Kaumudi festival.

Chanakya—Vrishala, I too wish to hear your reason for observing the Kaumudi festival.

अम्भोधीनां तमालप्रभवकिसलयश्यामवेलावनानाम्, चटुलतिमिकुलक्षोभितान्तर्जलानाम् ।
 मापारेभ्यश्चतुर्णां चटुलतिमिकुलक्षोभितान्तर्जलानाम् ।
 मालेवाम्लानपुष्पा तव नृपतिशतैरुद्यते या शिरोभिः
 सा मय्येव स्खलन्ती कथयति विनयालंकृतं ते प्रभुत्वम् ॥ २४ ॥

King—First indeed is the uninterrupted of my order.

Chanakya—Vrishala, disobedience of your order is my first purpose too, in forbidding the Kaumudi festival. For—

टिप्पणी—(१) अर्थोत्सर्गः—उद् + सुज् + घञ् भावे उत्सर्गः । अर्थस्य उत्सर्गः ।

(२) अमियुज्यस्व—अमि उपसर्गाक दिवादिगणीय युञ्धातु से प्रेरणा के अर्थ में लोट् लकार का रूप है ।

(३) आशाम्याधातः—वि + आ + हन् + घञ्, भावे व्याधात, न व्याधानः अव्याधातः, आशाम्याः अव्याधातः ।

(४) प्रवृत्त—प्रख्याप्यते अनेन इति प्र + क्त्वा or चक्ष् + णिन् + ल्युट् करने प्रख्यापनम्, प्रवृत्ताः शरदः, तस्याः गुणाः, तेषां प्रख्यापनम् ।

(५) वयमपि स्वकर्मण्यमियुज्यामहे—इस कथन का यहाँ तात्पर्य यह है कि इस निध्या कलह के माध्यम से ही अब मैं राज्यस को बड़ा करने लिए प्रवृत्त होता हूँ शब्दार्थ है—अब तक मैंने तुम्हारा काम किया है, अब मैं अपना पार्य अर्थात् अग्निहोत्रादि में प्रवृत्त होता हूँ ।

विमला

अन्वयः—तमालप्रभवकिसलयश्यामवेलावनानाम्, चटुलतिमिकुलक्षोभितान्तर्जलानाम्, चतुर्णाम्, अम्भोधीनाम्, आपारेभ्यः, नृपतिशतैः, या, तव, अम्लानपुष्पा, माला, इव, शिरोभिः उद्यते, सा, मयि, स्खलन्ती, ते, विनयालंकृतम्, प्रभुत्वम्, एव, कथयति ॥ २४ ॥

व्याख्या—तमालप्रभवानि = तमालजातानि (growing on Tamal trees), यामि किसलयानि = नवपल्लवाः (fresh leaves), तैः श्यामानि = हृत्पङ्क्त्यानि (are darkened), वेलावनानि = तटकाननानि (the forests on the coasts), येषाम् तादृशानाम् अपि च चटुलम् = चपलम् (agitated), यद् तिमिकुलम् = मत्स्यविदोषाणाम् समूहम् (by whales), तेन क्षोभितम् = आशोक्षितम् (rushing about), अन्तर्जलम् = जलमन्वयम् (inward water), येषाम् तादृशानाम् चतुर्णाम् = चतुर्विधस्थितानाम् (of the four), अम्भोधीनाम् = सागराणाम् (oceans), आपारेभ्यः = परतीरेभ्यः आगत्येत्यर्थः (up to the shores), नृपतीनाम् = राज्ञाम् (of kings), शतैः = समूहैः (by hundreds), या तव = ममता (your), अम्लानानि = अमलिनानि (unfaded), पुष्पाणि (flowers), यस्याः तादृशी माला = माला (a garland), इव = यथा (like), शिरोभिः = उत्तमाङ्गैः (on heads), उद्यते = धार्यते (is carried), सा = सैवाज्ञा (command), मयि = तव गुरौ चाणव्ये (me), स्खलन्ती = व्याहता (failing in), ते = तव (your), विनयेन = नम्रतया (by humility), अलंकृतम् = सुशोभितम् (as graced), प्रभुत्वम् = आधिपत्यम् (sovereignty), एव = निश्चये (only), कथयति = आख्यापयति (declares)

अयं त्वमपरमपि प्रयोजनं श्रोतुमिच्छसि तदपि कथयामि ।

राजा—कथ्यताम् ।

चाणक्यः—शोणोत्तरे, मद्रचनात् कायस्थमचलं ब्रूहि—‘यत्तद्भद्रमदप्रभृती-
नामितोऽपराणादपक्रम्य मलयकेतुमाश्रितानां लेख्यपत्रं श्रीयताम्’ इति ।

प्रतीहारी—अं अजो आपवेदिति । (निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य ।) अज,
इमं पक्षम् । (यदर्थं आप्रापयतीति । आर्य, इदं पत्रम् ।)

हिन्दो—ननाल वृष्टि से उत्पन्न होनेवाले नवीन पत्रों से त्वानर्वा तट के दोनों बाड़े, चक्रल
‘मिनि’ मत्स्य मन्त्र ने विपुल्य अन्नजलवाले, चारों मानवों के पार से आने हुए सैकड़ों
राजाओं के द्वारा जो तुम्हारी आज्ञा न कुन्दलाप इन दूतों की माला के समान नस्तकों से
भारण की जाती है उसी भाषा की अवहेलना जब मुंह से होती है, उसका तात्पर्य मेरे लिए तुम्हें
मात्र यही बताना होता है कि प्रभुता का आभूषण नष्ट है ॥ २४ ॥

English—Stumbling against me alone, your command declares
your sovereignty as graced by humility—The order which up
to the shores of the four oceans the forests on the coast of which
are darkened by the leaves of Tamala trees and the waters of which
are inwardly agitated by whales rushing about, is carried on their
head by hundred of kings like a garland of flowers unfaded. 28.

टिप्पणी—आज्ञा व्यावातः—वि + का + हन् + क्त्वा भावे व्यावातः, न व्यावातः अन्यावातः
आज्ञायाः अन्यावातः ।

आरातेभ्यः—परतीरेभ्यः जा, यहाँ अभिविधि के अर्थ में आहू है । ‘आहू न्यादानिवचने’
तथा कर्मप्रवचनीय होने से ‘पञ्चम्याहूपरिनिः’ से आहू के योग में पञ्चमी विभक्ति है । तिनिकुल—
यह एक महाविशाल नल्लठी है । इसके सम्बन्ध में कहा गया है—“अस्तिमत्स्यो तिनिर्मान
शतगोजनमायनः ।”

इतु श्लोक में ‘वनना’ मलकार एवं सम्भरा छन्द है ।

बोज गुप्त तथा गौरी रीति है । यहाँ राजकुल की पराजित बुद्धि पर चाणक्य के आक्रोश का
अद्भुत अभिव्यक्ति है । आरम की दो पक्षियों की राजसुति केन्द्रः कुलना गुमा वृष्टाई में
श्रवित व्यक्त बन गया है । सम्पूर्ण राजस्य अर्थ की प्रज्ञा की समोक्षा में कदम विनोद गुप्त
अत्यन्त नातिष्ठ है ।

विमला

व्याख्या—अयं=अनन्तरम् (and), त्वम् (you), अपरमपि=द्वितीयमपि
(second also), प्रयोजनम्=कारणम् (reason), श्रोतुम्=श्रवणकर्तुम् (to
hear), इच्छसि=चाह्छामि (wish), तदपि (that too), कथयामि (I will
tell)

राजा—कथ्यताम्=अनिधीयताम् (Do so)।

चाणक्य—शोणोत्तरे (Sonotara), मद्रचनात्=मद्रुक्त्वा (in my words),
अचलम्=प्रतश्चानकम् (Achala), कायस्थम् (Kayastha), ब्रूहि=कथय (tell),

चाणक्यः—(गृहीत्वा ।) वृषल, दृश्यतामिदम् ।

राजा—(आत्मगत वाचयति ।) स्वस्ति सुगृहीतनामधेयस्य देवस्य चन्द्रगुप्तस्य सहोत्थायिनां प्रधानपुरुषाणामितोऽपक्रम्य बध्यमलयकेतुमाश्रितानां

इतः=कुसुमपुरात् (from Kusumpura), अपक्रम्य=निर्गत्य (having gone), अपरागात्=मौर्ये भनुरागात् (through discontent), मलयकेतुम्=पर्वतकमुतम् (to Malayaketu), आश्रितानाम्=सेवमानानाम् (employing), भद्रभट-
प्रभृतीनाम्=भद्रभटादीनाम् (Bhadrabhatta and his colleagues), यत् लेख-
पत्रम्=लिखितपत्रिका (document), तदीयसाम्=अर्प्यताम् (send me).

प्रतीहारी—यद् आर्यः=मान्यो भवान् (As noble sir), आज्ञायति (com-
mands), [इति निष्क्रम्य=वहिर्गत्य (exit), पुनः (and), प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा
(coming back)], आर्य=श्रीमन् (Your Honour), एतत् (this is), पत्रकम्=
लेखपत्रम् (the writing)

हिन्दी—और भी एक प्रयोजन—अगर यह भी तुम्हें सुनने की इच्छा हो, तो यह भी कह दूँ ।

चन्द्रगुप्त—कहिए ।

चाणक्य—शोणोत्तरे, मेरी ओर से अबल नामक कायस्थ से कहता—'जो यहाँ से विरक्ति के कारण भाग कर मलयकेतु का आश्रय लेने वाले भद्रभटादियों का लिखा हुआ पत्र है, वह दो ।'

प्रतीहारी—जो आर्य आज्ञा देते हैं (निकल कर पुनः प्रवेश कर) आर्य यह पत्र है ।

English—And if you wish to hear the second reason, that too, I will tell you.

King—Let it be told then.

Chanakya—Sonottara, tell Kayastha Achala this in my words:—
Send me the document in connection with Bhadrabhatta and his
colleagues who left us through discontent and went over to
Malayaketu.

Fem Doorkeeper—As noble sir commands (Exit and re enter)
your Honour, here is the writing.

विमला

चाणक्य—[गृहीत्वा (taking it up), वृषल=मौर्ये (Vrishala), दृश्यतामिदम्
(see it)]

राजा—[आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself), वाचयति (reads)], स्वस्ति =
मङ्गलमस्तु ('may good come), सुगृहीतनामधेयस्य=प्रातः स्मरणीयनाम्नः
(of auspicious name), देवस्य=राज्ञः (sire's), चन्द्रगुप्तस्य=मौर्यस्य
(Chandragupt's), सहोत्थायिनाम्=युगपदुत्पत्तिपीडितानाम् (rose along
with), इतः=अस्मात् कुसुमपुरात् (from here), अपक्रम्य=निर्गत्य (having

प्रमाणलेख्यपत्रमिदम् । तत्र प्रथममेव ताम्रपत्राध्यक्षो भद्रभटः अध्याप्यक्षः पुरुषदत्तः महाप्रतोहारस्य चन्द्रभानोर्भागिनेयो दिङ्गराजः देवस्य स्वजनसम्बन्धी महाराजो बलदेवगुप्तः देवस्येव कुमारसेवको राजसेनः सेनापतेः सिंहबलस्य कनीयान्भ्राता भागुरायणो मालवराजपुत्रो लोहिताक्षः क्षत्रगणमुख्यो विजयवर्मति । एते य ए देवस्य कार्ये अरहिताः स्म इति । (प्रत्यक्षम् ।) आर्य, एतावदेतत्पत्रम् । अथैतेषामपरागहेतून् विज्ञातुमिच्छामि ।

fled), वष्य (ill-fated), मलयदेशम् = पर्यन्तकपुत्रम् (to Malayaketu), अधिनानाम् = सेवमानानाम् (have sided), प्रधानपुरुषाणाम् = कार्याधिपतीनाम् (of those principal persons), इदम् (this), प्रमाणलेख्यपत्रम् = संक्षेपपत्रम् (Recordsheet), तत्र = प्रमाणपत्रे (of them), प्रथममेव = आद्यदेव (very first), ताम्र = इदम् चन्द्रोवाचपाट्टादे, भद्रभटः (Bhadrabhatta), गजाध्यक्षः = हस्तिपालकः (the principal officer of elephant-warriors), पुरुषदत्तः = पुनर्दास्यः (Purushdatta), अध्याप्यक्षः = वाज्रपालकः (the commander of cavalry), महाप्रतोहारस्य = प्रधानद्वारपालकस्य (the chief warder), चन्द्रभानो = चन्द्राक्षस्य (Chandrabhanu's), भागिनीपुत्रः (the nephew), दिङ्गराजः (Dingirata) देवस्य = राज्ञः (of sire), स्वजनसम्बन्धी = आभीयजनसम्बन्धी (a distant relation), महाराजो बलदेवगुप्तः (Maharaj Baldeogupta), देवस्यैव = चन्द्रगुप्तस्यैव (of sire himself), कुमारसेवकः = बालभ्राता (from his boyhood attendant), राजसेनः (Rajasena), सेनापतेः = सेनाध्यक्षस्य (the commander-in-chief), सिंहबलस्य (Sinhabala's), कनीयान् = अनुजः (the younger), भ्राता = सहोदरः (brother), भागुरायणः (Bhagurayana), मालवराजपुत्रः = मालवाधीनपुत्रः (the son of the king of Malava), लोहिताक्षः (Lohitaksha), क्षत्रगणमुख्यः = क्षत्रियवर्गप्रधानः (the head of a class of Kshatriya), विजयवर्मा (Vijayavarma), एते वयम् (we are), देवस्य = राज्ञः (sire's), कार्यं (in work), अविहितास्मि = साधनानाः भवन्ति (ready), [प्रकाशम् = (aloud)], आर्य = मान्यः (noble sir), एतावत् (this much), एतत् (this), पत्रम् = दलम् (the sheet), अथैतेषाम् = भद्रभटप्रभृतीनाम् (of their), अपरागहेतून् = विरामकारणानि (causes of disaffection), विज्ञातुम् = ज्ञातुम् (to know), इच्छामि = वान्छामि (I wish).

हिन्दी—चागक्ष—(डेकर) वृत्त, यह देखो ।

राजा—(अपने भाव पड़जा है) कल्याण हो, माधवभट्टाक्ष महाराज चन्द्रगुप्त के साथ ठठेनाठे, यहाँ से भाग कर वध के योग्य मलयदेश के जाकर छेनेराठे, मनुष्य स्थितियों का यह प्रभाव है । उनमें सर्वप्रथम हस्तिसेनाध्यक्ष भद्रभट, अधीनारति पुरुषदत्त, प्रधान दीवारीक चन्द्रभानु का भाजा दिङ्गराज, महाराज का अपना सम्बन्धी महाराज बलदेव, महाराज का ही स्वजन का सेवक राजसेन, सेनापति सिंहबल का छोटा भाई भागुरायण, मालवराजपुत्र लोहिताक्ष, क्षत्रियों के गण का प्रधान विजयवर्मा । वे हम सभी महाराज के कार्य में

सावधान हैं (सुनाकर), आर्य, यही यह पत्र है। अब मैं इनके असन्तोष का कारण जानना चाहता हूँ ?

English—Chanakya—(Taking II) Vrishala, see it.

King—(Reads to himself) May good come ! This is a document containing the list of those high officials, who rose along with Sire Chandragupta of auspicious name, and who having fled from here gone over to the ill-fated Malayaketu. Of them the very first is this—Bhadrabhatta, the chief officer of elephant warriors, Purushdatta, the commander of cavalry; Dingarata, the nephew of Chandrabhanu, the chief warder; Baldeogupta, a distant relation of sire himself, Rajsena the old attendant of sire himself, Bhagurayan the younger brother of Singhbala the commander-in chief, Rohitaksha the prince of Malava, Vijayavarman, the head of a class of Kshatriya (aloud) Noble sir this sheet has this much. Now I wish to know the causes of their disaffection.

टिप्पणी—(१) छेत्तापत्रम्—छिन्नपत्र कर्मणि छेत्तव्यम्, तस्य पत्रम् छेत्तापत्रम् ।

(२) अपरमपि प्रयोजनम्—‘तवाद्याम्याघात’ कहकर चाणक्य ने प्रथम कारण स्पष्ट कर दिया है—अब यदि दूसरा कारण भी चन्द्रगुप्त जानना चाहता है तो उसे भी स्पष्ट कर रहा है ।

(३) इव्यतामिदम्—यह कथन ही इस बात का प्रमाण है कि पत्र गोपनीय है ।

(४) गजाध्यक्ष—अभिगतः अध्वन् अध्यक्षः—गजेषु अध्यक्षः गजाध्यक्षः—‘सुप् सुप्’ से समाप्त हुआ है । इसके भागने से राजसेना की शक्ति की सूचना मिलती है ।

(५) महाप्रतीहारस्व—प्रति दियते अत्र इति प्रति + इ + मन्, अधिकरणे—प्रतीहार, महान् चासौ प्रतीहारः महाप्रतीहारः—इससे दो बातें सूचित होती हैं—नगररक्षक की अविश्वसनीयता और आक्रमण पथ का सुलभ होना ।

(६) स्वजनसम्बन्धी—स्व जनं स्वजनः तस्य सम्बन्धः स्वजनसम्बन्धः—स, अस्ति अस्य स्वजनसम्बन्धी—अपने ही व्यक्ति के विरोध के कारण भानी अनर्थ की सूचना दी है ।

(७) कुमारसेवक—कुमारस्य सेवक अथवा देवम् कुमारमारभ्य सेवने इति कुमार-सेवकः । इसके भाग जाने से गुप्त रहस्यों के प्रकाशित हो जाने की सम्भावना है ।

(८) आक्रम्य—अप + क्रम + स्वप् विभक्त्यादि कार्य ।

(९) मागिनेय—भगिनी + टक् = विभक्तिकार्य ।

(१०)—सेनापते—कनीयान् आता—इससे सेनापति के प्रति स्पष्ट अविश्वास प्रकट होता है ।

(११) कनीयान्—अतिश्रयेण युवा इति युवन् + ईवसुन्—इससे कनीयान् एवं यवोयान् रूप की सिद्धि ‘युवाकलयोः कन्यतरस्याम्’ इस सूत्र से है ।

(१२) छत्रगणमुख्य—छत्राणाम् गणः तस्मिन् मुख्यः छत्रगणमुख्यः—इससे सहायकों की हानि एवं गुप्तों के उत्साह की रुद्धि सूचित होती है ।

चाणक्यः—वृषल, ध्रुवताम् । अत्र यावेतौ गजाव्यक्षावाप्यक्षौ भद्रभटपुरुष-
दत्तनामानौ तौ खलु क्षीमद्यमृगयाशीलौ हस्यस्यावेक्षणेऽनभिमुक्तौ मयाधिका-
राभ्यामवरोप्य स्वजीवनमात्रेणैव स्थापिताविवि परपक्षे स्वेन स्वेनाधिकारण
गत्या मलयकेतुमाश्रितौ । यावेतौ डिङ्गरातवलगुप्तौ तावप्यत्यन्तलोभाभिभूतौ
त्वद्वत् जीवनमवहमन्यमानौ तत्र बहु लभ्यत इत्यपहन्य मलयकेतुमाश्रितौ ।

(१३)—भद्रमदादिको का दळे है । व कहना चाहते हैं कि मानकी भाड़ा से उन उन
कार्यों का भरण करके चन्द्रगुप्त से विरक्त होकर इन मलयकेतु के पास आ गये हैं तथा
मानके कार्य में राक्षस और मलयकेतु ने नेद हावने के कार्य में व्यस्त हैं ।

(१४) देतावदत्तचक्रम्—चन्द्रगुप्त के पन्ने पर 'दत्तावत्' अर्थ है क्योंकि चाणक्य
ने मना हुआ वागता है ।

यह सन्तुष्ट रूप एक नटक है । नाटकाय स्यात्तय का आदर्श हमारे ज्ञानों में 'चैकनिकलिन'
का सम्पत्ति निर्वाह प्रस्तुत करना है और है उच्चकोटि की कलाकृति और इस रूप में
आलोचना के वाक्य अनेक विषय हैं और प्रत्येक विषय के विविध स्तर हैं, क्योंकि चन्द्रगुप्त
और चाणक्य दोनों ही इस बात से पूर्ण परिचित हैं कि यह 'कुवककल' नाम एक नाटक
है—परन्तु विद्वानों के लिए ही यह पत्र पत्र का रस है । सबसे पहले चाणक्य के क्रोध का स्वयं
आश्रितिव प्रसार चन्द्रगुप्त के प्राणों पर रजयात्र सादा झलता है । ऐसे एक मित्रास-वर्षाव
तक का मानस नहीं मिलता जो स्वार्थ के सौरभ से आर्द्र न हो । चाणक्य की दुष्टिना से
राजनयन तक, धृष्टि से स्वर्ग तक कैवल्य नाति का एक समान ताना-बाना बुना है ।
भद्रमट, डिङ्गराट, पुरुषदत्त एवं वलदेवगुप्त एक ही क्षत्रिय के बहुराज पुत्रन हैं, एक ही
चेतना की विविध अभिव्यक्तियाँ हैं ।

विमला

व्याख्या—वृषल=मौर्य (Vrishal), ध्रुवताम्=आकर्ष्यताम् (hear), अत्र=
भद्रमदादिषु (here), यावेतौ (those two), गजाव्यक्षावाप्यक्षौ=इस्तिपालका-
श्चपालकौ (the commander of the elephants and the horse), भद्रभट-
पुरुषदत्तनामानौ (by name Bhadrabhatta and Parushdatta), तौ खलु
शब्दो वाक्यालङ्कारे (both of them), क्षीमद्यमृगयाशीलौ=नारीमप्याखेटेस्वभावी
(were addicted to women, wine and chase), हस्यस्यावेक्षणे=गजवाजि-
सरक्षणं (to look after the elephants and the horses), अनभिमुक्तौ=
अमावधानौ (inattentive), मया (by me), अवरोप्य=वृषवहस्य (were
removed), स्वजीवनमात्रेणैव=स्वजीविकानिर्वाहमात्रेणैव (mere subsistence
allowance), स्थापितौ (placed on), इति परपक्षे=अनुपपत्ते (to the enemy),
स्वेन स्वेन अधिकारेण=गजरक्षकत्वेन अश्वरक्षकत्वेन रूपेण (from their office),
गत्वा (went over), मलयकेतुम् (to Malayaketu), आश्रितौ=तमाश्रित
रक्षकौ जातौ (have attached themselves), यावेतौ=इमौ (these two),
दिङ्गरातवलगुप्तौ=द्वयद्वयानकौ (Dingurata and Balgupta), तावपि (they
were), अत्यन्तलोभाभिभूतौ=अतिशयलुब्धप्रकृती (affected by extreme greed),

योऽप्यमौ भवत कुमारसेनको राजसेन इति सोऽपि तव प्रसादादतिप्रभूतको-
 शहस्त्यश्च सहसैव तन्महदैश्वर्यमवाप्य पुनरुच्छेदशङ्क्यापक्रम्य मलयकेतु-
 माश्रितः । योऽयमपरः सेनापते सिंहबलस्य कनीयान्भ्राता भागुरायणोऽसावपि
 तत्र काले पर्वतकेन सह समुत्पन्नसौहार्दस्त्वप्रीत्या च पिता ते चाणक्येन
 व्यापादित इत्युत्पाद्य रहसि त्रासयित्वा मलयकेतुमपवाहितवान् । ततो भवद-
 पथ्यकारिषु चन्दनदासादिषु निगृहीतेषु स्वदोषाशङ्क्यापक्रम्य मलयकेतुमाश्रित ।
 तेनाप्यसौ मम प्राणरक्षक इति कृतञ्चतमनुवर्तमानेनात्मनोऽनन्तरममात्यपदं
 प्राप्ति । यौ तौ लोहिताक्षयिजयवर्माणौ तावप्यतिमानित्वान् स्वदायादेभ्यस्त्वया
 दीयमानमसहमानौ मलयकेतुमाश्रितौ इत्येषामपरागहेतवः ।

स्वदत्तम् = स्वदायाप्रागङ्गीकृतम् (given by you), जीवनम् = जीविका (the salary),
 अबहुमन्यमानौ = अल्पमवलम्ब्यमानौ (thinking insufficient), तत्र = मलयकेतु-
 सन्निधौ (there), बहुलम्यत = अधिक प्राप्येत (could get more), इत्यपक्रम्य
 (went over), मलयकेतुमाश्रितौ = पर्वतकपुत्रमाश्रितौ (attached themselves
 to Malayaketu), योष्यसौ = यश्चैष (regarding), भवत (your), कुमार-
 सेवक = बालभृत्य (old attendant), राजसेन (Rajsen), इति सोऽपि (he
 too), तव = भवत (your), प्रसादात् = अनुग्रहात् (through favour), अति
 प्रभूत = विबुध (consisting of a-large), कोश = धनराशि (treasure), हस्य-
 श्वम् = गावाश्च (elephants and horses), सहसैव (having suddenly),
 तन्महदैश्वर्यम् = अतिप्रभूतसम्पत्तिम् ('considerable fortune), अवाप्य = प्राप्य
 (got), पुनरुच्छेदशङ्कया = भूय विनाशत्रासेन (from fear of its being taken
 back), अपक्रम्य = हृतो निर्गत्य (has run away) मलयकेतुमाश्रित = पर्वतकपुत्र-
 माश्रित (joined Malayaketu), योऽयमपरः (about the other fellow),
 सेनापते = तेनाप्यवस्य (the commander in chief), सिंहबलस्य (Sinhabala's),
 कनीयान्भ्राता = अनुज सोदर (younger brother), भागुरायणोऽपि (Bhagu-
 rayan), असावपि (he too), तत्र (there), काले = समये (at that time),
 पर्वतकेन सह = पर्वतकेन सहसैव (with Parvataka) समुत्पन्नसौहार्द = सजात-
 मैत्रिक (formed friendship), तप्रीत्या = पर्वतकस्नेहेन (out of affection
 for him), पिता ते = तव जनक (your father), चाणक्येन व्यापादित = कौटिल्येन
 घातित (was killed by Chankya), इत्युत्पाद्य, रहसि = एकान्ते (in secret
 by inventing the story), त्रासयित्वा = भययित्वा (frightened), मलय-
 केतुम् (Malayaketu), अपवाहितवान् = अपसारितवान् (made him leave the
 town) ततः = तत्पश्चात् (after that), चन्दनपथ्यकारिषु = चन्दनविष्टविधायिषु (were
 working harm unto you), चन्दनदासादिषु (Chandandasa and other),
 निगृहीतेषु = दण्ड्यमानेषु (were arrested), स्वदोषाशङ्कया = निजापराधभयेन
 (through apprehensions due to his own guilt), अपक्रम्य = निर्गत्य (fled),
 मलयकेतुमाश्रित (for protection to Malayaketu), तेनापि = मलयकेतुनापि

(he too), असौ (he), मन प्राप्तिरक्षः (had saved his life), कृतज्ञताम् अनुवर्तमानेन=अनुपकारितान्निवेदनानेन (in pursuance of gratitude), आनतोऽनन्तरम्=स्वत्मात् अन्यवहितम् (next to him in power), अनात्ययदम्=सचिवदम् (post of minister), प्राहितः=प्राप्तः (conferred), दो तौ (the two), लोहितकविप्रयवर्मायौ (Lohitaksha and Vijayavarma), तावपि (they too), अतिमानित्वात्=अत्यन्तानिमानवत्वात् (in their great vanity), स्वदायादभ्याः=स्वदन्तुभ्याः (to their relatives), त्वया=मया (by you), दायमानम्=विनीर्यमानम् (what you gave), असहमानौ=अनुपमानौ (could not bear), मलयकतुनामिहौ (went over to Malayakatu), इत्येषाम् (these are), अपरागहेतवः=विरागकारणानि (the causes of their disaffection).

हिन्दी—बागवत—वह नौ चुन टो चुन ' इनमें बा ये गबडेनापुत्र और मन्तेनापि-
पुत्र नन्दन और पुनपुत्र हैं, वे दो छा, नव और दूगना में निरन्तर मगल रहने के कारन
हिनदर और मन्ते के सङ्गन-निरीक्षण में सदा मन्तेपान रहते आये हैं, जिसके छिद
इन्हें इनके भविष्य में ठेकड़ा कर जालिफ़नेवाह नाम पर रहने दिया गया और इलाहदर
इन्हें नहीं से विरक्त होने पर मन्तेके के तब में निरुद्ध हो, इन्हें करने करने कारों पर
निर्मुक्त निरुक्त गयो है। इनमें हा जो विद्वत् और बलदेवपुत्र हैं—नमानतः मन्ते
छोना रह हैं, तुम्हारे द्वारा दो गनी आविष्कार को पचांत न मानत हुए—दुन्दर में मन्ते
प्राप्त हुना देखा छीवकर—वहाँ से बागवत मन्तेके का नमय ग्रहण कर छिद हैं। और
जो वह—दुन्दरी वचन से सदा में मन्तेपान रावतेन है, वह भा तुम्हारा हुना से अत्यधिक
कबाना, हाया और कोशावाणी उस नमान सन्तेके के सङ्ग हो पाछ छिद छे विन्द
हा जाने के मय से भा कर मन्तेके को छरा में चला गया। वह तेनापि सिद्धर का कनिष्ठ
सहोदर जो नानुमान है, वह आ तब से ही पर्यटक के साथ, ऐसे सङ्ग वनिष्ठ निवृत्त
रहता जर है, निम्ने इन्ने 'तुम्हारे निरा को कान्त्य ने हा नरवाना है, देखा बरा-बनका
कर मन्तेके को वहाँ से मगना—वह जान छे पर कि तुम्हारे कोहविन्दर और
मन्तेकर चन्दनदात मन्ते छोग पकड़ बा रह हैं और छे मो वचने मन्तेपान का दन्त
निम्ना—वहाँ से निरुक्त गला है और मन्तेके से बा निरा है और मन्तेके ने मो
छे जाना मानदक मानकर—दुन्दर मन्ते करत हुए, अन्ये छीवकर मन्तेपान के तब
पर निर्मुक्त कर छिदा है। अब इनमें जो वच कोहदर और विवन्तर्मा हैं, वे भा अत्यन्त
त्वानेन ना हुने के कारन तुम्हारे द्वारा करने दन्त्यों को दिने करने वच मन्तेपान को
छे न करते हुए मन्तेके का नमय ग्रहण कर छिद। वही हैं इनके मन्तेपान के कारन।

English—*Chancha*—*Vrishala* listen, these two, by name Bha-
drabhatta and Purusdatta respectively the commander of the ele-
phants and horses, were addicted to women, wine and chase, and
were indeed inattentive to the inspection of the elephants and the
horses. So they were removed by me from their office and placed
on mere subsistence allowance. They therefore went over to the

enemy and took service under Malayaketu in their respective capacities. As to Dingarata and Balgupta these two, swayed too much by greed, and thinking the salaries given by you insufficient, went over to Malayaketu, believing that they could get more there. Regarding your old attendant Rajsema, he too, through your favour having suddenly come by great affluence with elephants, horse and immense wealth, went and joined Malayaketu from fear of its being taken back. Now about the other fellow—Bhagurayana the younger brother of Sinhabala the Commander in chief, had contracted friendship with Parvataka at that time, and out of affection for him frightened Malayaketu in secret by inventing the story 'Your father was killed by Chandragupta' and made him leave the town. When afterward Chandandasa and others, who were working harm unto you were being punished, he, through apprehensions due to his own guilt, ran away and attached himself to Malayaketu. He too, thinking that he had saved his life, out of gratitude conferred upon him, his ministership, a rank next to his own. Lastly, the two Lohitaksha and Vijayavarma could not bear, in their great vanity, what you gave to their relatives, and went over to Malayaketu. These are the reasons for the disaffection of these men.

टिप्पणी—(१) एतेषामपरागहेतून्—सम्राट् चन्द्रगुप्त इति तन्मयं से पूर्ण परिचित है कि तथाकथित लोगों में यद्यपि विरक्ति वा कोई कारण नहीं है, फिर भी मात्र दिखाने के लिए यह विरक्ति के कारण को मान लेते हैं और इसी माम्यता के आधार पर आचार्य चाणक्य से इन्होंने प्रश्न किया है।

(२) अत्रयावेतौ—'यावेतौ' से तात्पर्य प्रति दो व्यक्तियों से है और वे दोनों अलग अलग अपनी विशेषताओं से सम्बद्ध हैं। यथा—

(१) महभट और पुरुषदत्त—कुदकृत्य हैं।

(२) चिद्वरात और बलगुप्त—लुब्धकृत्य हैं।

(३) राजसेन और भागुरायण—अवमानितकृत्य हैं।

(४) श्रीमद्युगयाशीलौ—युगयनम् इति युग, अदन्त पुरादि युग से णिच् प्रत्यय स्वार्थे + श भावे युगया—श्री च मद्यज्ञ युगया च श्रीमद्युगया। ता शीलम् स्वभावम् ययोस्तौ श्रीमद्युगयाशीलौ—युगया + शील + णिच् स्वार्थे + न कश्चि। मनुस्मृति में राजा के अभोहित चार व्यसन बतलाये गये हैं—पानम्, अथा, श्रिय, युगया।

(५) स्वेन स्वेन अधिकारेण—यहाँ 'करण कृतीया' से कृतीया विभक्ति है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन्हें जिन-जिन पदों से हटाया गया, मलयकेतु के यहाँ उन्हें उही उही पदों पर नियुक्त कर लिया गया।

(६) अनभियुक्तौ—अन + अभि + युक् + क्त + विभक्ति कार्य से रूप की सिद्धि।

(७) अवरोध्य—अव + रुद् + स्वप् + पुगागन् विभक्त्यादि कार्य।

राजा—एननेतेषु परिज्ञातापरागहेतुषु क्षिप्रमेव कस्मान्न प्रतिविहितमार्गेण ।

चाणक्यः—वृषल, न पारित प्रतिविधातुम् ।

राजा—किमर्कसालादुत प्रयोजनापेक्षया ।

चाणक्य—कथमर्कसाल भविष्यति । प्रयोजनापेक्षयेव ।

राजा—प्रयोजनमिदानीं श्रोतुमिच्छामि ।

(७) तत्रकाले—पाटलिपुत्र के शर के समय में । अर्थात् उस समय पर्वतक चन्द्रग्रह के साथ रह कर उसको सहायता कर रहा था ।

(८) अतिप्रभूतकोशहस्त्यश्वन्—काशश्च हस्तिनश्च अश्वश्च कोशहस्त्यश्वाः । अतिप्रभूताः कोशहस्त्यश्वा यस्तिन् तादृशन् ।

(९) द्राहिन्—द्रष्टृ + णिच् + क्त विनक्ति कार्य से सम्पन्न रूप प्रादित ।

(१०) इति उत्पद्य—इति एतत् उत्पद्य कल्पयित्वा—वास्तविक घटना को भी निम्नः रूप से ननुष्यों को विकास दिखाने के लिए विस्तृत कर दिया गया है ।

(११) स्वदोषशक्या—स्वस्य दोष स्वदोष तस्य आशङ्का तथा स्वदोषाशक्या ।

(१२) प्रागरक्षक—प्राणान् रक्षतीति—प्राण + रप् + अण् कर्त्तर—प्रागरक्ष—उसके शत्रु स्वार्थ में कन् प्रत्यय करने पर प्रागरक्षक रूप की निधि ।

(१३) अनन्तरन्—अविमानमन्तरमस्य इति अनन्तरन्—सन्निकट ।

(१४) दायादन्य—दाय पैतृकधनम् अदन्ति इति दायदा दाय + अद् + अण् कर्त्तरि दायादा नन्य । 'दायाद' का अर्थ दाता है उत्तराधिकार के अधिकारी । यहाँ इसका सामान्य अर्थ सन्तन्त्री मात्र है । जतुर्वी बहुवचने से यहाँ विभक्त्यप्रदि कार्य हुआ है ।

विमला

व्याख्या—राजा—एवम् = उक्तप्रकारेण (being thus), परिज्ञाता = भवगता (known), अपरागाणाम् = विरामाणाम् (discontent), हेतवः = कारणानि (the reasons), येषां ते तयोक्तास्तपु—एतेषु = भद्रमत्यादिषु (of these men), क्षिप्रमेव = क्षीप्रमेव (promptly), कस्मान्न = कुतो न (why not), मार्गेण = भवता (by noble sir), प्रतिविहितम् = प्रतिकार कृत. (Counteract them).

चाणक्य—वृषल = मौर्य (Vrishal), प्रतिविधातुम् = प्रतिकर्तुम् (to counteract), न पारितम् = न युक्तम् (was not possible)

राजा—अकौशलम् = अज्ञानस्यम् (to want of skill), उक् = अथवा (or), प्रयोजनापेक्षया = यत् किञ्चित् इप्सितफलानुरोधेन (in view of some object), किम् (why)

चाणक्य—कथम् = कस्मात् (How could), अकौशलम् = अज्ञानस्यम् (be tactless), भविष्यति, प्रयोजनापेक्षयेव = इप्सितकार्यानुरोधेनैव (in view of some object indeed).

राजा—इदानीम् = अधुना (now), प्रयोजनम् = कारणम् (purpose), श्रोतुम् (to hear), इच्छामि = वाञ्छामि (I want),

चाणक्यः—अयतामवधार्यतां च । इह खलु विरक्तानां प्रकृतीनां द्विविधं प्रतिविधानम्—अनुग्रहो निग्रहश्च । अनुग्रहस्तावदाक्षिप्ताधिकारयोर्भद्रभटपुरुष-दत्तयोः पुनरधिकारारोपणमेव । अधिकारश्च तादृशेषु व्यसनयोगादनभियुक्तेषु

हिन्दी—राजा—किन्तु, इस प्रकार इन सबों की अपरिक्ति के विविध हेतु आपको ज्ञात है, तो फिर समय पर इनका प्रतिकार आपने क्यों नहीं किया ।

चाणक्य—प्रतिकार किया नहीं जा सका वृषभ !

राजा—क्यों असामर्थ्य से जबवा किसी प्रयोजनविशेष के कारण ।

चाणक्य—कैसी अकुशलता ? प्रयोजनविशेष के कारण ही प्रतिकार नहीं किया जा सका ।

राजा—हाँ तो, वह प्रयोजन भी तो सुनू ।

English—King—The causes of their discontent if were known, why were not promptly remedied by noble sir ?

Chanakya—Vrishala, these could not be possible to counteract.

King—Why owing to want of skill or in view of some purpose.

Chanakya—How could it be tactlessness ? There was a special purpose in view.

King—That purpose I want now to hear.

टिप्पणी—(१) पारितन्—पार + णिच् स्वार्थे चुरादि + क् भावे ।

(२) अकौशलत्—कुशलस्य भावः कौशलम्—न कुशलः अकुशलता तस्य भावः ।

विमला

व्याख्या—चाणक्य—अयताम=आकर्ष्यताम् (listen), अवधार्यताम्=विचार्यताम् (learn), च=पुनः (and), इह=अस्मिन् लोके (in this world), विरक्तानाम्=अनुरागशून्यानाम् (discontented), प्रकृतीनाम्=प्रजानाम् (subjects), द्विविधम्=द्विप्रकारम् (two fold), प्रतिविधानम्=प्रतीकारम् (remedy), अनुग्रहः=अनुकम्पा ('favour), च=पुनः (and), निग्रहः=दण्डः (punishment), तावत्=आदि (at first), आक्षिप्ताधिकारयोः=स्यायत्तीकृतकार्यभारयोः (whose offices have been wrested from them), भद्रभटपुरुषदत्तयोः (In the case of Bhadrabatta and Purusdatta), पुनरधिकारारोपणम्=भूयः कार्यावेक्षण-स्थापनमेव (re-appointment alone), अनुग्रहः=अनुकम्पा (to show favour), व्यसनयोगात्=स्त्रीमद्यासेटामियोगात् (on account of their addiction to vice), अवभियुक्तेषु=अव्योम्येषु (careless), तादृशेषु=आक्षिप्ताधिकारेषु (like so), पुनः=भूयः (again), आरोप्यमाणः=स्थाप्यमानः (re-entrusted), अधिकारः=हस्त्यश्वरक्षणाध्यक्षत्वम् (be restored to office), राज्यस्य=आधिपत्यस्य (of the kingdom), मूलम्=कारणम् (basis), हस्त्यश्वम्=गजघोटकम् (cavalry and elephant force), अवसादयेत्=विनाशयेत् (would ruin), अत्यन्तलुब्धप्रकृतयोः=अतिपुष्पाग्रस्तस्वभावयोः (extremely greedy), सकलराज्यप्रदानेनापि=निखिलप्रजाधिपत्यवितरणेनापि (even by the

पुनरारोप्यमाणः सकलनेत्र राज्यस्य मूलं हस्त्यश्मवसादयेत् । डिङ्गरातवल-
गुनयोरतिलुब्धयोः सकलराज्यप्रदानेनाप्यपरितुष्यतोरनुग्रहः कथं शक्यः । राज-
सेनमागुरायणयोस्तु घनप्रणाशभोतयोः कुतोऽनुग्रहस्यापकाशः । लोहिताक्ष-
विजयवर्मणोरपि दायादमसहमानयोरतिमानिनोः कीदृशोऽनुग्रहः प्रीतिं जनयिष्य-
तीति परिहृतः पूर्वः पक्षः । उत्तरोऽपि खनु धनमचिरादभितननैश्वर्याः सहोत्था-
पिनं प्रधानपुरुषवर्गनुप्रेण दण्डेन पीडयन्तो नन्दकुलानुरक्तानां प्रकृतीनाम-
विश्वास्या एव भयान इत्यतः परिहृत एव । तदेवननुगृहीतास्मन्यशो राक्षसोप-
देशप्रवणो महीपता न्लेच्छबलेन परिहृतः पितृवधामर्षो पर्वतकपुत्रो मतयन्तु-
रत्नानभिरोक्तुमुद्यतः । सोऽयं व्याघ्रानकालो नोत्पन्नकाल इति दुर्गसंस्कारे
प्रारब्धमे किं कौमुदीमहोत्सवेनेति प्रतिपिद्धः ।

grifi of the whole kingdom), अपरितुष्यतोः=सन्तोषनमाप्नुवतोः (would
not be contented), डिङ्गरातवलगुप्तयोः (Dingurat and Balgupta),
अनुग्रहः=दया (conciliation), कथं=कथं प्रकारेण (how could), शक्यः=
योग्यः (be possible), घनप्रणाशनीतयोः=वनुष्यपसंजातसाध्वमयोः (were
afraid of losing their property), राजसेनमागुरायणयोः (Rajsen and
Bhagurayan), विषये=सम्बन्धे (In the case of), अनुग्रहस्य=दयायाः
(a kind), कुतोः=कथम् (how), अवकाशः=अवसरः (scope for), दायादम्=
शक्तिम् (relatives), असहमानयोः=अनृष्यतोः (jealous of), अतिमानिनोः=
अत्यन्ताभिमानवतोः (are extremely proud), लोहिताक्षविजयवर्मणोरपि
(Lohitaksha and Vijayavarman also), विषये=सम्बन्धे (about), कीदृशः
(what kind of), अनुग्रहः=दया (favour), प्रीतिम्=हर्षम् (the affection),
जनयति=सनुपादयति (won), इति=अतः (so), पूर्वपक्षः=प्रथमकोट्यनुग्रहः
(the first alternative), परिहृतः=त्यक्तः (to abandon), मनुशब्दो वाक्या-
लङ्कारे, अचिरात्=शीघ्रम् (recently), अक्षिगतवन्दैश्वर्याः=मातादन्वसम्पदः
(acquisition of the realm of the Nandas), सहोत्थापिनम्=युगपदुरायण-
शीलम् (adherents), प्रधानपुरुषवर्गम्=मुख्यलोकप्रमुख (the influential per-
sons), दण्डेन=तीक्ष्णम् (with hard), दण्डेन=निग्रहेन (punishment),
पीडयन्तः=क्लेशयन्तः (inflicted), नन्दकुलानुरक्तानाम्=नन्दान्वयान्वयानाम्
(attached to the family of Nandas), प्रकृतीनाम्=विज्ञानम् (subjects),
अविश्वास्याः=अप्रतीत्याः भवान् (we become objects of distrust), हस्तः=
अस्मादेतोः (for this), उत्तरोऽपि=द्वितीयोऽपि (the last too), परिहृतः=
व्यक्त एव (is indeed dismissed), एवम्=उक्तप्रकारेण (so having thus),
अनुगृहीतः=अनुकम्पयावलम्बितः (having favoured), अस्मत्पक्षः=भद्रमत्यादिवर्गः
(Bhadrabhatta and others), राक्षसोपदेशधामप्रवणः=राक्षसवृक्षसिचन-
नुरक्तः (guided by the counsels of Rakshasa), महीपता=महता (a
large), न्लेच्छबलेन=मेच्छसैन्येन (with force of Mlechchhas), परिहृतः=

युक्त (stands), पितृवधामर्षी=यातन्यापादनजन्यक्रोधयुक्तः (angered by the murder of his father), पर्वतकपुत्र=मलयवेतु (the son of Parvataka Malayaketu by name), अस्मान् अभियोक्तुम्=परामर्शितुम्, उद्यत=तत्पर (is preparing to attack us), सोऽयम् (thus), व्यायामकाल=सैन्यसमूह (the present in the time for exertion), नोत्सव-काल (not for festivities), अतोऽस्मात् कारणात् (therefore), दुर्गसंस्कारे (as repairs to the fort), आरम्भस्ये=प्रक्रमितस्ये (to be commenced), किम्=किम् प्रयोजनम् (what), कौमुदीमहोत्सवेन=क्षारदोत्सवेन (by the Kaumudi festival), इति=अनेन कारणेन (for this reason), प्रतिषिद्ध=परिषेक्त- (I forbade it)

हिन्दी—चाणक्य—इस, सुनो और विचार करो। इस संसार में विद्रोही प्रजा का प्रतिकार दो ही प्रकार से सम्भव है—या तो अनुग्रह से और नहीं तो निग्रह से। अब पदच्युत भद्रमद और पुरुषदत्त के प्रति, अनुग्रह करना तो यही होता कि उन्हें उनके पदों पर पुनर्निर्वाह कर दिया जाय। किन्तु, क्या ऐसे दुर्व्यसनग्रस्त और शासन कार्य में सर्वथा असामर्थ्य व्यक्तिों को विषय में पुनर्निर्वाह दिया जाता हुआ अधिकार सम्पूर्ण राज्य को ही मूल गजनेना और बख्सेना को नष्ट नहीं कर देता। अत्यन्त लोभी क्षत्रियात् और बलशाली पर जो स्वभाव से ही महालोभी हों और जिन्हें सारा साम्राज्य सोपकर भी प्रसन्न नहीं किया जा सके किस प्रकार का अनुग्रह? अब यह राजसेन और भागुरायण जो अपने अपने धन और प्राण का भय रखने वाले हैं। इन पर भला अनुग्रह का कहीं अवकाश? इसी प्रकार लोभिताश्च द्रव विषयवर्मा हैं, जिन्हें अपने दायादों की बदती से कुद्वेष है और जिनके अभिमान का कोई ठिकाना नहीं, किस प्रकार के अनुग्रह से भला सुख प्राप्त जा सकते? वस इन्हीं कारणों से अनुग्रह का पक्ष तो छूट ही गया। अब यहां निग्रह का पक्ष जिसे छोड़ देना इसलिए उचित समझा गया कि जिसमें अभी अभी नन्द का पेशव इत्युक्त करनेवाले इन लोगों के द्वारा यदि नाम के साथ निभाने वाले प्रमुख राजपुरुषों को कठोर दण्ड दे-देकर पीड़ित किया जाने लगा तब भला नन्दवशानुरक्त प्रजा क्यों कर हम पर विश्वास करेंगी? अतः इस प्रकार हमारे पक्ष के व्यक्तियों पर अनुग्रह करनेवाला, राज्य की राजनीति सुनने में तत्पर, महान् मण्डलों की सेना से युक्त, पिता की मृत्यु से कोपित, पर्वतक का पुत्र मलयवेतु अब हम पर आक्रमण करने के लिए उद्यत है, तब भला—यह युद्ध की तैयारी का समय है अथवा उत्सव मनाने का समय? इसी प्रकार दुर्ग के संस्कार आरम्भ किये जाने के अवसर पर भला कौमुदी महोत्सव मनाने से क्या लाभ? अतः इसे रोक दिया गया।

English—Chanakya—Listen and consider There are only two ways to treat with discontented subject—favour and punishment Favour in the case of Bhadrak Gupta and Purusdatta after re-appointing them on their ceased posts And office again reconfirmed in people so careless through their addiction to vice, would destroy our whole body of horses and elephant—the main pillar of the kingdom How the favour is possible to Dingurat and Bal Gupta—extreme greedy

persons—who will never be contented even by giving the whole kingdom. There was not a least scope of favour in the case of Rajsena and Bhagurayan who were always afraid of their life and wealth. What sort of kindness is to be given to Lohitaksha and Vijaya-man who are always jealous of their relatives and are always proud ? So I left the first (favour) The other (punishment) was also abandoned for after our recent gaining of the Nanda's kingdom. We grinding with hard punishment the batch of high officers that made common cause with us, shall be the object of destruction to the subjects attached to the family of Nanda forever. So having favour our people in this way, Malayaketu, the son of Parvataka being angry by the murder of his father, is ready to attack us with a large force of Mlechchhas following the advice of Rakshasa. So **॥** the time of exertion and not of festivities. Thinking so, what **॥** to be gained by Kaumadi festival at the time of repairs to the fort ? It was forbidden.

टिप्पणी—(१) भवसाधनम्—भव + वृ + णिप् + छोट् धातु कर्त्तरि ।

(२) नष्टविमानम्—नष्टि + वि + वा + क्, नाशे + विनक्ति धातु ।

(३) अक्षितशिकार—आ + क्षिप् + क्त कर्त्तरि—आक्षिप्त, अक्षिकार अनर्थो. छवि ।

(४) अक्षिकारारोहम्—अक्षिकार आरोहन् = अक्षिकारारोहन्—मुमुक्षु सृज से म्नास किना गया है ।

(५) परिहृत—हरे + हृ + क्त कर्त्तरि ।

(६) हन्त्यन्—हन्तिनश्च म्नास छवि 'द्वन्द्व्य प्रीतिरुत्तेजाश्चानाम्' इस सूत्र से तेजा का नाश होने के कारण द्वन्द्व समास एवं एकवचन हुआ ।

(७) वनदग्धमात्रयो—रावणेन वन के विनाश के वर से और मरुतादयो प्राणों के विनाश के वर से ।

(८) उच्छास्ते—अर्थात् 'विनाश' का पक्ष भी छोड़ दिया गया । इस कथन में चात्सव का मतलब यह है कि यदि कभी हम पक्ष के लोगों को दण्ड देते हैं तो हम पर नन्द के म्नासक एवं निर को कभी हमारे सहायों से हैं—अक्षिकार करना प्रारम्भ कर देंगे—यह मानकर कि जब वे अपने लोगों को ही अपना कठोर दण्ड दे सकत हैं तो फिर हमारे साथ हमारा न्याय व्यवहार कैसा होगा ?

(९) क्लृप्ताग्रान्तस्य—इससे निवृत्ति का भास एवं अग्रान्त को अनेकवि सूचित होता है ।

(१०) म्लेच्छजन—इससे नन्दकेतु को म्लेच्छ शक्ति को सूचना मिलती है ।

(११) निवृत्तजननी—नन्दकेतु करने पिता की इत्या का बदला देने पर उत्तर है । अतः इससे छवि की किसी भी प्रकार संभावना नहीं है ।

राजा—आर्ये, बहु प्रष्टव्यमत्र ।

चाणक्यः—वृषल, विश्रब्ध पृच्छ । ममापि बह्वाख्येयमत्र ।

राजा—सोऽप्यस्य सर्वस्यानर्थस्य हेतुर्मलयकेतुः कस्मादपकामन्त्रपेक्षितः ।

चाणक्यः—वृषल, अनुपेक्षणे द्वयी गतिः निगृह्येत वा प्रतिश्रुतं राज्यार्धं प्रतिपाद्येत वा । निग्रहे तावत् पर्वतकोऽस्माभिरेव व्यापादित इति कृतघ्नतायाः स्वहस्तो दत्तः स्यात् । प्रतिश्रुतराज्यार्धप्रतिपादनेऽपि पर्वतकविनाशः केवलं कृतघ्नतामात्रफलः स्यादिति मलयकेतुरपकामन्त्रपेक्षितः ।

राजा—अत्र तावदेवम् । राक्षसः पुनरिदं वार्तमान आर्येणोपेक्षित इत्यत्र किमुत्तरमायस्य ।

विमला

व्याख्या—राजा—आर्येमान्य, श्रीमन् (Noble preceptor), अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), बहु=अति (much), प्रष्टव्यम् (to ask).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), विश्रब्धम्=विश्रुतम् (freely), पृच्छ=पृच्छि (ask), ममापि (I have too), बहु (much), आख्येयम्=वक्तव्यम् (to explain), अत्र (in this matter).

राजा—सोऽपि=असावपि (he too), अस्य=एतस्य (this), सर्वस्यानर्थस्य=सर्वानिष्टस्य (of all the evil), हेतु=कारणम् (the root), मलयकेतुः (Malayaketu), अपकामन्=इतो निस्सरन् (to escape), कस्मात्=कुतः कारणात् (why did), उपेक्षितः=परित्यक्तः (overlooked).

चाणक्य—वृषल (Vrishal), अनुपेक्षणे=नि सरणावरोधपरित्यागे (if not over looked), द्वयीगतिः=द्विप्रकारोपाय (two courses), निगृह्येत=इच्छेत् (to punish), वा=अथवा (either), प्रतिश्रुतम्=प्रतिज्ञातम् (Promised), राज्यार्धम् (half of the kingdom), वा=अथवा (or), प्रतिपाद्येत=दीयेत् (to give), निग्रहे=दण्डे (to have punished), तावत्=वाक्यालंकारे प्रयोगः पर्वतकः (Parvataka), अस्माभिरेव (by us), व्यापादितः=विनाशितः (was killed), इति एवं (like this), कृतघ्नतायाः=कृतोपकारस्यापकारितायाः (ingratitude), स्वहस्तो (our own hand), दत्तः स्यात्=भवेत् (should have lent), प्रतिश्रुतराज्यार्धप्रतिपादनेऽपि=प्रतिज्ञातार्द्रराज्यदानेऽपि (in making over half the kingdom promised), पर्वतकविनाशः=मलयकेतुपितृवधः (the murder of Parvataka), केवलम् (only), कृतघ्नतामात्रफलः=result of ingratitude), स्यादिति=भवेदिति (would have been), मलयकेतुरपकामन्=मलयकेतु इवोनिर्गच्छन् (Malayaketu while escaping), उपेक्षितः=परित्यक्तः (was overlooked).

राजा—अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), तावत्=प्रथमम् (at first), एवम्=इदमुत्तरम् (is indeed), राक्षसः (Rakshasa), पुनः (again), इदं=अस्मिन्नेव (in this very city), वर्तमानः=विद्यमानः (staying),

चायत्तः—राशसोऽपि स्वानिनि स्थिरापुराणित्वान् सुचिरनेक्य वासाव
शीलवाना नन्दानुरक्ताना प्रकृतीनामत्यन्तविश्वस्यः प्रज्ञापुरुषद्वाराभ्यानुपेतः

आर्यज=पूज्यं (by noble preceptor), उपेक्षित=न गृहीतः (neglected),
इत्यत्र=रावसोपेक्षणे (to this), आर्यस्य=भवतः (Noble preceptor's),
किमुचरत् (what is explanation).

हिन्दी—राजा—आप, इस विषय में बहुत से नए हैं।

ध्यानकर—वृषभ, विष्णुसूक्त पृष्ठे । इति श्री हनु विनय में बहुत कुछ वर्णना है ।

राजा—रघु सन्तान अन्तर्गत् अक्षरान् नह नव्यकेतु ना नान्यत्तु इत्यादौ वचनैश्च वर
द्विज गताः ।

चातक्य—दृष्ट, उद्घाटन करने पर दो ही परेन हाते—एक छिया बाया भव्य
प्रतिष्ठा के अनुसार भावा राज्य दे दिया गया। एक छेने पर ती नर्वक इनारे द्वारा
हा नार हाडा गना—इस प्रकार कृष्णरा ओ भगना ही सहारा देना होता। पूर्व प्रति-
ष्ठात राज्य के भावे मान देने पर ना नर्वक का निनाष्ट केवड कृष्णरा मात्र एक बाया
होता। अतः नागदा उमा नरनदेव वंशित कर दिया गया।

राजा—एह विषय में तो ऐसा है। किन्तु यहाँ राष्ट्र हुना राष्ट्र कार्य के इतर उद्देश्य किया गया—एह विषय में कार्य का क्या उद्देश्य है ?

English—King—Noble preceptor, I have much to ask in this matter.

*Chandrag—*Vrishala, ask freely. I too have much to explain.

King—Why did you allow Malayaketu, the root of all the evil, to escape?

Chanakya—Vrishala, there would have been two courses—to punish him or to give him half of the kingdom as promised. To have punished him—we should have lent our own hand to the treachery and ingratitude that Parvataka was killed by ourselves. In making over half the kingdom promised, again, the only result of the assassination of Parvataka would have been the sin of ingratitude. Hence Malvaketu was overlooked, while escaping.

King—It is indeed so in this matter. Then again you neglected to take proper steps against Rakhasa who was living here what has your sir to say to this ?

पिनला

व्याख्या—वानस्य—राक्षसोऽपि (Rakshasa too), स्वामिनिष्पन्नौ (to master), स्थिरानुरागिवात्=अव्ययवत् (unswerving devotion), मुचिरम्=बहुकालम् (long), एकत्र=एकस्मिन् स्थाने (in one place), वासद्=अवस्थानात् (stay), शीलज्ञानम्=चरित्राभिज्ञानम् (appreciate character), नन्दानुरक्तान्=नन्दस्नेहयुक्तान् (Loyal to Nanda), प्रहृष्टान्=प्रमान् (of the

सहायसंपदामियुक्तः कोशवानिहैवान्तर्नगरे धर्तमानः सलुः महान्तमन्तःकोप-
मुत्पादयेत् । दूरीकृतस्तु बाह्यकोपमुत्पादयन्नपि कथमप्युपायैर्वशयितुं शक्य
इत्ययमत्रस्थ एव हृदयेशयः शङ्कुरिवोद्धृत्य दूरीकृतः ।

राजा—आर्य, कस्माद् विक्रम्य न गृहीतः ।

चाणक्यः—राक्षसः स्वत्वसौ । विक्रम्य गृहमाणो युष्मद्वलानि बहूनि नाश-
येत् स्वयं वा विनश्येत् । एवं सत्युभयथापि दोषः । पश्य—

subjects), आयन्तम् = निरतिशयम् (the perfect), विश्वास्यः = विश्रम्भपात्रम्
(confidence), प्रज्ञापुरूपकाराम्याम् = बुद्धि-पौरुषाम्याम् (with intelligence
and valour), उपेत = युक्तः (endowed), सहायसम्पदा = भूयारामकसम्पत्त्या
(by large number of helpers), अभियुक्तः = अन्वित (possessing),
कोशवान् = अर्धसामर्थ्ययुक्तः (has a large treasure), इहैव = अत्रैव (this
very), अन्तर्नगरे = नगरस्य मध्ये (within city), वर्तमानः = तिष्ठन् (staying),
महान्तम् = प्रचुरम् (serious), अन्तःकोपम् = आन्तरिकविद्वेषम् (internal
disaffection), उत्पादयेत् = जनयेत् (would create), दूरीकृतस्तु = पृथक्कृतस्तु
(but sent away), बाह्यकोपम् = बहिर्विद्वेषम् (disaffection out side),
उत्पादयन्नपि = जनयन्नपि (having produced), कथमपि = केनापि प्रकारेण
(anyhow), उपायैः (by expedients), वशयितुम् शक्य इति (would be
possible to manage), अयम् = असौ (he), अत्रस्थ एव (lived here),
हृदयेशयः (rankling in the heart), शङ्कुरिव = कण्टकः (plug), इव = यथा
(like), उद्धृत्य = उत्पाद्य (was extracted), दूरीकृतः = उपेक्षितः (removed
to a distance).

राजा—आर्यमान्य श्रीमन् (noble sir), कस्मात् = कुत (why), विक्रम्य
(सामर्थ्येन) (by force), न (did not), गृहीतः = धृत (capture).

चाणक्य—राक्षसः = मन्दसचिवः (Rakshasa), सलुः = वाक्यालङ्कारे, असौ = एष
(he is), विक्रम्य (यत्नेन) (by force), गृहमाणः (in an attempt to seize),
बहूनि (a large number of), युष्मद्वलानि स्वस्तेभ्यः (your warriors),
नाशयेत् (have killed), वा = अथवा (or), स्वयं (himself), विनश्येत्
(perished), एव सति (with such an attempt), उभयथापि दोषः = उभयदिग्-
घटि हानिः (undesirable result follows either way), पश्य (mark) :—

हिन्दी—चाणक्य—राक्षस को बात अलग है । राजा नन्द में उसकी अविचल भक्ति
है । बहुत दिनों तक इसी एक ही स्थान पर रहने के कारण शहर में रहने वाले अनुयायियों
का वह परम विश्वासपात्र बन चुका है, और फिर उसमें बुद्धि के साथ पुरुषार्थ भी है, एक
अच्छा खासा मित्रवर्ग, और विद्रोह कोशबल उसके हाथ में है । यह अगर भीतर राजधानी
में रहता तो निश्चय ही महान् आन्तरिक विद्रोह उत्पन्न करता । किन्तु यहाँ से बग़ा दिया
गया, बाहर के लोगों में विद्रोह उत्पन्न करता हुआ भी किसी तरह उपायों से बल में किया
जा सकता है । इसलिए यहाँ रहने हुए भी, कलेजे में लगे कौटे के समान, उत्पाद कर दूर
कर दिया गया ।

स हि मृदममियुक्तो यद्यपेयाद् विनाशं
 ननु वृषल वियुक्तः तादृशोऽपि पुंसा ।
 अथ तव बलमुत्थान् घातयेत् सापि पीडा
 वनगात्र इव तस्मात् सोऽभ्युपायैर्विनेयः ॥ २५ ॥

राजा—अस्मिन् प्रसङ्गसिद्धि के द्वारा जो तो उसे पकड़ा जा सकता था ।

शङ्कित्य—यह राक्षस है, आक्रमण करने परकदा जाया हुआ दुन्दुभी बहुत तेजा को नष्ट कर देता भयसा स्वयं लडखर नर जाया । ऐसा होने पर, दोनों तरह से भयित है । देखो —

English—Chankya—Again, Rakshasa, on account of his unswerving devotion to his master and long residence together, an object of great confidence to the subjects who are attached to the Nandas and appreciate character, he is endowed with intelligence and valour, is strong in allies and has a large treasure at his command. But sent away, he is capable of being forced to subjection, anyhow, by expedients through causing disaffection outside. So, like a plug ranking in the heart only when he is here, he was extracted and removed to a distance

King—Sir, why was he not seized by force ?

Chankya—He is Rakshasa, mind you, in an attempt to seize him by force, he would have either killed a large number of your warriors or perished himself. With such an attempt—an unwelcome result in either case. See —

टिप्पणी—विनश्यन्—वि+शम्+क्त+विनश्चिदायं (२) वदयितुम्—वद+पिप्+तुम्+विनश्चिदायं (३) पुरुषकार—पुरुष+क्त+वम्+कटा पुरुषकारः—(४) आह्वयेन्—आ+ह्व+यन्+तुम् । (५) वदयितुम्—वद+पिप्+तुम् । (६) हृदयेद्य—हृदये+तुम्+वत्+कटं ।

निमला

अन्वयः—स, हि, मृदम, अभियुक्तः, यदि, विनाशम्, उपेयात्, ननु, वृषल, तादृशेन, पुंसा, वियुक्तः, अस्ति, अथ, तव, बलमुत्थान्, घातयेत्, सा, अपि, पीडा, तस्मात्, स, वनगात्र, इव, अभ्युपायैः, विनेयः ॥ २५ ॥

व्याख्या—स=असौ (he), हि=निश्चये (indeed), मृदम=हृदय (being hard), अभियुक्तः=आक्रान्तः मन् (pressed), यदि=यैव (if), विनाशम्=मृत्युम् (death), उपेयात्=आप्नुयात् (to meet), ननु=निश्चयेन (indeed), वृषल=मौर्य (vrishala), तादृशेन=लोकोत्तरगुणशालिना (such a great), पुंसा=पुरुषेण (person), वियुक्तः=वरहितः अस्ति=अविप्यसि (would have lost), अथ=यदि (on the other hand), तव=अवतः (yours), बलमुत्थान्=सेनापतीन् (leading fighters), घातयेत्=नाशयेत् (to destroy), सापि (that again), पीडा=अपङ्क्तिः (an injury), तस्मात्=तस्मात्कारणात् (so), सः=राक्षसः

राजा—न शक्नुमो वयमार्यस्य मतिमतिशयितुम् । सर्वथा अमात्यराक्षस
एवात्र प्रशस्यतरः ।

(he), वनराजः=आरण्यकः हस्ती (wild tusker), इव=यथा (like), अभ्युपायैः=
कौशलेन (by stratagem), विनेय=वशीकार्यः (be trained). ॥ २५ ॥

हिन्दी—वह राक्षस प्रचण्डता के साथ आक्रमण करते हुए यदि युद्ध में मारा गया तो
निश्चय ही, हे वृषल, उसके जैसे एक योग्य व्यक्ति से तुम वञ्चित हो जाओगे । और—यदि
कहीं उसने तुम्हारे सेनापति को मार डाला तो भी वह हमारे लिए कष्टकर ही होगा ।
अतः वह, जगलौ हाथी की तरह उपायों से वशवर्ती बनाने योग्य है ॥ २५ ॥

English—If being hard pressed he is to meet death, then Vrishala
you are indeed deprived of such a great person. If on the other
hand he kills your leading fighters, that again is an injury. So like
an elephant of the forest, he has to be trained with stratagems. 25.

टिप्पणी—(१) विकम्ब—वि + कम् + ल्यप् ।

(२) गृह्यमाणः—ग्रह + शानच् + कर्मणि + विभक्त्यादि कार्ये ।

(३) वनगजः—वनचरो गजः—शाकपायिवादि से समास हुआ है ।

मुद्राराक्षस—पेतिहासिकता की दृष्टि से चाहे जो भी महत्त्व रखता हो किन्तु, स्थान स्थान पर
भारतीय राजनीति के लिए अटकाव है । इसमें राजनीति के अनेक विषय हैं और प्रत्येक
विषय के विविध स्तर हैं । कम से कम राजनीतिक दावों का आधिकारिक प्रसार प्राणों पर
रजतातप का साया तो अवश्य ही डाल देता है । ऐसे एक निःश्वास-उच्छ्वास तक का
आमास नहीं मिलता जो स्वस्थ राजनीति के सौरभ से भाद्र न हो । चाणक्य की कुटिया से
चन्द्रगुप्त के राजमहल तक राजनीति का एक समान साना साना बुना है । इस श्लोक में
एक 'उपाय' शब्द में चाणक्य के द्वारा पूरे नाटक में साम दाम, भय, भेद आदि उपायों का
जाल बिछा दिया गया है । इन उपायों में कुछ ये हैं—

(१) भेद—मलयकेतु से राक्षस को अलग करना ।

(२) दण्ड—चन्दनदास को फांसी का दण्ड ।

(३) साम—राक्षस को मन्त्रिशिव का पद ।

(४) दाम—चन्दनदास को नगरबेड़ी बनाना ।

(५) उपेक्षा—राक्षस भगाने की उपेक्षा ।

(६) इन्द्रजाल—आत्महत्या का मिथ्याभिभव ।

इस श्लोक में राक्षस की उपमा वनगज के साथ विशाखदत्त की नाट्यकला की त्वचा
सी बन गयी है और अमूर्त भावनाओं को मूर्त और मूर्त को मार्मिक बनाने का उपकरण बन
गयी है । वनगज की प्रवृत्ति और राक्षस की प्रवृत्ति में तुल्य बरसाहचर्य विशाखदत्त की उपमा
की सार्थकता है । यहाँ उपमा अलङ्कार और मालिनी छन्द है ।

विमला

राजा—वयम् (we), आर्यस्य=पूज्यस्य (Noble sir's), मतिम्=बुद्धिम्
(intellect), अतिशयितुम्=उत्कृष्टयितुम् (to surpass), न शक्नुमः=न
पारयामः (we are unable), सर्वथा=सर्वप्रकारेण (after all), अमात्यराक्षस-

चाणक्यः—(सक्रोधम् ।) न भवानिति वाक्यशेषः । ओ वृषल, तेन किं कृतम् ।

राजा—ध्रुवताम् । येन त्वलु महात्मना—

अध्यायां पुरि यावदिच्छमुपितं कृत्वा पदं नो गले

अध्यायातो जयघोषणादिषु बलादस्मद्वलान्तं कृतः ।

अत्यर्थं विपुलेः स्वनीतिविमर्शेः सम्मोहमापादिता

विश्वास्येष्वपि विश्वसन्ति मतयो न स्वेपु वर्गेषु नः ॥ २६ ॥

एव = नन्दप्रधानमन्त्रिण (minister Rakshasa), एवात्र प्रशस्यतरः = अतिशयेन प्रशस्य श्रेष्ठ (is more praiseworthy)

चाणक्य—[सक्रोधम् = सक्रोधम् (in anger)], न भवानिति वाक्यशेषः = राजसाम्यो न प्रशस्यः इत्यवशिष्टवाक्यार्थः ("not you" is the remaining part of the sentence), ओ वृषल (O Vrishal), तेन किं कृतम् = राजसन किं विचिष्टकार्यं सम्पादितम् (what has he done)

राजा—ध्रुवताम् (Listen), तेन (by him), महात्मना (a magnanimous soul) —

अन्वयः—उत्पायाम्, पुरि, न, गले, पदम्, कृत्वा, यावदिच्छम्, उपितम्, अस्मद्वलानाम्, जयघोषणादिषु, बलात्, अध्यायात्, कृतः विपुले, स्वनीति विमर्शे, एव, अत्यर्थम्, सम्मोहम्, आपादिता, न, मतयः, विश्वास्येषु, अपि, स्वेपु, वर्गेषु, न, विश्वसन्ति ॥ २६ ॥

अध्याया—उत्पायाम् = प्राप्तयाम् (had been captured), पुरि = नगर्याम् (in the city), न = अस्माकम् (our), गले = ग्रीवायाम् (on neck), पदम् = चरणम् (foot), कृत्वा = विधाय (planting), यावदिच्छम् = यथेच्छम् (as long as he desired), उपितम् = निवसितम् (dwelt), अस्मद्वलानाम् = अस्मत्सैन्यानाम् (by our forces), जयघोषणादिषु = विजयघोषादिषु (to the proclamation of victory), बलात् = दृष्टात् (forcibly), अध्यायातः = विघ्नः (obstruction), कृतः = उरपादिष्ट (offered), विपुले = विशालैः (great), स्वनीतिविमर्शे = निजनिर्दोषनमबलै (with the majesty of his policy), एव अत्यर्थम् = अत्यधिकम् (exceeded), सम्मोहम् = व्यग्रताम् (bewilderment), आपादिता = प्रापिता (thrown), न = अस्माकम् (our), मतयः = बुद्धयः (mind), विश्वास्येषु = विश्वासयोग्येषु (in even most trustworthy), अपि, स्वेपु = स्वकीयेषु (own), वर्गेषु पक्षेषु (partisans), न विश्वसन्ति = सन्दिहते (has no confidence) ॥ २६ ॥

हिन्दी—राजा—हम आचार्य को बुद्धि से का उत्तर बुद्धि से तो तो दे नहीं सकते । किन्तु, सब कुछ देखकर लगता यही है कि कनात्य राजस ही सर्वप्रकार से प्रशस्तनीय हैं ।

चाणक्य—(क्रोध के साथ) 'न किं कृतम्'—यह वाक्य का दोषार्थ है । ओ वृषल, उसके द्वारा क्या किया गया ?

राजा—यदि नहीं पता है तो मुझ लाजिम्—उस महारत्न के द्वारा —

चाणक्यः—(विहस्य) एतत्कृत राक्षसेन । वृषल, मया पुनर्ज्ञातं नन्दमिव भवन्तमुद्धृत्य भवानिव भूतले मलयकेतु राजाधिराजपदे नियोजित इति ।

राजा—अन्येनैवेदमनुष्ठितं किमर्थस्य ।

चाणक्य—हे मत्सरिन्,

आरुह्यारुढकोपस्फुरणविपमिताग्राहुलीमुक्तचूडां

लोकप्रत्यक्षमुग्रां सकलरिपुकुलोत्साददीर्घां प्रतिज्ञाम् ।

नगर पर हमारा अधिकार था, किन्तु अब तक वह रहा, स्वच्छन्दतापूर्वक रहा और हमारी गर्दन पर पैर रख कर रहा । हमारी सेनाओं के उद्योधो में सदैव उसने विघ्न हो उपस्थित किया । उसको मति का कोई अन्त नहीं, हम विगूड बने हैं और, आज हमारी यह स्थिति बन चुकी है कि हमें अपने विश्वासपात्र मित्रों पर भी विश्वास नहीं है ॥ २६ ॥

English—King—We are unable to surpass Noble sir's arguing. But after all Rakshasa is more praiseworthy.

Chanakya—(In anger) 'Not you' is the remaining part of the sentence O Vrishala, what has he done ?

King—Listen from me, He, a lion-hearted .—

Dwelt in the city which had been captured by us, as long as he desired planting his foot on our very neck and forcibly offered destruction to the ,proclamation of victory. Thus my mind is thrown into great confusion with the majesty of his policy and we do not trust even the most trustworthy of our own partisans 26

टिप्पणी—इस श्लोक में दीपक, अतिशयोक्ति एवं उदात्त अलंकार एवं शार्दूलविक्रीडित छन्द है ॥ २६ ॥

विमला

व्याख्या—चाणक्य—[विहस्य=हास्य कृत्वा (laughing)], राक्षसेन (by Rakshasa), एतत्=कार्यम् (this), कृतम्=सम्पादितम् (was done), वृषल (Vrishal), मया=चाणक्येन (by me), पुनर्ज्ञातम्=बुद्धम् (thought), नन्दमिव (like Nanda), भवन्तम् (you), उद्धृत्य=उत्पाद्य (having been uprooted), भवानिव=स्वमिव (like you), भूतले=पृथिव्याम् (in the world), राजाधिराजपदे (to the dignity of king of kings), मलयकेतु (Malayaketu), नियोजित इति (has been raised)

राजा—आर्षस्य=पूज्यस्य (Noble sir's), अत्र=अस्मिन् विषये (in this), किम् (what has), इदम्=एतत् (that), अन्येनैव=आन्येनैव (it was another), अनुष्ठितम्=सम्पादितम् (was done)

चाणक्य—हे मासरिन्=हे अन्योत्कर्षासहनशील (O you Detractor).

अन्यः—लोकप्रत्यक्षम्, आरुह्यारुढकोपस्फुरणविपमिताग्राहुलीमुक्तचूडाम्, उग्राम्, सकलरिपुकुलोत्साददीर्घाम्, प्रतिज्ञाम्, आरुह्य, केन, अन्येन, अचलिता, नवनवतिसत्-द्रव्यकोटीधरा, ते, नन्दा, राक्षसस्य, परयत्, एव, पर्यावभूता, पश्य, ह्य, इति ॥ २६ ॥

नेनान्तेनावलिता नवनवतिशतद्रव्यकोटोऽम्बरास्ते

नन्दाः पर्यायभूताः पशव इव हताः पश्यतो राक्षसस्य ॥ २७ ॥

व्याख्या—लोकप्रत्यक्षम् = लोकसमक्षम् (in the presence of the people), बारुडकापसुराग्विषमिडाकुलं मुकुचूढम् = संज्ञातद्वेषावेसासनाकुल्यप्रनागच्यावित-
शिलान् (the knot of hair was loosened by the tips of fingers forcibly agitated by the flashing of anger), उग्राम् = बोरा (a dreadful), मकरिपुङ्गवस्तादृशांश्च = निखिलसुखविनाशमहतीम् (difficult to be performed because the whole race of enemies having to be destroyed), प्रतिज्ञान् = प्रतिश्रुतम् (vow), अप्रज्ञा = विषय (having made), क्वन = अन्येन (by whom else), अवलिता = हता (the proud), नवनवतिशतद्रव्यकोटोऽम्बरास्ते = नवत्यन्येन स्वामिनः (masters of ninety-nine hundred crores of gold coins), त नन्दाः = दुष्टत्वेन प्रसिद्धनन्दाः (Nine Nandas), राक्षसस्य = वयामसासितस्य (Rakshasa's), परपश्य = अवलोक्यतः (looking on), एव, पर्यायभूताः = एकर-श्रुतिवदाः (in succession), पशवः = द्वागलाः (beasts), इव = यथा (like), हता = विनाशिताः (killed). ॥ २७ ॥

हिन्दी—चाणक्य—(हँसत हुए) अच्छा तो, यह सब राक्षस का कर्म है। इन्हें, मैंने तो सन्यासे वेष्टे तुम्हें हा वसने ग्रा पर से नन्द का वरह वगैरा दिया हा और नन्दकेन्द्र को उस पर तुम्हारा मौखिक देहा बना है।

राजा—अब यह सब तो मामू से हुआ है, इसमें आज के क्या की बात बेशी ?

चाणक्य—ओ इप्पांड,

मेरे अतिरिक्त ऐसा काम है विजने वस राक्षस के देखत-देखत, सारी दुनियाँ के सानने, करने शत्रु के सुख-सुख का यह नन्दहूँ प्रदिश का, जिसने स्वयं के बावस से कौरव जार की प्रदिन मुलितों ने दिना खोड बाडा और जिसके द्वारा अन्धित वन-सन्धि के स्वामि, नन्दमिनाना नन्दराज नन्द और उनके बन्धु-पुत्रों की मौखिक एक के बाद एक नैत के वा-वज्ज हाड गये ॥ २७ ॥

English—Chanakya—(laughing) This, It was done by Rakshasa ? I thought, however, Vrishala, that like you Malayaketa has been raised in the world to the dignity of king of kings and you having been uprooted like Nandas.

King—It was another that did this, what is in it of my noble sir ?

Chanakya—O, Detractor, By whom else, having made the grim vow in the presence of the people, difficult to be performed on account of the extirpation of the entire family of the enemy and in which the knot of hair was unloosened with the tips of fingers that were unsteadied by the sway of wrath that was rising within were the proud nine Nandas, the master of ninety-nine crores of gold coins, killed by turns like beasts under the very eyes of Rakshasa 27.

अपि च—

गृधैरावद्धचक्रं विधति विचलितैर्दीर्घनिष्कम्पपक्षैः^{५१५}

धूमैर्ध्वस्तार्कभासां सघनमिव दिशां मण्डलं दर्शयन्तः ।

नन्दैरानन्दयन्तः पितृवननिलयान् प्राणिनः पश्य चैतान्

निर्वान्त्यद्यापि नैते स्मृतबह्वलवसावाहिना हव्यवाहाः ॥ २८ ॥

टिप्पणी—इस श्लोक में अर्थापत्ति एवं उपमा अवलोक्य तथा 'सन्धरा' वृत्त और ओजोगुण पद गाँधी रोनि हैं ।

विमला

अन्वयः—परम, विधति, आवद्धचक्रम्, विचलितैः, दीर्घनिष्कम्पपक्षैः, गृध्रैः, धूमैः, ध्वस्तार्कभासाम्, दिशाम्, मण्डलम्, सघनम्, इव, दर्शयन्तः, नन्दैः, च, पितृवननिलयान्, एतान्, प्राणिनः, आनन्दयन्तः, स्मृतबह्वलवसावाहिनाः, एते, हव्यवाहाः, अद्य, अपि च, निर्वान्ति ॥ २८ ॥

व्याख्या—परम = अवलोक्य (see), विधति = आकाशे (in sky), आवद्ध-चक्रम् = रचितमण्डलम् (making the circle), विचलितैः = घमझिः (hovering), दीर्घनिष्कम्पपक्षैः = आयतनिष्ठलच्छदाः (with wide and quiverless wings), गृध्रैः = वायुर्ध्वः (vultures), तैरेव धूमैः = चिताग्निधूमः (by the smoke), ध्वस्ता = विनष्टा (dimmed), अर्कस्य = सूर्यस्य (of the sun), भासाः = कान्तयाः (to the rays), दिशाम् = भासानाम् (of directions), मण्डलम् = चक्रकम् (round in circles), सघनम् = समेघम् (with clouds), इव = यथा (like), दर्शयन्तः = अवभासयन्तः (to appears), नन्दैः (Nandas), पितृवननिलयान् = रमणानां वासन (live on the burning ground), एतान् = पुरोदयमानान् (these), प्राणिनः = जीवान् (creatures), आनन्दयन्तः = प्रीणयन्तः (entertaining), स्मृतबह्वलवसावाहिनाः = कायनिसृतस्मेदधारिणः (which containing a large store of marrow), एते = दृश्यमानः (these), हव्यवाहाः = अग्नयः (funeral fires), अद्यापि = समग्रायपि (even yet), न = नहि (do not), निर्वान्ति = शाम्यन्ति (go out). ॥ २८ ॥

हिन्दी—और भी—

देखो, अभी भी उस अग्नि की वे छिपटली लपटें, जले-भरे नन्दों से हमशानवासी जीवों को लुप्त करने वाली ये ज्वालायें, नन्द के वृक्षधरो की पिघलने वाली चर्बियों से धूधु कर जलने वाली ये अग्नि शिखारें—दीर्घ निष्कम्प पक्षवाले चारों ओर आकाश में चक्कर काटते हुए गिद्धों के रूप में प्रत्यक्ष प्रतीत होने वाली घूमराशियों हैं नष्ट मूर्खालोक दिशाओं में घनान्धकार फैलाने वाली लपटें—अभी भी वहाँ बुझो हैं ॥ २८ ॥

English—Moreover—Behold, even yet do not go out these funeral fires, which containing in them a large store of marrow dripped down, and making the circle of directions appears as if clouded with sunlight dimmed by smoke in the shape of vultures hovering in the sky in circles with wide and quiverless wings, and

राजा—अन्येनेवेदन्तुष्टितम् ।

चाणक्यः—आः, केन ।

राजा—नन्दकुलविद्वेषिणा दैवेन ।

चाणक्यः—दैवमविद्वत्स प्रमाणयन्ति ।

राजा—विद्वानोऽप्यविकल्पना भवन्ति ।

चाणक्यः—(मन्त्रेणम्) वृषल, भृत्यनिव मानारोढुमिच्छति ।

entertaining the creatures that haunt the cemetery with a feast on the Nandas. 28.

टिप्पणी—इत्यन्तरः—इत् + अ + क् + कर्त्तृ + क्त + चिन्ति धातुः ।

(२) वृषल इति—वृ + लृ + क् + कर्त्तृ + क्त + चिन्ति धातुः ।

(३) निरन्तरं—निर + वा + लृ + क्त + चिन्ति ।

१३ श्लोक ने वृषला अलकार उमा सग्वरा इति है ।

विमला

व्याख्या—राजा—अन्येन (by another), एव=निश्चये (indeed), इदम् = एतत् (these), अनुष्ठितम् = कृतम् (has been done).

चाणक्यः—आः = आश्चर्यम् (Ah), केन (by whom).

राजा—नन्दकुलविद्वेषिणा (that hates the family of Nandas), दैवेन = भाग्येन (by fate).

चाणक्यः—दैवम् = भाग्यम् (fate), अविद्वान्तः = मूर्खाः (illiterate alone), प्रमाणयन्ति = प्रमाणं कुर्वन्ति (believe in)

राजा—विद्वान्तोऽपि = विद्वोऽपि (the literate too), अविकल्पना = भास-प्रशमिता (not given to boasting), भवन्ति (are).

चाणक्यः—[सक्रोधम् = सक्रोधम् (in anger)], वृषल (Vrishal), भृत्यनिव = दासनिव (like a servant), मान् = चाणक्यम् (me), आरोढुम् (to over ride), इच्छति = वाञ्छति (you wish).

हिन्दी—राजा—ये सारी बातें दूसरों के द्वारा हो चुकी हैं ।

चाणक्य—आह, किसके द्वारा ?

राजा—नन्दकुल से द्वेष करनेवाले भाग्य के द्वारा ।

चाणक्य—भाग्य को मूर्खाने प्रमाण मानते हैं ।

राजा—विद्वान् लोग भी अविकल्पक नहीं होते हैं ?

चाणक्य—वृषल, नीकर के समान मेरे साथ व्यवहार करना चाहते हो ।

English—King—These all have been done indeed by another.

Chanakya—Ah, by whom ?

King—By fate that hates the family of the Nandas.

Chanakya—The illiterate alone believe in fate.

King—The literate too are not given to boasting.

शिखां मोक्तुं बद्धामपि पुनरयं धावति करः

(भूमौ पाद प्रहृत्य)—

प्रतिज्ञामारोहं पुनरपि चूलत्येव चरणः ।

प्रणाशाच्छन्दानां प्रशममुपयात त्वमधुना

परीतः कालेन ज्वलयसि मम क्रोधदहनम् ॥ २९ ॥

Chanakya—(In anger) Vrishala, do you wish to trample down me like a slave.

विमला

अन्वयः—बद्धाम्, अपि, शिखाम्, मोक्तुम्, अयम्, कर, धावति, एव, चरणः अपि, पुनः प्रतिज्ञाम्, आरोहुम्, चलति, नन्दानाम्, प्रणाशात्, प्रशमम्, उपयातम्, मम, क्रोधदहनम्, अधुना, कालेन, परीतः, त्वम्, ज्वलयसि ॥ २९ ॥

व्याख्या—बद्धाम्=संयमिताम् (tied up), अपि (also), शिखाम्=बद्धाम् (the knot of hair), मोक्तुम्=अपगतबन्धाम् कर्तुम् (to loosen), अयम्=एव (this), करः=हस्तः (hand), धावति=प्रसरति (runs), पुनः (again)—

[भूमौ=पृथिव्याम् (the ground), पादम्=चरणम् (foot), प्रहृत्य (stamping)] :—

प्रतिज्ञाम्=प्रणम् (vow), आरोहुम्=कर्तुम् (to enter into), चलति (moves), नन्दानाम् (Nandas), प्रणाशात्=विनाशात् (by the destruction), प्रशमम्=शान्तिम् (extinction), उपयातम्=प्राप्तम् (go out), मम=(my), क्रोधदहनम्=कोपाग्निः (the fire of wrath), अधुना=सम्प्रति (now), कालेन=मृत्युना (by the god of death), परीतः=वशीकृतः (being doomed), त्वम् (you), ज्वलयसि=उद्दीपयसि (inflame) ॥ २९ ॥

हिन्दी—प्रायः वैभी दुर्ग शिखा को पुनः खोलने के लिए यह हाथ दौड़ रहा है ।

(=मीन पर पैर पटक कर)—

वह पैर भी प्रतिज्ञा पर आरुह होने के लिए आगे बढ़ रहा है । नन्दों के नष्ट हो जाने से शान्त हुई मेरी कोपाग्नि को इस समय मृत्यु के द्वारा वश में किये गये तुम प्रज्वलित कर रहे हो ॥ २९ ॥

English—My hand again runs to loosen the knot of hair though tied up—(Stamping on the ground with his foot) and this foot too rushes to enter into vow. Encompassed by death you now inflame the fire of my wrath that was extinguished by the destruction of Nandas. 29.

टिप्पणी—ज्वलयसि—ज्वल्+ञिच्+छट्+तिप् । इस श्लोक में रूपक अलङ्कार तथा शिखरान्धो छन्द है ।

राजा—(सावेगमात्मानम् ।) अरे, कथं सन्यमेवार्यः कुपितः । तथाहि—

संरम्भोत्पन्दिपदनशरदमलजलजालनक्षामयापि

भ्रमद्भोद्वेदधूमं ज्वलितमिव पुरः पित्र्या नेत्रभासा ।

मन्ये वदस्य रौद्रं रसमभिनयतस्ताण्डवेषु स्मरन्त्या

संजातोप्रप्रकम्पं कथमपि धरया धारितः पादघातः ॥ ३० ॥

विमला

राजा—[सावेगम्=उद्वेगसहितम् (in agitation), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself), अरे=आश्चर्यसूचकसम्बोधनम् (ah), कथम्=कस्मात् (how), सत्यमेव=यथार्थरूपेण (is really), आर्यः=चाणक्यः (Noble sir), कुपितः=क्रोधितः (angry), तथाहि (Thus) :—

अन्वयाः—संरम्भोत्पन्दिपदनशरदमलजलजालनक्षामया, अपि पित्र्या, नेत्रभासा, भ्रमद्भोद्वेदधूमं, पुरः, ज्वलितम्, इव, मन्ये, ताण्डवेषु, रौद्रम्, रसम्, अभिनयतः, वदस्य, स्मरन्त्या, धरया, संजातोप्रप्रकम्पम्, कथमपि, पादघातः, धारितः ॥ ३० ॥

व्याख्या—संरम्भेन=क्रोधावेगेन (in anger), उत्पन्दिनी=उत्थलितानि (raised up), यानि पद्मानि=नेत्रलोमानि (the eyelids), तैम्यः धरता=गलता (dropping), अनलजलेन=विमलक्रोधाश्रुणा (by the clear water), घट्वालनम् (by being washed), तेन क्षामया=रूक्षया (infirm), अपि (also), पित्र्या=अक्षया (ruddy), नेत्रभासा=नयनकान्त्या (lustre of eyes), भ्रमद्भोद्वेदधूमः=कोपजस्यविकृतिधूमः (the knittings of the eyebrows appeared like smoke), पुरज्वलितम्=अग्नेप्रदीप्तम् (flashed forth), इव=यथा (like), मन्ये=सम्भावयामि (methinks), ताण्डवेषु=नृत्येषु (in frantic dances), क्रोधात्मकम् रौद्ररसम्=क्रोधात्मकम् रसनम् (the Rudra rasa), अभिनयतः=अभिनयं कुर्वतः (acting), वदस्य स्मरणस्या=सिबस्य स्मृतिमभिगच्छता (have remembered Rudra), धरया=पृथिव्या (by the earth), संजातः=उत्पन्नः (was born), उग्रः=भयङ्करः (fearful), कम्पः=कम्पनः (quaking), कथमपि=कथञ्चित् (with difficulty), पादघातः=चरणप्रहारः (the stamping of his foot), धारितः=सोढः (has been withstood). ॥ ३० ॥

हिन्दी—राजा—(वनराष्ट्र के साथ अपने साथ) अरे क्या मचलुच आर्य कुपित हो गये । अरे :—

क्रोध के कारण पटकने वाली पटकों से गिरने वाले स्वच्छ जल से धुल जाने के कारण मन्द पड़ी हुई मी ठाल नेत्रों की ज्वाला के द्वारा मुकुटमङ्गिराकार्थी निर्गत धूमधूँक, सामने मानो प्रज्वलित हुआ-आ प्रतीत होता है, मानो ताण्डवनृत्य में रौद्र रस को अभिनीत करने वाले रुद्र का स्मरण करते हुए पृथ्वी के द्वारा, अपने में उत्पन्न भयङ्कर कम्पन के साथ किसी तरह चरण का प्रहार दुमद प्रतीत हुआ ॥ ३० ॥

चाणक्य — (कृतककोप सहित्य ।) वृषल वृषल, अलसुत्तरोत्तरेण । यद्यस्मत्तो गरीयान् राक्षसोऽनगम्यते तदिदं शस्त्रं तस्मै दीयताम् । (इति शस्त्रमुत्सृज्योत्थाय चाकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा, स्वगतम् ।) राक्षस, एष भवतः कौटिल्यबुद्धिविनिगीपो-
बुद्धेः प्रकर्षः —

चाणक्यतश्चलितमकिमहं सुखेन

जेष्मामि मौर्यमिति संप्रति यः प्रयुक्तः ।

English—King—(In agitation—to himself) Ha, how so, Noble sir, is really angry . Thus—His ruddy eyes though dimmed by being washed by the clear water dropping from the eyelids raised up in anger flashed forth As if it were fire in which the knittings of the eyebrows appeared like smoke, and methinks the blow with the foot has been withstood by the earth somehow with a rude shock felt as if remembered Rudra acting the sentiment of wrath at his dances 30

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक और उपमेया अलङ्कार और सत्परा छन्द है ।

विमला

व्याख्या—चाणक्य —[कृतकम्=भक्तप्यम् (Pretended), कोपम्=क्रोधम् (anger), सहस्य=परित्याग (checking)], वृषल वृषल=वीर्यायां द्विरुक्तिः (Vrishal, Vrishala), उत्तरोत्तरेण=वाग्विन्द्यासेन (of bandying words), अलम्=अल्पम् (enough), यदि, राक्षस =नन्दसचिव (if Rakshasa), अस्मत्तो गरीयान् =अस्मद्वेद्यया श्रेष्ठ (superior to me), अवगम्यते=अवबुध्यते (you think), तस्मादिदम्=एतत् (then let this), शस्त्रम्=आयुधम् (the weapon), तस्मै=राक्षसाय (to him), दीयताम्=प्रत्यर्प्यताम् (be entrusted), [शस्त्रम्=आयुधम् (weapon), उत्सृज्य=परित्यज्य (throwing down), च=पुनः (again), उत्थाय (rising), आकाशे=वर्षसि (in sky), लक्ष्यम् बद्ध्वा=पुण्याकार निश्चय (fixing the gaze), स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)], राक्षस (Rakshasa), कौटिल्यबुद्धिविनिगीपो =चाणक्यमार्गवतिक्रमणाभिलाषिण (in your desire to outdo the genius of Kautilya), भवतः =तव (your), एष =असौ (this is), बुद्धेः =धियः (intellect), प्रकर्षः =उत्कर्षः (the height)

अन्वय — शठ, चाणक्यतः, चलितमक्तिम्, मौर्यम्, अहम्, सुखेन, जेष्मामि, इति, सम्प्रति, भवता, यः, एष, भेद, प्रयुक्तः, किल, स, सकलः, एव, तव, एव, हि, वृषणाय, सम्प्राप्त्यते ॥ ३१ ॥

व्याख्या—शठ=धूर्त (O cunning one), चाणक्यतः=चाणक्यात् (to Chanakya), चलितमक्तिम्=विनष्टाधर्मा (has swerved from devotion), मौर्यम्=चन्द्रगुप्तम् (Maurya), अहम्=भेदप्रवण राक्षस (I), सुखेन=अनायासेन (easily), जेष्मामि=पराभविष्यामि (conquer), इति=इत्थं विचार्य (thinking

भेदः किलैष भवता सकलः स एव
संपत्स्यते शतं तवैव हि दूषणाय ॥ ३१ ॥
(इति निष्क्रान्तः ।)

that), सम्प्रति = अब (now), भवता = स्वया (by you), यः एष = अस्मान्निः
परिज्ञातः (which has been), भेदः = उपजापः (hitting), प्रयुक्तः = उपक्रान्तः
(adopted), किल मः = त्वया प्रयुक्त (that), सकलः = समग्रः (whole),
एव भेदः तवैव = भवत एव (in your own), हि = इति निश्चयेन (indeed),
दूषणाय = भेदाय (conviction), संपत्स्यते = सम्प्लियति (will end), इति
निष्क्रान्तः (Exit). ॥ ३१ ॥

हिन्दी—वाणस्प—(कृपेन कोर को दूर कर) वृषल, वृषल, तुमने तुमने वाद-विवाद
नहीं करना है। कहे तुम राक्षस को हमने रहा समझते हो, दे दो यह शस्त्र उसे (इधिरार
फेंककर, उठते हुए आकाश को ओर देखकर स्वगत) राक्षस, राक्षस, कौरव्य को तुम्हारे
विजयी हो न ! तुम्हारी बुद्धि का ऐसा प्रदर्शन !

मरे वृत्त, क्या यह बाल इच्छित नहीं है कि चन्द्रगुप्त को वाक्प से दिव्यमति
देखते ही उसे अनायास बीज लगे। तुमने जो यह पूछ इन दोनों में पैदा करने की चेष्टा की
है, देख लेना किस प्रकार तुम्हारा हो सर्वनाश करेगा ? ॥ ३१ ॥

(बाहर चला जाता है)

English—Chanakya—(Checking his pretended anger) Vrishala,
Vrishala, no use bandying words. If Rakshasa is superior to me
give him this weapon (Throwing down the weapon, rising and fix-
ing the gaze in the sky) Rakshasa, Rakshasa, this is indeed the
height of your wit that tries to beat the intellect of Kautilya !

The whole plan of dissension, which is now adopted by you
thinking that you would very easily conquer Maurya, when he has
swerved from his devotion to Chanakya, will end, O Rogue result
in your own disgrace 31.

(Exit)

टिप्पणी—(१) उदरोदरेन—उत्तरात्मेन इति—उद् + उ + अन् करने उत्तरन्, उत्तरत्स
उत्तरन्—वादविवाद देन । करना में वृत्तान्त है।

(२) गरीयान्—अतिशयेन शुकः इति—शुक् + इन्द्रन् = शर = इन्द्रन्—गरीयान् ।

(३) चलिमतिन्—चलिते मज्जितस्य । सान्त्वये नमुनकन् ।

(४) तवैव हि दूषणाय—यहाँ 'दूषणाय' ने 'दूषणं सम्पन्नाने च' इस वाक्यिक त चतुर्थी
है। दुष् + णिच् + लुट् + मात्वे दूषन, टले।

इस श्लोक ने 'विषम' अलङ्कार तथा 'चतुर्विधका' छन्द है। प्रसाद पुन एव वैद्यों
रोषि है।

राजा—आर्य वैहीनरे, अतः प्रभृत्यनादृत्य चाणक्य चन्द्रगुप्त स्वयमेव राज्यं करिष्यतीति गृहीतार्थां क्रियन्तां प्रकृतयः ।

कञ्चुकी—(आत्मगतम् ।) कथं निरुपपदमेव चाणक्यमिति, नार्यचाणक्यमिति । हन्तः, सगृहीतोऽधिकारः । अथ वा न खन्वत्रवस्तुनि देवदोषः । कुत — स दोषः सचिवस्यैव यदसत् कुरुते नृपः ।

याति यन्तु प्रमादेन गजो व्यालत्ववाच्यताम् ॥ ३२ ॥

विमला

व्याख्या—राजा—आर्य=आर्य श्रीमन् (Noble sir), वैहीनरे (Vaihinari), अतः प्रभृति = अघारम्भ (henceforth), चन्द्रगुप्त = मौर्य (chandragupta), चाणक्य = कौटिल्य (Chanakya), अनादृत्य = तिरस्कृत्य (ignoring), स्वयमेव=साक्षादेव (himself), राज्यम् = निग्रहानुग्रहसमकृत्यम् (the affairs of state), करिष्यति=विधास्यति (will do), इति=एतत् वृत्तम् (this), प्रकृतयः = प्रजा (subjects), गृहीतार्थां = अवगत्यभिप्राया (be informed), क्रियन्ताम् = विधीयन्ताम् (let be)

कञ्चुकी—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)] कथम् = कुत (How is), निरुपपद = विशेषणशून्य (without a honorific added), चाणक्य (only Chanakya), नार्यचाणक्यम् इति=आर्यचाणक्यम् इति शब्दो न प्रयुक्त (not noble Chanakya), हन्त=खेदे (Alas!), सगृहीत = हत (withdrawn), अधिकार (authority), अथवा=वा (or), न खन्वत्र वस्तुनि=नैवास्मिन्नधिकार-हरणे (not in this matter) देवदोष = चन्द्रगुप्तापराध अस्ति (fault is sire's), कुत (for) —

अन्यदः—नृप, यत्, असत्, कुरुते, स, सचिवस्य, एव, दोषः । यन्तु, प्रमादेन, गजः, व्यालत्ववाच्यताम्, याति ॥ ३२ ॥

व्याख्या—नृप = राजा (King), यत् = यत् किमपि (to attempt), असत् अनुचितम् (dishonours), कुरुते=विद्यतां (is), स (that), सचिवस्य=मन्त्रिण (of the minister), एव = इत्यवधारणे, दोषः=अपराध (the fault), यन्तु इतिपक्षस्य (of the driver), प्रमादेन=अनवधानतया (through carelessness), गजः=इस्ती (an elephant), व्यालत्ववाच्यताम्=दुष्टगजत्वेन निन्द्यताम् (to be censured as a vicious animal), याति=प्रानोति (comes) ॥ ३२ ॥

हिन्दी—राजा—आर्य वैहीनरे । आज से चाणक्य को हटावा, अब चन्द्रगुप्त स्वयं राज-काज करा, जाओ और प्रजाओं को इससे अवगत करा दो ।

कञ्चुकी—(स्वगत) अरे, आज तो केवल 'चाणक्य' कह दिया, 'आर्य चाणक्य' अब गये, उनका सारा अधिकार भी चला गया—इसमें महाराज का क्या दोष ?

यह तो सचिव का दोष है जो राजा कुछ अनुचित कर बैठे । महावत को अज्ञातवधानों के कारण ही तो हाथी सिंगड जाता है ॥ ३२ ॥

राजा—आर्ये, किं विचारयसि ।

स्मृत्वा—देव, न किञ्चित् । दिष्टया देव इदानीं देवः सञ्जितः ।

राजा—(आत्मगतम् ।) एवमस्मात्तु गृह्यमाणेषु स्वचर्यसिद्धिदामः सज्जनो भवत्यार्यः । (प्रकाशम् ।) शोणोत्तरे, अनेन शुष्ककलहेन शिरोवेदना मा बाधते । गयनगृहमदिशय ।

प्रतीहारी—एतु एतु देवो । (एतु एतु देव) ।

राजा—(आत्मगतम् ।)

English—King—Venerable Vaisnava, let the subjects be informed that henceforth, ignoring Chanakya, Chandragupta himself will rule.

Chamberlain—(To himself) How is it he says 'Chanakya' without a honorific added, not noble Chanakya ? Alas ! Authority has been drawn from him or in this matter sire is not to blame For—

It is the fault of the minister himself if the king dishonours him. The taker comes to be branded as a 'rogue' through the carelessness of the driver. 32.

टिप्पणी—(१) निरुपपन्नम्—विना किसी अदरमूलक विनय के । 'निरस्तम् वरदम् अस्मादायम्' ।

(२) अमलपुरे—'अदरानादरयो नदसो' मूल से अन्ध कर ।

(३) व्याख्यान—पाण्डु हाथा को 'व्याध' कहन है ।

इस दृष्टि के नै इष्टान्त जलद्वार पर अनुपपन्न है ।

निमिता

व्याख्या—राजा—आर्य (Noble sir), किम् (what), विचारयसि = चिन्तयसि (thinking of).

स्मृत्वा—देव = राजन् (Sire), न किञ्चित् = न किनपि (nothing), विचारयानि = चिन्तयानि (I think), दिष्टया = भाग्येन (luckily), देव = राजन् (sire), इदानीम् = अनुना (now), देवः स्मृतः = देवपदमाप्त्यो जातः (has become a king).

राजा—[आत्मगतम् = स्वगतम् = to himself], एवम् (in this light), स्वकार्यसिद्धिदामः = आत्मकृत्यनिष्पत्तिमाप्ती (expects success in the undertaking), सकामः = सकामनोन्मोहः (have his desire fulfilled), भवतु (let be), आर्यः (Noble sir), [प्रकाशम् = (aloud)], शोणोत्तरे (Sonottara), अनेन (through this), शुष्ककलहेन = अर्धद्विवादः (dry quarrel), म.म् = चन्द्रगुप्तम् (me), शिरोवेदना = शिरोव्याधः (a headache), बाधते = पीडयति (is troubling), गयनगृहम् (the bedroom), अदिशय (show)

प्रतीहारी—एतु एतु (come let come), देवः = धर्मराजः (sire).

राजा—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)]

आर्याक्षयैव मम लङ्घितगौरवस्य
 बुद्धिः प्रवेष्टुमिव भूविवरं प्रवृत्ता ।
 ये सत्यमेव हि गुरुनतिपातयन्ति
 तेषां कथं नु हृदयं न भिनत्ति लज्जा ॥ ३३ ॥
 (इति निष्क्रान्ता सर्वे ।)

तृतीयोऽङ्कः ।

हिन्दू—राजा—आर्य, क्या सोच रहे हो ?

कञ्चुकी—कुछ नहीं महाराज ! बस यही कहना चाह रहा हूँ कि आप महाराज महाराज हुए ।

राजा—स्वाग) लोगों में मेरो इस प्रसिद्धि से आर्य को जो कुछ सिद्ध करना अभीष्ट हो, कर लें (अर्थात्) शोणोत्तरे, इस मूले कचह से मुझे तो भारी सिर दर्द हो गया । मुझे शयनगृह का मार्ग दिखाओ ?

प्रतीहारी—इधर आइए महाराज ।

राजा—अपने आप) —

English—King—Noble Sir, what are you thinking!

Chamberlain—Nothing Sire, I am glad Sire has now become a King in reality

King—(Aside) Let His Honour wishing to accomplish his object realize his desire, by our being looked on in this light, (aloud) Sonottara, through this dry wrangle a headache is troubling me Show me the bed room

Chamberlain—Come, Let Sire come

King—(To himself)—

विमला

अन्वयः—आर्याक्षयः, एव, लङ्घितगौरवस्य, मम, बुद्धिः, भूविवरम्, इव, प्रवेष्टुम्, प्रवृत्ता, ये, सत्यम्, एव, हि, गुरुन्, अतिपातयन्ति, तेषाम्, हृदयम्, लज्जा, कथम्, नु, न, भिनत्ति ॥ ३३ ॥

व्याख्या—आर्याक्षयः=पूज्यादेशेन (by the command of Noble sir), एव=इति अवधारणे, लङ्घितगौरवस्य=प्रतिक्रान्तमर्यादाया (overstepped the bounds of respectfulness), मम (my), बुद्धिः=मति (mind), भूविवरम् इव=पृथिव्या द्विदमिव (the very cavity of the earth), प्रवेष्टुम्=गन्तुम् (to enter), प्रवृत्ता=उत्पत्ता=उत्पत्ता आस्ते (the intention arises), ये=येषां (those), सत्यमेव=वैयर्थ्यमेव (really), हि=इति पादपूर्वार्थमेव, गुरुन्=पूज्यान् (preceptors), अतिपातयन्ति=अवज्ञानयन्ति (slight), तेषाम्=गुरुन् तिरस्कृतान्

(their), हृदयम्=वस्यन्तम् (the hearts), लज्जा=शोभा (shame), कथन्तु =
कस्माच्च (how does not), भिद्यति=विदारयति (rend). इस श्लोक में अर्थात्
बतकर सब वन्द्यविलास हन्त है ॥ ३३ ॥

हिन्दी—जब आँसु की जल से हो इनने उनके चौराह का उत्पन्न किया है, वह जो
यदि इनका हृदय ऐसे जल से उठा है, जैसे जल में वस जाया चाहता हो, वह नष्ट
इन लोगों के हृदय को तो लज्जा से बत हो जाना चाहिए जो सुबसुब अपने से बड़ों का जमान
किया करते हैं ॥ ३३ ॥

English—My mind has as if it were to enter the very cavity
of the earth though I overstepped the bounds of respectfulness at
the command of Noble Sir himself. How is it that shame does not
rend the heart of those who really insult their preceptors. 33.

(Depart all)

सुशलाइय मृगीय बक की 'विनय' व्याख्या सुनाइ ।



चतुर्थोऽङ्कः

(तत् प्रविशत्यध्वगवेप पुरुष ।)

पुरुष — ही हीमाणहे हीमाणहे । (अहो, आश्चर्यम्, आश्चर्यम् ।)

‘जो अणसअं समधिअं को णाम गतागतमिह करेइ ।

अट्टाणमणगुच्ची पहुणो अण्णा जइ ण होइ ॥ १ ॥

(योजनशत समधिक को नाम गतागतमिह करोति ।

अस्थानगमनगुर्वा प्रभोराज्ञा यदि न भवति ॥ १ ॥)

विमला

[तत् = तदनन्तरम् (after that), प्रविशति = प्रवेश करोति (enter), अध्व-
गवेप = पथिकाकृति (in a traveller's costume), पुरुष = मानव (man)]

पुरुष — आश्चर्यमाश्चर्यम् = निपात, अतिस्वार्थप्रतिपादनाय द्विरुक्तिः ।

अन्वय — अस्थानगमनगुर्वा प्रभो, आज्ञा, यदि, न भवति, इह, को नाम
समधिकम्, योजनशतम् गतागतम्, करोति ॥ १ ॥

व्याख्या — अस्थाने = अनवसरे (at an unseasonable hour), गमने = यात्रा-
विषये (has to go), गुर्वी = अनुक्लृणीया (inviolable), अथवा = or अस्थाने =
अविद्यमानम् स्थानम् = स्थिति विराम इति यावत् यस्मिन् तादृशम्, यत् गमनम् तेन
गुर्वी गुरुतरा (ceaselessly has to go), प्रभो = स्वामिन (of the master),
आज्ञा = आदेश (the command), यदि = चेत् (if), न भवति (it were not),
इह = अस्मिन् (in this matter) को नाम = को जन (who), समधिकम् =
पर्याप्तम् (more), योजनशतम् (a hundred Yojanas), गतागतम् = गमना
गमनम् (to go and come back again), करोति (would undertake) ॥ १ ॥

हिन्दी — (इसके बाद पथिकवेशधारी पुरुष का प्रवेश)

पुरुष — अहो, आश्चर्य है, आश्चर्य है ।

अनवसर में ही चल पड़ने के विषय में अनुक्लृणीय अथवा निरन्तर यात्रा करने से गुरुतर
अथवा अनुचित स्थान में जाने से गुरुतर स्वामी की आज्ञा यदि नहीं होती तो इस सत्कार में
कौन व्यक्ति सैकड़ों योजन आने-जाने को प्रस्तुत होता है ॥ १ ॥

English — (Enter a man in a traveller's costume)

Man — What wonder oh ! Who indeed in this matter would do the
going and coming back over a hundred Yojanas and more if there
were no master's command, inviolable even when one has to go at
an unseasonal hour !

टिप्पणी — अध्वगवेप — अध्वन् + गन् + ५ विलुक्त्वार्द्ध । इस श्लोक में काव्यलिङ्ग अलङ्कार
एव आर्यो छन्द है ।

जाय अमबरक्षसमस्त एव गेहं गच्छामि । (श्रान्तवत्परिक्रम्य ।) को एव
दुवारिणः । निवेदेह भट्टेणो अमबरक्षसमस्त एतो ररमओ तुमन्तो पटालि-
पुत्ताआदा आगदोत्ति । (यामदनात्यरात्रसत्येतद्देहं गच्छामि । काऽत्र दौवारिका-
णाम् । निवेदय भर्तुरनात्यरात्रमस्य एव कर्मकस्त्वरत्नं पाटलिपुत्रादागत इति ।)
(प्रविश्य ।)

दौवारिकः—भद्र, सणेत्तिं मन्नेत्ति । एसो अमवा कञ्चिन्ताज्जणिदेण
चाअरेण समुत्पण्णमीनवेअणो अत्र पि मअण ण मुञ्जति । ता चिट्ठं मुहुत्तअ ।
लंघायमरो तुद आअमण निवेदेमि । (भद्र, शनैर्मन्त्रय । एषोऽमात्यं कार्य-
चिन्तानतितनं चागरेण समुत्पन्नरापेवेदनोऽद्यापिशयनं न मुञ्जति । तस्मात्तिष्ठ
मुदूर्तम् । लंघायसरस्तवागमनं निवेदयामि ।)

पुत्रप—भद्रमुद, तद् करोहि । (भद्रमुप, तथा कुर्व ।)

विमला

यवत्-निपातोऽयम्, अमायराक्षसस्य = नन्दसचिवस्य (of the minister
Rakshasa), एतद् = प्रत्यक्षदृश्यमानम् (this is), गेहम् = गृहम् (house),
गच्छामि = यामि (I will go there), [श्रान्तवत् (as if fatigued), परिक्रम्य
(going round)], दौवारिकानाम् = द्वारप्रागनिवृत्तानाम् (of the warders),
अत्र = अस्मिन् स्थाने (here), क = किरानवेयं जनस्तिष्ठति (which of
warders is), भर्तु = स्वामिनः (to master), अमायराक्षसस्य = राक्षसनाम्नो
मन्त्रिणः (minister Rakshasa), निवेदय = कथय (report), एष = असौ
(that) करभकः = कर्भकः दूतः (Karabhaka), त्वरयन् = तूष्णीं साधयन्
(hastening), पाटलिपुत्रात् = कुसुमपुरात् (from Pataliputra), आगतः = प्राप्तः
(just has arrived)

[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (entering)]

दौवारिकः—भद्र = कवचाग्निः (good fellow), शनैः = मन्दम् (not so
loud) मन्त्रय = वदति (talk), कार्यचिन्ताज्जितेन = कृत्यस्मरणोत्पादितेन (by
thinking of state affairs), चागरेण = निद्राक्षयेन (through wakefulness),
समुत्पन्नरापेवेदनः = सज्जानोत्तमाङ्गपीडः (with a headache supervened),
एष = असौ (that), अमाय = सचिवः (the minister), अद्यापि = अप्यपि
(yet), शयनम् = शय्यायां (the bed), न मुञ्जति = न त्यजति (does not
leave), तस्मात् = तकारात् (so), मुदूर्तम् = क्षणमात्रम् (a moment),
तिष्ठ = विनम्रस्व (wait), लघायमरः = प्राप्तावकाशो भूत्वा (having found an
opportunity) तव = भवतः (your), आगमनम् = स्थितिम् (arrival),
निवेदयामि = विशदयिष्यामि (will report)

पुत्रप—भद्रमुद = इयम् सञ्ज्ञा (Bhadramukh), तथा कुर्व = तथा त्रै रोचते कुर्व
(do so)

(ततः प्रविशति शयनगृहगत आसनस्थ शकटदासेन सह
सचिन्तो राक्षसः ।)

राक्षस — (आत्मगतम् ।)

मम विमृशतः कार्याग्ने विधेरविधेयता-
मपि च कुटिल्य कौटिल्यस्य प्रचिन्तयतो मतिम् ।
अपि च विहिते मत्कृत्यानां निकाममुपग्रहे
कथमिदमिद्वेषुचिद्रस्य प्रयात्यनिशं निशा ॥ २ ॥

[ततः = तदनन्तरम् (now), प्रविशति (enter), शयनगृहगतः = निद्राभवन-
ग्रास (in his bed chamber), आसनस्थ = आसनवर्षी (seated), सचिन्तः =
चिन्तायुक्त (meditating) राक्षस (Rakshasa), शकटदासेन सह (with
Shakatdasa)]

हिन्दी—अच्छा चहूँ, मुझे तो अब अमात्य राक्षस के घर चलना है। (धके हुए
की तरह) अरे, कोई द्वारपालों में से है है यहाँ—हमारे स्वामी अमात्य राक्षस से आकर
निवेदन कर आओ—करभक सब काम बना कर के शीघ्र ही पाटलिपुत्र से लौट आया है।
(प्रवेश करके)

द्वैवारिक—नम्र, धीरे बोली। हमारे स्वामी अमात्य राक्षस कार्यचिन्ता से जागते
रहने के कारण सिरदर्द से पीड़ित अभी तक पयङ्गु पर लटे पड़े हैं। थोड़ी देर रुके रहो अबसर
मिलते ही दुन्दारे आने की सूचना पहुँचा दी जावेगी।

पुरुष—भद्रमुख ऐसा ही करो।

(पयङ्गु पर लटे चिन्तामग्न राक्षस और आसन पर बैठे शकटदास का रङ्गमञ्च पर प्रवेश)

English—This is the house of minister Rakshasa, let me now
enter (going round of it fatigued) which of the warders here ?
Report to master minister Rakshasa, that Karbhaka hastening from
Patliputra has just arrived (Entering)

Warder—Good Sir, do not speak so loud Here minister with a
headache supervened through sleeplessness caused by thinking of
state affairs has not left the bed yet So wait for a moment, having
found an opportunity, I will report your arrival

Man—Bhadramukh do so

(Now enter with Shakatdasa, Rakshsa, meditating seated in his
bed room)

विमला

राक्षस — [आत्मगतम् = स्वगतम् = to himself] —

अन्ययः—कार्याग्ने, विधे, अविधेयताम्, विमृशतः, अपि च, कौटिल्यस्य
कुटिलाम्, मतिम्, प्रचिन्तयतः, अपि च, मत्कृत्यानाम्, निकामम्, उपग्रहे, विहिते,
इद इदम् कथम्, इति, उचिद्रस्य, अनिशम्, मम, निशा प्रयाति ॥ २ ॥

ध्याय्या—कार्यारम्भे=कृत्यप्रारम्भे (at the beginning of venture-brooding) विचेः देवस्य (of fate) अविधेयताम्=अननुकूलताम् (the perversity) विनृणत=व्यापतः (reflect upon) अपि च=तथा (and) कौटिल्यस्य=चाणक्यस्य (Kautilya's) कुटिलाम्=वक्राम् (the crooked) मतिम्=बुद्धिम्, (policy) प्रचिन्तयतः=विचारयतः (thinking) अपि च=तथा (and) नृकृत्यानाम्=मम कार्याणाम् (all my plans) निकामम्=पर्याप्तम् (plentiful), उपग्रहे=निरोधे (frustrated), प्रहिते=कृते सति (performed), इह=अस्मिन् विषये (in this matter), इदम्=एतद्वरोधनम् (this), कथम्=केन प्रकारेण (how), इति=एतत् सर्वम् (all this), उग्रिजस्य=जागरितस्य (wakeful), अनिशम्=सर्वदा (always), निशा=रात्रि (the night), प्रयाति=गच्छति (even pass away) ॥ २ ॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने भार)

कार्य के प्रारम्भ से ही भाग्य की प्रतिबृलता को सोचते हुए तथा चाणक्य की कुटिल मति पर विचार करते हुए और मेरे कार्यों के पूर्णतया विफल कर दिये जाने पर, 'इस विषय पर यह कैसे हुआ ?' ऐसा सोचकर जागते हुए ही सर्वदा मेरी रात्रि व्यतीत होती है ॥ २ ॥

English—*Rakshasa*—(To himself) Night always slips away as I keep wakeful at the beginning of the venture brooding reflect upon the adverseness, of fate and weighing the crooked policy of Chanakya and thereafter brooding how all my plans have been completely frustrated remained-awake thinking—"how is this to succeed in the face of all this 2.

टिप्पणी—(१) दैवारिषानाम्—दारे निरुक्त इति दार + ङक् ('दर निरुक्त' इति सूत्रे हे ङक् प्रत्यय दुभा । 'दारादीनाम्' ने दार का दैवारादश्च विनक्ति कार्ये ।

(२) एवरयन्—एव + गिच् + ङवृ ।

(३) इस श्लोक की प्रथम दो पक्तियों में राक्षस ने स्पष्ट कर दिया है कि एक तो विश्व विपरीत है उस पर भी क्रोध पर साध की तरह कौटिल्य की कुटिल बुद्धि का पार पाना असम्भव है ।

(४) अविधेयताम्—वि + षा + ङवृ कर्मणि विधेयः न विधेयः अविधेयः ।

(५) अनिशम्—अविप्रमाना निशा अस्मिन् कर्मणि तत् यथा तथा ।

इस श्लोक में अनुच्चय अलङ्कार है । यहाँ साधक राक्षस के अनेकों प्रयत्न दूसरे साधक चाणक्य के द्वारा खण्डित हो रहा है । और इस अलङ्कार के किसी कार्य की सिद्धि के लिए एक साधक के होने पर भी साधकान्तर का उल्लेख रहना है । अलङ्कारियों ने इसके सम्बन्ध में 'सुख करोतिकान्दाय' का उल्लेख किया है । हमने इरिणालन्द है । जिसका लक्षण—'नसमर-सलगा. बह्वेदहं देहिनीन्ता ।'

अपि च—

कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयंस्तस्य विस्तारमिच्छन्
 वीजानां गर्भितानां फलमतिगहनं गूढमुद्भेदयन् ।
 कुर्वन् बुद्ध्या विमर्शं प्रसूतमपि पुनः सहरन् कार्यजातं
 कर्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ३ ॥

विमला

अन्वयः—भावी, तनुम्, अपि कार्योपक्षेपम्, रचयन्, तस्य, विस्तारम्, इच्छन्, गर्भितानाम्, च, वीजानाम्, अतिगहनम्, गूढम्, फलम्, उद्भेदयन्, बुद्ध्या, विमर्शम्, कुर्वन्, प्रसूतम्, अपि, कार्यजातम्, पुनः, सहरन्, नाटकानाम्, कर्ता, वा, अस्मद्विधः, इमम्, क्लेशम्, अनुभवति ॥ ३ ॥

राजनीतिज्ञपदे—

व्याख्या—अपि च (Moreover), भावी=प्रथमम् (first of all), तनुम्=अल्पम् अपि (tiny), कार्योपक्षेपम्=कार्यस्य, अभीष्टकृत्यस्य (the business), उपक्षेपम्, उपायम् (taking the first step towards), रचयन्=कुर्वन् (devising), तस्य=प्रारम्भकार्यस्य (at start), विस्तारम्=प्रचयम् (development), इच्छन्=चाञ्छन् (thinking of), गर्भितानाम्=गुप्तानाम् (the secret), च=अपि (also), वीजानाम्=मन्त्रणानाम् (political measure), अतिगहनम्=रहस्यपूर्णम् (very deep), गूढम्=अनभिन्वितम् (hidden), फलम्=परिणामम् (results), उद्भेदयन्=प्रकटयन् (making a survey), बुद्ध्या=मनसा (mentally), विमर्शम्=विचारम् कुर्वन्, विदधन् (doing deliberation), प्रसूतमपि=विस्तृतमपि (though scattered), कार्यजातम्=कार्यसमूहम् (all the works), पुनः=अन्ते (lastly), सहरन्=उपसहरन् (focussing together), अस्मद्विधः=मादृशः (a person like me), इमम्=अनुभूयमानम् (this), क्लेशम्=कष्टम् (trouble), अनुभवति=भजते (suffers)

नाटककारपदे—

भावी=मुखसन्धिः (seed, in what is called मुखसन्धिः), तनुमपि=रववशो द्विष्टमपि (though meagre), कार्योपक्षेपम्=वीजविन्यासस्य कार्यं (chief object), उपक्षेपम् (one of the twelve subsidiary parts of mukha), रचयन्=प्रणयन् (to make), तस्य=विन्यस्तवीजस्य (of that seeds), विस्तारम्=अभिव्यक्तिम् (in the प्रतिमुखसन्धिः), इच्छन्=चाञ्छन् (desired), गर्भितानाम्=दृष्टनष्टानाम् (what is called गर्भसन्धिः in which help the denouement of the plot), अतिगहनम्=बहुदुर्गमम् (very secret), उद्भेदयन्=निदृश्ययन् (to look), बुद्ध्या=विचारशक्त्या (by the force of intellect) गूढम्=फलम् (गर्भसन्धिः) (fruit), विमर्शम्=अवपजम् विदधन्=कुर्वन् (mentally making a survey), प्रसूतमपि=पयाययम् विप्रकीर्णमपि (gone forward too), कार्यजातम्=मुखसन्ध्या घर्षजातम् (various incidents), पुनः=मुहुः (again), सहरन्=उपसहरन्

(drawing in), नाटकाना कर्त्ता=नाटककारः (writer of plays), इमम् = उन्निद्रोरूपम् (such is), क्लेशम् = कष्टम् = (the trouble), अनुभवति = भजते (has to undergo)

हिन्दी—राजनीति के पक्ष में—

प्रारम्भ में स्वयं भा अनाटि कार्य के उगाव अर्थात् सान, दान आदि जगों का करता हुआ एक राजनीतिज्ञ अपने आरम्भित कार्य के विस्तार को चाहता हुआ, गुप्त नगराजों के रहस्यों गूढ़ कल को प्रकट करता हुआ, पुन बुद्धि के द्वारा विचार करता हुआ, राजनीति के विभिन्न फल दुर कार्यों को पुन मनात न० पड़ाना हुआ, इनारे सनान करने इस जागरण के कष्ट का अनुभव करना है । ३ ।

नाटककार के पक्ष में—

सुलनन्वि में वाड भी बीज-वन्ध को करना हुआ, उसके विस्तार को चाहता हुआ, गर्भ सन्धि में स्थित भा राजों के रहस्यों के गूढ़ कल को खोजना हुआ, फिर, विमलसन्धि में उसी राज का बुद्धि के द्वारा अन्वेषण करना हुआ, सैल हुए भी कार्यों के सन्दर्भ को निर्वाहसन्धि में एक उद्देश्य से पुन एकट्ठा करना हुआ नाटककार इन कष्ट का अनुभव करता है ॥ ३ ॥

English—in the side of politician—

At first, the politician as well as one like me suffers this trouble, wishing the extension of his started work, next thinking of its development and then secretly causing the very deep issue of the impregnated seeds to germinate, again wisely making a thinking of results and lastly focussing together all the results though scattered.

In the side of Dramatist—

First of all, a dramatist has the troubles to cast the tiny seeds of the adventure, then to supervise their development and when the seeds have elongated, to result the secret deep hidden fruit then to lay on the land more definitely by the force of wisdom, and finally to make the various converge to the desired issue.

टिप्पणी—(१) विनर्तन्—वि + नृत् + वच् + विनात्तिकार्य ।

(२) वसञ्जन्—उच् + क्षिन् + वच् + विनात्तिकार्य ।

(३) विस्तारन्—वि + स्तृ + ध्वन् + विनात्तिकार्य ।

(४) गूहन्—गूह् + क्त + विनात्तिकार्य ।

(५) कर्त्ता वा नाटकाना—इस पक्ष में विशाखदत्त ने राष्ट्र के इस कवन के नायक से इन नाटक के निनाय में अपनी अनूत कठिनाइयों का वर्णन किया है । इन श्लोक में श्लेष का द्वारा राजनीतिज्ञ एवं नाटककारों को समान कठिनाइयों का व्यवस्थापन होने रोचक है ।

जातीय विकास की दृष्टि से किसी भी नाटककार को बीज, विन्दु, पनाका, प्रकरी और कचरा इन पांच अर्थप्रकृतियों का, आरम्भ, वृत्त, प्राप्ताज्ञा, निपताति और फलान, इन पांच अवस्थाओं का एवं इन अर्थप्रकृतियों और अवस्थाओं के उपयोग से निष्पन्न होने वाली

तदपि नाम दुरात्मा चाणक्यवदु —

(उपसृत्य ।)

दीवारि — जेदु । (जयतु ।)

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श और निर्वहण इन पाँच सन्धियों का वर्णन करना परम आवश्यक होता है ।

सन्धि—मुखप्रतिमुखे गर्भं सावमर्शोपमाहृति । दशरूपक १।२४ ॥ तात्पर्य यह कि यथाज्ञा की जब प्रयोजनान्तर से सम्बन्ध करते हैं तब उसे सन्धि कहते हैं । अर्थात् अन्तर्गकार्यसम्बन्ध-सन्धिरेषा-ये सन्धि । दशरूपक । १।२३ ॥

(१) मुखसन्धि में अनेकों रसोत्पादन करने वाले बीज की उत्पत्ति तथा आरम्भ अवस्था होती है ।

(२) प्रतिमुखसन्धि में बिन्दु प्रयत्न होता है ।

(३) गर्भसन्धि में पताका और प्राप्तिप्राप्ता होती है । इस सन्धि में बीज कभी प्रकट और कभी अन्तर्हित रहता है, जिसका सर्वथा अन्वेषण किया जाता है ।

(४) अवमर्शसन्धि में प्रकरी तथा नियताति का वर्णन होता है ।

(५) निर्वहणसन्धि में कार्य और फलागम का वर्णन होता है ।

(६) वार्योपक्षेपमादौ—नाटक के पक्ष में वहाँ आदी का अर्थ है मुखसन्धि, अर्थात्—
'मुखम् बीजसमुत्पत्तिर्नानार्यरससमवा' दशरूपक—१।२४ ।

(७) तस्य विस्तारमिच्छन्—उस बीज का प्रतिमुख सन्धि में स्पष्टरूप से प्रतीत होना ही प्रतिमुखसन्धि का विषय है । इस सन्धि में 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति तथा प्रयत्न नामक अवस्था का मिश्रण होता है । यथा—

लक्ष्यालक्ष्यतयोर्भेदस्तस्य प्रतिमुख भवेत् बिन्दुप्रयत्नानुगमात् । दश० १।३०

(८) बीजानाम् गर्भितानाम्—गर्भसन्धि जब बीज के दिखने के बाद, फिर से नष्ट हो जाने पर उसका अन्वेषण बार-बार किया जाता है तो गर्भसन्धि होती है । इसमें पताका, अर्थप्रकृति एवं प्राप्तिप्राप्ता का मिश्रण पाया जाता है ।—गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य । द० १ । ३१

(९) कुबन् बुद्ध्या विमर्शन्—बाम, कोषादि से प्रभावित होकर जहाँ चिन्तन किया जाय वहाँ अवमर्शसन्धि होती है ।

(१०) प्रसृतमपि पुनः सहरन् कार्यजातम्—इसमें बड़े यत्र तत्र कार्यों का उपसहार किया है । द० १।४

इस प्रकार सभी सन्धियों इस श्लोक में वर्णित हैं ।

इस श्लोक में श्लेष तथा दीपक अलङ्कार तथा सगुणा छन्दा हैं ।

विमला

व्याख्या—तदपि = तथापि (well then), दुरात्मा = दुष्टजीव (vile hearted), चाणक्यवदु = अक्षपुत्रिश्चाणक्य (brat Chankya) —[उपसृत्य = राक्षसात्मिकम् गत्वा (approaching)]

दीवारिक — जयतु = सर्वाङ्गैरेण वर्धताम् (Be victorious)

राक्षसः—अतिसंधातुं शक्यः स्यात् ।

दौवारिकः—अमात्यः । (अमात्यः ।)

राक्षसः—(वानाश्लिस्पन्दन सूचयित्वा आगतम् ।) दुरात्मा चाणक्य-
वदुर्जयन्वतिसंधातुं शक्यः स्यादनाद्य इति वार्ताश्रयी वानाश्लिस्पन्दनेन
प्रस्तावगता प्रतिपाद्यति । तथापि नोद्यमस्त्याज्यः । (प्रकाशम् ।) भद्र,
किमसि वक्तुमानः ।

राक्ष= अतिसंधातुम्=प्रतारयितुम् (of being deceived), शक्य=समर्थः
(be capable), स्यात्=भवेत् (might).

दौवारिक —अमात्यः=सचिवो भवान् (minister).

राक्षसः—[वानाश्लिस्पन्दनेन=दृष्टिनेतरनेत्रस्फुरनेन (throbbing of his
left eye)], सूचयित्वा=प्रतिपादयित्वा (indicating), आगतम्=स्वगतम्
(to himself), दुरात्मन्=दुष्टजीव (vile-hearted), वानक्यवदु=पुत्रवृद्धि-
आमक्यः (brat Chanakya), उद्यु=सर्वोत्कर्षेण वर्द्धस्व (let be victorious),
अमात्य=सचिवो भवान् (minister), अतिसंधातुम्=प्रतारयितुम् (of being
deceived), शक्य=समर्थो भवेत् (might be capable), इति=इवम्
(like so), वार्ताश्रयी=वाग्देवता (Divine speech), वानाश्लिस्पन्दनेन=
दृष्टिनेतरनेत्रस्फुरनेन (by the throbbing of the left eye), प्रस्तावगता=
प्रकरणप्राप्ता (ruling the context), प्रतिपाद्यति=सूचयति (establishes),
तथापि (still), उद्यमः=उद्योगः (efforts), न=नहि (not), त्याज्य=परित्य-
ज्यः (be abandoned), [प्रकाशम्=(to aloud)], भद्र (good man),
किमसि वक्तुमानः=किं कथनप्रतिपादनान्तिच्छास्यं अस्ति (what do you want
to say).

हिन्दी—‘अरे भो, यदि करी वर चातक’

दौवारिक—(राज पहुँच कर) वर हो ।

राक्षस—‘वश मैं किना वा सक्रय है ।

दौवारिक—अमात्य ।

राक्षस—(यदि मैं वर का प्रवक्तृता देख करने कार) ‘दुष्ट चातक की वर हो और
अमात्य वश मैं किना वा सक्रय है’—प्रकरणप्राप्ति वाली दुष्ट सरस्वती वर भंड के प्रवक्तृता
के द्वारा—देवता प्रतिपादित कर रही है । फिर भो, नको नहीं छोड़ना चाहिये (प्रष्ट रूप में)
भद्र, क्या कुछ कहना चाहिये हो ?

English—Well then, is it likely that, the wicked fellow chanakya.

Wardar—(Approaching) Be victorious.

Rakshasa—Can be capable of being deceived.

Wardar—Minister.

Rakshasa—(Indicating the throbbing of his left eye to himself)
The Goddess of speech, ruling the context, establishes this by the

दौवारिकः—अमच, करभओ दुआरे चिह्निदि । (अमात्य, करभको द्वारि तिष्ठति ।)

राक्षसः—शीघ्र प्रवेशय ।

दौवारिकः—तद्देत्ति (निष्क्रम्य पुरुषमुपसृत्य ।) भद्र, उपसर्प अमचम् । (इति निष्क्रान्तः ।) (तथेति । भद्र, उपसर्प अमात्यम् ।)

करभकः—(उपसृत्य ।) जेहु अमचो । (जयत्वमात्यः ।)

राक्षसः—भद्र, उपविश ।

करभकः—ज अमचो आणवेदिच्छि । (नूमावुपविष्टः ।) (यदमात्य आज्ञापयति ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) कस्मिन् प्रयोजने ममाय प्रहित इति प्रयोजनानां बाहुल्यात् स्वस्वधारयामि । (इति चिन्तां नाटयति ।)

throbbing of the left eye—the vile hearted brat chanakya will be successful and I, the minister, shall be duped. Still efforts must not be abandoned (aloud) good man, what do you want ?

विमला

व्याख्या—दौवारिक —अमात्य=सचिव (minister) द्वारि=द्वारदेशे (at the gate), करभक (Karabhaka), तिष्ठति=वर्त्तते (waits).

राक्षस —शीघ्रम् = अवहितम् (in quick), प्रवेशय (show him).

दौवारिक —तथेति (As minister commands), [निष्क्रम्य (going out), पुरुषमुपसृत्य (approaching the man)] भद्र (good man), अमात्यम् = सचिवम् (to the minister), उपसर्प = समीपम् गच्छ (approach), [इति निष्क्रान्तः = Exit)].

करभक —[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], अमात्यः = सचिवः (The minister) जयतु = जय लभस्व (Let prosper)

राक्षस —भद्र (good man), उपविश (sit down)

करभक —यत् (as), अमात्य = सचिव (the minister), आज्ञापयति = आदेशदत्ति (commands) [भूमौ = पृथिव्याम् (on the ground) उपविष्टः (sits)]

राक्षस —[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], कस्मिन् कार्ये = कस्मिन् प्रयोजने (to what purpose) अयम् = प्रणिधि (this fellow), मम प्रहितः = मया प्रेषितः (was sent by me), इति (it), प्रयोजनानाम् बाहुल्यात् = कार्याणामधिक्यात् (through multiplicity of works), न स्रुतु = नैव (do not indeed), अवधारयामि = अवगच्छामि (recollect) [इतिचिन्तां नाटयति = (acts thinking)]

हिन्दी—दौवारिक—अमात्य करभक दरवाजे पर खड़ा है ।

राक्षस—शीघ्र भीतर लाओ ।

दौवारिक—जी भी आज्ञा (ऐसा कह कर पुरुष के पास जाकर) भद्र अमात्य के पास चलो (ऐसा कह कर निकल गया)

(ततः प्रविशति वेत्रपाणिद्वितीयः पुरुषः ।)

पुन्यः—ओसलेह ओसलेह । आओ । अवेह अवेह माणसा । किं प
पेक्खह । (अपसरत अपसरत । आगतः । अपेत अपेत मानवाः । किं न
पश्यथ ।)

दुले पञ्चासत्ती दंसणं वि दुल्लहमवण्णैः ।

कल्याणकुलधराणं देवानां विअ मनुस्सदेवानां ॥ ४ ॥

(दूरे प्रत्यासत्तिर्दर्शनमपि दुर्लभमधन्यैः ।

कल्याणकुलधराणां देवानामपि मनुष्यदेवानाम् ॥ ४ ॥)

करमक—(सुनीत जाकर) अनात्य का पत्र हो ।

राक्षस—नद्र, बैठ जाओ ।

करमक—अनात्य को बैन्ने आता (देखा करकर भूनि पर बैठ जाता है ।)

राक्षस—(अपने आन) मैंने इसको दित कर्य के लिए निमुक्त किया था ? कार्याधिक्य के
कारण निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ । चिन्ता का अग्निनय करता है ।)

English—Warder—Minister, Karabhala waits at the gate.

Rakshasa—Show him quickly.

Warder—As minister commands (going out and approaching the
man) good man, you may see the minister (Exit)

Karabhala—(approaching) Let minister prosper.

Rakshasa—Good man, sit down

Karabhala—As minister commands (squats on the ground).

Rakshasa—(To himself) Through multiplicity of purpose, I do
not indeed recollect to what purpose this fellow was sent by me (acts
thinking).

निमला

[ततः=तत्पश्चात् (then), प्रविशति=प्रवेशं करोति (enter), वेत्रपाणिः
(cane staff in his hand), द्वितीयः=अपरः (another), पुरुषः=मनुष्यः (man)].

पुन्यः—अपसरत अपसरत=पलाययाम् पलाययाम् (move away, move away),
आगतः=(arrived), अपेत-अपेत मानवाः=अदम्यद्भुत अपयद्भुत जनाः (be off
men be off) किं पश्यथ=किं नावलोकयत (don't see you).

अन्वयः—देवानाम्, इव, कल्याणकुलधराणाम्, मनुष्यदेवानाम्, अधन्यैः, दर्शनम्,
अपि, दुर्लभम्, प्रत्यासत्तिः, दूरे ॥ ४ ॥

व्याख्या—देवानाम्=देवतानाम् (of gods), इव=दथा (like) कल्याण.
कुलधराणाम्=सुवर्णमयमेखपर्वतवासिनाम् (the representatives of blessed
families), मनुष्यदेवानाम्=नरेन्द्राणाम् (of kings), अधन्यैः=भाग्यहीनैः (by
the unlucky) दर्शनम्=दूरादवलोकनम् (the sight) अपि (even) दुर्लभम्=

(आकाशे ।)

अज्ञा,—किं भणान्—किंनिमित्तं ओसालणं करिअदि' त्ति । अज्ञा, एसो वल्लु कुमालो मलयकेतु समुत्पण्णसीसवेअणं अमच्चरक्खसं पेक्खिदु इदो एअ अअच्छदि । ता ओसालणा करिअदि । (इति निष्क्रान्तः पुरुषः ।) (आर्याः, किं भणथ—किंनिमित्तमपसारणं क्रियते इति । आर्याः, एअ वल्लु कुमारो मलयकेतुः समुत्पन्नशोर्षवेदनं ममात्यराक्षसं प्रेक्षितुमिदं एवागच्छति तस्मादपसारणां क्रियते ।)

(ततः प्रविशति भागुरायणेन कञ्चुकिना चानुगम्यमानो मलयकेतुः ।)

दुष्प्रापम् (is hardly available) प्रत्यासत्ति = सन्निधिः (close proximity)
दूरे = विप्रकृष्टे तिष्ठतु (let alone). ॥ ४ ॥

हिन्दी—(बैठ हाथ में छिप दूसरे पुरुष का प्रवेश)

पुरुष—दूर इदो, मनुष्यो दूर हो जाओ, दूर हो जाओ । क्या देख नहीं रहे हो ?

इमेव पर्वतवासी देवताओं के समान उन्नत एवं प्रख्यात यज्ञवाले राजाओं वा सन्निध्य लाभ तो दूर रहे, दर्शन भी भाग्यहीनों के छिप दुर्लभ ही है ॥ ४ ॥

English—(Then enters another man, cane in hand)

Man—Move away, move away ! be off be off men, do not see you

Let alone their close proximity; even a sight of kings, the representatives of blessed family, is, like that of gods, difficult to be obtained by the unlucky. 4.

टिप्पणी—वेशराभिर्द्वितीयः पुरुषः—'वेअ पाणो वस्य' । अयेन—अप + इण् + लोट् त ।

प्रत्यासत्ति—प्रति + आ + सद् + क्तिन् भावे + दिभक्ति रायै ।

इस इलोक में दोषक अलंकार तथा आर्या छन्द है ।

विमला

[आकाशे (in the sky)]

व्याख्या—आर्याः = मान्याः (Noble sirs), किं भणथ = किं प्रथ (what do you ask), किंनिमित्तम् = कस्मात् कारणात् (why), अपसारणा = पार्श्ववर्त्तिवम् क्रियते = दिधीयते (clearing is being made ?), आर्या = मान्याः (noble sirs), एअ वल्लु = असौ (here indeed), कुमारो मलयकेतुः = तदावयः पर्वतकपुत्रः (Prince Malayaketu), समुत्पन्नशोर्षवेदनम् = सजातशिरोम्यधम् (has got a headache), ममात्यराक्षसम् (minister Rakshasa), प्रेक्षितुम् = दप्पुम् (to see), एवागच्छति = अत्रैवागच्छति (is coming this very way), तस्मात् = अनेन कारणेन (hence), अपसारणा क्रियते = युष्माकं वर्त्मकपार्श्ववर्त्तिव विधीयते (the clearing is being made), [इति निष्क्रान्तः पुरुषः = Exit attendant ?]

[ततः = तत्पश्चात् (now), प्रविशति (enter), भागुरायणेन (by Bhagurayan), कञ्चुकिना (and Chamberlain), अनुगम्यमानः (followed), मलयकेतुः (Malayaketu)]

मलनकेतुः—(निश्चस्यात्मगतम् ।) जद्य दशमो मासस्मात्तस्योपरतस्य
न चास्माभिवृथापुण्याभिमानमुद्धङ्गिस्त्वमुदिश्य तोयाञ्जलिरप्यावर्जितः ।
प्रतिज्ञाननेतन् पुरस्तान् ।

ॐ वक्षस्ताडनमिन्नरत्नमलयं भ्रष्टेचरीयांशुकं
दाहेत्युचरितार्तनादकरणं मूरेणुर्लालकम् ।

मलनकेतुः—[निश्चस्व (with a sigh), आत्मगतम् (to himself)], अद्य
(Today), उपरतस्य=मृतस्य (died), तातस्य=पितुः (father's), दशमो मासः
(is the tenth month), वृथा=निष्कण्टम् (falsely), पुण्याभिमानम्=पुण्यो-
र्ग्रस्ति इत्येवम् ऊरन् (the pride of man), उद्धङ्गिः=धारयद्भिः (bearing),
तनुशिरस्य=मृततातनुपरतस्य (unto him), तोयाञ्जलिरपि=उल्लाञ्जलिरपि (even
a handful of water), न आवाञ्जितः=न दत्तः (has not yet been offered),
पुनश्च=वक्ष्यमागम् (this), पुरस्तात्=पूर्वम् (formerly), प्रतिज्ञातम्=प्रतिदत्तम्
(was vowed)

(आकाश की ओर - देख कर)

हिन्दी—भो लोगो, क्या वह जानना चाहते हो कि क्यों मुझे हयादा आ रहा है ?
बन्धुमो हुनार मलनकेतु आ रहे हैं । निरोम्पथा से बनारस राखत पीछित हैं, उन्हें देखने
के लिए पधार रहे हैं । अद्य मुझे हमना आ रहा है । (पुनर्निर्दिष्ट आता है)

(हुनार मलनकेतु के साथ साथ भागुरायण और कम्युकी का प्रवेश)

मलनकेतुः—सौंठ खोचकर स्वगत) आब दिता के निवन का ददुर्गो नहाना रात
रहा है । अर्धका वह सब इनरा करने बह-रेम्ब का अभिमान रहा । अना तक उनके
ग्रीवाञ्जल मा नहीं जलित हो जा सकी । यह मैंने वह प्रतिज्ञा की थी :-

English—(In the sky)

Noble Sirs, 'do you ask, why is passage being cleared ?' Noble
sirs here indeed prince Malayaketu is coming this very way to see
Minister Rakshasa, who has got a headache. Hence the clearing
is being made. (Exit man)

(Now enter Malayaketu followed by Bhagurayan and the
Chamberlain)

Malayaketu—(Sighing to himself) To day is the tenth month
since father died, but even a handful of water has not yet been
offered unto him by me falsely bearing the pride of man. This was
vowed by me formerly :-

टिप्पणी—(१) अनारम्भ—अन+अ+तित्+दुर्गो भावे अनारम्भ ।

(२) पुण्याभिमान—पुण्य+अन+पुन ।

(३) आवाञ्जितः—आ+अ+तित्+दुर्गो भावे आवाञ्जित ।

विनता

अन्वयः—नानुवनस्य, शोकजनितम्, वक्षस्ताडनमिन्नरत्नमलयम्, भ्रष्टेचरीयां-

तादृङ्मातृजनस्य शोकजनितं संप्रत्यवस्थान्तरं

शत्रुस्त्रीषु मया विधाय गुरवे देयो निवापाञ्जलिः ॥ ५ ॥

शुक्लम् हाहेत्युच्चरितात्तनादकरुणम्, भूरेणुरुष्णालकम्, तादृक्, अवस्थान्तरम्, सम्प्रति शत्रुस्त्रीषु, विधाय, मया, गुरवे, निवापाञ्जलिः, देय ॥ ५ ॥

व्याख्या—मातृजनस्य=अम्यासमूहस्य (on my mothers), शोकजनितम्=दुःखेनोत्पन्नम् (brought on through grief), चक्षस्तादनभिधरानवल्लयम्=हृदयाघातभग्नरत्ननिमित्तकटकम् (beat their breasts till their pearl-necklaces were shattered), भ्रष्टोत्तरीयाशुकम्=भ्रष्टम्, स्वस्थानात् द्युत (felloff), उत्तरीयाशुकम्, ऊर्ध्वधारणवस्त्रम् (upper garments), हाहेत्युच्चरितात्तनादकरणम्=हाहेतिनिस्सृतात्तरवरदीनम् (the cries of 'ha ha' were piteously uttered), भूरेणुरुष्णालकम्=भुव, पृथिव्या (of dust), रेणुभिः, धूलिभिः (by the particles), रक्षा, विरसा (made rough), भट्ठा, कुन्तला (the hair), यस्मिन् तादृशम्, तादृक्=तथाविधम् (like so), अवस्थान्तरम्=वैधान्तरम् (altered condition), सम्प्रति=अद्य (now), शत्रुस्त्रीषु=अरिवनितासु (on the wives of my enemy), विधाय=उत्पाद्य (performing), मया (by me) निवापाञ्जलिः=निवापसलिलम् (the handful of libations), देयः=आवर्जनीयः (has to be offered) ॥ ५ ॥

हिन्दी—पितृवध से उत्पन्न मातृजन की शोकजनित वह दुःखरथा, वह छाती पीटने से टूट टूट कर गिरने वाले रत्नवलयों, अस्त-वस्त गिरे पड़े उत्तरीय परिधानों, हाथ हाथ की हृदयविदारक ध्वनियों से भरी करुणा धूलिधूसरित वेश्मपाशों के रूपरूप की दुर्गन्ध जव दुश्मनों की पत्नियों के भाग्य में बदल ल्या, तभी अपने पुन्य पितृदेव का श्राद्ध तपन करूँगा ॥५॥

English—That I should first reduce the wives of my enemy to that altered condition which was then brought up on my mothers by grief a condition, in which they beat their breasts till their garments slipped off with locks, the cries of 'Ah ! Ah' were piteously uttered, and the hair was made rough by the particles of dust—and then the handful of libations has to be offered by me to father 5

टिप्पणी ()—तादृक्—तद्+इत्+विच्+कृत्ति ।

(२) देय —दा+यत्+विभाक्त कार्ये ।

(३) मातृजनस्य—माता ध्वजना मातृजन तस्य मातृजनस्य बहुवचने मातर एव जना ।

(४) नादजीवना की दृष्टि से इस श्लोक में घटनाओं का मत्स्यामक पाप प्रतिपाद, उनकी प्रकृति और सार्थकता सबों का समन्वय दर्शनीय है । कार्ये यापार के नादर पितृ वध का घटना मानो मलयनेत्र के हृदय में सृष्टि की सृष्टि करती है । सृष्टि से तात्पर्य क्या, की उस बीच सृष्टि से है जिसका विस्तार कार्ये व्यापार के आरम्भ से उभ रथल तक होता है । जहाँ क्या नादक ने उत्कर्ष की ओर मोड़ लेनी है । मुख्यतः सृष्टि से अभिप्राय है—उत्पन्न । दो असद्वत प्रतीत होने वाली स्थितियों में सादृश्य का नियोजन कर वसमें

किमत्र बहुना ।

उद्यच्छता धुरमशुपुरुषानुरुषां

गन्तव्यनाजिनिघनेन पितुः पथा वा ।

आच्छिद्य वा स्वजननीजनलोचनेभ्यो

नेयो मया रिपुवधूनयनानि बाष्पः ॥ ६ ॥

संपति की स्तानना की गयी है। अन् इस श्लोक में निदर्शना अट्टहार है तथा शार्दूल-
विकीरित छन्द है ।

विमला

अन्वयः—अशुपुरुषानुरुषान्, धुरम, उद्यच्छता, आजिनिघनेन, पितुः, पथा, वा, गन्तव्यम्, वा, मया, स्वजननीजनलोचनेभ्यः, आच्छिद्य, रिपुवधूनयनानि, बाष्पः, नेयः ॥ ६ ॥

व्याख्या—किमत्र बहुना = (What with talking much about it)—

अशुपुरुषानुरुषान् = वीरोचितान् (worthy of a brave man), धुरम = भारम् (a yoke), उद्यच्छता = उद्ग्रहता (bearing up), आजिनिघनेन = बाझी = युद्धे (in battle), निघनेन = मृत्युना (by death), पितुः = पितृस्य (of father), पथा = मार्गेण (path), वा = अथवा (either), गन्तव्यम् = यातव्यम् (should go), वा = अथवा (or), मया (by me), स्वजननीजनलोचनेभ्यः = स्वजनानुवर्गास्य नेत्रेभ्यः (from the eyes of my mothers), आच्छिद्य = आकृष्य (shall forcibly take away), रिपुवधूनयनानि = शत्रुस्त्रीलोचनानि (eyes to the wives of the enemies), बाष्पः = नयनसलिलम् (tears), नेयः = शपनीयः (transfer). ॥ ६ ॥

हिन्दी—इन विषय में अधिक कहने से क्या ?

वीर पुरुषों की नाति इन जहाज् कारमार को छाते हुए या तो दूते करने नावहन की काँसों के काटकों को कटुवनिताओं की काँसों में रूँचाना है अथवा सनभूमि में जूझते हुए वीरगति पाकर करने निरुद्ध का अनुसरण करना है ॥ ६ ॥

English—What with talking much about it—

Bearing the burden worthy of a brave man, I will either follow the path of my father by death in battle, or transfer forcibly the tears from the eyes of my mothers to the wives of my enemies 6.

टिप्पणी—(१) उद्यच्छता—उद् + च् + शतृ—दर्शो दक्षणि 'सुदृशवन्तो दनो द्रव्ये' से कालनेन्द प्राप्त वा फिर भी 'स्वरितटिठि' कर्तृनिप्रत्ये क्रियाश्लेषे' से परत्वेन्द हो गया ।

(२) अशुपुरुष—अ + शुद् + त्वप् विनष्टिकार ।

(३) नेयो—नो + त्वप् विनष्टिकार ।

(४) अशुपुरुषानुरुषान्—रूपननुगतां अनुरुपां तान् अनुरूपान्, कृत्स्नः पुरुषः का पुरुषः न कापुरुषः अशुपुरुषः । दर्शो विशेषके कर्म में नन सनाम है ।

(५) आजिनिघनेन—आजि रो तस्या निघनम् तेन आजिनिघनेन । हमने तात्पर्य यह है कि म्लघवेतु पितृ की तरह युद्ध में अक्षकटा की स्थिति में मारा जाना पसन्द

(प्रकाशम् ।) आर्य जाजले, उच्यन्तामस्मद्वचनादनुयायिनो राजानः—
'एक एवाहममात्यराक्षसस्यावर्कितगमनेन प्रीतिमुत्पादयितुमिच्छामि । तच्छ्रुत-
मनुगमनक्लेशेन' इति ।

कञ्चुगी—तथा । (इति परिक्रम्याकाशे ।) भो भो राजानः, कुमारः
समाज्ञापयति—'न खन्वहं केनचिदनुगन्तव्य' इति । (विलोक्य सहर्षम् ।)
कुमारस्याज्ञानन्तरमेव सर्वे राजानः प्रतिनिवृत्ताः । पश्यतु कुमारः ।

करता है जब कि तब्य इसके विपरीत यह है कि मलयकेतु के पिता की वृत्तु विपक्ष्या
के प्रयोग से हुए है । फिर इस कथन का तात्पर्य मृत्यु की मात्र समता है ।'

(१) नेय.—यहां 'नो' धातु द्विकर्मक होने के कारण ही दो कर्म छिपे हैं ।

इस श्लोक में दो विकल्प हैं (१) या तो वीर पुरुषोचिन युद्धक्षेत्र में मरण भववा (२)
मातृजन को आँखों के आसुओं को शत्रुस्त्रियों को आँखों तरु पड़ुं चना । अतः इसमें विरोध नामक
मलद्वार है । वसन्ततिलका छन्दः ।

विमला

दयादयः—[प्रकाशम् = (Aloj]), आर्य = मान्य (Noble sir), जाजले
(Jajali), अस्मद्वचनात् = मनुक्त्वया (in my words), अनुयायिनः = अनुगमन-
शीलाः (following me), राजानः = नृपाः (princes), उच्यन्ताम् = अभिधायन्ताम्
(let be told), एकः = अद्वितीय (unattended), एवाहम् (I), अवर्कित-
गमनेन = सहसापस्थित्या (unexpected approach), अमात्यराक्षसस्य = मन्त्रि-
राक्षसस्य (minister Rakshasa), प्रातिम् = सुखम् (joy), उत्प्रेक्षितम् = जन-
यितुम् (to give), इच्छामि = वाञ्छामि (I wish), अतः (so), अनुगमनक्लेशेन =
अनुसरणप्रयत्नेन (with the trouble of following), कृणुम् = पश्यन् (away),
कञ्चुगी = (Chamberlain), तथा (so be it), [इति परिक्रम्य = परिक्रम्य कृत्वा
(going round), आकाशे = वनने (in the sky)], भो भो राजानः (Ho, Ho !
kings) कुमारः = मलयकेतुः (the prince), समाज्ञापयति = समादिशति (con-
nds) अहम् (Milayaketu), खलु = निश्चयेन (in fact), न = नहि (not),
केनचित् (by any one), अनुगन्तव्यम् = अनुसरितव्यम् (be followed),
[विलोक्य = ररय (observing)], सहर्षम् = समुद्रम् (with joy) कुमारस्य (of the
prince), आज्ञा = आदेश (order), अनन्तरमेव (after), सर्वे (all), राजानः =
नृपाः (the kings), प्रतिनिवृत्ताः = परावर्तिता (have turned back), कुमारः
(the prince), पश्यतु = अवलोकयतु (look) :-

हिन्दी—(प्रकट कर ले) आर्य जाजल ! अनुयायी राजपण से जाकर मेरी ओर से कहो—
मैं अकेला ही एक-एक अमात्य राक्षस के पास जाकर उनके मन में प्रसन्नता उत्पन्न करना चाहता
हूँ । अब मेरे पीछे आने के कष्ट को आवश्यकता नहीं है ।

कञ्चुगी—भार को जैसा आया (घूम फिर कर आकाश को ओर) राजपण मुनें । कुमार
को आया है कि उनके पीछे कोई न आवे (देखकर हर्ष के साथ) कुमार ! यह देखिये कुमार को
आज्ञा मुने के साथ ही समस्त राजपण लौट चले ।

निर्द्धा लम्बि नीचः

सोत्सेयैः स्कन्धदेशैः श्वतररुक्मिकाकर्षणात्यर्थमुग्धै-

रभ्याः कैश्चिन्निरुद्धाः खमिन् गुरपुटैः खण्डयन्तः पुरस्तात् ।

कैचिन्नातङ्गनुरयैर्विहितज्वतया मूकघण्टेनिवृत्ता

मर्मादां भूमिपाला जलधय इव ते देव नोद्वह्यन्ति ॥३॥

English—(Aloud) Venerable Jajah, Let the princes who are following me be told this is my words—Unattended I wish to give delight to the minister Rakshasa by unexpected approach So away with the trouble of following.

Chamberlain—So be it (going round—in the Sky) Ho, Ho kings the prince commands thus—I must not be followed by any one (observing—with joy) All the kings have turned back immediately after the prince's order. Look, Oh Prince—

विमला

जम्भारः—कैश्चित्, गुरपुटैः, पुरस्तात्, खन्, खण्डयन्तः इव, श्वतररुक्मिकाकर्षणा-
त्यर्थमुग्धै, मात्सर्यै, स्कन्धदेशैः, रभ्याः, निरुद्धा, कैश्चित्, विहितज्वतया,
मूकघण्टै, मानङ्गमुख्यै, निवृत्ता, देव, जलधय, इव, भूमिपाला, ते, मर्मादान्, न,
उद्वह्यन्ति ॥ ३ ॥

व्याख्या—कैश्चित्=कतिपयै नृपै (some kings), गुरपुटैः=शक्ते (with
hoofs), पुरस्तात्=अग्रतः (in front), खन्=आकाशम् (the sky), खण्ड-
यन्तः=विदारयन्तः (pounding), इव=यथा (as if), श्वतरा=तीक्ष्णः (from
a very tight), आकर्षिका=लक्षणा (the reins), आकर्षणम्=मम्रहः
(pull off), तेन अत्यर्थम्=पर्याप्तम् (much), मुग्धैः=वृद्धै (carved),
अत एव सेतुष्वे=मम्रमागोष्ठैः (raised up), स्कन्धदेशैः=प्रीतिदेशैः (with
necks), रभ्या=वाजिनः (horses), निरुद्धा=अवरुद्धा (have been checked),
कैश्चित्=कतिपये राजानः (some kings), विहितज्वतया=निरुद्धे गेहेषुना
(because of the speed checked), मूकघण्टैः=निशब्दघण्टैः (with
the bells mute), मानङ्गमुख्यै=गजराजैः (on lordly tuskiers), निवृत्ता=
प्रतिगताः (stopped on), देव=हे महाशयः (sire), जलधयः=सागराः (the
seas), इव=यथा (like) भूमिपालाः=नृपाः (the kings), ते=तव (your),
मर्मादान्=आज्ञान् (order), न=नहि (not), उद्वह्यन्ति=अतिक्रान्ति
(overstep). ॥ ३ ॥

हिन्दी—जम्भार । विश प्रकर सार करने दौर (छान) का उत्पन्न नहीं कर रहा,
वही प्रकर राका आनखी सासन नगेश का उत्पन्न नहीं कर रहे हैं । कर राकाओं
ने तो दई का-छकाई लानों के खीचने से उत्पन्न होने लगे, अतः सज्जन हो
उठने वाले करने-करने वाले को, जो वे के विहित हो जाने के द्वारा माध्यम से हा जाने
गुरपुटों से खण्ड-खण्ड करते प्रतीत हो रहे हैं—सहसा रोक दिया । कर पावे करने २

मलयकेतु—आर्य, त्वमपि सपरिजनो निवर्त्तस्व । भागुरायण एको मामनुगच्छतु ।

वञ्चुकी—तथा । (इति सपरिजनो निष्क्रान्तः ।)

मलयकेतु—सखे भागुरायण, विज्ञप्तोऽहमहागच्छद्भिर्भद्रभटप्रभृतिभिः
'यथा न वयममात्यराक्षसद्वारेण कुमारमाश्रयणीयमाश्रयामहे । किंतु कुमारस्य

गजराजों के साथ, जिनके वेग रुकते ही घण्टों का आवाज बंद हो गयी—इहंसा लीट पड़े । ७ ।

English—By some have been checked their horses, whose necks, raised up, are excessively bent on account of the very harsh bridles being pulled in and which are as if pounding with their hoofs the sky in front, while others have stopped on lordly tuskers with the bells mute because of the speed checked. Thus the kings, like the seas, do not overslep the boundary assigned to them by your order 7

टिप्पणी—(१) सोत्तेषै—०६+त्तिष्+यन भाव च छेप अर्थात् व त तन सह सोत्तेषै ।

(२) एक पदेरै—एक पद प्रीवा तस्य देशा, तै एक पदेरै । यहाँ इय भूतदृष्ट्या से तृतीया विभक्ति हुई ।

(३)—सरतरवदिव—अतिशयेन सरन् सरतरम् ।

(४)—निरुद्धा—नि+रुध्+त् कर्मणि ।

(५)—निवृत्ता—नि+वृत्+त् क क्तार ।

(६)—पुरस्ताद्—पूर्वस्मिन् देशे इति पूर्व+ङि+अस्ताति स्वार्थे—अव्यय ।

(७)—मातङ्गपुरया—मातङ्गपु मातङ्गानाम् वा पुरया—'वृष्णपु' से समास हुआ ।

इस श्लोक में—स्वभावोक्ति, ७ प्रश्ना तथा उपमा नामक अलङ्कार और सन्ध्या छन्द है ।

विमला

ध्याटया—मल०—आर्य=मा०व (Noble Sir), त्वमपि=भवानपि (you too), सपरिजन सहानुचरयर्ग (with attendants), निवर्त्तस्व=प्रतिनिवृत्तोभव (retire), भागुरायण (Bhagurayana), एक=अद्वितीय (alone), माम्= (me) अनुगच्छतु=अनुसरतु (follow)

वञ्चुकी—यत् (as), आज्ञापयति=आदिशति (commands), कुमार=भवान् (prince), [इति निष्क्रान्त (retires) सपरिजन (with attendants)]

मलय०—सखे=मित्र (friend), भागुरायण (Bhagurayan), अहम् (I), विज्ञापित=निवेदित (have been told), इह=अत्र (here), आसच्छद्भिः=सम्प्राप्त (coming over), भद्रभटप्रभृतिभिः=भद्रभटादिभिः (Bhadrabhatta and others), यथा=यत् (that) वयम् (we) यथा यराक्षसद्वारेण=मन्त्रिराक्षस द्वारा (through the minister Rakshasa), आश्रयणीयम्=सेवनीयम् (supportable) कुमार=मलयकेतुम् (to Malayaketu) न आश्रयामहे=न सेवामहे

सेनापतिं शिखरकुम्भीकं च दुष्टमात्यपरिगृहीताच्चन्द्रगुप्तपरिच्छाः कुमारमाभि-
रानिकगुण्यनादात्रयणोऽमात्र्यामहे' इति । तन्न मया सुचिरमपि विचारयता
तेषामय वाक्यार्थोऽवधारितः ।

भागुरायणः—कुमार न दुर्बाधोऽयमर्थः । विजिगीषुमात्मगुणसपन्न
प्रियहितद्वारेणात्रयणावमश्रयेदिति ननु न्याय्य एवायमर्थः ।

(do not serve him), किन्तु=किन्तु (but), कुमारस्य=मलयकेतोः (Hono-
rable Malayaketu's), सेनापतिम्=समूनायकम् (general), शिखरकुम्भ-
तद्वानकम् (Saikharaka), उरोह्वयः=आधिश्रय (having accepted), दुष्टमात्य-
परिगृहीताम्=दुष्टरितमन्त्रिचनोहृताम् (gnded by a vile minister), चन्द्र-
गुप्ताम्=सौर्याम् (from Chandragupta), अपरिच्छा=विरक्ता (being
alienated), अभिरानिकगुणयोग्याम्=अस्त्वनुगयोग्याम् (on account of
amiable qualities), आश्रययोग्यम्=मेवयोग्यम् (supportable), आश्रयामहे=
सेवामहे (approach), इति उत्तराह विज्ञापिकः ननु=सुचिरमपि=सुदीर्घकालमपि
(even for a long time), विचारयता=विचिन्तयता (thinking), मया
(by me), वाक्यार्थः=वाक्यमिमांसा (meaning of their words), नाव-
धारितः=न ज्ञातः (I have not been able to grasp).

भागुरा—कुमार (Prince), न दुर्बाधोऽयमर्थः=नातिशयविलोपोऽयमर्थः (The
meaning of these words is not so hard to understand), परम्=देखलोक्य
(see), विजिगीषुम्=विजयामिलाषिणम् (ambitious), आत्मगुणसम्पन्नम्
(endowed with personal qualities), प्रियहितद्वारेण=प्रियहितजनोपायेन
(through the medium of one who is beloved and friendly), आश्रयेत्=
मेवेत् (should resort), इति, अयमर्थः (this meaning), न्याय्य एव=
न्यायादनपेक्षः युक्त एव (= very proper course of conduct).

हिन्दी—महो—भार्य, तुम नो परेबनों के साथ छोड़ जाय। केवल भागुराना हो
मेरे साथ चले।

कुम्भीक—कुमार की बेनी आज्ञा (ऐसा कहकर परिवरों के साथ चला गया) ।

मलय—सबे भागुरान, यहाँ आने वाले नर नर प्रकृति के द्वारा जो मुझ पर निवेदि-
त किया गया—“आश्रय के योग्य कुमार का आश्रय हम दोनों ने अनन्तर राजस के द्वारा नहीं
नहीं किया है, अतएव कुमार के सेनापति शिखरकुम्भ के माध्यम से, दुष्ट चातुर के वशीभूत
चन्द्रगुप्त से विरक्त होकर, प्रकृत शासक क्रोश्व कुमार का आश्रय ग्रहण किया है।”
पर्याप्त विचार के बाद भी इन शब्दों का ठाक ठाक बर्ष नेरी सन्तर्प में नहीं आया।

भागुरायण—कुमार इसका क्या सनसने में लोभुअ अधिक कठिनाता नहीं है। विवेच्यु,
यदि तुम से विभूषित, आश्रय ग्रहण करने योग्य व्यक्ति का आश्रय प्राप्त कर दिखलारी
व्यक्ति के माध्यम से करना चाहिये—यह बर्ष जो प्रविष्ट हो है।

English—Malayaketu—Noble Sir you too retire with your
attendants. Let Bhagurayan alone follow me.

मलयकेतु —सखे भागुरायण, नन्वमात्यराक्षसोऽस्माकप्रियतमो हिततमश्च।

भागुरायण —एवमेतत् । किंत्वमात्यराक्षसश्चाणक्ये बद्धवेरो न चन्द्रगुप्ते ।

तद्यदि कदाचिच्चाणक्यमतिजितकाशिनमसहमानं स साचिव्यादवरोपयेत्ततो नन्दकुलभक्त्या नन्दान्वय एवायमिति सुहृज्जनापेक्षया चामात्यराक्षसश्चन्द्रगुप्तेन सह सदर्शीत । चन्द्रगुप्तोऽपि पितृपर्यायागत एवायमिति सधिमनुमन्येत । एव सत्यस्मासु कुमारो न विश्वसेदित्ययमेवा वाक्यार्थः ।

Chamberlain—As your commands Sir (Exit with his attendants)

Malayaketu—Friend Bhagurayan, I am told by Bhadrabhatta and others who came to me, that they were not supporting to supportable prince by minister Rakshasa, but are supporting, through the general Shikharsen, being alienated from Chandragupta who was guided by a vile minister Chanakya. But I could not grasp their statement, thinking till a long time

Bhagurajah—Prince, the meaning of this sentence is not so hard to understand. This is indeed the proper course of conduct, since one should resort to a master who is ambitious and endowed with personal qualities through the medium of one who is beloved and friendly

बिमला

व्याख्या—मलयकेतु —सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan), अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), ननु=निश्चयेन (indeed), अस्माकम् (ourselves) प्रियतम (the most beloved), च=पुन (and), हिततमश्च (the greatest well-wisher)

भागुरायण —एवमेतत्=(So it is), किन्तु=किञ्च (but), अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), चाणक्ये=कौटिल्ये (with Chanakya) बद्धवैर=एतद्विद्वेष (has rooted enmity), न चन्द्रगुप्ते (not with Chandragupta), तत्=तस्मात् (so) यदि (if), कदाचित्=ज्ञातु (at some time), चन्द्रगुप्त =मौर्य (Chandragupta), अविजितकाशिनम्=अनल्पमदत्ताङ्गिनम् (the extreme haughtiness) चाणक्यम्=कौटिल्यम् (Chanakya), असहमान =अमृष्यमाण (intolerant), साचिव्यात्=मन्त्रिस्थानात् (from the post of minister), अवरोपयत्=व्यावयेत् (should ever displace), तत=तदा (then) नन्दकुलभक्त्या=नन्दान्वयप्रेम्णा (through devotion to the race of Nanda) अयं=चन्द्रगुप्त (this), नन्दान्वय =नन्दवरय एव (after all Nanda's son), सुहृज्जनापेक्षया=मित्रजनानुराधेन (for the sake of his friends), अमात्यराक्षस =मन्त्रिराक्षस (minister Rakshasa), चन्द्रगुप्तेन=मौर्येण सह (with Chandragupta), सन्दर्शीत=सन्धिं कुर्यात् (might

मलयकेतुः—युज्यते । अमात्यस्य गृहमादेशाय ।

भागुरायणः—इत इतः कुमारः ।

(उभौ परिक्रामतः ।)

भागुरायणः—इदममात्यगृहम् । प्रविशतु कुमारः ।

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अये, स्मृतम् । (प्रकाशम् ।) भद्र, अपि दृष्टस्त्वया कुसुमपुरे स्तनकलशः ।

पुरुषः—अमञ्च, अह इ । (अमात्य, अय किम् ।)

मलयकेतुः—(आकर्ण्य ।) भागुरायण, कुसुमपुरवृत्तान्तः प्रस्तूयते । न तत्र तावदुपसर्पामः शृणुमस्तावत् । कुतः—

को छोड़कर क्षिप्राक को माध्यम भद्रभटादि ने क्यों बनाया । उनके कहने का आरय क्या है ! इसी सन्दर्भ में इसका प्रयोग किया गया है ।

विमला

व्याख्या—मलयकेतु —युज्यते=समुचितमेव (that is reasonable), अमात्यस्य=सचिवराक्षसस्य (minister's), गृहम्=सदनम् (to the house), आदेशाय=दर्शय (guide me)

भागुरायण —इत इतः कुमारः (This way prince, this way), [उभौ=द्वौ (both), परिक्रामतः=भ्रमतः (go round the stage)], कुमार (Prince), इदम्=एतत् (this is), अमात्यराक्षसस्य (minister Rakshasa's), गृहम् (the house), प्रविशतु (let enter), कुमार (Prince).

मलयकेतु —एष. (here), प्रविशामि (I enter),

राक्षस —[आत्मगतम् (to himself)], अये (Ah), स्मृतम्=ज्ञातम् (recollect it), [प्रकाशम्=(Aloud)], भद्र=कव्यानिम् (gentleman), अपि दृष्टस्त्वया (did you see), कुसुमपुरे (in Kusumpura), स्तनकलशः (Stanakalasha)

पुरुष —अमात्य = मन्त्रिन् (minister), अय किम् (I did).

मलयकेतु —[आकर्ण्य (listening), भागुरायण (Bhagurayan), कुसुमपुरवृत्तान्तः=कुसुमपुरोदन्तः (Kusumpur affairs), प्रस्तूयते=विधीयते (are being discussed), तत्=तस्मात् (so), न=नहि (not), तत्र (there), उपसर्पामः=सन्निधिम् गच्छाम (approach in the midst of it), शृणुमस्तावत् (but will listen).

हिन्दी—मलयकेतु—ठीक है । सचिव का गृह नतलाओ ।

भागुरायण—इधर कुमार इधर आइये ।

(दोनों घूमते हैं)

यह अमात्य राक्षस का घर है । कुमार प्रवेश कीजिए ।

मलयकेतु—यह प्रवेश करता हूँ ।

सत्त्वमङ्गमयाद्राज्ञं कथयन्त्यन्यथा पुरः ।

अन्यथा विवृतार्थेषु स्वैराख्यापेषु मन्त्रिणः ॥ ८ ॥ मंत्रीलोका-

राज्य—(अपने भार) भरे, त्वरा वा गता । (स्तब्ध) मद्र, कुसुमपुर में क्या तुम सनकलस से मिले थे ।

पुरुष—मनास्य और क्या ?

मलयकेतु—(मुनकर) मातुरायन, कुसुमपुर का वृत्तान्त चल रहा है । अतः वहाँ जाना नहीं है । देख ल मुनो ।

English—*Malayaketu*—That is reasonable, guide me to the house of the minister.

Bhagurayana—This way prince this way (Both go round the stage)

Blagurayana—This is the house of minister. Let prince enter.

Malayaketu—Here I enter,

Rakshasa—(To himself) Ah, I recollect it ! (Aloud) Friend, did you see Stanakalasa in Kusumpura ?

Man—Minister, I did.

Malayaketu—(Listening), Bhagurayan, Kusumpura affairs are being discussed we must not approach in the midst of it, but will listen

विमला

अन्यथा—मन्त्रिणः राज्ञां, पुरः सत्त्वमङ्गमयात्, अन्यथा कथयन्ति, विवृतार्थेषु, स्वैराख्यापेषु अन्यथा ॥ ८ ॥

व्याख्या—मन्त्रिणः=सचिवाः (ministers), राज्ञाम्=नृपानाम् (of kings), पुरः=सनक्षम् (in presence), सत्त्वमङ्गमयात्=मनोभङ्गनीत्या (fearing loss of prestige), अन्यथा=प्रकारान्तरेण (otherwise), कथयन्ति=भाषन्ते (speak), विवृतार्थेषु=प्रकटीकृतार्थेषु (facts are disclosed), स्वैराख्यापेषु=स्वच्छन्दभाषणेषु (in free talk), अन्यथा=प्रकारान्तरेण (in other way). ॥ ८ ॥

हिन्दी—मन्त्री लोग राजाओं के सम्मुख जान दा प्रभाव के नष्ट हो जाने के नय से किन्ती बात की अन्य प्रकार से कहते हैं और परस्पर स्पष्ट विषयों वाली स्वच्छन्द बातचीत में कुछ मित्र प्रकार से कहते हैं ॥ ८ ॥

English—Ministers speak in one way in presence of kings, fearing loss of prestige, but otherwise in confidential talks where matters are freely and openly stated. 8.

टिप्पणी—(१) स्वैराख्यापेषु—स्वै + आख्यापेयु—अने जनों के साथ स्वतन्त्र बात बात में ।

(२) अन्यथा अन्यथा—इस श्लोक में 'अन्यथा' शब्द की आशुति इस बात की सूचना है कि एक ही बात दो तरह से प्रकट की जाती है ।

भागुरायण — यदाज्ञापयति कुमारः ।

राक्षस — भद्र, अपि तत्कार्यं सिद्धम् ।

पुरुष — अमचप्पसादेण सिद्धम् । (अमात्यप्रसादेन सिद्धम् ।

मलयकेतु — सखे भागुरायण, किं तत्कार्यम् ।

भागुरायण — कुमार, गहनं सचिववृत्तान्तं । नैतावता परिच्छेत्तु शक्यते । अवहितस्तावच्छृणु ।

राक्षस — भद्र, विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुष — सुणादु अमच्चो । अत्थि दाव अह अमच्चेणाणत्तो जह — 'करभअ, कुसुमपुर गच्छ । मह वअणेण भण वेआलिअ यणकलस जह चाणकन्दएण तेसु तेसु अण्णाभङ्गेसु अणुचिट्ठीअमाणेसु चन्दवत्तो उत्तेअणसमत्थेहि सिलोएहि

(३) सत्वभङ्गमयात् — मनस्वी मन्त्री राजा के सामने उर्दी बातों को प्रकट करते हैं जिससे उन्हें मानभङ्ग कर भय नहीं रहता ।

सद्वर्षों के बीच यथार्थ भाषण में, तथा मानभङ्ग भय के कारण नृपों के सामने अथ रूप से भाषण करने से — सत्वभङ्ग भयरूप पदार्थ का हेतुत्व रहने के कारण इस श्लोक में पदार्थ हेतुक वाच्यलिङ्ग अलङ्कार है । तथा अनुष्टुप नामक छन्द है । दोनों के लक्षण पहले लिखे जा चुके हैं ।

विमला

व्याख्या — भागुरायण — यत् (as), आज्ञापयति = आविष्टति (commands), कुमार (Prince)

राक्षस — भद्र (Gentleman), तत्कार्यम् (that work), अपि सिद्धम् (is done) ?

पुरुष — अमा यप्रसादेन (through minister's favour), सिद्धम् = सफलम् (done)

मलयकेतु — सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan), किम् (what), तत्कार्यम् (is that work)

भागुरायण — कुमार (Prince), सचिववृत्तान्तं = अमात्योदन्त (the affairs of the minister), गहनं = विहृत (are mysterious), वृतावता = अवरुद्धावता (at this stage), न = नहि (not), परिच्छेत्तुम् = योज, निर्णतुम् वा (be known), शक्यते (can), तावत् (so), अवहितम् = सावधानो भूया (attentively), शृणु = आकर्णय (should hear)

राक्षस — भद्र (gentleman), विस्तरेण (in detail) श्रोतुम् (to hear), इच्छामि (I wish)

पुरुष — शृणोतु (listen), अमात्य (minister) यथा = यत्, अहम्, (I), अमात्येन (by minister), आज्ञप्तं = अस्ति (was ordered), करभक (Karbhaka), कुसुमपुरम् (to Kusumpura), गच्छ (go), मम वचनेन (in my words), वेतालिकम् (to bard) स्तनकलस (Stankalas) भण = कथय (tell) यथा = तत् (that), चाणक्यद्वयकन = दुष्टकौटिल्येन (by cursed Chanakya), तपु तेपु = पूर्वाक्तेपु (each and every), आज्ञाभगेषु = अनुज्ञासनापालनेपु (super-

उपसिलोअइद्व्यो' ति । (शृणोत्वमात्यः । अस्ति तावद्दहममात्येनाज्ञप्तः यथा—'करभक कुमुनपुरं गच्छ । मम वचनेन भण वैतालिक स्तनकलशं यथा चाणक्यदत्तकेन तेषु तेषु आज्ञाभङ्गेषु अनुष्ठेयमानेषु चन्द्रगुप्तः उत्तेजन-समर्थः श्लोकेरुपश्लोकेचितन्य' इति ।

राक्षसः—भद्र, तत्तत्तत् ।

जम्बक —तदो मए पाटलिपुत्र गहुअ सुणाविदो अमञ्जसरेसं वैआलिओ

cession of orders), अनुष्ठेयमानेषु = क्रियमाणेषु done), चन्द्रगुप्तः = नौर्य. (Chandragupta), उत्तेजनसमर्थः = श्लोकोत्पादनशक्ते (capable of raising anger), श्लोके (with verses), उपरलोक्ष्यितव्य = स्तौतव्य (has to be belauded).

हिन्दी—भागुरायण—कुमार को क्या आज्ञा ।

राक्षस—भद्र, क्या कुछ न कहना निम्न ।

पुरुष—अनाथ को हृत् से प्रसन्नता निम्न है ।

मलयकेतु—निम्न भागुरायण, वह क्यों सा कार्य है ।

भागुरायण—कुमार, अनाथ का वृत्तान्त पूछ होजा है । हउने से निश्चित करना अतनव है । ध्यान नरु सुनिये ।

राक्षस—भद्र, विस्तार से सुनना चाहता हूँ ।

पुरुष—अनाथ सुनिये । कुल जानने काइय दिया था—'करभक कुमुनपुर जाओ । नरा अर से वैदगढक रत्नकलश से कहो कि कुछ बातों के द्वारा उन उन भाइयों के किये जान पर उद्योजित करने में स्पर्धामूर्तियों के द्वारा चन्द्रगुप्त की स्तुति की जानी चाहिए ।'

English—Bhagurayan—As the prince commands.

Rakshasa—Good man, is the work done ?

Man—Yes, through the minister's favour.

M'alayaketu—Friend Bhagurayan, what the business is done ?

Bhagurayan—Prince, the affairs of the minister are deep, so it can not be known at this stage. You should listen attentively.

Rakshasa—Gentleman, I want to hear in detail.

Man—Listen minister. The matter is, I was ordered by minister saying—Karbhaka go to Kucumpura and tell in my words to the barder Stankalash that he should praise Chandragupta at each and every act of disobedience done by vile Chanaitya

रिमला

'दाट्या—राक्षस—राक्षस' (Rakshasa), नद्र=कल्याण (good man), तत्तत्तत् = तत्पश्चात् (what next).

करभक—करभक (Karbhaka), तत्तत्तत्पश्चात् (after that), मया=

थणकलसो । एत्थन्तरे णन्दउल्लिणासदूणस्स पोरजणस्स परितोसं समुत्पाद-
अन्तेण रण्णा आपोसिदो कौमुदीमहोत्सवो । सो अ चिरकालपरिवट्टमाणो
जणिदपरिचओ अभिमदवधूजणसमागमो विअससिणेहं माणिदो णअरजणेण ।
(ततो मया पाटलिपुत्रं गत्वा श्रावितः अमात्यसदेशं वैतालिकः स्तनकलशः ।
अत्रान्तरे नन्दकुलविनाशदूनस्य पौरजनस्य परितोषं समुत्पादयता राज्ञाघोषितः
कौमुदीमहोत्सवः । स च चिरकालपरिवर्तमानो जनितपरिचयोऽभिमतवधू-
जनसमागम इव सस्नेहं मानितो नगरजनेन ।)

राक्षसः—(सबाप्पम् ।) हा देव नन्द,

करभकेन (by me), पाटलिपुत्रम् = कुसुमपुरम् (to Pataliputra), गत्वा
(going), श्रावित = कथितः (was informed), अमात्यसन्देशम् = सचिवसन्देशम्
(minister's message), वैतालिकः (the bard), स्तनकलशः (StanKalash),
अत्रान्तरे = सदैवभावणान्तरे (In the meantime), नन्दकुलविनाशदूनस्य =
मन्दान्वयचतुर्हृदयस्य (were depressed by the extinction of the family
of Nanda), पौरजनस्य = पुरवासिनः (to the citizens), परितोषम् = सन्तोषम्
(the townsfolk), समुत्पादयता = जनयता (desiring to gladden), राज्ञा-
घोषितः (proclaimed), कौमुदीमहोत्सवः (Kaumudi festival), स च
(that festival), चिरकालपरिवर्तमानो = बहुकालम्याप्यजायमानः (returning
after a long time), जनितपरिचयो = समुत्पादितानन्दः (familiar), अभि-
मतवधूजनसमागम इव = इत्थितयधुजनसमागम इव (like the company of
beloved wife), सस्नेहः = सानुरागम् (delightfully), मानितः = अतिसाकृतः
(welcomed), नगरजनेन = पुरवासिना (by the citizens).

राक्षसः—[सबाप्पम् = (Tearfully)], हा देवनन्द (Alas, O king Nanda).

हिन्दी—राक्षस—अब उसके बाद, उसके बाद ?

करभक—उसके बाद पाटलिपुत्र जाकर मैंने अमात्य का सन्देश वैतालिक स्तनकलश
को सुना दिया । इसी बीच नन्दकुलविनाश से दुखी नगरवासियों को प्रसन्नता को
उत्पन्न करते हुए राजा के द्वारा कौमुदीमहोत्सव मनाये जाने की घोषणा कर दी गयी ।
बहुत दिनों के बाद आया हुआ पूर्वपरिचिन भी यह उत्सव पुरवासियों के द्वारा अभीष्ट पशु के
साथ मिलने के समान सस्नेह अभिनन्दित किया गया ।

राक्षस—(ओंठों में आँसू भरकर) हा देवनन्द !

English—Rakshasa—Good man what next ?

Karbha—Then the bard StanKalasa was informed of minister's
command by me going to Pataliputra. In the meantime the king
desiring to gladden the citizens who were depressed by the destruc-
tion of the Nandas, proclaimed the great Kaumudi festival. That
festival, so familiar as it had become by recurring for a long
time, it was like the company of a beloved wife gladly welcomed
by the townsmen.

कौमुदी कुमुदानन्दे जगदानन्दहेतुना ।
कौहरी सति चन्द्रेऽपि नृपचन्द्र त्वया विना ॥ ९ ॥

Rakshasa—(In tears), Alas, Sire Nanda.

धिमत्ता

अन्वयः—हे नृपचन्द्र, कुमुदानन्दे, चन्द्रे, सति, अपि, जगदानन्दहेतुना, त्वया, विना, कौमुदी, कौहरी ? ॥ ९ ॥

व्याख्या—हे नृपचन्द्र=हे चित्तीशवर्य (O you the moon among the kings), कुमुदानन्दे=कुमुदानाम्, कुवलयानाम्, आनन्दे=प्रीतिजनके (the gladdener of night lotuses), अथवा—कौ, पृथिव्याम् को=पृथिव्या वा मुदम् हर्षम् आनन्दपद्मि, वर्द्धयतीति तस्मिन्, अग्निहर्षं वर्द्धक (the source of joy to the world), अथवा—कुसिता सुद्वेषाम ते कुमुदास्तानानन्दयति रजयति—इति कुमुदानन्दं तस्मिन् कुमुदानन्दे=अपस्तम्भहर्षमालिङ्गनरजके (gratifier of people delighting in bad things such as Chanakya and people of his type), चन्द्रे सति=चन्द्रमसि सत्यपि (in presence of the moon), अथवा=चन्द्रगुप्ते सत्यपि (in presence of Chandragupta), जगदानन्दहेतुना=जगत मनप्राया घरायाः आनन्दस्थ, हर्षस्य यो हेतुः निदानं तयाविभेन, पृथिवी-हर्षोपाद्देन । the cause of delight to the whole world), त्वया विना=भवता विना (without you), कौमुदी=ज्योत्स्ना (moonlight), अथवा कौमुदीमहोत्सवभ्यवस्था (the Kaumudi festival), कौहरी=किम्प्रकाराः=निरर्थक इति भावः (what can be) इति श्लोकः नै इति तत्र न्यतिरेक अलङ्कार त्वया अनुष्टुप् छन्दः ।

हिन्दी—यह श्लोक 'छिट' है । अर्थात् हमके दो बर्ष हैं :-

(१)—हे चन्द्रतुल्य राजन् नन्द 'कौमुदी' को आनन्दित करने वाले चन्द्रमा के रहने पर भी मन्त्र सत्तार के आनन्द के हेतुस्वरूप तुम्हारे बिना इस शरद पूर्णिमा का कौमुदी-महोत्सव कैसा ?

(२)—हे चन्द्रतुल्य महाराज नन्द 'पृथिवी' के आनन्द को बढ़ाने वाले चन्द्रगुप्त के रहने पर भी सन्त्र सत्तार के आनन्द के कारण तुम्हारे बिना यह कौमुदीमहोत्सव कैसा ?

English—(1) Alas king Nanda '—moon among king : what 'Kaumudi festival of this Sharad purnima' without you—the delighter of the whole world, inspite of the presence of the full moon—the delighter of lotuses. 9.

(2) Alas king Nanda '—moon among kings—what Kaumudi festival without you—the delighter of the whole world, in spite of presence of Chandragupta—the delighter of some whole ordinary men. 9.

करभकः—तदो सो लोअलोअणाणन्दभूदो अणिच्छन्तस्स एव तस्स निवारिदो चाणक्कड्ढएण । एत्थन्तरे थणकलसेण चन्दउत्तसमुत्तेजिआ सिलोअपरिपाटी पवट्ठिदा । (ततः स लोकलोचनानन्दभूतोऽनिच्छत एव तस्य निवारितश्चाणक्यहृतकेन । अत्रान्तरे स्तनकलशेन चन्द्रगुप्तसमुत्तेजिका श्लोकपरिपाटी प्रवतिता ।)

राक्षसः—कीदृशी सा ।

(पुरुषः 'सत्त्वोद्रेकस्य' इत्यादि पूर्वोक्त पठति ।)

राक्षसः—(सहर्षम् ।) साधु स्तनकलश, साधु । काले भेदबीजमुतमवश्यं फलमुपदर्शयति । कुतः—

जिमला

करभक —ततः तदनन्तरम् (then), सः=असौ (this), लोकलोचनानन्दभूतः=लोकानाम् लोचनानि लोकलोचनानि तेषामानन्दभूतौ मनुजनयनसुखप्रदः. (the joy of the eyes of the people), अनिच्छतः=अनमिलपितः (the unwilling), एव तस्य =चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's), निवारितः=प्रतिषिद्धः (was forbidden), चाणक्यहृतकेन =दुष्टकौटिल्येन (by the cursed Chanakya), अत्रान्तरे=एतन्मध्ये (meanwhile), स्तनकलशेन =तन्नाम्ना राक्षसदूतेन (by Stankalash), चन्द्रगुप्तसमुत्तेजिका =सौर्वोद्दीपनकरी (exasperated), श्लोकपरिपाटी =पद्यरचनापद्धतिः (a series of stanzas), प्रवतिता =कृता (sang).

राक्षस.—कीदृशी सा (How was it like) ?

[पुरुषः कारभकः (men) 'सत्त्वोद्रेकस्य' etc, पूर्वोक्तम् (previously said), पठति (repeats)].

राक्षस.—[सहर्षम् (with joy)], साधु (Bravo), स्तनकलश (Stankalasa) साधु (Bravo), काले=उपयुक्ते अवसरे (it time), भेदबीजम् (the seed of discord), उतम् =वपितम् (sown), अवश्यम् (assuredly), फलम् =परिणामम् (fruit), उपदर्शयति (bear), कुतः (For) :—

हिन्दी—करभक—उसके बाद मनुष्यों के नेत्रों के लिए आनन्दस्वरूप उस कौमुदी महोत्सव पर दुष्ट चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को इच्छा के विरुद्ध रोक लगा दो । इसी बीच स्तनकलश ने चन्द्रगुप्त को उत्तेजित करने वाली स्तुति परम्परा प्रारम्भ कर दी ।

राक्षस—वह कैसी थी ।

(पुरुष "सत्त्वोद्रेकस्य" इत्यादि पूर्वोक्त श्लोक को पढ़ता है)

राक्षस—(हर्ष के साथ) बहुत अच्छा स्तनकलश बहुत अच्छा । समय पर बोधा हुआ भेदकारी बीज अवश्य ही फल दिखाएगा है । क्योंकि :—

English—*Karbhaka*—This joy to the eyes of the people was forbidden by the cursed Chanakya in spite of the unwilling king. At this stage a series of stanzas that was to rouse Chandragupta, was launched out by Stankalasa.

सद्यः क्रीडारसच्छेदं प्राकृतोऽपि न मर्षयेत् ।

किं नु लोकाधिकं तेजो विभ्राणः पृथिवीपतिः ॥ १० ॥

मलयकेतु—एवमेतत् ।

राक्षस—नतस्त ।

Rakshasa—How was it like ?

(Repeats the verse 'सद्योत्कर्षस्य' etc as previously said).

Rakshasa—(with joy) Barvo Stankalas bravo ! The seed of discord sown in time absurdly bears the good fruit.

For :—

विमला

अन्वयः—प्राकृतः, अपि, सद्यः, क्रीडारसच्छेदम्, न, मर्षयेत्, लोकाधिकम् तेजः, विभ्राणः, पृथिवीपतिः, किं नु ? ॥ १० ॥

व्याख्या—प्राकृतः=व्यतिसाधारण (an ordinary person), अपि (even), सद्यः=हेतुमन्तरा क्रीडापान रस=क्रीडारस तस्य क्षेपे भङ्गस्तम् क्रीडारसच्छेदम् क्रीडास्वादभङ्गन the instant stoppage of the pleasures of sports), न मर्षयेत्=न सह्येत् (will not brook), लोकाधिकम्=लोकेश्वरम् (transcends the world), तेजः=शान (power), विभ्राणः=धारयन् (bearing), पृथिवीपतिः=वितीक्ष (the lord of the world), किं नु=नैव न रयेदिति (do so) ॥ १० ॥

मलयकेतु—एवमेतत् (it is just so).

राक्षस—नतस्ततः (what next)

हिन्दी—गवारा व्यक्ति मो क्षानर के छिद क्रीडा के आनन्द के व्यापान को सहन नहीं कर सकता है, ना फिर लोकेश्वर तेज को धारण करने वाले राजा का तो कहना ही क्या ? ॥ १० ॥

मलयकेतु—इ देता ही है

राक्षस—उनके बाद, उतके बाद ?

English—Even an ordinary person will not stand the instant stoppage of the pleasures of sports, would the lord of the world, possessed of lustre transcending that of all men do so. 10.

Malayaketu—So it is

Rakshasa—What next.

टिप्पणी—(१) अनिच्छा—अनिच्छन्मनाहृत्वेत्यर्थः । 'पयोवानादर' इति पयो ।

(२) मनुचमिका—स्न् + च् + विच् + श्रुल, कर्त्तरि, लिप्तान् ।

(३) क्रीडशी—क्रिन् + श्रु + यन्—कर्त्तरि लिप्तान् ।

(४) फलन्—आ + क्त चन्द्रप्रभ ने नेदस्ता फल ।

(५) लोकाधिकम्—लोकादधिकम् ।

वरभक् — ततो चन्द्रवत्तेण अण्णामङ्गकलुसिदेण पसङ्गसूचिदं अमच्चगुणं पससिअ अपच्चभसिदो अहिआरादो चाणक्यदओ । (तत्तच्चन्द्रगुप्तेनाज्ञाभङ्गकलुपितेन प्रसङ्गसूचितममात्यगुणप्रशस्वापभ्रशितोऽधिकाराचाणक्यहतकः ।)

मलयकेतु — सखे भागुरायण, गुणप्रशसया दशितश्चन्द्रगुप्तेन राक्षसे भक्तिपक्षपातः ।

भागुरायण — न तथा गुणप्रशसया यथा चाणक्यवदोर्निराकरणेन ।

राक्षस — किमयमेवैकं कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधश्चन्द्रगुप्तस्य चाणक्यप्रति कोपकारणमुतान्यदप्यस्ति ।

मलयकेतु — सखे, चन्द्रगुप्तस्यापरकोपकारणान्वेषणेन किं फलमेव पश्यति ।

(६) विभाण — वृत्तज्ञानम् — उभयपक्षी यत्तु ते निर्मितः ।

इस श्लोक में अर्थापत्ति अलङ्कार एव अनुष्टुप् छन्द है ॥

विमला

व्याख्या — वरभक् — ततः = तत्पश्चात् (then), चन्द्रगुप्तेन = वृषलेन (by Chandragupta), अज्ञाभङ्गकलुपितेन = आज्ञायाः भङ्गस्तेन कलुपितस्तेन अज्ञाभङ्गकलुपितेन = आदेशोद्धृता प्रसङ्गचित्तन (by the supersession of orders), प्रसङ्गसूचितस्तम् प्रसङ्गसूचितम् (by the drift of conversation), अमात्यगुणम् = अमात्यस्य गुणम् अमात्यगुणम् = राजस्य सौशील्यादिकम् (the virtues of minister), प्रशस्य = सस्तुत्य (praised), अपभ्रशितः = व्यावृत्तः (dismissed), अधिकारात् = साचिव्यपदात् (from the office), चाणक्यहतकः = दुष्टचाणक्य (the vile Chanakya)

मलयकेतु — सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan), गुणप्रशसया = गुणानां सौशील्यादीनां प्रशंसा सरस्तुति गुणप्रशंसा तथा गुणप्रशसया सौशील्यादिसस्तुत्या (by this praise of his qualities), दशितः = प्रकटितः (has shown), चन्द्रगुप्तेन = वृषलेन (by Chandragupta), राक्षसे = तन्नामात्वे (towards Raksasa), भक्तिपक्षपातः = भक्तिः अनुराग एव पक्ष आधाय स्वस्मिन् पात आसक्ति भक्तिपक्षपातः (leaning through affection)

भागुरायण — न तथा (Not so), गुणप्रशसया = गुणवर्णनेन (by the praise of his qualities), यथा = यौर्वर्ण राक्षसे अनुरागोदशितः (as), चाणक्यवदो = अल्पबुद्धे कौटिल्यस्य (of the cursed Chanakya), निराकरणेन = तिरस्कारेण (the removal from office)

राक्षस — किमयम् (is this), एवैक (only), कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः (prohibition of the Kaumudi festival), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य (Chandragupta's), चाणक्यप्रति (on Chanakya), कोपकारणम् = क्रोधहत्तु (reason for anger), उत (or), अन्यदपि = अपरोऽपि (any thing also), अस्ति (is)

मलयकेतु — सखे = मित्र (friend), चन्द्रगुप्तस्य = वृषलस्य (Chandragupta's),

भागुरायणः—कुमारः सतिमांशापक्यो न निष्प्रयोजनमेव चन्द्रगुप्तं कोपयिष्यति, न च कृतवेदी चन्द्रगुप्त एतावता गौरवमुल्लङ्घयिष्यति । मया चापक्यचन्द्रगुप्तयोः पुन्येन कारणाद्यो विशेष उच्येत स आत्यन्तिको भविष्यतीति ।

अपरकोपकारणान्वेषणेन (looking for other cause of anger), एष (he), किञ्चलम् (what good), परयति (does see).

भागुरायणः—कुमार (Prince), नितिमांशमपक्य = प्रसस्तवीर्याली कौटिल्य (wise Chanakya), न निष्प्रयोजनमेव = न निर्धनुस्तेव (not for nothing), चन्द्रगुप्तमन्वेषणम् (to Chandragupta), कोपयिष्यति (will rouse anger), न च (nor), कृतवेदी = कृत वेदुः साधनस्य, कृतवेदी = कृतज्ञ (grateful), चन्द्रगुप्त = चण्डः (Chandragupta), एतावता = अल्पेन कारणेन (for this trifling), गौरवम् = महत्त्वम् (the respect), उल्लङ्घयिष्यति = अतिश्रमिष्यति (will overstep), सर्वथा = सर्वथा (in every way), चापक्यचन्द्रगुप्तयोः (between Chanakya and Chandragupta), पुष्कलात्मनः (of sufficient), कारणात् (reasons), यः (which), विरलेष्वभेदः (estrangement), उच्येत = उच्येत (will be), स = अस्मी (that), आत्यन्तिकः = प्रताकाराद्योऽयः (permanent).

हिन्दी—करनक—उत्ते को राद मदेश को भवभना के द्वारा चन्द्रगुप्त को नन सिद्ध हो गया और प्रमदगुप्त मारका प्रदत्ता करत हुए, उतने दुरातना चात्क्य को उन्ही का अपिकार से चुन कर दिना ।

मलयकंठु—नित्र भागुरायण, उभावन करत हुए चन्द्रगुप्त ने राक्षस से करना मक्ति प्रदत्त कर दी है ।

भागुरायण—गुप्तों की प्रदत्ता के द्वारा उतना नहीं, बिना चात्क्य के भवभना के द्वारा ।

राक्षस—म्या दरो रक्षनात्र कारा है—कैमुदी नरोत्तम पर राक्ष उभा देना—मदवा कोरें मय कारा नो है ।

मलयकंठु—नित्र ! चन्द्रगुप्त के क्रोध के दूसरे कारणों को दूँकर से क्या निकला ?

भागुरायण—कुमार ! कुदिमान चात्क्य निष्प्रयोजन चन्द्रगुप्त को क्रुद्ध नहीं करेगा, और न चन्द्रगुप्त हा मात्र उतने उलु कारा मात्र से चात्क्य के गौरव का ही उल्लङ्घन करेगा । निन्दन ही चन्द्रगुप्त और चात्क्य के बीच को वह वेद उल्लङ्घन हुआ होगा, उल्लङ्घन कोरें स्वादा कारा होत ।

English—*Karabhika*—Then the vile Chanakya was removed from office by Chandragupta, who was enraged at the supersession of orders and praised the virtues of minister suggested by the drift of conversation.

Malayale—Friend, Bhagurayan by this praise of his qualities Chandragupta has disclosed his leaning through affection towards Rakshasa.

करभक्तः—अस्थि अण्ण वि चन्दउत्तस्स कोवकालणम् । उवेक्खिदो णेण अउकमन्तो मलअकेदू अमच्चत्तसो त्ति । (अस्त्यन्यदपि चन्द्रगुप्तस्य कोप-कारणम् । उपेक्षितोऽनेनापक्राम-मलयकेतुः अमात्यराक्षस इति ।)

राक्षसः—शकटदास, हस्ततलगतो मे चन्द्रगुप्तो भविष्यति । इदानीं चन्दनदासस्य बन्धनान्मोक्षस्तव च पुत्रदारैः सह समागमः ।

मलयकेतुः—सखे भागुरायण, हस्ततलगत इति व्याहरतः कोऽस्याभिप्रायः ।

Bhagurayan—Not so much by the praise of his virtues, as by the removal of the vile Chanakya from his office.

Rakshasa—Is this prohibition of the Kaumudi festival the sole reason for Chandragupta's anger on Chanakya or is there anything else also ?

Malayaketu—Friend, what good does he see in looking for other cause of Chandragupta's displeasure ?

Bhagurayan—Prince, wise Chanakya will neither rouse Chandragupta's anger without any motive, nor will grateful Chandragupta overstep the respect for this trifle. That estrangement between Chanakya and Chandragupta will be permanent in every way which results due to a number of causes.

विमला

व्याख्या—करभक्त —अन्यदपि = अपरमपि (another too), चन्द्रगुप्तस्य = गुप्तस्य (Chandragupta's), कोपकारणम् = क्रोधस्य रहस्यम् (cause of anger), अस्ति (is), अपक्रामन् मलयकेतुः (at the escape of Malayaketu), अमात्यराक्षसः (and minister Rakshasa), अनेन (by him), उपेक्षितः (were overlooked).

राक्षसः—शकटदास (Sakatadas), मे = मम, (my) हस्ततलगतः = करतलप्राप्तः (placed on the palm of hand), चन्द्रगुप्त (Chandragupta), भविष्यति (will be), इदानीं = अधुना (in this time), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), बन्धनात् = कारागृहात् (from the prison), मोक्षः = बहिर्निष्काशनम् (release), तव = भवतः (your), पुत्रदारैः सह = सुतकलत्रादिभिः सह (with son and wife), समागमः = सम्मेलनम् (union).

मलयकेतु —सखे भागुरायण (Friend Bhagurayan) हस्ततलगतः = करतलप्राप्तः (into my power), इति व्याहरतः = एवं कथयतः (by saying so), कः = किम् (what), अस्य = एतस्य (his), अभिप्रायः = तात्पर्यम् (mean).

हिन्दी—करभक्त—चन्द्रगुप्त के कोप का दूसरा भी कारण है । मलयकेतु और अमात्य-राक्षस भाग निकले और चाणक्य ने इसकी उपेक्षा कर दी ।

राक्षस—शकटदास, अब चन्द्रगुप्त को मेरी मुठ्ठी में ही आया समझो । इसका तात्पर्य यह हुआ कि चन्दनदास को कारा से मुक्ति और तुमको तुम्हारे परिवार से मिलन ।

भागुरायमः—किमन्यन् । चाणक्यादपकृतस्य
किञ्चित्कार्यमवश्य पर्यति ।

गञ्जनः—भद्र, इतिविचारः कः साप्रतनमो बटु ।

कर्मकः—तर्हि एव पाटलिपुत्रे अद्विषसति । (तस्मिन्नेव पाटलिपुत्रे
अधिवसति ।)

राक्षसः—(मावेगम् ।) भद्र, तत्रैव प्रतिवसति । तपोवनं न गतः प्रतिज्ञा
वा पुनर्न मनारुढवान् ।

नटयकेतु—भापुराय, 'तुझे मैं भा गया इस शब्द का अन्वितार्थ क्या हुआ ?

English—Rakshasa—Sakatdas, Chandragupta will be placed on the palm of my hand. Now Chandandras will be released from prison and you will be united with your wife and sons.

Karbhaka—Yes, there are other causes of Chandragupta's anger that he connived the escape of Malayaketu and of the minister Rakshasa.

Malayaketu—Friend, Bhagurayam, what is his meaning in saying on the palm of the hand

टिप्पणी—(१) निरकरण = निर + क् + क्त + लुट् विभक्ति कार्थः ।

(२) कुतवेशो = कुत् + विद् + णिनि + क्त्वरि विभक्त्यादि कार्थः ।

(३) आरयन्तेक = अरयन् + ठन् + विभक्त्यादि कार्थः ।

(४) इत्युल्लग्नो भविष्यति—इतः आरभ्य यह है कि चन्द्रगुप्त सचिवायुत राजा है ।
अतः चाणक्य से विरोध होने पर वह सीधे मेरे अधीन होगा ही ।

विमला

व्याख्या—भापुराय—किमन्यत् (what else ?), चाणक्यादपकृतस्य (from Chanakya), अपकृतस्य = वृत्तमूनस्य (withdrawn), चन्द्रगुप्तस्य = वृत्तस्य (of Chandragupta), उद्धरणत् = उन्मूलनात् (by uprooting), न किञ्चित्कार्यम् (does not any benefit), अवश्य पर्यति = नास्मात्प्रियामोष्टसिद्धिः (see).

राक्षस—भद्र = कल्याणिन् (Goodman), इतिविचारः = दूरीकृतनियोः (deprived of his office), साप्रतम् = अतः (now), क्व = कुत्र (where), अस्मै = (that), बटु = चाणक्यः (fellow).

कर्मकः—तस्मिन्नेव तत्रैव (itself), पाटलिपुत्रे (in Pataliputra), अधि-
वसति = निवसति (staying).

राक्षस—[सावेगम् = सरस (in uneasiness)], भद्र = कल्याणिन् (good man), तत्रैव प्रतिवसति = पाटलिपुत्र एव निवसति (lives in that very Pataliputra).

करभक —अमच, तपोवन गच्छदिति सुणीअदि । (अमात्य, तपोवन गच्छतीति श्रूयते ।)

राक्षस —शकटदास, नेदमुपपद्यते । परय—

देवस्य येन पृथिवीतलवासवस्य

स्याप्रासनापनयनाभिकृतिर्न सोढा ।

करभक —अमात्य=सचिव (minister), तपोवन (to a penance forest), गच्छति=याति (to retire), श्रूयते (I hear)

राक्षस —शकटदास (Shakatdas), नेदम् (this is not), उपपद्यते (consistent), परय (see)

हिन्दी—भागुरायण—इसके अतिरिक्त अब हो ही क्या सकता है कि सचिव को इष्टि में चाणक्य से एक चन्द्रगुप्त को उखाड़ फेंकने में बहुत बड़ा काम नहीं है ।

राक्षस—अन्ततः पदभुक्त होकर अब वह कहाँ रह रहा है ?

करभक—इसी पाटलिपुत्र में और कहाँ ?

राक्षस—(निराश होकर) यहीं पाटलिपुत्र में—क्या तपोवन नहीं गया, अथवा पुनः प्रतिष्ठा नहीं कर ली ?

करभक—मन्त्री भी सुनने में तो यही आया है कि तपोवन जायेगा ।

राक्षस—शकटदास, वह ठीक प्रतीत नहीं होता ।

English—Bhagurayan—What else ? Surely he sees no good by uprooting Chandragupta, when he is withdrawn from Chanakya

Rakshasa—My good man deprived of his office, where is that brat now ?

Karbhaka—Staying in Patalipura itself

Rakshasa—(In uneasiness) what, he stays there ? Did he not go to a hermitage or enter upon a second vow ?

Karbhaka—Minister it is rumoured that he is going to a hermitage

Rakshasa—Shakatdasa, This is not consistent : Just think.

विमला

अन्यथ —येन, पृथिवीतलवासवस्य, देवस्य, स्वाप्रासनापनयनात् निवृत्तिः, न, सोढा, स, अय, मनस्वी, स्वयंकृतनराधिपते, मौर्यात्, इमाम्, परिभूतिम्, कथ, नु सहेत ॥ ११ ॥

व्याख्या—येन=कौटिल्येन (by Chanakya), पृथिवीतलवासवस्य=पृथिवी-द्रस्य (a veritable Indra on the surface of the earth), देवस्य=नन्दस्य (sire s), स्वाप्रासनापनयनात्=स्वस्याप्रासन स्वाप्रासन श्रेष्ठसन्निधौ, तस्मात् अय नयनात्=दूरीकरणात् (removal from his front seat) निवृत्तिः=अनादरः

सोऽयं स्वयंकृतनराधिपतेर्मनस्वी ३७७१
 नौर्यात् कथं नु परिमृतिमिनां सहेत ॥ ११ ॥

नटनकेतुः—सखे, चापक्यस्य वनगमनं पुनः प्रतिप्रारोहणे वा अस्य स्वार्थसिद्धिः ।

(the dishonour), न मोदाम्यन्यं चान्ता (was not tolerated), सः=वन्ही (he), अरम् (who), मनस्वी=प्रशस्तनवाः मानसीये वा (proud fellow), स्वयंकृतनराधिपतेः=स्वयं कृतश्चासौ नराधिपतिः स्वयंकृतनराधिपतिस्तस्मान् स्वयंकृत नराधिपतेः=आत्मन्यपवादितनृपतेः (a king of his own creation), नौर्यात्=चन्द्रगुप्तात् (from Maurya), इमान्, परिमृतिम्=परामर्शम् (this disgrace), कथं नु सहेत=न कथमत्र सहेत (how can tolerate). ॥ ११ ॥

हिन्दी—जो मनस्वी चापक्य करना पर इन्द्र दुस्य नगराज नन्द के द्वारा अपने प्रधान मान्य से उठाये जाने के कारन अमान को सख नश कर सका—वही चापक्य करने ही क्यों से निर्निह इस राजा चन्द्रगुप्त के द्वारा अपेकार के आश्रय रूप अमान को किंचित् सह सकेगा ?

English—How can that proud fellow, tolerate this disgrace from Maurya—a king of his own creation—he by whom the insult of removal from his foremost seat by sire, a veritable Indra on the surface of the earth, was not tolerated 11.

टिप्पणी—(१) उक्थितोऽन्वाप्तस्य देवस्य—‘कर्तृकर्मणोऽपि’ इत्यन्वयः से कर्ता के कार्य में वही विमर्शित हुए हैं ।

(२) प्रशस्त मनः कस्य छति नवन्+विनि=मनस्वी अर्थात् मानसीय चापक्य स्वरूप अमान को सह कर सकता है ।

(३) परिमृतिम्—परि+मृ+क्ति, द्वितीया एकवचन में विमर्शित कार्य ।

(४) नौर्यात्—यहाँ चन्द्रगुप्त के विरुद्ध नौर्य नन्द का प्रयोग उसकी निम्न अवस्था से उत्पन्न कर कर राजा ने जहाँ एक ओर उठता मूर्खता की है, वही दूसरी ओर नन्द के विरुद्ध शत्रु का इन्द्र विद्वत्ता देकर अमान मात्र से उनको उचकता मूर्खता की है ।

(५) इमान्—इन्द्र हैं अमान को गन्धारवा सूचित करता है ।

(६) चापक्य की निन्दित के सुन्दर ने भा अमुन्दर के शत्रु से सुन्दर ने अमुन्दर-रूप अतिशयोक्ति अलङ्कार के द्वारा कुछ लोग ‘सुन्दर’ अलङ्कार मानते हैं । कैसे सख करेगा ? अर्थात् किसी भा प्रकार सख बड़ा करेगा—इस अर्थान्तर के अन्वय से वहाँ अर्थात् अलङ्कार है । ‘वस्तुतः’ छन्द है । ‘वस्तु वस्तुतः’ तमबा जन्म नः ॥ ११ ॥

प्रिमला

व्याख्या—नटनकेतुः—सखे=मित्र (Friend), वनगमनम्=कौटिल्यस्य (Chanakya's), वनगमने=अरण्यानुसरणे (retiring to a forest), वा=अथवा (or), पुनः प्रतिप्रारोहणे=नौर्यान्मूलनाय पुनः प्रतिप्रारोहणे (undertaking a new vow again), अस्पृश्यराजस्य (Rakshasa's), का स्वार्थसिद्धिः=का आत्मनिष्ठ-निष्पत्तिः (what object can be accomplished).

कौटिल्यः कोपनोऽपि स्वयमभिचरणज्ञातदुःखप्रतिज्ञां

देवात्तीर्णप्रतिज्ञः पुनरपि न करोत्यायतिग्लानिभीतः ॥ १२ ॥

दुःखं दवात् तीर्णप्रतिज्ञां, कोपनः अपि, कौटिल्यः, आयतिग्लानिभीतः, पुनः अपि, प्रतिज्ञा न करोति ॥ १२ ॥

व्याख्या—चूडामणीन्नुद्यतिस्त्रिचित्तमिश्रे=चूडायां स्थिता मणयः, चूडामणयस्ते दृग्दृक् इवेति चूडामणीन्द्वा तेषां द्युतिनि कान्तिभिः स्रविता स्रष्टिषा शिखा यस्य यस्मिन् वा स तपोक्तः तस्मिन् चूडामणान्दुद्यतिस्त्रिचित्तमिश्रे (crests adorned with the lustre of their moon like crest jewels), राजान्=नृपतीनाम् (of the kings), मूर्तिनि=शिरसि (on their heads), विन्ध्यस्तपाद=विन्ध्यस्तौ पादौ येन स विन्ध्यस्तपाद=स्थानिचरण (has palced his foot), मौर्व्यः=चुण्डः (Chandragupta), स्वे=प्राप्त्यै (by his own), एव दवाद्यमानम्=क्रियमाणम् (committed), आज्ञाविधानम्=आज्ञाभङ्गम् (the breach of command), किमिति=कथम् (how), विप्रहृते=नैव महतेहृत्पर्यं. (cannot tolerate), स्वयमभिचरणे, ज्ञातः दुःखम् येन स स्वयमभिचरणज्ञातदुःखः=प्राप्ताभिचारावगतकष्टेन प्रतिज्ञा प्रतिश्रुतिम् (knowing personally from his incarnations the hardships of a solemn vow), देवात् तीर्णप्रतिज्ञा=देवात् भाग्यात् तीर्णां प्रतिज्ञा यस्य स तीर्णप्रतिज्ञा भाग्यात् सफलप्रतिश्रुतिरपि (and having fulfilled one by good luck), कोपनः अपि=क्रुद्धोऽपि (wrathful too), कौटिल्यः=चानक्यः (Chanakya), आयतिग्लानिभीतः=आयतेर्भ्यानिस्तस्मात् भीतः आयतिग्लानिभीतः=उत्तरकालिकफलहानिभयः सन् (apprehensive of failure in future), पुनः अपि प्रतिज्ञा न करोति=पुनः प्रतिश्रुतिं न कराति (do not make another vow) ॥ १२ ॥

हिन्दी—यह चन्द्रगुप्त, जो विद्विष्ट कौटिल्य के राजानों के चन्द्रमा की तरह चमकते मुकुटमणियों की कान्ति ने दृष्टोन्मिष्ट मित्रों पर अहङ्कारक बनना पदन्तु करता था—वही भयन ही जनों से बननी ही आज्ञा का उल्लंघन कैसे सह रहा ? और वाक्य भी अधिक कोपी होने पर भी, नाच्य स पूर्णप्रतिज्ञावाला तथा स्वय इत्यादि विधान द्वारा प्रतिज्ञा पूर्ति के दुःख को जानने वाला—अभिषेक ने होनेवाले अतकलता की बाधका से पुन नई प्रतिज्ञा कैसे कर रहा ? ॥ १२ ॥

English—How will Maurya put up with the disobedience of his orders perpetrated by his own people, who has kept his foot on the head of kings with their moon like shining crown due to the crest jewels, Kautilya, being full of fury, too has known the difficulties to fulfil the vow from his own indications for the destruction of his enemies, His last vow was fulfilled by good luck, now he will never take further such step which may make his down fall 12.

राक्षसः—शकटदास, एवमेतत् । गच्छ त्रिश्रामय करभक्म् ।

शकटदासः—तथा । (इति पुरुषेण सह निष्क्रान्तः ।)

राक्षसः—अहमपि कुमार द्रष्टुमिच्छामि ।

मलयकेतुः—अहमेवायं द्रष्टुमागतः ।

राक्षसः—(नाट्येनावलोक्य) अये कुमारः । (आसनादुत्थाय) इदमासनम् । उपवेष्टुमर्हति कुमारः ।

मलयकेतुः—अयमुपविशामि । उपविशत्वार्थः । (यथार्हमुपविष्टः ।) आर्य, अपि सद्यः शिरोवेदना ।

टिप्पणी—(१) विषद्वे—इसमें परिमिविषय, सेवसिनेत्यादि वा० सू० से पत्त विधान है तथा अतीवार्थक 'वर्तमान सामोप्ये लट्' से वर्तमान काल का विधान है ।

(१) अभिचरण—अर्थात् अभिचारक्रिया का अनुष्ठान=हिंसाकर्म ।

इस श्लोक में आणव्य के पुनः प्रतिष्ठाकरण में कारणान्तर के रहने पर भी निश्चय आणव्य का सशक की तरह मिथ्या भावका के कारण, वहाँ उपलक्षण से 'इव' शब्द के अप्रयोग द्वारा प्रतीयमान उपलक्षा अलङ्कार है । कुछ लोग इसमें आवयतिफल की अप्राप्तिभय से प्रतिष्ठा नहीं करने के योग में भी उसके योग के कथन के कारण, अतिशयोक्ति अलङ्कार मानते हैं । इसमें सम्भरावृत्त है जिसका लक्षण पहले लिखा जा चुका है ॥ १२ ॥

विमला

व्याख्या—राक्षस —शकटदास (Shakatdas), एवमेतत् (so it is), गच्छ (go), त्रिश्रामय (let rest), करभक्म् (Karbhaka).

शकटदासः—तथा (so be it), [इति पुरुषेण सह (with a man), निष्क्रान्तः=exit]

राक्षस —अहमपि (I too), कुमारम् (prince), द्रष्टुमिच्छामि=अवलोकितुं वाञ्छामि (wish to see).

मलयकेतु —अहमेव (I myself), आर्यम्=भवन्तम् (noble sir), द्रष्टुम्=अवलोकितु (to see), आगतः प्राप्तः (have come).

राक्षस —[नाट्येन=अभिनयेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (observation), अये कुमारः (O, the prince), [आसनात्=पृष्ठात् (from seat) उत्थाय= (rising),], इदमासनम् here is a seat), उपवेष्टुम्=आसनं ग्रहीतुम् (to seat down), अर्हति कुमारः (it behoves prince)

मलयकेतु —अयम् (here), उपविशामि (I sit down), उपविशतु=आसनग्रहणम् करोतु आर्य=मान्य (let noble sir sit down), [यथार्हमुपविष्ट=according to rank they sit down], आर्य=मान्यो भवान् (sir), अपि सद्यः शिरोवेदना (is the headache bearable).

हिन्दी—राक्षस—मित्र शकटदास, बात तो सत्य हो है । जाओ, करभक को विश्राम कराओ ।

राक्षसः—कुमार, कुमारस्याधिराजराज्येनातिरस्कृते कुमारराज्ये कुतो मे शिरोवेदनायाः सहाता ।

मलयकेतुः—ऊरीकृतमेतदार्येण न दुष्प्राप भविष्यति । तत्क्रियन्त काल-
भस्माभिरेव समृतवलैरपि शत्रुभ्यसनमुदीक्षमाणैरुदासितव्यम् ।

राक्षसः—कुतोऽद्यापि अलहरणस्यानकाशः । प्रतिष्ठस्व प्रजयाय ।

शकटदास—बहुत अच्छा इस पुण्य के साथ निकल गया)

राक्षस—मैं भी कुमार को देखना चाहता हूँ ।

मलयकेतु—मैं हो आर-दर-न के लिए आया हूँ ।

राक्षस—(अभिनन्दनपूर्वक देखकर) अर, कुमार (आसन से उठकर) यह आसन है ।
कुमार इस पर बैठें ।

मलयकेतु—यह मैं बैठ रहा हूँ । आप भी बैठें क्यों । (यथास्थान दोनों बैठ गये) कार्य,
सिर की पीड़ा सहन करने लायक है ।

English—Rakshasa—So it is Shakatdas, Go and Let Karbhaka rest
Shakatdas—Very well. (exit with a man).

Rakshasa—I also want to see the prince.

Malayaketu—I have myself come to see the minister.

Rakshasa—(acting observation), O, the prince (Rising from
the seat) Here is a seat, it behoves prince to sit down.

Malayaketu—Here I sit down, Let noble sir sit down (according
to rank they seat down) Sir, is your headache bearable ?

विमला

व्याख्या—राक्षस—कुमार (the prince), कुमारस्य = शिरोभंवतः (your),
अधिको राजाधिराज स चासी शत्रोर्धिराजशब्दस्तेनाधिराजराज्येन (by the
title of Emperor), अतिरस्कृते = अपरिमृते (is not supplanted), कुमार-
राज्ये (in the word of the prince), कुतः = कथं (how), मे = मम (my),
शिरोवेदनायाः = शिरस्यद्वयायाः (headache), सहाता (subside).

मलयकेतु—एतत् (this), आर्येण = अवता (by you sir), ऊरीकृतम् = स्वीकृतम्
(has been undertaken), न = नहि (not), दुष्प्रापं = दुर्लभम् (be difficult),
भविष्यति (will to attain), तत्क्रियन्त कालम् (how long are), अस्माभिः
(we to), एवम् (like this), समृतवलैरपि = सम्भृतानि सञ्चितानि बलानि सन्धानि
येषां ते सम्भृतवलैस्तैः समृतबलैः एकत्रीकृतम्-येरपि (with our forces gather-
ed), शत्रुभ्यसनमुदाक्षमानैः = शत्रुभ्यसनम्-रिपुविपत्कालम् (enemy's disaster),
उदीक्षमाणैः = प्रतीक्षमाणैः (in expectation of), उदासितव्यम्, जोष वर्तितव्यम्
(thus to lie).

राक्षस—कुतः = कस्मात् (whence), अद्यापि = इदानीमपि (even now)
कालहरणस्य = समययापनस्य (occasion for), अवकाशः = अवसरः (time),
विजयाय = रिपु जेतुम् (for victory), प्रतिष्ठस्व-आदि (start).

मलयकेतुः—आर्य, शत्रुव्यसनमुपलब्धम् ।

राक्षसः—उपलब्धम् ।

मलयकेतुः—कीदृशं तत् ।

राक्षसः—सचिवव्यसनं किमन्यत् । अपवृष्टश्चाणक्याचन्द्रगुप्तः ।

मलयकेतुः—आर्य=मान्य भवता (noble sir), शत्रुव्यसनम्=रिपुकष्टम् (any weak point of enemy) उपलब्धम्=प्राप्तम् (have found)

राक्षसः—उपलब्धम्=प्राप्तम् (have found).

मलयकेतुः—कीदृशम् तत् (of what nature is it)

राक्षसः—सचिवव्यसनम्=मन्त्रिककष्टम् (a ministerial one), अन्यत् किम् (what else), चाणक्यात् (from Chanakya), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), अपवृष्टः (has fallen off).

हिन्दी—राक्षस—कुमार, जबतक 'अधिराज' शब्द के द्वारा आप के 'कुमार' शब्द की उपाधि की समाप्ति नहीं कर दिया जायगा तब तक मेरी शिरोव्यथा कम कैसे होगी ।

मलयकेतु—जब आर्य ने इसे स्वीकृत कर लिया है तब यह दुःप्राप्त नहीं होगा । तो कब तक हमलोग अपनी इन सजी सेनाओं के साथ शत्रु की विपत्ति की प्रतीक्षा में समय काटते रहेंगे ।

राक्षस—कुमार, अब किलम्ब की क्या आवश्यकता ? विजय के लिए प्रस्थान कीजिए ।

मलयकेतु—आर्य, शत्रु की विपत्ति का कोई समाचार मिला है क्या ?

राक्षस—हाँ मिला है ।

मलयकेतु—वह कैसा है ?

राक्षस—मौर क्या ? मन्त्रिककष्ट । चन्द्रगुप्त चाणक्य से मित्र हो गया ।

English—Rakshasa—Prince, how can my headache disappear, as long as your title of 'prince' is not uprooted by that of 'emperor.'

Malayaketu—Undertaken by Your Honour, this will not be difficult to attain. How long then are we to remain inactive, with our forces gathered, in expectation of enemy's disaster ?

Rakshasa—Whence is the time even now for delay ? March for victory.

Malayaketu—Noble sir, have you found out any disaster to the enemy ?

Rakshasa—Yes, I have found out.

Malayaketu—Of what sort is it ?

Rakshasa—What else ? A ministerial one. Chandragupta is alienated from Chanakya.

नलयकेतुः—आर्य. सचिवव्यसनमेव ।

राक्षसः—अन्येषा भूपतीना कदाचिद्मात्यव्यसनमव्यमन स्यात् । न पुनश्चन्द्रगुप्तस्य ।

नलयकेतुः—आर्य. नैतदेव चन्द्रगुप्तप्रकृतीनां चाणक्यदोषाः एषापरगहेतवस्तस्मिन् निराकृते प्रथममाप चन्द्रगुप्तेऽनुरक्ताः सप्रति सुतरामेव तत्रानुरागं दर्शयिष्यन्ति ।

राक्षसः—मा मैवम् । तां खलु द्विप्रकाराः प्रकृतयश्चन्द्रगुप्तसहोऽध्यायिन्यो नन्दानुरक्ताश्च । तत्र चन्द्रगुप्तमहोऽध्यायिनीनां चाणक्यदोषा एव विरागहेतवो न नन्दकुलानुगतानाम् । तास्तु खलु नन्दकुलमनेन पितृभूत धानितामन्य

विमला

ध्यायया—नलयकेतुः—आर्य=मान्य (noble sir), सचिवव्यसनमेव=मन्त्रिकदण्डमेव (only a loss of minister)

राक्षसः—अन्येषाम्=इतरेषाम् भूपतीनाम्=भूपतीनाम् (of other kings) कदाचित् (may be), अनात्यव्यमनम्=सचिवदण्डम् (loss of minister), अव्यमनम् स्यात्=अदुर्गमम् भवेत् (no difficulty) न पुनः (not again) चन्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's)

नलयकेतुः—आर्य (sir), एतत्=भवदुक्तम् (it is), नव=न युक्तम् (not so), चन्द्रगुप्तस्य प्रकृतयश्चन्द्रगुप्तप्रकृतयस्नामान् चन्द्रगुप्तप्रकृतीनाम्=मीर्यप्रजानाम् (Chandragupta's subjects), चाणक्यस्य दोषाः चाणक्यदोषाः=कौटिल्यदूषत्यादयः एव (the fault of Chanakya), अपरागस्य हेतवः अपरागहेतवः=विरागकारणानि सन्ति (are the cause of disaffection), तस्मिन्=चाणक्य निराकृते=दूरीकृते (since he is removed), प्रथममपि=प्रागपि (from before), चन्द्रगुप्तेऽनुरक्ताः=चन्द्रगुप्तानुरक्ताः (attached to Chandragupta), सप्रति=अधुना (row), सुतरामेव=सर्वयैव (already), तत्र=चन्द्रगुप्ते (there), अनुरागम्=स्नेहम् (devotion), दर्शयिष्यन्ति (will see).

राक्षसः—एतत् (this), मैवम्=न युक्तम् (not so), ताः=खलु (they in deed), प्रकृतयः=प्रजाः (subjects), द्विप्रकाराः=द्विविधाः (two classes), चन्द्रगुप्तसहोऽध्यायिन्यः=मीर्यानुरक्तानाम् (the adherents of Chandragupta), च (and), नन्दानुरक्ताः=नन्दान्वयानुरागिण्यः (the followers of Nandas), तत्र (there), चन्द्रगुप्तसहोऽध्यायिनीनाम्=मीर्यानुरक्तानाम् (the adherents of Chandragupta), चाणक्यदोषाः=कौटिल्यदूषणान्येव (the misdeeds of Chanakya), विरागहेतवः (are the cause of disaffection), न=नहि (not), नन्दकुलानुगतानाम् (of those attached to the house of Nanda), तास्तु=(there), खलु शब्दा वाक्यालंकारे, अनेन=चाणक्येन चन्द्रगुप्तेन वा (by Chanakya or Chandragupta), पितृकुलेन मृतम् पितृकुलमृतम्=पितृवंशसमम्

परागामर्षा विप्रकृता सत्य स्वाश्रयमलभमानाश्चन्द्रगुप्तमेवानुवर्तन्ते ।
त्वाद्दृश पुनः प्रतिपक्षोद्धरणे संभाव्यशक्तिमभियोक्तारमासाद्य क्षिप्रमेव परित्यज्य
त्वामेवाश्रयिष्यन्ते इत्यत्र निदर्शनं वयमेव ।

(like his parental family), नन्दकुलम् = नन्दान्वयम् (family of Nandas),
घातितम् = विनाशितम् (destroyed), इति = अस्मादेतोः (for this), अपराग-
मर्षाभ्याम् = विरागक्रोधाभ्याम् (by anger and disaffection), विप्रकृता =
विरक्तीकृता (goaded), सत्य स्वाश्रय = स्वाधिपम् अलभमाना अप्राप्ता (not
finding an able leader), चन्द्रगुप्तमेवानुवर्तन्ते = मौर्यमेवानुवर्तन्ते (they
follow Chandragupta), पुनः = भूय (again), त्वाद्दृशम् = भव सदृशम्
(like you), प्रतिपक्षोद्धरणे = शत्रुनिराकरणे (removing the enemy), सभा-
व्यशक्तिम् = निश्चितसामर्थ्यम् (to possess the power), अभियोक्तारम् =
शत्रुपराभवकारिणम् (to extirpate enemies), आसाद्य = प्राप्य (found),
क्षिप्रम् = क्षीघ्रम् (quickly), पुनः परित्यज्य = चन्द्रगुप्तं विहाय (leave him),
त्वामेव = भवन्तमेव (to your side), आश्रयिष्यन्ते = सेविष्यन्ते (come over),
इत्यत्र (here), वयमेव (we are ourselves), निदर्शनम् = प्रमाणम् (an
instance)

हिन्दी—मलयकेतु—भार्य, मन्त्रिसकट तो राजा का कोद सकट नहीं है ।

राक्षस—समस्त अन्य राजाओं के लिए मन्त्रिसकट कुछ भी हो, पर, चन्द्रगुप्त के लिए
ऐसी बात नहीं है ।

मलयकेतु—भार्य, यह ऐसा नहीं है । चाणक्य के दोष ही चन्द्रगुप्त की प्रजा की विरक्ति
के कारण हैं । चाणक्य के हट जाने पर चन्द्रगुप्त के प्रति पहिले से ही अनुरक्त प्रजा इस समय
अधिक ही उसमें अनुराग प्रदर्शित करेगी ।

राक्षस—बात ऐसी नहीं है । वे प्रचार दो तरह की हैं—एक चन्द्रगुप्त के साथ उठनेवाली
और दूसरी नन्द में अनुराग रखनेवाली । विरक्ति के कारणस्वरूप चाणक्य के दोष केवल
चन्द्रगुप्त के प्रति अनुराग रखनेवाली प्रजा के लिये ही हैं न कि नन्दकुल में अनुराग करने
वाली प्रजा के लिए । पितृकुल के समान नन्द की इतने विनष्ट किया है— यह जानकर वह
तो विरक्ति और क्रोध ने आहत आश्रयहीन होकर ही चन्द्रगुप्त का अनुसरण कर रही है । फिर,
शत्रु को उखाड़ फेंकने में पर्याप्त शक्तिशाली तुम्हारे जैसे आक्रमण करनेवाले को पाकर वह तो
हीन ही चन्द्रगुप्त को छोड़कर तुम्हारा ही आश्रय ग्रहण करेगी । इसमें हम लोा ही उदाहरण है ।

English—*Malayaketu*—Noble sir, loss of a minister is no weak
point

Rakshasa—In the case of other kings a loss of minister may
be no difficulty, but with Chandragupta it is not so

Malayaketu—Sir, it is not so. The faults of Chanakya are the
cause for the disaffection of the subjects of Chandragupta. He
being dismissed, they devoted to Chandragupta from before, will
certainly show even greater devotion to him now

मलयकेतुः—आर्य, किमेतदेकमेव सचिवव्यसनमभियोगकारण चन्द्रगुप्त-
स्याहोस्विदन्त्यदप्यस्ति ।

राक्षसः—किमन्यैबहुभिरपि । एतद्धि प्रधानतमम् ।

मलयकेतुः—आर्य, कथमिव प्रवान्ततमम् । किमिदानीं चन्द्रगुप्तः स्वकार्यधु-
रामन्यत्र मन्त्रिण्यात्मनि वा समानज्य स्वयं प्रतिविधातुमसमर्थः ।

राक्षसः—वादमसमर्थः । कुतः स्वायत्तसिद्धिषु तत्समरति । चन्द्रगुप्तस्तु

Rakshasa—Not so at all. The subjects are divided in to two clas-
ses—those who made common cause with Chandragupta and those
who are attached to Nanda. The misdeeds of Chanakya are the
cause of disaffection of the adherents of Chandragupta and not of
those attached to Nanda. These are indeed affected by anger and-
disaffection for the reason that Nanda's family, which was like their
parental family, was destroyed by this man, but not finding an able
and worthy master they follow Chandragupta. On the other hand
having found a champion like you, acknowledged to possess the
power to extirpate enemies, they will soon quit this man and will
cling to your side. I am myself an instance in this matter.

विमला

व्याख्या—मलयकेतु—आर्य (sir), किम् (what), एतदेकम् (only this),
सचिव-वसनं = मन्त्रिविरोधः (ministerial loss). एव = हि (indeed), चन्द्रगुप्तस्व-
मौर्यस्य (Chandragupta's), अभियोगकारणम् = परामवहेतुः (reason for
warring), आहोस्वित् = अथवा (or), अन्यदपि = हेत्वन्तरमपि (any other
reason also).

राक्षस—किमन्यैबहुभिरपि (what with a host of others), ? एतद्धि
(this indeed), प्रधानतमम् (the most prominent).

मलयकेतु—आर्य = मान्य (noble sir), कथमिव (how indeed),
प्रधानतमम् (the most prominent)? किम् (what), इदानीम् = अधुना
(now), चन्द्रगुप्तः = मौर्यः (Chandragupta), स्वकार्यधुराम् = निजकार्यभारम्
(affairs of his kingdom), अन्यत्र = अन्यस्मिन् (to another), मन्त्रिणि =
सचिवे (minister), आत्मनि = आत्मीये (his own), वा = अथवा (or),
समाज्य = विन्यस्य (by entrusting), स्वयं (himself), प्रतिविधातुम् =
प्रतिरुक्तुम् (resist our attack), असमर्थः = अशक्तः (unable).

राक्षस—वाङ्म् (oh), असमर्थः (unable), कुतः (for this reason),
स्वायत्तसिद्धिषु = स्वेषु आत्मसु आचत्ता अधीना सिद्धिर्येषाम् ते तयोच्चास्तेषु स्वायत्त-
सिद्धिषु = आत्माधीनराज्यकार्यसम्पादनेषु (the accomplishment of whose
object depends upon themselves), तत्समरति (it is possible), चन्द्रगुप्तस्तु =

दुरात्मा नित्य सचिवायत्तसिद्धावेव स्थितश्चक्षुर्विकल इवाप्रत्यक्षलोकव्यवहारः
कथमिव स्वयं प्रतिविधातुं समर्थः स्यात् ।

मौर्यस्तु (but Chandragupta), दुरात्मा=दुष्टहृदय (the vile), नित्यं=प्रतिक्षणम् (habitually), सचिवायत्तसिद्धौ=मन्त्रिस्थितकार्यचिन्तने (dependent on his minister for success in an undertaking), एव स्थितः=वर्तमानः (is), चक्षुर्विकल इव=नेत्ररहित इव (like a blind man), अप्रत्यक्षलोकव्यवहारः=अप्रत्यक्षः=अगोचरः लोकानाम् व्यवहारो यस्य सोऽप्रत्यक्षलोकव्यवहारः=लोकव्यवहारानभिज्ञ (in conversant with the affairs of the world), कथमिव (how), स्वयं (himself), प्रतिविधातुम्=प्रतिकर्तुम् (to resist), समर्थः स्यात्=शम भवेत् (will be able)

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य, अमारय न्यसनमात्र ही चन्द्रगुप्त पर आक्रमण का कारण है अथवा कोई और कारण भी है ?

राक्षस—अन्य कारणों के अवेगन से क्या लाभ ? वही सर्वाधिक प्रधान है ।

मलयकेतु—आर्य, सर्वाधिक प्रधान यही कैसे है ? क्या मौर्य अपना कार्यभार किसी अन्य मन्त्री पर अथवा अपने पर रख रखकर आगत विपत्तियों का प्रतिकार करने में असमर्थ है ।

राक्षस—हाँ, असमर्थ है । क्योंकि, जो राजा सारा अधिकार अपने हाथों में रखता है अथवा मन्त्री के सहयोग से जो अधिकार का स्वयं उपभोग करना जानता है—वही आगत विपत्तियों का प्रतिकार करने में समर्थ हो सकता है । किन्तु, वह दुष्ट चन्द्रगुप्त जिसने अपने सारे अधिकारों को मन्त्री के हाथों में ही समर्पित कर दिया है तथा जो सासारिक कार्यों में अनुमत्त रहने के कारण विद्वुल अन्धे की तरह है—भला स्वयं प्रतिकार करने में कैसे समर्थ होगा ?

English—*Malayaketu*—Noble sir, is this ministerial loss only the reason for warring upon Chandragupta, or is there any other reason also

Rakshasa—What with a number of others ? This indeed is the most prominent

Malayaketu—How indeed most prominent ? Is Chandragupta unable to resist our attack after having placed the burden of his affairs to another minister or on himself ?

Rakshasa—Oh, no For this reason, that it is possible only in the case of those kings, whose success is at their own command or controlled by the king and the minister. But vile Chandragupta always depending upon such success as is under the command of the minister alone, therefore like a blind man, in conversant with the affairs of the world. How would he be able to counteract this himself (Do you ask) why ?

अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे च विष्टम्य पादावुपतिष्ठते श्रीः । राजमल्ल
सा स्त्रीस्वभावाद्सहा भरस्य तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति ॥ १३ ॥
[नीलमालके, कारागार को सारंगना, काली दुई २०३ से २३
विमला]

अन्यथा—श्री, अत्युच्छ्रिते, मन्त्रिणि, पार्थिवे, च, पादौ, विष्टम्य, उपतिष्ठते, श्री-
स्वभावात्, भरस्य, असहा, सा, तयोर्द्वयोः, एकतरम्, जहाति ॥ १३ ॥

व्याख्या—श्री = राखलक्ष्मी (The Goodness of royalty), अत्युच्छ्रिते =
अत्युच्चते (grown too high), मन्त्रिणि = सचिवे (on the minister), पार्थिव =
नृपे (on the king), च (and), पादौ = चरणौ (feet), विष्टम्य = मस्थाप्य
(having placed) उपतिष्ठते = मङ्गता मवति (stands), श्रीस्वभावाद् = नारीजन-
सुलभावाद् (through feminine nature), भरस्य = मन्त्रिपार्थिवयोरुभयत्र स्थिति-
रूपकलेशस्य (her weight), असहा = मोदुमयमया (unable to poise),
सा = लक्ष्मी (the Goddess of royalty), तयोर्द्वयोः = मन्त्रिपार्थिवयोरुभये (one
of the two), एकतरम् = मन्त्रिणम्, पार्थिव सा (one of them), जहाति = परित्य-
जति (quits) ॥ १३ ॥

हिन्दी—जब मन्त्री का इच्छि मत्पथिक बढ़ जाती है—तब राजलक्ष्मी मन्त्री और राजा
दोनों पर अपना पैर जमाकर रखती है। किन्तु श्रीस्वभाव के कारण—उन दोनों के
परस्पर भिन्न हो जाने पर भार सहने में असमर्थ होकर, दो में से किसी एक को छोड़
देती है ॥ १३ ॥

English—The Goddess of royalty stands with her feet readily
placed on the king and on the minister when grown too high. But
through feminine nature unable to sustain her weight, she quits one
of the two 13

टिप्पणी—(१) सहा—नोदुन् श्रुत्या इति—सह + यत् + यत् = कर्मांग क्षिपान् ।

(२) सचिवम्यसनम्—म्यस्यत्येनम् वेदते । सचिवोरिषितम् म्यसनम् सचिवम्यसनम् ।

(३) पतिष्ठन्—इन् + तिष्ठ + क्त कर्मांग ।

(४) भरसागानर्हम्याम्—भर + रञ्ज + वन् + भावे भरसाग विरक्ति । वृष + वन् भावे
नर्ह—न नय अमर्ह भरसाग अनर्ह तान्दाम् भरसागमर्हम्याम् ।

(५) विप्रकृता—वि + प्र + कृ + क्त कर्मांग ।

(६) स्वाग्रवन्—सु + आग्रवन् कथवा स्व + आग्रवन् । आ + श्रि + भ् कर्मांग आग्रव
श्रीमन् अग्रव स्वाग्रव ।

(७) निदग्धनम्—निदग्धते अनेन इति नि + दग्ध + णिन् + कर्ता ।

(८) दुरात्मना—दुष्टो मन्द अत्मा यस्य मन्दबुद्धिः ।

(९) अत्युच्छ्रिते—अति + उच्छ्रि + क्त कर्मांग उच्छ्रित = उच्छ्रित ।

(१०) मन्त्रिणी—मन्त्रिणी ।

(११) पार्थिवे—प्रनुयुज्ये ।

(१२) विष्टम्य—वि + सम्म + ल्यप्—‘सम्म’ पा० के सूत्र से वत् विधान ।

नृपोऽपकृष्टः सचिवात्तदर्पणः स्तनन्धयोऽत्यन्तशिशुः स्तनादिव ।

अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीर्मुहूर्तमप्युत्सहते न वर्तितुम् ॥ १४ ॥

(१३) 'पादौ' से तात्पर्य मग्नशक्ति और प्रमुग्नशक्ति रूप दोनों चरण ।

(१४) उपतिष्ठते - 'अकर्मकाक्ष' से यहाँ आरम्भेपद हुआ है ।

(१५) असहा मरस्य - राजा और मन्त्री के बीच 'प्रतिभिन्नता' हो जाने के कारण राजलक्ष्मी अपने को भारवहन करने में असमर्थ पाती है ।

प्रस्तुत राजलक्ष्मी में नायिकाजन्य व्यवहार के समारापण से इस श्लोक में समासोक्ति अलङ्कार है । इसका लक्षण सप्रतिबिम्बदर्पण में लिखा है :—

समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः ।

व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्वयस्य वस्तुनः ।

वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण तथा उपजातिवृत्त है ।

बिमला

अन्यथा—सचिवात्, अपकृष्टः, तदर्पणः, अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीः, नृपः, स्तनात्, स्तनन्धयः, अत्यन्तशिशुः इव, मुहूर्तम्, अपि, वर्तितुम्, न, उत्सहते ॥ १४ ॥

व्याख्या—सचिवात्=अमात्वात् (from the minister), अपकृष्टः=पृथग्भूतः (down away), तस्मिन्नेव सचिवेऽर्पणं तदर्पणं=सचिवाधीनसिद्धिः (entrusts every thing to his minister), अदृष्टलोकव्यवहारमन्दधीः—न दृष्टे लोकानां व्यवहारो येन सोऽदृष्टलोकव्यवहारः अतएव मन्दा धीर्यस्य स मन्दधीः अदृष्टलोकव्यवहार-क्षासौमन्दधीः=अप्रत्यक्षजानाचारावपुद्धिः (intellect not being unfolded on account of his inexperience of the affairs of the world), नृपः=राजा (The king), स्तनात्=पयोधरात् (from the breast), स्तनन्धयः=स्तनन्धय-सीति स्तनन्धयः=स्तनपायी (drawing suck), अतएव अत्यन्तशिशुरिव=अति- (very young suckling) मुहूर्तम्=क्षणम् (even for a short time) अपि (also) वर्तितुम्=स्थातुम् (to live) न उत्सहते=न चमते (not be able). ॥१४॥

हिन्दी—एक अत्यन्त छोटा शिशु जिस प्रकार माता की छाती से क्षणभर के लिए पार्थक्य सहन नहीं कर सकता—अपना सर्वस्व सचिव के हाथों में सौंपकर, उससे सचिव निष्ठ होकर कोई भी राजा अपना कार्यभार क्षणभर के लिए भी सँभालने में अपने को असमर्थ पाता है । क्योंकि, उसे लोकव्यवहार के अनुभव से न्यून रहने के कारण वह मन्द बुद्धि का होता है ॥ १४ ॥

English—Like a very young suckling who will not be able to live even for a moment, if weand from his mother's breast, so a king who entrusts everything to his minister, if withdrawn from a minister cannot be able to survive even for a short time, his judgment will be dull due to inexperience of the affairs of the world. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक ४ में उपमा अलङ्कार तथा दश वृत्त है । छन्द का लक्षण—ज ता तु वशश्च मुरित जौ ।

नलदंष्टुः—(आत्मगतम् ।) दिष्ट्या न नचिरायननन्त्रोऽस्मि । (प्रक्षशम् ।) यद्यप्येव तथापि बहुध्वभिर्गोकारणेषु तस्य न्यमनमभिमुञ्जानस्य शत्रु-
मभियोक्तुरैरान्तिक्षो कार्यमिदमिवति ।

राक्षस—प्रेकान्तिर्कमेव कार्यसिद्धिमवगन्तुमर्हति कुमारः । कुतः ।

३. १४०८. १. ५५ १. ५५

त्वय्युत्कृष्टरत्नेऽभियोक्तिर नृपे नन्दानुरक्ते पुरे

चाणक्ये चलिताधिकारविमुखे मौर्ये नवे राजनि ।

नलदंष्टु — [आत्मगतम् = अप्रकाशम् = (Aside)]. दिष्ट्या = भाग्येन (by luck), मचिबस्य मन्त्रिन आयुधम् तन्त्रम् यस्य स सचिवायसत्तम् = अमात्याधोनराष्ट्र (the management of affairs entrusted to the minister), नास्मि (I do not depend), [प्रकाशम् = (Aloud)], यद्यप्येवम् (Although it is so), तथापि (still), बहुषु अभिवागकारणेषु = अपकारबान्ध्याऽऽक्रमणहेतुषु (several other reasons for an offensive), सम्पुनविद्यमानेषु (are present), व्यसन्-
मभिमुञ्जानस्य = व्यसन् मन्त्रिविषयम् अभिमुञ्जानस्य अनुसन्धानस्य (trying to find out the difficulty arising from the minister), शत्रुम् = रिपुम् (to enemy), अभियोक्तुः = आक्रमितुमुक्तस्य (then assailing), प्रेकान्तिक्षी = अवश्यमाविविनी (certain), सिद्धि (success), भवति (is obtained).

राक्षसः—प्रेकान्तिर्कमेव = अवश्यमाविविनी एव (certain indeed), सिद्धिम् (success), अवगन्तुम् = ज्ञानुम् (to consider), अर्हति कुमारः (behoves the prince).

हिन्दी—नलदंष्टु—(नन हो नन) मैनान् से मैं सचिव के अधीन राज्य बाटा नहीं हूँ (तब हन से) कदरि बात ऐसी हो है, फिर भी कनेक बाकना के कारणों के हाने पर व्यसन का अनुसन्धान करने हुए मुझपर कानना करनेवालों को कार्य सिद्धि अदर ही होती है ।

राक्षस—कुमार कार्य के लिये को निश्चित हो सनका बाय । क्योंकि —

English—*Malayaketu*—(Aside), I am glad that I do not depend on a minister for my affairs (Aloud) Although it is so, still lasting success in the undertaking results unto the invader that attacks the enemy when visited by the loss of minister only if there are many other reasons for commencing hostilities.

Rakshasa—It behoves the prince to consider the success in the undertaking as indeed lasting For :—

टिप्पणी—(१) 'नदंष्टु'—नृ + दंष्ट + तु = नदंष्टु । (२) 'स्वन्वद'—स्वन् + वदति = स्वन् + वत् + लृट् + क्तिच् = 'वद' विभक्तिकार ।

पिमला

अन्यथा—विनो, सम्प्रति, उत्कृष्टरत्ने, नृपे, त्वयि, अभियोक्तिर, पुरे, नन्दानुरक्ते, चाणक्ये चलिताधिकारविमुखे, राजनि, मौर्ये, नवे, स्वार्थाने, मयि, मार्गमात्रकथन-
व्यापारयोगोपने, न, साध्यानि, त्वदाम्बान्तरितानि, तिष्ठन्ति ॥ १५ ॥

स्वाधीने मयि—

(इत्यर्थोक्ते लज्जा नाटयन् ।)

मार्गमात्रकथनव्यापारयोगोद्यमे

त्वद्वाञ्छान्तरितानि संप्रति विभो तिष्ठन्ति साध्यानि नः ॥१५॥

व्याख्या—विभो=राजन् (O king), संप्रति=अधुना (now), उत्कृष्टबले=उत्कृष्टानि बलानि यस्य स उत्कृष्टबलस्तस्मिन् उत्कृष्टबले=उत्तमसैन्ये (possessed of an excellent army) नृपे=राजनि सति (king) त्वयि=भवति (you) अभियोक्तरी=योद्धुमुच्यते सति (the) attacking), पुरे=कुसुमपुरे (at Kusumpur), नन्दानुरक्ते=नन्दस्नेहिनि सति (attached to the Nanda), चाणक्ये=क्रौटिहये (Chanakya), चलिताधिकारविमुखे=चलितव्यासावधिकारचलिताधिकारस्तस्माद्विमुखस्तस्मिन् चलिताधिकारविमुखे=मन्त्रिपदभ्युते सति (adversely disposed owing to his removal from office), राजनि मौर्ये=नृपे-चन्द्रगुप्ते (the king Maurya), नवे=नूतने (new), स्वाधीने=स्वतन्त्रे मयि=राजसे (I am at your disposal), मयि इति आरम्भे स्वातन्त्र्ये कथनप्रकारेण आरम्भे यत्नं स्यात्—इति मनसि चिन्तयित्वा सकोचम् (प्रदर्शित) (acting modesty when half uttered), मार्गमात्रकथनमेव व्यापार तस्य योगस्तत्रोद्यमे यस्य स तथोक्त तस्मिन् मार्गमात्रकथनव्यापारयोगोद्यमे=रूपमार्गमात्रोपदेशात्मकव्यापारोपाययत्ने (endeavours to suggest the means will be limited to the mere pointing out the way), न=अस्माकम् (our), साध्यानि=कार्यानि (desired objects), त्वद्वाञ्छान्तरितानि=व्यङ्ग्यमात्रान्तरितानि (simply by your will), तिष्ठन्ति=वर्तन्ते (are) ॥ १५ ॥

हिन्दी—ओ शक्तिशाली राजकुमार, आक्रमण के लिए आपकी तरह उत्कृष्ट, सेनाओं से युक्त, नायक उपरिष्ठ है, सारा कुसुमपुर आज भी नन्द का अनुरक्त है—अधिकारच्युत होने के कारण चाणक्य भी अब चन्द्रगुप्त से विमुख हो चुका है, चन्द्रगुप्त स्वयं अनुभवहीन है, और मैं भी किसी का दास नहीं हूँ (इतना आभा बढ़ाने पर स्वयं जैसे लजित होते हुए) और केवल मार्ग निर्देशन ही जिसकी उपयोगिता रह गयी है—हमारे अभीष्टित कार्य की सिद्धि मात्र केवल आपकी इच्छा से ही रुकी है ।

English—The invader being yourself, a king with an excellent army the town being devoted to Nanda, Chanakya being adverse due to his removal from office, Maurya being a new king, I being at your disposal (acting modesty when half uttered) whose endeavours to suggest the means will be limited to the mere pointing out the way our objects now stand, O puissant Prince, simply by your will 15.

टिप्पणी—१ स्वाधीने मयि—इस श्लोक में इस शब्द का प्रयोग मिलता है । मुख्यतः इसके तीन अर्थ हैं—(१) स्वतन्त्र, (२) आपके अधीन (३) सविचरदेन सेवा । अन्तिम

मलयकेतुः—यद्येवमभियोगकालमायः पश्यति ततः किमास्यते ।

उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलं

श्यामाः श्यामोपकण्ठद्रुममलिमुखराः कलोलमुखरम् ।

स्रोतःखातावसीदत्तद्रुमरुदशनेहत्सादिततटाः शोणं ॥ १६ ॥

शोणं सिन्दूरशोणा मन गजपतयः पास्यन्ति शतशः ॥ १६ ॥

१६ ॥ १६ ॥

मर्म हो डगुच है । क्योंकि मूल अर्थ से वाक्य की तुलनात्मक योग्यता की घनि निवृत्ता है ।

१. लज्जानाडयन्—कान्ते ही मुक्त से अनयो प्रथमा के कारण ही राक्षस जैसे कुल लज्जा-ना जाना है । २. साध्यानि—नाथ + प्यत् + विभक्तिकार्य ।

१. इस श्लोक में एक गतिन कार्य के लिए अनेक कारणों के उल्लेख होने ने यहाँ अनुवपाठकार है । प्रसाद गुण, पाँचाने रीते वर शार्ङ्गदेवजीवन छन्द है ।

विमला

मलयकेतु—आर्य=भवान् (your Honour), यदि (स्याद्) (if), एवम्=इत्थम् (like this), अभियोगकालम्=सत्रोराकननसमयम् (the fit time for attack), पश्यति (thinks), ततः नन्मात् (then), किम्=कथम् (why), आस्यते=विलम्बते (should sit idle).

अन्वयः—मम, उत्तुङ्गाः उसादिनमदसलिलाः, श्यामाः, अलिमुखराः, उदरशनेः, उसादिततटाः, सिन्दूरशोणा, शतश गजपतयः, तुङ्गकूलम्, प्रस्यन्दिसलिलम्, श्यामोपकण्ठद्रुमम् कलोलमुखरम्, स्रोतःखातावसीदत्तम्, शोणम्, पास्यन्ति ॥ १६ ॥

व्याख्या—मम=मलयकेतोः (My), उत्तुङ्गाः=अधुश्रुताः (lordly), स्रुत-सलिलाः=स्रुतम् मदमलिलम् येषां ते स्रुतमदसलिलाः=स्रुतशानवारयः (tuskers), श्यामाः=कृष्णवर्णाः (darkish), अलिमुखराः=अलिभिः जनैः मुखराः शब्दायमानाः=भ्रमरतटहारवन्तो वा (noisy with the hum of bees), उदरशनेः=विशालशर्तः (huge task), उसादिनं विनाशिनम् तटम् कूलम् येस्ते उसादितकूलाः=विनाशित-तटाः (demolishing the banks), सिन्दूरशोणाः=सिन्दूरस्तम्ब रक्तचिन्तुभिः शोणाः रक्तवर्णाः (vermilion), शतशः=अनेकशः (hundred ways), गजपतयः= (tuskers), तुङ्गम्=उन्नतम् कूलम् तटम् यस्य स तथोक्तं तुङ्गकूलम्=उन्नततटम् (lofty banks), प्रस्यन्दिसलिलम्=प्रवहमानजलम् (drizzling waters), श्यामोपकण्ठद्रुमम् श्यामाः श्यामवर्णाः, उपकण्ठे=तटप्रदेशे द्रुमा यस्य स तथोक्तं श्यामोपकण्ठद्रुमम्=उपतटश्यामवृक्षम् (dark trees on the banks), कलोलै-मुखरम् कलोलमुखरम्=तरङ्गशब्दयुतम् (noisy waves), स्रोतसा खातनत प्राव-सीदत्तम् यस्य स तथोक्तं स्रोतःखातावसीदत्तम्=प्रवाहसातभ्रमरचरीम् (under mined by the current), शोणम्=शोणनानन्दविशेषम् (the river Shona), पास्यन्ति=पानेन शोषयिष्यन्ति (drink). 16.

हिन्दी—मलयकेतु—आर्य, इस प्रकार यदि आप आक्रमण का वस्तु काठ नाने है तो फिर इस प्रकार गौन होकर बैठने का क्या कारण है ?

अपि च ।

गम्भीरगर्जितरवाः स्वमदाम्बुमिश्र-

भासारवर्षमिव शीकरमुद्गिरन्त्यः ।

विन्ध्यं विकीर्णसलिला इव मेघमाला

रुन्धन्तु चारणघटा नगरं मदीयाः ॥ १७ ॥

(इति भागुरायणेन सह निष्क्रान्तो मलयकेतुः ।)

येरे अत्यन्त विशालकाय, मदबलस्रावी, काले कजरारे भीरों से मूखित अपने विशाल दाँतों से किनारे को दहाने वाले, सिन्दूरी रंगवाले सैकड़ों गजराज, ऊँचे ऊँचे तटोंवाली, पानी से भरपूर, हरित वृक्षों से भरे किनारोंवाली, लहरों की लीला से मुखर, और अपनी ही धाराओं के वेग द्वारा जिसको तटभूमि काटी जा रही है, ऐसी शोण नदी को पी क्यों न जायें ? ॥ १६ ॥

English—*Malayaketu*—If Noble sir thinks this to be such a time for attack then why should we sit idle ?

Let my lordly tuskers red with vermillion, scatter in a hundred way the river Shona, my tuskers, running the fluid of ichor, dark in colour, noisy with the hum of bees and demolishing the bank with their huge tusks, the river with its high banks, with its dripping water, dark trees, its noisy waves and its banks undermined by the current. 16.

टिप्पणी—इस श्लोक में जैसे शोण है वसी प्रकार गजपति—इस अर्थ की प्रतीति से शोणगजपति की गम्भीरमा से शोष शब्द की श्लिष्टता से श्लेषानुप्राणित उपमा भल्लूकार है। एव शोण और गजपति दोनों के विशेषणों का यथासत्य रूप अन्वय होने के कारण यथासत्य भल्लूकार है। ओजगुण, गोदो रीति एव सुवदना वृत्त है। अश्वैरश्वैश्च पद्भिर्मरमनयमलागः स्वारिवदना ।

विमला

अपि च = अन्यदपि (Moreover).

अन्यथा—गम्भीरगर्जितरवाः, स्वमदाम्बुमिश्रम्, शीकरम्, भासारवर्षम्, इव, उद्गिरन्त्य, मदीयाः, चारणघटा, विकीर्णसलिला, मेघमाला, विन्ध्यम्, इव, नगरम्, रुन्धन्तु ॥ १७ ॥

व्याख्या—गम्भीरम् च तद् गजितम् गम्भीरगजितम् तद्वत् रवो येषां ते गम्भीर-गजितरवाः = सान्द्रगर्जनध्वनय (a deep thunderous roar), स्वस्य मदाम्बु-स्वमदाम्बु तेन मिश्रं स्वमदाम्बुमिश्रं = निमज्जमानजलमिश्रितम् (mixed with the water of their rut); शीकरम् = अम्बुकणम् (spray); भासारवर्षम् = धारासम्पातवर्षणम् (pouring down a rain), इव = यथा (like), उद्गिरन्त्यः = उद्भवमस्यः (emitting), मदीयाः = मामकीनाः (my), चारणघटाः = गजघटाः (rows of elephants), विकीर्णं विक्षिप्तं सलिलं यामिस्ता विकीर्णसलिलाः = विक्षिप्तजलाः (pouring), मेघमालाः = घनपंचयाः (an abundance of rain), विन्ध्यम्

गद्यसं.—क कोऽत्र मो ।

(प्रविश्य ।)

पुरुष —आपवेदु अनघो । (आज्ञापयतु अमान्यः ।)

गद्यसं.—प्रियवदक, सावत्सरिकाण्या द्वारि कस्तिध्रति ।

पुरुष —क्षपणकः । (क्षपणकः ।) ८०६ १९३५

गद्यसं —(आत्मगतम् । अनिमित्त मूचयित्वा ।) कथ प्रथमनेव क्षपणकः ।

ह्रस्व=विन्ध्यपर्वतनिधि (like the Vindhya mountain), मगरम्=पुरम् कम्पन्तु= निवेश कुर्वन्तु (invest ॥ १००)

(इति भागुरायणेन सह निष्कान्तो नलयरुतु = Exit Malayaketu with Bhagurayan)

हिन्दी—गम्भीर "जन करनेवालों करने मदबलनियत जलकों की मूसलाधार वर्षा करी हुई नरो "अवन्त कुम्भनुर को उला प्रकार धर लें ऐसे शदों के समूह विन्ध्य पर्वत को घेर लन है १७

(और मजुराय के मय निकल जात है)

English—The array of my elephants, the note of whose roar is deep, will invest the city, emitting, like pouring down a rain of spray mixed with the water of their rut, as a row of clouds that is pouring and whose cry is its deep roar, does encircle the Vindhya mountain 17

(Exit Malayaketu with Bhagurayan)

टिप्पणी—श्रीकुरुगिरिम्भ—इत्ते तात्पर्य यह है कि हाथी जब पर्याप्त पानी पी लेता है तो उस वह अपनी शक्तवानु के साथ बाहर निकालता है। यह उसको एक स्वाभाविक क्रिया है। नलयकेतु को "अवन्त" निष्ठ श्लोक में शोण वदी से दुखा चुकी है, अतः उसका उद्गवन भा स्वाभाविक ही है। इस श्लोक में हाथी और धन में उरनागोपनेयभाव स्पष्ट है अनन्यवाचक 'इव' शब्द मो है तथा गम्भीरयजित वनवत्वादि सामान्य धर्म के उपादान में वहाँ पूर्णतया अलंकार है। शोबजुग, पाशाळी रीत तथा वनलदिलका वृत्त है।

विनला

याट्या—राक्षस—क (Who), कोऽत्र मो (waits there)

(प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा =(Entering) .

पुरुष —अमान्य=पवित्र (The minister), आज्ञापयतु=आदेश करोतु (let command)

राक्षस.—प्रियवदक (Priyabamdaka), सावत्सरिकाण्या=दैवज्ञाना मध्ये (of astrologers), द्वारि=अतिहासमूनी (at the door), क=किञ्चानवयः (which), तिष्ठति=वर्तते (is)

पुरुष—क्षपणकः (Kshapanaka)

राक्षस—[आत्मगत=स्वगत (to himself), अनिमित्त=अशुभलक्षण (a bad

पुरुषः—जीवसिद्धी । (जीवसिद्धिः)

राक्षसः—(प्रकाशम् ।) अभीभत्सदर्शनं कृत्वा प्रवेशय ।

पुरुषः—तद् । (इति निष्क्रान्तः ।) (तथा ।)

(प्रविश्य ।)

omen), सूचयित्वा = अभिनीय (gesticulating)], कथ = कुतः (what), प्रथममेव = पूर्वमेव (at the first sight), क्षपणकः (Kshapanaka).

पुरुष—जीवसिद्धिः (Jivasiddhi).

राक्षस—[प्रकाशम् (Aloud)], अभीभत्सदर्शनम् = न भीभत्सं दर्शनं यस्य सोऽभीभत्सदर्शनस्तमवीरसदर्शनम् = अनिन्दितवेपं (put on a dress not loathsome to look at), कृत्वा = विधाय (making), प्रवेशय = आनय (enter).

पुरुष—तथा = (as your command).

[प्रविश्य = प्रवेशं कृत्वा (Entering)],

हिन्दी—राक्षस—कौन, यहाँ कौन है ?

(प्रवेश करके)

पुरुष—आमात्य आहा दें ।

राक्षस—प्रियवदक, देखो दरवाजे पर नवीतिपियों में कौन है ?

पुरुष—क्षपणक,

राक्षस—(अपने आप, अवशकुन सूचित करके) क्या पहल क्षपणक हा ।

पुरुष—जीवसिद्धिः ।

राक्षस—(प्रकट रूप में) मौम्य वेश बनाकर भीतर लाओ ।

पुरुष—जैसी आज्ञा (यह कहकर निकल गया)

English—Rakshasa—Who is here ? who ?

(Entering)

Man—Let minister Command.

Rakshasa—Priyambadaka, which of the astrologers is at the door ?

Man—Kshapanaka

Rakshasa—(gesticulating that he perceived a bad omen, to himself) what Kshapanaka at the first sight ?

Man—Jivasiddhi.

Rakshasa—(Aloud), Ask him to enter making him put on a dress not loathsome to look at.

Man—As minister command.

(Exit)

क्षपणकः—

सासणमलिदन्ताणं पडिवज्जह मोहवाधिवेज्जाणं ।

जे मुत्तनात्तकडुअं पच्छा पत्थं उवदिसन्ति ॥ १८ ॥

(शासनमर्हतां प्रतिपद्यन् मोहव्याधिवैद्यानाम् ।

ये मुहूर्तमात्रकटुकं पश्चात्पथ्यमुपदिशन्ति ॥ १८ ॥)

(उपसृत्य ।) धम्मनिद्धो होदु सावगाणम् । (धर्मसिद्धिर्भवतु श्रावकानाम् ।)

राक्षसः—भदन्त, निरूप्यता तावदस्मत्प्रस्थानदिवसः ।

क्षपणकः—(नाट्येन चिन्तयित्वा ।) सावना, णित्थविदा मए आमज्ज-
ण्णादो पितुत्तसञ्चरह्वाणा तिहा सपुण्णचन्दा पुण्णमात्ता । तुम्हाणं उत्तलाप
दिन्नाए दक्खिणा दिस पत्थिदाण अदक्खिण, पक्खत्तं । अवि अ । (श्रावक,
निरूपिता मयाऽऽध्याह्नाग्निवृत्तसवकल्याणा तिथिः संपूर्णचन्द्रा पौर्णमासी ।
युष्माकमुत्तरस्या दिशो दक्षिणा दिश प्रस्थिताना अदक्षिणं नक्षत्रम् ।
अवि अ ।)

विमला

क्षपणकः—

अन्वयः—मोह एव व्याधिस्तस्य वदास्तेषाम् मोहव्याधिवैद्यानाम् = अज्ञानरोग-
चिकित्सकानाम् (the physicians of the ill of delusion), अर्हताम् = बौद्ध-
विशेषाणाम् (the worthy Saints), शासनम् = उपदेशम् (the tenets), प्रति-
पद्यन् = प्रतिपादयत (adopt), ये = बौद्धतन्त्रासिविशेषा (who), मुहूर्तमात्र-
कटुकम् = क्षणमात्रविरमम् (= bitter for the moment), पश्चात् (afterwards),
पथ्यम् = हितम्, उपदिशन्ति = शिष्ययन्ति (wholesome in the end) ॥ १८ ॥

(उरन्त्य = समीपम् गत्वा = advancing), श्रावकानाम् = श्रोतॄणाम् बुद्धमत्तानाम्
(believer), धर्मसिद्धिः (attainment), भन्तु (may come).
राक्षस—भदन्त = बौद्धतन्त्रासिनाम् सम्बोधनम् (Bhadanta), तावत् = प्रथमम्
(at first), अस्माकम् प्रस्थानम् अस्मत्-प्रस्थानम् तस्य योग्यो दिवसोऽस्मत्प्रस्थान-
योग्यदिवसः = अस्मद्गणयात्रारूपकालः (an auspicious day for our
expedition), निरूप्यतान् = निश्चीयतान् (ascertain)

क्षपणक—[नाट्येन चिन्तयित्वा (meditating)], श्रावक (Pupil), निरूपिता =
निश्चिता (have ascertained), मया (by me), आग्नेयाह्नात् = मध्याह्नात्काल-
मारभ्य निवृत्तप्रज्ञस्तम् सर्वम् अखिलम् कवराणम् मङ्गलम् यस्याः सा तिथिः = आग्नेया-
ह्नाग्निवृत्तसर्वकल्याणा तिथिः (afternoon quite auspicious), संपूर्णचन्द्रो
यस्यान् सा संपूर्णचन्द्रा पौर्णमासी (fullmoon day on which the moon is),
युष्माकम् (you), उत्तरस्या दिक्षः दक्षिणम् दिक्षम् (from north to south),

अस्यादिमुहे सूर्ये उदिष्य संपुष्णमण्डले चन्द्रे ।

गमनं बुधस्य लग्ने उदिद्यस्तमिदे अ केतुमि ॥ १९ ॥

(अस्ताभिमुखे सूर्ये उदिते संपुष्णमण्डल चन्द्रे ।

गमनं बुधस्य लग्ने उदितास्तमिते च केतौ ॥ १९ ॥)

प्रस्थितानाम् (who are to march), नदक्षिणम् नक्षत्रम् (the mansion too is favourable)

हिन्दी—चरणक—(प्रवेष्ट करके) अज्ञानरूपी रोगों के नैष बौद्ध सत्यासियों के उपदेश को ग्रहण करो, जो लग्नपर कटु किंतु अन्त में हितकर उपदेश करते हैं ॥ १८ ॥

(पास जाकर) बुद्धमार्गों की धर्मसिद्धि हो ।

राक्षस—भदन्त, हमारे प्रस्थान के लिए दिन निश्चित कर बतलाओ ।

चरणक—(अभिनयपूर्वक सोचकर) भक्त दोपहर से संपुष्ण चन्द्रमावाली सभी शुभ शुणों से युक्त पूर्णमासी तिथि विचार कर निश्चित कर चुका हूँ, उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान करने वाले आप के लिए यह समय सब तरह से अनुकूल पड़ना है ।

English—Mendicant—(entering)

Adopt the tenets of the worthy the physicians of the ill of delusion, they teach what is bitter only for a moment, wholesome in the end (Advancing) May attainment of piety come unto the believer 18

Rakshasa—Bhadant, ascertain an auspicious day for our expedition

Mendicant—(Meditating), Pupil, I have determined that the full moon day on which the moon is full is afternoon quite prosperous The mansion too is favourable to you proceeding from North to South

टिप्पणी—इस श्लोक में अस्त्युत्तप्रशस्ता, रूपक अलंकार तथा आर्या छन्द है ।

विमला

अन्वयः—सूर्ये, अस्ताभिमुखे संपुष्णमण्डले, चन्द्रे, उदिते, केतौ, च, उदयास्तमिते, बुधस्य, लग्ने, गमनम् ॥ १९ ॥

व्याख्या—प्रथमपद—सूर्ये, रबी (the Sun), अस्ताभिमुखे=अस्ताचलशिखरा-अधिनि सति (is about to set), संपुष्ण मण्डल यस्य स संपुष्णमण्डलस्तस्मिन् संपुष्णमण्डले=परिपूर्णचिह्ने (the full orb), चन्द्र=सोमे (the Moon), उदिते=आधिर्भूते (has risen), केतौ=केतुग्रहे (Ketu), च (and), उदयास्तमिते=उदितास्तमनादस्तमिते अर्थात् दृष्टनष्टे (has risen and set), बुधस्य (with planet mercury), लग्ने=राक्षी (in conjunction), गमनम्=यात्रा (should go) ॥ १९ ॥

द्वितीयपद—सूर्ये वा सूर्ये=वीर्ये राक्षसे (the brave Rakshasa), अस्ताभिमुखे=

ता । लग्गे द्वौ सुलग्गे सोमग्गि गहग्गि अहं वि दुल्लग्गे ।
 वहेसि दीहं सिद्धिं चन्द्रस्स बलेण गच्छन्ते ॥ २१ ॥
 (तस्मात् । लग्नं भवति सुलग्नं सौम्ये ग्रहे यद्यपि दुर्लग्नम् । ^{कुर्वन्} ^{१५८}
 वहसि दीर्घां सिद्धिं चन्द्रस्य बलेन गच्छन् ॥ २१ ॥)
 राक्षसः—भदन्त, अपरैः सांवत्सरिकैः सह सवाद्यताम् ।
 क्षपणकः—सवादेदु सावगो । अहं उणं गमिस्सं । (सवादयतु श्रावकः ।
 अहं पुनर्गमिष्यामि ।)

English—Moreover—There is double meaning of this 'Sloka'

First entendre—You should go when the constellation presided over by Budha is rising, the Sun is about to set, the Moon has come up with the whole of her orb, and Ketu has appeared and disappeared, 19

Second meaning—The start is to be when Rakshas is about to end, Chandragupta has risen with his full subjects, under the direction of wise Chanakya and when Malayaketu is captured and his army overthrown, 19.

Rakshas—Well, Bhadant the very day is inauspicious.

Mendicant—Well believer, the virtue of a day is single, of the constellation fourfold and of the conjunction sixty fourfold, this is the conclusion of the science of astrology, 20

टिप्पणी—१९ वाँ श्लोक में श्लष अलंकार तथा आयां छन्द है एवं २० वाँ श्लोक सामान्य है ।

विमला

अन्वयः—लग्नम्, यद्यपि, दुर्लग्नम्, सौम्ये, ग्रहे, सुलग्नम्, भवति । चन्द्रस्य, बलेन, गच्छन्, दीर्घाम्, सिद्धिम्, वहसि ॥ २१ ॥

व्याख्या—लग्नम् (A conjunction), यद्यपि (स्यात्) (although), दुर्लग्नम् = अशुभम् (unfavourable itself), सौम्ये = शुभकरे (favourable), ग्रहे = नक्षत्रे सुलग्नम् भवति = शुभफलप्रदं भवति (becomes), चन्द्रस्य = सोमस्य वा चन्द्रगुप्तस्य (the moon or Chandragupta), बलेन = सत्प्रभुत्वेन (by the power), गच्छन् = चलन्, (going), दीर्घाम् = चिरकालव्यापिनीम् (everlasting), सिद्धिम् = लाभम् (benefit), वहसि = वधयसि (will secure) ॥ २१ ॥

राक्षस—भदन्त (Mendicant), अपरैः = अन्यैः (of other), सांवत्सरिकैः सह = ज्योतिषशास्त्रविद्भिः सह (with astrologers), सवाद्यताम् = विचारयताम् (compare your decision),

क्षपणक—श्रावक = श्रावक (believer), सवादयतु = विचारयतु (compare it), अहम् (I), पुन (again), गमिष्यामि (will go)

राक्षस —न खलु कुपितो भदन्तः ।

क्षयणः —कुपिते ष तुम्हाण भदन्ते । (कुपितो न युष्माक भदन्तः ।)

गधस —कस्तत्रि ।

क्षयणः —भय, कान्तो । जेण अत्तणो पक्ख उम्मित्ता परपक्खो पनाणाद्धरोअदि । (भगवान् कृतान्तः । येनात्मनः पक्षमुम्मित्वा परपक्ष प्रमाणीक्रियतः ।)

(इति निष्क्रान्तः क्षयणः ।)

राक्षस —प्रियवदः, ज्ञायता का वला वर्तत इति ।

प्रियवदः —अथादित्तासी भय मूरो । (अस्ताभिलाषी भगवान्सूयः ।)

राक्षस —न खलु (is not) कुपितः = काचित् (angry), भदन्तः (Bhadanta)

हिन्दी —कन चाइ कुपित हा न हो गुमग्रह (बुद्धिमान् वाक्प) के योग से कुपित हो जाता है अर्थात् विजयवाक्त्र चन्द्र चन्द्रशुभ्र) के बल पर हो तो उसका लाभ भी स्थायी हो जाता है २२

राक्षस —भदन्त अन्य शान्तिपत्र के साथ मा परानन्द कर लीजय ।

क्षयणः —आपक स्वय परानन्द कर लें, मा फिर चला बका ।

राक्षस —भदन्त, कुछ तो न हो गये

English —Conjunction though unfavourable itself becomes favourable when presided over by an auspicious planet, going by the power of Chandra you will secure everlasting benefit (21)

Rakshasa —Mendicant seek agreement with other astrologers

Mendicant —Compare it yourself, I go

Rakshasa —Is Bhadanta not angry surely ?

टिप्पणी —इत लोक न भा खल अलकार है ।

दिनला

प्राटया —इनाक —कुपित = काचित् (angry), न=नहि (not), युष्माकम् (with you), भदन्तः (Bhadanta),

राक्षस —तहि=तदा (then) क (who)

इनाक —भगवान् कृतान्तः = दैव शरणा (Dath the worshipful), येन=त्वया (you), आत्मन स्वस्य पक्ष स्वपक्ष त स्वपक्ष ज्यातिशास्त्ररचार माम् (your own side), उज्जित्वा=परित्यज्य (left), परपक्ष=परस्य पक्ष परपक्ष=शत्रुपक्ष (of others), प्रमाणाक्रियत=प्रमाणावनाहोक्रियते (gone over),

(इति निष्क्रान्तः क्षयणः Exit mendicant),

राक्षस —प्रियवदः (Priyambadana), ज्ञायताम् (see), का वला=कियान्-कालः (what time) वर्तते=अस्ति (it is)

प्रियवदः —भगवान् सूर =सूर्य (God the Sun), अस्ताभिलाषी=अस्तावल-गननाःसुक (is about to set)

राक्षसः—(उत्थाय विलोक्य ।) अये, अस्ताभिलापी भगवान्भास्करः ।
संप्रति हि ।

आविर्भूतानुरागाः क्षणमुदयगिरेरुज्जिहानस्य भानोः २२ ॥
पर्णच्छायाः पुरस्तादुपवनतरवो दूरमाश्वेव गत्वा ।

पक्षी-दीक्षा

राक्षस—[उत्थाय (Rising), विलोक्य=दृष्ट्वा (looking)], अये (O),
भगवान् भास्करः (Divine sun) अस्ताभिलापी (is going to set), संप्रति हि
(for now).

हिन्दी—छपणक—आप पर भदन्त कोषित नहीं हुए हैं ।

राक्षस—तब कौन ?

छपणक—भगवान् यमराज, अपना पक्ष त्यागकर बिसके द्वारा दूसरों का पक्ष प्रमाणित
किया जा रहा है ।

(यह कहने के बाद छपणक बाहर चला गया)

राक्षस—प्रियवदक, पाता लगाओ समय क्या है ?

प्रियवदक—भगवान् सूर्य अस्त होने वाले हैं ।

राक्षस—(उठकर देखकर) ओह, भगवान् भास्कर अस्तोन्मुख हैं । क्योंकि इस समय—

English—Mandiant—Bhadant is not angry with you.

Rakshasa—Who then ?

Mandiant—Death the worshipful, because other people are accep-
ted as guide and your own side avoided.

(Exit Mendicant)

Rakshasa—Priyambadaka, see what time it is ?

Priyambadaka—O, worshipful Sun desires setting.

Rakshasa—(Rising and looking) O, the Divine Sun is going
to set, for how—

विमला

अन्वयः—छणम्, आविर्भूतानुरागाः, एते, उपवनतरवः, उदयगिरेः, उज्जिहानस्य,
भानोः, पुरस्तात्, पर्णच्छायाः आशु, एव, दूरम् गत्वा, पुनस्तस्मिन्, अपरगिरिमाप्त-
पर्यस्तविम्बे, निवृत्ताः, प्रायः, सेवमानाः, श्रुत्या, प्रचलितविभ्रमम्, स्वामिनम्
त्यजन्ति ॥ २२ ॥

व्याख्या—छणम्=मुहूर्तमात्रम् (in a moment), आविर्भूतानुरागो येषां ते
आविर्भूतानुरागाः=सन्जातप्रीतयः (having manifested their affection), एते=
इमे (these), उपवनतरवः=आरामवृक्षाः (garden trees), उदयगिरेः=उदय-
पर्वतात् (from the orient mountain), उज्जिहानस्य=उदयगच्छतः (have
gone), भानोः=सूर्यस्य (of the sun), पुरस्तात्=समक्षम् (in front of)
पर्णच्छायाः=पत्रच्छायांरूपेण (the shadows of their leaves), आशु एव=शीघ्रमेव

एते तस्मिन्निवृत्ताः पुनरपरगिरिप्रान्तपर्यस्तविन्द्ये
प्रायो भृत्यास्त्यजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ॥२१॥

(इति निष्क्रान्ताः नर्ये ।)

चतुर्थोऽङ्कः ।

(quickly), दूरम् गवान्विप्रकृष्टं वज्रिवा (having gone to a distance) पुनः
(again), तस्मिन् = तानौ (that), अपररचासौ गिरिः अपरगिरिस्तस्य प्रान्ते पर्यस्तम्
अवन्वितम् विन्द्यम् = मण्डलम् यस्य स तथोक्तस्तस्मिन् अपरगिरिप्रान्तपर्यस्तविन्द्ये =
हृत्तगिरिगुणावलम्बिनि (his disk is peending on the brim of the west-
ern mountain), निवृत्ता = परावृत्ता (have turned back), प्रायः = बाहुव्येन
(generally), सेवमानाः = सेवान् कुर्वन्तः (in attendance), मृत्पाः (serva-
nts) प्रचलितविभवम् = विनप्यैश्वर्यम् (declines in prosperity), स्वामिनम् =
प्रभुम् (their master), त्यजन्ति = विहाय अन्यत्र व्रजन्तीति (leave him). ॥२१॥
(इति निष्क्रान्ताः सर्वे = Exeunt all)

End of Act IV)

हिन्दी—जब मूर्य उदयावल पर आरुढ़ थे, उस समय वरचनउन्को ने किटना झीक
झुराग था, मूर्य के स्वामि ने इनके पदों को छापा किउनो दूर तक आग बढ़ गए थीं । वही
मूर्य हम जनर अब अन्तर्गतोन्मुख हो गए, जो फिर वही वरचन को छापाई अब वल्ले किउनो
दूर लिकक गए हैं । बहुधा ऐसा करते हुए केवक ना समझिन्डिओन स्वामि को छोड़ हो देते
हैं ॥ २१ ॥

English—These garden trees, having manifested their affection
in the form of the red tinge and quickly gone in front of the Sun
as he rose from the Rising Hill, having indeed turned back now,
he having his disk cast on the edge of the other side, Servants in
attendance usually leave the master whose power is shaken २१.

टिप्पणी—मकानउन्—सन्—वर्द्ध+प्+लोट्+तान्+नावे । अन्वितम्—उद्ध+
हान+घानच्+कटारे+पठ्+कचने विनोडकार् ।

इस श्लोक में चतुर्थ अङ्क में प्रवेशक सनान्ध कर्ष के द्वारा अङ्कित चतुर्थ ने प्रवेशक
विशेष के समर्थन से वही सनान्ध के द्वारा विजेन समर्थनक अफान्दन्तास अङ्कार
है । वही अफान्दन्तास मूर्य के अन्तर्गत दिखारकन्वी होने पर वरचन वरचन को प्रति-
निवृत्त 'इव' उद्ध के वरचन से 'इव' उद्ध के अन्तर्गत स्थिति में जो प्रतीकन होने के
कारण वही वरचन अङ्कार है । इसमें समर्थन इष्ट है पर निवृत्ति प्रकरो रूप विनोड सन्धि है ।

उदाराइन चतुर्थ अङ्क को 'विनोड' व्याख्या सनात ।

पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति नेत्रमलकरणस्थगिका मुद्रितामादाय सिद्धार्थक ।)

सिद्धार्थक — हा हीमाणहे हीमाणहे । (आश्चर्यमाश्चर्यम् ।)

बुद्धिजलनिर्झरैर्हि सिञ्चन्ती देशकालकलसेर्हि ।

वसिस्सदि कज्जफलं गुरुक चाणक्यनीतिलता ॥ १ ॥

(बुद्धिजलनिर्झरैः सिञ्च्यमाना नेशकालकलशैः ।

दर्शयिष्यति कार्यफलं गुरुक चाणक्यनीतिलता ॥ १ ॥)

ता गहीवो मए अज्जचाणक्येण पुडमलित्थिवो अमञ्जरम्परमस्म मुदालच्छिओ
अअ लेणे तस्स ज्ञप्प मुदालच्छिआ इअ आरणपेडिआ । चलिदोम्हि श्लि
पाडलिउत्त । चाय गच्छामि । (परिक्रम्यालोक्य च ।) व्ह एरणओ
आअच्छा । चाय से अमउणभू दसण मइ समम्मेव्व । ता ण पडिहामि ।
(तस्माद्गृहीतो मया चाणक्येन प्रथमलेखितोऽमात्यराक्षसस्य मुद्रालाङ्घ्रि-

विमला

[ततः = तदनं तत्रम् (then) प्रविशति = प्रवेश करोति (enter), सिद्धार्थक =
मलयकनमित्रवेशी चाणक्यप्रणिधि (Siddharthaka), लेखम् = पत्रम् (a letter),
मुद्रा सजाता अस्या इति मुद्रिता ताम् मुद्रिताम् = मुद्राङ्किताम् (a sealed), अलकरण
स्थगिकाम् = भूषणपेटिकाम् (a packet of jewellery), आदाय = गृहीत्वा
(carrying)]

सिद्धार्थक — आश्चर्यमाश्चर्यम् = वीप्साया द्विरुक्ति (wonder ' oh Wonder !)

अन्यथ — देशकालकलशैः, बुद्धिजलनिर्झरैः, सिञ्च्यमाना, चाणक्यनीतिलता,
गुरुकम् कार्यफलम् दर्शयिष्यति ॥ १ ॥

व्याख्या — देशश्च कालश्च देशकालौ तावैव कलशस्तैश्च देशकालकलशैः स्थानसमय
कुम्भैः (by the pitcher of time and place), बुद्धय एव जलानि बुद्धिजलानि
तेषां निर्झराः ते तथोक्तस्तैः बुद्धिजलनिर्झरैः = धीपथ प्रवाहैः (with a liberal
flow of the water of wisdom) सिञ्च्यमाना = आर्द्राक्रियमाणा (watered),
चाणक्यनीतिलता-चाणक्यस्य नीति चाणक्यनीति सैव लता = कौटिल्यनयप्रतति
(the creeper of Chanakya's policy), गुरुकम् = अधिकम् (the weighty),
कार्यफलम् = ईप्सितनिष्पत्त्यात्मकम् (fruit of undertaking), दर्शयिष्यति =
प्रकटयिष्यति (showing) ॥ १ ॥

तस्मात् (so), गृहीत = आदत्त (is taken), मया (by me), आर्षचाणक्येन =
पूज्यकौटिल्येन (by noble Chanakya), प्रथमलेखित = प्रथमोक्तं शकटदासेन लेखित
(previously caused to be written), अमात्यराक्षसस्य (of minister

तोऽयं नेतस्त्वन्मैर सुत्राच्छिन्नेयमानरूपेतिह । चलिगोऽस्मि किं
पादलिपुत्रम् ! यावद्वृत्तानि ! क्व रूपपात्र जागच्छति । यावदस्त्वाशुभमूतं
दरीनं नम संनतमेव । तन्मात्र परिहरामि ।)
(प्रवित्य ।)

Rakshasa १, मुद्रालिखित = राक्षसानामङ्कित (with the seal), वयम्
(this), लेख = पत्रम् (letter), तस्यैव = अनाचारादमस्यैव (with his
own), मुद्रालिखित = बहुलिपुत्रादिभिः (is stamped), दयमानरूपेतिह =
दयनलङ्घननम्बरा this packet of jewellery), अलिखित = प्रवित्यो नवनि
(I pretend to say, किं indeed), पादलिपुत्रम् (to padaliputra),
यावत् = प्रयत्नम् (try), गच्छति (go), क्व (why), इतरथा = हीन-
मन्याता (m-and-ah), आगच्छति (come), यावत् = प्रयत्नम् (try),
अस्य = वयनकस्य (myself), अमङ्कितमूतम् = अनङ्कितमूतम् (un-
stamped), दर्शनम् (sight), नम (me), संनतमेव (undecided), तन्मात्र
(so), न परिहरामि (do not avoid him).

हिन्दी—इसके बाद जब मैं इस मूत में जाऊँगा तो मैं उस मित्र के सम्-
बन्ध में)।

निर्द्धारक—अब मैं जानूँ

देख मैं उस मूत में बहुत सारा सच बातें हैं और मैंने वास्तव में
मैंने अपने सच को देखा है ।)

मैंने उन मूत का नाम देखा है और मैंने उस मूत में बहुत सारा सच बातें
देखी हैं वह सब = किन्हीं अमङ्कित मूतों में जो मैंने देखा है ।
मैंने सच को देखा है (मैंने देखा है) मैंने देखा है । इस मूत का
नाम है । इसका अमङ्कित नाम है और मैंने देखा है । मैंने देखा है मैंने देखा है ।

English—(Enter suddhanthaka with a letter and sealed box
containing ornaments.)

Suddhanthaka—wonderful, wonderful !

Sprinkled with the water of wisdom from the pitcher of time
and place, the creeper of Chanakya's policy is about to bear
the weighty fruit of the undertaking. I

So, this letter previously caused to be written by noble Chanakya
and stamped with the seal of the minister Rakshasa and the box
of jewellery too is stamped with his own seal. Now I am ostensi-
bly going to pataliputra, (going round and looking on) how so,
A mendicant is approaching. As his mauspicious sight is desired
by me, so I do not avoid him.

हिन्दी—एक दोस्त ने मुझे बहुत सारा सच बातें दे दी हैं ।

क्षपणक —

अलङ्घन्ताण प्रणमामि जेते गंभीलदाए बुद्धीए ।

लोउत्तलेहिं लोए सिद्धि मग्गेहिं गच्छन्दि ॥ २ ॥

(आर्हताणां प्रणमामि ये ते गम्भीरतया बुद्धे ।

लोकोत्तरैर्लोके सिद्धिं मार्गेर्गच्छन्ति ॥ २ ॥)

सिद्धार्थक — भदन्त, वन्दामि । (भदन्त, वन्दे ।)

क्षपणक — सायगा, धम्मसिद्धी होदु । (निर्वर्ण्यं ।) सायगा, पत्थाण
ममुद्वहणे फअवयसाअ थिअ तुम पेक्खामि । (श्रावक, धर्मसिद्धिर्भवतु !
श्रावक प्रस्थानसमुद्वहने कृतव्यवसायमिव त्वा पश्यामि ।)

सिद्धार्थक — कह भदन्ता जानादि । (कथं भदन्तो जानाति ।)

क्षपणक — सायगा, किं एत्थ जाणिद्व्व । एसो दे मग्गाण्णसकुमलो सउणो
करगदो लेहो अ सुअअदि । (श्रावक, किमत्र ज्ञातव्यम् । एष ते मार्गदेश
कुशल शकुन करगतो लेखश्च सूचयति ।)

विमला

क्षपणक —

अन्धया — आर्हताणाम्, प्रणमामि, ये ते, बुद्धे गम्भीरतया, लोके, लोकोत्तरै मार्गे,
सिद्धिम्, गच्छन्ति ॥ २ ॥

व्याख्या — आर्हताणाम् = बौद्धसन्यासिनाम् (the follower of Arhata),
प्रणमामि = प्रणाम करोमि (I bow), ये ते = बौद्धस-न्यासिन (who), बुद्धे = धिय
(intellect), गम्भीरतया = दुरूहतया (through the depth), लोके = तसारे (in
the world), लोकोत्तरै = लोकातिगै (by uncommon), मार्गेः (path),
सिद्धिम् = फलसाफल्यम् (success), गच्छन्ति = याप्ति (attain) ॥ २ ॥

सिद्धार्थक — भदन्त (Bhadanta), वन्दे = प्रणमामि (I bow)

क्षपणक — श्रावक = उपासक (followers of lord Buddha), धर्मसिद्धिः
भवतु (Salvation to you), (निर्वर्ण्यं (eyeing him), श्रावक (follower),
प्रस्थानसमुद्वहने = प्रस्थानस्य समुद्वहनं प्रस्थानसमुद्वहनम् तस्मिन् प्रस्थान
समुद्वहने = यात्रासम्पादने (in preparing for a journey), कृतव्यवसायमिव =
कृतो व्यवसायो येन त कृतव्यवसायम् = कृतोद्योगम् (busy), त्वाम् (to you),
पश्यामि = अवलोकयामि (I see)

सिद्धार्थक — भदन्त (Bhadanta) कथम् = केन प्रकारेण (how), जानाति
(do you know),

क्षपणक — श्रावक (follower) अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter),
किम् (what), ज्ञातव्यम् = ज्ञातव्यम् (is to be known), एष (this), ते =
तव (your), मार्गदेशकुशलः = मार्गस्य आदेशो मार्गादक्षस्तरिपन् कुशलो मार्गदेश-
कुशलः = अवसूचननिपुण (directing your way properly), शकुन =

सिद्धार्थकः—जाणिइ भदन्तेण । देसन्तर पत्थिओन्हि । ता कहेतु भदन्तो कीदिनो अत्र दिवसो ति । (जात भदन्तेन । देशान्तर प्रस्थितोऽस्मि । तस्मात्कथयन्तु भदन्तः कीदृगोऽयं दिवस इति ।)

अपगच्छः—(विद्वन् ।) सावग, मुण्डिअमुण्डो पक्खत्ताई पुद्दसि । (श्रावक, मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छसि ।)

सिद्धार्थकः—भदन्त, सम्पद पि किं जात । कहेति पयापस्स जइ अणुक्कल भविस्सति तदो गमिस्स । (भदन्त, माप्रतमपि किं जातम् । कथय प्रस्थानस्य यद्यनुक्कल भविष्यति तदा गमिष्यामि ।)

प्रस्थानमाशयिकनुद्गर्तविशय (good omen), च=पुन (and) करात=हस्तस्थित (in your hand) लेख (the letter), सूचयति=कथयति (tells me)

सिद्धार्थक—जातम्=बुद्धम् (have guessed), भदन्तेन (by Bhadanta), दशान्तरम्=अन्यदशम् (other place), प्रस्थितोऽस्मि=गन्तुमुद्यतोऽस्मि (I am going), तस्मात् (so), भदन्त (Bhadanta), कथयन्तु (tell me) अद्य (today), कदृश (what sort of) दिवस इति (day I have), विहस्स (with laugh).

श्रावक—श्रावक (follower), मुण्डितमुण्डः=छतकश्चमस्तकः (Shaved head), नक्षत्राणि (the constellation), पृच्छति=पृच्छति (inquires about).

सिद्धार्थक—भदन्त (Bhadanta), साप्रतमपि=अत्रापि (even now), किं जातम्=किं भूतम् (what harm is), कथय (tell me), प्रस्थानस्य (of departure), यद्यनुक्कलम् भविष्यति (if the constellations be favourable), तदा (then), गमिष्यामि (I will go).

हिन्दी—अपगच्छ—मैं निम्न वशों को जानन करता हूँ, या बुद्धि की गम्भीरता से लोकादर नाओं का अनुशासन करत हुए लेके मैं चक्रवर्ती (नेत्र) प्रकट करत हूँ ॥ २ ॥

सिद्धार्थक—भदन्त प्रश्न कर रहा हूँ ।

अपगच्छ—श्रावक, धर्म की शिक्षा है । (देखकर) श्रावक, क्या है जैसे किता नामा के लिये वरकर इकर निकल रहा ।

सिद्धार्थक—भदन्त आने रह कैसी जगह ?

अपगच्छ—श्रावक, जहाँ जानने के लिये क्या है ? दुहरा नामों के रह अनुद्गर्त और हाथ में वचनन रख बटका रहा है ।

सिद्धार्थक—जान ठाक पत्थान निदा । परदेस जाने के लिये प्रस्तुत हूँ । या भदन्त कदृश अत्र दिवस कैसा है ?

अपगच्छ—(हँस कर) श्रावक, फिर मुझ कर बड़बो का पूट रह हो

सिद्धार्थक—भदन्त, अब ना क्या हुआ है ? यदि वारा के अनुद्गर्त दिन हो तो जाऊंगा, अन्यथा नहीं जाऊंगा ।

English—*Mercant*—I bow to the followers of Arhata, who

क्षपणकः—सावग, ण संपदं एदस्सि मलयकेतुकडए अणुकूलं भविस्सदि ।
(धावक, न साप्रतमेतस्मिन्मलयकेतुकटकेऽनुकूलं भविष्यति ।)

सिद्धार्थकः—भदन्त, कहेहि बुदो एदम् । (भदन्त, कथय कुत एतत् ।)

क्षपणकः—सावग, णिसामेहि । पुढम दाव एत्थ कडए लोअस्स अणिवारिदो णिग्गमप्पवेसो आसी । दाणीं इदो पच्चासण्णे कुसुमपुले ण को वि

through the depth of their intellect accomplish success or salvation in this world by uncommon path. 2.

Siddharthak—Mendicant, I bow to you.

Mendicant—Believer, salvation to you (Eyeing him) Believer, I find that you have come out prepared for a journey.

Siddharthaka—How does the mendicant know it ?

Mendicant—Believer, what is to be known in that ? This letter in your hand, this good omen directing your way itself, tell me that.

Siddharthaka—Rightly guessed by mendicant. I am proceeding another land, so let mendicant declare how the day is today ?

Mendicant—(With a laugh), you inquire about the constellation after getting shaved your head

Siddharthaka—What harm is there even now ? Speak, if the constellation is favourable for journey, then I shall go, else I will return

टिप्पणी—आर्हतानाम्—अर्ह + शप् - अर्हव अर्हत. = बुद्धस्य इति अर्हव + भण् + अर्हतां तेषाम् । श्लोक २ में अग्रस्तुत बौद्ध सन्ध्यासी की स्तुति से प्रस्तुत चागन्ध्य स्तुति के अवगम से—तथा इस श्लोक के कतिपय पदों के शिष्ट होने के कारण—अग्रस्तुतप्रशंसा एवं श्लेष के समिश्रण से 'सद्गुरु' अलङ्कार है तथा आर्वा इच्छ है ।

विमला

क्षपणक—धावक (Believer), साप्रतम्=अधुना (at present), एतस्मिन् (in), मलयकेतुकटके (Malayaketu's camp), अनुकूलम् (favourable), न भविष्यति (nothing will be)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant), कथय=वद (tell), कुतः=करमात् (whence), एतत् (is this)

क्षपणक—धावक=साधक (Believer), निजामय=आकर्ण्य (listen), प्रथमम् सावत् (at first), अत्र कटके=मलयकेतुशिविरे (in this army), लोकस्य=जनस्य (People), अनिवारिनी=अवतिथिद्वी (free), निर्गमप्रवेशो=निर्गमामगमो (ingress and egress), आसीत् (had), इदानीम्=अधुना (now), इतः प्रत्यासन्ने=अग्रमाश्रिते (near from this place), कुसुमपुरे=तन्नामनगरे (at

अमुदालच्छिबो णिम्ममिदु पवेट्ठुमा अणुमोदीअदि । ता जदि भाउराअणस्स मुदालच्छिबो तदो गच्छ विस्सद्धो अण्णहा चिट्ठ । मा गुम्माहिआरिएहि सन्मिअकलचलणो राजकुल पवेसीअसि । (आवरु, निशामय । प्रथम तावदत्र ऋटके लोभस्यानिवारितो निर्गमप्रवेश आसीत् । इदानीमितः प्रत्यासन्ने कुसुमपुरे न कोऽप्यमुदालाच्छितो निर्गन्तु प्रवेष्टु वानुमोद्यते । तद्यदि भागुरायणस्य मुद्रालाच्छितस्तदा गच्छ विप्रबोऽन्यथा तिष्ठ । मा गुल्माधिकारिकैः सयमितकरचरणो राजकुल प्रवेश्यसे ।)

Kusumpura) न कोऽपि = पुण्य (no body, अमुदालाच्छित=अनुद्राहितः (without a seal impression), निर्गन्तुम् = निष्क्रमितुम् (to go out), प्रवेष्टुम् = अन्तर्गन्तुम् (to come in), वा = अथवा (or), अनुमोद्यते = अनुमन्यते (is allowed), तत्तन्तस्मात् (so), यदि=स्यात् (if) भागुरायणस्य (Bhagurayan's), मुद्रालाच्छित = मुद्राङ्कित (sealed), तदा (then), विश्रम्भ = निर्भीकः सन् (in good cheer), गच्छ = गम्यताम् (go), अन्यथा (otherwise), तिष्ठ = स्वीयताम् (stay), गुल्माधिकारिकैः = ग्रहरिमि. (by the officers at the out post), सयमितकरचरण = मण्डबद्धस्तपाद् सन् (with your hands and feet in irons), राजकुलम् = नृपालयम् (to the king's tent), त्वम् (you), ना प्रवेश्यसे = अन्तर्नीयसे (lest might be taken)

हिन्दी—उपगक—मुद्रापासक, मलयकेतु के इस शिविर में इस समय कोई भी बलु अनुकूल नहीं है।

सिद्धार्थक—मदन् यह कैसे ?

उपगक—मुद्रापासक 'मुना' पहले इस शिविर में लोगों के जाने-जाने पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था किन्तु, अब क्योंकि कुसुमपुर निकटवर्ती है—बिना मुद्रापत्र के न कोई शहर से जा सकता है और न आ ही सकता है। तो यदि भागुरायण की मुद्रा से विहित हो तो विश्वासपूर्वक जाओ अन्यथा रुक जाओ। कहीं ऐसा न हो कि बनान पर निपुण पदाधिकारियों द्वारा हाथ पैर बंध कर राजकुल में पहुँचा दिये जाओ।

English—Mendicant—Believer, at present nothing will be favourable in the camp of Malayaketu.

Siddharthaka—Pray, tell me, whence is this ?

Mendicant—Listen, Believer, Formerly in this camp people's ingress and egress were free Now Kusumpura becoming near, so no body is allowed to come in and go out without a passport. So if you have a pass from Bhagurayan then go in confidence, otherwise stay Lest you might be taken to the royal camp by the officers at the out post with hands and feet fettered.

टिप्पणी—(१) निशामय—नि + शृन् + शिच् + लोट् + दि = रुचसिङि । (२) अनुद्रा लाञ्छित — लाञ्छ + शिच् + क्त + कर्मणि लाञ्छित । मुद्रावत अनया एति मुद्रा + शिच् + अ करण मुद्रा (३) प्रवेष्टुम्—प्र + विष् + शिच् + ण्यल् कर्त्तरि । (४) ना मे यह माष्टे मित्र है।

(सावेगम्)

सिद्धार्थक—किं ण जाणादि भदन्तो अमच्चरक्खसस्स सण्हिदो त्ति । ता अमुदालच्छिद पि म णिक्कमन्त कस्स सत्ती णिवारेदु । (किं न जानाति भदन्तोऽमात्यराक्षसस्य सन्निहित इति तदमुद्रालाञ्छितमपि मा निष्कामन्त कस्य शक्तिनिवारयितुम् ।)

क्षपणक—सावगा, रक्खसस्स पिशाचस्स वा होहि ण उण अमुदालच्छिदस्स इदो णिक्कमणोवाओ । (श्रावक, राक्षसस्य पिशाचस्य वा भय न पुनरमुद्रालाञ्छितस्येतो निष्कमणोपाय) ।

सिद्धार्थक—भदन्त, ण कुप्प कज्जसिद्धी होदु । (भदन्त, न कुप्प कार्यसिद्धिर्भवतु ।)

क्षपणक—सावगा, गच्छ । होदु दे कज्जसिद्धी । अह वि भाउराअणादो मुद जाचेमि । (श्रावक, गच्छ । भवतु ते कार्यसिद्धि । अहमपि भागुरायणा-न्मुद्रा याचे ।)

(इति निष्क्रान्तौ ।)

प्रवेशक ।

विमला

(सावेगम्=(with anguish)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant), किं न जानाति = किं नावगच्छति (do you not know), अमात्यराक्षसस्य = मन्त्रिराक्षसस्य (the minister Rakshasa), सन्निहित इति (personal attendant), तत् (so), अमुद्रालाञ्छितमपि = अलङ्घ्याहुलिमुद्राङ्कनमपि (without a pass), माम् = (me), निष्कामन्तम् = निर्गच्छन्तम् (even though leave), निवारयितुम् = प्रतिपेदुम् (to stop), कस्य (who s) शक्तिः = सामर्थ्यम् (power)

क्षपणक—श्रावक (Believer), राक्षसस्य = निशाचरस्य (Rakshasa's), वा = अथवा (or), पिशाचस्य = भूतयोने (of the devil), भव = वचस्व (may be), न पुन = न भूय (there is no way), अमुदालाञ्छितस्य = अत्रासमुद्राङ्कनस्य (without a pass), इत = अत्र स्थानात् (from this place), निष्कमणोपाय = निर्गमोद्योग (no way to get out)

सिद्धार्थक—भदन्त (Mendicant) न कुप्प = क्रोध मा कुह (be not angry), कार्यसिद्धिर्भवतु (may be success in the accomplishment)

क्षपणक—सावगा (Believer), गच्छ = याहि (go), ते = तव (your), कार्यसिद्धि (success), भवतु (may be), अहमपि (I too), भागुरायणात् (from Bhagurayan), मुद्राम् (pass), याचे (to ask),

[इति निष्क्रान्तौ = (they go out)]

(प्रवेशक = here the end of prelude)

(ततः प्रविशति पुरुषेणानुगम्यमानो भगुरायणः ।)
 नागुरायणः—(स्वगतम् ।) अहो वैचित्र्यमार्यचाणक्यनीतेः ।

मुहुर्लक्ष्योद्भेदा मुहुरधिगमानावगहना

मुहुः संपूर्णाङ्गी मुहुरतिकृशा कार्यवशतः ।

मुहुर्नश्यद्बीजा मुहुरपि बहुप्रापितफले-

त्यहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः ॥ ३ ॥

हिन्दो—सिद्धार्यक—भदन्त, क्या नहीं जानते कि मैं बनात्व राक्षस का अति निकटवर्ती मेवक हूँ । क्या बिना मुद्रेन नो बाहर जाने हुए मुझसे रोकने को किसी शक्ति है ।

चपगक—उनासक, राक्षस के हो अपना निष्ठा के, हिन्दु, बिना मुद्रकन के यहाँ से बाहर निकलने का कंड इन्का उपाय नहीं है ।

सिद्धार्यक—भदन्त, क्रुद्ध न हों, मेरे कार्य की सिद्धि हो ।

चपगक—उनासक, भाग्यो, तुम्हारे कार्य का सिद्धि हो । न तो बाधुपादन से मुद्राह्वन प्राप्त करना है ।

(इस प्रकार दोनों निकल गये ।

अवेद्यक ननास)

English—*Siddharthaka*—Mendicant, do you not know that I am a personal attendant of the minister Rakshasa ? Who will have the power to check me even though I leave without a pass ?

Mandicant—You may be a personal attendant of Rakshasa or of the devil, but there is no way for you to get out without a pass.

Siddharthaka—Mendicant, do not be angry, I may succeed in my object.

Mendicant—Go believe. Let success in the undertaking be yours. I too will apply for a seal.

(They go out).

Here ends the prelude.

विमला

[ततः = तत्पश्चात् (after that), प्रविशति (enter), पुरुषेण (by a man), अनुगम्यमानः (followed), नागुरायणः = (Bhagurayan).]

नागुरायण—[स्वगतम् (to himself)]. अहो (Oh), वैचित्र्यम् (the manifold), आर्यः = नान्यः (noble), चाणक्यः = चौटिक्यः (Chanakya), नीतेः (policy).

अन्वयः—मुहुः, लक्ष्योद्भेदा, मुहुः अधिगमानावगहना, मुहुः कार्यवशतः, अति-कृशा, मुहुः नश्यद्बीजा, मुहुः संपूर्णाङ्गी, मुहुरपि, बहुप्रापितफला, नयविदः, नीतिः, नियतिरिव, चित्राकारा, इत्यहो ॥ ३ ॥

(प्रकाशम् ।) भद्र भासुरक, न मां दूरीभवन्तमिच्छति कुमारः । अतोऽस्मिन्ने-
वास्थानमण्डपे न्यस्यतामासनम् ।

व्याख्या—मुहुः=वारंवारम् (Sometimes), लक्ष्योऽनुमेय उद्भेदः आवि-
र्भावो यस्याः सा लक्ष्योद्भेदा=अनुमेयाविर्भावा (manifestation can be discern-
ed), मुहुः=कश्चित् कालम् (sometimes), अधिगमस्याभावोऽधिगमाभावः
तेन गहना=अधिगमाभावागहना=ज्ञानाभावदुर्बोधा (deep not being compre-
hended), मुहुः=कदाचित् (sometimes), कार्यवशात्=कृत्यानुरोधात् (in ac-
cordance with the object), अतिकृशा=अतिक्षीणा (very-subtle), मुहुः=कदाचित्
(sometimes), नश्यद्-बीजा=प्रश्यत्कारणः (seed appears to be destroyed),
मुहुः सम्पूर्णाङ्गी=सम्पूर्णानि अङ्गानि यस्याः सा सम्पूर्णाङ्गी=प्रचितावयवा (full in
all its parts), मुहुरपि=कदाचित् (sometimes), बहुप्रापितफला=बहु सविशेषम्
यथा स्यात् तथा प्रापितानि फलानि यथा सा बहुप्रापितफला=साकष्यमुपगता (laden
with an abundance of fruit), नियति=दैवम् (destiny), इव=यथा (like),
नयविद्=नीतिज्ञस्य (of the politician), नीति=राजनीतिः (policy),
चित्राकारा=विविधरूपाकृतिः (varied in character), इति अहो=आश्चर्यम् (oh) ॥३॥

हिन्दी—(एक सेक के साथ भागुरायण का प्रवेश)

भागुरायण—(अपने आप) आर्ष चाणक्य की नीति की विचक्षणता आश्चर्यजनक है ।—

कुछ समय के लिए यक्त अकुरवाली (मुखसन्धि में जिसका अर्थ स्पष्टीकरण है)
फिर मात्र कुछ काल के लिए घात न होने के कारण अति गम्भीर, पुनः प्रयोजनवश अति क्षीण
(प्रतिमुख सन्धि में कभी दृश्य कभी अदृश्य रहने के कारण अति सूक्ष्म) फिर नष्ट उद्योग वाली
(गर्भसन्धि में विकल होती हुई सी) फिर सम्पूर्ण अङ्गोंवाली (विमर्श सन्धि में स्वरूप से दृश्य-
मान) पुनः बहुत सारे फलों की एक साथ प्राप्त करने वाली (अर्थात् निर्वहण सन्धि
में सभी कार्यों का उपसंहार होने के कारण फलवती) भी नीतिज्ञ की नीति नियति के सदृश
विविध रूपों की धारण करने वाली है—यह आश्चर्यजनक है ॥ ३ ॥

English—(Enter Bhagurayana followed by 3 man)

Bhagurayan—(To himself) Sometimes its manifestation can be
clearly discerned, sometimes it is deep, not being comprehended,
now full in all its parts and now very subtle on purpose, often with its
very basis disappearing, often again leading to ample reward, today
its seed appears to be destroyed, tomorrow laden with an abun-
dance of fruit—thus oh of a striking character like fate is the
policy of the diplomat. 3.

टिप्पणी—इस श्लोक में कान्यलिङ्गानुप्राणित उपमा एवं अपस्तुत की स्रष्टि है । शिखरिणी
छन्द है ।

विमला

[प्रकाशम् (Aloud)], भद्र=कृष्णानि (good man), भासुरक (Bhasuraka),
कुमारः (the prince), माम् (from him), दूरीभवन्तम्=अनिकटवर्तिनम्

पुन्यः—एत आसण । उपनिसदु अज्जो । (एतदासनम् । उपविशत्वार्यः ।)

नागुरायणः—(उपविश्य ।) मद्र, यं कञ्चिन्मुद्रार्थी मां द्रष्टुमिच्छति स त्वया प्रवेशयितव्यः ।

पुन्यः—ज अज्जो आपणवेदि ति । (निष्क्रान्तः ।) (यदायं आज्ञापयति ।)

नागुरायणः—(स्वगतम् ।) कष्टनेमप्यस्मासु स्नेहवान् कुमारो मलयकेतु-
रतिसघातव्य इत्यहो दुष्करम् । अथवा—

कुले लज्जायां च स्वयशसि च माने च विमुखः

शरीरं विक्रीय क्षणिकमपि लोमाद्धनवति ।

तदाज्ञं कुर्वाणो हितमहितमित्येतदधुना

विचारातिक्रान्तः किमिति परतन्त्रो विमृशति ॥ ४ ॥

(should be far off) नेच्छन्नि = नाभिलषन्ति (does not wish), अत्ता (so),
अस्मिन्नेव (in this very), आतिष्ठन्ति जना अत्रत्यास्याचम् तदेव मण्डपम् आस्यान-
मण्डपम् तस्मिन्नास्यानमण्डपे = सदोहजनाश्रय (council pavilion), आसनम्
(seat , न्यस्यताम् = संस्थाप्यताम् (place)

पुन्यः—एतत् (Here), नामनम् (is the seat), वार्यः (noble sir),
उपविशतु (may sit down)

नागुरायणः—[उपविश्य (Sits down)], मद्र (good man), यः करिचत् (who
ever), मुद्रार्थी (wish to get pass), माम् (me), द्रष्टुमिच्छति (wants to see),
सः=असौ (him), त्वया (by you), प्रवेशयितव्यः (bring to me).

पुन्यः—वार्यं (Noble sir), यदाज्ञापयति (as commands), [इति निष्क्रान्तः
(Exit)]

नागुरायणः—[स्वगतम् = (to himself)], कष्टम् = खेदा (alas), एवमपि = एत-
मात्रमपि (to such an extent), अस्मासु = (to me), स्नेहवान् = दयालुः (is
kind), कुमारः = (the prince), मलयकेतु (Malayaketu), अतिसघातव्यः =
प्रतारणीय इति (has to be deceived), अहो (oh), दुष्करम् = दुःखेन कर्तुम्
योग्यम् कठिनम् (how hard), अथवा=तदेव कष्टं निवारयति (rather) :—

अन्वयः—क्षणिकधनलोभात्, कुले, लज्जायाम्, च स्वयशसि, च, माने, च विमुख-
धनवति, शरीरम्, विक्रीय, तदा, कुर्वाण, विचारातिक्रान्त, परतन्त्र, अधुना,
एतत्, हितम्, अहितम्, इति, किमिति, विमृशति ॥ ४ ॥

व्याख्याः—क्षणिकधनलोभात् = अल्पकालिकवित्तप्राप्त्याप्तया (The lust of
momentary wealth), कुले = वंशे (on his pedigree), लज्जायाम् = प्रशयाम् (on
the sense of same) च = पुनः (and) स्वयशसि = आत्मकीर्त्तौ (on self esteem), च
(and), माने = प्रतिष्ठायाम् च (on personal reputation), विमुखः = विरक्तः सन्
(turned back), धनवति = वित्तशालिनि (to a rich man), शरीरम् = कायम् (body),
विक्रीय = तदापच कृत्वा (sold himself), तदाज्ञम् कुर्वाण = तद्विषयम् सम्पादयन्

(ततः प्रविशति प्रतिहार्यनुगम्यमानो मलयकेतुः ।)

(executing his command), विचारातिष्ठान्त = परित्यक्तसदसद्विवेक (leave the idea of whether a thing is good or bad), परतः = अन्यायत्त (in a dependent position), अधुना = इदानीम् (now), एतत् (this), हितम् (good), अहितम् (bad), इति किम् (what), विमृशति = विचारयति (passed the stage of reflection)

हिन्दी—(प्रकट रूप में) भद्र भासुरक, कुमार नहीं चाहते कि मैं उनसे दूर रहा करूँ।
अब इसी सभामण्डप में आसन लगा दो ।

पुरुष—आर्य, यह आसन है आप बैठें ।

भागुरायण—(बैठकर) भद्र, अनुमतिपत्र चाहने वाला जो कोई भी मुझसे मिलना चाहे—
उसे यहाँ ही ले आना ।

पुरुष—आर्य की जैसी आज्ञा (ऐसा कहकर निकल गया)

भागुरायण—(अपने आप) बड़ दुःख की बात है कि अपने ऊपर इतना स्नेहशील मलय
केतु की ही हमलोग भोला देने की बात सोच रह हैं । अथवा—

नन्दर धन के लोभ से कुलीनता, छद्मता, कीर्ति, अपकीर्ति मान और अपमान के प्रश्न से
एकबार विमुख होकर, किसी धनी के हाथ अपने आप को बचकर—और वही का आदेश पालन
करते हुए, एक परतन्त्र व्यक्ति के पास भला और बुरा का विचार करने के लिए अवकाश ही
कहाँ रह जाता है ? ॥ ४ ॥

English—(Aloud) Gentle Bhasuraka, the prince does not wish
me to go far So, let my seat be placed in this very Council pavilion

Attendant—Here is the seat, let Noble sir sit down

Bhagurayan—(Sitting down) Goodman, whoever wanting pass
wishes to see me should be admitt-d by you

Attendant—As noble sir commands (Exit)

Bhagurayan—(To himself) Alas ! Even prince Malayaketu, who
is kind to me to such an extent, has to be deceived ! Oh how hard
it is ! or rather —

Why should a man who is in a dependent position, having first
turned his back on his pedigree, sense of shame, personal reputation
and self esteem and sold his body through the lust of momentary
wealth to a rich man, still consider when executing his command whe
ther a thing is good or bad, when he has passed the stage of reflection

टिप्पणी—इस दलोक में कान्यकुलिश अलङ्कार एवं शिखरिणी छन्द है ।

विमला

[ततः = तत्परचात् (after that) प्रविशति (enter), प्रतिहार्यनुगम्यमान
(followed by the warder), मलयकेतु (Malayaketu)]

नन्दकेतुः—(स्वगतम्) अहो, राक्षस प्रति विकल्पबाहुल्यादाकुला मे बुद्धिर्न निश्चयमधिगच्छति । कुत—

नस्त्या नन्दकुलानुरागद्वया नन्दान्वयालम्बिना

किं चाणन्यनिराकृतेन कृतिना मोर्येण संघास्यते ।

स्थैर्यं भक्तिगुणस्य चाधिगणयन्किं सत्यसंघो भवे-

दित्याकटकुलालचक्रमिव मे चेतश्चिरं भ्राम्यति ॥ ५ ॥

(प्रचाराम् ।) विजये क भागुरायण ।

नन्दकेतु—(To himself) अहो आरक्ष्यम् (O), राक्षसप्रति (regarding Rakshasa), विकल्पबाहुल्यात्=सन्देहाधिर्यात् (by doubts), आकुला=सङ्कुचा (perplexed), मे=मम (my), बुद्धि=मति (mind), निरक्षयम्=निर्णयम् (decision), न गच्छति=न प्राप्नोति (does not come), कुत—for —

अन्वयः—नन्दान्वयालम्बिना, चाणन्यनिराकृतेन, कृतिना, मोर्येण, नन्दकुलानुरागद्वया, नस्त्या, किम्, संघास्यते, किंवा, भक्तिगुणस्य, स्थैर्यम्, अधिगणयन्, सत्यसंघः, भवेत्, इति, आकटकुलालचक्रम्, इव, मे, चेतः, चिरम्, भ्राम्यति ॥५॥

व्याख्या—नन्दस्यान्वयः नन्दान्वयः तत्र अवलम्बते आश्रयते इति नन्दान्वयालम्बी तेन नन्दवृत्तसम्बन्धेन (connected with Nanda family), चाणन्यस्य निराकृत चाणन्यनिराकृतं तत्र चाणन्यनिराकृतेन=कौटिल्यनिराकरणेन (by having discarded Chanlaya), कृतिना=कुशलैः (with Success), मोर्येण=चन्द्रगुप्तेन (by Chandragupta), नन्दकुलानुरागद्वया=नन्दस्य कुल नन्दकुल तत्रानुरागो नन्दकुलानुरागस्तेन दत्ता तथा नन्दकुलानुरागद्वया=नन्दान्वयालम्बेन हिस्तरया (strengthened by his affection for the house of the Nanda family), नस्त्या (through devotion), किम् संघास्यते=किं सधिं करिष्यते (make an alliance), किंवा=अथवा (or), भक्तिरेव गुणो यस्य ॥ भक्तिगुण तस्य भक्तिगुणस्य (the virtue of fidelity), स्थैर्यम्=दाढ्यम् (the firmness), अधिगणयन्=विचारयन् (counting foremost), सत्यसंघः सत्या सन्ध्या यस्य स सत्यसंघः=सत्यप्रतिज्ञा (true to his promise), भवेत्=स्यात् (remain), इति आकटकुलालचक्रं यत् तदाकटकुलालचक्रम् अधिष्ठितकुम्भकारचक्रमिव=mounted on a potter's wheel, इव=यथा (like), मे=मम (my), चेतः=हृदयम् (mind) चिरम्=चिरकालम् (long time), भ्राम्यति (whirls)

[प्रचारम् (aloud)] । विजये क्व भागुरायण (where is Bhagurayana)

हिन्दी—(प्रतिहरी के साथ नन्दकेतु का प्रवेश)

नन्दकेतु—(नन हो नन) राक्षस के प्रति सन्देहाधिर्य के कारण मेरी बुद्धिको मैं पर नही पहुँच रही है । क्योंकि—

नन्दकेतु के प्रति गह्र भक्ति से प्रेरित होकर क्या वह चाणन्य का अपमान करने वाले चन्द्रगुप्त के साथ सन्धि करेगा ? यह सोचकर कि अन्ततः वह भी तो नन्द का ही एक पक्षी है । अथवा—भक्ति की स्थिरता पर टिकत हुए, मुझे जो यह अर्थो प्रविष्टा को प्रत्येक मूल्य पर

प्रतीहारी—कुमार, एसो क्लु कडआदो णिकमिदुकामाण मुद्रासपादण अणुचिद्धिदि । (कुमार, एष खलु कटकाग्निप्त्रमितुकामाना मुद्रासप्रदानमनु-
तिष्ठति) ।

मलयकेतु —विजये, मुहूर्तमसचारा भव यावदस्य पराङ्मुखस्यैव पाणिभ्या
नयने पिदधामि ।

प्रतीहारी—अ कुमारो आणवेदि । (यत्कुमार आज्ञापयति ।)

(प्रविश्य ।)

पुरुष —अज्ज, एसो क्लु खवणओ मुद्राणिमित्त अज्ज पेक्सिदुमिच्छदि ।
(आर्य, एष खलु क्षपणको मुद्रानिमित्तमार्यं प्रेक्षितुमिच्छति ।)

प्राप्त करेगा । इस प्रकार दो विरत्यों पर चिन्तन करता हुआ मेरा मन-कुम्भकार की चाक पर घूमने हुए की तरह घूम रहा है । (प्रकट रूप में) विजये ! भागुरायण कहाँ हैं ॥ ५ ॥

English—(Now enter Malayaketu followed by the warder)

Malayaketu—(To himself) Oh, my mind perplexed by a multipli-
city of alternatives does not reason certainty regarding Rakshasa for-
Will he, through his devotion strengthened by his affection for
the house of the Nanda, make an alliance with Maurya who is firm
from attachment to the family of Nanda, and who is now happy by
having discarded Chanakya ? So my mind does whirl about contin-
ually as if mounted on a potter's wheel 5

(Aloud) Vijaya where is Bhagurayana ?

टिप्पणी—इस श्लोक में परिकर तथा उत्प्रेक्षा जलकार एवं शार्दूलविकीर्णित छन्द है ।

विमला

व्याख्या—प्रतीहारी—एष (here he is), कटकात्=निर्विरात् (from the
camp), निष्कमिनुम् = निर्गन्तुम् कामो येषा, गमनोत्सुकानाम् (who desires to
leave), मुद्राणाम् सम्प्रदानम् मुद्रासम्प्रदानम् = गमनागमनादेशपत्रम् (pass),
अनुतिष्ठति engaged in the work of issuing), कुमार (Prince)

मलयकेतु—विजये (Vijaya), मुहूर्तम् = क्षणम् (for a moment), असचारा-
भव = निवृत्तगमना निष्ठ (remain motionless), यावत् = यत्कालपर्यन्तम् (so
that), अस्य = एतस्य (his), पराङ्मुखस्यैव = परावर्त्तमानस्यैव (from behind),
नयने = नेत्रे (eyes), पाणिभ्याम् = कराभ्याम् (with my hands), पिदधामि =
छादयामि (I may cover)

प्रतीहारी—यत् (as), कुमार (the prince), आज्ञापयति (commands)

[प्रविश्य = प्रवेश कृत्वा (entering)]

पुरुष—आर्य (Noble sir), एष खलु (here is), क्षपणक. (mendicant),
मुद्रानिमित्तम् for a pass), आर्यम् = भवन्तम् (to you), प्रेक्षितुम् = द्रष्टुम्
(see), इच्छति = वान्छति (wishing)

भागुरायण—प्रवेश्य ।

पुरुष—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

(प्रविश्य ।)

अपाङ्कः—धम्मसिद्धी सावगाण होदु । (धर्मसिद्धिः श्रावकाणां भवतु) ।

भागुरायण—(अवलोक्य, स्वगतम् ।) अये, राक्षसस्य मित्र जीवसिद्धिः (प्रकाशम् ।) न खनु राक्षसस्य प्रयोजनमेव द्विचिदुद्दिश्य गम्यते ।

भागुरायण—प्रवेश्यन्प्रवक्ष्यामिमांशय (Let him come in).

पुरुष—तथा (As you order), [इति निष्क्रान्तः (Exit)].

[प्रविश्यन्प्रवक्ष्य कृत्वा (entering)]

अपाङ्कः—श्रावकाणाम् श्रावकानाम् (of Believers), धर्मसिद्धिर्भवतु (may salvation to)

हिन्दी—प्रताहारी—हुनार ये डिंवर ने बाहर जाने वालों को अनुमति देव रह है ।

मन्यकनु—मन्त्रो नत्र एक झा के छिर नदक हो जाय । न रसदी पाठ पाठे से जाकर माल बन्द करना

प्रतीहारी—हुनार का कैसा भादस ।

(प्रवेश करके)

पुरुष—मान, यह हुनार का भादस के लिए श्रोतान से निकल चढ़ा है ।

भागुरायण—माने दो

पुरुष—जैसा भादस । (उठा दहकर निकल गया)

अपाङ्कः—साधकों को धर्मसिद्धि हो ।

English—Warder—Prince he here attending to the issue of pass to those who desire to go out of the camp.

Malayaketa—Vijaya, keep motionless only for a moment till I cover his eyes with my hands while he has his face turned away

Warder—As the prince commands.

(Entering)

Man—Noble sir, here is a mendicant, wishing to see you for a pass

Bhagurayan—Let him come in

Man—As your order

(Entering)

Mendicant—Salvation to the believers.

बिनला

व्याख्या—[अवलोक्य = दृष्ट्वा (Seeing), स्वगतम् = मनस्येव (to himself), अये = ओहो (Oh), राक्षसस्य (Rakshasa's), मित्रम् = मित्र (friend), जीव-

क्षपणकः—सन्तं पावं सन्तं पावं । सावगा, तर्हि गमिस्सं जर्हि रक्खसस्स पिसाचस्स वा णामं वि ण सुणीअदि । (शान्तं पापम् शान्तं पापम् । श्रावक, तत्र गमिष्यामि यत्र राक्षसस्य पिशाचस्य वा नामापि न श्रूयते) ।

भागुरायणः—बलवान्सुहृदि प्रणयकोपः । तत्किमपराद्ध राक्षसेन भदन्तस्य ।

क्षपणकः—सावगा, ण मम किं वि रक्खसेण अउरद्धं । सअं जेव्व हदासो मन्दभाओ अत्तणो कम्मेषु लज्जे । (श्रावक, न मे किमपि राक्षसेनापराद्धम् । स्वयमेव हताशो मन्दभाग्य आत्मनः कर्मसु लज्जे) ।

सिद्धि. (Jivasidhi), [प्रकाशम् (aloud)], राक्षसस्य = नन्दसचिवस्य (Rakshasa's), किञ्चित् = किमपि (some), प्रयोजनम् = कार्यम् (business), उद्दिश्य = निमित्तीकृत्यैव (to be done for), न खलु गम्यते = नैव गम्यते (are going ?).

क्षपणक—शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम् (God forbid !), श्रावक (believer), तत्र = तस्मिन् स्थाने (there), गमिष्यामि (I will go), यत्र = परिमन् स्थाने (where), राक्षसस्य (Rakshasa), वा = अथवा (or), पिशाचस्य (of the devil), नामापि (the name of), न श्रूयते (may not hear),

भागुरायण—सुहृदि = मित्रे (with your friend), बलवान् (great), प्रणय-कोपः = स्नेहेन क्रोधः (love quarrel), तत् (so), किमपराद्धम् = कोऽपराधः कृतः (what wrong has done), राक्षसेन = नन्दसचिवेन (by Rakshasa), भदन्तस्य = उद्योतिपिकस्य (mendicant's).

क्षपणक—श्रावक (believer), मे = मम (to me), न किमपि = न किञ्चिदपि (not a single too), राक्षसेन (by Rakshasa), अपराद्धम् (wrong), स्वयमेव (myself), हताशः (wretch), मन्दभाग्यः = भाग्यहीनः (unfortunate), आत्मनः कर्मसु = स्वस्य कृत्येषु (I do wrong myself), लज्जे ।

हिन्दी—भागुरायण—(देखकर अपने आप) अरे यह तो राक्षस का मित्र जोबसिद्धि है (प्रकट रूप में) भदन्त, राक्षस के किसी कार्य के उद्देश्य से तो कहीं नहीं जा रहे हो ?

क्षपणक—पाप शान्त हो, पाप शान्त हो । उपासक मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ राक्षस अथवा पिशाच का नाम भी नहीं सुनाई पड़ेगा ।

भागुरायण—मित्र पर तो प्रबल प्रणयकोप है । तो क्या भदन्त का राक्षस के द्वारा कुछ अनिष्ट हुआ है ?

क्षपणक—नहीं, उपासक । राक्षस ने मेरा कुछ भी अपराध नहीं किया है । मैं अभाग्य स्वयं ही अपना अपराध कर रहा हूँ ।

English—Bhagurayana—(Seeing him to himself) Oh, Rakshasa's friend Jivasidhi (Aloud). Are you not going with a view to do some business for Rakshasa ?

Mendicant—Begone sir, Begone sir, Believer, I will go to a place where even the name is not heard of either Rakshasa or of the devil

भागुरायणः—भदन्त, वर्धयसि मे कुतूहलम् । श्रोतुमिच्छामि ।

नलयकेतुः—(स्वगतम् ।) अहमपि श्रोतुमिच्छामि ।

क्षपणकः—सावगा, किं अणेण असुणिदब्बेण सुदेण । (श्रावक, किमनेना-श्रोतव्येन श्रुतेन) ।

भागुरायणः—यदि रहस्यं तत्तिष्ठतु ।

क्षपणकः—ण रहस्यं किट्ठु अदिणिसस । (श्रावक, न रहस्यं कित्त्वति-नृगंसम् ।)

भागुरायणः—यदि न रहस्यं तत्कथ्यताम् ।

क्षपणकः—नारगा, ण रहस्यं एद । तद्वि ण कहिस्सि । (श्रावक, न रहस्य-मेतत् । तथापि न कथयिष्यामि) ।

भागुरायणः—अहमपि मुद्रा न दास्यामि ।

क्षपणकः—(स्वगतम् ।) युक्कमिदानीमयिने कययितुम् । (प्रकाशम् ।)

Bhagurayana—Great is your love-quarrel towards your friend. What wrong has Rakshasa done to you ?

Mendicant—Believer, no wrong has been done to me by Rakshasa, but an unfortunate wretch that I am, I am myself doing wrong to me.

विमला

व्याख्या—भागुरायण—भदन्त (mendicant), मे=मम (my), कुतूहलम्=औत्सुक्यम् (curiosity), वर्धयसि (rouses), श्रोतुम्=ज्ञातुम् इच्छामि=शान्ध्यानि (I wish to hear)

नलयकेतु—[to himself=(स्वगतम्)], अहमपि (I too), श्रोतुमिच्छामि= (wish to hear it)

क्षपणक—श्रावक=सावक (Believer), किम् (what), अनेन (by this), अश्रोतव्येन (not worthy of hear), श्रुतेन (hear)

भागुरायण—यदि=स्यात् (if), रहस्यम् (secret), तत्तिष्ठतु (let it go).

क्षपणक—श्रावक (Believer), न रहस्यम् (not secret), किन्तु (but), अतिनृशंसम्=अतिनरकूरम् (extremely cruel)

भागुरायण—यदि=स्यात् (if), न रहस्यम् (not secret), तत्=तदा (then), कथ्यताम्=उच्यताम् (tell it)

क्षपणक—श्रावक (Believer), एतत्=इदम् (this), न रहस्यम् (not secret), तथापि (still), न कथयिष्यामि (I will not tell).

भागुरायण—अहमपि (I too), मुद्राम् (seal), न दास्यामि (will not give).

क्षपणक—[स्वगतम्=(to himself)], युक्कम् (it is right), इदानीं=साम्प्रतम् (now), अयिने=अवगामिनिहायिने (much pressing for it), कययितुम्=

का गई। सुणाहु सावगो। अत्थि दाव अअं मन्दभग्गो पुढम पाडलिउत्ते
अहिणिवसमाणो लक्खसेण मित्तत्तणं उवग्गे। तद्दि अवसले लक्खसेण गूढं
विसकण्णआपओअ उप्पादिअ घादिदे पन्वदीसले। (का गतिः। शृणोतु
श्रावकः। अस्ति तावदयं मन्दभाग्यः प्रथमं पाटलिपुत्रे अधिनिवसन् राक्षसेन
मित्रत्वमुपगतः। तस्मिन्नवसरे राक्षसेन गूढं विषकन्याप्रयोगमुत्पाद्य घातितः
पर्वतेश्वरः।)

अभिधातुम् (should tell), [प्रकाशम्=(aloud)], का गतिः=कः उपायः (what
help is), शृणोतु=भाकर्णय (listen), धावक. (Believer), प्रथमम्=प्राक्
(first), मन्दभाग्यः=भाग्यहीनः (an unlucky), पाटलिपुत्रे=तदावधनगरे
(in Patliputra), अधिवसन्=निवसन् (residing), राक्षसेन (with Rakshasa),
तावत् (while), अयम् (this), मित्रत्वम्=सख्यम् (friendship), उपगतः=
प्राप्तोऽस्मि (formed), तस्मिन्नवसरे=तत्काले (At that time), राक्षसेन
(Rakshasa), गूढम्=गुप्तम् यथा रणत् तथा विषकन्याप्रयोगम्=विषकन्याभिचारो-
पायम् (by the mysterious means of a poison maid), समुत्पाद्य=
कृत्वा (having done), पर्वतेश्वरः=मलयकेतुनाथः (Parvateswar), घातितः=
विनाशितः (killed).

हिन्दी—भागुरायण—भदन्त मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। अतः सुनना चाहता हूँ।

मलयकेतु—(अपने आप) मैं भी सुनना चाहता हूँ।

श्रवणक—उपासक, जो अश्रान्व है—उसे सुनने से लाभ क्या ?

भागुरायण—यदि अत्यधिक गोपनीय है तो रहने दिया जाय।

श्रवणक—धावक, रहस्य की बात तो नहीं है, किन्तु अत्यन्त कूटपूर्ण है।

भागुरायण—यदि अत्यन्त गुप्त नहीं है तो कहा जाय।

श्रवणक—धावक, यद्यपि यह गोपनीय नहीं है—फिर भी नहीं कहूँ।

भागुरायण—मैं भी अनुमतिपत्र नहीं दूँगा।

श्रवणक—(अपने आप) जो सुनना चाहता है, उसे अब बतला देना चाहिए। (प्रकट
रूप में) अब उपाय ही क्या है ? सुनो बात यह है—यह अभावा जब पाटलिपुत्र में रहता
था—राक्षस से इसने मित्रता की थी। तभी की बात है कि इस राक्षस ने एक विषकन्या के
प्रयोग से महाराज पर्वतेश्वर को मार डाला।

English—Bhagurayan—Mendicant, you rouse my curiosity. I
wish to hear

Malayaketu—(To himself) I too, want to hear.

Mendicant—Believer, why hear a matter which is not worthy of
your ear ?

Bhagurayan—If it is secret, let it go.

Mendicant—Not a secret, but very cruel.

Bhagurayan—Let it be told if not a secret.

नटयन्ते — (नवाप्यनात्मगतम् ।) कथं राक्षसेन घातितस्तातो न चापक्येन ।

नागुरानय — भदन्त, तवस्तव ।

अप्यक — तदो हगे लक्खमस्म मित्तं त्ति क्खुअ चापक्खदएण मणिक्खान पअरादो पिज्जासिदो । दाणो वि लक्खसेय अपेअलाअक्खुसनेण त्तिपि तालिस्स आनहीअदि जेण हगे जीअलोआदो पिक्कासिज्जेनि । (ततोऽहं राक्षसस्य मित्रमिति कृत्वा चापक्यहृतकेन सनिघ्नारं नगराग्निर्वामितम् । इदानीमपि राक्षसेनानेकराजकार्यकुशलेन किमपि तादृशनारभ्यते यन्नाह जीवलोकान्निघ्न्यासिजे ।)

नागुरानय — भदन्त प्रतिश्रुतराज्यार्धमददता चापक्यहृतकेनेदमकार्यं मनुष्टितं न राक्षसेनति श्रुतमस्माभिः ।

Mendicant—Sir it is not a secret, yet I will not tell it.

Bhaguratan—I too will not grant you a pass.

Mendicant—(To himself) It is right that I should tell it as he is much pressing me for it (Aloud) what help is there for me ? Listen, I am ill starved, first formed friendship with Rakshasa while residing in Pataliputra. At that time Rakshasa killed Parvateswara by the mysterious means of a poison-maid

विमला

व्याख्या — नटयन्ते — [सवाप्यम् = in tears, आत्मगतम् to himself], कथम् (what) राक्षसम् (Rakshasa), घातितं = मारितं (killed), तातो = नम पिता (my father), न चापक्येन = न कौटिल्येन (not Chanakya)

नागुरानय — भदन्त (Mendicant), तवस्तव = तदनन्तरम् (what next)

अप्यक — ततः = ततश्चात् (then), अहम् (I), राक्षसस्य मित्रम् = गन्धसचिवस्य मुहुरन् (a friend of Rakshasa), कृत्वा = विधाय (to be), चापक्यहृतकेन = दुष्टवाक्येन (vile Chanakya), मनिकारम् = स्थापनानं यथा स्वात्तया (disgracefully), नगरात् = पुरात् (from the city), निवासितं = निष्कासितं (expelled), इदानीमपि = अधुनापि (even now), राक्षसेन (by Rakshasa), अनेकानि च राजकार्यानि अनेकराजकार्याणि तेषु कुशलस्तन अनेकराजकार्यकुशलेन (skilled in doing many royal work), किमपि = किञ्चिदपि (something), तादृशनारभ्यते = पर्वतेश्वरघातनसदृशन क्रियते (has planned similar), येन = यस्मादकार्यानुष्ठानेन (by which), अहम् (I), जीवलोकान्निघ्न्यासिजे = मन्मथान् (from the world), निष्कासिष्ये = निर्वाणिष्य (shall be turned out)

नागुरानय — भदन्त (Mendicant), प्रतिश्रुतं च तद्राज्यार्धं प्रतिश्रुतराज्यार्धं = अर्द्धीकृतराज्यार्धभागम् (promised to give the half of the kingdom), अयच्छता = अददता (not intending to give), चापक्यहृतकेन = दुष्टकौटिल्येन

क्षयणकः—(कर्णौ पिधाय ।) सन्तं पात्रं । चाणक्येण विसकण्णाए णामं पि ण सुदम् । (शान्तं पापम् । चाणक्येन विषकन्याया नामापि न श्रुतम् ।)

भागुरायणः—मुद्रा दीयते । एहि कुमार आवय ।

मलयकेतुः—(उपसृत्य ।) .

(the cursed Chanakya), इदम् कार्यम् (this work), अनुष्ठितम्=कृतम् (has done), न राक्षसेन (not by Rakshasa), इति अस्माभिः श्रुतम्=आकर्णितम् (we had heard).

क्षयणक—[कर्णौ पिधाय = (stopping his ears)], शान्तं पापम् (Heaven forbid), चाणक्येन = कौटिल्येन (by Chanakya), विषकन्यायाः (of the poison maid), नामापि (even the name of), न श्रुतम् = न ज्ञातम् (did not know).

भागुरायण—मुद्रा (the pass), दीयते (I give you), एहि = आगच्छ (come), कुमारम् (the prince), आवय = कथय (tell this)

मलयकेतु—[उपसृत्य = समीपम् गम्य (approaching)].

हिन्दी—मलयकेतु—(आँसू मरकर अपने आप) तो क्या पिताजी को राक्षस ने मरवाया था, चाणक्य ने नहीं ।

भागुरायण—भदन्त, उसके बाद, उसके बाद ।

क्षयणक—तदनन्तर—क्योंकि मैं राक्षस का मित्र था, अतः चाणक्य ने अपमानित कर मुझे नगर से बाहर कर दिया । इस समय भी अनेक राजकार्यों में कुछ राक्षस के द्वारा कुछ उसी प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं जिससे मैं अब इस सत्कार से ही विदा कर दिया जाऊँगा ।

भागुरायण—भदन्त, हमने तो सुना था कि चाणक्य ने जो आधा राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी, उसने मुकर जाने के लिए ही उसने ऐसा किया था । इस सम्बन्ध में राक्षस का तो नाम भी नहीं आया ।

क्षयणक—(कर्णों पर हाथ रखते हुए) पाप शान्त हो । चाणक्य ने तो विषकन्या का नाम भी नहीं सुना था ।

भागुरायण—भदन्त, अनुमतिपत्र दिया जा रहा है । आओ, कुमार को भी यह बात सुना दो ।

मलयकेतु—(समीप आकर) :—

English—*Malayaketu*—(In tears to himself) How so father was killed by Rakshasa not by Chanakya.

Bhogurayan—Next, Mendicant, what next ?

Mendicant—Then I was expelled from the city disgracefully by cursed Chanakya, as he was thinking me to be a friend of Rakshasa. And even now, again begun by Rakshasa, who is skilled in doing many such things, has planned something similar to it by which I will be cut off from the land of living.

श्रुतं सखे श्रवणविदारणं यचः
सुहृन्मुखाद्रिपुमघिकृत्य भाषितम् ।
पितुर्वधव्यसनमिदं हि येन मे
चिरादपि द्विगुणमिवाद्य वर्धते ॥ ६ ॥

अपगतः—(स्वगतम् ।) अये. श्रुतं मलयकेतुदत्तेन । इन्त कृतार्योऽस्मि ।
(इति निष्क्रान्तः ।)

मलयकेतुः—(प्रत्यक्षरदाकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा ।) राक्षसं राक्षस, युक्तं युक्तम् ।

Bhagurajana—Mandi ant, this indeed was done by Chanakya, not intending to give the promised half of the kingdom, this is what has been heard by us.

Mendicant—(Blocking his ears) Begone sin ' Not the name even of the poison maid was heard by Chanakya

Bhagurajan—The pass is being issued Come tell this to the prince

Malayaketu—(Approaching)—

त्रिभला

अन्वयः—सखे, सुहृन्मुखात्, रिपुम्, अपिहृत्य, भाषितम्, श्रवणविदारणम्, यचः, श्रुतम्, येन, हि, इदम्, मे, पितुः, वधव्यसनम्, चिरात्, अपि, अद्य, द्विगुणम्, इव, वर्धते ॥ ६ ॥

व्याख्या—सखे=मित्र (friend), सुहृन्मुखात्=श्रवणकाननात् (from the mouth of his friend), रिपुम्=रातुम् (to the enemy), अपिहृत्य=वहिरप (with reference), भाषितम्=कथितम् (spoken), श्रवणविदारणम्=धोत्र-पीडाजनकम् (the ear splitting), यचः=वाक्यम् (words), श्रुतम्=आकणितम् (have heard), येन=येन हेतुना (by which), हि=यत्, इदम् (this), मे=मम (my), पितुः वधव्यसनम्=प्रातविनाशत्रयदुःखम् (grief for my father's murder), चिरात्=बहुकालात् (though a long time), अपि (also), अद्य=साम्प्रतम् (today), द्विगुणमिव=अधिकमिव (100 fold), इव=यथा (like), वर्धते=वृद्धते (increases) ॥ ६ ॥

अन्वयः—[स्वगतम् (to himself)], अये (Ah), श्रुतम्=आकणितम् (has heard), मलयकेतुदत्तेन=दुष्टमलयकेतुना (by the wretch Malayaketu), इन्त=हर्षोन्मयम् (Hurray), कृतार्योऽस्मि=कृतकार्योऽस्मि (I have my purpose served), [इति निष्क्रान्तः (Exit)].

मलयकेतुः—[प्रत्यक्षवद् (as on something visible), आकाशे=in the sky, लक्ष्यं बद्ध्वा=fixing his gaze)], राक्षसं राक्षस (Rakshasa-Rakshasa), युक्तम्-युक्तम् (this is fitting fitting indeed)

मित्रं ममेदमिति निर्वृतचिच्चृत्तिं
 विश्रम्भतस्त्वयि निवेशितसर्वकार्यम् ।
 तातं निपात्य सह बन्धुजनाश्रुतोयै-
 रन्वर्थतोऽपि नतु राक्षस राक्षसोऽसि ॥ ७ ॥

हिन्दी—मित्र आज मैंने तुम्हारे ही मित्र के मुख से अपने शत्रु (राक्षस) को लक्ष्य कर कहा गया कान को विदीर्ण कर देनेवाला वचन सुन लिया, जिससे आज मेरे पितृवध का दुःख अधिक दिनों के बीत जाने पर भी—साजा होकर दुगुना हो आया है ॥ ६ ॥

सुपणक—(अपने आप) अहा, दुष्ट मलयकेतु ने भी सुन लिया । खुशी है कि मैं अब कृतकार्य हो गया ।

(पैसा सोचकर निबल गया)

मलयकेतु—(प्रत्यक्ष की तरह आकाश की ओर आख लगाकर) राक्षस, राक्षस, ठीक है, ठीक है ।

English—I have heard, friend, the words ear splitting spoken with reference to the enemy from your friend's mouth words by which my grief for my father's murder, even after such a long time grows unto me as if indeed twofold today 6

Mendicant—(To himself) Ha, the cursed Malayaketu has heard ॥ Hurrah ! I have my purpose served (Exit)

Malayaketu—(Fixing his gaze in the sky as on something visible) Raksasa, Raksasa, This is fitting, very proper indeed

टिप्पणी—प्रबल विदारणम्—अवगो विदारणम्—वि + दारि + लुट् कर्तरि । इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा रुचिरा छन्द है । छन्द का लक्षण है —जमी सगी गिति रुचिरा चतुष्टयः ।

विमला

अन्वयः—इदम्, मम, मित्रम्, इति, विश्रम्भत, त्वयि, निवेशितसर्वकार्यम् निर्वृतचिच्चृत्तिम्, तातम्, बन्धुजनाश्रुतोयै, सह, निपात्य, राक्षस, नतु, अन्वर्थतः, अपि, राक्षस, असि ॥ ७ ॥

व्याख्या—इदम्=एष (this), मम=मदीयम् (my), मित्रम्=सुहृदम् (friend) इति (like this), विश्रम्भत=विश्वासात् (on faith), त्वयि=राक्षसे (on you), निवेशितसर्वकार्यम्=स्यापितनिसिल्लङ्घ्यम् (entrusted all his affairs), निर्वृतचिच्चृत्तिम्=निश्चिन्तमनोवृत्तिम् (his mind perfectly at ease), तातम्=जनक (father), बन्धुजनाश्रुतोयै=आत्मीयजनाश्रुसलिलै (along with the tears of his relations), सह=सार्द्धम् (with), निपात्य=पातयित्वा (to fall), राक्षस (Rakshasa), न तु=न केवलम् (not only), अन्वर्थतोऽपि=योगार्थादपि (in the full sense of the word), राक्षस=निशाचर (the devil), असि=भवसि (is) ॥ ७ ॥

भागुरायणः—(स्वगतम् ।) रक्षणीया राज्ञस्य प्राणा इत्यादिदेशः । भवत्येवं तावत् । (प्रशस्तम् ।) कुमार, अलमावेगेन । आसनस्थं कुमारं निचिद्विज्ञापयितुमिच्छामि ।

मलयकेतुः—(उपविश्य ।) सत्ये, किमसि वक्तुमामः ।

भागुरायणः—कुमार, इह मन्वर्थतात्त्विक्यहारिणामर्थप्रसादरिमित्रोद्भासी-

भापुरायण—[स्वगतम्=to himself], राज्ञस्य=रक्षस्य (Rakshasa's), प्राणा=आवनम् (life), रक्षणीया=पालनीया (should be saved), इति=इत्थम् (like this), आयोदस=आयव्याज्ञा (the order of noble Chanakya), भवतु एवम् तावत् (well then), [प्रशस्तम्=(Aloud)], कुमार (the prince), आवेगेन=उत्तेजने (excitation), अलम्=न्यर्थम् (do not be), आसनस्थम्=आसने समुपविष्टम् (when you are seated), कुमारम् (the prince), किञ्चि=किमपि (something), विज्ञापयितुम्=निवेदयितुम् (to say), इच्छामि=चान्छामि (I wish)

मलयकेतु—[उपविश्य (sitting)], सत्ये=मित्र (friend), किमपि=किञ्चि (something), वक्तुमामः (about to say)

हिन्दी—‘यह मेरा मित्र है’—इन विषय के माग्युन पर मारा कार्यभार संपाने वाले तथा निश्चिन्त चित्तवृत्तिवाज—नेर रिता को, बन्धु-बन्धवों के औचुनों के साथ को राजस, तुमने मार गिराया । यद्यपि मैं तुम जान और अर्थ दोनों इष्टियों से ‘राक्षस’ हो हो ॥ ७ ॥

भागुरायण—(अने आन) नर, वास्तव का आदेश है कि राजस के प्राणों को रक्षा करनी चाहिए । (प्रष्ट रूप में) कुछ स क्या जान कुमार ? कुमार आसन महा करें—मैं कुछ निवेदन करना चाहता हूँ ।

मलयकेतु—(बैठने हुए) क्या करना चाहते हो मित्र ?

English—O, Rakshasa ! literally too you have become a ‘Rakshasa’ (demon) indeed, having, along with the tears of his relations, since you caused my father to be killed, when he, with his mind perfectly at ease at the thought you were his friend, and had trustingly entrusted all his affairs to you 7.

Bhagurayan—(To himself) “Rakshasa’s life should be saved.” It is order of Noble Chanakya (Aloud) Prince, away with excitement, pray sit down. I wish to say something.

Malayaketu—(Sitting down) Friend what are you about to say ?

टिप्पणी—इस दृष्टि में सर्वोक्ति अलङ्कार एवं वस्तुनिष्ठता उद्भूत है । अलङ्कार का लक्ष्य है—सहायस्य बलादेवम् एवं स्वाहावक दत्तो । सा महीचन्द्रलभूतज्योतिषोक्तरीति अनेत्र ॥—सहितदर्प । छन्द लज्जा पदो लिला वा मुक्ता है ।

मिमला

भापुरायण—कुमार (the prince), इह=अस्मिन् लोक (in this world),

नव्यस्या न लौकिकानामिव स्वेच्छावशात् । यतस्तस्मिन्काले सर्वाधेसिद्धिं राजानमिच्छतो राक्षसस्य चन्द्रगुप्तादपि बलीयस्तया सुगृहीतनामा देवः पर्वतेश्वर एवार्थपरिपन्थो महानरातिरासीत् । तस्मिंश्च राक्षसेनदमनुष्ठितमिति नास्ति दोष एवात्रेति पर्यामि । परयतु कुमारः ।

मित्राणि शत्रुत्वमुपानयन्ती मित्रत्वमर्थस्य वशाच्च शत्रून् ।

नीतिर्नयत्यस्मृतपूर्ववृत्तं जन्मान्तरं जीवत एव पुंसः ॥ ८ ॥

खलु=निश्चये (indeed), अर्थशास्त्रेण व्यवहर्तुं शीलं येयामित्यर्थं शास्त्रव्यवहारिण-स्तेषां अर्थशास्त्रव्यवहारिणाम्=नीतितन्त्रानुसरणशीलानाम् (in the case of politicians), अर्थवशात्=प्रयोजनानुरोधात् (is dependent on interest), अरिश्च मित्रश्च उदासीनश्चारिमित्रोदासीनास्तेषु व्यवस्था व्यवस्थितिर्भवताति शेषः । (consideration of friend or foe, is neutral), लौकिकानाम्=लोकानुसरणशीलानाम् (with ordinary men), इव=यथा (like), स्वेच्छावशात्=निजमनोरथानुरोधेन (on personal inclination), न तेषु व्यवस्था (not on then), यत्=यस्मात् (as at), तस्मिन्काले (on that occasion), सर्वाधे-सिद्धिम् (Sarvarthasiddhi), राजानम् नृपतिम् इच्छत कामयमानस्य (wished to be king), राक्षसस्य (Rakshasa's), चन्द्रगुप्तादपि=मौर्यादपि (then even Chandragupta), बलीयः (stronger), सुगृहीतनामा=प्रातःस्मरणीयाभिधेयः (of blessed name), देव=नृपः (sire), पर्वतेश्वर एव (Parvateswar), अर्थपरिपन्थो=कार्यप्रतिवृद्धी (crossing his purpose), महान्=प्रबलः (great), अरातिः=घातुः (enemy), आसीत् (was), तस्मिंश्च=देवे पर्वतेश्वरे (unto him), राक्षसेन (by Rakshasa), इदम्=एतद् (this), अनुष्ठितम्=कृतम् (has done), अत्र (here), नास्ति दोषः=नापराधः (no blame), पर्यामि=प्रेक्षे (see), कुमारः (the prince), परयतु=अवलोकयतु (should just consider)—

अन्वयः—नीति, अर्थस्य, वशात्, मित्राणि, शत्रुत्वम्, च, शत्रून्, मित्रत्वम्, उपनयन्ती, जीवत, एव, पुंसः, अस्मृतपूर्ववृत्तम्, जन्मान्तरम्, नयति ॥ ८ ॥

व्याख्या—नीतिः=नयः (Policy), अर्थस्य=प्रयोजनस्य (of interest), वशात्=अनुरोधात् (from consideration), मित्राणि=मुद्गः (friends), शत्रुत्वम्=रिपुत्वम् (into foes), च=पुनः (and), शत्रून्=विपद्यान् (foes), मित्रत्वम्=बन्धुत्वम् (into friends), उपनयन्तीम्=प्रापयन्तीम् (turning), जीवतः=मृत्युमनधिगतान् (still living), एव (while), पुंसः=जनान् (to men), एवं सद्बृत्तम् पूर्ववृत्तम् अस्मृतम् पूर्ववृत्तम् यस्मिन् सद्बृत्तपूर्व-वृत्तम्=अचिन्तितपूर्ववृत्तान्तम् (past conduct is all forgotten), जन्मा-न्तरम्=अन्यजन्म (another kind of existence), नयति=प्रापयति (leads) ॥८॥

हिन्दी—मागुरायण—कुमार, इस ससार की नान ही कुछ ऐसी है—विशेषत राज नीतिशे के शत्रु, मित्र और उदासीन प्रायः स्वार्थवश ही निर्धारित हुआ करते हैं । जनसामान्य

तदत्र वस्तुनि नोपालम्भनीयो राक्षसः । आनन्दराज्यलाभादुपग्राह्यश्च ।
परतश्च परिग्रहे वा परित्यागे वा कुनारः प्रमाणम् ।

को तरह व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के कारण नहीं । उस समय की कुछ परिस्थिति ही ऐसी थी—
उस समय राक्षस महाशक्ति को राजा बनाना चाहता था, इस प्रजात्मरक्षीय महाराज
पर्वतेश्वर चन्द्रगुप्त से जो अधिक प्रबल होने के कारण—प्रयोजन के विनाशक महान शत्रु थे ।
अतः राक्षस ने उसने यदि यह अनुचित व्यवहार कर डाँ दिया तो, हमें इस उन्का कर
बड़ा अन्याय दृष्टिगोचर नहीं होता कुनार हो देखें—

यह स्वार्थ है जो राजानुज में निशों के प्रति शत्रुता का और शत्रुओं के प्रति मित्रता
का व्यवहार करा जा है । नीतिवाक्या में ही व्यक्ति, अपने अनीय को बिल्कुल मुँहाकर दक
और डाँ जीवन—एक उन्नागर का तरह व्यवहार करने लग जाता है ॥ ८ ॥

English—*Bhagurajana*—Prince, in this world, with those who practice the science of diplomacy, the classification of friend, or foe, or neutral, is dependent on interest, and not on personal inclination as with ordinary people. On that occasion Rakshasa wished Sarvathisidhi to be the king, it was sire Parvateswar of blessed name, who, on account of being more powerful than even Chandragupta, had become the great enemy crossing his purpose. Therefore Rakshasa acted against him. So there is nothing deserving great blame in this. The prince should himself just consider.—

Turning from considerations of interest friends turn into foes and foes into friends, diplomacy leads a person, while still living into other type of existence in which past relation is all forgotten. 8.

टिप्पणी—इस श्लोक के पूर्वार्ध में नीति के द्वारा मित्रों में शत्रुता और शत्रुओं में मित्रता
का प्राक्खन अनुमान्यता एवं उत्तरार्ध में ही जातिवाक्या में ही उन्नागरत्व की प्रति
स्वदन से विमान्यता है । मित्रत्व एवं शत्रुत्व के अन्योन्य विरोध से जीवित पुरुष के उन्ना-
गर के विराध से विरोधालङ्कार की समझना है । अतः सन्दर्भोदय के कारण होते कुछ लोग
मित्र शत्रुत्वालङ्कार समझते हैं । कुछ लोग—मित्राणि शत्रुत्वनिबानन्तो' पाठ के आधार
पर उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति की मन्दृष्टि समझते हैं तथा इसमें स्मृत्यन्तः छन्द है ।

विमला

तत्तन्तस्माकारमात् (So), अत्र वस्तुनि=अस्मिन् विषये (in this matter),
राक्षस (Rakshasa), नोपालम्भनीय=न विरक्तकार्यः (is not to be blamed),
आनन्दराज्यलाभात्=अनन्दराज्यप्राप्तिम् यावत् (until the acquisition of Nanda's),
उपग्राह्यः=अप्राप्य इति यावत् (has to be humoured), परतश्च (Afterward),
परिग्रहे (to retain), वा (or), परित्यागे (to dismiss), कुनारः प्रमाणम्
(free).

मलयकेतुः—एवं सखे, सम्यग्दृष्टवानसि । यतोऽमात्यवधे प्रकृतिकोभः
स्यादेव च सदिग्धो विजयः ।

(प्रविश्य ।)

पुरुषः—जेदु कुमारो । अज्ज, गुम्मट्ठाणाधिकिदो दीहरक्खो विण्णवेदि—
'एसो क्खु अम्हेहि कडआदो णिकमन्तो अगहीदमुदो सलेहो पुरिसो गहीदो ।
ता पक्खीकरेदु ण अज्जो'त्ति । (जयतु कुमार । आर्य, गुल्मस्थानाधिकृतो
दीर्घरक्षो विज्ञापयति—'एष खल्वस्माभि कटकान्निष्कामन्नगृहीतमुद्र. सलेखः
पुरुषो गृहीतः । तत्प्रत्यक्षीकरोत्वेनमार्यः' इति ।

भागुरायण—भद्र, प्रवेशय ।

पुरुषः—तह । (इति निष्क्रान्तः ।) (तथा ।)

व्याख्या—मलयकेतु—एवम् सखे=मित्र (so it is friend), सम्यग्=साधु
(rightly), दृष्टवानसि=विचारितवानसि (have viewed), यत.=यस्मात्
कारणात् (for), अमात्यवधे=अमात्यस्य वधे अमात्यवधस्तस्मिन् अमात्यवधे=
मन्त्रिहंसने (at the execution of the minister), प्रकृतीनाम् कोभ प्रकृति-
कोभ=प्रजाविराग (irritation of subjects), स्यात्=भवेत् (will be), एव च
(thus), विजय (victory), सदिग्ध स्यात्=सदेहयुक्त स्यात् (would be
jeopardised)

[प्रविश्य=प्रवेश कृत्वा=(Entering)]

पुरुष—जयतु=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तताम् (let prosper), कुमार. (the prince),
आर्य=मान्यो भवान् (noble sir), गुल्मस्थानाधिकृत=सिविरप्रधानद्वारपालक
(superintendent at the out post), दीर्घरक्ष (Dirgharakshaka),
विज्ञापयति=निवेदयति (to inform you), एष=अयम् (this), पुरुष=मानव-
(man), खलु (indeed), अस्माभिः (by us), कटकात्=सिविरात् (from the
camp), निष्कामन्=निस्सरन् (was going out), अगृहीतमुद्र=अगृहीता मुद्रा येन
सोऽगृहीतमुद्र=अप्राप्तप्रवेशनिर्गमानुमतिपत्र (without a pass), सलेख=लेखेन
सहित=पत्रिकायुक्त (with letter), पुरुष=पुन. (man), गृहीत=घत.
(was arrested), तत् (so) एनम्=पुरुषम् (this man), आर्य (noble sir),
प्रत्यक्षीकरोतु=स्वयं पश्यतु (inspect him personally)

भागुरायण—भद्र=करुणाणिन् (good man), प्रवेशय (introduce him)

पुरुष—तथा (as your command), [इति निष्क्रान्त (Exit)]

हिन्दी—अतः इस विषय में राक्षस को उलाहना नही देना चाहिए और नन्द
राज्य की प्राप्ति तक इसी रूप में रहना चाहिए और उसके बाद स्वीकार करने भयना छोड़ने
में कुमार ही प्रमाण हैं ।

मलयकेतु—ठीक ही कहते हैं मित्र, क्योंकि अमात्य राक्षस के वध के बाद प्रजाओं
में विद्रोह हो जायेगा और इस प्रकार विजय सदिग्ध हो जायेगी ।

(ततः प्रविशति पुरुषेपातुगम्यमानः सयतः सिद्धार्थकः ।)

निर्धार्यकः—(स्वगतम् ।)

आण्ताप गुणेषु दोषेषु परंनुहं कुपन्तीप ।

अन्धारिसज्जनोप पणमानो सामिमर्त्तीप ॥ ९ ॥

(आनयन्त्यै गुणेषु दोषेषु पराङ्मुखं कुर्वत्यै ।

अस्मादसज्जनस्यै प्रपन्नानः स्वामिमर्त्त्यै ॥ ६ ॥)

(प्रवेश करते)

पुरुष—जुनर को निबन हो करे दुस्मत्यन पर निरुद्ध दोररिद्ध निवेदन करता है—इनने किरिरे से बाहर बिना अनुमति के निरुद्ध हुए रह पुरुष कहा है। जो कार्य रन्ध्र त्वर रहे

भागुरायण—भद्र, मोर ठ नामों ।

पुरुष—जो कहा । । कहकर बाहर निरुद्ध गया ।

English—So in this matter Rakhasa is not to be blamed, but should be retained in service till the acquisition of Nanda's Kingdom. There after the prince will decide if to retain or to dismiss him

Makjalela—Friend, so it is, rightly have you viewed it. For at the execution of the minister there will be discontent among the subjects. Thus victory will be jeopardised.

(Entering)

Attendant—Let the prince prosper, Noble Sir, Dirghrakshaka the superintendent at the out post reports you. This man with a letter and without a pass slipping out from the camp was arrested by us. So let noble sir, see him personally

Bhagurayan—Good man introduce him.

Attendant—As you command. (Exit)

विमला

[ततः=तदाश्नान् (then), प्रविशति (enter), पुरुषेन (by a man), अनुगम्यमानः (followed), सयतः (fettered), निर्धार्यकः (Siddharthaka).]

निर्धार्यकः—[स्वगतम्=(To himself)]

अन्यथा—दोषेषु, पराङ्मुखम्, कुर्वत्यै गुणेषु, आनयन्त्यै, अस्मादसज्जनस्यै, स्वामिमर्त्त्यै, प्रपन्नानः ॥ ९ ॥

व्याख्या—दोषेषु=अनराधेषु सन्तु (fault), पराङ्मुखं कुर्वत्यै=विमुखं विदधत्यै (makes blind), गुणेषु=अदोषेषु (in the matter of virtues), आनयन्त्यै=सम्मुखं कुर्वत्यै (drawing towards), अस्मादसज्जनस्यै=अस्मादसज्जनानां जननी तस्यै अस्मादसज्जनस्यै मादसानान् मृचानान् पालनकर्तृत्वेन जननीदुस्वार्थै (mother

पुरुषः—अज, अज सो पुरिसो । (आर्य, अयं स पुरुषः)

भागुरायणः—(नाट्येनावलोक्य ।) भद्र, किमयमागन्तुक आहोस्विदिहैव कस्यचित्परिमहः ।

सिद्धार्थकः—अज, अहं वस्तु अमचरक्खसस्स सेवओ । (आर्य, अहं खलु अमात्यराक्षसस्य सेवकः ।)

भागुरायणः—भद्र, तत्किमगृहीतमुद्रः कटकात्रिष्कामसि ।

to those of your type), स्वामिभक्त्यै=प्रभुसेवायै (devotion to the employer), प्रणमाम (we bow) 9

पुरुष—आर्य =मान्यो भवान् (Noble sir), अयम् (here is), स पुरुष = असौ जन (the man)

भागुरायण—[नाट्येन=अभिनयेन (acting), अवलोक्य=दृष्ट्वा (looking at)], भद्र=कल्याणिन् (good man), अयम्=स पुरुष (he is), किम् (what), आगन्तुक=अग्न्यस्थानात् साम्प्रतमिहागत (a stranger), आहोस्विद=अथवा (or), इहैव=अत्र स्थाने (here), कश्चित् (some one), परिमह =अनुचर- (attendant)

सिद्धार्थक—आर्य =मान्यो भवान् (Noble sir), अहम् (I), खलु=निश्चयार्थे प्रयुक्त. (indeed), अमात्यराक्षसस्य (the minister Rakshasa's), सेवक = अनुचर. (an attendant)

हिन्दी—(इसके बाद पुरुष से अनुगम्यमान हाथ पावों से जकड़ा सिद्धार्थक का प्रवेश)

सिद्धार्थक—(अपने आप)—

दोषों से हमारी दृष्टि को मोड़नेवाली, गुणों को सम्मुख करने वाली, हमारे जैसों को मैं की तरह स्वामिभक्ति की हम प्रणाम करते हैं ॥ ९ ॥

पुरुष—आर्य, यह रहा वह पुरुष ।

भागुरायण—(अभिनय के साथ देखकर) भद्र यह कीद परदेशी है भयवा वहाँ के किसी का सेवक है ?

सिद्धार्थक—आर्य, मैं अमात्य राक्षस का सेवक हूँ ।

English—(Now enter Siddharthaka fettered and followed by the attendant)

Siddharthaka—(To himself) We bow to loyalty, which is a mother to those of our type drawing us toward her virtues and makes us blind to faults 9

Attendant—Noble Sir, here is the man

Bhagurayan—(Acting and looking at him) Is he a stranger or servant of some one here ?

Siddharthaka—Noble Sir I am a servant of the minister Rakshasa.

रिमला

व्याख्या—भागुरायण—भद्र (good man), तत् (then), किम् (why),

सिद्धार्थकः—अज्ज, कज्जगोरवेण तुवराविदोम्हि । (आर्य, कार्यगौरवेण त्वरायितोऽस्मि ।)

भागुरायणः—कीदृशं तत्कार्यगौरवं यद्वाजशासनमुल्लङ्घयति ।

मलयकेतुः—सखे भागुरायण, लेखमपनय ।

भागुरायणः—(सिद्धार्थकहस्ताद् गृहीत्वा पत्रमुद्रां दृष्ट्वा ।) कुमार, अयं लेखः । राक्षसनामाङ्कितेयं मुद्रा ।

मलयकेतुः—मुद्रां परिपालयन्नुद्घाट्य दर्शय ।

(भागुरायणस्तथा कृत्वा दर्शयति ।)

मलयकेतुः—(वाचयति ।) स्वस्ति यथास्थानं कुतोऽपि कोऽपि कनपि पुरुषविशेषमवगमयति । अस्मत्प्रतिपक्षं निराकृत्य दर्शिता कापि सत्यता

अगृहीतमुद्रा = अप्राप्तगमनिर्गमानुमतिः (without a pass), कटकादु = संचिरात् (from the camp), निष्कानसि = निर्गच्छसि (do you leave).

सिद्धार्थकः—आर्य (Sir), कार्यस्य गौरवं कार्यगौरवं तेन कार्यगौरवेण = प्रयोजन-प्राप्तयेन (by the gravity of my mission), त्वरायितोऽस्मि = शौर्ययुक्तोऽस्मि (I am being hastened).

भागुरायण—तत् = तद्वदुक्तम् (that), कार्यगौरवम् = प्रयोजनप्राप्तयेन (important business), कीदृशम् = किम्भूतम् (what kind of), येन = कार्यगौरवेण (by which), राजशासनम् = नृपादेशम् (royal order), उल्लङ्घयसि = अतिक्रानसि (transgress).

मलयकेतु—सखे भागुरायण (friend Bhagurayan), लेखम् = पत्रम् (letter), अपनय = गृह्यताम् (take),

भागुरायण—[सिद्धार्थकहस्तात् (from Sidharthaka's hand , पत्रम् (letter), गृहीत्वा (taking), मुद्राम् (seal), दृष्ट्वा (seeing)], कुमार (the prince), अयम् लेखः (here is the letter), राक्षसनामाङ्कितः (bears the name of Rakshasa), इयम् (this), मुद्रा (the seal).

मलयकेतु—मुद्राम् (the seal), परिपालयन् = मरचन् (preserving), उद्घाट्य (open the letter), दर्शय (show it),

भागुरायण—[Bhagurayan, तथा कृत्वा (does so), दर्शयति = show him]].

मलयकेतु—[वाचयति (Reads)], स्वस्ति = कल्याणार्थं नमस्कृत्यम् (May good result , स्थानननतिक्रम्य यथास्थानम् (in the right place), कुतोऽपि = कस्माद-पि स्थानात् (from somewhere), कोऽपि कश्चिदपि जनः (some body), कनपि पुरुषविशेषं जनम् (some important person), अवगमयति = विज्ञापयति (in- forms), अस्माकम् विरोधोऽस्मद्विपक्षस्तस्माद्विपक्षम् = जम् विद्वेषिणम् (our enemy), निराकृत्य = निष्काशय (in dismissing , सत्यवादिना = तथ्यवचनेन (by your truthfulness), कापि = लोकोचरः (an indescribable), सत्यता = सत्यपालन-

सत्यवादिना । साप्रतमेतेषामपि प्रथममुपन्यस्तसधीनामस्मत्सुहृदा पूर्वप्रतिज्ञा-
तसधिपरिपणनप्रोत्साहनेन सत्यसधः प्रीतिमुत्पादयितुमर्हति । एतेऽप्येवमनु-
गृहीता सन्त स्वाश्रयविनाशेनोपकारिणमाश्रयिष्यन्ति । अविस्मृतमेतत्सत्यवत्
स्मारयाम । एतेषा मध्ये केचिदरेः कोपदण्डाभ्यामथिनः केचिद्विषयेणेति ।
अलकारत्रय च सत्यवता यदनुप्रेषितं तदुपगतम् । मयापि लेखस्याशून्यायं
किंचिदनुप्रेषितं तदुपगमनीयम् । वाचिकं चाप्रतमादस्माच्छ्रोतव्यमिति ।

कर्तृता (truthfulness), इक्षिता = प्रकटिता (has shown), साम्प्रतम् = इदानीम्
(now), प्रथमम् = प्राक् (before), उप-न्यस्त = कृत सन्धिर्भवता सह सम्मेलनम्
यैस्ते उपन्यस्तसन्धिपक्षेपामुपन्यस्तसन्धीनाम् भवता सह कृतसम्मेलनानाम् (with
whom an alliance has already been proposed), एतेषाम् (to these),
अस्म सुहृदाम् = अस्मन्मित्राणाम् (our friends), पूर्वम् प्रतिज्ञात पूर्वप्रतिज्ञात
स चासौसन्धि पूर्वप्रतिज्ञातसन्धिस्तस्य परिपण प्रतिदानभूतम् यद् वस्तु तस्य प्रति-
पादनम् तेन प्रोत्साहनम् तेन पूर्वप्रतिज्ञातसन्धिपरिपणवस्तुप्रतिपादनप्रोत्साहनेन =
प्राक् प्रतिधुतसम्मेलनप्रतिदानभूतवस्तुप्रदानाभासनन (with the gift of the
already stipulated exchange for the alliance), सत्या सन्धा यस्य स स य-
सन्ध = सत्यप्रतिज्ञा (true to your promise), प्राप्तिम् = हर्षम् (pleasure),
उत्पादयितुम् = जनयितुम् (to give), अर्हति = योग्यो भवति (will be pleased),
एते = कौतूहलप्रभृतय (these), एवम् = युक्तयुक्त्या (like this), अनुगृहीता =
अनुकम्पिता सन्त (favoured), स्वाश्रयविनाशेन = निजावलम्बविघातेन (after
destroying their present master), उपकारिणम् = भवन्तम् (benefactor),
आश्रयिष्यन्ति = आश्रयिष्यन्ति (will come over), अविस्मृतम् (has not
been forgotten), एतत्सत्यवत् (this truthful), स्मारयाम = स्मृतिपथ
प्रापयामो वयम् (we remind) एतेषाम् मध्ये (of these), केचिदरे = कियन्त
शत्रो (some of the enemies), कोपदण्डिभ्यामथिनः = धनसमूहदंष्टिभ्याम् धनवन्त
(desire the treasure and elephants), केचिद्विषयेण (and others his
territory), अलङ्कारत्रयम् = त्रीणि मूषणानि (the three ornaments), सत्यवता
सत्यवादिना (by the truthful one), यदनुप्रेषितम् = मदनिके प्रहितम् (that
were sent), तदुपगतम् = प्राप्तम् (were recieved), मयापि (I also),
लेखस्य = पत्रिकाया (to the letter), अशून्यार्थम् = अतिरिक्तार्थम् (as in
accompaniment), किंचिदनुप्रेषितम् = किमपि वस्तु अनुप्रहितम् (have sent
something) तदुपगमनीयम् = तत् प्रापणीयम् (should be accepted),
वाचिकम् च = मन्त्रकमन्त्रैश्च वचनम् (the verbal message), अस्मात् = सिद्धार्थकात्
(from this), आप्ततमात् = अतिविश्वासभाजनात् (most trustworthy
person), श्रोतव्यम् = आकर्णितव्यम् (should be heard)

हिन्दी—भागुरायण—अब, तो फिर, बिना अन्यविषय प्राप्त किए ही शिबिर से क्यों
निरल रहे थे ?

सिद्धार्थक—आह, कार्य की गुरुता के कारण ही मने शीघ्रता की है।

भागुरायण—कार्य की वह कैसी गुरुता है जिसने राजा की आज्ञा की भी उल्लंघना करवा दी।

मलयकेतु—मित्र भागुरायण ! यह पत्र लेलो।

भागुरायण—(सिद्धार्थक के हाथ से पत्र लेकर तथा तब पर लगी मुहर को देखकर)
कुमार, यह लेख है, इन पर लगी मुहर राक्षस के नाम से अंकित है।

मलयकेतु—मुहर बचाने हुए पत्र खोलकर दिखलाओ।

(भागुरायण बैसा करके दिखलाता है)

मलयकेतु— पढ़ता हूँ : “कल्याण हो, किमो स्थान से कोई भी किसी भी पुरुषविशेष को पयास्थान मूचिन कर रहा है—इनारे प्रनिश्री को पदच्युत करने हुए आपने विलक्षण सत्पना प्रनामिन कर दी है अब पूर्वप्रस्तावित सन्धि वाले इनारे निश्री की, पूर्व प्रतिज्ञात सन्धि की शर्तों के प्रोत्साहन से मत्प्रनिश्रि आन प्रेन बड़ावे। इस प्रकार शर्त की पूर्ति से अनुगृहीत होने हुए ये इनारे निन करने वर्तमान आश्रय के विनष्ट हो जाने पर, उपकार करने वाले आपरा आश्रय ग्रहण करेंगे। अब मत्प्रशाही हूँ—आपको यह कुछ याद होगा हो, फिर भी इन स्मरा दिला रहे हैं। इनमें मैं कुछ शत्रु के लोभ और हाथियों के द्यूचुह हैं और कुछ उनका राज्य चाहेंगे। आपने जो तीन अलक्षर भेजे थे—मुझे मिल चुके हैं। इस पत्र के साथ मैं भी कुछ उपहारस्वरूप भेज रहा हूँ, जिसे आप स्वीकृत कर लेंगे। कुछ नैतिक रुदेष्ट मा हूँ जिसे आप मेरे इस विश्वन् पुरुष ने चुन लेंगे”।

English—*Bhagurayan*—Good man, why then do you go out of the camp without pass ?

Siddharthaka—Noble Sir, I am being hastened by the gravity of my work.

Bhagurayan—What sort of gravity of work is that makes you transgress the royal order ?

Malayaketu—Friend *Bhagurayan* take the letter from him.

Bhagurayan—(Taking the letter from *Siddharthaka*'s hand and noticing the seal) Prince, here is the letter. The seal is marked by the name of *Rakshasa*.

Malayaketu—Show me having opened this letter preserving the seal.

Bhagurayan—(Does accordingly and shows the letter to the prince).

Malayaketu—(Reads) “May good result. After compliments some body from somewhere informs a certain personage in the proper place. Great integrity is shown by your indescribable truthfulness by dismissing our enemy. Now the truthfultone will be pleased to give pleasure to these our friends by encouragement regarding the

मलयकेतुः—भागुरायण, कीदृशो लेखः ।

भागुरायणः—भद्र सिद्धार्थक, कस्याय लेखः ।

सिद्धार्थकः—अज्ञ, न जानामि । (आर्य, न जानामि ।)

भागुरायण—हे धूत, लेखो नीयते न ज्ञायते कस्यायमिति । सर्वं ताव-
त्तिष्ठतु । वाचिकं त्वत्तं केन श्रोतव्यम् ।

सिद्धार्थकः—(भयं नाटयन् ।) तुम्हेहि—(युष्माभिः—)

भागुरायणः—किमस्माभिः ।

सिद्धार्थकः—मिस्सेहि गिहीदो न जानामि किं भणामि त्ति । (मित्रैर्गृहीतो
न जानामि किं भणामीति ।)

already promised price for the peace and also to whom peace was pre-
viously suggested. These on their part, when thus favoured, will come
over to their benefactor by the ruin of their present master. Though
not forgotten by the truthful you, we remind that among these, some
are tempted by the treasure and elephants of the enemy and some
desire his territory. The three ornaments that were sent by the
truthful one were received. I have also sent something as in accom-
paniment to the letter is forwarded, II deserves to be accepted. The
verbal message should be heard from this most trusted person."

विमला

व्याख्या—मलयकेतु—भागुरायण (Bhagurayan), कीदृश = किम्विषयक
(what sort), लेख = पत्रम् (letter),

भागुरायण—भद्र=शुभ्याणिन् (Good man), सिद्धार्थक (Siddharthaka),
कस्य = पुक्त्वस्य (whose), न ज्ञायते = पत्रम् (is the letter)

सिद्धार्थक—आर्य (Noble sir), न जानामि = नावगच्छामि (I do not know)

भागुरायण—हे धूर्त = हे शठ (O knave), लेखो नीयते = पत्र स्थानान्तरं प्राप्यते
(carry the letter), न ज्ञायते = नावगम्यते (and do not know), कस्याय-
मिति = केन लिखितमिति (whose II is), सर्वम् = उत्तरप्रत्युत्तरवचनम् (all),
तावत्तिष्ठतु = मास्तु (let other things), त्वत्तं = त्वत्तं (your), वाचिकम् =
मौखिकम् (oral message), केन (by whom), श्रोतव्यम् = श्रावणितव्यम्
(is to be heard)

सिद्धार्थकः—[भयं नाटयन् = साध्वस अभिनयन् (showing fear)], युष्माभिः
(By you)

भागुरायण—किमस्माभिः (What by us)

सिद्धार्थक—मित्रैः = पूज्यैः (By noble sir), गृहीत = संयत (arrested),
न जानामि (I do not know), किं भणामि (what I should say),

भागुरायणः—(सरोपम् ।) एष जानाति । भासुरक, बहिर्निर्वा तावत्ता-
ड्यतां यावत्कथयति ।

दुरुपः—जंअमञ्चो आपवेदि ति । (तेन सह निष्क्रम्य ।) (यदमात्य
आज्ञापयतीति ।)

भागुरायण—[सरोपम्=सकोपम् (angrily)], एष जानाति=अयम् वेत्ति (shall
know presently) भासुरक (Bhasuraka), बहिर्निर्वा=बाह्यप्रदेश प्रापय्य
(taking him outside), तावत्ताड्यतान्=तावत्कालपर्यन्तमाहम्यताम् (beat him
till), यावत्कथयति=यावत्कालपर्यन्त वृत्तं निवेदितम् भवेत् (till he confesses)

दुरुप—यदमात्य=सचिव (as the minister), आज्ञापयति=आदिशति
(commands), निष्क्रान्तः (Exit).

हिन्दी—मलयकेतु—भागुरायण, यह कैसा लेख है ?

भागुरायण—नर सिद्धार्थक यह किन्ता लेख है ?

सिद्धार्थक—अर्थ, मैं नहीं जानता ।

भागुरायण—वृत्त, पर छिप फिरना है, पर पता नहीं जानना कि यह किन्ता है ? छोड़ो,
मौनिक मन्देश किसे सुनाना था ?

सिद्धार्थक—मय का अभिनय करने हुए) भापको ।

भागुरायण—हने सुनाना था ?

सिद्धार्थक—ओनान् के द्वारा मैं पकड़ा गया हूँ—क्या कह रहा हूँ—यह नहीं जानता हूँ !

भागुरायण—(कोय के माय) अभी जानोये । भासुरक, इसे बाहर ले जाकर तब तक
पीटो जबतक सब कुछ बण्डा न दे ।

दुरुप—जनात्य की जैसी आज्ञा । (उसके माय बाहर निकल कर)

English—*Malayaketu*—What sort of a letter is this ?

Bhagurayan—Gentle Siddharthaka, whose letter is this ?

Siddharthaka—Sir, I do not know.

Bhagurayan—You know, the letter is being carried, but do not
know whose it is ? Let it go, by whom is to be heard your oral
message ?

Siddharthaka—(acting fright) By you.

Bhagurayan—By us what ?

Siddharthaka—I am arrested by noble sir, I do not know, what
I should say ?

Bhagurayan—(Angry) you will know it soon. Bhasuraka, take
him out and beat him till he confesses.

Man—As the minister commands (going out with him).

(पुनः प्रविश्य ।) अत्र, इजं मुद्रालङ्घिता पेडिका तस्मिन् कन्दादा निरदिता । (आत्र, इय मुद्रालङ्घिता पेडिका तस्य कन्दातो निपतिता ।)

भागुरणः—(विलोक्य ।) कुमार, इयमपि राक्षसमुद्राङ्कितेय ।

नटनेतु—मत्त्रे, अत्र नेत्राशून्यार्थो भविष्यति । इनामपि मुद्रा परिपालयनुद्वाद्य दर्शय ।

(भागुरायणस्तथा कृत्वा दर्शयति ।)

नटनेतुः—(विलोक्य ।) अत्र, उद्दिष्टाभरण मया स्वरासीराज्यतायै राक्षसाय प्रेषितम् । व्यक्त चन्द्रगुप्तस्य लेखः ।

भागुराणः—कुमार, एष निर्णयत एव मयायः । भद्र, पुनरपि ताड्यताम् ।

नटनेतुः—तथा । (इति निष्क्रम्य सिद्धार्थकेन सह पुनः प्रविश्य ।) एतो

विमला

[पुनः प्रविश्य (coming back again)], आर्यः (Noble sir), इयम् = एषा (this), मुद्रालङ्घिता = मुद्राङ्कितः (marked with seal), पेडिका = मञ्जूषा (box), तस्य = तादृशमानदुष्टस्य (his), कचन = मुत्रनृग्रह (from armpit), निरदिता = मरिचिता (dropped)

व्याख्या—भागुराणः—[विलोक्य = अवलोक्य (observing)], कुमार (The prince), इयमपि = एषाऽपि (this too), राक्षसमुद्राङ्कितेय = राक्षसाङ्कितमुद्राङ्कितेय (stamped with Rakshasa's seal).

नटनेतु—मत्त्रे = मित्र (friend), अयम् लेखः = एतत् पत्रम् (this letter), अशून्यार्थः = अरिचर्य (the present accompanying), भविष्यति (must be), इनामपि = एतामपि (this too), मुद्राम् = राक्षसाङ्कितमुद्राम् (Rakshasa's seal), परिपालयन् = यथा व्यावृत्ता न स्यात्तथा मरिचन् (preserving), उद्वाद्य = उन्मुष्य (open), दर्शय = अवलोक्य (show it),

[भागुरायण (Bhagurayana) तथा कृत्वा = does accordingly), दर्शयति (shows)].

नटनेतु—[विलोक्य = अवलोक्य (observing)], अयम् = एतामलङ्घितायै मया प्रेषितम् (ah !, उद्दिष्टम् (this), अनार्यम् = अनूपनम् (ornaments), यन्मया (which I), स्वरासीराज्य = निजराज्यम् (from my body), अवलोक्य = उद्वाद्य (was taken off), राक्षसाय (for Rakshasa), प्रेषितम् = प्रहितम् (has sent), व्यक्तम् = स्पष्टम् (clearly), चन्द्रगुप्तस्य = सिद्धार्थस्य (Chandragupta's), एतम् = पत्रम् (letter is)

भागुराणः—कुमारः (The prince), एष = अयम् (this), निर्णयत एव = निर्णयत एव (is being confirmed), सशयः (doubt), भद्र = कल्याणम् (good man), पुनरपि (again), ताडयताम् (beat him)

नटनेतु—तथा (as your order), [इति निष्क्रम्य = उद्दिष्टम् (come out), सिद्धार्थकेन सह (with Siddharthaka), पुनः = (again), प्रविश्य (entering), एष = अयम्

कुतु ताडिअमाणो कुमारस्स एव णिवेदेमि त्ति भणत्ति । (एष खलु ताड्यमानः कुमारस्यैव निवेदयामीति भणति ।)

मलयकेतुः—तथा भवतु ।

मित्रार्थकः—(पादयोनिपत्य ।) अभयण मे प्रसाद करेदु अत्रो । (अभयेन मे प्रसाद करोत्याह ।)

(this) ताड्यमानः=ह्वयमान (being punished), कुमारस्यैव (to the prince alone) निवेदयामि (I will say), भणति=कथयति (speaks),

हिन्दी—कि उनके साथ लैटकर) आये, सुदृष्टि यह भी नोट करते हुए हमें बताने से है ।

भागुरायण—देखकर) कुमार हम पर जो राक्षस का मुहर लगा है ।

मलयकेतु—यह का तात्पर्य अब स्पष्ट हो जायेगा । मुहर को रखा करते हुए इसे खाल कर दिलाओ ।

(वस्तु प्रकार मानवाना से खाल कर दिखाते हुए)

मलयकेतु—(देखकर) ओह, यह तो वही मान्यता है, बिन नये करना देह से उगार कर राक्षस को भेजा था । नो मित्रप है कि यह पत्र चन्द्रगुप्त को लिखा है ।

भागुरायण—कुमार, हम मलय का नो समी निर्णय हो जाना है । नद और नो पीना ।

पुरुष—जो भाड़ा (बाकर निर सिद्धार्थ के साथ लैटकर) मार खाने पर कहता है कि कुमार को हो बतला देना ।

English—(re-entering with him) Sir, this box marked with a seal has dropped from his arm-pit, as he was being beaten.

Bhagurayana—(Observing) Prince, this too is stamped with Rakshasa's seal

Malayaketu—Friend, this must be the present accompanying the letter Open it also preserving the seal and show it.

(Does according and shows it)

Malayaketu—(Seeing it) Ah, these are the jewellerys which I took off from my own body and sent to Rakshasa. Clearly the letter is Chandragupta's.

Bhagurayan—Prince, doubt is being confirmed, gentleman let him be punished again.

Man—So be it (going out and coming back with him) Being beaten he says—he will confess the all to the prince alone.

रिमला

ध्याख्या—मलयकेतु—तथा भवतु (let him do so).

सिद्धार्थक—[पादयोनिपत्य=(falling on his feet)], नार्थ=श्रीमन् (Noble sir), अभयेन=अभयदानेन (by granting amnesty), मे=मम (me), प्रसाद करोतु (may favour)

मलयकेतु—भद्र, अभयमेव परवतो जनस्य । निवेद्यता यथाप्रस्थितम् ।

सिद्धार्थक—गिसामेदु कुमारो । अहं क्पु अमच्चरक्खसेण इमं लेहं देइअ चन्द्रवत्तसआस पेसिदो । (निशामयतु कुमार । अहं खन्धमात्यराक्षसेनेम लेहं दत्त्वा चन्द्रगुप्तसकाशं प्रेषितम् ।)

मलयकेतु—वाचिकमिदानीं श्रोतुमिच्छामि ।

सिद्धार्थक—कुमाल, आदिट्ठोम्हि अमच्चेण जहा एदे महं वअस्सा पञ्च

मलयकेतु—भद्र=इक्याणिन् (Gentleman) परवत जनस्य=अन्याधीनलोकस्य (A dependent person), अभयमेव नास्ति साप्पस किञ्चित् (is always exempt from punishment), यथावस्थितम्=वायार्थेन सर्ववृत्तम् (every thing as it happens), निवेद्यताम्=अभिधीयताम् (tell),

सिद्धार्थक—कुमार (The prince), निशामयतु=शृणुतु (let listen), अहम् (I) ललु वावयालङ्कारे प्रयुक्तं अमात्यराक्षसेन=राक्षसनाम्ना मन्त्रिणा (the minister Rakshasa), इमम् लेखम्=पत्रम् (this letter), दत्त्वा=समर्प्य (was given), चन्द्रगुप्तसकाशम्=मौर्यसन्निधिम् (to verbal message), श्रोतुम्=आकण्ठितुम् (to hear), इच्छामि=वाञ्छामि (I wish)

हिन्दी—मलयकेतु—बैसा ही हो ।

सिद्धार्थक—(चरणों में गिरकर) नार्थ, पहले मुझ अभयदान दे दें ।

मलयकेतु—भद्र, निवश व्यक्ति को सदैव अभयदान ही दिया जाता है । ठीक ठीक बनहाओ ।

सिद्धार्थक—शुनिये कुमार, अमात्य राक्षस ने यह पत्र देकर मुझ चन्द्रगुप्त के यहाँ भेजा था ।

मलयकेतु—मम मे मीक्षिक सदेशं श्रुतना चाहता हू ।

English—Malayaketu—Be as so

Siddharthaka—(falling at his feet) Noble Sir, May favour me by granting me impunity

Malayaketu—Gentleman ' a dependent has always impunity Tell every thing as it happened

Siddharthaka—Let the prince listen I was really given this letter by the minister Rakshasa and sent to Chandragupta

Malayaketu—Now, I want to hear the verbal message

टिप्पणी—(१) मयस्य अभाव अमयम् तन अमयेन—अव्ययीभाव । स श्रव्यते अतो इति मशय —सम् + शीङ् + कर्म में अच् ।

विमला

व्याख्या—सिद्धार्थक—कुमार (the prince), अमात्येन=मन्त्रिणा (by the minister), आदिष्टोऽस्मि=सन्देशवचने अभिहितोऽस्मि (I was instructed), यथा=यत् (that) एते=इमे (these), मम वयस्या=मम मित्राणि (my friends),

राजाणो तु ए मङ्ग समुष्पण्णसिजेता । ते जप्ता कुलूटादियो चित्तमम्भो मलयण-
अराण्यो सित्रणादो कर्मादेसपाहो पुक्कराक्खो सिन्धुराजो सिन्धुसेणो
पारसीओ मेघणादो त्ति । एतेसु पुट्टमणिहीदा तिण्णि राजाणो मलयच्छेदुणो
विमज्जं इन्द्रान्ति अउरे हत्थिवल कोसअ । ताज्ज चाणक्य निराकुरिअ महाभाएण
मङ्ग पीदो समुष्पादिदा तहा एवाण ण पुट्टममणिदो अत्थो सम्पादइद्वो त्ति
एत्तियो बाआसदेसो । (कुमार, आदिष्टोऽस्म्यमात्रेण चर्येत मन वरत्याः पञ्च
राजानस्त्वया सह समुत्पन्नस्नेहा । ते यथा कुलूताधिपश्चित्रवर्मा, मलयनगरा-
धिप सिहनाद, काश्मीरदेशनाथ पुष्कराक्षः, सिन्धुराजः सिन्धुसेनः, पारसीको
मेघनाद इति । एतेषु प्रथमगृहीतास्त्रयो राजानो मलयच्छेतोर्विषयमिन्द्रान्त्यपरां
हस्तिबल कोष च । नद्यथा चाणक्य निराकृत्य महाभागेन मन प्रीतिः
समुत्पादिता तद्येतेषामपि प्रथममणितोऽर्थः संपादयितव्य इत्येतावान्
वाक्सदेशः ।)

पञ्चराजान् = पञ्चसङ्घका. नृपतयः (five princes), त्वया सह = अवता सार्द्धम् (with
you), समुत्पन्नस्नेहा = सञ्जातसहृदयः (feel affection for you), ते यथा (they
are), कुलूताधिपश्चित्रवर्मा = Chitraverman, the Chief of the Kulutacountry),
मलयनगराधिप सिहनाद = Sinhanada, lord of the city of Malaya),
काश्मीरदेशनाथः पुष्कराक्षः (Pushkaraksha, king of Kashmir), सिन्धुराजः
सिन्धुसेनः (Sindhusena, sovereign of Sindh, पारसीको मेघनाद इति (and
Meghnada of Persia), एतेषु = परिगणितेषु (of these), प्रथमगृहीतः = प्राक्
मणितः (the first mentioned), त्रयो राजानः = नृपतयः (three kings),
मलयच्छेतोर्विषयम् = पर्वतक्षुभृतस्य राज्यम् (the dominion of Malayaketu),
इच्छन्ति = वाञ्छन्ति (desire), अपरौ = अन्यौ द्वौ (other two), हस्तिबलम् =
गजसैन्यम् (force of elephants), च = पुन (and), कोषम् = द्रव्यगृहम्
(treasure), तत् = तस्मात् (so), यथावदेन प्रकारेण (just as), चाणक्यम् =
कौटिल्यम् (Chanakya), निराकृत्य = निष्कास्य (by discharging), महाभागेन =
महाराजेन (the magnanimous one), मन प्रीतिः = प्रणयः (my pleasure),
समुत्पादिता (has been caused), तथा (so), एतेषामपि = राजान् (these
also the object named above), प्रथममणितोऽर्थः = प्रागुक्त कार्यम् (the first
mentioned work), सम्पादयितव्यः = संचयितव्य (should granting them),
इत्येतावान् वाक्सदेशः (this much is oral message)

हिन्दी—मित्रार्थक—कुमार, बनाए राक्षस ने नेर द्वारा सन्देश नेवा है कि नेरे वे
पाँच राजा तुम्हारे साथ स्नेह करने बाढ़ हैं। इनके नाम हैं—कुलूत का अधिपति चित्रवर्मा,
मलय का सिहनाद, काश्मीर का पुष्कराक्ष, सिन्धु देश का नरपति सिन्धुसेन और पारस
देश का राजा मेघनाद। इनमें प्रथम गिनाये गये तीन राजा मलयक्षेत्र का राज्य चाहते हैं।
ऐसे दो मलयक्षेत्र के हस्तिबल एवं कोष चाहते हैं। वे जिस प्रकार चाणक्य को पदचुव

मलयकेतु — (स्वगतम् ।) कथं चित्रवर्मादयोऽपि मह्यमभिद्रुह्यन्ति ।
अथवाऽत एव राक्षसे निरतिशया प्रीतिः । (प्रकाशम् ।) विजये, राक्षस
द्रष्टुमिच्छामि ।

प्रतीहारी — न कुमारो आणवेदिति । (निष्क्रान्ता ।)

(ततः प्रविशत्यासनस्थः स्वभवनगतः पुरुषेण सह सचिन्तो राक्षसः ।)

राक्षस — (आत्मगतम् ।) पूर्णमस्मद्वलं चन्द्रगुप्तवलेरिति यत्सत्यं न मे
मनसः परिशुद्धिरस्ति । कुत —

एतद् महाभाग ने मेरी प्रीति बड़ा है—उसी प्रकार इनका भी वही गया प्रयोजन पूरा करना चाहिये—वस मात्र इतना ही है मौखिक संदेश ।

English—*Sidharthaka*—Prince, I was instructed by the minister Rakshasa—"My five friends, these princes have friendliness grown towards you. They are Chitravarma, the chief of the Kuluta country, Sinhanada, lord of the city of Malaya, Puskaraksha, King of Kashmir, Sindhusena, sovereign of Sindh and Meghnada of Persia. Of these the first stated three kings wish the dominion of Malayaketu and the last two his force of elephants and treasure. So just the magnanimous one delighted me by discarding Chanakya, in the same way the object of these also named above should be pleased by granting them the aforesaid things, this much is the verbal message.

विमला

व्याख्या—मलयकेतु — [स्वगतम्=आत्मगतम् (To himself)] कथम्=कैत प्रकारेण (how so), चित्रवर्मादयोऽपि (Chitravarma and others), मामभिद्रुह्यन्ति=मिर्हासन्ति (conspire against me), अथवा=किंवा (or), अतएव (for this reason), राक्षस (for Rakshasa), निरतिशया=निर्नास्यतिशयो यस्यासा निरतिशया=अधिका (excessive), प्रीतिः=प्रणय (love), [प्रकाशम्=(Aloud)], विजये (Vijaya), अमरयराक्षसम् (to the minister Rakshasa), द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (to see), इच्छामि=चाच्छामि (wish)

प्रतीहारी—यत् (As) कुमार (the prince), आज्ञापयति=आदिशति (commands), [ततः=(then) प्रविशति=enters, आसनस्थः=sat'd स्वभवनगतः=निगृह्यवर्त्ती (in his mansion), पुरुषेण सह (with an attendant) सचिन्तः=संश्लेषः (full of anxious thoughts)]

राक्षस — [आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)] अस्मद्वलम् (our army), चन्द्रगुप्तवले=मौर्यसैन्यैः (with Chandragupta's warriors), पूर्णम् (is filled), यत्सत्यम्=वास्तव्यम् (since really), मे=मम (my), मनसः=मनस्य (mind), शुद्धिः=असदिग्व्यवस्थ नास्ति (is not at ease), कुत=for —

साध्ये निश्चितमन्ययेन घटितं विघ्नत्सपक्षे स्थितिं
व्यावृत्तं च विपक्षनो भवति यत्तत्साधनं सिद्धये ।
यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमुभयोः पक्षे विरुद्धं च यत्
तस्याङ्गीकरणेन वादिन इव स्यात्त्वामिनो निग्रहः ॥ १० ॥

हिन्दो—मलयकेतु—(अपने मन) त्वा विपक्षनां प्रकृति जो मेरे विरुद्ध पक्षस्थ रहते है । अथवा—इन्द्रोदिर राजान के प्रति उनका इतना गहरा प्रेम है । अतः, विघ्न, मेरा दुश्मन को देखना चाहता है ।

प्रतीहारी—दुनार को बैनी कहा (बाहर निकल गया)

/ हमारे बाद अपने मन में स्थित नरक दुश्मन के साथ सम्मेलन पर बैठे हुआ किन्तिन मुद्रा में राजान का प्रवेश)

राक्षस—(अपने मन) हमारी सेना चन्द्रगुप्त के सैनिकों से भरी है । अतः सबकुछ मेरे मन को शान्ति नहीं है । क्योंकि—

English—*Malayaketu*—(To himself) How so, Chitravarma and others also conspire against me : or why ? This is the reason of their excessive love for Rakshasa (Aloud) Vijaya, I wish to see Rakshasa.

Word—As the prince commands (Exit).

(Then enter Rakshasa in his mansion with an attendant seated, full of anxious thoughts).

Rakshasa—(To himself) My mind is not really at ease since our army is filled with Chandragupta's warriors) for.

मिमला

अन्यथा—यत्, साधनम्, साध्ये, निश्चितम्, सपक्षे, स्थितिम्, विघ्नम्, अन्यत्वेन, घटितम्, विपक्षनः, च, व्यावृत्तम्, तत्, सिद्धये, भवति । यत्, स्वयम्, एव, साम्यम्, उभयोः, तुल्यम्, यत्, च, पक्षे, विरुद्धम्, तस्य, अङ्गीकरणेन, स्वामिनः, इव, वादिनः, निग्रहः, स्यात् ॥ १० ॥

वादिनः नर—

व्याख्या—यत्=धूमादिरूपम् अव्ययम् (meaning really), साधनम्=धूमादिरूपम् (middle term smoke), साध्ये=निश्चितविषयमूले बह्वचारी (the predicate in the conclusion), निश्चितम्=असंदिग्धम् (undoubtedly present), सपक्षे=सद्विषयसाध्यके पक्षनादी (a corroborative instance on the same side), स्थितिम्=सत्त्वम् (appearing), विघ्नम्=गारयत् (possesses), अन्यत्वेन=अन्यव्यवस्थाया (through succession), घटितम्=युक्तम् (attended), च=तुनः (and), विपक्षनः=साम्यानावाविरुध्नात् जलद्वारादेः (by the absence of the smokiness साम्यघर्षः), व्यावृत्तम्=तत्रावृत्तोत्पत्तिः (excluded from विपक्षः), तत्साधनम् धूमादि रूपहेतुः (that smoke), सिद्धये=बहवधुमानाय

भवति (establishment of the proposition), यत्=साधनम् हेतु (such a thing), स्वयमेव (itself), साध्यम्=हेत्वन्तरेणानुमेयम् (can not be used as a reason in a proof), उभयो = सपक्षपरपक्षयोः पर्वतजलद्वयोरेत्यर्थः, (both sides), उभय=refers to सपक्ष and विपक्ष), तुल्यम्=समम् (equally), (A reason equally true of both sides leads to no reference), यत्=अनुमानम् (inference), च=पुन (and), पक्षे=निश्चितसाध्यवति पर्वतादौ (in the minor term), विरुद्धम्=साध्यासमानाधिकरण्यविशिष्टम् (incompatible), तस्य=तादृशस्य त्रिविधस्य (like so), अङ्गीकरणेन=अभ्युपगमेन (with assumption), स्वामिन = प्रभो. (of the king), इव=यथा (like), वादिन.=असदर्थकरणेन विजयमाकाङ्क्षतो जनस्य (disputant), निग्रहः=पराजयः, स्यात्=भवेत् (in case of वादिनः however निग्रहः is the technical name for a contradiction of what is to be proved (विप्रतिपत्ति) and also for inclusion (अप्रतिपत्ति) leading to no reference.) ॥ १० ॥

स्वामिपक्षे—

व्याख्या—यत्=तत्पक्षम् (really), साधनम्=सैन्यरूपम् (army), साध्ये=शत्रुविनाशनरामके कार्ये (the work undertaken), निश्चितम्=निश्चितशक्तिकम् (selected), सपक्षे=सहाये (on the same side with the army), स्थितम्=अवस्थानमानुकूल्यम् बिभ्रत्=धारयत् (siding with the king), अन्वयेन=वर्णेन (family), घटितम्=लब्धम् (attained), विपक्षतः=रिपुपक्षात् (from enemy's side), च=पुन. (and), व्यावृत्तम्=विरक्तम् (averse to the enemy), तत्=तादृशम् साधनम् सैन्यादिरूपम् (that army), सिद्धये=कार्य-सम्पादनाय शत्रुविघाताय भवतीति शेष. (for success), यत्=सैन्यम् (an army), स्वयमेव साध्यम्=भीत्यादिप्रदर्शनद्वारा आत्मसात्करणीयम् न तु वक्षपरम्परया (an army seeks its own interest), उभयो = स्वामितःप्रतिपक्षयोः तुल्यम्=समानम् (an army is equally with a leaning to both sides), यत्=सैन्यम् (an army), च=पुन. (and), पक्षे=स्वामिवर्गे (in the side of the king), विरुद्धम्=विपरीतम् (inimical), तस्य=तादृशस्य सैन्यस्य (like such army), अङ्गीकरणेन=स्वीकारेण (incorporation with one's standing army), स्वामिन = राज्ञ (of the king), इव=यथा (like), वादिन = तार्किकस्य (the disputant), निग्रहः=पराभवः (capture), स्यात्=भवेत् ॥ १० ॥

वादी पक्ष में—

हिन्दी—विवाद में वही साधन (धूमादिरूप हेतु) सिद्धि के लिए असद्विग्रह रूप से समर्थ होता है जिसका साध्य (वद्विरूपपक्ष) अन्वय-व्याप्ति ॥ विशिष्ट हो, जिसे सपक्ष (महानसादि) का समर्थन प्राप्त हो और विपक्षवृत्ति से (जलद्वदादि से) सर्वथा मुक्त हो। किन्तु वही साधन (धूमरूप) यदि साध्य से एक रूप हो—अथवा सपक्ष और विपक्ष में सम्यथा प्रयोज्य हो (अर्थात् अग्न्यादि अनुमेय पदार्थ की स्थिति में सद्विग्रह हो) फलतः

समझ में बिन्दु रहता हो तो ऐसे हेतु के स्वाकार करने से स्थानों को तरह बारी को भी हार निश्चित होती है । १० ॥

स्थानी के पक्ष में :-

युद्ध में युद्धों का जानने में देना मेला नसरर समझ होती है, जो दन्तता से ठेगारन हो, जिनका ठगन निश्चित है, जो अन्वयमाने से विवेचित मध्य आन्तरिक पक्षन से समझ हो, जिसे निवारकों के समझन नसरर, जो अन्वय के पक्ष के विरोध हो । अन्वय जो समझ एवं विवेक में उन्वयन मेला है देना मेला का न्यूनन से अन्वयन टा.के.को का तरह समझ का भी दानन निश्चित है । १० ॥

English—In the side of disputants :-

Which (Smoke = middle term) is undoubtedly present in the fire (proof of conclusion) which is joined with drift, which is certain in the kitchen with its presence, || is for the real sense of fire (by the middle term of smoke) separate from the ponds etc., which has not really any major term (sadhya). But where (middle term) is in itself inferable or, uncertain in the side), present equally to both sides (is different to the result)—can be joined in an affirmative proposition with both ('Sapaksha' and Vipaksha) concluded upon it is dangerous to the King as it is to the disputant. 10.

In the side of the King :-

That middle term of army is for victory, which is undoubtedly strong to win the enemies (middle term army), which is capable of being joined in an affirmative proposition, which is totally indifferent to the enemy and faithful to its side (king). But which (middle term army) seeks its own interest—equal to both sides—to the enemy and to the king, which is quite indifferent to its king, that king is defeated (it is dangerous for king) as a disputant. 10.

टिप्पणियाँ—(१) अन्वयन = अनु + इ + अन् = अन्वयनेन अन्वयन कर्मात् वादोपपन्नं नै अन्वयनमिति से, स्थानीय नै—कुलरन्वय से प्राप्त । (२) समझ = पक्षो सह वर्तमानः समझः—(१) महानुपपन्नं नै (२) निवारणं नै । (३) विवेकः—विवेकः तद्वत् विवेकमन्वय विवेकः विवेकः । (४) न्यूनन—नै + अ + न्यून + न + कर्मात् । न्यूननं अन्वयनमिति । (५) दानन—दाननं अनेन ही समझ + न्यूननं—(१) दाननं—हेतु, देना । (२) निवारणं—नै + अ + न्यूननं निवारणं । न्यूननं नै दाननं रर स्थान ई । दाननं । (८) समझ नै दाननं न्यूननं के अन्वयन दाननमिति दाननं दाननं से दाननं है :-

साध्य, साधन, अन्वय, न्यूनन, समझ एवं विवेक ।

समझ से ऐसे से अन्वयन दाननं न्यूननं एवं दाननमिति दाननं है ।

अथवा विज्ञातापरागहेतुभिः प्राक्परिगृहीतोपजापैरापूर्णमिति न विकल्प-
यितुमर्हामि । (प्रकाशम् ।) भद्र प्रियवदक, उच्यन्तामस्मद्वचनात्कुमारानुया-
यिनो राजान् । सम्प्रति दिने दिने प्रत्यासीदति कुसुमपुरम् । तत्परिकल्पित-
विभागैर्भवद्भिः प्रयाणे प्रयातव्यम् । कथमिति ।

विमला

इत्याख्या—अथवा = वा (or rather) विज्ञाता = अस्माभिस्तत्पर्यसुचिदेहितादि-
भिरनुमिता (were fully ascertained) अपरागहेतवः चन्द्रगुप्तविरागकारणानि
येषां ते तथोक्तस्तैः विज्ञाता अपरागहेतुभिः = अनुमितविरागकारणैः (the causes of
disaffection) प्राक् = अस्मत् पक्षावलम्बनात्पूर्वम् परिगृहीतो ज्ञातोऽस्माकमुपजापो-
यैस्ते तथोक्तस्त्वै प्राक्परिगृहीतोपजापैः = पूर्वज्ञातमरमन्नेदे (had previously accep-
ted our overtures), आपूर्णम् = स्यात्सम् (full of persons) विद्वत्पयितुम् =
विकल्पम् कर्तुम् नार्हामि = न योग्योभवामि (I ought not to have any misgi-
vings) [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)], भद्र = कव्याणिन् (gentle), प्रियवदक
(Priyambadaka), अस्मद्वचनात् = मद्रुत्वा (in my name) कुमारानुयायिनः =
कुमारानुसरणशीलाः (the allies of the prince), राजान् = नृपतयः (the kings),
उच्यन्ताम् = अभिधीयन्ताम् (let be told), सम्प्रति = इदानीम् (now), दिने दिने =
द्ये द्ये (every day), कुसुमपुरम् = तक्षामनगरम् (Kusumpura), प्रत्यासीदति =
निकटवत्ति भवतीति (is nearing), तत् = तस्मात् कारणात् (so), परिकल्पिता
विभागो यैस्ते तथोक्तस्तैः परिकल्पितविभागैः = कृतसम्यविभागैः (with divisions
formed), भवद्भिः = युष्माभिः (you), प्रयाणे = रणयात्रायाम् (during march),
प्रयातव्यम् = गन्तव्यम् (should proceed), कथमिति = (Do you ask)
how ?

हिन्दी—अथवा—चन्द्रगुप्त के प्रति इनकी विरक्ति का कारण पहले से ही जान लिया गया है,
इतना ही नहीं हमारी भेद नीति को भी इन्होंने पहले से स्वीकृत कर लिया है, इनसे हमारा
सैन्यदल व्याप्त है । अतः इनपर सन्देह करना नहीं है । (सुनाकर) सद्रमियनदक, हमारी ओर
से कुमार के अनुयायी राजाओं से बाकर कहें कि कुसुमपुर जब दिनानुदिन समीप आता जा
रहा है । अतः व्यूहचला कर आप लोगों को विजयवाजा के लिए प्रस्थान करना चाहिए ।
कैसे :-

English—Or, I should not have any doubt, since our army is
full of persons (Bhadrabhatta etc.) who have already accepted our
disclosures being fully determined after dissatisfaction (of Chandra-
gupta) (aloud) Gentle Priyambadaka, inform the kings, following
the prince (Malayaketu), in my name that Kusumpura is being
nearer and nearer day by day, they should proceed during their
(victor) march in (good) divisions (Do you ask) How :—

प्रस्थातव्यं पुरस्तात्त्वशमगधगणैर्मानु व्यूहा सैन्यै-

गान्धारेर्मध्ययाने सयवनपतिभिः संविधेयः प्रयत्नः ।

पश्चात्तिष्ठन्तु वीराः शकनरपतयः संश्रुताश्चीनहूणैः

कौलूताद्यश्च शिष्टः पथि पथि वृणुयाद्राजलोकः कुमारम् ॥११॥

विमला

अन्वयः—पुरस्तात्, व्यूह, मानु, अनु, शकनरपतयः सैन्यैः, प्रस्थातव्यम्, मध्ययाने सयवनपतिभिः, गान्धारैः, प्रयत्नः, संविधेयः, पश्चात्, चीनहूणैः, संश्रुताः, वीराः, शक-नरपतयः, तिष्ठन्तु, शिष्टश्च, कौलूताद्यः, राजलोकः, पथि पथि कुमारम् । वृणुयात् ॥ ११ ॥

व्याख्या—पुरस्तात् = अग्रभागे (in the van), व्यूहः=विभागम् कृत्वा (drawing up troops in battle array), मानु=मन पश्चात् (behind me), शकनरपतयः=शकश्च मगधाश्च शकमगधास्तेषां गणो येषु तानि तत्तन्मगधगणानितैः शकनरपतयैः=येषु सैन्येषु प्रागुक्तोत्थितान्तर्बन्धि पर्वतीयान् मगधदेशवर्तिनश्च राजानः सन्ति तादृशैः सैन्यैरिति (consisting of the Khasha and Magadha), सैन्यैः=सैनिकैः (warriors), प्रस्थातव्यम्=गन्तव्यम् (should march), मध्ययाने=सैन्यमध्यगमने (the march of the central division), यवनानाम् पतयः यवनपतयस्तैः सहिताः सयवनपतयस्तैः स यवनपतिभिः=यवनपतिमहिना (with the Yavan chief), गान्धारैः=गान्धारदेशवर्तिभिः सैन्यैः (Gandhar army), प्रयत्नः=उद्योगः, विधेयः=करंभ्यः (should take care of), पश्चात्=नदनु (after them), चीनहूणैः=श्लेच्छविशेषैः (by the Chinese and the Hunas), संश्रुताः=सबलिताः (reinforced), वीराः=पराक्रमशालिनः (the valiant), शकनरपतयः=शकदेशीयराजानः (Saka kings), तिष्ठन्तु=प्रयान्तु (should march), शिष्टश्च=अवशिष्टश्च (and the rest of kings), कौलूताद्यः=चित्रवर्मसमूहिः (the king of Kuluta and others), राजलोकः=भूपरगः (the kings), पथि पथि=माग मार्ग (at the stage of the march), कुमारम्=मलयकेतुम् (to the prince), वृणुयात्=शरीररक्षणार्थम् परितो बध्नेत् (should guard) ॥

हिन्दी—नेरे नेदुख में आने-आग लड़ तथा मगध सेनाओं के मूह प्रस्थान करेंगे । सेना के केन्द्र में गान्धारों तथा यवनों के राजाग बगलक रहेंगे । पृथगाग में शक, चीन तथा हूण जातियों के अधिपतिग वीरता के साथ अग्रसर होत रहेंगे । अवशिष्ट कुलूत आदि की सेनाएं मार्ग में कुमार की रक्षा करती चलेगी ॥ ११ ॥

English—The warriors of Khasha and Magadha should march behind me in a van. The Gandhars should take care of the Yavan chiefs in the central division. The brave Saka kings with Chinese and Hunas should proceed rear. The rest of the kings—the king of Kuluta and others—should march guarding the prince in the way. (11)

टिप्पणी—इस श्लोक में स्वभावोक्ति अलङ्कार तथा सपरा छन्द है ।

प्रियवद — तद् इति । (निष्क्रान्त ।) (तथेति ।)

(प्रविश्य ।)

प्रतीहारी — जेदु अमच्चो । अमच्च, इच्छदि तुम कुमारो पेक्खिदु । (जयत्व मात्य । अमात्य, इच्छति त्वा कुमार प्रेक्षितुम् ।)

राक्षस — भद्रे, मुहूर्तं तिष्ठ । क कोऽत्र भो ।

(प्रविश्य ।)

पुरष — आणवेदु अमच्चो । (आज्ञापयत्वमात्य ।)

राक्षस — उच्यता शकटदास । यथा परिधापिता कुमारेणाभरणानि वयम् । तन्न युक्तमनलकृतं कुमारदर्शनमनुभवितुम् । अतो यच्चदलकरणत्रयं क्रीतं तन्म-
ध्यादेकं दीयतामिति ।

पुरुष — तथा । (इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य ।) अमच्च, इदं आहरणं ।
(अमात्य, इदमाभरणम् ।)

रिमला

व्याख्या — प्रियवदक — तथा (As you command) [इति निष्क्रान्त = (Exit)],
प्रविश्य (re-entering)

प्रतीहारी — अमात्य = सचिव (The minister) जयदु = विजयलभश्च (let victory) अमात्य (the minister), त्वाम् (to you), कुमार (the prince), प्रेक्षितुम् (to see), इच्छति = वाञ्छति (wishes)

राक्षस — भद्रे (Gentle woman), मुहूर्तम् = क्षणम् (a moment) तिष्ठ = स्थीयताम् (wait) क (who) कोऽत्र (here is), भो (who ho), [प्रविश्य = (entering)]

पुरष — अमात्य (The minister) आज्ञापयदु = आज्ञां ददातु (order please)

राक्षस — उच्यताम् = कथ्यताम् (Say to), शकटदासर (Shakatdas), यथा = यत् (that), वयम् (we), कुमारेण = मलयकेतुना (by the prince), आभरणम् = अलङ्करणम् (ornaments), परिधापिता = परिधारिता (has given), तत् = तस्मात् (so), न युक्तम् = अस्मात्प्रतम् (it is not good) इदानीं साग्रातम् (now), अनल-
कृतं = अनमरण (without decoration), कुमारदर्शनम् = कुमारालोकनम् (to see the prince), अनुभवितुम् = कर्तुम् (should enjoy) अतः — अस्मादेतो (therefore) यत् अलङ्करणत्रयम् = त्रयाण्यलङ्करणानि (one of three ornaments), क्रीतम् = मूह्यदानपूर्वकमात्मसात्कृतम् (have been purchased), तन्मध्यात् = अलङ्करणत्रयमध्यात् एकम् (one of them), दीयताम् = समर्प्यताम् (let be handed over)

पुरष — तथा (As you command), [इति निष्क्रम्य (Exit), and पुनः प्रविश्य (re-entering)] अमात्य (the minister), इदम् = एतत् (here is), आभ-
रणम् (the decoration)

राक्षसः—(नाट्येनात्मानमलंकृत्येत्याय च ।) भद्रे, राजोपगामिनं मार्ग-
मादेशाय ।

प्रतापिणी—एदु अमचो । (एत्वमान्यः ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अधिकारपदं नाम निर्दोषस्यापि पुरुषस्य
महदाराङ्गस्थानम् । कुतः—

राक्षसः—[नाट्येन = नट्यचिन्त्याराये, अवलोक्य = इष्ट्वा (gesticulating),
आत्मनम् (his), अलंकृत्य = नूययित्वा (putting on the decoration) च =
and. उत्थाय (rising)], भद्रे (Gentlewoman), राजोपगामिनम् = वृत्तसमीप-
प्रापकम् (leading to the king), मार्गम् = पन्थानम् (way), आदेशाय = दर्शय
(show me).

प्रतापिणी—अनात्यः = सचिवः (The minister). एतु (come).

राक्षसः—[आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself)], कार्ये नियोजनम् अधिकारः ए
पदम् स्थानम् अधिकारपदम् दासत्वम् (A post of authority). निर्दोषस्यापि =
निरागस्तोऽपि (even to an innocent), पुरुषस्य = जनस्य (of the man), मह-
दाराङ्गस्थानम् = परममयस्कारणम् (is a source of great), (apprehension),
कुतः = For—

हिन्दो—प्रियवद्भू—जैसो आज्ञा (निकल गया) (प्रवेश करके) ।

प्रतापिणी—अनात्य को बर हो । अनात्य कुमार आरको देखना चाहते हैं ।

राक्षस—शक्यदास ने कहा कि स्वयं कुमार व इन्हें आभूषण पहनाने थे । अतः आभूषण-
रहित कुमार के दर्शन उचित नहीं है । अतः वे जो तीन आभूषण खरादे गये थे, उनमें से एक
दुस्र दो ।

पुरुष—जो आज्ञा (निकलकर पुनः प्रवेश कर) अनात्य वह आभूषण है ।

राक्षस—(अभिनयपूर्वक अपने आरको अलंकृत कर और उठकर) भद्रे, राजा के पास जाने
बाछे रास्ते को बतलाओ ।

प्रतापिणी—अनात्य इधर से आइए ।

राक्षस—(अपने आर) अधिकार उक्त पद निर्दोष पुरुष के हृदय में भी आशङ्का उत्पन्न कर
देता है । क्योंकि :—

Egnilsh—Pratyambajaka—As you command. (Exit)

(Entering)

Warder—Let victory to the minister. Minister the prince wants
to see you.

Rakshasa—Gentle woman, Wait a moment, Holla, who is here,
who is ?

(Entering)

Man—Let your command. minister.

भयं तावत्सेव्यादभिनिविशते सेवकजनं

ततः प्रत्यासन्नाद्भवति हृदये चैव निहितम् ।

ततोऽध्यारूढानां पदमभुञ्जनद्वेषजननं

गतिः सोच्छ्रायाणां पतनमनुकूलं कलयति ॥ १२ ॥

Rakshasa—Let Shakatdas be known—As the prince has given me ornaments, therefore, handover me one of the bought three Jewelleries.

Man—As your command. (Exiting and re-entering) Minister it is the ornaments.

Rakshasa—(Decorating himself with gesticulating and rising) Gentle woman, lead the way to the prince.

Warder—Minister, come this way.

Rakshasa—A post of authority is indeed, a source of great fear even an innocent man. Because of—

विमला

अन्वयः—सेवकजनम्, तावत्, भयम्, सेव्यात्, अभिनिविशते, ततः, च, प्रत्यासन्नात्, हृदये, निहितम्, एव, भवति, ततः, अध्यारूढानाम्, पदम्, अभुञ्जनद्वेषजननम्, सोच्छ्रायाणाम्, गतिः, अनुकूलम्, पतनम्, कलयति ॥ १२ ॥

व्याख्या—सेवकजनम् = अनुचरम् (the servant), तावत् = प्रथमम् (in the first), भयम् = साधसम् (the fear), सेव्यात् = स्वामिनः (from the master), अभिनिविशते = सर्वतः प्राप्नोति (takes entire possession), ततः = तदनन्तरम् (after that), च = पुनः (and), प्रत्यासन्नात् = राजनिकटवर्तिनोजनान् (from his intimates), हृदये = चित्ते (in his heart), निहितम् = स्थिरम् एव भवति (gets planted), ततः = तदनन्तरम् (then), अध्यारूढानाम् = उच्चपदप्राप्तानाम् भृत्यानाम् (those are highly placed), पदम् = स्थानम् (position), अभुञ्जनद्वेषजननम् = दुर्जनक्रोधवर्द्धकम् भवति (provokes the jealousy of the wicked), सोच्छ्रायाणाम् = अत्युन्नतानाम् पुरुषाणाम् (the rise of the exalted entails), गतिः = स्थितिः (condition), अनुकूलम् = उचितम्, पतनम् = अधोगमनम् (fall), कलयति = अवगच्छति (considers), ॥ १२ ॥

हिन्दी—सर्वप्रथम सेवक को अपने स्वामी से भय तथा रहता है, फिर निकट सम्बन्धियों से, पुनः उच्चपदस्थ व्यक्तियों का पद-दुष्ट व्यक्तियों के देश को उत्पन्न करता है। यही कारण है कि समुन्नत व्यक्तियों की अवस्था सदैव अपने पतन की ही सोचती रहती है ॥ १२ ॥

English—In the first apprehension comes to the servant from his master, then it becomes planted at his heart indeed from his intimates and after that the position of those who have risen very high provokes jealousy in bad people. The condition of those risen to a high station considers a fall to be close at hand. (12).

(परिक्रम्य ।)

प्रतापान्न—अनघ, अज कुमारो । उपसर्पदु प अनघा । (अनाय, अज कुमार । उपसर्पत्यनमनान् ।)

राजस—(विलोक्य ।) अज कुमारस्तिप्रति । ए एष

पादाग्रे दशनवज्रानि निश्चलाङ्गा

शून्यत्वात्परिगृहीततद्विशेषान् ।

वक्त्रेन्दु वहति करेण दुर्गहाणा

कार्याणि कृतमिव गौरवेण नम्रम् ॥ १३ ॥

टिप्पणी—(१) अनघानन्दन —यहा निर्विद' से मतनैर दुःख है (२) 'अज अनघ'—यहा कल्याण कल्याण' से दुःख है

इस द'क ने कल्याण दुःख एवं कल्याण' से अनघा है दिखरती है ।

मिमला

व्याख्या—[परिक्रम्य = (walk forth)]

प्रतापान्न—अनाय (Mirister) अनघ=एष (here is) कुमार=मलयकेतु (the prince) अनघ (the mist), एनम् (him), उपसर्पन्तु=गच्छन्तु (may approach)

राजस—विलोक्य=दृष्ट्वा (seeing) अनघ (here), कुमार (the prince) विहति (is), ए एष (who) —

अनघ—शून्यत्वात्, अपरिगृहीततद्विशेषान्, निश्चलाङ्गान्, दशनम्, पादाग्रे अवघात, दुर्गहाणम्, कार्याणाम्, गौरवेण, नम्रम् कृतमिव, वक्त्रेन्दुम्, करेण, वहति ॥ १३ ॥

व्याख्या—शून्यत्वात्=विशेषाभावात् (through their vacant staring), न परिगृहाता ज्ञावस्तद्विशेष पादाग्ररूपाद्यन्तकविशेषा यथा सा तथाका तामपरिगृहात तद्विशेषान् = अज्ञातपादाग्ररूपाद्यन्तकविशेषान् (not perceiving their particular objects) निश्चलाङ्गान् = विषयान्तरानासक्तान् (motionless), दशनम् = दृष्टिम् (eyes), अवघात = सम्यक् रूपम् लक्ष्यम् (fixing), दुर्गहाणम् = महतान् (arduous), कार्याणाम् = कृत्याणाम् (undertakings), गौरवेण = गुरुत्वेन (by the weight of), नम्रम् = झनतम् (bent down), कृतमिव = विहितमिव (as if were) वक्त्रेन्दुम् = सुखचन्द्रम् (moon like face) करेण = हस्तम् (by his hand), वहति = धारयति (supporting)

हिन्दी—(धूमकर)

प्रतापान्न—अनघ, ये कुमार हैं । अनघ इनके नाम चले ।

राजस—(देखकर) ये कुमार हैं । जो यह —

इस दान के करम, करने निश्चल' से अनघा करने न अनघ' अत्यन्त निश्चल अत्यन्त अनघा इति अ करने ही पैरों के अनाय पर टिकाकर दुःख क्षणों के पारों से नानो के दुःख सुखचन्द्र को हाथ से धारण कर रहे हैं ॥ १३ ॥

(उपसृत्य ।) विजयतां कुमारः ।

मलयकेतुः—आर्य, अभिवाद्ये । इदमासनमास्यताम् ।

(राक्षसस्तथा करोति ।)

मलयकेतुः—आर्य—चिरदर्शनेनार्यस्य वयमुद्विग्नाः ।

राक्षसः—कुमार, प्रयाणे प्रतिविधानमनुतिष्ठता मया कुमारादयमुपालम्भो-
ऽधिगतः ।

मलयकेतुः—आर्य, प्रयाणे कथं प्रतिविहितमिति श्रोतुमिच्छामि ।

English—(They walk forth)

Warder—Minister here is the prince. Let minister approach him.

Rakshasa—(Observing) Here is the prince, who :—

Fixing his motionless eyes on the forepart of his feet with its different parts unperceived through their vacant staring and sup-
ports in his hand his moonlike face, which is as if bowed down
under the weight of his arduous undertaking (13),

टिप्पणी—(१) निश्चलाङ्गो—निश्चल अङ्गों वाली । (२) दृश्यत्वाद्.—नेत्र सुले रहने
पर मी दर्शन-व्यापार से दृश्य है क्योंकि मन कहीं और लगा है । (३) वक्ष्येन्मुम—वक्त्र
मिन्दुमिव । 'व्यमिति व्याघ्रादिभि' से समास हुआ ।

इस श्लोक में रूपक तथा उपमेया अलङ्कार हैं और प्रह्विणी छन्द है ॥ १३ ॥

विमला

व्याख्या—[उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching)], विजयताम् (Victory),
कुमार (to the prince)

मलयकेतुः—आर्य. = श्रीमान् (Noble sir), अभिवाद्ये = प्रणमामि (I bow to
you), इदम् = एतत् (this), आसनम् = आस्तरणम् (seat), आस्यताम् = उपविश्य-
ताम् (please take)

[राक्षसस्तथा करोति = (does so)]

मलयकेतुः—आर्य (Noble sir), आर्यस्य = पूज्यस्य भवतः (noble sir's) चिर-
दर्शनेन = बहुकालोचरावलोकनेन (through delayed appearance), वयम् (we),
उद्विग्ना = उत्कण्ठिता. (felt uneasy)

राक्षसः कुमार (the prince), प्रयाणे = युद्धयात्रायाम् (in the matter of the
march), प्रतिविधानम् = प्रयत्नम् (precaution), अनुतिष्ठता = विदधता (adopting),
मया (I), कुमाराद् (from the prince), अयम् = एष (this), उपालम्भः = अना-
दर (taunt) अधिगतः = प्राप्तः (have come)

मलयकेतुः—आर्य (Noble sir), प्रयाणे = युद्धयात्रायाम् (with regard to the
march), कथम् = केन प्रकारेण (what), प्रतिविहितम् = उपयुक्तम् व्यवस्था कृतेति
(arrangements have made), श्रोतुम् = श्रुणुमिति (to know), इच्छामि =
वाञ्छामि (I want),

राजसः—कुमार, एतन्नादिष्टा अनुचापिनो राजानः । ('प्रस्थातव्यम्—
(५११) इति पूर्वोक्त पदात् ।)

नन्दरक्षेणुः—[स्वगतम् ।] कथं य एव मदिनासेन चन्द्रगुप्तमारापितु-
मुद्यमान्त एव ना परिवृष्वन्ति । (प्रकाशम् ।) आर्य, अस्ति कश्चिद् कुमुनपुर
प्रति गच्छति तत् आगच्छति वा ।

राजसः—अगमितानिदानीं गतागतप्रयोजनम् । अन्यैरहोभिर्गन्नेन तत्र
गन्तारः ।

राजस —कुमार (The prince), अनुचापिन = अनुगम्य शीला (following us),
राजान (the kings), एवम्=इयम् (like this), आदिष्टा=आज्ञाता (have been
instructed), [प्रस्थातव्यम् इति पूर्वोक्तम् = (as said before,) पठति=repeats the
verse "Let the troop"]

नन्दरक्षेणु—[स्वगतम्=आत्मगतम् = (to himself)], कथम्=कृत (what), य=
एव (who), मदिनासेन=ना निहन्तुमिच्छय (by ruining me), चन्द्रगुप्तम् =
मौर्यम् (Chandragupta), आराधयितुम् =सविदुम् (to please), उद्यता =त पराः
(are trying), त एवम्=राजान (the very kings), माम् परिवृष्वन्ति =मन्त्र-
रीररक्षणार्थं परितो वेष्य पथि गमिष्यन्ति (are surrounding me), [प्रकाशम् =
(Alo-d)], आर्य (sir), अस्ति कश्चिद् (is there any one), य=कुम्भ (who),
कुमुनपुरम् प्रति (towards Kumnapura), गच्छति=यति (goes to), वा =
अथवा (or), तत् आगच्छति =अनायासम् (comes from)

राजस—इदानीम् =अधुना (Now), गतागतप्रयोजनम् =गमनागतप्रयोजनम्
(the purpose of going there and coming back), अवसितम् =समाप्तम् (is
at an end), वयमेव (we ourselves), अक्षरदिनि दिवसेः (In a few days),
तत्र =कुमुनपुरे (there), गन्तारः (shall go).

हिन्दी—(सनोय नाकर) कुमार का क्या हो ।

मलयकेतु—आज, नग्न करता हूँ । यह अलग है, करना है ?

(राजस बैठा हो करता है)

मलयकेतु—आजके दर्शन विरक्त उते न जाने के कारण हम व्यर्थ हैं ।

राजस—कुमार, विद्वत्प्राज्ञा का प्रयत्न मैं व्यर्थ रहने के कारण हो मैं अलग रह जाता हूँ
का बात बना हूँ ।

मलयकेतु—आर्य, प्रयत्न के लिए बैठा व्यर्थ का क्यों है—कुम्भ का इशारा हूँ ।

राजस—कुमार, आजके अनुचापि राजाओं का यह सार्वत्रिक दिना गता है । ('प्रकाशम्'
पूर्वोक्त पदात् पठति)

मलयकेतु—(बन्ने आर्य) क्या वो राजा नारा विनाश कर चन्द्रगुप्त को आराधना के
लिए उतरा है, वही मेरी रक्षा में निरुक्त है । (प्रकट) आर्य, क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो कुम्भ-
पुर से जाता यात्रा करता है ?

मलयकेतुः—(स्वगतम् ।) विज्ञायते । (प्रशंसाम् ।) यद्येव ततः किमर्थे-
णाय सलेखः पुरुषः प्रेषितः ।

राक्षस —(विलोक्य ।) अये, सिद्धार्थकः । भद्र, किमिदम् ।

सिद्धार्थकः—(सबाष्प लज्जा नाटयन् ।) पसीदतु अमर्षो । ताडोअन्तेण
मए ण पारिद रहस्स धारिटु । (प्रसीद चमात्यः । ताड्यमानेन मया न पारितं
रहस्य धारयितुम् ।)

राक्षस—भद्र वही आने जाने का प्रयोजन समाप्त हो गया । कुछ ही दिनों में हम स्वयं
वही चलेंगे ।

English—(Advancing) Let prince prosper,

Malayaketu—Noble sir, I bow to you. Here is a seat, you be seated
(Rakshasa does so)

Malayaketu—Sir, we felt uneasy through Noble sir's delayed sight.

Rakshasa—Prince, adopting precaution in the matter of the
march, I come to have this taunt from the prince

Malayaketu—Noble sir, I want to know, what precautions you
have adopted in regard to the march

Rakshasa—Prince, the kings following us have been instructed
(Repeats the verse. "Let the troop etc " as before said)

Malayaketu—(To himself) How so, the very kings who are trying
to please Chandragupta by ruining me, (Aloud) Noble sir, is there
any one who is going to Kusumpur or coming from there ?

Rakshasa—The purpose of going there and coming back is at an
end We ourselves will go there in a few days

रिमला

व्याख्या—मलयकेतु —[स्वगतम् = अत्रकाशम् = (to himself)] विज्ञायते (I
understand it), [प्रकाशम् = (Aloud)], यद्येवम् = कुसुमपुरगमने सति (if so),
ततः = ततस्मात् (then), किम् (why), अर्थेण = एवमेव भवता (by you), अयम्
पुरुषः = अनुचरः (this man), सलेखः = पत्रिकायुक्त (with a letter), प्रेषितः =
प्रेषित (was sent)

राक्षस —[विलोक्य = दृष्ट्वा = (observing)], अये (ah), सिद्धार्थकः (Siddhar-
thaka), भद्र (gentleman), इदम् = एतत् (this), किम् (what is).

सिद्धार्थक —[सबाष्पम् (with tears), लज्जाम् = श्रमम् (shame), नाटयन् =
अभिनयन् (gesticulating)], प्रसीदतु = प्रसन्नो भवतु (Excuse), अमात्यः = मन्त्रिन्
(minister), ताड्यमानेन = पीड्यमानेन (being beaten), मया (by me),
रहस्यम् = गोप्यम् (the secret), धारयितुम् = गोप्यम् (keep), न पारितम् = न शक्नुमि
(I could not).

राक्षसः—भद्र. कीदृशं रहस्यमिति न खल्ववगच्छामि ।

सिद्धार्थकः—णं प्रिणजेमि ताडोअन्तेण मए- (इत्यर्थोक्ते समयनयो-
मुत्पत्तिरिति ।) (ननु विज्ञापयामि ताड्यमानेन मया—)

मलयकेतुः—भागुरायण. स्वामिनः पुरस्ताद्भूतो लब्धितो वा नेष कथयि-
ष्यति । स्वयमेवार्थस्य उच्यते ।

भागुरायणः—यदाज्ञापयति कुमारः । अमात्य. एष कथयति यथाहममात्येन
लेखं दत्त्वा वाचिकं नदिश्य चन्द्रगुप्तस्य प्रेषित इति ।

ताडन — भद्र=कृपाणिन् (Good man), कीदृशम्=कं विपर्ययम् (what),
रहस्यम्=गोपनीयम् (secret), इति न मनु=नैव (I do not), भवगच्छामि=
जानामि (understand)

सिद्धार्थकः—ननु ताड्यमानेन=रोक्ष्यमानेन (being beaten), मया विज्ञापयामि
(I say), [इत्यर्थोक्ते (at this half utterance), समयनम्=समीनम् (with
fear), अधोमुखं=नताननः (with face cast down), तिष्ठति (stands)].

मलयकेतुः—भागुरायण (Bhagurayan), स्वामिनः पुरस्तात्=राक्षसस्याग्रे (be-
fore his master), भीतः=त्रस्तः (through fear), वा=अथवा (either),
लब्धितः=दयापुच्छः (with sham), नेष (be not), कथयिष्यति (will tell),
स्वयमेव=साक्षादेव (you yourself), स्वार्थस्य=राक्षसस्य (to the minister),
कथय=वृद्धि (tell)

भागुरायणः—यदाज्ञापयति कुमारः (As the prince commands), अमात्य
(minister), एष (this man), कथयति (says), यथा (that), अहम् (I), अमा-
त्येन=मन्त्रिणेन (by the minister), लेखम्=पत्रम् (letter), दत्त्वा (giving),
वाचिकम्=मौखिकम् (oral message), नदिश्य=कथयित्वा (speaking), चन्द्रगुप्त-
सकाशम्=मौर्यसमिधिमम् (to Chandragupta), प्रेषित इति (has sent).

हिन्दी—मलयकेतु—(जाने आ) हात है । (प्रकट रूप में) यदि हात देमो है तो फिर
आने ने पत्र के साथ इस व्यक्ति को किम वदेदय से बनर भेजा था ?

राक्षस—(देखकर) ओ सिद्धार्थक ! भद्र वह क्या है ?

सिद्धार्थक—(कृपा का अभिनय करता हुआ आँखों में आँसू भर कर) मनात्य प्रसन्न हों,
पीन जाने पर मैं रहस्य को छिपाने में अलमल हो गया ।

राक्षस—भद्र, कैसा रहस्य—हात नेरी समझ में नहीं आ रही है ।

सिद्धार्थक—मैंने कहा न—जब मार पड़ने लगी तब . (इतना आवाज बढ़कर मरपीत-सा
हँस जाने फिर खड़ा रहता है)

मलयकेतु—भागुरायण, नर और लब्ध के बारे बरने स्वामी से यह कुछ नहीं कह सकेगा,
तुम्हीं आने को स्वयं वतलओ ।

भागुरायण—कुमार को पैसी भाझ । मनात्य, यह कहता है कि आने एक पत्र देकर तथा
कुछ मौखिक संदेश के साथ इसे चन्द्रगुप्त के पास भेजा है ।

राक्षसः—भद्र सिद्धार्थक, अपि सत्यम् ।

सिद्धार्थकः—(लज्जा नाटयन् ।) एव अतिताडीअन्तेन मए निवेदिद ।
(एवमतिताड्यमानेन मया निवेदितम् ।)

राक्षसः—अनृतमेतत् । ताड्यमानः पुरुष किमिव न ब्रूयात् ।

मलयकेतुः—सखे भागुरायण, दर्शय लेखम् । वाचिकमेव भृत्यः
कथयिष्यति ।

भागुरायणः—अमात्य, अयं लेख ।

English—*Malayaketu*—(To himself) I understand (aloud) if so, then why was this man with a letter sent to Kusumpur by you sir ?

Rakshasa—(Looking) Ah *Siddharthaka* ! Gentleman what is this ?

Shuddharthaka—(Acting shame with tears) Excuse minister, being beaten I could not keep the secret

Rakshasa—Gentleman, I do not understand what secret you mean to say.

Siddharthaka—Do not I say that being beaten (at this half utterance stands with face cast down with fear)

Malayaketu—Bhagurayan, either frightened or shamed he will not tell before his master, you yourself tell it to noble sir

Bhagurayana—As the prince commands Minister, he says 'Minister sent me to Chandragupta giving me a letter and speaking an oral message',

विमला

व्याख्या—राक्षसः—भद्र (gentleman), सिद्धार्थक (*siddharthaka*), अपि-सत्यम् = (is it true) ?

सिद्धार्थकः—(लज्जां = श्रयाम् (shame), नाटयन् = अभिनयन् (gesticulating), एवम् = इत्थम् (so), अतिताड्यमानेन = अधिकपीड्यमानेन (Being severely thrashed), मया (by me), निवेदितम् = कथितम् (said)

राक्षसः—अनृतम् = असत्यम् (untrue), एतत् = इदम् (it is) ताड्यमानः = पीड्यमानः (on being beaten), पुरुष = जन (man), किमिव न ब्रूयात् = अलीकमवि-ब्रूयादिति (what will not say a man)

मलयकेतुः—सखे = मित्र (friend), भागुरायण (*Bhagurayan*) दर्शय (show him), लेखम् = पत्रम् (letter), वाचिकम् = मौखिकम् (the oral message), एव भृत्य (this servant), कथयिष्यति (will say).

भागुरायणः—अमात्य (minister), अयम् = एषः (here is), लेखः = पत्रम् (the letter)

राक्षसः—(वाचयित्वा ।) कुमार, शत्रोः प्रयोग एषः ।

मलयकेतुः—नेत्रं यशश्चार्थमार्षणेदमप्याभरणमनुप्रेषितम् । तत्तद्य शत्रोः प्रयोग एषः ।

राक्षसः—(आभरणं निर्वण्य ।) कुमारेणेतन्मह्यननुप्रेषितम् । मयाप्येतत्-
कस्मिंश्चिन्परितोपस्थाने निद्वार्थकाय दत्तम् ।

राक्षस — [वाचयित्वा = दृष्टिवाच्य (having read)], कुमार (Prince), एष = एतत् (this), शत्रो = अत्रे (enemy's), प्रयोग = कार्य (the work)

मलयकेतु — लेखस्य = पत्रस्य (Letter's), अशुभार्थम् = पूर्वार्थम् = (accompany-
ing), आयेग = पूरेण भवता (by you), इदमपि = एतदपि (even this), आभ-
रणम् = अलङ्करणम् (ornaments), अनुप्रेषितम् = अनुपहितम् (was sent),
तत्तद्यम् = तस्मात्कुत how can, एष = अयम् (this), शत्रो = शत्रोः (enemy's),
प्रयोग = कार्य (the work)

राक्षस — [आभरणम् = आभूषणम् (ornaments) निर्वण्य (closely looking at)],
कुमारेण (by the prince) एतत् (this), मयम् (to me), अनुप्रेषितम् (was
sent), मयापि (I too) एतत् (this), कस्मिंश्चित् (some), परितोपस्थाने = पारि-
तोषिकरूपेण (made a present of it), निद्वार्थकाय (to Siddharthaka), दत्तम् =
समर्पितम् (made present)

हिन्दो—राक्षस—मद निदर्शक, क्या वह सच है ?

निदर्शक—(लज्जा का अभिनय करते हुए) अयन् पीट जाने पर मैंने ऐसा कहा है ।

राक्षस—यह अनस्य है । पीटा जाया हुआ व्यक्ति क्या नही कह सकता है ?

मलयकेतु—निज भागुरायन, नहीं क्या दिखलाओ । नैतिक मन्देय वह सेवक बनतापैगा ।

भागुरायन—अमात्य, यह पत्र है ।

राक्षस—(पढ़कर) कुमार यह शत्रु की चाल है ।

मलयकेतु—यह पत्र नहीं नेत्रों के छिप, आंखों द्वारा ये आभूषण भी इसके साथ भेज
गये हैं । क्या यह भी कोई शत्रु की चाल ही थी ?

राक्षस—(ध्यानुकक आभूषण देख कर) यह आभूषण कुमार ने मेरे छिप भेजा था और
मैंने किन्तो अरन्ध पर मन्दुष्ट होकर निदर्शक को बख्शार में दिया था ।

English—Rakshasa—Good Siddharthaka, is it true ?

Siddharthaka—(acting shame) Being severely thrashed, I said so.

Rakshasa—It is false. What indeed would not a man say
on being beaten.

Malayaketu—Friend ; Bhagurayana, show him the letter. This
searvant will tell the oral message.

Bagurayan—Minister, this is the letter.

Rakshasa—(Having read) Prince, this is the work of the enemy.

भागुरायण — ईदृशस्य विशेषतः कुमारेणात्मगान्नादवतार्यं प्रसादीकृतस्येय परित्यागभूमि ।

मलयकेतु — वाचिकमप्यार्येणास्माच्छ्रातव्यमिति लिखितम् ।

राक्षस — कुतो वाचिक कस्य वाचिकम् । लेख एवास्मदीयो न भवति ।

मलयकेतु — इयं तर्हि कस्य मुद्रा ।

राक्षस — कपटमुद्रामुपपादयितुं शक्नुवन्ति धूर्ता ।

भागुरायण — कुमारः, सम्यगमात्या जिज्ञापयति । भद्रं सिद्धार्थकं, केनाय लिखितो लेखः ।

Malayaketu—This ornament too is sent by you in accompaniment to the letter. How can it then be the work of the enemy ?

Rakshasa—(Scrutinising the ornaments) This was sent to me by the prince, and I made a present of it to the Siddharthaka on some occasion of joy.

निमला

भागुरायण — कुमारेण = मलयकेतुना (by the prince), आत्मगान्नात् = निज-शरीरात् (from his body), अवतार्यं = पृथक्कृत्य (taking off), विशेषतः = विशेषरूपेण (especially), प्रसादीकृतस्य = दत्तस्य (has been gifted as favour), ईदृशस्य = महार्थस्याभरणस्य (such an ornament) इयम् परित्याग-भूमि = उपपादानपात्रम् (is this the fit person for the gift)

मलयकेतु — वाचिकमपि = मौखिकमपि (the verbal message too), आर्येण = भवता (by you), श्रोतव्यम् = भाकर्णितव्यम् (has to be heard), अस्मात् (from him), लिखितम् (is also written)

राक्षस — वाचिकम् = वाग्म्यदेश (oral message), कुत = कस्मात् (from whom), कस्य = पुरुषविशेषस्य (to whom), वाचिकम् = मौखिकम् (the verbal message), लेख एव = पत्र एव (the letter itself), अस्मदीयो न भवति = मामकीनो न भवति (is not mine)

मलयकेतु — इयम् = एषा (this), तर्हि = तदा (then), कस्य मुद्रा = पुरुषविशेषस्येति (whose seal)

राक्षस — कपटमुद्राम् = कृत्रिममुद्रामपि (forged seals too), उत्पादयितुम् = निर्मातुम् (make), धूर्ता = वद्वका (wily), शक्नुवन्ति (can)

भागुरायण — कुमार (Prince), अमात्य = सचिव (The minister), सम्यक् विज्ञापयति = याथातथ्येनाभिधाति (speaks truly), भद्रं (gentle), सिद्धार्थकं (Siddharthaka), अयम् लेखः = इयम् पत्रम् (this letter), केन लिखितम् (is written by whom)

(निद्वार्यक्षे राक्षसमुखमवलोक्य तूष्णीमधोमुखोऽस्तिष्ठति ।)

मागुरायणः—भद्र, अलं पुनरात्मानं ताडयितुम् । कथय ।

सिद्धार्थकः—अत्र, सञ्जडासेन । (आर्य, शकटदासेन ।)

निद्वार्यक्ष [(Siddharthaka), राक्षसमुखम् (Rakshasa's face), अवलोक्य (having looked), तूष्णीम् (silently), अधोमुखः (with head down-cast), तिष्ठति (stands)].

मागुरायणः—भद्र (Gentle), अलम्=अपर्यम्, पुनः (again), आत्मानः ताडयितुम् (provoke for beating), कथय=उच्यमानम् (tell).

हिन्दी—मागुरायण—ये देखे नृत्तवान और विशेषकर से उन साम्राजों को जिन्हें स्वयं कुमार ने अपने द्वारा से उतार कर के दिया हो—उसे देने का दही बहुत पान है क्या ?

मलयकेतु—आर्य ने यह भा लिखा है कि इस व्यक्ति से मौखिक संदेश भी इन केना चाहिए ।

राक्षस—कहाँ से मौखिक संदेश और किसके तिर संदेश ? मेरा तो यह पत्र ही नहीं है ।

मलयकेतु—तो यह मुझा किसके है ?

मागुरायण—कुमार, बनाने ठाक निवेदन कर रहे हैं । भद्र सिद्धार्थक, यह पत्र किसका लिखा हुआ है ?

(सिद्धार्थक चुनकार राक्षस की ओर देखकर मुह बटकाये खड़ा रहता है)

मागुरायण—भद्र, करने को पुनः विचारने से क्या लाभ ? कह दो ।

English—*Bhagurayana*—Is this the person to be favoured with such ornaments, especially one sent as a favour by the prince after taking it off from his own person ?

Malayaketu—It is also written by noble sir, that an oral message has to be heard from Siddharthaka.

Rakshasa—From whom is the oral message ? To whom is the verbal message ? The letter itself is not mine.

Malayaketu—Then whose is this seal ?

Rakshasa—Rogues can make forged seal too.

Bhagurayana—Prince, the minister speaks truly, Gentle Siddharthaka by whom is this letter written ?

(Siddharthaka keeps silent with head downcast after having looked Rakshasa's face).

Bhagurayana—Good man, do not provoke for beating. Say it.

विमला

सिद्धार्थक—आर्य (Sir), शकटदासेन=तत्त्वान्ना कायस्थवासीयेन (by Shakat-dasa).

राक्षसः—कुमार, यदि शकटदासेन लिखितस्ततो मयैव ।

मलयकेतुः—विजये, शकटदासं द्रष्टुमिच्छामि ।

प्रतीहारी—जं कुमारो आणवेदि । (यत् कुमार आज्ञापयति ।)

भागुरायणः—(स्वगतम् ।) न खन्वनिश्चितार्थमार्यचाणक्यप्रणिधयोऽभिधास्यन्ति । (प्रकाशम् ।) कुमार, न कदाचिदपि शकटदासोऽभ्यास्यस्याप्रतो मया लिखितमिति प्रतिपत्स्यते । अतः प्रतिलिखितमस्यानीयतां वर्णसंवाद् एवैतं विभावयिष्यति ।

राक्षसः—कुमार (Prince), यदि (if), शकटदासेन (by Shakatdasa), लिखितम् (was written), ततः (then), मयैव (by me).

मलयकेतुः—विजये (Vijaya), शकटदासम् (to Shakatdas), द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (to see), इच्छामि=वान्छामि (I wish)

प्रतीहारी—कुमारो भवान् (As your), यद् कार्यम् कर्तुम् आज्ञापयति=आदिशति (command).

भागुरायणः—[स्वगतम् =(To himself)], आर्यचाणक्यः आर्यचाणक्यस्तस्य प्रणिधयः आर्यचाणक्यप्रणिधयः=कौटिल्यदूताः (the emissaries of noble chanakya), न खलु (will not), अभिधास्यन्ति=कथयिष्यन्ति (say anything), [प्रकाशम् =(aloud)], कुमार (Prince), न कदाचिदपि=न कथमपि (not perhaps), शकटदासः (Shakatdasa), अभ्यास्यस्याप्रतः=राक्षसस्य पुरतः (in the presence of Rakshasa), मया लिखितम्=(is written by me), इति प्रतिपत्स्यते=स्वीकुरिष्यति (will admit), अतः (so), अस्य=एतस्य (his), प्रतिलिखितम्=अन्यलिखितम् (another writing of), अनीयताम्=अनीयस्याप्यतान् (get), वर्णसंवादे एव=अक्षरसादृश्यसम्मेलने सत्येवेत्यर्थः (the similarity of letters), एतम् (the matter), विभावयिष्यति=निर्णयिष्यति (will decide at once).

हिन्दी—सिद्धार्थक—आर्य शकटदास का ।

राक्षस—कुमार यदि शकटदास का लिखा है, तब तो मेरा ही लिखा हुआ है ।

मलयकेतु—विजये ! शकटदास को देखना चाहता हूँ ।

प्रतीहारी—कुमार की जैसी आज्ञा ।

भागुरायण—(अपने आप) आर्य चाणक्य के प्रणिधि तो बिना सोचेसमझे कुछ बहेने नहीं । (प्रकट रूप में) कुमार, सम्भवतः अमात्य राक्षस के आगे शकटदास यह न कहे कि 'यह मेरा लिखा है' उसके लेख की दूसरी प्रतिलिपि मया ही जाय—दोनों की वर्णसंवाद ही सब कुछ कह देगी ।

English—Siddharthaka—Sir, by Shakatdasa.

Rakshasa—Prince, if it is written by Shakatadas then it is written by me.

Malayaketu—Vijaya, I wish to see Shakatdas.

Warder—As prince commands.

मलयकेतुः—विजये, एवं कियताम् ।

प्रतीहारी—कुमार, मुद्रा वि । (कुमार, मुद्रापि ।)

मलयकेतुः—उभयमप्यानीयताम् ।

प्रतीहारी—जं कुमारो आपवेदिं सि । (निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य ।) कुमार, इदं तं सभ्रददासेन मल्यलिङ्गि पत्तञं मुद्रावि । (चन्द्रकुमार आज्ञापयति । कुमार, इदं तच्छब्दकृतदामेन स्वहस्तलिखितं पत्र मुद्रापि ।)

मलयकेतुः—(उभयमपि नाट्येन विलोक्य ।) आर्य, संवदन्त्यक्षराणि ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) नवदन्त्यक्षराणि । शकटदासस्तु मित्रमिति च विसंवदन्त्यक्षराणि । किन्तु शकटदासेन ।

Bhagurayan—(To himself) The emissaries of Noble Chanakya will not tell any thing that has not been well ascertained. (Aloud) Prince, perhaps Shakatdas will never own in presence of minister Rakshasa that this was written by him. So let some other of his writings be produced. The similarity of letters will at once decide the matter.

चिनला

मलयकेतुः—विजये (Vijaya), एवम् (so), कियताम् (do).

प्रतीहारी—कुमार (Prince), मुद्रापि (sealing also).

मलयकेतुः—उभयम् (Both), अपि (also), आनीयताम् (get).

प्रतीहारी—एव (As), कुमारः (Prince), आज्ञापयति (commands), [निष्क्रम्य = (Exit), and, पुनः प्रविश्य (re-entering)], कुमार (Prince), इदम् = एतत् (this), तत् (that), शकटदासेन (by Shakatdas), स्वहस्तलिखितम् = निजहस्तेन लिखितम् (is written by his own hand), पत्रम् (letter), and = (एव), मुद्रा (seal), अपि (also).

मलयकेतुः—[उभयमपि = both too], नाट्येन = अभिनयेन (gesticulating), विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at), आर्य (noble sir), अक्षराणि = वर्णाः (the characters), संवदन्ति = सादृश्यम् गमयन्ति (agree).

राक्षसः—[स्वगतम् = (to himself)], अक्षराणि = वर्णाः (the characters), संवदन्ति (agree), शकटदामस्तु (but Shakatdas is), मित्रमिति = मुद्दमिति (my friend), इति = एवं (so), विसंवदन्ति = विरुद्धमवगमयन्ति (cannot agree), अक्षराणि (letters), किन्तु शकटदासेन (may it be that Shakatdas) :-

हिन्दो—मलयकेतु—विजये, देसा ही करो ।

प्रतीहारी—कुमार, मुद्रा सो ।

मलयकेतु—दोनो दाओ ।

स्मृतं स्यात् पुत्रदारस्य विस्मृतस्वामिभक्तिना ।
चलेष्वर्थेषु लुब्धेन न यशस्वनपायिषु ॥ १४ ॥

प्रतिहारी—कुमार की जैसी आज्ञा (बाहर निकलकर और पुनः प्रवेश कर) कुमार, यह शकटदास के हाथ का लेख और यह मुद्रा है ।

मलयकेतु—(दोनों को अभिनयपूर्वक देखकर) आर्य, अक्षर की रचना तो मिलती है ।

राक्षस—(अपने बाप) अक्षर की रचना मिलती है । शकटदास तो मेरा मित्र है । और अक्षर कभी भी नहीं मिल सकते । या फिर हो भी सकता है कि शकटदास को :—

English—*Malayaketu*—Vijaya, Let this be done

Warder—Prince, the seal too.

Malayaketu—Yes, bring both

Warder—As the prince commands (going out and re-entering), prince, this is indeed a 'letter written by Shakatdas with his own hand. It is seal also.

Malayaketu—(Acting the inspection both), Noble sir, the Characters agree

Rakshasa—(To himself) The characters agree with each other, but the letter do not agree with the fact that Shakatdas is my friend May it be that Shakatdas :—

विमला

अन्वयः—विस्मृतस्वामिभक्तिना, लुब्धेन, चलेषु, अर्थेषु, पुत्रदारस्य, स्मृतम्, स्यात्, अनपायिषु, यशसु, न ॥ १३ ॥

व्याख्या—स्वामिनि भक्त्य स्वामिभक्त्य = प्रभुविषयकानुरागा (his loyalty), विस्मृताः = मनसा परिहृता (forgetting), लुब्धेन = हृच्छुकेन (greedy), शकटदासेन (by Shakatdas), चलेषु = विनाशशालिषु (transitory), अर्थेषु = धनेषु (wealth), पुत्रदारस्य = पुत्राणाम् स्त्रियस्य (of his wife and children), स्मृतम् = स्मरणम् कृतम् (should have thought), स्यात्, भवेत्, अनपायिषु = अविनाशयेषु (imperishable), यशसु = कीर्तिषु (fame), न = नहि (not) ॥ १४ ॥

हिन्दी—स्वामिभक्ति को भुल देने वाला लोभी शकटदास ने नश्वर धन के साथ पुत्र पत्नी का स्मरण किया होगा—अविनाशी यश का नहीं ॥ १४ ॥

English—Forgetting his loyalty, and coveting fleeting wealth, Shakatdas only thought of his wife and children and not of unfading fame. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिसूत्रा अलंकार एवं अगुह्य छन्द है ।

अथवा कः सन्देहः ।

मुद्रा तस्य कराङ्गुलिप्रणयिनी सिद्धार्यकस्तत्सुह-
चस्येवापरलेख्यसूचितमिदं लेख्यं प्रयोगाश्रयम् ।

सुन्यन्तं शकटेन भेदपटुभिः संघाय सार्धं परै-

र्भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन कृपणं प्राणार्थिना चेष्टितम् ॥ १५ ॥

विमला

अथवा = वा (or), कः सन्देहः (what doubt),

अन्यथाः—मुद्रा, तस्य, कराङ्गुलिप्रणयिनी, सिद्धार्यक, तत्सुहृत्, तस्य, एव, अपर
लेख्यसूचितम्, प्रयोगाश्रयम्, इदम्, लेख्यम्, सुष्यक्तम्, भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन, प्राणा-
र्थिना, शकटेन, भेदपटुभिः, पर, सार्धम्, संघाय, कृपणम्, चेष्टितम् ॥ १५ ॥

व्याख्या—मुद्रा = अङ्गुलिमुद्रा (the ring), तस्य = शकटदासस्य (his), कराङ्गु-
लिप्रणयिनी = करशास्त्रावत्तिनी (is a companion of fingers of his hand),
सिद्धार्यक (Siddharthaka), तत्सुहृत् = शकटदासमित्रम् (his friend), तस्य =
शकटदासस्य (his), एव इति निश्चयार्थक, अपरलेख्यसूचितम् = अन्यपत्रेण
प्रमाणितम् (is proved by the other writing), प्रयोगाश्रयम् = कूटनीत्या
धारभूतम् (basis of the plot), इदम् = एतत् (this), लेख्यम् = पत्रम्
(letter), सुष्यक्तम् = निश्चितम्, भर्तृस्नेहपराङ्मुखेन = स्वामिभक्तविमुखेन (face
averted from his master's kindness), प्राणार्थिना = पुत्रद्वारादिजीवनाभिला-
षिना (wishing to save his life), शकटेन (by Shakatadasa), भेदपटुभिः =
उपजापनिपुणैः (skilled in causing dissension), परैः = शत्रुभिः (with
enemies), सार्धम् = साकम् (with), संघाय = लिखितम् (having entered
into an alliance), कृपणम् = दीनम् (this mean), चेष्टितम् = व्यवसितम्
(act) ॥ १५ ॥

हिन्दी—किन्तु अब सन्देह ही क्या है ?

मुद्रा उसी की अङ्गुलि के मार की है, सिद्धार्यक उसीका मित्र है और अन्य लेख
से प्रमाणित प्रयोग का आधारस्तम्भ यह लेख नी तो उसी के हाथ का है—यह पारस्परिक
गुह्यता से सिद्ध हो चुका है। स्पष्ट है भेदनीति में चतुर शत्रुओं के हाथ में पड़कर शकटदास
ने यह कुत्सित कार्य अपने प्राणों के लोभ से अवश्य किया है। किन्तु उसने अपने स्वामी की
मक्ति एक क्षण में भुला दी है ॥ १५ ॥

English—The ring is companion of the fingers of his hand, Siddharthaka is also his friend, and the writing, basis of the plot is surely his, proved by the other writing, evidently Shakatadasa wishing to save his life has averted his face from his master's kindness and stooped to this mean act, having entered into an alliance with the enemies who are skilled in a rupture. 15

टिप्पणी—इस दृष्टिकोण में काव्यलिङ्ग तथा संयुक्त्य अलंकार है और शार्ङ्गविकीर्तित
• द है। व्यापक पदों से लिखा जा चुका है।

मलयकेतुः—(विलोक्य ।) आर्य, अलंकारत्रयं श्रीमता यदनुप्रेषितं तदुप-
गतमिति यल्लिखितं तन्मध्यात् किमिदमेकम् । (निर्वर्ण्यस्मगतम् ।) कथं तातेन
धृतपूर्वमिदमाभरणम् । (प्रकाशम् ।) आर्य, कुतोऽयमलंकारः ।

राक्षसः—वणिग्भ्यः कयादधिगतः ।

मलयकेतुः—विजये, अपि प्रत्यभिज्ञानासि भूषणमिदम् ।

प्रतीहारी—(निर्वर्ण्य सबाष्पम् ।) कुमार, कह ण पञ्चभिज्जाणामि । इदं
सुगृहीतनामधेयेण पव्वदीसरेण धारिदुपुव्व । (कथं न प्रत्यभिज्ञानामि । इदं
सुगृहीतनामधेयेन पर्वतेश्वरेण धारितपूर्वम् ।)

मलयकेतुः—(सबाष्पम् ।) हा तात,

विमला

मलयकेतुः—[विलोक्य = इष्ट्वा (noticing)], आर्य (Noble sir) श्रीमता =
कल्याणभाजनेन (by the blessed one), यत् अलङ्कारत्रयम् = त्रीण्यलङ्कारानि
(three ornaments), अनुप्रेषितम् = अनुवहितम् (have been forwarded),
तदुपगतम् = प्राप्तम् (are received), इति यल्लिखितम् = (as written), तन्मध्यात्,
इदमेकम् किम् अस्तीति (is this one of the three), [निर्वर्ण्य = इष्ट्वा (eye-
ing closely), आभरणम् = स्वगतम् (to himself), तातेन = पित्रा (by father),
एतपूर्वम् = पूर्वम् एतम् (was previously worn) इदमाभरणम् = एतदलङ्कारम्
(this piece of ornament), कथम् प्राप्तमनेनेति (how so), [प्रकाशम्
(aloud)], आर्य = मान्य (noble sir) अयमलङ्कारः = इदमाभरणम् (this orna-
ment), कुतः = कस्मादधिगतः (where did you get from).

राक्षस — वणिग्भ्यः = (From merchants), कयात् मूख्यप्रदानात् (by purchase),
अधिगतः = प्राप्तः (got).

मलयकेतुः—विजये (Vijaya), इदम् भूषणम् = एतदलङ्कारम् (this ornaments),
प्रत्यभिज्ञानासि परिचितोसि किम् (do you recognise).

प्रतीहारी—[निर्वर्ण्य = Eyeing closely सबाष्पम् (with tears)], कुमार
(Prince), कथम् न प्रत्यभिज्ञास्यामि = कुतो नावगमिष्यामि (how could not
I recognise it), इदम् = एतत् (this), सुगृहीतनामधेयेन = प्रातः स्मरणीयनाम्ना
(of auspicious name), पर्वतेश्वरेण = पर्वतस्तातेन (by Parvateswar), धारित-
पूर्वम् = एतपूर्वाणि (was worn previously).

मलयकेतुः—[सबाष्पम् = (with tears)], हा तात = ॥ वितः (Alas ! father !)

हिन्दी—मलयकेतु—(देखकर) आर्य, 'आपके द्वारा जो तीन आभूषण भेजे गये हैं, वे
मिले,' ऐसा जो आपने लिखा है, क्या उनमें से यह एक है ? (खूब देखनाल वरके अपने आद)
यह आभूषण तो पहले पिताजी पहना करते थे ? (प्रकट रूप से) आर्य, यह आभूषण आपको
कहाँ से मिला ?

राक्षस—वणिगों से खरीदा था ।

एतानि तानि तव मूपणवल्गुमस्य

गात्रोचितानि कुलमूपण मूपणानि ।

येः शोभितोऽसि मुखचन्द्रकृतावभासो

नक्षत्रवानिव शरत्समयप्रदोषः ॥ १६ ॥

मलयकेतु—विजये 'गुन्ने इस जानूया को पहचाना ?

प्रतीहारी—(पहचानतो दुइ बाँलें नरकर) कुमार, पहचानतो क्यो नही ? प्रातःस्नानप्रेष नहराज परदेशर इसे कनो पहना करत ये ।

मलयकेतु—(बाँलें में जानू नरकर) हाउ ' निशाजो !

English—*Malayaketu*—(Noticing) Noble sir, "the pieces of ornament which have been Sent by His Majesty are received" as written, is this one of the three ? (Looking at it more carefully to himself) this piece of jewellery was previously worn by my father, (Aloud) Noble sir, where did you get these ornaments from ?

Rakshasa—Got by purchase from merchants.

Malayaketu—Vijaya, do you recognise this ornament ?

Worder—(Marking closely with tears) Prince, how could I not recognise it ? this was previously worn by parvateswar of blessed name.

Malayaketu—(tearfully) Alas ! father !—

विमला

दन्वयः—हे कुलमूपण, मूपणवल्गुमस्य, तव, गात्रोचितानि, एतानि, तानि, मूपणानि, ये, मुखचन्द्रकृतावभास, नक्षत्रवान्, शरत्समयप्रदोष, इव, शोभित, असि ॥ १६ ॥

व्याख्या—हे कुलमूपण = वंशालङ्करण (the ornament of the race), मूपणवल्गुमस्य = वल्गुमानि मूपणानि यस्य स मूपणवल्गुमस्तस्य नृपावल्गुमस्य = शिवालङ्करणस्य (who love ornaments), तव = मेवतः (your), गात्रोचितानि = वदीय-शरीरयोग्यानि (worthy of your person), एतानि (these), तानि मूपणानि = अलङ्करणानि (are the ornaments) ये (by which), मुखचन्द्रकृतावभासः = सुवन् चन्द्र इव मुखचन्द्रस्तेन कृतो विहितोऽवभासो दीर्घिरेण स मुखचन्द्रकृतावभासः = आलम्ब्युविहितदीर्घि (illumined with your moon like face), नक्षत्रवान् = सतारकः (with stars), शरत्समयप्रदोषः = शरत्कालीनसन्ध्यासमयः (an autumnal evening), इव = यथा (like), शोभितोऽसि = मूपितोऽसि (were graced), ॥ १६ ॥

हिन्दी—ये वय को सुशोभित करने वाल, अलङ्काराणि, ये जानूया भी बापके दो वल्गुल ये, जिन्हें पहनकर आन्को शोभा एक शरद संध्या ओसी बन जाती थी ननो, मुखचन्द्र के साथ चमकते तारे हैं ॥ १६ ॥

English—The ornament of the race, fond of jewellery, there are those ornaments, worthy of your person, decorated with which you

राक्षसः—(स्वगतम् ।) कथं पर्वतेश्वरेण धृतपूर्वाणीत्याह । व्यक्तमेवास्य भूषणानि । (प्रकाशम् ।) एतान्यपि चाणक्यप्रयुक्तेन वणिग्जनेनास्मासु विक्रीतानि ।

मलयकेतुः—आर्य, तातेन धृतपूर्वाणां विशेषतश्चन्द्रगुप्तहस्तगतानां वणिग्विक्रय इति न युज्यते । अथवा युज्यत एवैतत् । कुतः

चन्द्रगुप्तस्य विक्रेतुरधिकं लाभमिच्छतः ।

कल्पिता मूल्यमेतेषां क्रूरेण भवता वयम् ॥ १७ ॥

appeared with light furnished by your moon like face, like an autumnal evening with the moon and the stars. (16)

टिप्पणी—एत इलोक में रूपक तथा उपमा अलङ्कार है और वसन्ततिलका छन्द है ।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = आत्मगतम् : (To himself)], पूर्वधृतानि धृतपूर्वाणि पर्वतेश्वरेण धृतपूर्वाणि=मलयकेतुतातेन पूर्व स्वदेहे परिहितानि (these were worn previously by Parvateswara), इति कथम् = कुतः (how so), आह = ब्रवीति (he says), व्यक्तमेव (evidently), अस्य भूषणानि (ornaments must be his), [प्रकाशम् = सुस्पष्टम् (aloud)], एतान्यपि (these too), चाणक्यप्रयुक्तेन = कौटिल्यप्रेरितेन (set on by Chanakya), वणिग्जनेन = (by some merchants), अस्मासु, विक्रीतानि = मूल्यमादाय समर्पितानि (sold to us).

मलयकेतुः—आर्य (noble sir), तातेन = पित्रा (by father), धृतपूर्वाणाम् = पूर्वम् स्वदेहे धृतानाम् (which were previously worn), विशेषतः = विशेषरूपेण (especially), चन्द्रगुप्तहस्तगतानाम् = मौर्यसरप्राप्तानाम् (which were in the possession of Chandragupta), वणिग्विक्रयः = वणिग्मयः व्यापारिभ्यः विक्रयः (got by purchase), न युज्यते = हायसम्भवः (could not be possible), अथवा = वा (or), युज्यत एव = उचित एव (is quite possible), एवैतत् (this), कुतः (for).—

अन्वयः—क्रूरेण, भवता, अधिकम्, लाभम्, इच्छतः, विक्रेतुः, चन्द्रगुप्तस्य, वयम्, एतेषाम्, कल्पिताः ॥ १७ ॥

व्याख्या—क्रूरेण = कठिनहृदयेन (by a cruel), भवता = स्वया (your), अधिकम् = विशेषम् (more), लाभम् = प्राप्तिम् (profit), इच्छतः = वान्छतः (wishing), विक्रेतुः = विनिमयं कर्तुः (sells), चन्द्रगुप्तस्य = कौटिल्यस्य (Chandragupta's), वयम् (we), एतेषाम् = दृश्यमानानाम् (for these), मूल्यम् = अर्थः (the price), कल्पिताः = निर्णीताः (have been offered) ॥ १६ ॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) पहले पर्वतेश्वर ने उसे धारण किया था—क्या यह सदा है ? स्पष्ट ही इसी के आभूषण हैं (सुनकर) वे आभूषण भी चाणक्य के द्वारा भेजे गये किसी व्यापारी ने मेरे हाथों बेच दिया ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अहो मुष्टिप्रोऽमृच्छन्नुप्रयोगः । कुतः-

लेखोऽयं न ममेति नोत्तरमिदं मुद्रा मदीया यतः

सौहार्दं शकटेन खण्डितमिति ध्वजेयमेतत्कथम् ।

मौर्यं भूषणविक्रयं नरपतौ को नाम संभावये-

तस्मात्संप्रतिपत्तिरेव हि वरं न ग्राम्यननोत्तरम् ॥ १८ ॥

मलयकेतु—आर्य, ये आभूरा कनो पड़े नेरे दिना के ज़रार पर शोना करने थे, और विशेषकर चन्द्रगुप्त के अधिकार में गये हुए—खराद कर प्राप्त करना वैसे उक्तिमग्न है।
अथवा—उक्तिमग्न ही है। क्योंकि—

कूर आरके द्वारा अधिक लाभ की इच्छा से, चन्द्रगुप्त के लिए इन इन आभूषणों के मूल्य बनाये गये हैं ॥ १७ ॥

English—*Rakshasa*—(To himself), How so, he says these were worn by Parvateswer, evidently they must be his. Again these were sold to me by merchants set on by Chanakya

Malaviketa—Noble sir, 'got by purchase from merchants' does not seem possible, because it had been previously worn by father, especially what fell in to the hands of Chandragupta, or perhaps it is quite possible. For :—

By you a cruel man, ourselves are the price offered for these to Chandragupta, who sells them wishing to make a more valuable profit. 17.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिशिष्ट मलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = अभ्यक्तम् = (to himself)], अहो = आश्चर्यम् (Ho), शत्रोः प्रयोगः = चाणक्यद्यूतनीतिविधिः (the enemy's plot), मुष्टिप्रः = युतिप्रः (well laid), अभूत् = जातः (was), कुतः = कस्मात् For :—

अन्वयः—अयम्, लेखः, मम, न इति, इदम्, न, उत्तरम्, यतः, मुद्रा, मदीया, शकटेन, सौहार्दम्, खण्डितम्, इति, एतत्, कथम्, ध्वजेयम्, नरपतौ, मौर्यं, भूषण-विक्रयम्, कः, नाम, संभावयेत्, तस्मात्, अत्र, सम्प्रतिपत्तिः, एव, हि, वरम्, ग्राम्यम्, उत्तरम्, न ॥ १८ ॥

व्याख्या—अयम् = एषः द्यूतप्रयोगादयः (This), लेखः = पत्रम् (letter), मम न = नैतत्पत्रम् मया लिखितमिति = (is not my), इति = इत्थम् (like so), इदम् = एतत् (this is), न = अयुक्तम् (not), उत्तरम् = प्रतिवचनम् (answer), यतः = यस्मात् (because), मुद्रा = लेखे प्रदत्ता बह्वक्षिमुद्रा (the seal), मदीया = मानकीना (mine), शकटेन = शकटदासेन (by Shakatadas), सौहार्दम् = मित्रत्वम्

मलयकेतुः—एतदार्यं पृच्छामि ।

राक्षसः—(सवाप्यम् ।) कुमार, य आर्यस्त पृच्छ । वयमिदानीमनार्याः
संवृत्ताः ।

(friendship), खण्डितम्=भग्नम् (has been severed), इति=(only for पादपर्यन्तम्), एतत्=वच (it), कथम्=केन प्रकारेण (how is), ध्वेयम्=विश्वासयोग्यम् (believable), नरपती=राज्ञि (the king), मौर्यं=चन्द्रगुप्त (in Maurya), भूषणविक्रयम्=अलङ्कारमूल्यप्रदणम् (the sale of ornaments), क=को जनः (who), नामेति सभावनायाम्-सभावयेत्=विश्वसेत् (would think), तस्मात्=अतः (so), अत्र=अस्मिन्विषये (in this matter), सम्प्रतिपत्तिः=स्वीकरणमेव (admission), एव=इति निश्चये (indeed), हि=पत वरम्=श्रेष्ठम् (is preferable), सामान्यम्=अव्यक्तम् (the ordinary), उत्तरम्=आलोचन (reply), न=नवरम् (not) ॥ १८ ॥

हिन्दी—राक्षस—(मन हो मन) अहो ! उछु को झूठ-रचना दूँ है । क्योंकि —

यह छेड़ मेरा नहीं है, यह उत्तर मन नहीं पाता—क्योंकि इस पर मुद्रा मेरी है । शकट दास ने मित्रता तोड़ दी है, यह कैसे विश्वास के योग्य हो सकता है ? राजा चन्द्रगुप्त के विषय में आभूषणों का बेचना—कौन सभासना कर सकता है ? अतः इस विषय में वैदाह उत्तर की अपेक्षा स्वीकार कर लेना ही अष्ट है ॥ १८ ॥

English—Rakshasa—(To himself), Oh, The foe's plot was skilfully laid. For .—

"This is not my document" is not proper answer, because the seal is mine. How it can be believed that friendship has been severed by Shakatdasa ? Again who will possibly expect the sale of ornaments by Maurya the king ? So in this matter admission indeed is better than a churlish reply. ॥

द्विप्यगी—उत्तरम्—शास्त्रों में उत्तर चार प्रकार के माने गये हैं । (१) मिथ्या उत्तर (२) प्रत्यवस्कन्दन (३) सम्प्रतिपत्ति एव (४) प्राह्व्याय । यहाँ राक्षस ने मलयकेतु द्वारा पूछे गये प्रश्नों के विषय में विशिष्टमन्त्र विचार कर 'सम्प्रतिपत्ति' उत्तर का ही सहारा लिया है । सम्प्रतिपत्ति का अर्थ है —कुत्रापिभीषण प्रत्यापी यदिच प्रतिपत्तये । सा तु सम्प्रतिपत्ति स्यात् शास्त्रवद्विवादना ॥ इस श्लोक में कान्वलित्व अलङ्कार तथा शार्दूल विकीर्णित छन्द है । प्रसाद गुण एव वैदर्भी रीति है ।

निमला

मलयकेतु—आर्यम्=(Noble sir), एतत् (this), पृच्छामि (I ask)

राक्षस —(सवाप्यम् =नेत्राश्रुया सह =with tears)) कुमार (Prince), यः=पुरुषः (who is), आर्यः=मान्य (noble), तम्=पुरुषविशेषम् (to whom), पृच्छ=जिज्ञासस्व (ask), वयम् (we), इदानीम्=सामयतम् (now), अनार्याः=आर्यत्व रहिता (not a man of honour), संवृत्ताः=जाताः (have turned).

मलयकेतु —

मौर्योऽसौ स्वामिपुत्रः परिचरणपरो मित्रपुत्रस्तवाहं

दाता सोऽर्थस्य तुभ्यं स्वमतमनुगतस्त्वं तु मह्यं ददासि ।

दास्यं सत्कारपूर्वं ननु सचिवपदं तत्र ते स्वाम्यमत्र

स्वार्थे कस्मिन् समीहा पुनरधिकतरे त्वामनार्यं करोति ॥ १९ ॥

अन्वयः—असौ, मौर्य, स्वामिपुत्र, परिचरणपर, अहम्, तत्र, मित्रपुत्र, स, स्वमतम्, तुभ्यम्, अर्थस्य, दाता, तु, अनुगत, वम्, मह्यम्, ददासि, तत्र, सत्कारपूर्वम्, सचिवपदम्, दास्यम्, ननु, अत्र, ते, स्वाम्यम्, पुन, अधिकतरे, कस्मिन्, स्वार्थे, समीहा, त्वाम्, अनार्यम्, कराति ॥ १९ ॥

व्याख्या—असौ = ९५ (this), मौर्य = चन्द्रगुप्त (Chandragupta), स्वामि-
पुत्र = प्रभुसूतनय (master's son), परिचरणपर = मवासक (in constant atten-
dance), अहम् = मलयकेतु (I), तत्र = भवत (your) मित्रपुत्र = सुहृत्सूतनय (fri-
end's son) स = असौ (he), स्वमतम् = स्वामिप्रायानुरूपम् (your own
humour), तुभ्यम् = भवते (for you), अर्थस्य = धनस्य (of wealth), दाता =
वितरणकर्त्ता (giver), तु = किन्तु (but), अनुगत = अनुसृत सन् (following),
वम् (you), मह्यम् (for me), ददासि = वितरामि (give), तत्र = मौर्ये (there),
सत्कारपूर्वम् = सम्मानपुरस्सरम् (by honour) सचिवपदम् = मन्त्रिपदम् (the post
of minister), दास्यम् = श्रयत्वम् (slavery), ननु = ओ (oh), अत्र = अस्मिन्
स्थाने (here), ते = तव (your), स्वाम्यम् = प्रभुत्वम् (mastery), पुन (again)
अधिकतर = हतोऽपि विप (weightier), कस्मिन् स्वार्थे = स्वाभिलषित (for
which self interest), समीहा = वाञ्छा (wishing) त्वाम् = भवन्तम् (to you),
अनार्यम् = असदाचारम् (ignoble), कराति = विदधाति (does make) ॥ १९ ॥

हिन्दी—मलयकेतु—आज से यह पूना चाहता हूँ ।

राक्षस—(अश्रुत होकर) कुनार, अब जो आय हो उनसे घृष्ट । मैं अब अनार्य हो चुका हूँ ।

मलयकेतु—वह मौर्यपुत्र चन्द्रगुप्त तुम्हारे नाटिक का बना है और मैं तुम्हारे सेवा में तबपर तुम्हारे मित्र का पुत्र हूँ । वहाँ स्वच्छापूर्वक चन्द्रगुप्त तुम्हें उन देने वाला है, किन्तु, यहाँ अनुसरण किए बिना तुम मुझे धन देते हो । वहाँ सम्मान दिये ये सचिव पद को दास्य है और यहाँ तुम्हारी प्रभुता है । फिर इससे अधिक वह कौन सी स्वार्थपरक इच्छा तुम्हें अनार्य बना रही है ? ॥ १९ ॥

English—Malayaketu—I ask Noble sir this

Rakshasa—(With tears) Prince ask him who is noble man I have now turned ignoble

Malayaketu—That Maurya is your master's son, while I am the son of your friend in constant attendance . He, well served, is the giver of wealth to you, but unto me you give following your own humour . There you will have, indeed, the post of minister which

राक्षस—कुमार, एवमुक्तव्याहारिणा निर्णयो दत्तः । भवतु तव को दोषः ।
(मौर्योऽसौ स्वामिपुत्रः (५११) इति युष्मदस्मदोर्व्यत्ययेन पठति ।)

मलयकेतु—(लेखमलकरणस्यगिका च निर्दिश्य ।) इदमिदानीं किम् ।

राक्षस—(सवाप्पम् ।) विधिविलसितम् । कुतः

भृत्यत्वे परिभावधामनि सति स्नेहात् प्रभूणां सता

पुत्रेभ्यः कृतवेदिनां कृतधिया येषां न मित्रा वयम् ।

ते लोकास्य परीक्षकाः क्षितिभृतः पापेन येन क्षताः

स्तस्येदं विपुलं विधेर्विलसितं पुंसां प्रयत्नच्छिद ॥ २० ॥

18 but slavery preceded by honour, while here mastery. Regard for which weightier self interest than does make you dishonour ? 19

टिप्पणी—इत इलाक में क्यासरय अलकार तथा लम्बरा इत है ।

विमल्ला

राक्षस—कुमार (Prince) एवम्=इत्थम् (like this) अयुक्त व्याहरति तच्छ्रीलोऽयुक्तव्याहारी तेन अयुक्त व्याहारिणा=अनुचितवादिना (in uttering these unworthy things) निर्णय=निर्णायकमुत्तरम् (the decisive answer) दत्त=दातुमुपदिष्ट (have given) भवतु=यातु (well) तव=भवत (your) को दोष (is it not fault) (मौर्योऽसौ स्वामिपुत्र ५११) “That Maurya etc 5 19” इति युष्मदो व्यत्ययेन=युष्मत्पदस्थानेऽस्मात्पदस्थाऽस्मत्पदस्थाने युष्मत्पदस्य च परिवर्तनम् कृत्वा (substituting the second personal pronoun for the first, and vice versa) पठति=वाचयति (he repeats the verse)

मलयकेतु—(लेखम्=पत्रम्=letter) अलकरणस्यगिकाम्=आभरणपेटिकाम् (the box containing the ornaments), च=पुन (and), निर्दिश्य=दर्शयित्वा वा उद्दिश्य पठति (pointing), इदम्=एतत् (this), इदानीम्=अधुना (now), किम् (what)

राक्षस—[सवाप्पम्=साधुनयनम्= (with tears)], विधेर्विलसितम् विधिविलसितम्=दैवकृतम् (fate's play), इदम्=एतत् (this), कुत=For—

अन्वयः—कृतधियाम्, कृतवेदिनाम्, सताम्, येषाम्, प्रभूणाम्, परिभावधामनि, भृत्यत्वे सति, स्नेहात्, वयम्, पुत्रेभ्यः, मित्रा, न लोकास्य, परीक्षका, ते, क्षितिभृतः, येन, पापेन, क्षता, पुंसां, प्रयत्नच्छिद तस्य, विधे, इदम्, विपुलम्, विलसितम् ॥२०॥

व्याख्या—कृता=परिनिष्ठिता धीर्येषाम् ते कृतधियस्तेषाम् कृतधियाम्=परिनिष्ठितबुद्धीनाम् (of refined intellect), कृत विदन्ति तच्छ्रील कृतवेदिनस्तेषां कृतवेदिनाम्=उपकारज्ञानाम् (being grateful), सताम्=साधुशीलानाम् (good men), येषां=नन्दादीनाम् प्रभूणाम्=स्वामिनाम् (masters), परिभावस्य धाम परिभावधाम तस्मिन् परिभावधामनि=तिरस्कारास्पदे (the abode of insult), भृत्यत्वे सति=दास्यत्वे जाते (was the relation of servitude), स्नेहात्=मोक्षः (out of

मलयकेतुः—(सरोपम् ।) किमद्यापि निह्रूयते एव । विधेः क्लितैतद्व्यव-
सितम् ; न लोभस्य । अनार्य,

affection), वयम् (we), पुत्रेभ्यः=सुतेभ्यः (from sons), भिन्ना =अन्याः
(different), न=नहि (not), लोकस्य=जनस्य (of man), परोक्षकाः=चरित्र-
वेदिनः (proper Judges), ते (they), चित्तिमृत्कः=राजानः (the kings),
येन विधिना (as), पापेन=पापविशिष्टेन (through the accursed), वृताः=विना-
शिताः (destroyed), पुंसाम्=पुरुषेणाम् (men's), प्रयत्नच्छिद्=उद्योगनाशिनः
(frustrator of exertions), तस्य (that), विधेः=दैवस्य (Fate's), इदम्=
एतत् (this), विपुलम्=महत् (vast), (play) ॥ २० ॥

हिन्दी—राक्षस—देवी अनुचित बानें कहते हुए कुमार ने अपना निर्गम्य पहले ही दे
दिया है—अन्तु हमने तुम्हारा मो दोष क्या ? (मौर्योऽसौ स्वामिपुत्र ५।१९, इस श्लोक को
मुम्बई और अस्मद शब्दों को अदल-बदल कर पढ़ता है ।)

मलयकेतु—(खेल और आभूषण पेटिका की ओर संकेत करके) अच्छा, यह क्या है ?

राक्षस—(लौं नर कर) भाग्य को विडम्बना है । क्योंकि —

जो प्रचण्ड बुद्धिमान, कुतश्च, एवं सम्बन्ध य, जिन राजाओं के—अनादर के स्थान दासता
के रहने पर भी स्नेह के कारण हम लोग पुत्र से भिन्न नहीं थे—वे लोकचार के सच्चे पारखी
थे, किन्तु, जिस पापी ने उन्हें भी समाप्त कर दिया । पुरुषों के प्रयत्न को विनष्ट कर देनेवालों
उसी क्रूर नियति की यह विडम्बना है ॥ २० ॥

English—Rakshasa—Prince, in speaking these unworthy reply, you have yourself given the decisive answer. Well, it is not your fault. (Repeats 'मौर्योऽसौ 5/19' with interchange of the second personal pronoun for the first, and vice versa)

Malayaketu—(Pointing at the letter and the box containing the ornaments) And what is this here ?

Rakshasa—(with tears) Fate's play For :—

It is the vast work of fate, that cuts short human which the villain destroyed those kings who were the proper judges of men, and who, masters as they were, being grateful and of refined intellect, and to whom out of affection, we were not different from sons, although there was the relation of servitude, which is the abode of insults, not withstanding. (20).

टिप्पणी—इस श्लोक में अतिशयोक्ति और परिमेलना के समिश्रण से सृष्टि अद्भुत है । इसमें वृत्त शार्दूलविकीर्णित है ।

विमला

मलयकेतु.—[सरोपम्=सकपम् (angrily), किम्=क्यम् (what), अद्यापि=सम्प्रत्यपि (even now), निह्रूयते=गोप्यते (being concealed), एव विधेः=

कन्यां तीव्रविषप्रयोगविषमा कृत्वा कृतघ्न त्वया
 विश्रम्भप्रवणं पुरा मम पिता नीतं कथाशेषताम् ।
 संप्रत्याहितगौरवेण भवता मन्त्राधिकारे रिपौ
 प्रारब्धा प्रलयाय मासवद्दहो विक्रेतुमेते वयम् ॥ २१ ॥

दैवस्य (fate's), किल निश्चयार्थं एतत्=इदम् (this), व्यवसितम्=कृत्यम् (the work), न लोभस्य (not of greed), अनार्यं (Ignoble man),

अन्वय—हे कृतघ्न, पुरा, त्वया, तीव्रविषप्रयोगविषमाम्, कन्याम्, कृत्वा, विश्रम्भप्रवणं, मम, पिता, कथाशेषताम्, नीतं, अहो, सम्प्रति, मन्त्राधिकारे, आहित गौरवेण, भवता, एते वयम्, प्रलयाय, रिपौ, मासवत्, विक्रेतुम्, प्रारब्धा ॥ २१ ॥

व्याख्या—कृत इतीति कृतघ्न तत्सदुद्धौ हे कृतघ्न=अविश्वासिन् (O, ungrateful one), पुरा=प्राक् (formerly), त्वया=भवता (by you), विषस्य प्रयोग विषप्रयोग तीव्रो विषविद्योगो यस्यां सा तीव्रविषप्रयोगा सा चासौ विषमाताम् तीव्र विषप्रयोगविषमाम्=तीव्रगहलाहलप्रयोगघोराम् (dangerous by the use of virulent poison), कन्याम्=तनयाम् (the maid), कृत्वा=विधाय (having employed), विश्रम्भप्रवणं=अतिविश्वास्त (prone to be trusting), मम=मलयकेतो (my), पिता (father), कथाशेषताम्=चयम् (to the domain of history), नीतं=गमित (got), अहो=आश्चर्यम् (Alas), सम्प्रति=अधुना (now), मन्त्राधिकारे=सचिवपदे (coveting the office of minister) आहितगौरवेण=आहितम् प्राप्तम् गौरवम् येन स तपोऊस्तेनाहितगौरवेण=प्राप्त महत्वेन (attached with a great), भवता=त्वया (by you), एते=वयम् कृत विश्रम्भा (there), वयम् (we), प्रलयाय=विनाशाय (for destruction), रिपौ-शत्रौ (to the enemy), मासवत्=कम्पमिव (like meat), विक्रेतुम्=पणायितुम् (to be sold), प्रारब्धा=प्रकाम्तास्थिरकृता (going to be) ॥ २१ ॥

हिन्दी—मलयकेतु—(कोप के साथ) क्या अब भी छिपाया जा रहा है ? यह नियति की विद्वन्ना है, लोभ वा नहीं ? अनार्य !

हे कृतघ्न ! प्रथम अत्यन्त ही तीव्र विष के प्रयोग से पातक बनी बालिका का उपयोग कर, आपने अपने ऊपर अत्यन्त विश्वास मेरे पिता का विनाश कर दिया । हाँ कष्ट, अब मन्त्रिपद के अभिलाषी आपके द्वारा हम विनाश के लिए शत्रु के पास मांस की तरह बेचे जा रहे हैं ॥ २१ ॥

English—*Malayaketu*—(angrily) What ! even now being concealed it is indeed the work of fate not of greed ! ignoble man !

O, you ungrateful person, previously, having a virulent poison, consigned my father, trustingly following you, to the domain of history And now esteem having been placed in you in the department of counsel, Alas ! we are going to be sold by you like meat to the enemy for utter extinction 21)

राक्षस—(स्वगतम् ।) अग्रमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः । (प्रकाशम् । कर्णौ पिपाय ।) शान्त पाप शान्त पापम् । नाहं पर्वतेश्वरे विषकन्यां प्रयुक्तवान् ।

मलयकेतुः—केन तदि न्यापादितस्तातः ।

राक्षसः—देवमत्र प्रष्टव्यम् ।

मलयकेतुः—(सक्रोधम् ।) देवमत्र प्रष्टव्यम् । न क्षपणको जीवसिद्धिः ।

राक्षस—(स्वगतम् ।) कथं जीवसिद्धिरपि चाणम्यप्रणिधिः । हन्त, रिपुभिर्न हृदयमपि स्वीकृतम् ।

टिप्पणी—नम्बत् न तादृश्यान् क्त' शब्द के प्रयोग के कारण इस श्लोक में श्रौती पूर्णपना अलंकार है। वृत्त है शार्ङ्ग विक्रीप्ति ।

प्रिमला

राक्षस—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], गण्डस्य=गणविशेषस्य (the carbuncle), उपरि (on), अग्रम्=एष (this), अपरम्=अन्य (a fresh), स्फोटः=व्यग (boil), [प्रकाशम्=(aloud), कर्णौ पिपाय=(blocking the ears)], शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम्=वीच्याया द्विरुक्ति (Be gone Sin ! Begone Sin !), अहम्=राक्षस (I), पर्वतेश्वरे (on Parvateswara), विषकन्याम्=विपरचिततनयाम् (poison maid), न=नहि (not), प्रयुक्तवान्=आरोपितवान् (set).

मलयकेतु—तदि=तदा (then), केन=कुरुकर्मकारिणा (by whom), तात=पिता (father) व्यापादित=विनाशित (killed)

राक्षस—अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), दैवम्=भाग्यम् (to fate), प्रष्टव्यम्=(should be questioned)

मलयकेतु—[सक्रोधम्=सक्रोधम्=(angrily)], दैवमत्र प्रष्टव्यम् (fate should be questioned about it), न=नहि (not), क्षपणक=वीक्षसन्पातिवेप (the mendicant), जीवसिद्धि (Jivasidhi)

राक्षस—[स्वगतम्=(to himself),] कथम्=किय (how so), जीवसिद्धिरपि (Jivasidhi also), चाणम्यप्रणिधि=कोटिस्वयम्भूतचर (an emissary of Chana-kya) हन्त=अहं (alas), मे=मम (my), हृदयमपि=चित्तमपि (heart too), रिपुभिर्=शत्रुभिर् (by enemies), स्वीकृतम्=गृहीतम् (is owned)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) यह फोटे पर पुन्नी है । (प्रकट रूप में) पाप शान्त हो, पाप शान्त हो । मैंने महाराज पर्वतेश्वर के लिए विषकन्या का प्रयोग नहीं किया था ।

मलयकेतु—तो कितने पिता या की इत्यादी ?

राक्षस—इस विषय में भाग्य से ही पूछना चाहिए ।

मलयकेतु—(क्रोध के साथ) इस विषय में भाग्य से पूछना [चाहिए, क्षपणक जीवसिद्धि से नही ।

राक्षस—(अपने आप) क्या जीवसिद्धि भी चाणम्य का गुप्तचर है ? हा कह ! शत्रुओं ने मेरा हृदय भी अपने अधिकार में कर लिया है ।

मलयकेतुः—(सक्रोधम् ।) भासुरक, आज्ञाप्यतां शेखरसेनः—‘य एते राक्षसेन सह सुदृत्तामुत्पास्यास्मच्छरीरद्रोहेण चन्द्रगुप्तमाराधयितुकामाः पञ्च राजानः कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनृपतिः सिंहनादः काश्मीरः पुष्कराक्षः सिन्धु-राजः सुपेणः पारसीकाधिपो मेघनाद इति, एतेषु त्रयः प्रथमे मदीयां भूमिं कामयन्ते ते गम्भीरवध्रमभिनीय पांशुभिः पूर्यन्ताम् । इतरी हस्तिबलकामुक्ती हस्तिनैव घात्येताम्’ इति ।

English—*Rakshasa*—(To himself) This is fresh boil on the carbuncle. (Aloud blocking the ears) Begone Sin, Begone Sin ! I never set the poison maid against Parvatesever.

Malayaketu—Who then killed my father.

Rakshasa—Ask Destiny.

Malayaketu—(Angrily) I should question Destiny and not mendicant Jivasidhi.

Rakshasa—(Aside) Jivasidhi too, a Spy of Chanakya. My heart is also owed by the enemies.

निमला

मलयकेतुः—[सक्रोधम् (In wrath)], भासुरक (Bhasurak), आज्ञाप्यताम्=आदिशताम् (let be orderd), शेखरसेन=पुतदास्यः सेनापतिः (Shekharsen the Commander-in-chief), ये=चित्रवर्मप्रभृतयः (of these), पञ्च-राजान्=नृपतयः (five kings), एतेन=अनेन (by this), राक्षसेन सह=नदायकेन मन्त्रिणा सार्द्धम् (with Rakshasa), सौहार्दम्=मित्रत्वम् (friendship), उत्पाद्य=सम्पाद्य (having contracted), अस्माकं शरीरम् अस्मच्छरीरम् तस्य द्रोहस्तेन अस्मच्छरीरद्रोहेण=मरकायविनाशेन (by injuring our person), चन्द्रगुप्तम्=मौर्यम् (to Chandragupta), आराधयितुम् कामो येषां ते आराधयितुकामाः=सेवितुमनसः (wish to gain Chandragupta's favour), एतेषु=पञ्चसु राजेषु (among the five kings), त्रयः प्रथमे (first three), कौलूतश्चित्रवर्मा (Chitravarma of Kuluta), मलयनृपतिः सिंहनादः (Singhnada the king of Malaya), काश्मीरः पुष्कराक्षः (Puskaraksha of Kashmir), मदीयाम् (my), भूमिम्=राज्यम् (lands), कामयन्ते=वाञ्छन्ति (covet), ते=त्रयः (them), गम्भीरवध्रम्=गम्भीरगर्भम् (deep pit), अभिनीय=उपनीय (should be taken). पांशुभिः=रजोभिः (with sand), पूर्यन्ताम्=आच्छाद्यन्ताम् (covered over), इतरी=अन्यौ (the other) सिन्धुराजः सुपेणः (Sukhen the king of Sindhu), and पारसीकाधिपो मेघनादः (Meghnada the lord of Persia), हस्तिबलकामुक्ती=गज-सेन्यामिठापुक्ती (wish to have elephants), हस्तिनैव=यज्ञेनैव (by means of an elephant), घात्येताम्=विनाशयेतामिति (should be killed),

पुरुषः—तथा । (इति निष्पद्यन्तः ।)

मलयकेतुः—(सङ्कोचम् ।) राक्षस राक्षस, नाहं विवर्मवाती राक्षसः ।
मलयकेतुः खल्वहम् । तन्नन्त्र । समानीयतां सर्वान्मना चन्द्रगुप्तः । परम्—

विष्णुगुप्तं च मीर्यं च सममप्यागती त्वया ।

उन्मूलयितुमांशोऽहं विवर्गमिव दुर्नयः ॥ २२ ॥

पुरुषः—तथा (As your Highness commands), [इति निष्पद्यन्तः=Exit].

मलयकेतुः—[सङ्कोचम् (Angry)], राक्षस, राक्षस=द्विसकितिशयक्रोधावेणात्
Rakshasa, Rakshasa ' अहम् (I), न=नहि (not), विवर्मवाती=विषात-
घातक (the murderer of the confiding), राक्षस (Rakshasa), अहम्
(I), खलु=निश्चयेन (Inde-d), मलयकेतुः (Malayaketu), तदन्वत्स्मात्
(so), गच्छ=म्यानाम्तरम् याहि (go), सर्वान्मना=सर्ववकारेण (with all your
heart), चन्द्रगुप्त (to Chandragupta), सममप्यागताम्=ममेवताम् (serve),
परम् (see)

हिन्दी—मलयकेतु—क्रोध के साथ) नाशुराज गिरहतेन को आशा दो 'जो मे पाँच
राजे राक्षस के साथ मैत्रो करके चन्द्रगुप्त का सेवा करने को इच्छा बाडे नेरे प्राप्ताव को
योजना बना रहे थे—चन्द्र देव का बनेने विवर्गना, मलय देव का राना सिद्धान्त,
काश्मीर का शासक पुष्कराक्ष, सिन्धुराज सुखेन और पारसिक देश का अधिराज मेघनाद है—
इनने प्रथम तीन नेरी भूमि चाहते हैं। इन्हें नहरे मन्त्र ने यादकर निन्दो से ॥२२॥ दिना जान।
खल्व दो जो इनारी इच्छिनेना के इच्छुक है, उन्हें इच्छिनी के पैरों तले रोंदना दिया बाप।

पुरुष—वैसी भाडा । (कहकर निकट गया)

मलयकेतु—क्रोध के साथ) राक्षस, राक्षस ' मैं विवर्मवात करने काडा राक्षस
नहो हूँ, मैं मलयकेतु हूँ। बाओ ' सर्वगोनावेन चन्द्रगुप्त को सेवा करो। देखो :—

English—Malayaketu—(In wrath) Bhasuraka ' Let Shikharsena the
Commander-in-chief be ordered thus—of these five kings—Chitravarma
of Kuluta, Singhbad king of Malaya, Puskaraksa the king of Kashmira,
Sukhen king of Sindhu and Meghnad of Persia having contracted
friendship with Rakshasa wish to gain Chandragupta's favour
by injuring our person, the first three covet my territory; they should
be taken to a deep pit and covered over with sand, let the other
two, who wish to have elephants be killed with elephant.

Man—As the Prince commands. (Exit)

Malayaketu—(In a wrath) Rakshasa ' Rakshasa ' I am not
a Rakshasa the murderer of the confiding. I am indeed Malayaketu,
go, and serve Chandragupta with all your heart. See :—

प्रिमला

अन्वयः—अहम्, त्वया, समम्, आगतौ, विष्णुगुप्तम्, च, मीर्यम्, अरि, दुर्नयं,
विवर्गम्, इव, उन्मूलयितुम्, ईक्षः ॥ २२ ॥

भागुरायणः—कुमार, कृत कालहरणेन । साग्रत कुसुमपुरोपरोधायाज्ञाप्य-
न्तामामस्मद्बलानि ।

गौडीनां लोधधूलिपरिमलबहुलान्धूमयन्त. कपोलान्
क्लिञ्चन्त. कृष्णिमानं भ्रमरकुलरुच. कुञ्चितस्यालकस्य ।

पाशुस्तम्बा चलानां सुरगसुरपुटक्षोभलब्धात्मलाभाः

शत्रूणामुत्तमाद्रे गजमदसलिलच्छिन्नमूला. पतन्तु ॥ २३ ॥

व्याख्या—अहम् = मलयकेतु (1), त्वया = भवता (with you), समम् =
सार्धम् (with), आग्रतौ = समागतौ (advanced), विष्णुगुप्तम् = कौटिल्यम्
(Chanakya), च = पुन (and), मौर्यम् = चन्द्रगुप्तम् (Chandragupta),
अपि (also), दुर्नयं = दुष्टनीति (bad policy), त्रिवर्गम् = धर्मार्थकामसमूहम्
(the group of three), (piety, prosperity and propensity), इव = यथा
(like), उन्मूलयितुम् = विनाशयितुम् (to uproot), ईश = समर्थ (able), ॥ २३ ॥

हिन्दी—मैं तुम्हारे साथ आये हुए चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त को भी उखाड़ फेंकने में अकेल
उत्ती प्रवार समर्थ हूँ जैसे एक ही आचारदोष मनुष्य के त्रिवर्ग—धर्मार्थकाममोक्ष को विनष्ट
कर देता है ॥ २३ ॥

English—I am able to uproot Chanakya and Chandragupta also
though advanced with you, as bad policy does the three objects
of life 22

टिप्पणी—इस श्लोक में उपमा अलङ्कार एवं अनुष्टुप छन्द है ।

विमला

भागुरायण — कुमार (Prince), कालहरणेन = समयवापनेन (longer delay),
कृतम् = अलम् (must no), साग्रतम् = अधुना (now), कुसुमपुर = (Kusum
pura), उपरोधाय = रोद्धुम् (to lay siege), अस्मद्बलानि = अस्मत्सैन्यानि
(our forces), आज्ञाप्यन्ताम् = प्रेष्यन्ताम् (be ordered)

अन्वयः—गौडीनाम्, लोधधूलिपरिमलबहुलान्, कपोलान्, धूमयन्त, भ्रमर-
कुलरुच, कुञ्चितस्य, अलकस्य, कृष्णिमानम्, किरनन्त, चलानाम्, सुरगसुरपुटक्षोभ-
लब्धामलाभाः, गजमदसलिलच्छिन्नमूला, पाशुस्तम्बा, शत्रूणाम्, उत्तमाद्रे, पतन्तु ॥ २३ ॥

व्याख्या—गौडीनाम् = गौडदेशवासिस्त्रीणाम् (the women of Gauda),
लोध्राणाम् पुष्पविशेषाणाम् या धूल्य परागा तेषा परिमलेन आमोदेन बहुलान्
ग्याप्तान् लोधधूलिपरिमलबहुलान् = लोधपुष्पविशेषपरागामोदग्याप्तान् (rich in
the fragrance of the pollen of 'Lodhra' flowers), कपोलान् = गण्डप्रदेशान्
(to the cheeks), धूमयन्त = मलिनयन्तः (a smoky hue), भ्रमराणाम् कुल =
भ्रमरकुलस्तस्य या रक्ता इव या रक् यस्य तादृशस्य भ्रमरकुलरुच = मधुपवृन्द-
कान्ते (resembling a swarm of black bees), कुञ्चितस्य = कुटिलस्य (curly),
अलकस्य = चूर्णकुन्तलस्य (hair), कृष्णिमानम् = काष्ण्यम् (the black colour),
किरनन्त = अपनयन्तः (obscuring), चलानाम् = अस्मत्सैन्यानाम् (our forces),
शत्रूणां सुरपुत्रा सुरगसुरपुत्रा सुरगसुरपुत्रैः क्षोभस्तुरगसुरपुत्रोभरतेन लब्ध

(सपरिजनो निष्कान्तो मलयकेतुः ।)

राक्षसः—(सावेगम् ।) हा धिक्कट्टम् । तेऽपि घातिताश्चित्रवर्माद्यस्तप-
स्विनः । तत्कथं सुदृष्टिनाशाय राक्षसश्चेष्टते न रिपुमिनाशाय । तत्किमिदानीं
मन्दभाग्यः करवाणि ।

आत्मलानो येस्ते सुरगन्धुपुटशोभलम्बामलम्बाः = अश्वक्षपाग्रचूर्णनप्राप्तजन्मानः
(risen from the tread of the hoofs of horses), गजानाम् मदाः गजनदास्त
एव सलिलानि तैरिच्छिन्नम् मूलम् येषाम् ते गजनदसलिलच्छिन्नमूलाः = करिमद्वारि
विनाशितजन्माः (having their roots severed by the rut-water of the
elephants), पायुस्तम्बाः = राजराशयः (the columns of dust), शत्रूणाम् =
रिपूणाम् (of the enemies), उत्तनाद् = शिरसि (on the head), पतन्तु =
तिष्ठन्तु (let descend), ॥ २३ ॥

हिन्दी—मागुरायन—कुमार, समय व्यर्थ न नष्ट किया जाय । कुसुमपुर पर
वेरा डालने को आज्ञा यह हमारे सैनिकों को दी जाय ।

गजदेवीर पुत्रियों के लक्ष्म-वृत्ते में सुराजिब कसोठों को धूमिल करने हुए, अनरपक्षि
को गरह काठ लहराते घुराव डनके वृत्तों को नातिमा को विनष्ट करने हुए, सेनाओं के
घोड़ों के लुरों के अजनाम को घोड़ों से उतराव होने वाले, गजों के मदजल से नष्ट मूल वाले,
धूलियों के उठने हुए बादल शत्रुओं के नस्तक पर पड़े । २३ ॥

English—*Bhagurayan*—Prince, away with wasting of time.
Let our forces be now ordered to lay sieges to Kusumpura.

Let the columns of dust, the attainment of whose self is derived
from the pounding with the hoofs of the cavalry and whose bases
are detached by the rut water of the elephants, descend on the heads
of enemies, imparting a smoky hue to the cheeks of the women of
Gauda that are rich in the fragrance of the pollens of Lodhra flowers
and obscuring the darkness of their curly hair resembling a swarm
of black bee. 23.

टिप्पणी—इन शब्दः—धृन् + भवन् + शिच् + शत्रु + विभक्तिकार्त्तः । कृष्णमानम्—कृष्ण +
इम शिच् + कृष्णिमा तन् । इम श्लोक में —

(१) काठ और अलक के निजरागपूर्वक पाशुगुणप्रदग् करने के कारण नरगुण अलकार
है । (२) अनरकुलवच में 'द्व' शब्द के अभाव के कारण—नुस्रोपमा अलङ्कार है । (३) 'गजमद-
मलिल' में रूपक अलङ्कार है । (४) पाशु-मूद के कपोल, अलक और शत्रु के मलिनिक के साथ
सम्बन्ध से पर्याय अलङ्कार है । (५), रिपुजय के लिए सैन्यममारोह के स्वाभाविक वर्णन से
स्वभावोक्ति का सकर है । सग्यरा वृत्त है ।

विमला

(सपरिजनः=परिजनसहितः, निष्कान्तः=बहिर्गतः, मलयकेतुः)

राक्षसः—[सावेगम्=सञ्चितम् (With agitation)] हा धिक्कट्टा इति चेदे, धिपिति
निन्दनीयम् (oh, fie), कष्टमदुःखम् (what a misfortune !), तेऽपि (they

किं गच्छामि तपोवनं = तपसा शाम्येत् सवैरं मनः

किं भर्तृन्नुयामि जीवति रिपौ स्त्रीणामियं योग्यता ।

किं वा खड्गसखः पताभ्यरिवले नैतच्च युक्तं भवे-

चेतश्चन्दनदासमोक्षरभसं रुन्ध्यात् कृतघ्नं न चेत् ॥ २४ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

पञ्चमोऽङ्कः ।

too), तपस्विनः = तपश्चरकपीडाः (poor Chitravarma and others), घातिताः = विनाशिताः (are slain), तत् = तस्मात् (so), राक्षसः (Rakshasa), सुहृद्भिर्नाशाय = मित्रविघाताय (for the destruction of his friends), कथम् = कुतः (how), चेष्टते = उद्युक्ते (is working), न रिपुविनाशाय = न शत्रूच्छेदाय (not of his enemies), तत् = तस्मात् (so), इदानीम् = अद्य (now), मन्दभाग्यः = भाग्यहीनः (an unlucky man), किं करवाणि = किं विदधानि (what can I do).

अन्वयः—किम्, तपोवनम्, गच्छामि, तपसा, सवैरम्, मनः, न, शाम्येत्, रिपौ, जीवति, किम्, भर्तृन्, अनुयामि, ह्यम्, स्त्रीणाम्, योग्यता, वा, खड्गसखः, भरिवले, पतामि, किम्, एतत्, च, न युक्तम्, चन्दनदासमोक्षरभसम्, चेतः, रुन्ध्यात्, चेत्, न, कृतघ्नम् भवेत् ॥ २४ ॥

व्याख्या—किं तपोवनम् गच्छामि = तपश्चरणार्थमरण्यम् यामि (shall I go to a penance-grove), तपसा = तपश्चरणेन (by penance), सवैरम् = सामर्थ्यम् (revengeful), मनः = चित्तम् (mind), न शाम्येत् = न क्षाम्येत् (will feel no relief), रिपौ = शत्रौ (foe), जीवति = विद्यमाने (alive), भर्तृन् = स्वामिनः (my master), किं अनुयामि = अनुगच्छामि (shall I follow), ह्यम् (this), स्त्रीणाम् = नारीणाम् (of women), योग्यता = कर्म (is a course), वा = अथवा (or), खड्गसखः = असिधारीसन् (having the sword for my companion), भरिवले = शत्रुसैन्ये (on the forces of the enemies), पतामि (fall), किम् (what), एतत् (this), च = पुनः (and), न युक्तम् = न समुचितम् (is not proper), चन्दनदासमोक्षरभसम् = चन्दनदासपरिश्रान्तान्वयम् (is anxious to bring about the release of Chandandasa), चेतः = मनः (my heart), रुन्ध्यात् = मां निवारयति (not allowed me), चेत् = स्यात् (if), न = नहि (not), कृतघ्नम् = अकृतज्ञम् (ungrateful), भवेत् = स्यात् (would be). ॥ २४ ॥

हिन्दी—परिबर्नो के साथ मलयकेतु निकल गया)

राक्षस—(खिन्नता के साथ) हा ! धिक्कार दे ! कट दे । ये बेचारे चित्रवर्मा प्रभृति भी मार डाले गये । तो क्या राक्षस की हर चेष्टा मित्रविनाश के लिए ही है न कि शत्रुविनाश के लिए ? कितना अयोग्य हूँ, अब क्या करूँ ?

क्या तपोवन चला जाऊँ ? प्रतिशोध को भावना से पूर्ण यह मन क्या तपस्या से शान्त होगा ? शत्रु के बोधेबो क्या मैं मदानन्दों का अनुसरण करूँ ? नहीं, यह अधिकार तो केवल लियों को ही हुआ करता है। अथवा, तलवार लेकर शत्रु को सेना पर दूट पहुँचाया ? यह भी उचित नहीं बैठता। क्योंकि चन्दनदाम को मुक्ति के लिए मेरा मन मुझे रोक रहा है, अगर न रोके तो कृतघ्न होगा ॥ २४ ॥

(इस प्रकार सभी निकल जाते हैं)

(Exit Malayaketu with attendants)

English—Rakshasa—(With agitation) Oh, fie ! what a misfortune ! Poor Chitraverma and others too are killed. How then ! Is it that Rakshasa is exerting for the destruction of his friends and not for the destruction of his enemies ? What can I do now as an illstarred ?

Shall I go to a penance-grove ? But my revengeful mind would not ease off by penance. The enemies still living, should I follow my master ? This step is only for woman. Or, should I fall upon the enemy forces with the sword for a companion ? No, this is not proper step. My heart which is anxious to bring about the release of Chandandasa would not allow me to do so else it would be ungrateful. 24.

(Exeunt omnes)

टिप्पणी—इस श्लोक में दोषक और काम्यलिङ्ग बलद्वार है। शार्दूल विकीर्णित छन्द है।

मुद्राराक्षस पञ्चम अङ्क की 'विमला' ब्याख्या समाप्त।



पष्ठोऽङ्कः

(तत प्रविशत्यलङ्कृत सहर्ष सिद्धार्थक ।)

सिद्धार्थक —

अत्रदि जलदणीलो केसवो केसिघादी

अत्रदि अ जणदिही चन्द्रमा चन्द्रउत्तो ।

अत्रदि जणकज्ज जाव काऊण सव्व

पडिहत्तपरपक्खा अज्जशाणक्खणीदी ॥ १ ॥

(जयति जलदनील केशर केशिघाती

जयति च जनदृष्टिश्चन्द्रमा चन्द्रगुप्त ।

जयति जयनकार्यं यावत् कृत्वा च सर्वं

प्रतिहतपरपक्षा आर्यचाणक्यनीति ॥ १ ॥)

निमला

[तत = तदन्तर (now) प्रविशति = रङ्गशालान्तर्गतो भवति (Enter)
अलङ्कृत = भूषित (decorated), सहर्ष = सानन्द (with joy), सिद्धार्थक =
(Siddharthaka)]

अन्यथ — जलदनील, केशिघाती, केशव, जयति, च, जनदृष्टिश्चन्द्रमा, चन्द्रगुप्त,
जयति, च जयनकार्यं, यावत् सर्वकृत्वा, प्रतिहतपरपक्षा, आर्यचाणक्यनीति जयति ॥ १ ॥

व्याख्या — जल ददातीति जलदस्तद्वनील जलदनील = मेघरयाम (the
cloud coloured), केशिघाती = केशिनम् हन्तु शीलोऽस्येति केशिघाती = केशिनाम
वैद्यविनाशक (the slayer of Kesi) केशव = कृष्ण (lord Keshava),
जयति सर्वाङ्गण वत्तताम् (glory to) च = पुन (and) जनानाम् दृष्टिस्तस्या
चन्द्रमा = जनदृष्टिश्चन्द्रमा = सकलपुरुषनेत्राद्वाङ्मनकचन्द्र (the moon to the
eyes of people), चन्द्रगुप्त = सौर्य (Chandragupta), जयति = सर्वोत्कर्षण
विजयताम् (may victory), च = पुन (and), जयति जनेन इति जयनम्
(सैन्यम्), जयनेन जयकारणेन सेनादिनव यस्माद्यम् तत् च यावत् = समप्रमयन-
कार्यम् (may be gained by means of an army) कृत्वा = सर्वाङ्गना
मिधाय (having accomplished all), प्रतिहतपरपक्षा = प्रतिहत परपक्षो यया
सा (has destroyed the party of the enemy) आर्यचाणक्यनीति = आर्य
कौटिल्यनय (diplomacy of Noble Chanakya), जयति = सर्वाङ्गणवत्तताम्
(glory to) ॥ १ ॥

हिन्दी — (आभूषणों से सुशोभित प्रसन्न वदन सिद्धार्थक का प्रवेश)

केशी नामक राक्षस को मारनेवाले घनस्याम श्री कृष्ण की जय हो, और लोकनयनानन्दकर

दाव चिरस्त कालस्त पित्रवयस्मं समिद्धत्वञ् पेक्षामि । (परिक्रम्या-
वलोक्य च ।) एनो मे पित्रवयस्सथो समिद्धत्वञो इदो एव उपसप्पदि ।
आव ण उपसप्पामि । (तावच्चिरस्य कालस्य पित्रवयस्य समिद्धार्थक पश्यामि ।
एव मे पित्रवयस्यः समिद्धार्थक इत एवोपसर्गति । यावदेननुपसर्पामि ।)

(प्रविश्व समिद्धार्थकः ।)

समिद्धार्थकः—

संदावे तारेस्ताणं गेहोत्सवे सुद्धावत्ताणं ।

द्विजभट्टिदाणं विद्धवा विरहे निस्ताणं दूणन्दि ॥ २ ॥

(सतापे तारेसाना गेहोत्सवे सुखायमानानाम् ।

हृदयस्थिताना विभ्वा विरहे मित्राणा दूनयन्ति ॥ २ ॥)

चन्द्र की तरह चन्द्रगुप्त को विजय हो, और प्रतिपक्ष को सर्वथा अवरुद्ध कर, सैन्य कार्य को भी
सम्पादित कर विजय पथ का प्रशस्त करने वाला आर्य चाणक्य को नीति का जय हो ॥ १ ॥

English—(Now enter with joy decorated Siddharthaka)

Glory to the cloud blue Keshava, the slayer of Keshin, glory to
Chandragupta also, the moon to the eyes of the people, the diplo-
macy of Noble Chanakya prospers after having done all the work of
conquest with the hostile party suppressed (1)

टिप्पणी—(१) केशवः—कन् = बाधणम्, इयु इदञ्च वर्त्तन्तीति केशवः । (२)
केशिपाला—केशिनन् इत्यन् इति केशिपाला—कनेपि इन्' मे पिनि प्रत्ययः । (३) जलद-
नोक्तः—जल ददाताति जलदः । जल उपपद है । हा आनु से—आनो-नुपसर्गो च' से क प्रत्यय
हाकर रूप बना है । निदर्शक ने इन प्रथम श्लोक में केशिहन्ता भगवान् विष्णु, राजा चन्द्रगुप्त
गया चाणक्य को विजयिनी नीति को जय दापण की है । इन श्लोक के प्रथम चरण में सुतापना,
द्वितीय चरण में रूपक एव उपरार्थ में विभावना अलङ्कार है । इन सर्ग के अन्योन्य सभिन्न
के कारण मुख्यतः इनमें मनुष्टि अलङ्कार है । मालिना छन्द है ।

विनला

तावच्चिरस्य कालस्तन्वदोः कालात्परमिति (after a long time), पित्रवयस्यम्=
अतिमुन्यप्रदसुहृदम् (my dear friend), समिद्धार्थकम्=एतदाक्यम् (Samiddhar-
thaka), पश्यामि=प्रेक्षे (I will see), [परिक्रम्य=क्रियन्ति पदानि सचर्यं (walk-
ing round), च=पुन. and, अवलोक्य=मन्त्रयय=(looking forward)], एव=
अयम् (here), मे=मम (my), वयसा मुखो वयस्यः प्रियव्याप्तौ वयस्यः
प्रियवयस्यः=प्रियसुहृत् (dear friend), समिद्धार्थकः (Samiddharthaka), इत एव=
इदेव (here), आगच्छति=आयाति (comes), यावत्=तस्मात् (in the mean-
while), एनम्=(to him), उपसर्पामि=समीपम् गच्छामि (I will approach).

[प्रविश्व=(enter, समिद्धार्थकः=(Samiddharthaka)]

अन्यदः—सन्तापे, तारेज्ञानान्, गेहोत्सवे, सुखायमानानाम्, हृदयस्थितानाम्,
मित्राणाम्, विरहे, विभ्वा, दूनयन्ति ॥ २ ॥

सुद च मए मलयकेदुकडआदो पिअवअस्सओ सिद्धत्थओ आअदो त्ति ।
ण अण्णेसामि । (इति परिक्रामति । विलोक्य ।) एसो सिद्धत्थओ । (श्रुत
च मया मलयकेतुकटकात् प्रियवयस्य सिद्धार्थक आगत इति । एनमन्वेपयामि ।
एष सिद्धार्थक ।)

सिद्धार्थ — (उपसृत्य ।) कह समिद्धत्थओ । अवि सुह पिअवअस्सस्स ।
(कथ समिद्धार्थक । अपि सुख प्रियवयस्यस्य ।)

व्याख्या—सन्तापे=बलेते (In pain), तारेक्षानाम्=चन्द्रवत्सतापहारिणाम्
(like the moon in time of affliction), मेहोत्सवे=गृहोत्सव (on occasions
of house festivals), सुखायमानानाम्=सुखमनुभवताम्=(feel delight),
हृदयस्थितानाम्=चिन्त्यमानानाम् (present in the heart), मित्राणाम्=सुहृदाम्
(of friends), विरहे=वियोगे (in separation), विभवा = ऐश्वर्याणि (the
riches), दूनयन्ति = बलेद्यन्ति (give pain) ॥ २ ॥

हिन्दी—बहुत दिनों के बाद आज कहीं प्रिय मित्र समिद्धार्थक से भेट होनी है । (घूमते
हुए चलकर, सामने देखते हुए) ओह, मेरा प्रियमित्र समिद्धार्थक तो शहर ही आ रहा है ।
अच्छा चल, मैं ही चलकर इससे मिलूँ ।

(समिद्धार्थक का प्रवेश)

समिद्धार्थक—दुःख में शीतल राशि की तरह सतापहारक, घर के उत्सवों में सुख का
अनुभव करानेवाला, हृदय में सदैव विद्यमान मित्रों के विरह में ऐश्वर्य भी पीड़ित करते हैं ॥ २ ॥

English—After a long time I will see my dear friend Samiddhartha-
thaka (Going round and observing forward) Here, my dear friend
Samiddharthaka is coming this very way Let me approach him
(Now enter Samiddharthaka)

Samiddharthaka —Riches pain in the absence of dear friends that
are present in the heart, who are like the moon at times of trouble
and who feel delight on occasions of family festivals (2)

टिप्पणी—दूनयन्ति दू + क कर्त्तरि दून । दून कुर्वन्ति इति इन + णिच्, लट् अन्ति
इस शोक में दीपक तथा कान्यलिङ्ग अलङ्कार है और छन्द आर्या है ।

रिमला

श्रुतञ्च मया=आकर्णितम् (I hear), मलयङ्कुटकात्=मलयकेतुशिविरात् (from
Malayaketu's camp), प्रियवयस्य=प्रियसुहृत् (dear friend), सिद्धार्थक
(Siddharthaka), आगत=समायात (has arrived), एनम् (him), अन्वे-
षयामि=मृगयिष्यामि (I will find out), इति [परिक्रामति=वियन्ति पदानि
चलति (he walks forth), विलोक्य=इष्ट्वा (looks)] एष (here is),
सिद्धार्थक (Siddharthaka)

सिद्धार्थक — [उपसृत्य = समीपमेत्य = (Approaching)], कथम्=किमिति (Ha),

(इत्यन्योन्यमातिङ्गतः ।)

समिद्धार्थक—कुत्रो सुह जेण तुम चिरप्पयासपच्चागदो वि अज्ज ण मे गेहं आअच्छसि । (कुत सुख तेन त्व चिरप्रयासप्रत्यागतोऽप्यद्य न मे गेहमागच्छसि ।)

सिद्धार्थक—प्रसीदतु वयस्सो । दिट्ठमेत्तो एव्व अज्जचाणक्येण आणत्तोम्हि जह—‘मिद्धत्थअ, गच्छ । एद पिओदन्त देस्स चन्द्रसिरिणो णिवेदेहि’ ति । तदो एदस्स णिवेदिअ एव्व अणुभूदपत्थिअप्पसादो अह पिअअस्स पेस्सिअदुं तुह एव्व गेह चलिदोम्हि । (प्रसीदतु यस्य । दृष्टमात्र एव आचरणक्येनाज्ञप्तोऽस्मि यथा—‘सिद्धार्थक गच्छ । इम प्रियोदन्त देस्स चन्द्राग्निजो निवेदय’

समिद्धार्थक = (Samiddharthaka), अपि सुखम् = सुखमस्तीति (how do you do), प्रियवचस्पत्य = स्निग्धमित्रस्य (dear friend)

[इति—एवम्, अन्योन्यम् = परस्परम् = (Each other), आलिङ्गितम् = (embrace)]

समिद्धार्थक—कुत सुखम् = कस्मादानन्द (How can I be happy), येन (when you), चिरप्रयासप्रत्यागतम् = बहुकाल यापयित्वा विदस्ता प्रतिनिवृत्त (you returned from your long journey), अपि अद्य (even today), न गेहम् = न मन सदनम् (did not my house), आगच्छसि (you come).

हिन्दी—और मैंने सुना कि मेरा प्रियमित्र सिद्धार्थक मदयकेतु के शिबिर से लौट आया है । उठे हो खोजना ह । (कुछ कदम चक्कर और सामने देखकर) अरे, यही तो सिद्धार्थक है ?

सिद्धार्थक—(निकट पहुँच कर) ओ, समिद्धार्थक कुछ तो है, मेरे प्रियमित्र ।

(एक दूसरे से लिपटकर)

समिद्धार्थक—या कुछ पूछत हो ? इतने दिनों के बाद बाहर से लौटा और मेरे घर नहीं आया ? सुत सुख किस गत का होता ?

English—I have heard that my dear friend Siddharthaka has returned from Malayketu's camp I will search him (going round and observing) Here is Siddharthaka

Siddharthaka—(Approaching) Ha, Samiddharthaka how do you do dear friend (They embrace each other).

Samiddharthaka —Dear friend, how I can be happy, when you are not coming my house today, though you returned from your long journey ?

निमल

सिद्धार्थक—प्रसीदतु=प्रसन्नो भवतु (let be appeased), वयस्य = स्निग्धमित्रम् भवान् (dear friend), दृष्टमात्र एव=अवलोकित एव (as soon as seen), आचार्यचाणक्येन = आचार्यकौटिल्येन (by noble Chanakya), आज्ञप्तोऽस्मि = आदिष्ट आसम् (I am ordered), यथा—सिद्धार्थक (Siddharthaka), गच्छ=

इति । तत एतस्य निवेद्येवमनुभूतपाथिवप्रसादोऽहं प्रियवयस्य प्रेक्षितुं तवैव गेहं चलितोऽस्मि ।)

समिद्धार्थक—वअस्स, जदि मे सुणिदव्व तदो कहेहि किं त पिअ ज पिअदसणस्स चन्दसिरिणो णिवदिद । (वयस्य, यदि मे श्रोतव्यं ततः कथय किं तत्प्रियं यत्प्रियदर्शनस्य चन्द्रश्रियो निवेदितम् ।)

सिद्धार्थक—वअस्स, किं तुहवि अकहिदव्व अत्थि ता णिसामेहि । अत्थि

याहि (go), इमम् (this), प्रियोद-तम् = आनन्दप्रदवृत्तम् (the happy news), देवस्य = राज्ञः (to the king), चन्द्रश्रिय = चन्द्रगुप्तस्य छन्दसा (Chandragupta), निवेद्य = कथय (to communicate), तत = तदुत्तरम् (then), एतस्य = चन्द्रगुप्तस्य (to him), निवेद्य = विज्ञाप्य (having communicated the news), एवम् = इत्थम् (this), अनुभूतपाथिवप्रसादः = प्राप्तानुग्रहः (received this royal favour), अहम् (I) प्रियवयस्यम् = निजमुह्यम् (to dear friend), प्रेक्षितुम् = अवलोकितुम् (to see), तवैव = भवत एव (your), गेहम् = सदनम् (house) चलितोऽस्मि = अस्थितो भवामि (just on my way),

समिद्धार्थक—वयस्य = प्रियमित्र (dear friend), यदि (if), मे = मम (my), श्रोतव्यम् = आकर्णितव्यम् (I may hear), तत = तदा (then), कथय = भावय (tell), किं तत्प्रियम् = तद् वृत्तम् (what the agreeable news), यत् (that), प्रियदर्शनस्य = स्निग्धनिरीक्षणस्य (of lovely appearance) चन्द्रश्रिय = चन्द्रगुप्तः (the worthy Chandragupta), निवेदितम् = कथितम् (is communicated)

हिन्दी—सिद्धार्थक—मित्र प्रसन्न हो आचार्य चाणक्य ने देखने ही आदेश दे दिया—‘सिद्धार्थक जाओ और वह प्रियसन्नाह महाराज चन्द्रगुप्त को निवेदन करो। ना इनने निवेदन करके—राजकीय कृपा का अनुभव कर सोचे तुमने मित्रने तुम्हारे घर को ओर ही आ रहा था।

समिद्धार्थक—मित्र, यदि मेरे भी सुनने सम्भव हो तो बतलाओ, वह क्या प्रियसन्नाह है जो प्रियदर्शन महाराज चन्द्रगुप्त से निवेदित किया गया है।

English—Siddharthaka—Let my friend be app-ased As soon as seen I am ordered by noble Chanakya thus —Go Siddhartharka communicat- this happy termination to the king moon like Chandragupta Then reported to him and enjoyed the king's favour, I am just on my way to your house to see you my dear friend

Samuddharthaka—Dear friend if I may hear it, then tell me what the happy news is that was reported to the worthy Chandragupta of lovely appearance

विमला

सिद्धार्थक—वयस्य = मित्र (Friend), किं तत्वापि = भवताऽपि (is any thing from you), अकथितव्यम् = अनाकर्णितव्यम् (unmentionable), अस्ति = वर्तते

दाय चाणक्यनीतिमोहितमदिना मलयकेतुद्वयण णिकासिअ रक्खस द्वा
चित्तवम्मप्पमुग प्पहाणा पञ्च पत्थिया । ततो असमिक्खकारी एसो दुराआरो
त्ति उज्झिअ मलयकेतुद्वयअभूमि कुनलदाए भअयिलोलसेससेणिकपरिवारेसु
सभअ पत्थिदेसु पात्थिवेसु नरु विनअ णिविण्णहियएसु सअनसानन्तेसु
भद्रभटपुण्णिदत्तहिङ्गराजवलउत्तराअसेणभागुराजपरोहिदक्खविजअयम्मप्पमुहे-
हि सज्जमिअ गिहीदा मलयजन्दु । (यस्य, किं तत्राप्यर्थात्तत्रमस्ति तन्नि-
शामय । अस्ति तत्राद्याणक्यनीतिमोहितमदिना मलयकेतुद्वयेन निष्कास्य
राक्षस इत्यादिप्रसंगमुक्त्वा प्रधाना पञ्च पाथिया । ततोऽसमीप्यकार्येण
दुराचार इत्युक्त्वा मलयकेतुद्वयभूमि कुशलतया भयविलोलाशेषनैक-
परिवारेषु नभय प्रस्थितेषु पाथिवेषु स्वक विषयं निविण्णद्वयेषु सकलसानन्तेषु
भद्रभटपुण्ड्रदत्तहिङ्गराजवलगुप्रराजसेनभागुराजपरोहिताक्षविजयवर्मप्रमुखैः सय-
म्य गृहीतो मलयकेतु ।)

(१), तत् = तस्मात् (so), निशामय = शृणु (hear), चाणक्यस्य नीतिर्नयस्तथा
माहिता नतिर्यस्य स चाणक्यनीतिनोहितमदिनश्च चाणक्यनीतिनोहितमदिना
(whose mind's eye was bedimmed by the policy of Chanakya),
मलयकेतुद्वयेन = मलयकेतुश्चामी इव च. मलयकेतुद्वयेन मलयकेतुद्वयेन = निन्दि-
तेन मलयकेतुना (the cursed Malayaketu), राक्षसम् = राक्षसचिवम् (Rakshasa),
निराह्वय = निष्कारय (dis armed), चित्रवर्मप्रमुखाः = चित्रवर्मप्रभृतयः पञ्चराज न.
(Chitravarma and other), हता = विनासिता (killed), प्रधानाः = श्रेष्ठाः
(leading), पञ्चपाथिया = पञ्चनृपतय (five kings), ततः = तदनन्तरम्
(then), एष = एषी (Malayaketu), न मय्यक् विचार्य कर्तुम् शीलमस्येय
समीप्यकारी = अविचारशीलः (rash), दुराचारः = दुष्टव्यवहारः (wicked),
इति उज्झि त्वा = अस्माकं कारणात् परित्यज्य (left), मलयकेतुद्वयकभूमिन् = मलयकेतु-
शिविरस्थानम् (the camp of Malayaketu), कुशलतया (for safety), भय
विलोल सनिकः इषा परिवारा देषा ते तपोष्ठास्तेषु — भयविलोलाशेषनैकपरिवारेषु
साध्वमवशसनावशिष्टानुयायिवर्गेषु (their remaining soldiers and at-
endants trembling with fear), नभयम् = नभयसहितम् (with fear),
प्रस्थितेषु = चलिषेपु (set out), पाथिवेषु = राजसु (the kings), स्वकम् विषयम् =
आमीयजनपदम् (for their dominions), निविण्णद्वयेषु = (sick at heart),
सकल सानन्तेषु (all his vassals), भद्रभटपुण्ड्रदत्तहिङ्गराजवलगुप्रराजसेन-
भागुरायगरोहिताक्षविजयवर्मप्रमुखैः = भद्रभटपुण्ड्रदत्तहिङ्गराजवलगुप्रराजसेन-
भागुरायगरोहिताक्षविजयवर्मप्रमुखैः (whereupon
Bhadrabhata, Purusdatta, Dingrata, Balgupta, Rajasena, Bhagurayana,
Rohitaksha, Vijayaverman and others), संयम्य = सर्वतः परिवृत्य (seized),
मलयकेतु (Malayaketu), गृहीतः = हतः (made captive).

समिद्धार्थकः—वयस्स, भद्रभटप्रमुखा किल देवस्स चन्द्रउत्तस्स अवरत्ता मलअकेटुं समस्सिदे त्ति लोए मन्तीअदि । ताकिं निमित्तं कुकविक्किदणाडअस्स विअ अण्णं सुहे अण्ण णिण्वहणे । (वयस्य, भद्रभटप्रमुखाः किल देवस्य चन्द्रगुप्तस्य अपरक्ता मलयकेतु समाश्रिता इति लोके मन्थ्यते । तत्किं निमित्तं कुकविकृतनाटकस्यैवान्यन्मुखेऽन्यन्निर्वहणे ।)

हिन्दी—सिद्धार्थक—मित्र, क्या ऐसी भी कोई बात हो सकती है जो तुम्हें न सुनाऊँ, तो सुनो, आर्य चाणक्य की नीति से मोहित बुद्धिवाले दुष्ट मलयकेतु ने एक ओर तो राजसूत को निकाला और दूसरी ओर क्षत्रवर्मा प्रभृति पाँचों राजाओं को मरवा डाला । इसके बाद मलयकेतु को विचारहीन और अत्याचारी समझ कर अनेक अन्य राजगण मलयकेतु के सैन्य शिविर से चलने लगे, अपनी सेनाओं के भयभीत होकर भाग पड़े होने के कारण वे अल्पसंख्यक दिखाई पड़ने लगे, वे सभी अपने-अपने राज्य की ओर इसलिए चल पड़े कि वहाँ पहुँचने बिना उसका कल्याण नहीं था । सब भद्रभट, पुरुदत्त बिहारात, बलगुप्त, राजसेन, भागुरायण, रोहिताक्ष और विजयवर्मा इत्यादि ने मलयकेतु को घेर कर पकड़ लिया ।

English—*Siddharthaka*—Friend, is there anything unmentionable even to you? So listen. First of all the five leading kings with Chitraverman at their head were killed by cursed Malayaketu, whose mind's eyes were bedimmed by the policy of Chanakya, having dismissed Rakshasa. Then thinking him rash and wicked, the allied king left the camp of Malayaketu for safety and proceeded to their own kingdom in fear followed by their remaining soldiers and attendants trembling with fear, while all his vassals became sick at heart. Where upon Bhadrabhata Purusdatta, Dingarata, Balgupta, Rajsema, Bhagurayan, Rohitaksha, Vijayaverman and others seized Malayaketu and made him captive.

विमला

समिद्धार्थक—वयस्य = मित्र (Friend), भद्रभटप्रमुखा = भद्रभटप्रभृतयः (Bhadrabhata and others), किल = निश्चयेन (indeed), देवस्य = राज्ञः (king), चन्द्रगुप्तस्य = मौर्यस्य (Chandragupta), अपरक्ता = विरक्ताः (being discontented), मलयकेतुम् (to Malayaketu), समाश्रिता = संसेविताः (had joined the side), इति = इत्थं (like this), लोके = जने (people), मन्थ्यते = कथ्यते (was talked), तत् किं निमित्तमेतद् = कुतः कारणादिदम् कथ्यते (why then), कुकविकृतनाटकस्य = कुस्तिरुक्तविप्रणीतामिनयस्य (in a drama written by a bad poet), इव = यथा (as), अन्यन्मुखेऽन्यन्निर्वहणे = मुखे मुखसन्धौ प्रारम्भे अन्यत् निर्वहणे उपसंहारे अन्यत् नाटके आरम्भोपसंहारयोरवयवस्यैव प्रसिद्धत्वादिव तद्विरुद्धं कुतः ये भद्रभटप्रभृतयश्चन्द्रगुप्ते अनुरक्ताः सन्तो मलयकेतुमाश्रितास्वैरेव कथं मलयकेतुसंयमित इति प्रश्नाभिप्रायः (why is there then one thing in the laying out, and another in the consummation of the plot).

सिद्धार्थकः—वयस्स, देवमदीए विअ अमुणिद्वगदीए णमो चाणक्यपीदीए ।
(वयस्य, देवगत्या इय अश्रुतगत्यै नमःप्रापक्यनीत्ये ।)

समिद्धार्थकः—तदो तदो । (ततस्ततः ।)

सिद्धार्थकः—तदोपहुदि नारमाहणसमेदेण इदो पिअमिअ जजचाणक्केण
पडियण सअलराअनोअनहिअ असेस न्नेअवत्त । (ततः प्रभृति सारसायन-
समेतेनतो निष्क्रम्यापचापक्यन प्रतिपन्न सकलराजतोऽनहितमशेष
म्लेच्छवलम् ।)

सिद्धार्थकः—वयस्य = मित्र (friend), देवगत्या इय = नागकृत्यैरिव (like that
of destiny), अश्रुतगत्यै = अनुना गतिर्यस्यास्तस्यै = अनाकर्मितकृत्यै (the course
of which is unheard), नमःप्रापक्यनीत्ये = पूज्यकौटिल्यनार्यै नमोऽस्तु (saluta-
tion be unto the state craft of Chanakya)

समिद्धार्थकः—ततस्ततः = तत्पश्चात्किमिति (Next what next)

सिद्धार्थकः—ततः प्रभृति = तत्पश्चात् (Then), सारसायनसमेतेन = अत्युरहृष्टरजोप-
करणमहितम् (by an immense body of the flower of his army), इत्त-
निष्क्रम्य = अस्माच्चगराधिगम्य (marched out from here), आचार्यचाणक्येन =
आर्यकौटिल्येन (by noble Chanakya), प्रतिपन्नम् = अधिकृतम् (was captured),
सकलराजलोकमहितम् = मृतजनसहितम् (with the whole host of kings),
अशेषम् = निःशेषम् (entire), म्लेच्छवलम् = म्लेच्छसैन्यम् (Mlechcha forces)

हिन्दी—समिद्धार्थक—मित्र, लोगों में तो यह प्रसिद्धि है कि महाराज चन्द्रगुप्त से विरक्त
होकर मद्रक प्रभृति ने मलयकेतु का आश्रय ग्रहण किया था। तो फिर क्यों सब एक अनुग्रह
नाककार की तरह आरम्भ (मुद्रसूत्र) में कुछ और प्रभाव होता है और अन्तरनिर्वाह में
कुछ और ?

सिद्धार्थक—मित्रदेव को उन्ने की तरह अज्ञातप्रियानो आर्य चाणक्य की नाति की
नमस्कार है ।

समिद्धार्थक—उसके बाद, उसके बाद ।

सिद्धार्थक—उसके बाद आर्य चाणक्य ने पाण्डित्य से जुनो हुए तेना लेकर सन्नी म्लेच्छ
वत्त पर जान बाढ दिया । उनके तेनागति तो उन्हें पकड़ ही छोड़ चुके थे ।

English—*Samudhartha*—Friend, it was talked of among the
people that Bhadrabhatta and others, disgusted with Chandragupta
and attached with malayaketu. Why then as in a drama written by
a bad poet, one thing is in the opening and another in the consum-
mation in the plot.

Suddharthaka—Friend, bow to the state craft of the noble Chan-
akya, the course of which is unheard of like that of fate.

Samudharthaka—Next what Next.

Suddharthaka—The reupon Noble Chanakya marched out from here

समिदार्थम् — यस्स, वहि त ! (यस्य, कुत्र तत् ।)

सिदार्थम् — नहि एदे । (यत्रैत ।)

अदिस गुरुपण दाणदपण दन्ती

सजलजलदणाला उच्चमन्तो णदन्दि

कसपहरमण जाअम्पोत्तरगा

गिहिदज्जअणसदा सपअन्ते तुरङ्गा ॥ ३ ॥

(अतिशयगुरुणेण नानर्पेण दन्तिन

सजलजलदणाला उच्चमन्तो नदन्ति ।

कणाग्रहारभयन जातकम्पात्तरगा

गृहीतजयनशब्दा सपतन्ति तुरङ्गा ॥ ३ ॥)

with a large picked forces and then the entire Mlechcha force together with the whole host of kings was captured

विमला

ज्ञानदायक — यस्य = मित्र (friend) कुत्र = कस्मिन् स्थाने (where), तत् (that happen)

सिदार्थम् — यत्रैत (there)

अन्वयः — अतिशयगुरुकण, दानदपण, सजलजलदणालाम्, उच्चदन्त, दन्तिन, नदन्ति, कणाग्रहारभयन जातकम्पोत्तरगा, गृहीतजयनशब्दा, तुरङ्गा, सपतन्ति ॥ ३ ॥

व्याख्या — गुरुषु गुरुक अतिशयश्रामीगुरुका अतिशयगुरुकस्तत्र अतिशयगुरुकण = अतिप्रबुद्धन (excessive) दानदपण = दानम् दर्प इव दानदर्पस्तेन = दानदपण = मदमलिताभिमानन (pride of rut) सजलजलदणाला उच्चदन्त सजलजलदणाला उच्चदन्तस्य लीला सजलजलदणाला लीला सजलजलदणालाम् = ससजलजलदणालाम् (the action of clouds charged with water) उच्चदन्त = धारयन्त (resembling), दन्तिन = इस्तिन (elephants), नदन्ति = गच्छन्ति (are roaring) कणाया ग्रहार कणाग्रहारस्तस्माद्वयम् कणाग्रहारभयन तत्र कणाग्रहारभयेन = ताडनीग्रहार जम्पसाध्वयेन (from fear of the stroke of the whip), जातकम्पात्तरगा = उत्पन्नकम्पनचचला (through shaking the body appears as if waves are playing on it), गृहीतजयनशब्दा = गृहीत, अङ्गीकृत जयनशब्द विजयनाद येस्त तस्मात्ता (catching the sound of victory) तुरङ्गा = अवा (the horses) सपतन्ति = सज्जन्ता भवन्ति (rush forth) ॥ ३ ॥

हिन्दी — समिदार्थक — मित्र वह कहाँ ?

सिदार्थक — नही ये —

मदमल से उत्पन्न गर्व के कारण अत्यन्त प्रबल हाथी जो जल से भर बादलों की लाला धारण करनेवाले गरममूँह चिगाह रहे हैं और चावुक की मार के भय से अत्यन्त कांपते हुए अत एव अति चंचल बने अथ उच्च को ग्रहण करनेवाले घोड़े जाश के साथ आगे बढ़ रहे हैं ॥ ३ ॥

समिदार्थक—वअस्स. एतं शब्दं चिद्वदु । तदा सञ्चलोऽपञ्चकत्वं उन्निजा-
हिमारो चिद्विज्ज जञ्चचाणक्को किं उप्पो पि त एव्व मन्तिपद आन्ढो । (वयस्य,
एतत्तावत्तिष्ठतु । तथा सर्वलोचप्रचक्षुस्सुज्जिताधिचरः स्थिचार्थचाणक्यः किं
पुनरपि तत्रैव मन्त्रिपदमाहूतः ।)

निजार्थक—अइमुद्धोनि दापो तुन जो अमञ्चक्खसेण वि अपञ्जगाहिअ-
पुव्व जञ्चचाणक्कचरिट अजगाहिदुमिच्छसि । (अतिमुग्धोऽनीशानी त्व यतोऽ-
नात्यरात्रमेनापनजगात्तिपूर्वनाञ्चचाणक्यस्य चरितमजगाहितुमिच्छसि ।)

English—*Samudharthaka*—Friend, where is that ?

Sudharthaka—There—

Where the tusked, resembling the action of clouds carries the
idea of pouring water, are roaring in their excessive pride of ichor,
and where the horses—through shaking the bodies appear as its
waves are playing on it, from fear of the stroke of the whip and
catching the sounds of victory, rush forth together 3.

टिप्पणी—एतत्तावत्तिष्ठतु 'तलवर्षो' में सनादेद से बनना और एक का
मन्दर मन्दर है वस्तु हाथों का सबल बल की लड़ाई का धारण करना—
अपञ्चकत्वं होने के कारण, पञ्चक ललावातन का प्रगति से प्रवृत्तव्यदी-
या की तरह लीला-
धारण करने का विनम्र-विनम्र कान से निदर्शना मन्दर है । इन दोनों के मन्त्रि-
भाव में मन्दर है । अन्तरादेने प्रवृत्त दुर्गों में वेते केरों के मन्त्रा कनक काटों के
कारण मन्त्रादि मन्दर है । यह की त्वत्ता में कलावादन हेतु का पदार्थवेन कपन से
पदार्थक कावटिह से अन्तरादेने उपलब्धित चार मन्त्राओं का उद्देश्य है । एते
मन्त्रा वृत्त है ।

विमला

समिदार्थक—वयस्य=मित्र (Friend), एतत्तावत्तिष्ठतु=एतत्सर्वं तदेवास्मान्
(let this go), तथा=तद्वत्तत्वेन (into the very same), सर्वलोचप्रचक्षुः=
सर्वजनसमक्षम् (presence of all people), उन्निजः परित्यक्तोऽधिचरौ मन्त्रि-
पदम् त्वेन स उन्निजाधिचरः=परित्यक्तसचिवपदम् (resigned his post of
minister), स्थिवा=भूत्वा (being), आर्यचामक्यः=आचार्यविष्णुगुप्तः (Noble
Chanakya), पुनरपि=मूर्धन्य (again), तद्वत् मन्त्रिपदम्=तदेव सचिवपदम्
(the very post of minister), किमरुद्धं=कथं प्राप्तः (why accepted).

निजार्थक—अतिमुग्धोऽसि=अतिसयदुर्बोधोऽसि (extremely simpleminded),
इदानीम् त्वम्=अधुना त्वम् (now you are), यत् (since), अनाप-
राधसत्तेनापि=नन्दमचिवयोद्धापि । by the minister Rakshasa), अनजगा-
हितपूर्वम्=पूर्वमज्ञातम् (uncomprehended before), आर्यचामक्यस्य=आर्य-
कौटिल्यस्य (Noble Chanakya's), चरितम्=कृतम् (the deeds), अवगाहितुम्=
येदुम् (to gauge), इच्छसि=वन्नुसि (you wish).

समिद्धार्थक — वयस्स, अमच्चरक्खसो सपदं फहिं । (वयस्य, अमात्य-
राक्षसः साम्प्रतं कुत्र ।)

सिद्धार्थक — तस्मिन् भयविलोले वट्टमाणे मलयकेतुकडआदो णिकमिअ
उदुम्बरणामहेएण चरेण अनुसन्धिज्जमाणो इदं पाटलिउत्त आअदो त्ति अज्ज-
चाणक्खस्स णिपेदिदं । (तस्मिन् भयविलोले वर्तमाने मलकेतुकटकात्रि'कन्यो-
दुम्बरनामधेयेन चरेणानुसन्धीयमान इदं पाटलिपुत्रमागत इत्यायं चाणक्यस्य
निवेदितम् ।)

समिद्धार्थक — वयस्य = प्रियबन्धो (Friend), साम्प्रतम् = अधुना (now),
अमाय राक्षस = नन्दसखि (Minister Rakshasa), कुत्र (where is) ?

सिद्धार्थक — तस्मिन् = मलयकेतुशिविरे (in that camp), भयविलोले वचमाने
(standing convulsed in terror), मलयकेतुकटकात् = मलयकेतुशिविरात् (from
the camp of Malayaketu), निष्क्रम्य = बहिर्गत्य (having slipped out),
उदुम्बरनामधेयेन (by named Udumber), चरेण = दूतेन (a Spy), अनुसन्धीय-
मान = अनुगम्यमान (watched by), इदम् = एतत् (this), पाटलिपुत्रम्
(Pataliputra), आगत = समायात (has come), इति = इत्थम् (like that),
आर्यचाणक्यस्य = आर्यकौटिल्यस्य (to Noble Chanakya), निवेदितम् = कथितम्
(is reported)

समिद्धार्थक — मित्र, इस सारे बातों को छोड़ो, पहले यह बतलाओ कि जब आर्य चाणक्य
ने सरो के सामने अपने पद का त्याग कर दिया तो फिर क्यों उन्होंने इस पद को पुनः
स्वीकृत किया ?

सिद्धार्थक — तु बड़ा भोला भाला है । ओरे, जिस आर्य चाणक्य के चरित्र का पार अवतक
अमारय राक्षस न पा सका, उसका तुम पार पाना चाहते हो ।

समिद्धार्थक — अच्छा मित्र, आजकल अमात्य राक्षस कहाँ है ?

सिद्धार्थक — वहाँ जब भय का साम्राज्य था, तो मलयकेतु के शिविर से निकलकर अमात्य
राक्षस ने इधर पाटलिपुत्र में प्रवेश किया है । ऐसी सूचना, उनका पीछा कर रहे उदुम्बर
नामक गुप्तचर ने आर्य चाणक्य को दी है ।

English—*Samidharthaka*—Friend, let it go Why has noble
Chanakya again stepped into the very same post of minister after
having resigned his office of minister in presence of all people ?

Siddharthaka—You are very simple minded man since you wish
to gauge the deeds of noble Chanakya uncomprehended before even
by minister Rakshasa

Samidharthaka—Friend, where is the minister Rakshasa now ?

Siddharthaka—It is reported to noble Chanakya by a Spy named
Udumbera, who watched him as the frightful tumult thickened,
Minister Rakshasa having slipped out of Malayaketu's camp and
came here to Pataliputra

सनिवार्यकः—वअस्म तदा णाम अमञ्जस्ससो णन्दराज्यप्रत्यानयणे किं-
वयमात्रा पिक्कमिन्न सपद अकिदत्थो पुणोवि इम पाडलिपुत्त आअदो एव्व ।
(वयस्य, तथा नामानात्वरक्षसो नन्दराज्यप्रत्यानयने कृतव्यवसायो निष्क्रम्य
सान्प्रतनकृतार्थः पुनरपि पाटलिपुत्रमागत एव ।)

सनिवार्यकः—वअस्स, तद्धेमि चन्दनदाससिणेहेणे त्ति । (वयस्य, तर्कयामि
चन्दनदासस्नेहेनेति ।)

सनिवार्यकः—वअस्स, चन्दनदासस्स मक्ख रिज पेक्खामि । (वयस्य,
चन्दनदासस्य मोक्षमित्र प्रेक्षे ।)

सिद्धार्थकः—दुदा से अज्जणस्स मोक्खो । सो क्खु सपद अज्जणचाण-
क्कस्स आपत्तए दुवेहि अन्देहि उम्ह्दण पवेसिअ वायाइइदो । (कुतोऽ-
स्याग्रम्यस्य माय । स जलु सान्प्रतमारंजाणवस्थाज्जित्वा द्वाभ्यामानाभ्या
ग्रम्यस्थानं प्रवेश्य व्यापादयितव्यः ।)

नामनिवार्यकः—(मरुघम् ।) किं अज्जचाणक्कस्य घातअणो अणो

विमला

सनिवार्यकः—वयस्स=मित्र (Friend), अनात्तराच्च=चन्दसिधिव (minister
Rakshasa), नयानाम्=मर्षजनसमक्षम् (after all), चन्दराज्यप्रत्यानयने=
नन्दराज्यपुनर्ग्रहणे (restore the sovereignty of Nanda), कृतव्यवसाय=
विहितोद्योग (having made in such manner an attempt), निष्क्रम्य=निर्गत्य
(having gone out), साम्प्रतम्=अयुना (now), अकृतार्थ=विफलप्रयास
(with his object unaccomplished), पुनरपि (again), इदम्=एतद्
(this) पाटलिपुत्रम् (Pataliputra), आगत एव=समागत एव (came back) :

सिद्धार्थकः—वयस्य=प्रियवन्द्यो (Friend), चन्दनदासस्तेहन्=मित्र सद्गुरुचन्दन-
दासस्य परमानुरागेन (out of his affection for Chandandasa), तर्कयामि=
सम्भावयामि (I think)

सनिवार्यकः—वयस्य=मित्र (Friend), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), मेव
मित्र=चाणक्यइस्तान्मुक्ति-मित्र (like release), प्रेक्षे=सम्भावयामि (I fancy)

सिद्धार्थकः—एव=एतस्य (that) अथन्यस्य=अथन्य अथन्यस्तस्य अथन्यस्य=
इतनाम्यस्य (unlucky chap), मोक्ष=मुक्ति (release), स=असौ (he),
सज्जु=निश्चये (indeed), साम्प्रतम्=अयुना (now), आर्यंजाणवस्य=
आर्यकौटिल्यस्य (Noble Chanakya's), आज्ञसया=निदेशेन (at the com-
mand of), दुभ्याम्=उभ्याम् (both), अत्राभ्याम्=अत्राभ्याम् (of us),
वध्यस्थानम्=दिसामुमिम् (the place of execution), प्रविश्य=समाणीय
(being led), व्यापादयितव्यम्=हन्तव्यम् (to be killed)

सनिवार्यकः—[सप्रोषम्=अक्रोधम् (angrily)] आर्यंजाणवस्य=कौटिल्यस्य
(Noble Chanakya's), घातकजन=दिसक (hangmen), अन्य=अपर

णत्वि जेण अम्हे ईरिसेसु णिओजिआ अदिणिससेसु णिओएसु । (किमार्य-
चाणक्यस्य धातकजनोऽन्यो नास्ति येन वयमीदृशेषु नियोजिता अतिनृशसेषु
नियोगेषु ।)

सिद्धार्थक—वअस्स, को जीवलोए जीविदुमामो अज्जचाणकस्य आणत्ति
पढिउलेदि । ता एहि । चटालवेसधारिणा भविअ चन्दणदास वज्जमहाण णएम ।
(वयस्य, को जीवलोके जीवितुकाम आर्यचाणक्यस्याज्ञप्तिं प्रतिकूलयति ।
तदेहि । चण्डालवेपधारिणौ भूत्वा चन्दनदास वध्यस्थानं नयाव ।)

(other), नास्ति किम् (does find no ?), येन=कारणेन (that), इदृशेषु =जीव-
हिसानात्मकेषु (to such), अतिनृशसेषु=अतिक्रूरकर्मसु (exceedingly cruel) नियोगेषु=
कार्येषु (tasks), वयम् (we), नियोजिता=संयोजिता (appoints us),

हिन्दी—समिद्धार्थक—मित्र, चन्दसाम्राज्य को पुन प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्न-
शील सचिव राक्षस ने मलयकेतु के शिविर से निकल कर, असफल प्रयत्न होकर, पुन इसी
पागलिपुत्र में प्रवेश किया है ।

सिद्धार्थक—मित्र, मैं सोचता हू कि चन्दनदास का स्नेह ही उसे यहाँ फिर वापस
लाया है ।

समिद्धार्थक—और, मैं चन्दनदास का बन्धन मोक्ष सा देख रहा हू मित्र ।

सिद्धार्थक—उस समाग्रे को अभी मुक्ति कहाँ ! आय चाणक्य ने पहले ही हम दोनों
के नाम आदेश दिया है कि वध्यगृह ले जाकर चन्दनदास को मार दिया जाय ।

समिद्धार्थक—(क्रोध के साथ) क्या आर्य चाणक्य को कोई अन्य व्यक्ति नहीं मिला जो
येसे नृशस कर्म में हम दोनों को लगाया है ?

English—*Samidharthaka*—Friend, Minister Rakshasa has now
really come back to this Pataliputra, with his object unaccomplished,
having left it in that way, and having made in such manner an
attempt to restore the sovereignty of Nanda

Siddharthaka—Friend, I think, out of his affection for Chandanda-
dasa he came back

Samidharthaka—Friend, I guess Chandandasa will be set free

Siddharthaka—Whence is the freedom of that unlucky chap By
the order of Noble Chanakya, he is even now to be killed after being
led by both of us to the place of execution

Samidharthaka—(Angrily) Has Noble Chanakya got no other
hangmen that he appointed us to such supremely murderous work ?

विमला

सिद्धार्थक —वयस्य=मित्र (Friend), जीवलोके=संसारे (in this world), क.=
पुरुषविशेष (who), जीवितुकाम=जीवनामिलायी (desires to live), आर्य-
चाणक्यस्य=आर्यविष्णुगुप्तस्य (Noble Chanakya's), आज्ञप्तिम्=आज्ञाम्

(इत्युभौ निष्पन्नौ ।)

प्रवेशकः ।

(ततः प्रविशति रज्जुहस्तः पुरुषः ।)

पुरुषः—

छद्गुणसंज्ञोऽदिदा उवाचपरिपाटीवदितपाशमुखी ।

चाणक्योतिरञ्जु रिपुसंजनणुज्जवा जयति ॥ ४ ॥

(पद्गुणमयोगददा उवाचपरिपाटीवदितपाशमुखी ।

चाणक्योतिरञ्जु रिपुसंजननोद्यता जयति ॥ ४ ॥)

(order), प्रविष्टवति = अस्वीकरोति (can oppose), तदेहिन्तरनादागच्छ (so, come), चाण्डालवेषधारिणी (clad in the garb of Chandala), भूत्वा (becoming), चन्दनदामन (to Chandandasa), वध्यस्थानम् (to the place of execution), नयाय=नापयायः (shall take).

[उभौ निष्पन्नौ = (Exeunt both)]

[प्रवेशकः = Prवेशका)]

[ततः=उत्पश्चात् (after that), प्रविशति = (enter), रज्जुहस्तः = बन्धनशानकरः (rope in hand), पुरुषः=जनः (man)]

अन्वया—पद्गुणसंयोगददा, उवाचपरिपाटीवदितपाशमुखी, रिपुसंजननोद्यता, चाणक्योतिरञ्जु, जयति ॥ ४ ॥

व्याख्या—रज्जुश्चे—पद् च ते गुणः पद्गुणः पद्गुणः पद्गुणानां वा संयोगो यस्याः सा पद्गुणमयोगा अनप्य ददा स चासी=पद्गुणसंयोगददा=पद् तन्नु संयोगेन परिपुष्टा (by the union of the six thread), उवाचानाम् परिपाटी उवाचपरिपाटी तथा वदितं पाशमेव मुखं यस्या सा उवाचपरिपाटीवदितपाशमुखी=बहुविधैर्गुणैरचितपाशममाग (the noose of which is formed with a series of efforts), रिपुसंजननोद्यता=सन्नुबन्धनानुहृताः (ready to capture the enemy), चाणक्योतिरिञ्जु चाणक्योतिरिञ्जु=कौटिल्यनीतिमदशान्धन-दान (the rope like Chanakya's policy), जयति = सर्वोत्कर्षेण जयन्तु (glory to) ॥ ४ ॥

नीतिरश्चे—पद्गुणसंयोगददा=यस्यां सन्धिविग्रहयानासनदेधीमावाधदायानाम् (the six gunas), गुणानाम् संयोगेन सम्पर्केन बतिददा दुर्मेधेऽचर्यः (strings-expedient), उवाचानाम्=मान-दान-भेददण्डादीनाम् परिपाटी अमरचना तथा वदितः=सम्पादितः यः पाशः=वानरः तद्रूपम् मुखम् यस्यः तादृशी=उवाचपरिपाटी-वदितपाशमुखी (a series of political tactics), रिपुसंजननोद्यता=सन्नुनियन्त्र-मतपरः (straight when the enemy is entrapped), चाणक्यस्य नीति एव रज्जुः चाणक्यनीतिरञ्जु = कौटिल्यनीतिदान (the rope of Chanakya's policy), जयति (glory to) ॥ ४ ॥

(परिक्रम्यालोक्य च ।) ऐसो सो पदेसो अज्जचाणक्खस्स पुरदो उदुम्बर-
एण कहिदो जहि मए अज्जचाणक्काणत्तीए अमच्चरम्मसो पेक्खिद्व्यो ।
(विलोक्य ।) कह एसो वत्तु अमच्चरम्मसो विदसीसाग्गुण्ठणो इदो एण

हिन्दी—सिद्धार्थक—मित्र, इस ससार में कोई भी व्यक्ति जिसमें जाने की इच्छा अवश्य है, अपने चाणक्य की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता है। चलो, शीघ्र ही चाण्डालों कावेश बनाकर चन्दनदास को वध्यभूमि ले चलें।

(दोनों निकल गये)

(प्रवेशक)

(रस्ती हाथ में लिए पुरुष का प्रवेश)

रज्जुपक्ष में—छ सूत्रों के संयोग से निर्मित होने के कारण अत्यन्त दृढ़, नानाविध निर्मित पाश्चात्तयाली, शत्रु को नियन्त्रण करने के लिए उद्यम चाणक्यनीति की तरह इस रस्ती की जय हो ॥ ४ ॥

नीतिपक्ष में—छ (सन्धि, विग्रह, यान, आसन, दैवीभाव और आश्रय) गुणों के कारण (समागत शत्रुओं के लिए) अत्यन्त दुर्मेघ उपायों (साम, दाम, दण्ड, भेद) की परम्परा से निर्मित, पाशरूपी मुखवाली, शत्रु की वस्त्रवर्त्तों बनाने के लिए तत्पर चाणक्य का नीतिरूपी रस्ती की जय हो ॥ ४ ॥

English—*Siddharthaka*—Friend ! Who, in this world that desires to live, will oppose the command of Noble Chanakya ? So, come, let us dress ourselves as Chandalas and shall lead Chandandasa to the place of execution

(Exit both)

(Pravesaka-Introduction)

(Now enter a man with a rope in hand)

In the side of rope—Glory to the rope like Chanakya's policy being strong by the union of six thread, the noose of which is formed with a series of struggle and which is ready to hold the enemy 4.

In the side of policy—The rope of Chanakya's policy triumphs, which is strong by the combination of the six expedient strategy, the noose of which is formed with a series of political stratagems, and straight when the enemy is entrapped 4

टिप्पणी—इस दशक में, रूपक, उपमा तथा दलप एव कायल्लिङ्ग अलङ्कारों की संरुष्टि है। दृन्द का नाम आया है।

विमला

[परिक्रम्य (Walking forth), अवलोक्य=दृष्ट्वा (looking about)] एष = अयम् (this), स प्रदेश = प्राणदण्डभूमि (is the region mentioned), आर्यचाणक्यस्य = आर्यविष्णुगुप्तस्य (Noble Chanakya's), पुरतः = समक्षे (to),

आञ्छद् ! ता जाव इमेहि उज्जाणपादवेहि अन्तरिदसरारो पेक्खामि कहि आसनपरिणाहं करोदि ति । (परिक्रम्य स्थितः ।) एष स प्रदेश आर्यचाणक्यस्य पुरत उदुम्बरकेन कथितो यत्र मया आर्यचाणक्याज्ञप्त्या अनात्यराक्षसः प्रेक्षितव्यः । कथमेप खन्वमात्यराक्षसः कृतशीर्षाविगुण्ठन इव एवागच्छति । तद्यावदेभिस्तद्यानपादपैरन्तरितशरीरः प्रेक्षे कुत्रासनपरिग्रहं करोतीति ।

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टः सरास्यो राक्षसः ।)

राक्षसः—(साक्षन् ।) कष्टं भोः कष्टम् ।

उदुम्बरकेन = तस्मान्ना चरेण (by Udumberka), कथितः = निवेदितः (has reported), यत्र = यस्मिन् स्थाने where), मया = आत्मना (I myself), आर्य-
चाणक्याज्ञप्त्या = कौटिल्यादेशेन (to the command of Noble Chanakya),
अनात्यराक्षसः = नन्दमित्र (Minister Rakshasa), प्रेक्षितव्यः = अवलोकितो-
न्विष्यति (I have to see), [विलोक्य = अवलोक्य (looking about)], कृतम्
शीर्षस्याविगुण्ठनम् येन कृतशीर्षाविगुण्ठनः = कृतमस्तकावरणः (with his head
veiled) कथम् = किम् (why), इव एवागच्छति = इदं वाप्यति (coming in this
very direction), तत् = तस्मात् (so), यावत् = यावत्कालपर्यन्तम् (till),
एभिः = उद्यानपादपैः = उपवनवृक्षैः (by the trees of garden), अन्तरितशरीरः =
विरोहितकायः (hidden), प्रेक्षे = पर्याप्ति (I see), कुत्र = कस्मिन् स्थाने
(where), आसनपरिग्रहम् करोति = उपविशति (takes his seat), [परिक्रम्य
स्थितः (walks forth and waits)]

हिन्दी—' कुछ कदम चलकर और सामने देखते हुए) यह कहा स्थान है, जहाँ उदुम्बर के द्वारा मान्य चाणक्य को दो गयी सूचना के अनुसार, नुस अमात्य राक्षस के दर्शन करने हैं । (देखकर) क्या यही अमात्य राक्षस है ? तिर पर परी डाले ये तो खर हो आ रहे हैं । तो जब तक ये आगमन नहीं प्रदृग कर लेते—इस उद्यान के पेड़ की आड़ से न छिपकर इन्हें देखता हूँ । (वृत्तकर सबा हो जाता है)

English—(Walking forth and looking about)

This is the place reported to Noble Chanakya by Udumbara, where I have to see Rakshasa by the command of His Honour Chanakya. (Espying) Ah the minister Rakshasa is coming in this very way, with his head veiled. Well, with my person screened by these garden trees, I will just see where he takes seat. (Stands after going round).

विमला

[ततः = तत्पश्चात् (then), प्रविशति (enter), यथानिर्दिष्टः = वक्ष्येन आनुव-
तिरः इत्यर्थः (as described), सरास्यः = सायुधः (with Sword), राक्षसः
(Raksha a),]

(Alas ! Alas !). साक्षन् = सवाप्सन् (with tears)], कष्टं भोः कष्टम्

उच्छिन्नाधयकातरेव कुलटा गोत्रान्तरे धीर्मता

तामेवानुगता गतानुगतिकास्त्यक्तानुरागाः प्रजाः ।

आतैरप्यनघातपौरुषफले कार्यस्य धूर्ज्जितता

किं कुर्यन्त्वथोत्तमाङ्गरहितैरङ्गैरिव स्थीयते ॥ ५ ॥

अन्वयः—धी, उच्छिन्नाधयकातरा कुलटा, इव गोत्रान्तरे, गता, गतानुगतिका-
त्यक्तानुरागाः, प्रजाः, तामेव, अनुगता, अनवाप्तपौरुषफले, आतैः, अपि, कार्यस्य,
धूर्ज्जितता, अपवा—किम्, कुर्यन्तु, उत्तमाङ्गरहितैः, अङ्गैः, इव, स्थीयते ॥ ५ ॥

व्याख्या—धी = राजलक्ष्मी (The goddess of sovereignty), उच्छिन्न
विनष्ट आश्रयोऽवलम्बनम् यस्या सा उच्छिन्नाधया सा चासौ कातरा उच्छिन्नाधय
कातरा = विनष्टावलम्बनं भ्याकुला (upset by the death of her supporter),
कुलटा इव = पुबलीव (like a harlot), गोत्रान्तरे = अन्य कुले (to another race),
गता = समाधिता (has gone), गतानामनुगतिर्यासाम् ता गतानुगतिका = पूर्वप्रस्थि-
तानुसरणशीला (following those that have gone before), त्यक्तानुरागोया-
भिस्तास्यक्तानुरागाः = परिहृत स्वामिस्नेहा (leaving their love), प्रजाः =
प्रकृतयः (subjects), तामेवानुगता = ग.या-तराधिता धियमेवानुगता (have gone
just after her), अनवाप्त पौरुषफलं = अनवासम् पौरुषफलम् परतं तथाकास्तरनाप्त
पौरुषफलं (not having obtained the reward for their manly efforts),
आतैरपि = विश्वस्तैरपि (even our trusty friends), कार्यस्य = अभीप्सितकृत्यस्य
(the work), धूर्ज्जितता = भार (burden), उच्छिन्ना = त्यक्ता (have given up),
अपवा = वा (or) किम् कुर्यन्तु (what should they do), उत्तमाङ्गरहिते =
शीर्षविरहिते (without the head), अङ्गरिव = शरीरैरिव (like limbs),
स्थीयते = वसते (are lying) ॥ ५ ॥

हिन्दी—(तत्पश्चात् पूर्वकथित स्थितिवाला सशस्त्र राक्षस का प्रवेश)

राक्षस—(साधुनयन) हा कह ! हा कह !

राज्यश्री आश्रयविहीन होकर, दुखी बेइया की तरह, अब कुल में चली गयी, अपना-
करण करनेवाली प्रजाएं भी अनुगता शिथिल हो जाने के कारण उसी के पीछे पीछे चली
गयीं । और, जो हमारे विश्वस्त व्यक्ति थे—उ हों भी अब अपने पौरुष की पुष्टकर मिला
दृष्टिगत नहीं हुआ—वे भी कार्यभार छोड़ बैठे । अथवा—वे भी क्या करते ? शरीर से शीर्ष
यदि धृक् हो जाय तो शेष शरीर क्या कर सकता है ?

English—{ Now enter armed Rakshasa as described }

Rakshasa—{ With tears } Alas ! Alas !

Like a harlot upset by the death of her supporter, Royalty has
gone to another race, the subjects for saking their loyalty have gone
just after that very woman, being blind followers, even our trusty
friends, have seen the reward for their manly efforts, have given up the

अपि च—

पतित्यक्त्वा देवं सुवनपतिमुच्चैरभिजनं

गता छिद्रेण धावृषलमविनीतेन वृषलो ।

स्थिरीभूता चास्मिन् क्षिनिह करवान् स्थिरमपि

प्रयत्नं नो येषां विफलमिति देवं द्विपदिव ॥ ६ ॥

burden of work. Or what would they do? They are lying like
lumps without the head. 5

टिप्पणी—अपि चरा ने 'कुड्डा इव' में उल्लिखित 'इव' के कारण पूर्वोक्ता अङ्गुल है।
द्वितीय-पदाय चरन में स्थित गता किंवा का गच्छत्यङ्गुल एव अन्यान्य दैव्य अङ्गुल का
कार्यकारणमभ्यस्त रहने से काष्ण्ठिक अङ्गुल है। इस प्रकार चतुर्थ चरन में एतेन के कारण
कुड्डा निश्चय मन्द अङ्गुल है। इस अङ्गुल के अन्तर्गत का नाम है शार्ङ्गद्विपदिव ।

बिन्ता

अपिच=(Moreover) —

अन्वय—धी, उच्च, अभिजनन, सुवनपतिम्, पतिम्, देवम्, त्यक्त्वा, अविनीता,
वृषली, इव, छिद्रेण, वृषलम्, गता, अस्मिन्, च, स्थिरीभूता, इह किं करवान्, येषां, न,
स्थिरमपि, प्रयत्नं, द्विपदिव, देवम्, विफलमिति ॥ ६ ॥

व्याख्या—धी=राज्यलक्ष्मी (The Goddess of sovereignty) उच्चैः=उच्चतः
(of high) अभिजनम्=वधनम् (family), सुवनपतिम्=सुवनस्य पतिः सुवनपतिस्तम्
सुवनपतिम् विनीतम् (the lord of the world), पतिम्=स्वामिन् (her
husband), त्यक्त्वा=परित्यज्य (deserting), देवम्=नन्दम् (the king), अवि-
नीता=वृषली (immodest or an ill trained), वृषली=गृही (wench),
इव=यथा (like), छिद्रेण=द्वारेण (by taking advantage of a weak point),
वृषलम्=गृही (Vishalam), गता=समाभूता has gone), च=तुनः (and),
अस्मिन्=वृषले (in him), स्थिरीभूता=अचलासंभूता (has settled firmly),
इह=अस्मिन् विषये (in this matter), किं करवान्=विशेषान् वदन्ति (what
can we do), येषां=अस्माकम् (our), स्थिरमपि=स्थिरम् (persistent),
प्रयत्नम्=प्रयत्नम् (efforts), देवम्=भाग्यम् (fate), द्विपदिव=सत्रुनिव (like
enemy), विफलमिति=विनाशमिति (baffled) ॥ ६ ॥

हिन्दी—और ना—

राज्य-लक्ष्मी, अभिजन दक्ष में उत्तम रूप से राजा नन्द—अने जै को छल से छोड़कर
गृही की तरह गृही (वृषल) के अन्तर्गत रह कर स्थिर रहना। इस विषय में हम नो क्या करें ?
हमारे इस प्रयत्न को नो नाम्म बहुत ही अर्थ विफल कर देता है ॥ ६ ॥

English—Moreover :—

The Goddess of sovereignty, deserting her husband, the king of
high family, that was the lord of the world, has, by taking advantage

मया हि—

देवे गते दिवमतद्विधमृत्युयोग्ये

शैलेश्वरं तमधिकृत्य कृत प्रयत्नः ।

तस्मिन् हते तनयमस्य तथाप्यसिद्धि-

दैवं हि नन्दकुलशत्रुरसौ न विप्रः ॥ ७ ॥

of a weak point, gone over to Vrishala like an ill trained wench and has settled firmly with him In this matter what can be do ? Since, fate like an enemy baffles our persistent efforts 6

टिप्पणी—यहाँ राजस की पराजित बुद्धि का आलोचन अद्भुत है। आरम्भ की दो पक्तियों का कुछ उपास्य क्रमशः घुलता हुआ उत्तर ऊँ में द्रवित आलोचन बन गया है। लक्ष्मी के त्याग से सम्पूर्ण नारा जाति की प्रज्ञा की समीक्षा में करुण विनोदवृत्ति अत्यन्त मार्मिक है। लगता है—राक्षस ने हृदय की वेदना पट्ट कर निवेद बन गयी है। (१) इस श्लोक में—यक ही राज्य लक्ष्मीरूप वस्तु के आश्रित त्याग एवं शिरोमवन प्रभृति अनेक क्रियाओं के होने से दोषक अलङ्कार है। (२) अविनीता इव, में 'इव' शब्द के प्रयोग से पूर्णोपमा अलङ्कार है। (३) राज्य लक्ष्मी की चंचलता में भी शिथिलता का बणन रहने के कारण अतिशयोक्ति अलङ्कार है। इस प्रकार तथापि अलङ्कार चतुष्टय के साकस्य के कारण स्रष्टि अलङ्कार है तथा वृत्त का नाम शिखरिणी है।

विमला

मया हि = For I,

अन्यम्.—अतद्विधमृत्युयोग्ये, देवे, दिवम्, गते, तम्, शैलेश्वरम्, अधिकृत्य प्रयत्नः, कृत, तस्मिन्, हते, अस्य, तनयम्, तथापि, असिद्धि, दैवम्, हि, नन्दकुलशत्रु, असौ, विप्रः, न ॥ ७ ॥

व्याख्या—अ तद्विधमृत्युयोग्योऽतद्विधमृत्युयोग्यस्तस्मिन्नतद्विधमृत्युयोग्ये = अनार्य-कौटिल्यहृतमाणहरणानर्हं (who suffered a death that did not befit him), देवे=राशि नन्दे (Sire), दिवम्=स्वर्गम् (to heaven), गते=प्राप्ते (had gone), तम्=प्रसिद्धम् (that) शैलेश्वरम्=पर्वतेश्वरम् (Pervateswar), अधिकृत्य=आधाय (regarding) प्रयत्नः=प्रयास (efforts), कृत = विहित (made), तस्मिन् = पर्वतेश्वरे (Parvateswar), हते = मृते (after death), अस्य = नृपस्य (his), तनयम् = पुत्रम् मलयकेतुम् (the son), तथापि (again), असिद्धि = प्रयत्नविफलताजाता (attained no success), दैवम्=भाग्यम् (fate), हि = यत (indeed), नन्दकुलशत्रु = नन्दकुलशत्रु (in the enemy of the house of Nandas), असौ = स (that) विप्रः=ब्राह्मणः (Brahman Vishnugupta), न = नहि (not) 7

हिन्दी—मैंने तो—

उम प्रकार नृपस मृत्यु के अयोग्य महाराज नन्द के स्वर्ग चढ जाने पर महाराज पर्वतक को आश्रय बनाकर उन्हें अधिकार भूमि में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र को आश्रय बनाया। फिर भी, असफलता साथ रही। भाग्य ही नन्दकुल का शत्रु है न कि वह ब्राह्मण ब्राह्मण । ॥ ७ ॥

अहो विवेकशून्यता मेच्छस्य । कुतः—

यो नष्टानपि बीजनाशनधुना शुश्रूषते स्वामिन-

स्तेषां वेदिमिरक्षतः नयनमो संयास्यते राक्षसः ।

एतावद्वि विवेकशून्यमनसा लुप्तेन नानोचितं

देवेनोपहतस्य बुद्धिस्यवा सर्वा विपर्यस्यति ॥ ८ ॥

English—For I,

When the king Nanda had gone to heaven, not at all deserving that kind of death, effort was not made by me winning over the king Puratashwar and after he was killed, his son, still, there was no success. It is fate, who is enemy of the family of Nanda and not that Brahman Caanakra. "

टिप्पणी—उत्तमोक्तं नै कान्हावर का लुप्तं नष्टम् है। एतत् क वपुर् नयन मे कथं नयन के लुप्तेन नष्टम् इति कर्त्तव्यम् है। अहं यही कान्हावर कथ्यते है। नाग हा नष्टम् का लुप्त है। इति नयनम् क वपुर् का अन्य कौत्स क मन्त्रम् उक्तं सत्यम् है। एतत् कौत्स का मन्त्रम् लुप्तं राक्षस ने नै अनेन कथन क कर्म लुप्तम् है। 'लुप्तम्' इति है।

निमता

अहः=आश्चर्यम् (O), मेच्छस्य=मेच्छकर्मन् (of the barbarian), विवेकेन शून्यः विवेकशून्यमनस्य नाव विवेकशून्यतममदसद्विचारशून्यता (the tho'tlessness).

अन्वयः—अह, अशुना, अवि, बीजनाशन, नष्टम्, स्वामिनः, शुश्रूषते, अहो, राक्षसः, नयनः, वेदिमि, कथम्, मन्त्रम्, एतावत् इति, विवेकशून्यमनसा, मेच्छते, न, नानोचितम्, कथम्, देवेन उपहतस्य, सर्वा, बुद्धिः, विपर्यस्यति ॥ ८ ॥

व्याख्या—अहः=अहो (Who), अशुना=अशुनि (cow), अवि (Who), बीजनाशनम्=संनष्टम् (disappeared like seeds), नष्टम्=नष्टम् (are destroyed), स्वामिनः=मन्त्रम् (his masters), शुश्रूषते=सेवते (all serves), अहं=अहम् (that), राक्षसः (Rakshasa), अहम्=अनिष्टकारिणः सन् (as he is sound in body), कथम्=स्वामिनाम् (them), वेदिमिः=अशुनिः (with the foe), कथम्=(how), संयास्यते=अन्यथा चरिष्यति (in a manner), एतावत्=इत्यम् (of this much), हि=निश्चय (indeed), विवेकशून्यमनसा=सदसद्विचारशून्यबुद्धिना (by being in a devoid of consciousness), न=नहि आलोचितम्=विचारितम् (can not think), अपवा=वा, (or), देवेन=नागेन (by fate), उपहतस्य=पतितस्य (of doomed), सर्वा= (all), बुद्धिः=मतिः (the intellect), विपर्यस्यति=विपर्यया भवति (becomes perverse). ॥ ८ ॥

तदिदानीमपि तावदरातिहस्तगतो विनश्येन्नतु राक्षसश्चन्द्रगुप्तेन सह संदधीत । अथवा मम काममसत्यसंध इति वरमयशो न तु शत्रुवञ्चनपराभूत इति । (समन्तादवलोक्य सास्त्रम् ।) एतास्ता देवपादक्रमणपरिचयपवित्रीकृततलाः कुसुमपुरोपकण्ठभूमयः । इह हि—

हिन्दी—हा म्हेच्छ की मूर्खता आश्चर्यजनक है !

आज तक समूल नष्ट अपने स्वामियों की जो सेवा करता आ रहा है, वही राक्षस स्वस्थ रहते हुए किसी भी स्थिति में उनके शत्रुओं के साथ क्या समझौदा कर सकता है ! विमल न्हेच्छ ने इतना तक भी न विचारा । समभवतः, जब माग्य साथ छोड़ देता है—शक्ति की बुद्धि भी साथ छोड़ देती है ॥ ८ ॥

English—Oh the thoughtlessness of the barbarian !

How can that Rakshasa, who even now serves his masters that disappeared like seeds—unscratched, enter as long as he is sound in body, into an alliance with the enemies. Of this much was not indeed considered by the barbarian, his mind being devoid of discrimination, did not think Or, of one struck by fate, the intellect in its entirety becomes perverse. 8.

टिप्पणी—इस दलोक में राक्षस के आसूँ हँसते हैं—वेदना निर्वेद बन गया है । कुत्त की बढोरता पिपल कर मुस्तुरा उठी है । राक्षस की यह मुस्कान होठों से हलाहल का प्याला लगाये, निदति की ज्वाला से जलते जीवन की मुस्कान है । माग्य की समाधि पर प्रज्वलित दीप की डुलगी दुर्ग ली सा रिक्तता हुआ निर्वेद । इसमें अर्थान्तरन्वास अलङ्कार है और छन्द का नाम है 'शार्दूलविकीर्णित' ।

विमला

सत् = तस्मात् (even), इदानीम् = अधुना (now), अपि (also), तावत् = अरातिहस्तगतः = अरातीनाम् इततोऽरातिहस्तस्तमरातिहस्तम् गतः अरातिहस्तगतः = शत्रुकरप्राप्तः (falling into the hands of enemies), विनश्येत् = भ्रियेत् (rather will die), राक्षसः (Rakshasa), चन्द्रगुप्तेन = मौर्येण (Chandragupta), सह = सादृम् (with), न = किन्तु (but), न = नहि (not), संदधीत = सधिम विदध्यात् (than treat), अथवा = वा (or), मम (my), कामं = पथेच्छम् (enough), असत्यसन्धः = असत्या सन्ध्या यस्य सोऽसत्यासन्धः = अतःप्रतिज्ञाः (being false to my word), इति = इत्थम् (such), भयनाः = अपकीर्तिः (the infamy), वरम = श्रेष्ठम् (good), नतु (that of), शत्रुवञ्चनपराभूत = रिपुपतारणतिरेस्कारः (being duped by my adversary), [सास्त्रम् = असहितम् (with tear), समन्तात् = चतुर्दिक् अवलोक्य = दृष्ट्वा (looking about)], एतास्ता = पूर्वकालविलोकित—(there are), देवस्य = नन्दस्य (Sire), पादक्रमणपरिचयपवित्रीकृततलाः = पादक्रमणस्य = चरणविशेषस्य य परिचयः = अभ्यासः तेन पवित्रीकृतम् = दूतम् तलम् पृष्ठभागे यासाम् तादरयः = चरणसञ्चार, न्यासपूतप्रतोवः (surface

शास्त्रार्थव्याप्तमुक्तप्रशिक्षितकविकाप्रग्रहेण देवे

देवेनाकारि चित्र प्रजविततुरगं वाणमोक्षधलेषु ।

अस्यामुद्यानराजौ स्थितमिह स्थितं राजभिस्तेविनेत्यं

संप्रत्यालोक्ष्यमानाः कुसुमपुरमुखो भूयसा दुःखयन्ति ॥ ९ ॥

|| satisfied through experience of the footsteps), कुसुमपुरोपकण्ठनृमय = कुसुमपुरमभीपददशा (the border grounds of Kusumpara) — इह = अत्र (in this place), हि = यत् (for) —

अन्यथा—देवेन, भग्न, दश, शास्त्रार्थव्याप्तमुक्तप्रशिक्षितकविकाप्रग्रहेण, प्रजवित-
तुरगं चलेषु, चित्रम्, वाणमोक्ष, अकारि, अस्मान्, उद्यानराजौ, स्थितम्, इह,
राजभिः कथितम्, सम्प्रति, तै, विना, इत्यम्, आलोक्ष्यमानाः, कुसुमपुरमुख, भूयसा
दुःखयन्ति ॥ ९ ॥

व्याख्या—दश = राज्ञा (With the king), अत्र दश = अस्मिन् प्रदेशे (in this
place), शास्त्रम् = धनुष, आकर्षणे = आकर्षणे, अवमुक्त = रनिन अत्र एव प्रशिक्षित =
अतिरक्ष, कविकाया = कविकानस्य, प्रग्रहे = रनिन तेन = शास्त्रार्थव्याप्तमुक्तप्रशिक्षित
कविका प्रग्रहेण = धनुराकर्षणायकारदृक्स्याग्रहणेन (loosening his grasp of the
bride cast down when drawing his bow), प्रजवितस्तुरगो यत्र तत्र प्रजवित
तुरगम् = वगवद्वधम् (horse galloped at full speed), चलेषु = अस्थिरासु
(at moving), चित्रम् = आश्चर्यम् (in a wonderful), वाणमोक्ष = सरत्याग
अकारि = हृत (discharg'd in arrows), अस्याम् = अनुप्याम् (in this), उद्यान-
राजौ = उद्यानपक्षौ (grove of trees), स्थितम् (the king sat), इह = अस्मिन्
स्थान (her), राजभिः (to princes), कथितम् = आलोकितम् (talked),
सम्प्रति अत्रा (now), तै विना = राजभिर्विना (without them), इत्यम् एव
(such), आलोक्ष्यमाना = सदृश्यमाना (being seen), कुसुमपुरमुख (the
precincts of Kusumpara), भूयसा = बाहुल्येन (greatly), दुःखयन्ति =
वलेषयन्ति (pain me)

हिन्दा—नाज भी शत्रुका के हाथ में पड़ा राज्य भल ही नष्ट हो जाय, पर चन्द्रगुप्त
से सन्धे नहीं करना अथवा—राज ने कैसा 'अत्यप्रति' हो अकारि दुःख स्वीकार
है, किन्तु, शत्रुओं की चाल से पराजित हो गया यह कलक मत्र नहीं है। (मरी भीड़ों से
चारों तरफ़) महाराज के चरित्रार्थ ने पवित्र बनी, कुसुमपुर की यह सीमान नूनि है।

यह वही नूनि है वहाँ महाराज ने—धनुष खाने के कारण जिनके घाट की लाम दाढ़ी
पड़ जा थी—जिसे ना घाट के बो से दौड़ने पर—चल लखों पर आश्रयनक ना से
जाता था। इस उद्यान की कारण में बैठे थे। वहाँ पर भगन्तो से बचने की थी। अब उनके
विना, कुसुमपुर की वे दृश्यमान सानन्ध नूनि अत्यन्त पीछे चर रहा है ॥ ९ ॥

English—Thus even Raksheśa would indeed die fallen into the
hands of his enemies, but would not side with Chandragupta. Or,
I would rather have the infamy of being false to my word than that

तत् क नु गच्छामि मन्दभाग्यः (विलोक्य) भवतु । दृष्टमेतज्जीर्णोद्यानम् ।
अत्र प्रविश्य कुतश्चिच्चन्दनदासप्रवृत्तिमुपलप्स्ये अलङ्घितनिपाताः पुरुषाणां
समविपमदशापरिणतयो भवन्ति । कुतः

पौरैरङ्गुलिभिर्नवेन्दुघदहं निर्दिश्यमानः शनै-

र्यो राजेव पुरा पुरास्त्रिगमं राज्ञां सहस्रैर्वृतः ।

भूयः संप्रति सोऽहमेव नगरे तत्रैव घन्ध्यध्रमो

जीर्णोद्यानकमेव तस्कर इह आसाद्विशामि द्रुतम् ॥ १० ॥

of being beaten by the enemy's strategy. (Looking round with tears)
These are those suburban grounds of Kusumpura whose surface is
sanctified through experience of the foot step of Sire.

His Majesty Nanda discharged his arrows in this place at mov-
ing goal in a wonderful way even the horse was in full speed due to
intied rain at the time of drawing his bow. He sat in this time of
gardens. Here he wade a gossip with princes. Now, those land of
Kusumpura is very much painful (to me) without him. 9.

टिप्पणी—इस श्लोक में स्वभावोक्ति तथा दीपक अलङ्कार है । छन्द का नाम स्रग्धरा है ।

विमला

तत् = तस्मात् (So), मन्दभाग्यः = अदृष्टहीनः (ill-starred), बबुगच्छामि =
कुत्र स्थाने यामि (where should I retire), विलोक्य = दृष्ट्वा (observing), भवतु =
भवतु (well), एहम् = अवलोकितम् (I notice), एतत् = इदम् (this), जीर्णोद्यानम्
(ruin garden), अत्र = अस्मिन् जीर्णोद्याने (in this old garden), प्रविश्य =
अन्तरेष्य (entering), कुतश्चित् = कस्मादपि स्थानात् (from some where),
चन्दनदामस्य (Chandandasa's), प्रवृत्तिम् = वृत्तान्तम् (information), उप-
लप्स्ये = ज्ञास्यामि (gather), अलङ्घितनिपाताः = अलङ्घितः वपनिपातो यासाम् ता
अलङ्घितोपनिपाता = अतर्कितागमा (unexpected advent), पुरुषाणाम् = जनानाम्
(of men), समाश्च विपमारचेति (इतरेतरद्वन्द्वः) समविपमास्ताश्च ताः दशाः समविपम-
दशा तासाम् परिणतयः = समविपमदशापरिणतयः = सुखानुत्पन्नदशापरिणतयः (the
changes into the smooth and the rough stages), भवन्ति = जायन्ते (are),
कुतः—for —

अन्ययः—पुरा, यः, अहम्, राज्ञाम्, सहस्रैः, वृत्तः, राजा, इव, पौरैः, अङ्गुलिभिः,
नवेन्दुघदः, निर्दिश्यमानः, पुरात्, शनैः, निरगमम्, सः, एव, घन्ध्यध्रमः, एषः, अहम्,
संप्रति, भूयः, तत्र, एव, नगरे, तस्करः, इव, आसात्, द्रुतम्, जीर्णोद्यानकम्,
विशामि ॥ १० ॥

व्याख्या—पुरा=पूर्वम् (formerly), य (who), अहम् (I), राज्ञाम् सहस्रैः =
नृपमहैः (by thousands of princes), वृत्तः = परिवेष्टितः सः (surrounded),
राजा = नृपः (the king), इव = यथा (like), पौरैः = पुरजनेः (by the citizens),

अङ्गुलिम् = करधावामङ्गेन (with their fingers), नवेन्दुवत् = नवोदितचन्द्रवत् (like the new moon), निर्दिश्यमान = प्रदर्शयमान (pointed out), पुरात् = कसुमपुरात् (from the city), शनैः = क्रमशः (with gentle steps), निरगतम् = निर्गतवान् (walked forth), स = अमौ एव बहम् (I that very person), वशधम् = वन्य विकृत धन = दयामो यस्यामौ वन्य मनः = विकृतमनोद्वारनश्यामम् (with all efforts turned fruitless), एष = अमौ (that), यमप्रति = अतुना (now) नून पुनः (again), तत्र एव नगरे = तस्मिन्नेव पुरे (in that very city), सक्कर = चोर (a thief), इव = यथा (like), नायात् = नयात् (out of fear), दुतन् = शीघ्रम् (hastily), जोर्योपानकम् = पुरातनारोपवनम् (espicable garden of ruins), विशन्ति = प्रविशन्ति (enters) ॥ १० ॥

हिन्दी—इतना मैं अब कहाँ जाऊँ ? (देखकर) अतः—एह बाँधवान् पूर्व से देखा है । इना में प्रवेश कर कहों से चन्दनराम का लिंग का पता लगाऊँगा । ओह पुरखों के अनुकूल किता प्रतिज्ञा स्थितियों का परिणाम अज्ञानरूप से हो गया है । क्योंकि,—

एहन वहाँ हवरो मान्तों से बिरा हुआ पड़ रावा की तरह न, दूब के चर की तरह पुर वासियों के द्वारा अङ्गुलि ने दिखया जाता—चोरे चोरे नार से निकलता था । निम्न प्रवास बनकर, वहाँ आव—वही मैं—चोर की तरह नयाकान शान्ता ने बाँधवान् में प्रवेश कर रहा हूँ ॥ १० ॥

English—Where now, can I an unfortunate fellow, go ? (Observing) Well, this old garden is known to me. I shall try to know something of Chandandas entering inside it. Ah, the favourable or unfavourable turns of man's life are of unexpected advent. Because of —

I who previously moved out of this town with gentle step, being attended like a king by thousands of princses and being pointed out by the fingers of stizings like the new moon. Now, enter into the old garden of that very city fastly like a thief, with all deeds turned fruitless. 10

टिप्पणी—इह श्लोक का राष्ट्रम की पराजित बुद्धि का अदभुत आश्रय हो है । इसने राष्ट्रम के इन्द्र की पीठा बचकर अँकों की बाढ़ बन कर उमड़ पड़ा है । उसके बिना जीवन के वैभव का वान् सुनकर आकुलता भी आकुल हो उठता है ।

सक्कर के रसवारी कवियों ने नर रौने के वानों का अवेष्टा नहीं की जा सकता है । उन्हें अनर्थ, अन्या आदि म्चारियों ने 'कायकचित' नान के उन्मूल स्वल्प में, काहु के वैगुण्य से राज्य की व्यग्रता में, अविश्विन वान्य ध्वनि के अत्यन्त शिरस्कृत राज्य नामक मेर में हँसा जा सकता है । मुद्रराष्ट्र के प्रत्यु प्रसा इन प्रकार के आहारों से ओतप्रोत हैं । विशाखदत्त के ये वान् गुदग्रासते हैं, रगते भी हैं—पर भरसक कदवान्न कहाँ नहीं जाने देते ॥

इम श्लोक में अपना तथा पर्याय अलङ्कार है । छन्द का नाम—शार्दूलविकीरित है ।

अथवा येषां प्रसादादिदमासीत् एव न सन्ति । (नाट्येन प्रविश्यावलोक्य च ।) अहो जीर्णोद्यानस्यारमणीयता । अत्र हि—

विपर्यस्तं सौधं कुलमिव महारम्भरचनं

सरः शुष्कं साधोर्हृदयमिव नाशेन सुहृदाम् ।

फलेहीना वृक्षा विगुणनृपयोगादिव नया-

स्तृणैश्छन्ना भूमिर्मतिरिव कुनीतैर्विदुषः ॥ ११ ॥

विमला

अथवा=किं वा (But why), येषाम्=नन्दानाम् (they themselves), प्रसादात्=अनुग्रहात् (to whose favour), इदम्=अनुभूयमानम् (this), आसीत्=अभूत् (was), एव न सन्ति=न गिद्यते (due), [नाट्येन=अभिनयेन (acting), प्रविश्य=अन्तरेष्य (entry), अवलोक्य=निरीक्ष्य (looking about)], अहो=आश्चर्यम् (wonderful), जीर्णोद्यानस्य=पुरातनोपवनस्य (of the old garden), अरमणीयता=अचाक्ष्वम् (the sad appearance), अत्र हि=अस्मिन्विषये यत (For here) —

अन्वयः—महारम्भरचनम्, सौधम्, कुलम् इव, विपर्यस्तम्, सरः, सुहृदाम्, नाशेन, साधो, हृदयम्, इव, शुष्कम्, वृक्षा, विगुणा नृपयोगात्, नया, इव, फले, हीना, भूमिः, कुनीतैः, विदुषः, मतिः, इव, तृणैः छन्ना ॥ ११ ॥

व्याख्या—महाराजासाधारम्भो महारम्भस्तेन रचना यस्य तन्महारम्भरचनम् यद्वा नन्दानारम्भो यस्या सा महारम्भा महारम्भा रचना यस्य तन्महारम्भरचनम्=प्रचुरोद्योगरचितम् (once performed mighty deeds), सौधम्=हर्म्यम् (the mansion), कुलम्=वंशम् (family), इव=यथा (like), विपर्यस्तम्=नष्टम् (dilapidated), सरः=हृद् (tank), सुहृदाम्=मित्राणाम् (of his friend), नाशेन=विनष्टेन (by the destruction), साधो=महामन (of good man), हृदयम्=चित्तम् (the heart), इव=यथा (like), शुष्कम्=वीरसम् जातम् (is dried up), वृक्षा=तरवः (the trees), विगुणश्चासा नृप विगुणनृपस्तस्य योगस्तस्मात् विगुणनृपयोगात्=प्रतिकूलनृपवशात् (under adverse king), नया=नीतयः (political schemes) इव=यथा (like), फले=फलैर्लभैश्च (fruits), हीना=रहिता (bears no), भूमिः=कुसुमपुरप्रदेशः (the ground), कुनीतैः=दुर्नयेन (with bad Counsels), विदुषः=अज्ञस्य (of foolish), मतिः=बुद्धिः (mind), इव=यथा (like), तृणैः=शण्यैः (with grass), छन्ना=आवृत्ता ढर्यते (is covered) ॥ ११ ॥

हिन्दी—अथवा—जिनकी कृपा से वे सारा नष्ट हो गये हैं। (अभिनयपूर्वक प्रवेश करके और देखकर) जीर्णोद्यान को अगुन्दरता अत्यन्त दुःखदायी बन गया है। क्योंकि — पर्याप्त प्रयत्न से निर्मित यह राजमहल—वंश की तरह ही अस्त-व्यस्त हो गया है। मित्रों के विनाश से साधु पुरुष के हृदय की तरह ही यह सरोवर भी सूख गया है। गुणहीन राजा के

अपि च ।

क्षताङ्गानां तीक्ष्णैः परशुनिर्दयैः क्षितिकदां

कृजा कूञ्जन्तीनामविरतकपोतोपश्रुतैः ।

स्वनिर्नोकच्छेदैः परिचितपरिक्षेपकूपया

भ्रसन्तः शाखानां व्रणमिव निवध्नन्ति फणिनः ॥ १२ ॥

सम्बन्ध ने कलहान नाति की तरह यहाँ वृष भी कलहान ह गये हैं । कुत्सित नीति से कल्याण का दुःख का तरह यहाँ की भूमि ना दुर्जे से काष्ठक हो गया है ॥ ११ ॥

English—Or, they themselves are now no longer to whose grace all these were due (Acting his entrance and observing) the repulsiveness of the old garden is painful. Because :—

The mansion, made with good masonry, is in dilapidated condition like the family. The pond has dried up like the heart of an honest man by the destruction of friends. Trees have become fruitless like political schemes by the touch of a worthless king. The ground is full of grasses like the mind of a fool with bad counsels. 11.

टिप्पणी—इस श्लोक में मालोचना अलङ्कार है तथा द्विचरित्रो छन्द है ।

विमला

अन्वयः—तीक्ष्णैः, उदयैः, परशुभिः, क्षताङ्गानाम्, क्षितिकदां, कृजा, अविरत-
कपोतोपश्रुतैः, कूञ्जन्तीनाम्, शाखानाम्, व्रणम्, फणिनः, परिचितपरिक्षेपकूपया,
भ्रसन्तः, स्वनिर्नोकच्छेदैः, निवध्नन्ति, इव ॥ १२ ॥

व्याख्या—अपि च=अन्वयपि (Moreover), तीक्ष्णैः=निक्षिप्तैः (with sharp), उदयैः=उदयताग्रभागैः (edged), परशुभिः=कुशरैः (axes), क्षताङ्गानाम्=
द्विबाहववानाम् (bough with their body), क्षितिकदां=तृणान् (of the tree), कृजा=पीडया (of pain), अविरतानि अविरच्छिन्नानि कपोतानामुपश्रुतानि
तेरविरतकपोतोपश्रुतैः अविच्छिन्नशरावतकृषितैः=कपोतोपश्रुतम्यात्रेणैः (with
the ceaseless cooing of Pigeons), कूञ्जन्तीनाम्=हन्तुम् कुञ्जन्तीनाम्
(are uttering cries), शाखानाम्=विटपानाम् (of the branches of the trees), व्रणम्=घातम् (the wounds), फणिनः=सर्पाः (the Serpents),
परिचितानाम्=सहवासिनाम् (of their acquaintances), परिक्षेपः=परिचित-
परिक्षेपः (fatigue), तेन तद्दर्शनेन (through), या कृषा=दया (pity), तथा
परिचितपरिक्षेपकूपया=महवासिदुःखदर्शनजन्यानुकम्पया, भ्रसन्तः=दीर्घनिःश्वसन्
त्यजन्तः (having sigh), स्वनिर्नोकच्छेदैः=स्वेषा निर्नोकः स्वनिर्नोकः तेषां
छेदाः तैः स्वनिर्नोकच्छेदैः (with the pieces of their sloughs), निवध्नन्ति=
बध्नन्ति (bandaging), इव=वया (like) ॥ १२ ॥

एते च तपस्विन —

अन्त शरीरपरिशोषमुदग्रयन्त.

कीटक्षतिस्रुतिभिरस्त्रमिवोद्धमन्त. ।

छायावियोगमलिना व्यसने निमग्ना

वृक्षाः श्मशानमुपगन्तुमिव प्रवृत्ता ॥ १३ ॥

हिन्दी—और भी—तीव्रण भारवाले कठोर कुठारों से क्षत विधुत बने शरीरवाले पेड़ों की पीड़ा से—अनवरत कवूतों के वरुण कूजन के माध्यम से कराइती हुई शाखाओं के घाव को—इतके कोटराश्रित सर्प माना पुराने परिचय के कारण इनकी यह व्यथा सहा न करते हुए—झूक मारकर, अपनी केचुलों के डुबकों से मरहम पट्टी कर रहे हैं ॥ १२ ॥

English—The Serpents as if through pity excited by the sufferings of their acquaintances, are hissing and bandaging with the pieces of their sloughs, the wounds of the branches of the trees which are crying in pain with the ceaseless cooing of Pigeons, being hacked with large and sharp edged axes 12

टिप्पणी—इस श्लोक में उपरक्षा अठकार एव शिखरिणी छन्द है ।

निमला

अन्वय.—अन्त शरीरपरिशोषम्, उदग्रयन्त, कीटक्षतिस्रुतिभि, अस्त्रम्, उद्धमन्त, इव, छायावियोगमलिना, व्यसने निमग्ना, वृक्षा, श्मशानम्, उपगन्तुम् प्रवृत्ता, इव ॥ १३ ॥

व्याख्या—एते (These), च=पुन (again), तपस्विन (unfortunate) —

अन्त शरीरस्य परिशोषास्त शरीरपरिशोषम्=शरीराभ्यन्तरशोषणम् (the drying up within), उदग्रयन्त=प्राप्नुवन्त (aggravating), कीटानाम् क्षतय कीटक्षतयस्ताभ्य स्रुतय कीटक्षतिस्रुतयस्ताभि कीटक्षतिस्रुतिभि=कीट त्वक्छिद्ररसचरणै (through holes bored by insects), अस्त्रम्=नेत्रजलम् (tears), उद्धमन्त=मुच्यन्त (dropping), इव=यथा (like), छायाया = अनातपस्य वियोग =अभाव, तेन मलिना =छायावियोगमलिना =पत्राभावात् छायाविरहेणाशोभमाना (gloomy looking from want of shade), व्यसने = दुखे (into misery), निमग्ना =पतिता (plunged) वृक्षा =तरु (the trees), श्मशानम्=पितृवनम् (the cemetery), उपगन्तुम्=आश्रयितुम् प्रवृत्ता=उपुक्ता (preparing to go), इव=यथा (like) ॥ १३ ॥

हिन्दी—और ये बेचारे—

अपने शरीर की आन्तरिक पुष्कता को बढ़ाते हुए कीटों के छेद कर देने से निकलते हुए प्रवाहरूपी अश्रुपात से—सड़चरी छाया के विरह से मलिन दुःख में डूबे हुए की तरह ये वृक्ष मानो श्मशानभूमि की ओर अग्रसर होते हुए दिखलाई पड़ रहे हैं ॥ १३ ॥

English—Again these poor trees —

यावदस्मिन् विपमदशापरिणामसुलभे भिन्नशिलातले सुदूर्वमुपविशामि ।
(उपविश्याकर्ण्य च ।) अत्रे च्चिनिदमस्मिन् काले पटुपटहृदशब्दनिधौ नान्दीनादः ।
य एष—

प्रमृद्नन्द्भोतृणां श्रुतिपथमसारं गुह्यतया

बहुत्वात् प्रासादः सपदि परिपीतोऽङ्कित इव ।

असौ नान्दीनादः पटुपटहृदशब्दनिधौ

दिशां द्रष्टुं दैर्घ्यं प्रसरति सक्नोत्तुहल इव ॥ १४ ॥

Trees, plunged into misery, withered through loss of shade, and the drying of interior of their trunk, bearing the holes bored in them by worms like very heavy grief, were as if preparing to go to the burning ground. 13.

टिप्पणी—एष दशकः नै उद्देशः अङ्कुर एव वसन्तिदृष्टा एव है ।

विमला

यावत् = यावदकालपर्यन्तम् (till), अस्मिन् = पुरोदरपमाने (on this), विपना चासौ दशा विपमदशा तस्याः परिणामः स एव सुलभः तस्मिन् विपमदशापरिणाम-मुत्पन्ने=इतिनदुरवस्थावसिष्ठमागमुक्रे (easily available in the fullness of the rough time), भिन्नशिलातले = मग्नप्रस्तरखण्डे (broken slab of stone), सुदूर्वं = क्षणम् (for a moment), उपविशामि = भासनग्रहणम् करामि (I will sit), [उपविश्य = आपनग्रहण विधाय (sitting), च=तुन=and, आकर्ण्य = धृत्वा = (listening),] अत्रे = आक्षेपे (Ha), किम् = किमर्थम्-कुतो वा (why), इदम् = पृष्ठम् (this), अस्मिन् काले = अत्रे (at this time), पटुपटहृदशब्दनिधौ=कन्दुम्राविरटहृ-वाद्यसम्बन्धितः (with deep notes of drums and conches intermingled), नन्दीनादः = स्तुतिपाठध्वनिः (sound of festive music), य एष—

धन्वयः—धोतृणाम्, असारम्, श्रुतिपथम्, गुह्यतया, प्रमृद्नन्, बहुत्वात्, प्रासादः, सपदि, परिपीतोऽङ्कितः, इव, पटुपटहृदशब्दनिधौ, असौ, नान्दीनादः, सक्नोत्तुहलः, इव, दिशां, दैर्घ्यं, द्रष्टुम्, प्रसरति ॥ १४ ॥

व्याख्या—धोतृणाम्=आकर्णयितृणाम् (of the hearers), असारम्=आस्ति-सारो यस्यासौ असारः तन् = अनारम् = संकुचितम् (the narrow), श्रुतिपथम्=श्रोत्रम् (of the ear), गुह्यतया=पुरोर्भावः गुह्यतया गुह्यतया=महत्तया (so long), प्रमृद्नन्=पीडयन् (blended), बहुत्वात्=अधिकत्वात् (heavy), प्रासादे=राज-मवनः (by the mansions), सपदि=स्वल्पम् (quick), परिपीतोऽङ्कितः इव=पूर्वं परिपीतः पश्चादुच्चित इव=उद्गन्त इव (drunk in and then vomited forth), पटहृद संस्र पटहृदशब्दौ तयोर्बन्धनः पटहृदसंस्त्रयः पटवश्च ते पटहृदसंस्त्रयः पटुपटहृदसंस्त्रयस्तैर्युतः = पटुपटहृदसंस्त्रयनियुतः = दृक्कासंस्त्रयनियुतः (with the sound of deep sounding drums and conches), असौ=पृथः (this),

(विचिन्त्य ।) आः, ज्ञातम् । एष हि मलयकेतुसयमनसजातो राजकुलस्य-
(इत्यर्थोक्ते सासूयम् ।) मौर्यकुलस्याधिकपरितोषं पिशुनयति । (सबाष्पम् ।)
कष्टं भोः, कष्टम् ।

आचितोऽस्मि ध्रियं शत्रोरभिनीय च दर्शितः ।

अनुभावयितुं मन्ये यत्नः संप्रति मां विधे ॥ १५ ॥

नान्दीनाद=मगलतुर्यध्वनिः (sound of festive music), सकौतूहल = कौतु-
कवानिव (curious), दिशाम्=आशानाम् (of the quarters), वैर्ध्वम्=विस्तारम्
(length), द्रष्टुम्=अवलोकितुम् (to measure), प्रसरति=सर्वतो गच्छति
(spreads) ॥ १४ ॥

हिन्दी—जब तक इस विपन्न स्थिति में बनायाप्त उपलब्ध इस शिलाखण्ड पर ही बैठता हूँ । (बैठकर और सुनकर), अरे, यह अकारण शत्रु और दुन्दुभियों की मिश्रित मांगलिक ध्वनि क्यों सुनाई पड़ती है ?

जो यह—ध्वनि इतनी गंभीर और प्रबल है कि सुननेवालों के सङ्कुचित कान के छिद्रों की मद्द्वा होने के कारण पीछित करती हुई—जैसे जैसे प्रासाद जो उसे मानो पीकर उगल रहे हैं—सुन्दर नगाड़े और शहों की ध्वनि से युक्त—मांगलिक गीतमय उत्कण्ठित सी दिशामें के विस्तार को नाप रही है ॥ १४ ॥

English—I will sit down for a moment on this broken slab of stone, easily available in the fullness of the time of miseries. (Sitting down and hearing) Ha what is this sound of festive music at this hour with sound of drums and conches ?

This tumult of rejoicing blended with the sound of deep sounding drums and conches, which is drunk and through its magnitude instantly thrown up by the big mansions, spreads as if curious to measure the expanse of the quarters. 14.

टिप्पणी—इस श्लोक में उत्प्रेक्षा भलकार तथा शिखरिणी छन्द है ।

विमला

[विचिन्त्य=विचार्य (Musing)], आ=इति स्मरणार्थकमध्ययम् (Ah), ज्ञातम्=जवगतम् (I see), एष हि=अयं हि (this indeed), मलयकेतोः संयमनम् मलयकेतु-
सयमनम्, तस्मात् संजातो मलयकेतुसयमनसंजातः=पर्वतकपुत्रबन्धनोत्पन्नः (arising from the capture of Malayaketu), राजकुलस्य=नृपवशास्य (in the royal palace), इत्यर्थोक्ते=इति वाक्यार्थमभिधाय (At this half-utterance), सासूयम्=सद्वेषम् (through jealousy), मौर्यकुलस्य=चन्द्रगुप्तवंशस्य (in the place of Maurya), अधिकपरितोषम्=प्रमत्तानन्दम् (the increased joy), पिशुनयति=सूचयति (indicates), [सबाष्पम्=साधुनयनम् (with tears)], कष्टं भोः कष्टम् (Alas ! Alas !).

अन्वयः—शत्रोः, ध्रियम्, आवित, अस्मि, अभिनीय, दर्शित, च, अस्मि, मन्ये, संप्रति, विधे, माम्, अनुभावयितुम्, यत्नः ॥ १५ ॥

पुत्र्यः—आसीणो अजं । जाव अत्रचाणक्यादेसं संपादेमि । (आसीनोऽ-
यम् । यावदायं चाणक्यादेसं संपादयामि ।)

(राजसमपश्यन्निव तस्याप्रतो रज्जुपाशेन कण्ठमुद्धृणाति ।)

राक्षसः—(विलोक्य ।) जये, कथमात्मानमुद्धृणात्ययमहमिव दुःखित-
स्तपस्वी । भवतु । पृच्छान्वयेनम् । मद्र, किमिदमनुप्रीयते ।

व्याख्या—शत्रोः=धरो (Of enemy), श्रियम्=समृद्धिम् (of the pros-
perity), आश्रितः=आश्रितः अस्मिन्=भवामि (I was informed), अभिनीय=
सर्वापनानीय (after being brought here), इक्षितः=साक्षात्कारितः (have
been made to see), च=पुनः (and), अस्मिन्=भवामि (I am), नन्ये=संभाव-
यामि (I think), सस्मरि=अधुना (now), विधेः=वैदस्य (of fate), माम्=
(me), अनुभावयितुम्=आपयितुम् (to make feel it), यत्नः=प्रयासः (efforts). ॥१५॥

हिन्दी—(कुछ सोचकर) मरजा, सन्त गरा । नजरकेतु के बन्दा बन जाने पर निश्चय हो
पड़ रावकुम् (इतना आशा हा करने पर ईर्ष्यापूर्वक) नीरवत की कल्पित प्रसन्नता मूँवित
कर रहा है । (आँखों ने जानूँ भर कर) हा चट ! पद विधि का क्या ?

उस का समुद्रि का नै आता भा हो डिना और दयावसर वहाँ आकर उसका प्रत्यक्ष ही
हो दिया । अब इस समय मान्य का मुँह केरु अनुभव कराने का प्रयास है ॥ १५ ॥

English—(Thinking) O, I see, This actually indicates the over-
joy of royal family (at this half statement with jealousy) in the
place of Maurya at the arrest of Malayaketu (with tears) painful !
O painful !

I have been made to hear the prosperity of my enemy (by fate)
and to see it. I think—Fate's effort now is to make me feel it. 15.

प्रिमला

पुत्र्यः—अयम्=एकः (He), आसीनः=उपविष्टः (has sat down), यावत्=
यावत्कालपर्यन्तम् (till), आर्यचानक्यादेयम्=पूज्यकौटिल्याज्ञातिम् (Noble
Chanakya's commands), मम्यादयामि=करोमि (I shall execute).

[राजसमपश्यन्निव नन्दपवित्रमनवलोकायन्निव=(though without seeing
Rakshasa), तस्य राजस्य (him), अग्रतः=पुरतः (before), रज्जुपाशेन=
बन्धनदान्ना (with the noose of the rope), कण्ठम्=गलम् (neck),
उद्धृणाति=उपहृति (ties up)].

राक्षसः—[दिलीप्य=इष्टा=(Observing), जये=कालमवाधिष्कारे सम्बोधनम्
(Ab), ययम्=एष पुत्रः (this man), कथम्=कस्मात् कारणात् (how),
आमानम्=स्वम् (he himself), उद्धृणाति=उपहृति (ties up), अहमिव
(like me), तपस्वी (the poor), दुःखितः=वार्तः (must be miserable),
भवतु=अस्तु (well), एनम्=to him), पृच्छामि (I ask), मद्र=कथयामि
(gentle), इदानीम्=अधुना (now), किम् (what), अनुप्रीयते=विधीयते
(are doing).

पुरुषः—(सदाप्सम् ।) अज्ज, जं पिअवअस्सविणासदुःखितो अम्हारिसो मन्दभग्गो अणुचिट्ठदि । (आर्य, यत्प्रियवयस्यविनाशदुःखितोऽस्मादृशो मन्दभाग्योऽनुतिष्ठति ।)

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) प्रथममेव मया ज्ञातं नूनमहमियार्तस्तपस्वीति । (प्रकाशम् ।) हे व्यसनसमग्रहचारिन्, यदि न गुह्यं नातिभारिकं वा ततः श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुषः—[सदाप्सम्=साधुनयनम्=(With tear)], आर्य=पूज्य (noble), प्रियवयस्यविनाशदुःखितः=भतिरिन्गधमिप्रविरहार्तः (grieved at the loss of his dear friend), अस्मादृशः=मत्सदृशः (like myself), मन्दभाग्यः=भाग्यहीनः जनः (unfortunate fellow), अनुतिष्ठति=करोति (does).

राक्षसः—[आत्मगतम्=अनतिस्पष्टम्=(To himself)], प्रथममेव=प्रागेव (At the very outset), मया ज्ञातम्=अवगतम् (it was guessed by me), नूनम्=निश्चयम् (surely) अहमिव (like me), आर्तः=दुःखितः (distressed), तपस्वी=धीनः (poor fellow), [प्रकाशम्=स्पष्टम्=(aloud)], हे व्यसनसमग्रहचारी=ग्रह वेदस्तद्व्ययनार्थम् व्रतमपि मया तत्परतीति मग्रहचारी समानः मग्रहचारी सहाध्यायी व्यसनेन समग्रहचारी व्यसनमग्रहचारी तत्समुद्दी हे व्यसनसमग्रहचारिन्, समानव्यसनम् (O fellow-student-in the school of misfortune), यदि न गुह्यम्=यदि न गोपनीयम् (if not secret), वा=अथवा (or), नातिभारिकम्=अगुरुकम् (not very painful), ततः (then), श्रोतुमिच्छामि=आरणिषुमभिलषामि (I wish to hear it).

हिन्दी—पुरुष—यह जो, बैठ गया। अब मैं भी आर्य चाणक्य की आज्ञा की बातें निवत कहूँ।

(जैसे राक्षस को न देखना हुआ था, उसीके सामने गले में पड़ा डालने लगता है)

राक्षस—(देखकर) अरे, यह क्या ! यह तो अपने आप का हो बाँध रहा है। बेचारा मेरे जैसा ही कोई दुखी है। अस्तु, चलकर पूछता हूँ। (समीप जाकर) भद्र-क्या कर रहे हो ?

पुरुष—(साधुनयन) आर्य, प्रियमित्र के विनाश से दुखी मेरे जैसा इतनामय जो करता है।

राक्षस—(अपने दाप) मैंने तो पढ़े ही जान लिया था—निश्चय ही गरीब मेरी तरफ पीड़ित है। (प्रष्ट) मेरे विपक्ष के सहचर, यदि कोई बड़ा रहस्य न हो अथवा हृदय विदारक न हो तो सुनना चाहता हूँ।

English—*Man*—He sat down, Now I perform the order of Noble Chanakya.

(*He ties up the noose of the rope round his neck pretending without seeing Rakshasa*)

Rakshasa—(Obeserving) An, this man is hanging himself up. The poor man must be as distressed as I am ! Well, I ask him (Advancing near him) Gentle man ! what is being done ?

दुतयः—अत्र, न रहस्यं पादिगुरुं किं न सक्तमिति पित्रवचस्त्वनिपा-
त्तदुक्त्वित्तिष्ठति अतो एतन्नेतत्तु वि मरणस्य कालहरणं कादु । (आर्यं न रहस्यं
नातिगुरुम् । किं न शक्नोति प्रियवचस्त्वनिपाशदुःखितहृदय एतावन्नात्रमपि
मरणस्य कालहरणं कर्तुम् ।)

राक्षसः—(निःश्वस्य, आत्मगतम् ।) कष्टनेते सुहृद्व्यसनेषु परमुदासीनाः
प्रत्यादिगमान्ने यमनेन । (प्रकाशम् ।) मद्र, यदि न रहस्यं नातिगुरुं तच्छ्रो-
तुमिच्छामि ।

दुतयः—अहो पित्रवचो अत्रस्मि । स गच्छे । निवेदेमि । अस्ति वान एव
पजरे मणिआरसेदृष्टो विष्णुदासो ज्ञान । (अहो निर्वन्व आर्यस्य । का गतिः ।
निवेदयामि । अस्ति तान्द्र नगरे मणिआरसेष्टो विष्णुदासो नाम ।)

Man—(With tears) Noble Sir, I am performing nothing more
than a man can do at the destruction of his friend

Rakshasa—(To himself) I knew before that this poor fellow was
surely distressed like myself. (Aloud) O my friend of misfortune !
if it is neither secret nor painful, I wish to know it.

प्रिमला

दुतय —आर्यं=मान्य (Noble), न रहस्यम्=न गोप्यम् (is no secret),
नातिगुरुम्=नातिमारिक्तम् (nor very painful), किन्तु (but), प्रियवचसौ वय-
स्यस्य विनाशस्तेन दुःखित हृदयम् यस्य स प्रियवचस्त्वनिपाशदुःखितहृदय=स्निग्ध-
निश्चययोगात्मानसः (with my heart stricken at the loss of my dear
friend), एतावन्नात्रमपि=अत्रात्रमपि (even this much), मरणस्य=मरणस्याग-
स्य (of death), कालहरणम् कर्तुम्=मरणपारणम् विधातुम् (loss of time),
न शक्नोमि न समर्थः (I can not brook)

राक्षसः—[निःश्वस्य = (Sighing), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself),
कष्टम् (Hard), एते, सुहृद्व्यसनेषु = वन्दनदाक्षिण्येषु (in his friend's straits),
परमुदासीना = अहो, दोगा (I am apathetic), वयम् (we), अनेन = अनुना
(by this man), प्रत्यादिगमान्ने = तिरिच्छमानम् (is being ashamed),
[प्रकाशनम् = स्पष्टम् = (Aloud)], मद्र = कल्याणिन् (Gentle), यदि (if), न रहस्यम् =
न गोप्यम् (is not secret), नातिगुरुम् = नातिविस्तृतम् (neither very painful),
तत् = तस्मात् (so), श्रुतुमिच्छामि = श्रुतिमिच्छामि (I wish to hear)

दुतयः—अहो = आश्चर्यम् (Wonder), आर्यस्य = मान्यस्य (of noble sir),
निर्वन्वः = आप्रहातिदयः (the insistence), का गतिः = कः उपायः (what help),
निवेदयामि = वदयामि (I will tell you), अत्र = नगरे (in this city), मणिआर-
सेष्टो = वैश्यव्यापारी (Jewel merchant), विष्णुदासो नाम (Vishnudas by
name), अस्ति (is).

राक्षसः—(आत्मगतम् ।) अस्ति विष्णुदासश्चन्दनदासस्य सुहृत् ।
(प्रकाशम् ।) किं तस्य ।

पुरुषः—सो मम पित्रव्यस्तो । (स मम प्रियवयस्यः ।)

राक्षसः—(सहर्षमात्मगतम् ।) अये प्रियवयस्य इत्याह । अत्यन्तसन्निकुष्टः
सम्बन्धः । हन्त, घ्रास्यति चन्दनदासस्य वृत्तान्तम् । (प्रकाशम् ।) भद्र,
किं तस्य ।

हिन्दी—पुरुष—आये, न कोई रहस्य की बात है और न कोई हृदय विदारक बात ही है, लेकिन, मित्र के विनाश से विदीर्ण हृदय-अपने प्राणत्याग में अब इतना भी विलम्ब सहन नहीं कर सकता ।

राक्षस—(लम्बी सास लेकर अपने आप) हा कष्ट, इस व्यक्ति ने अपने (चरित्र से) मित्र की निपत्ति में उदासीन (मुझे) अत्यन्त तिरस्कृत कर दिया । (प्रकट) मित्र, यदि गुप्त या हृदय-विदारक नहीं है तो सुनना चाहता हूँ ।

पुरुष—आर्य का आग्रह आश्चर्यजनक है । क्या उपाय है ? बतलाता हूँ । इस नगर में एक स्वर्णकार रहता है—सेठ विष्णुदास ।

English—*Man*—Sir, it is neither secret nor painful. But with my heart afflicted with the loss of my dear friend, I can not lose even a little time in dying.

Rakshasa—(Sighing to himself) Hard ' Here I am (put to shame) by this man to tell I am supremely indifferent in my friend's (of Chandandas) straits.

Man—Oh, Noble Sir, is very pressing. What help ? I will tell you. There is a Jewel merchant in this city, Vishnudasa by name.

विमला

राक्षस —[आत्मगतम्=स्वगतम्=(To himself)], चन्दनदासस्य (Chandandas's), सुहृत्=मित्र (friend), विष्णुदासः=एतदाक्षयः (Vishnudasa by name), अस्ति (is), [प्रकाशम्=स्पष्टम् (Aloud)], तस्य किम् (what of him), ?

पुरुष —सः=असौ (He), मम (my), प्रियवयस्य=स्निग्धमित्रम् (dear friend).

राक्षस —[सहर्षम्=हर्षेण सहितम्=(With joy), आत्मगतम् (to himself)], अये=आश्चर्यम् (Wonder), प्रियवयस्य=स्निग्धमित्रम् (dear friend), इत्याह=एव कथितम् (he says), अत्यन्तसन्निकुष्टः सम्बन्धः=अनतिदूरवर्तिन्यपेक्षा (the relationship is very close), हन्त=हर्षे (oh joy), चन्दनदासस्य (Chandandas's), वृत्तान्तम्=उदन्तम् (news), घ्रास्यति=अवगमिष्यति (must know), [प्रकाशम्=स्पष्टम् (Aloud)] भद्र=कृप्याणि (Gentle), किं तस्य (what of him).

पुरुषः—सो सपट् दिण्णाभरणादिविह्वो जलणं पवेसिदुकामो णअरादो णिक्कन्तो । अहं मि जाय तस्स अत्ताण्डव्व ण सुणेमि ताव अत्ताण उव्वन्धिअ रागदइदुं इम जिण्णुज्जाण आअदो । (स सप्रति दत्ताभरणादिविभक्तो ज्वलन प्रवेष्टुकामो नगराग्निक्कान्तः) अहमपि यावत्तस्याऽभोतव्य न शृणोमि ताव-
दात्मानमुद्वप्य व्यापादयितुमिदं जीर्णोद्यानमागतः ।)

राक्षसः—भद्र, अग्निप्रवेशे सुहृदस्ते को हेतुः ।

किमौषधपयातिगैरुपहतो महाभ्याधिभिः

पुरुषः—णह्ण णहि । (नहि नहि ।)

हिन्दी—राक्षस—(अपने साथ) विष्णुदास चन्दनदास का उनिट मित्र है । (प्रकट रूप न)
उसका क्या हुआ ?

पुरुष—वह मेरा एक इष्ट मित्र है ।

राक्षस—(प्रसन्नता के साथ, अपने साथ) भरे, प्रिय मित्र कहा है । भयान्त घनिष्ठ सम्बन्ध है । अब चन्दनदास का सनाचार भवश्य जानना होगा । (प्रकट) भद्र, वृत्ते क्या हुआ ?

English—Rakshasa—(To himself) There is Vishnudasa, Chandandasa's friend. (Aloud) What of him ?

Man—He is my dear friend.

Rakshasa—(With joy to himself) Ha, he tells his dear friend, That is a very close connection. Oh, joy, he must know the news of Chandandasa (Aloud) What of him.

निमला

पुरुषः—स=असौ (He), सप्रति=अतुना (now), दत्ताभरणादिविभक्तः= दत्त-
भारणादिविभक्तो येनासौ=अपितैश्चर्यः (having given away the orna-
ments and all other properties), ज्वलन प्रवेष्टुकामः=अग्निप्रवेशाभिधापी
(with the desire of throwing himself into the fire), नगरात्=पुरात्
(from the city), निष्क्रान्तः=निर्गतः (gone out), अहमपि (I too), यावत्तस्य
(his), अश्रोतव्यम्=मृत्युम् (death), न शृणोमि=अवगम्यः करोमि (I should
hear), नावन्=तत्तत्कालपर्यन्तमेव (before that time), आत्मानम्=स्वम्
(himself) उद्वप्य=बद्धा (to hang up), व्यापादयितुम्=विनाशयितुम्
(for destroying), इदम्=एतत् (this), जीर्णोद्यानम् (old garden), प्रविशामि
(entering)

राक्षस—भद्र=कल्याणिन् (Good man), ते=तव (your), सुहृदः=मित्रस्य
(friend s), अग्निप्रवेशे (entering fire), को हेतुः=कि कारणम् (what is
the cause)—

किमौषधपयातिगैरुपहतो महाभ्याधिभिः । (व्याख्या पृ० ४२६ में)

पुरुष—नहि नहि=स्वरायाम् द्विरुक्तिः, उत्कृष्टयोगो न सुहृद्विनाशहेतुरित्यर्थः ।

राक्षस —

किमग्निविषकल्पया नरपतेनिरस्त कृधा ।

पुरुष — अञ्ज, सन्त पाव सन्त पाव । चन्द्रवत्तस्स जणवदे ण णिससा पडिवत्ती । (आर्य, शान्त पाप शान्त पापम् । चन्द्रगुप्तस्य जनपदे न नृशसा प्रतिपत्ति ।)

राक्षस —

अलभ्यमनुरक्तवान् कथय किन्तु नारीजनं

पुरुष — (कर्णो पिधाय ।) सन्त पाव । अभूमी क्त्तु एसो अविणअस्य । (शान्त पापम् । अभूमि स्व-वेपोऽविनयस्य ।)

राक्षस —

किमस्य भवतो यथा सुहृद् एव नाशोऽवश ॥ १६ ॥

राक्षस — किमग्निविषकल्पना नरपते निरस्त कृधा ।

पुरुष — आर्य = श्रीमान् (Noble sir), शान्तम् पापम्, शान्तम् पापम् (Begone sin ' Begone sin), चन्द्रगुप्तस्य = मौर्यस्य (Chandragupta's), जनपदे = नगरे (in the kingdom), न = नहि (not), नृशसा प्रतिपत्ति = अघातुका प्रवृत्ति (cruel deeds are committed)

राक्षस — अलभ्यमनुरक्तवान् कथय किन्तु नारीजनम् ।

पुरुष — कर्णो पिधाय = (Stopping his ears), शान्तम् पापम् (Begone Sin ') एव = परनारीजनानुरागरूपो दोष (this), अविनयस्य = अविनीतस्य (of immodesty), सत्तु (such), अभूमि = अविषय (no subject for)

राक्षस — किमस्य भवतो यथा सुहृद् एव नाशोऽवश ॥ १६ ॥

अन्वय — किम् औषधपथातिगै महाभ्याधिभि, उपहत, किम्, अग्निविषकल्पया, नरपते, कृधा, निरस्त, कथय, किन्तु, अलभ्यम्, नारीजनम्, अनुरक्तवान्, किम् अस्य, भवत, यथा, सुहृद्, एव, अवश, नाश ॥ १६ ॥

व्याख्या — किम् (What) औषधपथातिगै = औषधस्य प-था औषधपथ तमति शस्त्रन्तीति औषधपथाति गा, तै = अतिक्रान्तपतीकार्यतारूपभेषजगुणै (baffle the power of medicine), महा-राधिभि = प्रवृद्धरोगै (by serious diseases), उपहत = पीडित (is attacked), किम् (what) अग्निश्च विषयाग्निविषे ताभ्यामीषदूना अग्नि विषद्वारा तथा अग्निप्रिषक्वरया = वह्निविषगुह्या (like fire and poison), नरपते नृपस्य (the King's), कृधा = कापेन (by wrath), निरस्त = तिरस्कृत (cast off), कथय = कथयताम् (tell) किन्तु = अथवा (or), अलभ्यम् = सवेर्दुष्प्राप्यम् (unapproachable), नारीजनम् = स्त्रियम् (female), अनुरक्तवान् = आसक्तवान् (feel interested), किम् (what), अस्य = एतस्य (his), भवत = तव (your), यथा, सुहृद् = मित्रस्य (of friend), एव (indeed), अवश (has unavoidable), नाश = विनाश (loss)

पुरुषः—अज्ज, जहं इं । (आर्य, अथ किम् ।)

हिन्दो—पुरुष—वह अनो ही दरिद्रों के बीच अपनी सारी सम्पत्तियों को बाँटकर—अग्नि-प्रवेश के लिए शहर से बाहर निकला है । इसके पूर्व क्या मैं उससे अनङ्ग का सवाद सुनूँ—स्वयं आ नष्ट हो कर मर जाना चाहता हूँ ।

राक्षस—मद्र, तुम्हारे मित्र के आन में प्रविष्ट होने का क्या कारण है ? क्या औषधि से भी अमाध्य रोगों से पाहित है ?

पुरुष—नहीं, नहीं ।

राक्षस—क्या अग्नि और विष के तुल्य राजकीय क्रोध का भाजन है ?

पुरुष—आर्य, पार शान्त हो । पार शान्त हो ! चन्द्रगुप्त के राज्य में यह क्रूरता असम्भव है ।

राक्षस—नो फिर किसी दुष्टाध्य नारी के प्रति आसक्त या ?

पुरुष—(कानों पर हाथ रख कर) पार शान्त हो । ऐसा उद्गटना का वह आशय नहीं है ।

राक्षस—ता फिर क्या तुम्हारा गरह उनके किसी मित्र पर विरसित आर्य और वह क्रुद्ध कर न सका ।

English—Man—Has come out of the city with a desire to enter into the fire, having distributed his all ornaments and wealth to poors. I too have come to this old garden in order to hang up myself before hearing the unbearable end of him.

Rakshasa—Noble man, what causes the entrance of your friend into the fire ?

Is he suffering from the serious diseases beyond the power of medicines ?

Man—No, No.

Rakshasa—Is he persecuted by the royal fury which is all little short of fire and poison ?

Man—Hence sin ! Hence sin ! Sir, there is no use of cruelty in the rule of Chandragupta

Rakshasa—Say, was he attracted towards an unapproachable woman ?

Man—(Blocking his ears) Hence Sin ! He was not a man of such immodesty.

Rakshasa—Did he suffer from an unavoidable loss of friend like you ?

टिप्पणी—इस दृष्टिक में रूपक अट्टहार उपन्यासित है तथा वृष्ट का नाम ई पृथ्वी ॥

विनता

पुरुषः—आर्य=मान्य (Noble sir), अथ किम्=मम प्रियमुद्दः विष्णुदासस्य मुद्दन्तरविनाश एव विनाशहेतुस्त्वर्थः (so, it is).

राक्षसः—(सावेगमात्मगतम् ।) चन्दनदासस्य प्रियसुहृदिति तद्विनाशो हुतभुजि प्रवेशहेतुरिति यत्सत्यं चलितमेवास्ते युक्तस्नेहपक्षपाताद्भृदयम् । (प्रकाशम् ।) तद्विनाशं च प्रियसुहृद्वत्सलतया मर्तव्ये व्यवसितस्य सुचरितं च विस्तरेण श्रोतुमिच्छामि ।

पुरुषः—अदो अवरं न सकृणोमि मन्दभागो मरणस्य विघ्नमुत्पादेदु । (अतोऽपरं न शक्नोमि मन्दभाग्यो मरणस्य विघ्नमुत्पादयितुम् ।)

राक्षसः—भद्र, श्रवणीयां कथां कथय ।

पुरुषः—का गई । किं कादृश्यम् । एसो क्लु निवेदेमि । सुणोदु अज्जो । (का गतिः । किं कर्तव्यम् । एष खलु निवेदयामि । शृणोस्वार्थः ।)

राक्षसः—भद्र, अवहितोऽस्मि ।

पुरुषः—अत्थि एत्थ णअरे मणिआरसेट्ठी चन्दनदासो णाम । (अस्ति इह नगरे मणिंकारश्रेष्ठी चन्दनदासो नाम ।)

राक्षसः—[सावेगम् = सरभसम् आत्मगतम् (With anguish, to himself)], चन्दनदासस्य (Chandandasa's), प्रियसुहृद् इति = प्रियमित्रम् (dear friend), तद्विनाशः एव = चन्दनदासमरणमेव (the ruin of Chandandasa), हुतभुजि = घट्टी (in the fire), प्रवेशहेतुरिति = यत्नस्वरणमिति (causes of his entering fire), यासत्यम् = यस्मात् तथ्यम् (really), युक्तस्नेहपक्षपाताद् = मित्रानुरागा-सक्ताद् (through the just feeling of affection), हृदयम् = चित्तम् (the heart), चलितमेवास्ते = पीडितमेवास्ति (stands trembling), [प्रकाशम् = स्पष्टम् Aloud], च = पुनः (again), तद्विनाशम् (his destruction), प्रियसुहृद्वत्सल-तया = प्रियमित्रस्नेहेन (by the affection for his dear friend), मर्तव्ये व्यव-सितस्य (is prepared to die), सुचरितम् = साधुशीलम् (the noble life), विस्त-रेण (in detail), श्रोतुमिच्छामि = श्रवणितुम् चान्क्षामि (wish to hear).

पुरुष — अतोऽपरम् = इतोऽधिकम् (Further), मरणस्य (to my death) विघ्न-मुत्पादयितुम् (cause obstacle), मन्दभाग्यः (unlucky), न शक्नोमि (I cannot bear).

राक्षस — भद्र, कथ्याणिन् (Good man), श्रवणीयां कथाम् = श्रवणयोग्य वृत्तम् (tell that is so worth hearing), कथय (tell me)

पुरुष — का गतिः = कः उपायः (What course), किं कर्तव्यम् — किं करणीयम् (what can I do), एष खलु (indeed), निवेदयामि = निवेदनम् करोमि (I will tell you), धार्यः = मान्यः (Noble Sir), शृणोतु (listen)

राक्षस — भद्र = कथ्याणिन् (Good man), अवहितोऽस्मि (I am all atten- tion).

पुरुषः—इह नगरे = अस्मिन् पुरे (In this town), मणिंकारश्रेष्ठी (Jewel mer- chant), चन्दनदासनामा (by name Chandandasa), अस्ति (is).

राक्षसः—(सविपादमात्मगतम् ।) एतच्चतुष्पातनस्मच्छोक्तीशब्दार्थं देवेन । हृदय, स्थिरीभव । किनपि ते कष्टतरनाकर्णनीयमस्ति । (प्रकाशम् ।) भद्र, श्रूयते मित्रवत्सलः साधुः । किं तस्य ।

राक्षसः—[सविपादम्=सचिन्तम् (In alarm), आत्मगतम्=स्वगतम् (to himself)], अस्मच्छोक्तीशब्दार्थम्=अस्मद्दिनाशेषदेशमार्गम् (the door for initiating me), देवेन=आम्येन (by fate), अपातुम् (has opened), हृदय=हृदय (heart), स्थिरीभव=स्थिरम् भवन्त्यस्व (be firm), तेनैव (your) किनपि=किञ्चित् (something), कष्टतरम्=दुःखजनकम् (very painful), आकर्णनीयम् (to listen to), अस्ति (is), [प्रकाशम्=दृष्टम् (Aloud)], भद्र=कृपाणिन् (gentle man), श्रूयते=आकम्प्यते (is known), मित्रवत्सलः=सुहृन्पुत्राणी (to be loving to his friend), साधु=सत्वरिन् (good man), किं तस्य=(what of him) ?

हिन्दी—पुरुष—काँ बँर क्या ?

राक्षसः—(आगे में अपने कार वह चन्दनदास का प्रिय मित्र है । उसके अग्निप्रवेश का कारण चन्दनदास का विनाश हो है । मेरा तो सब यही है कि बचि स्नेह को अनुभूति होने के कारण हृदय व्याकुल हो रहा है । (प्रकट रूप में) भँर, उसके विनाश को भँर दिनमित्र के प्रति आधिक प्रेम के कारण करने के लिए तब स्ति के साधुचित को सुनना चाहता हूँ ।

पुरुष—कार, वृत्त को प्रकाश के लिए—रखे अधिक, इस धमाले के पास सनय करो है ?

राक्षसः—भद्र, सुने योग्य चरित्र को करो न ?

पुरुष—क्या उपाय है ? क्या करना चाहिए ? अच्छा तो सुनिये ।

राक्षसः—भद्र, सुन रहा हूँ ।

पुरुष—इस बात में चन्दनदास जान का एक बँरही है ।

राक्षसः—(उस के साथ अपने कार) शोक में शीघ्र करने के लिए मान्य ने हनारा दाद छोड़ दिया है । हृदय, बँर चारा करो, बनी भँर नो दुख दुःख सुनना तुम्हारे बिये बर्हिह है । (प्रकट) हाँ, भद्र, मित्रवत्सल उस साधु चरित्र को सुन रहा हूँ । उच्छा क्या हुआ ?—

English—Man—What else, Sir !

Rakshasa—(With excitement to himself) He is the friend of Chandandasa. The ruin of Chandandasa is the cause of his entering in to the fire. So, my heart is really trembling due to the effect of partiality through affection. (Aloud) I want to listen to in detail the story of the death of his friend and of his good works who is about to die due to the love for his affectionate friend.

Man—Sir, I am, an unlucky man, not in a position to obstruct further my death.

Rakshasa—Gentleman, tell only the worth-listening story.

Man—What assistance ? What should I do ? I shall relate, Sir, listen to.

पुरुष —सो एदस्स विष्णुदासस्स पिअवअस्सो होदि । (स एतस्य विष्णु-
दासस्य प्रियवयस्यो भवति ।)

राक्षस —(स्वगतम् ।) सोऽयमभ्यर्णं शोकवज्रपातो हृदयस्य ।

पुरुष —तदो विष्णुदासेण वअस्ससिणेहसरिस्स अज्ज विष्णविदो चन्दउत्तो ।
(ततो विष्णुदासेन वयस्यस्नेहसदृशमद्य विज्ञप्तश्चन्द्रगुप्तः ।)

राक्षस —कथय किमिति ।

पुरुष —देव, मह गेहे कुटुम्बभरणपञ्चत्ता अत्थवत्ता अत्थि । ता एदिणा
विणिमएण सुञ्चिज्जटु पिअवअस्सो चन्दणदासो त्ति । (देव, मम गेहे कुटुम्ब-
भरणपर्याप्तार्थवत्तास्ति । तदेतेन विनिमयेन मुच्यता प्रियवयस्यश्चन्दनदास इति ।)

राक्षस —(स्वगतम् ।) साधु भो विष्णुदास, साधु । अहो, दर्शितो
मित्रस्नेहः । कुत —

Rakshasa—Gentleman, I am all ready

Man—There is a Jeweller in this city, Chandandasa by name

Rakshasa—(Being hopeless, to himself) Here the door of initia-
tion of grief is opened to me by fate O my heart, be firm, you have
to here something more painful (Aloud) Gentleman, I am listening
to the story of that man—a relationate of his friend What of him ?

विनला

पुरुष —स = अस्मै (He), एतस्य (this), विष्णुदासस्य = एतदारयस्य (to
Vishnudasa), प्रियवयस्य = स्निग्धमित्र (dear friend), भवति = अस्ति (is)

राक्षस —[स्वगतम् = अनतिस्पष्टम् (To himself)], स = अस्मै (That), अयम्
(here), अभ्यर्णः = अधिगमनादि (is imminent), हृदयस्य = चित्तस्य (of the
heart), शोकवज्रपातः = चिन्ताकुलिताराम (the stroke of the thunderbolt of
grief to my heart)

पुरुष —तत (Then), विष्णुदासेन = तस्मात् (by Vishnudasa), वयस्यस्नेह
सदृशम् = मित्रप्रीतिवचनम् (befitting the love for his friend), अद्य (today),
चन्द्रगुप्तः = मौर्यं (Chandragupta), विज्ञप्तः = प्रापित (was informed)

राक्षस —कथय = कथयताम् (Tell), किमिति (what it was)

पुरुष —देव = राक्षस (Sire), नम गेहं = मत्सदने (in my house), कुटुम्बभर-
णपर्याप्तार्थवत्ता = वन्धुपूरणविभवपर्याप्त (money is enough to support de-
pendants), अस्ति (is), तत् = तस्मात् (so), एतेन = घनेन (by this), विनि-
मयेन = परिवर्तनेन (in exchange) प्रियवयस्य = स्निग्धमित्र (dear friend),
चन्दनदास (Chandandasa), मुच्यताम् = त्यज्यताम् (be released)

राक्षस —[स्वगतम् = अनतिस्पष्टम् (To himself)], साधु भो विष्णुदास (Bra-
vo, O, Vishnudasa), साधु (bravo), अहो = आश्चर्यम् (wonder), दर्शित
(is shown by you), मित्रस्नेहः (love for friend), कुत (for) —

पितॄन् पुत्रान् पुत्रान् परवद्भिर्हिंसन्ति पितरो

यदयं सौहार्दं सुहृदि च विमुञ्चन्ति सुहृदः ।

प्रियं मोक्षं तयो व्यसनमिव सद्यो व्यवसितः

कृतायाऽयं सोऽयं स्वयं सति वणिक्त्वेऽपि वणिजः ॥ १७ ॥

(प्रचराम् ।) भद्रं ततस्तयाभिहितेन किं प्रविपन्नं भोज्यम् ।

हिन्दी—पुत्र—वर इस विष्णुदास का हार्दिक मित्र है ।

राक्षस—(अपने भाव) मेरे हृदय के लिए सौहार्दपूर्ण वक्त्र का आवाज अब सुनी है ।

पुत्र—इसके बाद जन विष्णुदास ने भाव हा करने नित्र के स्नेहानुराग से चन्द्रगुप्त से निवेदन किया ।

राक्षस—वह क्या ? बटुआओं ।

पुत्र—वह कि—गवर्न मेरे घर में एक परिवार के पाठन-पोषण करने आरम्भ कराना चाहते हैं । इतना, वह जान मुझे ठीक है और मेरे नित्र चन्द्रनारायण को मुक्त कर दें ।

राक्षस—साहू, विष्णुदास साहू—अथर्ववचन रूप से तुमने अपना नित्रनेह न दर्शाया ।

English—Man—He is a dear friend of this Vishnudasa.

Rakshasa —(To himself) Now thunder bolt of grief is about to fall on my heart.

Man—Then, today, Vishnudasa requested Chandragupta according to the love for his friend.

Rakshasa—Say, what was the result ?

Man—My Lord, there is an enough wealth to support my family. So, let my dear friend Chandandasa be released in exchange for it. For.—

विमता

अन्वया—यदयं, पुत्रान्, पितॄन्, पितरः, पुत्रान्, परवद्, अभिर्हिंसन्ति, सुहृदः, सौहार्दं, च, विमुञ्चन्ति, तव, प्रियं, यः, व्यसनमिव, सद्यः, मोक्षं, व्यवसितं, तः, वयम्, अर्थः, वणिजः, तव, वणिक्त्वे, सति, वरि, कृतायाः ॥ १७ ॥

व्याख्या—यदयं=यस्ये (For which), पुत्राः=सुताः (sons), पितॄन्=जनकान् (fathers), पितरः=जनकाः (fathers), पुत्रान्=सुतान् (to sons), परवद्=द्वत्रत् (like enemy), अभिर्हिंसन्ति=प्लन्ति (kill), सुहृदः=नित्रानि (friend), सुहृदि=नित्रे (in their friends), सौहार्दं=अनुरागम् (friendship), च=तुनः (and), विमुञ्चन्ति=त्यजन्ति (relinquish), तव (that), प्रियं=प्रानादपीहम् (dear thing), यः=विष्णुदासः (who), व्यसनमिव=दुःख-नित्र (as an evil), सद्यः=तत्क्षणम् (at once), मोक्षं=त्यक्तम् (be cast off), व्यवसितः=समुद्युक्त (resolved), सोऽयं स्वयं=तदेतद्भनम् (that wealth), वणिजः=वणिग्वासीयस्य (being a merchant), तव=भवतः (your), वणिक्त्वे=वणिग्वासीयस्यैववणिक्कार्यवरादिष्वे (of you, being a merchant

पुरुष — अज्ञ, तदो एव भणिदेण चन्द्रवत्तेण पटिभणिदो सेट्टी विद्धदासो—
 'ण मए अत्यअस्स कारणेण चन्द्रणदासो सजमितो, किंतु पच्छादिदो अणेण
 अमच्चरक्खसस्स घरअणो त्ति बहुसो जाणिद । तेण पि बहुसो जाचिदेण ण
 समप्पिदो । ता जदि त समप्पेदि तदो अत्थि से मेक्खो । अण्णहा पाणहरो से
 वण्डो' त्ति भणिअ उम्मट्टाण आणग्गिदो चन्द्रणदासो । तदो दाव वअस्सचन्द्र-
 णनामस्स असुणिदव्व ण सुणोमि ताव जल्लण पविसामि त्ति सेट्टी विद्धदासो
 णअरादो णिक्कन्दो । जह वि विद्धदासस्स असुणिदव्व जाव ण सुणोमि ताव
 उव्वन्धिअ अत्ताण पाणादेमि सिद्ध निण्णुज्जाण आअदो । (आय, तत एव
 भणितेन चन्द्रगुणेन प्रतिभणित श्रेष्ठी विष्णुदास 'न मरार्थस्य कारणेन
 चन्द्रनदास' सयमित', किंतु प्रच्छादितोऽनेनामात्यराक्षसस्य गृहजन इति
 बहुशो ज्ञातम् । तेनापि बहुशो याचितेनापि न समर्पित' । तथादि त समर्पयति

for merchants naturally love money more than others), सत्यपि कृतार्थं =
 सफला जात इति शेषः (has accomplished its end) ॥ १७ ॥

[प्रकाशम् = स्पष्टम् (Aloud)], भद्र = कस्याणिम् (Gentleman), तत = तत्पश्चात्
 (then), तथाभिहितेन = साक्षात्कथितेन (such informed), मौर्येण = चन्द्रगुप्तेन
 (by Maurya), किं प्रतिपद्यम् = किमप्रयुक्तम् (what was done)

हिन्दी—बिस धन के छिर—पुत्र पिता के और पिता पुत्र के छत्र की तरह प्राग हर लते
 हैं और शत्रु के छिर मित्र अपनी मित्रता तक त्याग देते हैं । वही सम्पत्ति को तुमने आज
 अपने एक मित्र को बचाने के छिर पाप की तरह फेंक दिया । वही यह धन तुम्हारे भाव वैश्य
 छुटि का उधार कर तुम्हें सकल बना दिया ॥ १७ ॥ (प्रकाश रूप में) भद्र, विष्णुदास की इस
 प्रार्थना पर चन्द्रगुप्त की प्रतिक्रिया क्या हुई ॥

English—You have at once resolved to reject an evil, inspite of
 being a merchant, that property for which sons kill parents and
 parents to sons like enemies, and for which friends renounce fri-
 endship, that very wealth has finished its end of you a marchant. 17
 (Aloud) Noble man what did Maurya do after this information ?

टिप्पणी—इस श्लोक में अपना एक कान्यकिङ्क यत्कार तथा शिखरिणे छन्द है ॥

विमला

पुरुष—वार्थ = मान्य (Sir), तत = तदुत्तरम् (then), एव भणितेन = इत्य-
 निहितेन (thus addressed), चन्द्रगुप्तेन = मौर्येण (by Maurya), प्रतिभणित =
 प्रयुक्त (replied), श्रेष्ठी विष्णुदास (merchant Visnudasa), अर्थस्य कारणेन =
 धनस्य हतुना (for the sake of money), चन्द्रनदास (Chandaudasa), मया
 न मयमित = मया न कारागारे निबद्ध (is not imprisoned), किन्तु (but),
 अनेन = चन्द्रनदासेन (by him), अमात्यराक्षसस्य = भद्रराक्षसस्य (Minister
 Rakshasa's) गृहजन = कुलवादि (family), प्रच्छादित = संघापित (had
 concealed), इति, बहुश = अनेक (from many), ज्ञातम् (has transpired),

तदस्ति अस्य मोक्षः । अन्यथा प्राणहरोऽस्य दण्डः" इति भणित्वा उच्यस्थान-
मानाग्निचन्दनदानः । ततो चाब्रवीत् चन्दनदानस्याग्रेतस्य न शृणोमि
तावन्नन्तः प्रविशामीति श्रेष्ठी विष्णुदासो नगरात्प्रस्थान्तः । अहमपि
विष्णुदानस्याग्रेतस्य नान्न शृणोमि तानदुद्बुध्यामानं आपादामीतीदं
उपायं गतमानः ।)

वेताग्रि (by him), बहुधा याचतेनारि = अमङ्गल अर्थितोऽग्रि (though repeat-
edly ask), न समर्पित = न दत्त (has not delivered), तद्यदि = तस्मात्त्वम् (if),
तन् (= be of), समर्पयति = ददाति (to deliver), तत्र (then), अस्व =
चन्दनदानस्य (his), नाहं जसि = नुक्ति अस्ति (he will obtain his release),
अन्यथा राक्षसपुङ्गवनामनस्यै (otherwise), अस्व = चन्दनदानस्य (his), प्राणहरो
ब्रह्मराक्षसः (sentence) दण्डः = दण्डः (punishment), इति भणित्वा = पूर्वमपि
याप (again) वक्ष्यस्थानम् = मारणमूर्तिम् (place of execution), आनीत
= प्राप्तः (to be taken), चन्दनदानः (Chandandasa), तत्र = तस्मात् (so),
प्राक्त्वम् = चन्दनदानस्य प्राक्कालपर्यन्तम् विषयस्य (before his friend),
अग्रेतस्य = चन्दनदानः (the character), न शृणोमि = न जानामि (do
not hear) नात्र = तत्रकालपर्यन्तम् (till), श्रुत्वा त्वमिह = अग्रे प्रवेष्टु-
मानसि (intending to enter in) श्रेष्ठी विष्णुदानः (the merchant Vish-
nudas), नगरात् (from the town), निष्क्रम्य = इदित्येत (left the town),
अहमपि (I too), विष्णुदानस्य चन्दनदाननिग्रहः (Vishnudas's), अत्रात्रम् =
अनादित्यन्तम् (unbearable), प्राक्कालपर्यन्तम्, न शृणोमि (do not
hear), नात्रकालपर्यन्तम् (till), आनानम् = स्वम् (himself), उद्बुधम् =
उद्बुधत्वम् कृत्वा (by hanging), मारादयान्तिनरदानि I will kill इति =
(this), उपायं गतमानः = पुरातनपदम् (old card), आगतः = मनापातः
(come to).

हिन्दी—मार्ग, कानून ने नरदान के दण्ड में कहा—मैंने वन के छिद्र चन्दनदास को
नहीं दिया है । किन्तु, इन्ने चन्दनदास ने नगर के छिद्र के रक्षा है । अच्छे वार
नान पर भी इन्ने चन्दनदास दण्ड के प्रहार को नहीं सँगा । अब चन्दनदास का घर घर
हमारे घर, कानून ही चन्दनदास, चन्दनदास—ऐसे चन्दनदास दण्ड दिया जाना ।" यह कहकर
चन्दनदास का घर के चन्दनदास ने भेज दिया गया । तब इन्ने चन्दनदास का घर का
कुम्हार विष्णुदास के वन में चन्दनदास के छिद्र नर दण्ड दिया और कहा दण्ड
नेता ना है—मैं भी चन्दनदास के वन के चन्दनदास का वन चन्दनदास । नही
आगत है मैंने इस चन्दनदास ने प्रवेश दिया है ।

English—Man—Sir, then Chandragupta replied after knowing
it, 'I have not arrested him for wealth, but the family of minister

राक्षसः—भद्र, न खलु व्यापादितश्चन्दनदासः ।

पुरुषः—अज दाव वायादीअदि । सा क्खु संपदं पुणो पुणो अमच्चरक्खसस्स घरअण जाओअदि । ण सो क्खु मित्रवत्सलदाए समप्पेदि ता एदिणा कालणेण ण करोमि मरणस्स कालहरणं । (अद्य तावद्व्यापाद्यते । स खलु साप्रतं पुनः पुनरमात्यराक्षसस्य गृहजन याच्यते । न स खलु मित्रवत्सलतया समर्पयति । तदेतेन कारणेन न करोमि मरणस्य कालहरणम् ।)

राक्षसः—(सहर्षमात्मगतम् ।) साधु वयस्य चन्दनदास, साधु ।

शिवेरिव समुद्भूतं शरणागतारक्षया ।

निर्घीयते स्वया साधो यशोऽपि सुहृदा विना ॥ १८ ॥

(प्रकाशम् ।) भद्र, गच्छ गच्छेद्दानोम् । शीघ्रं विष्णुदासं जलनप्रवेशान्नियारय । अहमपि चन्दनदासं मरणान्मोचयामि ।

Rakshasa is consoled by him. He did not deliver them though repeatedly asked to do. So, So, if he will handover them to me, he will be released, unless he will be sentenced—being told such Chandandasa is brought to the place of execution. So, merchant Vishnudasa left the town to enter into the fire before hearing the bad news of his friend Chandandasa. I, too, have come to this old garden to hang myself before hearing the sad end of Vishnudasa

विमला

राक्षसः—भद्र = कल्याणिन् (Good man), खलु = (I hope yet), चन्दनदासः (Chandandasa), न व्यापादित = न मारितः (is not killed).

पुरुषः—(आर्य = सान्य Noble sir) अद्य (today), तावत् = नावत्कालपर्यन्तम्, व्यापाद्यते = त्रियते (will be killed), स = असौ (he), खलु = राक्षसलङ्कारे, साप्रतम् = अयुना (now), पुनः पुनः = नूयो भूयः (being repeatedly), अमात्यराक्षसस्य ; गृहजनम् = मन्दसचिवस्य कलत्रम् (Minister Rakshasa's family), याच्यते = प्रार्थ्यते (demanded), सः = असौ (he), खलु = निश्चये, मित्रवत्सलतया = सुहृदस्नेहेन (through his love for his friend), न समर्पयति = न ददाति (does not deliver), तत् = तस्मात्कारणात् (so), एतेन कारणेन = अनेन हेतुना (for this reason), मरणस्य = विनाशस्य (of death), कालहरणम् = समयहरणम् (loss of time), न करोमि (I will no).

राक्षसः—[सहर्षं = सानन्दम् (Joyfully), आत्मगतम् = स्वगतम् (to himself), साधु (Bravo), चन्दनदास (Chandandasa), साधु (Bravo).

अन्ययः—साधो, शरणागतारक्षया, समुद्भूतम्, शिवे, इव, स्वया, सुहृदा विना, अपि, यत्, निर्घीयते ॥ १८ ॥

व्याख्या—साधो=परोपकारिन् (Bravo), शरणगतस्य रक्षा, तथा=शरणगत-
रक्षया, रक्षणे आगतप्रानेन (from the protection of one come for prote-
ction), समुद्भूतम्=उत्पन्नम् (arising), शिवे=उत्तीरदेशाधिपस्य नृपतेः
(of the king Shivi), इव=यथा (like), स्वया=भवता (by you), मुहदा
विना=शरणगतेन मित्रेण विनाऽपि (even in the absence of your friend),
यदा=कीर्ति (the fame), निचीयते=सम्पाद्यते (is being earned) ॥ १८ ॥

[प्रह्लादम्=स्पष्टम्=(Aloud)], भद्र=कल्याणिन् (Good man), इदानीम्=
अधुना (now), गच्छ, गच्छ=प्रयादि, स्वरायां द्विरुक्तिः (go, go), शीघ्रम्=
द्रुतम् (quickly), विष्णुदासम् (to Vishnudasa), ज्वलनप्रवेशात्=वद्विपतनात्
(from entering fire), निवारय=निरोधय (prevent him), अहमपि (I too),
चन्दनदासम् (to Chandandas), मरणात्=विनाशात् (from death), मोक्ष-
यामि=पुनश्चकरोमि (will save)

हिन्दी—राक्षस—भद्र, नार तो नहीं बला गया चन्दनदास ।

पुनर—आज मारा जाएगा । मनी मो उससे बनारस राक्षस का परिवार नौता जा रहा
है और वह मित्रलेह के कारण उसे नहीं दे रहा है । इसी कारण मैं मरने के लिए जाने में विवश
नहीं बाहता हूँ ।

राक्षस—(प्रसन्नपूर्वक अपने भाव) साधु मित्र चन्दनदास साधु ।

इ मातृशोक, शरणगत को रक्षा करने के कारण, राजा शिवि का नाँव;—मने मित्र की
अनुरक्ति ने मो—यस क्षण कर रह हो ॥ १८ ॥

(प्रवृत्त रूप में) भद्र, शीघ्रता करो जाओ । अपने मित्र विष्णुदास को आपा में जल मरने
से रोको । मैं मो चन्दनदास को मरने से बचाता हूँ ।

English—Rakshasa—Gentleman, I hope Chandandas is not yet
killed

Man—Today he will be killed, still he is asked again and again
to deliver the family of minister Rakshasa. He is not handing over
due to friend's affection. So, due to it, now I shall not delay my
death.

Rakshasa—(With joy to himself) Bravo, Chandandas friend,
Bravo.

Good man, you are earning a fame like that of the king Shivi
arising from the protection of a refugee, even in the absence of your
friend 18.

(Aloud) Goodman, go quickly go and save Vishnudasa from
entering into fire. I too, will rescue Chandandas from death.

टिप्पणी—इस श्लोक में उम्मा तथा न्यविरेक अङ्गार को सकृदि तथा अनुष्टुप छन्द है ।

पुरुष —अह उण केण उवाएण तुम चन्दणदासं मरणादो मोचेसि । (अथ पुनः केनोपायेन त्वं चन्दनदास मरणान्मोचयसि ।)

राक्षसः—(सङ्गमाकृष्य ।) नन्वनेन व्यवसायमुद्गदा निस्त्रिंशेन । पश्य—

निस्त्रिंशोऽयं सज्जलजलदव्योमसंकाशमूर्ति-

युद्धधन्दापुलकित इव प्राप्तसख्य. करेण ।

सत्त्वोत्कर्षात् समरनिकपे दृष्टसार. परेमं

मित्रस्नेहाद्विवशमधुना साहसे मां नियुक्ते ॥ १९ ॥

विमला

पुरुष —अथ=इति वितर्के, पुन (again), केनोपायेन (by what means), त्वम् (you), चन्दनदासम् (Chandandasa), मरणात् (from death), मोचयसि=पुष्टकरोसि (will save),

राक्षसः—[सङ्गमाकृष्य (Drawing his sword)], वनु=इति वितर्के, अनेन=एतेन (by means of this), निस्त्रिंशेन=सङ्गेन (sword), व्यवसाये पौरुषे मुद्गत् तेन व्यवसायमुद्गदा=पौरुषैकसहायेन (through this companion in any undertaking), पश्य=अवलोक्य (see)

अन्वयः—सज्जलजलदव्योमसंकाशमूर्ति, करेण, प्राप्तसख्य, युद्धधन्दापुलकित, इव, सत्त्वोत्कर्षात्, पर समरनिकपे, दृष्टसार, अयम्, मे, निस्त्रिंश, अधुना, मित्रस्नेहात्, विवशम्, माम्, साहसे, नियुक्ते ॥ १९ ॥

व्याख्या—जलेन सहित सज्जल, सज्जल य जलद' अर्थात् सज्जल जलदो परमात् सत् सज्जलजलदम् तच्च तद् व्योम सज्जलजलदव्योम तेन सङ्गाप्तम्, मूर्तिर्यस्य स सज्जलजलदव्योमसंकाशमूर्ति =शराकालिकाकाशसदृशकृष्णवर्ण (dark blue in appearance like a water charged cloud and the sky), करेण=हस्तेन (in the hand), प्राप्तसख्य =प्राप्तम् सख्यम् येन=सञ्जातानुराग (through love), युद्धे धन्दा युद्धधन्दा तथा पुलकित युद्धधन्दापुलकित =रणविषयकादरसञ्जात-रोमाञ्च (appears to be thrilling with eagerness for fight), इव=यथा (like), सत्त्वोत्कर्षात्=सत्त्वस्य उत्कर्षं सत्त्वोत्कर्षस्तस्मात् सत्त्वोत्कर्षात्=बलाधिबयात् (overpowered), परै=शत्रुभि (by enemies), समरनिकपे=समर एव निकप-स्तस्मिन् समरनिकपे=समग्रामपरीक्षणोपले (on the touch-stone of battle), दृष्टसार =दृष्ट सारो यस्य स दृष्टसार =दृष्टशक्ति (high temper has been seen), अयम्=एष (this), मे=मम (my), निस्त्रिंश=सङ्ग (the sword), अधुना=सम्प्रति (now), मित्रस्नेहात्=मुद्गदापुराणात् (affection for my friend), विवशम्=अवशम् (uncontrolled) माम् (me), साहसे=पौरुषे (to an act of daring), नियुक्ते=धेरयति (drives) ॥ १९ ॥

हिन्दी—पुरुष—अच्छा तो, किस प्रकार आप चन्दनदास को बचायेंगे ?

पुरुषः—अत्र, एवं सेष्टिचन्दनदासजीविदप्पदाणपिसुणिदं विसमदसाविपा-
कणिपट्टिद साधु ण सक्खोमि तुमं णिण्णीअ पडिउत्तुं किं सुगिहीदणामदेआ
अमच्चरक्खनपादा तुम्हे विट्ठिआ दिट्ठा । (इति पादयोः पतति ।) (आर्य, एवं
श्रेष्टिचन्दनदासजीवितप्रदानपिदुनित पिमदशाविपाकनिपवित साधु न शक्नोमि
त्वां निर्णय्य प्रतिपत्तुं किं सुगृहीतनामधेया अमात्यराक्षसपादा यूय दृष्ट्या दृष्टाः ।

राक्षस—(तलवार खींचकर) अपने पुरुषार्थ की सहचरी इस तलवार की सहायता से ।

मञ्जु जलद और शुभ्र आकाश की तरह भाङ्गिनी बाण, नेरे हार्ने में सदैव अनुरक्त,
पुङ्गव्य वस्तुवृत्ता के कारण रोनाश्रित भी, वल का अधिकता के कारण शत्रुओं के बीच युद्ध
की कमरों पर खरी उठने वाली, मन्त्रि यह नेरी तलवार, मित्र-स्नेह के कारण विवश
सुप्त इस साहसिक कार्य के लिए प्रेरित कर रहो है ॥ २९ ॥

English—*Man*—By what means will Noble Sir now release
Chandandas from death ?

Rakshasa—(Drawing his sword) By means of this sword the
friend at darings. Look :—

This sword now drives me to an act of daring, overpowered as
I am through love of friend—The sword dark blue in appearance,
like a water-charged-cloud and the sky, appears to be thrilling
with its fondness for fight and with union secured with my hand,
and the strength of which is consequence of its high temper has been
seen by my enemies tested on the touch-stone of battle. 19.

टिप्पणी—इस श्लोक के प्रथम चरण में सादृश्यार्थक 'सङ्काश' शब्द की वनस्थिति के कारण
स्पष्टन' उपमा अलङ्कार है । दूसरे चरण में वल्लभा है । तृतीय चरण में परीक्षात्वात् सावर्त्य के
द्वारा 'निकरत्व' के आरोप के कारण रूपक है । इन तीनों के समिश्रण के कारण 'सर्वष्टि'
अलङ्कार है । छन्द का नाम मन्दाक्रान्ता है ।

विमला

पुरुष—आर्य=आर्य भवन् (Noble sir), एवम्=त्वयि युद्धे प्रवृत्ते (thus),
श्रेष्ठितः=वणिजः (merchant), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), जीवितस्य=
जीवनस्य (life), प्रदानेन=दानेन (by offering), विदुनितम्=सूचितम्
(disclosed), विषमदशाविषाकनियतिम्=विषमा=अवस्था (adverse), या दशा=
अवस्था (condition), तस्या विपाकः=परिणामः (result), तत्र निपतितम्=
निमग्नम् (fallen), साधु (well), त्वाम् (you), निर्णयि=निश्चित्य (defini-
tely), प्रतिपत्तुम्=ज्ञातुम् (to know), न शक्नोमि=न समर्थः (I am not
able), किम् (what), सुगृहीतनामधेयाः (of blessed name), अमात्यराक्षसपादाः
(you minister Rakshasa), दिष्ट्या=मायेन (by luck), दृष्टाः=अवलोकितः
(I have seen), [इति पादयोः=चरणयोः (at his feet), पतति=(he falls)]

देशान्तर नीतः । ततश्चन्द्रगुप्तहृतकेन कस्मादेव प्रमादः कृत इति आर्यशकटदासे समुञ्ज्वलित* कोपवह्निर्घातकजननिधनेन निर्वापितः । ततः प्रभृति घातका य कमपि गृहीतशस्त्रमपूर्वं पुरुष पृष्ठतो वाग्रतो वा प्रेक्षन्ते तदात्मनो जीवित परि-
रक्षन्तोऽप्रमत्ता बध्यवस्थाने बध्य व्यापादयन्ति । एव च गृहीतशस्त्रेणमात्यपादैर्ग-
च्छद्भिः श्रेष्ठिचन्दनदासस्य बधस्त्वरायितो भवति ।)

एव (like this), आर्यशकटदासे (on Noble Shakatadasa), समुञ्ज्वलित = प्रदीप्त (the blazing), कोपवह्नि = क्रोधाग्नि (fire of wrath), घातकजन निधनेन = रक्षकजनमरणेन (by killing the executioners), निर्वापित = क्षमित (quenched), ततः प्रभृति = तद्दिनात् (from that very day), घातका = हिसका (executioners), य कमपि, गृहीतशस्त्रम् = आयुधविशिष्टम् (armed with a weapon), अपूर्वम् पुरुषम् (stranger), पृष्ठत (either behind them), वा = अथवा (or) अग्रत (in the front), प्रेक्षन्ते = दृश्यन्ते (see), तदा (then), आत्मन = स्वकीयम् (self), जीवितम् = प्राणम् (life), परिरक्षन्त = परित्रायमानाः (saving), अप्रमत्ता = सावधानास्त (being careful), बध्यवस्थाने (in the place of execution), बध्यम् = मारणाह्वम् (the victim), व्यापादयन्ति = मारयन्ति (kill), एव च (like so), गृहीतशस्त्रे (armed), अमात्यपादै गच्छद्भिः = (if noble minister goes), श्रेष्ठिचन्दनदासस्य (Merchant Chandandasa's), बध = मरणम् (death), स्वरायितो भवति = क्षामकृत (becomes hastended), [निष्क्रान्त = (exit)]

हिन्दी—पुरुष—(मानन्द के साथ पुन चरणों पर गिरकर) अहो, भाग्य से आपके दर्शन हुए । आदरणीय आमात्य प्रसन्न हों । अभी कुछ दिन ही पूर्व इस दुष्ट चाणूर्य ने आर्य शकटदास के बध की आज्ञा प्रसारित की थी । पता नहीं किसी ने स्वभूमि से उठे दौड़कर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया । इसके कस्वरूप दरबारे चन्द्रगुप्त ने—‘यह असावधानी किस कारण हुई ।’ ऐसा कहकर आर्य शकटदास पर प्रज्वलित कोपानल दरबारों की ही हत्या से शान्त किया । तभी से दरबारे किसी अपरिचित सज्ज व्यक्ति की पीछे अबदा भाग चलते देखते हैं तो अपने प्राणों की रक्षा करते हुए स्वभूमि में सावधानी के साथ बध्य को मार डालते हैं । अतः अमात्य यदि इस प्रकार शस्त्र धारण किये चरणों फिरते देख गये तब तो सेंट चन्दनदास का पथ जो अभी बाद में हो—अभी होता दिखाई देगा । (बाहर चला जाता है)

English—Man—(Joyfully falling again at his feet) Oh wonder ! Luckily I have seen you . Be pleased, revered minister. Here Noble Shakatadasa was first ordered by the cursed Chandragupta to be taken to the place of execution, and he was removed by some one from the place of execution and carried to another country . Then the fire of wrath blazing against Noble Shakatadasa was quenched by cursed Chandragupta with the execution of the executioners

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अहो दुर्बोधश्चाणञ्चवटोर्नीतिमार्गः । कुतः—

यदि च शकटो नीतः शत्रोर्मतेन ममान्तरं

किमिति निहतः क्रोधावेशादवाधिकृतो जनः ।

अथ न कृतं तादृक्कृतं कथं नु विभावये-

इति मम मतिस्त्वनिरुद्धा न पश्यति निश्चयम् ॥ २० ॥

saying "Why was such carelessness shown". Since that time whenever the executioners see a stranger armed with weapon either behind them or in the front, they are wishing to save their own lives, kill the victim on the spot of execution. Thus really the execution of merchant Chandandas becomes hastened by revered minister's going there with arms.

रिमल्ला

राक्षसः—[स्वगतम्=आगतम्=(to himself)], अहो=आश्चर्यम् (Wonder), चाणक्यशत्रोः=अपक्षयो विष्णुगुप्तस्य (of the brat Chanakya), नीतिमार्गः=नयपद्धतिः (the course of the policy), दुर्बोधः=अनुमन्यः (inscrutable) :-

अन्वयः—यदि, शत्रोः, मतेन, शकटः, मम, अस्तिकम्, नीतः, तेन, क्रोधावेशात्, वधाधिकृतः, जनः, किमिति निहितः, अथ, कृतम्, न तादृक्, कृतम्, कथं, नु, विभावयेत्, इति, तर्काच्छा, मम, मतिः, निश्चयम्, न, पश्यति ॥ २० ॥

व्याख्या—यदि=चैत् (If), शत्रोः=चाणक्यस्य (of enemy), मतेन=सुद्धया (with the consent), शकटः (Shakatdasa), मम (me), अस्तिकम्=समीपम् (near), नीतः=आनीतः (was brought), तेन=चाणक्येण, मौर्येण वा (by), क्रोधावेशात्=क्रोधात् (in anger), वधाधिकृतः जनः=हिसननिपुणः म्यक्तिः (executioners), किमिति (why), निहितः=स्थापादितः (put to death), अथ=अनन्तरम् (then), कृतम् न=कपटरूपम् न, भवति (not a hoax), तादृक् (like so), कृतम्=कुरितवम्, स्वहस्तलेखमुद्रादृष्टादिरूपम् स्वामिद्रोहम् (shameful fabrication), कथम् (why), नु=इति चित्तकं, विभावयेत्=कृतम्यत्वेन चिन्तयेत् (even think), इति=एवम् तर्काच्छा=सन्देहपरिहारार्थम् विचारमनुसरन्तीसती (being mounted on conjectures), मम मतिः=मदीया बुद्धिः (my mind), निश्चयम्=सिद्धान्तम् (definite conclusion), न पश्यति (does not see). ॥२०॥

हिन्दी—राक्षस—(माने आप) हा कट, दुष्ट चाणक्य को नीति का पार पाना कत्तम्ब है ।

परि यह शत्रु का ही चाल रही कि शकटदास नेर पास पहुँचा दिया आप, तो मद्रा अधिक लोगों को क्रोधावेश में क्यों मार डाल गया और यदि शकटदास सम्बन्धी वे सारी बातें बनावटी नहीं सब ही रही तो फिर शकटदास देखी मृच्छसा एवं नीचता पर क्यों ब्यारु हो गया । इस प्रकार वक्त ने आरुद नेरी बुद्धि किसी विचार को नहीं पा रही है ॥ २० ॥

(विचिन्त्य ।)

नायं निश्चिन्तकालः प्रथममिह कृते घातकानां विधाते

नीति कालान्तरेण प्रकटयति फलं किं तथा कार्यमत्र ।

औदासीन्यं न युक्तं प्रियमुहदि गते मत्कृतामेव घोरां

व्यापत्तिं ज्ञातमस्य स्वतनुमहमिमां निष्क्रयं कल्पयामि ॥ २१ ॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)

षष्ठोऽङ्कः ।

English—Rakshasa—(To himself) Ha inscrutable is the course of cursed Chanakya's Policy ! For —

If Shakatdasa was brought to me with the consent of the enemy why then were the men employed for his execution killed by them If on the other hand, all this is not a hoax how could Shakatdasa even think of such a sinful fabrication ? Thus embarking on guesses my mind sees no definite conclusion 20

टिप्पणी—इतः श्लोकः मे कान्यद्विह अहङ्कारः तथा विचरिणी छन्दः है ।

विमला

[विचिन्त्य = चिन्तयित्वा = Reflecting] .

अन्यथा = इह, प्रथमम्, घातकानाम्, विधाते, कृते, अयम्, निश्चिन्तकालः, न, नीतिः, कालान्तरेण, फलं, प्रकटयति, तथा अत्र, किम्, कार्यम्, प्रियमुहदि, मत्कृतम्, एव, घोरां, व्यापत्तिं, गते, औदासीन्यम्, न युक्तम्, ज्ञातम्, अहम्, इमाम्, स्वतनुम्, अस्य, निष्क्रयम्, कल्पयामि ॥ २१ ॥

व्याख्या—इह = अस्मिन् विषये (In this matter), प्रथमम् = पूर्वम् (previously), घातकानाम् (since the hangmen), विधाते = विनाशे (death), कृते = विधत्ते (put to), अयम् = एष (this), निश्चिन्तकालः = सङ्ग्रधारणसमयः (the time for the sword), न = नहि (no), नीति = राजनीति (policy), कालान्तरेण = समयान्तरेण (after an interval of time), फलम् = सिद्धम् (fruit) प्रकटयति = दर्शयति (bears), तथा = नीत्या (by that policy), अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), किम् (what), कार्यम् = प्रयोजनम् (the use), प्रियमुहदि = स्निग्धमित्रे (dear friend), मत्कृतम् (my account), एव, घोरां = दारुणाम् (of dreadful), व्यापत्तिम् = विपदम् (calamity), गते = प्राप्ते (met with), औदासीन्यम् = निरपेक्षतयाऽवस्थानम् (indifference), न युक्तम् = नोचितम् (is not proper), ज्ञातम् = निश्चितम् (I know), अहम् (I), इमाम् स्वतनुम् =

निजशरीरम् (this my body), अन्य=चन्दनदासस्य (his), निष्कयम् = मोचनमूक्यम् (as a ransom for him), कल्पयामि=सन्पादयामि (I will offer). ॥ २१ ॥

हिन्दी— ब्रूज सोचकर—

इस विषय में पहले मारनेवालों के द्वारा वृत्तव्य बंध कर दिये जाने पर वह दंडवार का समय नहीं है। क्योंकि राजनीति का अन्तर से फट प्रकट करती है, तब फिर इन्हे मो व्या प्रयोग। हिन्दी, जब मेरे लिए ही मेरे मित्र को इतनी नयन इतना ही रही है तो मेरी निरपेक्षा मो तो सर्वथा अनुचित है। वस अब एक ही वान देव रह गया है—मानवजनन कर चन्दनदास को मुक्ति का मूल्य चुका दें।

(सभी पात्र रम्य से चले जाते हैं।)

English—(Reflecting)

There is no time for sword, the execution of the executioners having been carried out previously in a similar matter. Policy bears fruit after an interval of time, what is the use of it in this case? Indifference is not proper, when my dear friend has met with an extremely dread calamity on my account. I have it—I will offer this my own person as his ransom.

(Exit all)

End of the sixth act.

टिप्पणी—इस श्लोक में परिशुचि तथा काम्यलिङ्ग बतलाते हैं। जन्म का नाम जन्मता है।

छटा एक समाप्त ।

सप्तमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति चण्डालः ।)

चण्डालः—ओसलेह ओसलेह । अवेह अवेह । (अपसरत अपसरत ।
अपेत अपेत ।)

जइ इच्छह लन्निद्धये प्पाणे विहवे कुले कलत्ते अ ।

ता पल्लिहल्लह विसमं लाभापत्थं सुदूरेण ॥ १ ॥

(यदि इच्छत रक्षितव्या. प्राणा विभवः कुलं कलत्र च ।

तत् परिहरत विषम राजापथ्य सुदूरेण) ॥ १ ॥

विमला

[तत = तदन्तरम् (Then), प्रविशति = प्रवेश करोति (enters), चाण्डाल =
वधिक (executioner)]

चाण्डाल — अपरत, अपसरत = स्थानान्तरम् गच्छेदर्थ (Move away, move
away), अपेत, अपेत = (be off, be off).

अन्वयः—यदि, रक्षितव्या, प्राणा, विभव, कुलम्, कलत्रम्, च, इच्छत, तत्,
विषम, राजापथ्यम्, सुदूरेण, परिहरत ॥ १ ॥

व्याख्या—यदि = चेत् (if), रक्षितव्या = स्थापयितव्या (are worth preser-
ving), प्राणा = जीवनम् (life), च = पुन (and), विभव = संपत्ति (wealth),
कुलम् = वंशम् (race), कलत्रम् = भार्याम् (wife), च = पुन (and), इच्छत =
चाञ्छत (wish), तत् = तदा (then), विषमम् = घोरम् (dreadful thing),
राजापथ्यम् = राजविरोधम् (injurious to the king), सुदूरेण = अतिदूरात्
(very far off) परिहरत = परित्यजत (keep away) ॥ १ ॥

हिन्दी— (इसके बाद चाण्डाल का प्रवेश)

चाण्डाल—हटो, हटो । दूर होओ । दूर होओ ।

यदि मरने प्राणों को, सम्पत्ति को, कुल और स्त्री को सुरक्षित रखना चाहते हो तो—
कष्टकारी राजद्रोह से बचकर रहो ॥ १ ॥

English— (Now enters a Chandala)

Chandala—Move away, move away, be off, be off.

If you wish to save your life, race, wealth and wife, then
keep very far off from that dreadful thing injury to the king. I.

टिप्पणी—रस इलोक में यतिरेक अलङ्कार तथा आर्वा छन्द है । सिद्धार्थक हो यहाँ
चाण्डाल के आदेश से चाण्डाल के वेश में लोगों का अपसरण कर रहा है ।

अवि अ । (अपि च ।)

होदि पुलिस्सस्स वाही मल्लं वा सेविदे अपत्यम्भि ।

त्ताआपत्ये उण सेविदे सअत्तं वि कुलं मल्लदि ॥ २ ॥

(मरति पुरुषस्य व्याधिर्नरणं वा सेविते अपत्ये ।

राजापत्ये पुनः सेविते सकलमपि कुलं म्रियते ॥ २ ॥)

ता जदि ण पत्तिज्जह ता एह पेक्खह एअं ताआप यमालिणं सेट्ठिचन्दणदासं सवत्तकलत्त वज्जट्ठाण जीअमाणम् । (आकारो भुत्वा ।) अज्जा, किं भणह— 'अत्थि से को वि मोक्खावाओ' ति । अज्जा, अत्थि अमच्चरक्खसस्स धरअण जइ समप्पेदि । (पुनराकारो ।) किं भणह—'एस्से सलपागदवच्छले अत्तणो जीविदमेत्तस्स कालणे इंदिस अरुज्ज ण कलिस्सदि' ति । अज्जा, तेण हि अवधा-लेह से सुत्तां गत्तिम् । किं हाणि तुत्ताण एत्थ पडिआरि-आरेण । (तद्यदि न प्रतीथ तदत्र प्रेक्ष्यमेव राजापथ्यकारिण श्रेष्ठिचन्दनदास सपुत्रकलत्र यध्यस्थानं

विमला

अपि च = अन्यदपि (Moreover)—

अन्यथा—अपत्ये, सेविते, पुरुषस्य, व्याधि वा मरणम् भवति, पुनः, राजा पत्ये, सेविते, सकलम्, अपि, कुलम्, म्रियते ॥ २ ॥

व्याख्या—अपत्ये=अहितकरे वस्तुनि (Some thing unwholesome), सेविते=भुक्ते-सति (takes), पुरुषस्य=जनस्य (man's), व्याधि = मानसीभ्यधा (disease), वा=अथवा (or), मरणम्=प्राणविधोः (death), भवति=प्राति (suffers), पुनः (again), राजापत्ये=नृपाहितकरे (against a king), सेविते=कृते-सति (takes to), सकलम्=सम्पूर्णम् (the whole), अपि (also), कुलम्=वसम् (the race), म्रियते=विनश्यते (perishes) ॥ २ ॥

माधारणपथ्यसेवनात् एकस्यैव विनाशो भवति, किन्तु, राजापथ्यसेवनात्सर्वनाशः मनुष्यस्य भवति । अत्रापि सामान्यापम्यात् राजापथ्यस्याधिव्योक्तया व्यतिरेकालङ्कारः पूर्वार्द्धेऽप्यर्थोक्त्यर्थमभिधानोत्तरार्द्धे बहुपमानत्वप्रदत्पनात् द्वितीय प्रतीपादलङ्कारोऽप्यन्यते— इति ।

तत्=तस्मात् (So), यदि=स्यात् (if), न प्रतीया =न श्रय्यञ्चम् (do not believe), तत् (then), अत्र=अस्मिन् विषये (in this matter), एतच्च=अमुम् (this), राजापथ्यकारिणम्=नृपाहितविधायिनम् (evil-doer to the king), श्रेष्ठिचन्दनदासम् (to the merchant Chandandas), सपुत्रकलत्रम्=पत्नीपुत्र-सहितम् (with son and wife), वध्यस्थानम्=मरणस्थानम् (the place of the execution), नीयमानम्=प्राप्तमानम् (being led to), प्रेक्ष्यम्=अवलोक्यम् (see), [आकारो भुत्वा=(in the air)], आर्याः=मान्याः (noble sir), किं भणय=किं वचनम् मूय (do you ask), अस्य=चन्दनदासस्य (his), कोऽपि (any

नोचमानम् । आर्याः, किं भणथ—‘अस्त्यस्य कोऽपि मोक्षोपाय’ इति । आर्याः, अस्त्यमात्यराक्षस्य गृहजन यदि समपयति । किं भणथ । एष शरणागतवत्सल आत्मनो जीवितमात्रस्य कारणे ईदृशमकार्यं न करिष्यतीति । आर्या, तेन हि अवधारयतास्य सुखा गतिम् । किमिदानीं युष्माकमत्र प्रतीकारविचारेण ।)

means of), मोक्षोपाय = मुक्तिप्रकार (release), अस्ति (is), आर्या = मान्या (you respectable), अस्ति (yes), यदि = स्यात् (if), अमात्यराक्षसस्य = नन्दसचिवस्य (minister Rakshasa's), गृहजनम् = पारिवारिकसदस्यम् (family), समपयति = ददाति (delivers), किं भणथ = किं ब्रूथ (do you say), एष = असौ (he), शरणागतवत्सल = शरणागन्नेषु अनुरागवान् (even kind to refugees), जीवितमात्रस्य = प्राणमात्रस्य, कारणे = हेतुना (only for the sake of mere life), ईदृशम् = अकार्यम् = राक्षसकृत्यसमर्पणरूपनिन्दितं कर्म (such foul deeds), न करिष्यति = न विधास्यति (will not do), आर्या = मान्या (noble sirs), तेन हि यस्य = चन्दनदासस्य (then wish him), सुखगतिम् = शुभगतिम् (pleasant), अवधारयता (passage), अत्र = अस्मिन् विषये (in this matter), इदानीम् = अधुना (now), युष्माकम् (your), प्रतीकार-विचारेण (discussion of the remedy), किम् (what comes of) ?

हिन्दी—अरे भी सुनो—

शरीर के प्रति यदि कोई अकार्य कर ओ तो केवल रोग पकड़े या अधिक से अधिक घृणु हो जाय, किन्तु, यह राजद्रोह ! व्यक्ति विशेष को ही नहीं—सारे देश को ही सर्वनाश में मिला देगा ॥ २ ॥

अगर तुम्हें विश्वास न आता हो तो देख लो—राजद्रोही सेठ चन्दनदास को, पत्नी पुत्र सहित बन्धुभूमि पर घसीटे ले जाते हुए को । (शत्रु की ओर देखकर) अरे, क्या तुमने कहा—चन्दनदास की मुक्ति वैधे हो ? अरे, इसकी मुक्ति कहाँ ? वस एक ही उपाय है—यदि अमात्य राक्षस का परिवार किसी प्रकार सौंप दे (पुन शत्रु की ओर देखते हुए) अब क्या पूछते हो ? क्या यह कि भला ऐसा शरणागतवत्सल मात्र अपने प्राणों की रक्षा के लिए ऐसा कुकर्म करे ? आर्यों तब तो इसकी सद्गति बनाओ । भला मुक्ति के उपाय पूछने से क्या लाभ ?

English—Moreover .—

If a person takes something unwholesome, he alone suffers from disease or dies, but even the whole race dies what is unwholesome to the king being done 2

If you do not believe, come and see this evil doer to the king, the merchant Chandandas, who is being led to the place of execution with wife and son (in the air) Noble sirs, Do you ask me if there

(ततः प्रविशति द्वितीयचण्डालानुगतो वध्यवेषधारी शूलं स्कन्वेनादाय कुटुम्बिन्या पुत्रेण चानुगम्यमानश्चन्दनदासः ।)

चन्दनदासः—(सवाष्पम् ।) हृदो हृदो । अन्धारितापं निषिञ्च चारित्र्यमङ्ग-
भीरुण चोरजनोचितं नरप हेति त्ति पन्ने किदन्तस्त । अह या न पितृन्तानं
वदामोपेसु इदरेसु वा पितृनो न्थि तह हि । (हा धिक् हा धिक् । जस्नादशा-
नानपि नित्य चारित्र्यमङ्गमरुणां चोरजनोचितं नरप भवतीति नमः कृतान्तस्य ।
अयया न नृशंसानामुदासीनेषु इतरेषु वा चिरोपोऽस्ति । तथा हि ।)

■ any means of setting him free? There is you respectable citizens ' if he delivers up the family of the minister Rakshasa (again in the air) Do you say—thus and ever kind to those who seek his protection, will never do such an ignoble deed for the sake of mere life. Noble sirs ' Then be assured of his pleasant passage what comes of your discussion of the remedy in this matter ?

टिप्पणी—एत एके नै स्मरिरेक एव प्रयोग कर्तव्य है । छन्द का नाम जाना है ।

विमला

[ततः=पुनरुक्तकाकासमापमानन्तरम् (Then), प्रविशति=रङ्गमालान्तर्गतो भवति (enter), द्वितीयचण्डालानुगतः=अन्यधिकानुसृतः (followed by a second Chand-
dal) वध्यवेषधारी=रक्षदक्षवन्दनादिधारणशीलः (in a criminal's dress),
शूलम्=लौहनिर्मितत्राशनसूचनाप्रावयधन् शङ्कुम् (with a pale), स्कन्वेन=अंशेन
(on his shoulder), आदाय=लीवा (taking), कुटुम्बिन्या=पत्न्या (by his
wife), पुत्रेण=पुत्रेण (son), अनुगम्यमानः=अनुचिपमानः (accompanied),
चन्दनदासः=चन्दनदासीयः अनापराधमित्रम् (Chandandasa).]

चन्दनदासः—[सवाष्पम्=पातनयनम् (with tears), हा धिक्, हा धिक्! शोका-
वेगाद् द्विर्वाच (Alas, Alas), अस्नादशानानपि=अस्नादशानानपि जनानाम् (even
people like us), नित्यम्=प्रतिचनम् (always), चरित्रमङ्गनीरुणम्=चरित्र-
स्त्रञ्जनमयसाधिनान् (apprehensive of the loss of character), चोरजनोचितम्=
दस्युजनयोग्यम् (smiting a thief), नरपं भवतीति=मृत्युः अस्तीति (death comes),
कृतान्ताय=नानाय (for the God of death), नमः=अभिवादनः (salutation),
अयया=वा (or), न=नहि (not), नृशंसानाम्=दुर्जनानाम् (cruel men), उदासी-
नेषु=असिद्धितेषु, निरपराधेषु इत्यर्थः (the unconcerned), वा=अथवा (or),
इतरेषु=सिद्धितेषु (the rest), विरोधोऽस्ति=न.भेदोवर्तते (make no distinc-
tion), तथाहि=तदैव दर्शयति (thus) :-

मोक्षं आमिसाहं मरणभयं तिणेहिं जीवन्तम् ।
 यादाण मुग्धहरिणं हन्तुं को नाम निबन्धो ॥ ३ ॥
 (मुक्त्वा आमिपाणि मरणभयेन तृणैर्जीवन्तम् ।
 व्याधानां मुग्धहरिणं हन्तुं को नाम निबन्धः ॥ ३ ॥)

अन्वयः—मरणभयेन, आमिपाणि, मुक्त्वा, तृणैर्जीवन्तम्, मुग्धहरिणम्, हन्तुम्, व्याधानाम्, को, नाम, निबन्धः ॥ ३ ॥

व्याख्या—भरणभयेन = मरणादयम् मरणभयम् तेन मरणभयेन = भृत्युभीत्या (Through the fear of death), आमिपाणि = मांसयादीनि (flesh), मुक्त्वा = परित्यज्य (leaved), तृणै = घस्यै (on grass), जीवन्तम् = प्राणं धारयन्तम् (lives on), मुग्धहरिणम् = सरलप्रकृतिम् मृगम् (an innocent deer), हन्तुम् = व्यापादयितुम् (to kill), व्याधानाम् = किरातानाम् (of hunters), को नाम निबन्धः = कः आमहाभिप्रायः (what obstinate desire =)

अप्रस्तुत . व्याधकर्तृकमृगमारण्येभ्यः प्रस्तुतकौटिल्यकर्तृकचन्दनदासव्यापादनाधग-
 त्याऽप्रस्तुतप्रक्रांताऽलङ्कारः । यथा निर्दोषमृगव्यापादनी व्याधः तथा निर्दोषपुरुषव्यापाद-
 कश्चाणवयोपीति विन्यस्रतिविग्वभावघोतनात् इष्टान्ताऽलङ्कारः । मृत्युभीत्या हरिणानाम्
 आमिपत्यागायोगेति सद्योगोक्त्याऽतिशयोक्तिः अलङ्कारः । हृदयेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्गरः ।
 आर्यावृत्तम् ॥ ३ ॥

हिन्दी—(तत्पश्चात् दूसरे चाण्डाल से अनुसरण किया हुआ अपराधी वेष में शूल कंधे पर रखकर, पत्नी और पुत्र से अनुसरण किया जाता हुआ चन्दनदास का प्रवेश)

चन्दनदास—(साधुनयन) हा धिक्कार है ! हा धिक्कार है ! वै चरित्रमङ्ग होने के मय से सतत सचेष्ट हमारे जैसे व्यक्ति की मृत्यु भी—चोरजनों के लिये उद्युक्त मृत्यु की तरह होती है । अतः, नमस्कार है—महाराज दमराज को । अथवा—निर्दय -व्यक्तियों के सामने उदासीनों अथवा दूसरों में भेद नहीं हो पाता । फिर भी—

मृत्युभय से मांस छोड़कर, तृणों से जीवनयापन करनेवाले भोले विरणों को मारने में धिक्कारियों का कौन सा आग्रह है ।

English—(Then enters Chandandas in a criminal's dress, carrying the stake on his shoulder accompanied by his wife and son with a second Chandal). (With tears) O Fie ! O Fie ! Death for a man like me, who is ever trying to loss of his character, is all equal to the death of a thief So, bow to the God of death, who has no distinction between an indifferent and an otherwise For,

Which interest forces a preyer to prey deers that lives on grasses leaving flesh for fear of death.

टिप्पणी—रस इलोक में अप्रस्तुतप्रश्रय, इष्टान्त तथा अतिशयोक्ति अलङ्कारों के अङ्गाङ्गिभाव से सङ्गर अलङ्कार है । आर्यावृत्त है ।

(समन्तादवलोक्य) भो प्रियवयस्स विष्णुदास, कहां पडिवअणं वि ण मे पडि-
वञ्जसि । अह वा दुल्लता ते क्खु माणुसा जे एदस्सि काले दिट्ठिपथे वि चिट्ठन्ति ।
(सवाग्मम् ।) एदे अन्धपिअवअस्सा अंसुपादनेत्तकेण हिदिणिवावसलिला
विअ कह वि पटिणिन्वत्तमाणा सोअदोणवअणा वाहगुरुआए दिट्ठोए म अणुग-
च्छन्दि । (इति परिजानति ।) (भो प्रियवयस्य विष्णुदास, कथं प्रतिवचनमपि
न मे प्रतिपद्यसे । अथवा दुर्लभास्ते खलु मानुषा य एतस्मिन्काले दृष्टिपथेऽपि
तिष्ठन्ति । एतेऽस्मत्प्रियवयस्या अश्रुपातमात्रेण कृतनिवापसलिला इव कथमपि
प्रतिनिवर्तमानाः शोकदीनवदना वाष्पगुन्या दृष्ट्या मामनुगच्छन्ति ।)

चण्डालः—अञ्ज चन्दनदास, आअदोसि वञ्छट्ठाण । ता विसज्जेहि पलि-
अणम् । (आर्य चन्दनदास, आगतोऽसि बध्यस्थानम् । तद्विसर्जय परिजनम् ।)

टिप्पणी— १) गूल स्कन्धनादाव—उक्त समय की रीति के अनुसार, जिस अपराधी
को प्राणदण्ड दिया जाता था उसे रक्तवस्त्र पहना कर, रक्त चन्दन लगाकर तथा कन्धे पर
गूल रख कर बध्यभूमि ले जाया जाता था । २) कुडुम्बिन्या—कुडुम्बिनी उस नारी को
कहा जाता था जो सद्गृहस्थ को पानी और पुत्रवती होती थी । (३) नम कृतान्तस्य—
यद्यपि नम के योग में नम स्वस्ति स्वाहा स्वधे'त्यादि पाष्णिनीय सूत्र से कृतान्त में सम्प्रदान
कारक अपाञ्चन है, किन्तु, यहाँ तात्पर्य यह है कि बिना विरोध के न्यूननिर्णय को मैं स्वीकार
करने जा रहा हूँ । अतः यहाँ 'क्यों' का कोई प्रश्न नहीं उठता । कलनः ३री प्रयोग की
सनीचीन ही है ।

चिमला

[समन्तात्=चतुर्दिक् (Around), अवलोक्य=इप्त्वा (seeing), भो प्रिय-
वयस्य=भो प्रियमित्र (O, dear friend), विष्णुदास (Vishnudasa), मे=मम
(my), प्रतिवचनम्=प्रत्युक्तम् (reply), कथञ्च प्रतिपद्यसे=कृतो न ददासि (why not
say), अथवा=वा (or), दुर्लभा=दुर्प्रापा, विरलाः (unavailable), ते मानुषा=
तस्य जनाः (those people), ये (who), एतस्मिन् काले=अस्मिन् दुःखावसरे (in
this time of calamity), दृष्टिपथेऽपि तिष्ठन्ति=अश्रुविषयमाचान्ति (stand even
with in the range of sight), [सवाग्मम्=साश्रुनयनम् (with tears)],
एतेऽस्मत्प्रियवयस्याः=इमे मम प्रियवन्धवाः (these my dear friends),
अश्रुपातमात्रेण=अश्रुजलनिपातेनैव (by shedding tears only), कृतनिवापसलिला=
कृतोपायाः (with oblation of water offered), इव=यथा (like),
कथमपि=केनापि प्रकारेण (some how), शोकदीनवदनाः=प्रवृद्धचिन्माग्लानमुखाः
(with face pale through grief), वाष्पगुन्या दृष्ट्या=अश्रुपूर्णनेत्रेण (eyes
heavy with tear), प्रतिनिवर्तमानाः=प्रतिगच्छन्तः (are returning),
माम्=चन्दनदामम् (to me), अनुगच्छन्ति=अनुयान्ति, मा परयन्तीत्यर्थः
(following me),

चण्डालः—आर्य=मान्य (Noble sir), चन्दनदास (Chandandas), बध्य-
स्थानम्=रक्षणानम् (place of execution), आगतः=समायातः (have

चन्दनदासः—कुटुम्बिणि, गिरनेहि सपदं सपुत्रा । न जुत क्खु अदोवरं
अगुच्छिदुम् । (कुटुम्बिनि, निवर्तस्व साप्रवं सपुत्रा । न युक्तं खल्वतोऽपर-
मतुगन्तुम् ।)

कुटुम्बिनी—(सबाष्पम् ।) परलोअ पत्तिदो अज्जो ण । देसन्तर । (परलोकं
प्रस्थित आर्यो न देशान्तरम् ।)

चन्दनदासः—अज्ज, अअ मित्तकज्जेण ने विणासो ण उण पुरिसदोसेण ।

arrived), तत् = तस्मात् (so), परिजनम् = परि वारम् (your people), विसर्ज्य =
निवर्तय (dismiss).

हिन्दी—(चारों ओर देख कर) क्यों प्रिय मित्र विश्वदास, क्या तुझे वधर भी नहीं
देखे हो । अर्था—देने भरसर पर तो बिरहे हो चक्रे भाँखों के सानने दिखलाई पड़ते हैं ।
(भाँखों में म नू भरकर) वे हमारे प्रिय मित्र, भाँखू रहा कर हमारी मुक्ति चाहने वाले, उमड़ते
दुःख शोक संभ्रान्त मुख किये अनुमो के कारण क्षिब्ध दृष्टि से अनुमरा करने हुए उलटे
पौर लौटने वाले हैं । (ऐसा कहकर घूमता है) ।

चण्डाल—भार्य चन्दनदास । नाव पहुँच गये अब वधस्थान पर, कैयार्य अपने जन-
परिजनों को ।

English—(Looking around) O, dear friend Vishnudasa, How
so, you do not even give me reply ? Or rather, those men are rare
now (at the time of grief) who stand even with in the range of
sight. (With tears) There my dear friends who are returning some
how with there bodies as if shedding tears only as to keep off with
pale face through grief, are following me tears in their eyes.
(Moves round the stage).

Chandal—Revered Chandandas ! You have come to execution
place, so dismiss your family.

विमला

चन्दनदास —कुटुम्बिनि = भार्य (Dear wife), साप्रतम् = अयुना (now),
सपुत्रा = सुतेन सह (with son), निवर्तस्व (return), अतः परम् = इतोऽधिकम्
(further), जज्जु = वाक्यालङ्कारे, अनुगन्तुम् = अनुसरुम् (to follow), न युक्तम् =
नोचितमिति (is not proper).

कुटुम्बिनी—[सबाष्पम् = अनुमोनेवम् यथा दशाङ्गना (Weeping)], आर्यः =
पूज्यो भवान् (Noble sir), परलोकम् = स्वर्गलोकम् (the next world), प्रस्थितः
(is going), न देशान्तरम् = न पुनः अन्यजनपदमिति (not for a distant
country).

चन्दनदासः—आर्ये (Dear wife), इत्थम् = एषः (this), मे = मम (my),
विनासः = मृत्यु (death), मित्रकार्येण (for the sake of friend), न पुनः

ता अल विसादेण । (आर्ये, अयं भिन्नकार्येण मे विनाशो न पुनः पुरुषदोषेण ।
तदलं विपादेन ।)

कुटुम्बिनी—अत्र, जइ एय ता दाणि अकालो कुलजनस्स निगहिदुम् ।
(आर्य, यद्येय तदिदानीमकालः कुलजनस्य निगृहीतुम् ।)

चन्दनदासः—अहं किं वसिदं कुटुम्बिणी । (अयं किं व्यसितं कुटुम्बिन्या ।)

कुटुम्बिनी—भत्तुणो चलणे अणुगच्छन्तोए अप्पाणुग्गहो होदित्ति । (भर्तुश्च-
रणावनुगच्छन्त्या आत्मानुग्रहो भवतीति ।)

(not for), पुरुषदोषेय = असदाचरणम् (human falling), तत् = तस्मात्
(so), अलम् = स्पर्शम्, विपादेन = आक्रान्तेन (away with grief)

कुटुम्बिनी—आर्ये—आर्य (Noble sir), यद्येवम् = सुदृढकार्यसाधनाय विनाशो
सति (if so), तत् = तदा (then), इदानीम् = अग्रे (now), कुलजनस्य =
वन्धुवर्गस्य (for person of family), निवसितुम् = परित्यक्तुम् (to return),
अकालः = अयुक्तम् (is not proper), विनाशकाले न कुलजनः परित्यज्य गन्तव्यम् ॥

चन्दनदास—अयं = अनन्तरम् (Well), कुटुम्बिन्या = नवरया (by my wife),
किं व्यवसितम् = किं निश्चितम् (what is intended), अनुग्रहमनन्तरं निवर्तनयोग्यं किं
स्थिरीकृतम् ।

हिन्दी—चन्दनदास—देवी, अब मरने पुन के साथ छोड़ जाओ । इससे आता चटना
अचित नहीं है ।

कुटुम्बिनी—(जीहों में जीनू नर कर) आर्य परलोक जा रहे हैं न कि परदेश ।

चन्दनदास—आर्य, निज के निमित्त मेरा यह विनाश है न कि मरने चरित्रदोष से ।
अतः इस सम्बन्ध में जोकर करना व्यर्थ है ।

कुटुम्बिनी—आर्य, यदि ऐसा है तो, पारिवारिक सदस्यों को छोड़ने का यह अचित समझ
नहीं है ।

चन्दनदास—अच्छा, तो तुमने क्या निश्चय किया है ?

English—Chandandasa—Dear wife, return now, with son, it is
not proper to follow me further.

Wife—(Weeping). My lord you are proceeding for next world,
not for another country

Chandandasa—Dear, my death has come for the sake of friend,
not for the fact of character, so leave weeping

Wife—O my lord, if so, what shall we the remaining members of
family do being returned,

Chandandasa—What has my wife now intend to do ?

निमला

कुटुम्बिनी—भर्तुं = स्वामिनः (my husband), चरणौ = पादौ (the feet),
अनुगच्छन्त्या = अनुसरन्त्या (following), आत्मानुग्रहः = सबति = प्रायते (let good
come to the soul of myself)

चन्दनदासः—अज्जे, दुव्ववसिदु एदं तुए । अअ पुत्तओ असुणिदलोअसव-
वहारो बालो अणुगद्धिदव्वो । (आर्ये, दुव्ववसितमिदं त्वया । अय पुत्रकोऽश्रुत-
लोकसंव्यवहारो बालोऽनुगृहीतव्यः ।)

कुटुम्बिनी—अणुगिहन्दु ण पसण्णाओ देवदाओ । जाद पुत्तअ, पत पच्चि-
सेसु पिदुणो पादेसु । (अनुगृह्णन्त्वेन प्रसन्ना देवताः । जात पुत्रक, पत पित्रमयोः
पितुः पादयोः ।)

पुत्रः—(पादयोर्निपत्य ।) ताद, कि दाणिं मए तादविरहिदेण अणुचिद्धि-
दव्वम् । (तात, किमिदानीं मया तातविरहितेनानुष्ठातव्यम् ।)

चन्दनदासः—आर्ये = (Noble lady), इदम् = एतत् (this), खया (by you),
दुव्ववसितम् = अयुक्तम् स्थिरीकृतम् (in an unwise resolve), अयम् = असौ
(this), पुत्रकः = कुमारः (the son), अश्रुतलोकसंम्वहारः = अधृतः अज्ञातः
लोकसंम्वहारो येन असौ अश्रुतलोकसंम्वहारः अज्ञातलोकाचारः (inexperienced),
बालः = शिशुः (poor boy), अनुगृहीतव्यः = पालनीयः (you should take care
of this son).

कुटुम्बिनी—एनम् = बालम् (To the boy), प्रसन्ना देवता = इष्टाः सुरा, अनुगृह्णन्तु =
रक्षन्तु (let the deities be pleased to help him), जात पुत्रक = (child,
my son), पच्चिमयोः पितु (father for the last time) पादयोः = चरणयोः
(the feet), पत = प्रणम (fall).

पुत्र — [पादयोर्निपाद्य = चरणयोः पतित्वा (falling at his feet)], तात = पिता
(father), तातविरहितेन = पितृहीनेन (without father), इदानीम् = अधुना
(now), मया (by me), कि अनुष्ठातव्यम् = किं कर्तव्यम् (what to be done).

हिन्दी—कुटुम्बिनी—यही कि पति के चरणों का अनुगमन करती हुई भग्य हो जाऊँ ।

चन्दनदास—देवि, तुम्हारा यह निश्चय कचित नहीं है । तुम पर इस अनुभवहीन
बालपुत्र का दावि व है ।

कुटुम्बिनी—इसकी रखा सगुह देवगन करेंगे । आ बेदा, पिता के चरणों का अन्तिम
प्रणाम कर लो ।

पुत्र—(चरणों में गिर कर) तात, मुझ पितृहीन को क्या क्या करना होगा ?

English—Wife—To good come to myself by following my
husband's feet

Chandandasa—Dear, it is an unproper idea. You should bring
up this poor boy, young and inexperienced in the affairs of the
world.

Wife—Let dieties be pleased to save this boy, My son fall at the
feet of your father to whom you see for the last time.

Son—(Falling at his feet) Father, what shall I do now after
being forsaken by father ?

चन्दनदासः—पुत्र, चाणक्यविरहिते देसे वसिष्यम् । (पुत्र, चाणक्यविरहिते देसे वसिष्यम् ।)

चाण्डालः—अत्र चन्दनदास, निजादे शूने, ता सज्जो होहि । (आर्य चन्दनदास, निजातः शून्य । तत्सज्जो भव ।)

कुटुम्बिनी—अत्रा, परिचाअध परिचाअध । (आर्या, परित्रायव्य परित्रायव्यम् ।)

चन्दनदासः—अज्जे, अहं किं एत्थ आह्वयसि । समं गदाणं दाय देया दुखिअं परिअण अणुक्कम्पन्दि । अण्ण अ भित्तकूत्तेण ने पिणासो ण अजुत्तकूत्तेण । ता किं हरिमहाणे पि रोशीअदि । (आर्ये, अयं किमत्र आह्वयसि । स्वर्गगतानां त्वत्प्रदाया दुःखित परिजनमनुक्कम्पन्ते । अन्यच्च मित्रकार्येण ने विनाशो नानुक्ककार्येण । तत्किं हर्षस्थानेऽपि रुचते ।)

विमला

चन्दनदाम —पुत्र=बाह (Son), चाणक्यविरहिते=कौटिल्यविरहिते (where Chanakya will not be found), देसे=प्रदेशे (country), वसिष्यम्=निवासितव्यम् (you have to live).

चाण्डालः—आर्य चन्दनदास (Noble Chandandas), शूलः=छद्मः (the stake), निजातः=मूलो निविष्टः (is driven), तद्वत्तस्यात् (so), सज्जो भव=भारोदुनुपनो भव (get ready).

कुटुम्बिनी—आर्याः=महाम्याः (Noble citizens), परित्रायव्यम्, परित्रायव्यम्=रक्षत मृत्युमुक्तात् मम पतिम् (help noble sirs, help).

चन्दनदासः—आर्ये (Noble lady), अत्र=अस्मिन् स्थाने (here), किम्=कथम् (why), आह्वयसि=तोदिपि (do you mourn), स्वर्गे गतानाम् (of those who go to heaven), तावद्देवता (the gods), दुःखितम् परिजनम् (the afflicted families), अनुक्कम्पन्ते=रक्षन्ति (take compassion on), अन्यच्च (Besides), मे=मम (my), मित्रकार्यम्=सुहृद्दर्शन (for the sake of my friend), विनाशः=मृत्युः (death), न=नहि (not for), अनुक्ककार्यम्=अनुचितकार्येण (doing any thing wrong), तत्किम्=तत्कथम् (so why), हर्षस्थाने=प्रसन्नतायाः स्थाने (in the place of rejoicing), रुचते=अथ त्रिमुच्यते (you weep).

हिन्दी—चन्दनदाम—बत्स, चाणक्य से रहित देश में निवास करना ।

चाण्डाल—आर्य चन्दनदास, कुछ गाढ़ दिया गया है । अजब तैयार हो जाओ ।

कुटुम्बिनी—आर्यो रक्षा कविये, रक्षा कविये ।

चन्दनदाम—आर्ये, इसके लिए क्यों रो रही हो । जो व्यक्ति स्वर्ग जाता है—उसके परिवार को रक्षा स्वयं देकरा करते हैं । दूसरी बात यह भी है कि मेरी मृत्यु किसी आचारादोष से नहीं होने जा रही है । मैं तो निवर्तन के लिये हो नर रहा हूँ । तो फिर हर्ष को जगह यह कहाँ बैसी ?

प्रथमश्वाण्डालः—अले विल्लपत्त, गेह्ण चन्दणदासं । सअं एव्व परिअणो गमित्सदि । (अरे बिल्वपत्र, गृहाण चन्दनदासम् । स्वयमेव परिजनो गमिष्यति ।)

द्वितीयश्वाण्डालः—अले वज्जलोमा, एस गेह्णामि । (अरे वज्रलोमन्, एष गृह्णामि ।)

चन्दनदासः—भद्द, मुहुत्त चिट्ठ जाव पुत्तअं सन्तवामि । (पुत्रं मूर्ख्याघ्राय ।) जाद, अवस्सं भविदव्वे विणासे मित्तकज्जं समुव्वहमाणो विणासमणुभवामि । (भद्र, मुहुत्तं तिष्ठ यावत्पुत्रकं सान्त्वयामि । जात, अवश्यं भवितव्ये विनाशे मित्रकार्यं समुद्बहमानो विनाशमनुभवामि ।)

पुत्रः—ताद, किं एद्द वि भणिदव्वं । कुलधम्मो वस्सु एसो अम्हाण । (इति पादयोः पतति ।) (तात, किमिदमपि भणितव्यम् । कुलधर्मः खल्वेपोऽस्माकम् ।)

English—Chandandasa—Son, Live in a country free from Chanakya.

Chandal—Revered Chandandasa, the stake has been driven, so be ready.

Wife—Help, Noble citizens help.

Chandandasa—Genile woman, why do you cry for it ? Deities take pity on the family of those men, who go to paradise. Moreover—I am dying for the purpose of a friend, not an unlegal work. Then why do you weep even at the time of joy ?

विमला

प्रथमश्वाण्डालः—अरे बिल्वपत्र = द्रुतद्वय-सम्बोधनम् (O Vilwapatra), चन्दन-दासम् (Chandandasa), गृहाण = ग्रहणम् कुह (seize), परिजना = परिवारः (the family), स्वयमेव = आत्मैव (of themselves), गमिष्यति (will go).

द्वितीयश्वाण्डालः—अरे वज्रलोमन् (O Vajraloman), एष गृह्णामि (here I seize him).

चन्दनदासः—भद्द = वक्ष्यामिन् (Good man), मुहुत्तं तिष्ठ = क्षणं विलम्बस्व (wait for a moment), यावत् पुत्रकम् सान्त्वयामि = अस्म-मरणकातर-हृदयमात्म-म् (till console my boy), [पुत्रम् मूर्ख्याघ्राय (smelt his son on the head)], जात = पुत्र (the son), विनाशे अवश्यं भवितव्येऽपि = विनाशे निश्चितेऽपि (even the death is sure to be fall), मित्रकार्यं = सुदुपकारम् (in doing a service to a friend), समुद्बहमानः = कुर्वन् (doing), विनाशमनुभवामि = मृत्युमनुभवामि (I suffer death).

पुत्र—तात = पितॄ (Father), इदमपि = एतदपि (this too), किं भणितव्यम् = (has to be told), एष = अयम् (this is), अस्माकम् (our), कुलधर्मः (family vow), खलु = निश्चये (indeed), [इति पादयोः पतति = (falls at the feet)].

चाण्डालः—अन्ते गेह एषं । (अरे, गृहापैनम् ।)

कुटुम्बिनी—(सोरस्ताटम् ।) अत्र, परिचाहि परिचाहि । (आर्य, परित्रायस्व परित्रायस्व ।)

(प्रविश्य पटान्नेपेण ।)

राक्षसः—भवति, न भैतव्यम् । ओ मोः शूलायतना, न खलु व्यापादयितव्यश्चन्दनदासः ।)

हिन्दी—पहला चाण्डाल—अरे विस्तर, चन्दनदास को पकड़ लो । परिवार अपने आप छूट जाएगा ।

दूसरा चाण्डाल—अर वज्रलोमन्, अभी पकड़ता हूँ ।

चन्दनदास—एक क्षा एक नम्र ! बरतक करने पुत्र को सन्तवना द लें । (पुत्र के चिर को मूला है) बेज, वस्तु अन्नरन्माओ है, खर मैं तो निश्चार्यसे वस्तु का अनुभव कर रहा हूँ ।

पुत्र—जिन्नाओ, यह ना कुछ करने की बात है । यह तो हमारा कुलवर्ग है (देखा बड़बड़ रैरी पर गंगा है ।)

English—First Chandai—O Vilwapatra, seize Chandandasa so the family will return themselves.

Second chandala—O, Vajraloman, soon I seize him.

Chandandasa—Gentleman, wait a moment, till I console my son. (Smelling at his head). Son, as death being sure, I recieve death for the service of a friend.

Son—Father, Is it to be told ? It is our family rule.

(Falls at his feet)

निम्नता

चा. हाट—अरे = सम्बोधनम् (Surrah), पुनम् = चन्दनदासम् (him), गृहाप्त (seize),

कुटुम्बिनी—[सोरस्ताटम् = ताटनम् ताटः अरस्ताट अस्ताटस्तेन सहितम् सोरस्ताटम् तद्यस्याद्या बर्वाति (Beating the breast)], आर्य=नान्य (Noble sir), परित्रायस्व = रक्षस्व, मृदुमुन्मादिति (help), परित्रायस्व (help).

[प्रविश्य (Enter), पटान्नेपेण (with a loss of a curtain)].

राक्षसः—भवति=श्रीमति (Noble woman), न भैतव्यम् = न भयभीतम् । भवितव्यम् (fear not), ओ मोः=सम्बोधनमिदम् (Ho, Ho), शूलायतना = शूलमायतनम् जीवनं येषाम् ते शूलायतना=शूलजीविनाः (you incharge of the Stake), न खलु (not), व्यापादयितव्यः=मारयितव्यः (must be killed), चन्दनदासः (Chandandasa).

येन स्वामिकुलं रिपोरिव कुलं दष्टं विनश्यत् पुरा
मित्राणां व्यसने महोत्सव इव स्वस्थेन येन स्थितम् ।
आत्मा यस्य वधाय वः परिभवक्षेत्रीकृतोऽपि प्रिय-
स्तस्येयं मम मृत्युलोकपदवी बध्यस्तगावध्यताम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—येन, पुरा, स्वामिकुलम्, रिपोः, कुलम्, इव, विनश्यत्, दष्टम्, येन, मित्राणाम्, व्यसने, महोत्सवे, इव, स्वस्थेन, स्थितम्, परिभवक्षेत्रीकृतः, अपि, यस्य, आत्मा, वधाय, वः, प्रियाः, तस्य, मम, मृत्युलोकपदवी, इयम्, बध्यस्तम्, आबध्यताम् ॥ ४ ॥

व्याख्यान—येन = मया राक्षसेन (By whom), पुरा = पूर्वम् (formerly), स्वामिकुलम् = नन्दवंशम् (master's race), रिपोः = शत्रोः (enemy's), कुलम् = वंशम् (the race), इव = यथा (like), विनश्यत् = छयं गच्छत् (suffering destruc- tion), दष्टम् = अवलोकितम् (was seen), येन (by whom), मित्राणाम् = सुहृदाम् (of his friends), व्यसने = दुःखे (in calamity), महोत्सवे = भानन्दकाळे (festivity), इव = यथा (like), स्वस्थेन = सुस्थिरेण (unmoved), स्थितम् = ख तत्र साहाय्यम् कृतम् (stood), परिभवक्षेत्रीकृतः = परिभवस्य क्षेत्रम् परिभवक्षेत्रम् अपरिभवक्षेत्रम् परिभवक्षेत्रम् कृतः परिभवक्षेत्रीकृतः = अनादरास्पदीमूनोऽपि (though made the object of ignominy), अपि (also), यस्य = मम (whom), आत्मा = शरीरम् (soul), वधाय = हन्तुम् (for the destruction) वः = युष्माकम् (your), प्रियाः = इष्टाः (dear), तस्य मम (whose person), मृत्युलोकपदवी = यमनगरगमनपद्धतिः (the road leading to the world of death), इयम् = एषा (this), बध्यस्तम् = रक्तपुष्पमालयादियुक्तबन्धनदाम (execution garland), आबध्यताम् = विनष्टताम् कण्ठे खया इति (Let be lahung) ॥ ४ ॥

हिन्दी—चाण्डाल—अरे, इसको पकड़ लो ।

कुटुम्बिनी—(छाती पीटती हुई) आर्य, बचाओ, बचाओ ।

(पर्दे को हटाकर राक्षस का प्रवेश)

राक्षस—श्रीमती, डरो मत । अरे ओ बधिकी, चन्दनदास को नहीं मारना चाहिए ।

जिसने अपने स्वामी नन्दवंश की प्रथम शत्रु के वध के समय नष्ट होते हुए देखा, जो मित्रों का वध होने पर—महोत्सव की तरह उसे खुपचाप देखात रह गया । अवमान पर अवमान होते हुए भी जिसे जान प्यारी थी—उसी राक्षस के गले में मृत्युलोक पहुँचानेवाली यह बध्यमाला बाँध दो ॥ ४ ॥

English—*Chandal*—Sirrah ! seize him.

wife—(Beating the breast) Save him, noble sir, help him)

(Entering with a toss of a curtain)

Rakshasa—Fear not noble lady fear not, O, incharge of stake Chandandasa must not be killed

Let this wreath of the doomed, the road leading to the world of death, be hung upon me, by whom his master's race was formerly

चन्दनदासः—(सवाष्प विलोक्य ।) अमच, कि एदं । (अमात्य, किमिदम् ।)

राक्षसः—त्वदीयमुचरितैर्देशस्यानुकरण किलैतत् ।

चन्दनदासः—अमच, सञ्च वि इम प्रयास निष्फल कुर्वता त्वया किमनुष्ठितम् । (अमात्य, सर्वमपीम प्रयासं निष्फल कुर्वता त्वया किमनुष्ठितम् ।)

राक्षसः—सखे, स्वर्थ एवानुष्ठितः । कृतमुपालम्भेन । भद्रमुख, निवेद्यतां दुरात्मने चाणक्याय ।

चन्द्रोना—किं ति । (किमिति ।)

seen perishing as if it were his enemy's race, who remained at ease when his friends were smitten with calamity as at a great festivity, and to whom though made into a butt of indignities as dear, for your destruction (4)

टिप्पणी—इत लोक में शत्रु पूर्णना, विरोध एवं रुक्क कलहकार को सन्निहित है । छन्द का ज्ञान शार्ङ्गविकारित है ॥ ४ ॥

विमला

चन्दनदास—[सवाष्पम् = साधुपूर्णनयनम् (With tears), विलोक्य = दृष्ट्वा (looking at), अमाच = मन्त्रिन् (minister), इदम् = एतत् (this), किम् (what)

राक्षस—तदेवम् त्वदीयम् तच्च तत्सुचरितम् च त्वदीयमुचरितम् तस्यैकदेशसव-
दीयमुचरितैर्देशस्य तस्य त्वदीयमुचरितैर्देशस्य = नवसाधुचरित्रेकभागस्य (Of a
portion of your noble career), अनुकरणम् = अनुकरो (an imitation),
एतत् (this), किल (merely)

चन्दनदासः—अमात्य = मन्त्रिन् (Minister), सर्वमपि (all), इमम् = एतम्
(this), प्रयासम् = प्रयत्नम् (efforts), निष्फलम् = निरर्थकम् (fruitless),
कुर्वता = विद्यता (rendering), त्वया = राक्षसेन (by you), किम् (what),
अनुष्ठितम् = कृतम् (have done) .

राक्षस—सखे = मित्र (Friend), स्वार्थ एव (to my own interest),
अनुष्ठितम् = कृतः (have attended), उपालम्भेन = तिरस्कारेण, कृतम् = व्यर्थम्
(away with remonstrance), भद्रमुख (goodman), निवेद्यताम् = कम्पताम्
(report to), दुरात्मने = दुष्टात्मने (the vile-hearted), चाणक्याय = कौटिल्याय
(for Chanakya) .

चन्द्रोना—किमिति (What is it)

हिन्दी—चन्दनदास—(आँसू मरी आँसों से देखकर) अमात्य, जानने यह क्या किया ?

राक्षस—तुम्हारे सुचरित के एक अंश का यह मात्र अनुकरण है ।

चन्दनदास—मन्त्रिन्, हमारे सारे प्रयत्नों को हम प्रकार निष्फल बनाते हुए जानने क्या कर डाला ?

राक्षस —

दुष्कालेऽपि कलावसज्जनरुचौ प्राणैः परं रक्षता

नीतं येन यशस्विनातिलघुतामौशीनरीयं यश ।

बुद्धानामपि चेष्टितं सुचरितेः क्लिष्टं विशुद्धात्मना

पूजाहंऽपि स यत्कृते तव गत शत्रुत्वमेपोऽस्मि सः ॥ ५ ॥

राक्षस—मित्र, अपना सार्थ हो किया है । उलाहना मत दो । भद्रमुख, उस दुष्ट चाणक्य से जाकर निवेदन करो ।

चन्द्रलोमा—क्या ?

English—Chandandasa—(Looking with tears) Minister, what is this ?

Rakshasa—Merely an imitation of a part of your noble career

Chandandasa—Minister, what is this that you have done by rendering all this attempt fruitless ?

Rakshasa—Friend, I have only attended to our own interest, goodman go and report to the vile hearted Chanakya

Vajra—What is that ?

विमला

अन्यथ—असज्जनरुचौ दुष्काले, कलौ, अपि, प्राणैः परम्, रक्षता, येन, यशस्विना, औशीनरीयम्, यश, अतिलघुताम्, नीतम्, विशुद्धात्मना, सुचरितैः, बुद्धानामपि-चेष्टितम् क्लिष्टम् पूजाहं, अपि, स, य कृते, तव, शत्रुत्वम्, गत, सः, एव, अहम्, अस्मि ॥ ५ ॥

व्याख्या—असज्जनानाम् रुचिर्यस्मिन् सोऽसज्जनरुचिस्तस्मिन् असज्जनरुचौ=दुर्जनानुरागे (In which the tastes of the wicked persons), दुष्काले=पापिन्त्यपि (evil times), कलौ=कलियुगे (the Kali age) अपि (even), प्राणैः=असुभिः (with life), परम्=अन्यम् (another), रक्षता=पालयता (by saving), येन=चन्दनदासेन (by whom), यशस्विना=कीर्तिशालिना (who the glorious one), औशीनरीयम्=उशीनरस्य देशस्यायम् अधिपति औशीनर तस्येदमौशीनरीयम्=शिविनृपतिगतम् (of the king Sivi), यश=कीर्ति (fame), अतिलघुताम्=अत्यन्तानादरास्पदताम् (insignificant), नीतम्=प्रापितम् (has rendered), विशुद्धात्मना=विशुद्ध आत्मा यस्य स विशुद्धात्मा तेन विशुद्धात्मना=पवित्रहृदयेन (being pure in soul) सुचरितैः=साधुचरित्रैः पुण्यकर्मभिः, वा (by virtuous conduct) बुद्धानामपि=सुगतानामपि (even of the Buddha), चेष्टितम्=वापार (the deeds), क्लिष्टम्=तिरस्कृतम् (are shaded), पूजाहं अपि=अर्च्योऽपि (even adorable one), स=असौ (that), यकृते=यस्य मम (for whose sake), तव=भवत (your), शत्रुत्वम्=शत्रोर्भावः शत्रुत्वम्=रिपुत्वम् (enmity), गत=नीत (incurred), स=असौ (that), एव (here), अहमस्मि (I am) ॥ ५ ॥

प्रथमः—अले विल्लपत्तअ, तुनं दाव चन्दनदासं गेह्णिअ इह एदस्स ममाण-
पादपस्स द्वाआए मुहुत्तं चिट्ठ जाअ अहं चाणकस्स निवेदेमि निहीदो अमच्च-
रक्खनो त्ति । (अरे विल्वपत्रक, त्वं तावच्चन्दनदासं गृहीन्वेद्वैतस्य श्मशानपाद-
पस्य द्वायायां मुहूर्तं तिष्ठ यावद्दहं चाणक्यस्य निवेदयामि गृहीतोऽमात्यराक्षस
इति ।)

द्वितीयः—अले वज्रलोमा, गच्छ । (अरे वज्रलोमन्, गच्छ ।)

जनानां प्रापदाः कलौ स्वार्थप्रधानास्तेऽपि दूरजागतव्यात्मक्यात् मत्स्यदुते दारणागत-
वत्सलात् शिविनृपतेरपि, भस्पाधिकमहत्त्वम् बुद्धादपि, अतिशयदयाशालित्वम्
चेति भावः ॥ ५ ॥

हिन्दी—यह कि मैं यह राजस का गज हूँ—जिसके टिरे से पूजा के योग्य, दुष्टों के
मनोनिर्हाय पापमय इस बोर कलकाठ में जो—अने प्राँ में दूसरों के प्राँ बचानेवाले,
अने दूरजागत की रक्षाजन्य बुद्धोचित से नृराक्षस्य महाराज द्विष की भी कीर्ति को नीचा
दिखा देनेवाले और करने विद्युदावरण के बल पर भगवान बुद्ध के भी सत्कर्मों से बड़े-बड़े
सत्कर्म करनेवाले—ये महारजा चन्दनदास मारे जा रहे थे ॥ ५ ॥

English—*Rakshasa*—Here I am he for whose sake even that
adorable one incurred your enmuy—the one by whose glorious,
saving andher at the cost of his own life in these evil times of the
Kali age in which the tastes of the people are wicked has rendered
insignificant even the fame of the king Shivi, and by whom, the
pure hearted even the deeds of the Buddhas are shaded with his
noble deeds. (5)

टिप्पणी—इस दृष्टिकोण में एक ही यत् शब्दवाच्य का चन्दनदासरूप कर्तृधारक का
नो मित्र-रूप शत्रुवाच्य क्रियाओं में सम्बन्ध रहने के कारण दोषक बलकार है। फिर द्विष और
बुद्ध दोनों की कदवा अप्रियवृत्त के कारण व्यतिरेक बलकार है। पूजा के योग्य व्यक्ति का
वधयोग्य व्यक्तित्व में परिवर्तन से परिशुचि बनार है। इन दोनों के सम्मिश्रण से उत्तर
बलकार है। शार्ङ्ग वेङ्गोदित छन्द है।

विनंता

प्रथमः—अरे विल्वपत्रक (O Bilvapatraka), स्वम् (you), तावत् (till),
चन्दनदासम् (Chabdandasa), गृहीता (taking), इह = अत्र (here),
एतस्य (this), श्मशानपादपस्य = (the tree of the burning ground),
द्वायायान् (under the shade), मुहुर्त्तम् = क्षणम् (for a moment), तिष्ठ =
स्पीयताम् (wait), यावद्दहम् (while I), चाणक्यस्य = कौटिल्यस्य (Chanakya),
निवेदयामि = कथयामि (report to), अमात्यराक्षसः (Minister Rakshasa),
गृहीतः (is taken).

द्वितीयः—अरे वज्रलोमा (O Vajraloman), गच्छ = गम्यताम् (go).

(इति सपुत्रदारेण चन्दनदासेन सह निष्क्रान्तः ।)

प्रथम — एतु अमचो । (राक्षसेन सह परिक्रम्य ।) अतिथि एतथ कोवि
पिनेदेह दात्र णन्दकुलनगकुलिसस्स मांलिअकुलपडिट्ठापक्कस्स अज्जचाण-
क्कस्स । (एत्वमात्य । अस्त्यत्र कोऽपि निप्रदयेत् तावन्नन्दकुलनगकुलिसस्य
मोयकुलप्रतिष्ठापरस्यार्यचाणक्यस्य ।)

राक्षस — (स्वगतम् ।) एतदपि नाम श्रोतव्यम् ।

चाण्डाल — एमा अज्जणादिसत्तमिद्वुद्धिपरिसने गिहीदे अमच्चएकस्से त्ति
(एष आयतीतिसयमितबुद्धिपरिसरो गृहोतोऽमात्यराक्षस इति ।)

(तत प्रविशति चवनिकावृतशरीरो मुखमात्रदृश्यश्चाणक्यः ।)

चाणक्य — भद्र, नथय वयय ।

[निष्क्रान्त = निर्गत (Exit) सपुत्रदारेण (with wife and son) चन्दनदासेन
सह (with Chandandasa)]

प्रथम — अमात्य = मन्त्री (Minister), एतु = आगच्छतु (let come),
[राक्षसेन सह = (with Rakshasa), परिक्रम्य (going round)], अत्र = द्वारे (here),
कोपि = द्वारिकाणाम् मध्ये कोऽपि (any one), निवेदयेत् = कथयेत् (report),
तावन्नन्दकुलनगकुलिसस्य = नन्दानाम् कुलस्य तस्य नग तस्मै कुलिसस्य तस्य =
नन्दकुलनगकुलिसस्य = नन्दवंशपर्वतवज्रस्य (the thunderbolt to the hill
of the race of Nandas), मोर्यकुलप्रतिष्ठापरस्य = चन्द्रगुप्तवर्माशिरीकृतस्य
(the founder of the house of Nandas), आर्यचाणक्यस्य = आर्यकौटिल्यस्य
(to noble Chanakya)

राक्षस — [स्वगतम् = अप्रकाश्यम् (To himself)], एतदपि (Even this),
नाम श्रोतव्यम् (has to be listen to)

चाण्डाल — एष = अयम् (That), आर्यस्य नीति आर्यनीतिस्तया सयमितो
बुद्धिपरिसरो यस्य स आर्यनातिसयमितबुद्धिपरिसर = चाणक्यनयकुण्ठितनतिवैशद्य
(whose intellect and prowess have been thwarted by noble
Chanakya's state-craft) अमात्यराक्षस (minister Rakshasa), गृहीत =
सयमिन् (is taken)

[तत (then), प्रविशति (Enter), चवनिकावृतशरीरो (body covered
by a veil), मुखमात्रदृश्य (face alone visible, चाणक्य Chanakya)]

चाणक्य — भद्र = कल्याणिन् (Gentleman), कथय कथय = उच्यताम्, उच्यताम्,
(tell me tell)

हिन्दी — प्रथम — अरे निरवयव, तुम तबतक इस चन्दनदास को पकड़े हुए इस रमणान
वृथ यो छाया में ठहर जाओ, जबतक कि मैं आर्य चाणक्य से निवेदन कर दूँ कि अमात्य राक्षस
पकड़ में आ चुके ।

द्वितीय — अर वज्रलोमन् ऐसी हो करो ।

(इस प्रकार पुत्र और पत्नी के सहित चन्दनदास के साथ निष्क्रान्त गया)

केनोत्तुङ्गशिखान्कलापकपिलो बद्धः पटान्ते शिखी

पादोः केन सदागतेरगतिता सद्यः समासादिता ।

केनानेकपदानवासितसटः सिद्धोऽपितः पञ्चरे

मीमाः केन च नेकनकनकरो दोर्म्या प्रतीर्णोऽप्ययः ॥ ६ ॥

प्रथम—अनात्य बहर—(राज्ञेन के साथ बूझकर) वहाँ क्यों है—नन्दबल्लवी परों के लिए ब्रह्मस्त्र तथा नैर्दुल के प्रतिश्रावक कार्य चाकर्य से निवेदन करें ।

राक्षस—(करने का) राक्षस को यह सब को झुनना ।

शान्दाल—कार्य की नीति से कुम्भार मुदि और पुरवर्ष बाळ मानत्य राक्षस रहत फिर गे ई ।

(परों को ओट में, बैरल तुँह बहर दिये चाकर्य का रङ्गनञ्च सर प्रवय)

शानक्य—नर, बहो, बहो ?

English—First—O, Vilwapatraka, wait here for a moment taking Chandandasa with you, while in the shade of the tree of the burning ground while I report to His Honour Chanakya that minister Rakshasa is taken

Second—O, Vijraloman, go

(Exit with Chandandasa and his wife and son)

First—Come minister (Going round with Rakshasa). Is there any one here ? Inform to noble Chanakya, the thunderbolt to the hull of the race of Nanda and the founder of the house of Mourya—

Rakshasa—(To himself) Even this has to be listen to !

Chandala—That minister Rakshasa whose wit and prowess have been checked by the state-craft of noble Sir, is taken.

(Now enter Chanakya with his person covered by a Veil and face alone visible)

Chanakya—Gentleman, tell me tell

विमला

अन्धारः—केन, उत्तुङ्गशिखाकलापकपिलः, शिखी, पटान्ते, बद्ध केन, पादौ, सदा गते, अगतिता, सद्यः, समासादिता, केन, अनेकपदानवासितसटः, सिद्ध, पिञ्जर, अपितः, केन, दोर्म्यान्, नेकनकनकर च, मीमा, वर्म्या, प्रतीर्णः ॥ ६ ॥

व्याख्या—केन=जनेन (By whom), उत्तुङ्गशिखा ता शिखा उत्तुङ्गशिखास्तासां कलाप उत्तुङ्गशिखाकलापस्तेन कपिलः उत्तुङ्गशिखाकलापकपिलः=उद्धर्वास्थितत्वात् सन्तुष्टपिङ्गलः (the fire red with the mass of its mighty flames), शिखी=वद्धि (the fire), पटान्ते=वस्त्रप्रान्ते (in the Skirt of his garment), बद्ध=संयमितः एत इत्यर्थः (is tied), केन=जनेन (by whom), पादौ=रङ्गुलिः

चाण्डाल — नीतिनिपुणबुद्धिणा अज्ञेन । (नीतिनिपुणबुद्धिनायेन ।)

चाणक्य — मा मैवम् । नन्दकुलविद्वेषिणा दैवेनेति ब्रूहि ।

(with chains), सदा सततम् गतिर्यमनम् यस्य स तथोक्तस्तस्य सदागते = सतत गमनशीलस्य वायोरिति (ever moving), अविद्यमाना गतिर्यस्य सोऽगतिस्तस्य भावोऽगतिता, गतिनिरोध इत्यर्थ (the motionlessness), सदा = अकाण्डे (instantly), समासादिता=कृता (brought about), केन महापुरुषेण (by whom), अनेकाभ्याम् सुल्लशुण्डाभ्याम् पिव-तीर्यनेकषा हस्तिनस्तेषां दानम् मदस्तेन वासिता सुरभीकृता सदा यस्य सोऽनेकपदानवासितसद=द्विरदमदजलसुरभि कृतसद (with his manes scented by the ichor of elephants), सिंह = गजेन्द्र (the lion), पिबन्ने=पश्यादिबन्धनासारे (into a cage), अदित = स्थापित, बद्ध इति (put), केन = पराक्रमशालिना पुरुषेण (by whom), दोभ्याम्=बाहुभ्याम् (with arms), न एक नैक नद्या मकराश्च यस्मिन् नैव नक्रमकर = बहुलनक्रमकरजलजस्तु (with numerous murderous Sharks and alligators) च=पुन (and) भीम = भयकर (dreadful), जर्णव = समुद्र (ocean), प्रतीर्ण = पारङ्गत (crossed) ॥ ६ ॥

हिन्दी—किसने उन्ही बँधी हुई लपटों में जटिल और कपिल, आग को बरने बचल में बाँधा है। किस महापुरुष ने सतत गतिशील हवा को रस्सियों में बांधकर निश्चयकर दिया है, किस और पुरुष ने अनेकों गनों के मदजल से सुगन्धित सदाओं वाले [सहों को पिजड़े में बन्द कर दिया है? किसने नकों और नगरों से भरा भयकर समुद्र को बाहुओं से तैर कर पार कर लिया है? ॥ ६ ॥

English—By whom is tied in the skirt of his garment the fire red with the mass of its mighty flames? By whom is instantly brought about with chains the motionlessness of the ever moving wind By whom put into a cage the lion with his manes scented by the ichor of elephants? By whom is crossed by means of his arms the dreadful sea, allounding in Crocodiles and and alligators 6

टिप्पणी—इस श्लोक में रूपक तथा अतिशयोक्ति अद्भुत है। छंद का नाम शाल्लु विकीर्तित है।

विमला

चाण्डाल — नीती राजमातौ निपुणा कुशला बुद्धिमन्तिर्यस्य स नीतिनिपुणबुद्धिस्तेन नीतिनिपुणबुद्धिना = राजनीतिकुशलमतिना (with wit skilled in state craft), आर्येण = पूज्येन (by noble sir)

चाणक्य — एवम् = एवाकवाच्यम् (So), मा = नैव, वक्तव्यम् (no not), किन्तु, नन्दानां कुलम् नन्दकुलम् तद्विद्वेष्टि इति नन्दकुलविद्वेषि तेन न दकुलविद्वेषिणा = नन्दवशविनाशकेन (the hater of the race of Nandas), दैवेन = भाग्येन (by fate), ब्रूहि = कथय (say)

राक्षसः—(स्वगतम् ।) अयं दुरात्मा अथवा महात्मा कौटिल्यः ।

आकरः सर्वशास्त्रार्ण रत्नानामिव सागरः ।

गुणेन परितुष्यामो यस्य मत्सरिणो जयम् ॥ ७ ॥

चागम्यः—(त्रिलोक्य, सहर्ष स्वगतम् ।) अये, अयमसारमात्यराक्षसः ।
येन महात्मना—

राक्षस—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)], अयम् = एषः (This),
दुरात्मा = दुष्टात्मा (vile-hearted), अथवा = वा (or), महात्मा = महाधर्मा आत्मा
महात्मा (noble-hearted), कौटिल्यः = चाणक्यः (Kautilya)

अन्यथा—रत्नानाम्, सागर, इव, सर्वशास्त्राणाम्, आकर, यस्य, गुणै, मत्सरिणः,
जयम्, न, परितुष्याम ॥ ७ ॥

व्याख्या—रत्नानाम् = पद्मरागादीनाम् मणीनाम् (Of gems), सागरः = अर्गव
(the sea), इव = यथा (like), सर्वशास्त्राणाम् = निखिलशास्त्रज्ञानानाम् (the
repository of all knowledges), आकर = रत्नाकर (the mine),
यस्य = चाणक्यस्य (whose), गुणैः = चातुर्यादिभिः (virtues), मत्सरिणः =
अन्यगुणद्वेषिणः (jealous), जयम् (we), न परितुष्यामः = न प्रीतिगान्धुमः
(are not sufficiently pleased), ॥ ७ ॥

हिन्दी—चाण्दाल—नौतिनिपुण बुद्धि वाले आर्य के द्वारा ।

चाणक्य—नहीं, ऐसा नहीं । नन्दवश के विरोधी साम्य के द्वारा-देखा कहो ।

राक्षस—(करने आर्य) यह चाणक्य दुर्जन है अथवा महारत्ना ?

सभी राज्यों के समुद्र की तरह रत्नाकर यह चाणक्य है—जिसकी प्रशंसा करते हमारे
जैसे श्रेष्ठों जन भी नहीं बनाने ॥ ६ ॥

English—Chandala—Surely by noble sir with intellect skilled
in state-craft ?

Chaunkya—No not so, say by fate. The inveterate foe of the
race of Nandas.

Rakshasa—(To himself) This is the mean-minded—or rather
hearted—Kautilya.

The repository of all knowledges as the sea is of gems with
whose virtues we are not sufficiently pleased although jealous. 7.

टिप्पणी—इस श्लोक में उक्त तथा रूपक कलकार है । छन्द का नाम अनुष्टुप् है । उच्चा
पढ़ते लिखा वा नुका है ।

विमला

चाणक्य—[त्रिलोक्य = इष्टा (looking at), सहर्षम् = सप्रसङ्गम् (with joy),
स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself)], अये = आश्चर्यम् (Ah), अयम् = एषः

गुरुभि रूपाणाञ्जेशैर्दीर्घजागरहेतुभि ।

चिरमायासिता सेना वृषलस्य मतिश्च मे ॥ ८ ॥

(जवनिका करेणापनीयोपसृत्य च ।) भो अमात्यराक्षस, विष्णुगुप्ताऽहम-
मिरादये ।

राक्षस — (स्वगतम् ।) अमात्य इति लज्जाकरमिदानीं विरोपणम् ।
(प्रकाशम् ।) विष्णुगुप्तं न मा चाण्डालस्पर्शदूषितं स्पष्टमर्हसि ।

चाणस्य — भो अमात्यराक्षस, नेमी चाण्डाली । अयं खलु दृष्ट एव भवता
सिद्धार्थको नाम राजपुरुषः । योऽप्यसौ द्वितीयः सोऽपि समिद्धार्थको नाम

(here is) असौ (that), अमात्यराक्षस = नन्दसचिव (the minister Rakshasa),
यन (by whom) महामना = महापुरुषेण (magnanimous one) —

अन्वयः — दीर्घजागरहेतुभि, गुरुभि, कृपाणाञ्जेशैः, वृषलस्य, सेना, मे, मतिः,
च, चिरम्, आयासिता ॥ ८ ॥

ध्यात्वा — दीर्घरचासौ जागरो दीर्घजागरस्तस्य हतवस्तैर्दीर्घजागरहेतुभि = यद्वा दीर्घा
जागरा हतवो येषां ते दीर्घजागरहेतवस्तैर्दीर्घजागरहेतुभि = चिरनिद्रोच्छेदकारणैः (were
the cause of protracted wakefulness) गुरुभि = महद्भिः (the heavy),
कृपाणाञ्जेशैः = कर्त्तव्याकर्त्तव्यापायरचनापद्युतैः (troubles of preparations
and devising of plans), वृषलस्य = मौर्यस्य (Maurya's), सेना = चम् (the
army), मे = मम (my), मतिः = बुद्धिः (intellect), च = पुनः (and),
चिरम् = बहुकालपर्यन्तम् (for a long time), आयासिता = बलेशिता अस्तीति
(were seriously taxed) ॥ ८ ॥

[जवनिका तिरश्चरिणीम् (Veil), करेण = हस्तन (with hand), अपनीय =
अपसार्य (removing), च = पुनः (and), उपसृत्य = समीपम् गत्वा (approaching),
भो अमात्यराक्षस = भो नन्दसचिव (O minister Rakshasa), अहम्
(I), विष्णुगुप्तः = चाणक्यः (Vishnugupta), अभिवादये = अभिवादनम् करोमि
(salute)

राक्षस — [स्वगतम् = आत्मगतम् (to himself), अमात्य इति = सचिव इति
('Minister' is), इदानीम् = अधुना (now), विरोपणम् (the epithet),
लज्जाकरम् = सकोचारपदम् (causes shame), [प्रकाशम् = स्पष्टं यथा स्यात्तथा
(Aloud)] विष्णुगुप्तः = चाणक्यः (O Vishnugupta), न माम् (not to me),
चाण्डालस्पर्शदूषितम् (defiled by the touch of Chandal) स्पष्टम् = स्पष्टम्
कर्तुम्, अहसि = शक्नापि (it behaves)

चाणस्य — भो अमात्यराक्षस = भो नन्दसचिव (O minister Rakshasa),
इमौ = एतौ द्वौ (these two) न = नहि (not), चाण्डालौ (Chandalas), अयम्
खलु (this one), भवता = त्वया (by you), दृष्ट एव (has been seen),
सिद्धार्थको नाम (Siddharthaka by name), राजपुरुषः = राजकीयसेवकः (a royal
official), योऽपि (who is), असौ = एष (hers), द्वितीयः (other), सोऽपि =

राजपुरुष एव । शकटदासोऽपि तपस्वी तं तादृशं लेखमज्ञानमेव कपटलेखं मया लेखितं भूति ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) दिष्ट्या शकटदासं प्रत्यपनीतो विरूपः ।

असावनि (this too), समिद्धार्थको नाम (Samiddhartbaka by name), राजपुरुष एव=राजटीयसेवक एव (servant of king), शकटदासोऽपि (Shakatdass too), तपस्वी (poor), तादृशम् (as such), लेखम्=पत्रम् (letter), अज्ञानमेव=भ्रमज्ञानमेव (without his knowing), तम् कपटलेखम् (that strategic), मया=चाणक्येन (by me), लेखितं (was made to write).

हिन्दी—चाणक्य—(देखकर प्रसन्नता को मुद्रा में नन हो नन) अरे, यह वही बनात्य राक्षस है—

विस्र नहात्मा के द्वारा—निरन्तर जागरा के कारण, महान् योबनाओं के कठों से चन्द्रगुप्त को ठेना और नेरी दुखि एक साथ बहुत दिनों तक चकरानी रही है । ८ ॥

(दर्श इत्यादि पान आकर) ओ अनात्य राक्षस मैं विष्णुगुप्त प्रणाम करता हूँ ।

राक्षस—(अपने आद) 'अनात्य' यह विरुषा हम समय टनकर छज्वा भाती है । (व्यचरुण से) विष्णुगुप्त, तुमने हुना मत । इस मन्य मैं चाण्डालों के रसों से दूषित हू ।

चाणक्य—ओ अनात्य राक्षस' ये दोनों चाण्डाल नहीं हैं । इनमें एक तो मार से पूर्वपरिचित मिद्धार्थक नाम का राजकर्मचारी है । और दूसरा भी समिद्धार्थक नाम का राजकर्मचारी ही है । मने देवारे शकटदास से उसकी अज्ञानवस्था में ही हम प्रकार कपटलेख लिखवाया था ।

English—*Chanakya*—(Seeing to himself with joy). Ah, here is that minister Rakshasa by whose the ungracious self, my intellect as well as the army of Vrishala, has been trouble for a long time with the heavy task of devising plans,—the cause of protracted wakefulness. (8).

(Removing the veil and approaching) O, minister Rakshasa, I, Vishnugupta salute you.

Rakshasa—(To himself) The epithet 'Minister' is a humiliating now. (Aloud) O Vishnugupta do not touch me as I am defiled by the touch of Chandakas.

Chanakya—O, Minister Rakshasa, these two are not Chandakas. This one is a royal official, Siddhartbaka by name, whom you have been seen. This other here too is a king's servant, Samiddhartbaka by name. Poor Shakatidas also, was made to write that strategical letter by me, without his knowing about its nature.

टिप्पणी—इस श्लोक में दुस्वभाविता बल्कर तथा अनुशुद्धि छन्द है ।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम्=आत्मगतम्=(To himself)], दृष्ट्या=भाग्येन (luckily),

चाणक्य — किं बहुना ! एष सचेपत कथयामि ।

भृत्या भद्रभटादयः स च तथा लेखः स सिद्धार्थक-
स्तञ्चालकरणत्रयं स भवतो मित्रं भदन्तः किल ।

जीर्णाद्यानगतः स चापि पुरुषः क्लेशः स च श्रेष्ठिनः

सर्वं मे—

(इ यथोक्ते लज्जा नाटयति ।)

—वृषलस्य वीर भवता संयोगमिच्छोर्नयः ॥ ९ ॥

तदयं वृषलस्त्वा प्रष्टुमिच्छति ।

शकटदासम् (about Shakatadasa), विकल्प = सम्देह (suspicions), प्रत्य
पनीत = अपहृत इति (are removed)

चाणक्य — किम्बहुना = किमित्तोऽधिकम् (Away with details) एष (here),
सचेपत (briefly), कथयामि (I say)

अन्वयः—भद्रभटादयः, भृत्या, तथा, च, स, लेखः, स, सिद्धार्थकः, तत् च,
अलङ्करणत्रयम्, स, भवतः, किल मित्रम्, भदन्तः, जीर्णाद्यानगतः, च, पुरुषः,
अपि, स, च, श्रेष्ठिनः, क्लेशः, सर्वम्, मे (इत्यर्थोक्ते लज्जा नाटयति) हे वीर, भवता,
वृषलस्य, संयोगम् इच्छो, नय ॥ ९ ॥

व्याख्या—भद्रभट आदियथा ते भद्रभटादयः = भद्रभटप्रभृतयः (Bhadrabhatas
and others), भृत्या = सेवका (servants), तथा च, स = अतिप्रभावकर (like
such), लेखः = पत्रम् (letter), स सिद्धार्थकः = असौ सिद्धार्थकः (that
Siddharthaka), तच्च अलङ्करणत्रयम् = एवमेतरेष्वस्तत्पूर्वम् चणिजो भवता क्रीतम्
(those three sets of ornaments), स = असौ (that), भवतः = तव (your),
किल (indeed), मित्रम् = मित्रम् (friend), भदन्तः = जीवसिद्धिर्नामधेयो बौद्ध-
सम्भासी (the mendicant) जीर्णाद्यानगतः = पुरातनोपवनप्राप्तः (that was
found in the old garden), स च पुरुषः = तत्र अपि (that man), स च श्रेष्ठिनः =
चणिजश्च-द्वन्द्वस्य (of the merchant), क्लेशः = दुःखम् (the trouble),
सर्वम् = सकलम् (all) मे = मम (my), [इत्यर्थोक्ते (when half uttered),
लज्जाम् (shame), नाटयति (acting)], हे वीर = पराक्रमशालिन् (O valiant
one), भवता = स्वया (with you), वृषलस्य = चान्द्रगुप्तस्य (Chandragupta's)
संयोगम् = सम्बन्धम् (connection), इच्छो = अभिलाषुकस्य (wishing), नय =
नीतिरस्ताति शेषः (the strategy) ॥ ९ ॥

तदयम् = एष (here is), वृषलः = च-वृषलः (Vrishala), त्वाम् = भवन्तम् (to
you), प्रष्टुमिच्छति = अब्रवीत्किमु वाञ्छति (wish to see)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) सोभाग्य से शकटदास के प्रति प्राप्त संदेह दूर हो गया ।

चाणक्य—अधिक कहने से क्या ? यह संक्षेप में कहता ॥ —

राक्षसः—(स्वगतम् ।) का गतिः एष पर्यामि ।

(ततः प्रविशति राजा विभवत्तश्च परिवारः ।)

राजा—(स्वगतम् ।) मित्रेव युद्धादार्थेण जितं दुर्जय परबलमिति लज्जित एवास्मि । मम हि—

फलयोगमवाप्य सायकानां विधियोगेन विपक्षतां गतानाम् ।

न शुचेव सत्यधोमुखानां निजतूणीशयनमृतं प्रतुष्टयै ॥ १० ॥

नर मर प्रवृत्ति को आरता मृत्यु बनाना, वह उन प्रकार का करार लेख, वह आरका विपक्षो मित्रार्थक, वे नौनों आभूषण, यह आरका स्नेहभावन बना साराक आसक्ति, आर्षेधान में निजनेवाना वह दुर्जो जोव और सत्ये बड़ा चन्दनमस का यह स्टेज—हे वीर, यह सब कुछ (इतना आध कहने पर एखा का अभिनय करते हुए)—आरके साथ चन्द्रगुप्त का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए मेरी नीति थी ॥ ९ ॥

अतः यह चन्द्रगुप्त आरको देखना चाहता है ।

English—*Rakshasa*—(To himself) Luckily my suspicions about Shakatadas are removed.

Chanakya—Away with details; here I say you briefly :—

These people Bhadrabhatta and others, the letter is written in that style, that man Siddharthaka, those three sets of ornaments, that your friend mendicant, the man too that was found in the old garden and the whole trouble to the merchant—all in my—(acting shame when half uttered) O, valiant one, was due to the strategy of me, desired Vrishala's connection with you. Therefore, here is Vrishala, wishing to see you

टिप्पणी—इस श्लोक में काम्बलिक अड्डाण तथा शार्ङ्गविकीर्तित छन्द है ।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself), का गतिः = (What help), एषः (here), पर्यामि (I see),

[ततः = तत्पश्चात् (then), प्रविशति = प्रवेशम् करोति (enters), राजा = नृपः (the king), विभवेनेति विभवतः = ऐश्वर्यानुसारतः (according to rank), परिवारः = अनुचरः (with attendants)]

राजा—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself), अर्थयः = पूर्येन (by noble sir), युद्धाद्विनयः = सप्रानमन्तरेव (without a fight indeed), दुर्जयम् = दुष्टेन जेतुम् योग्यम् (the unconquerable), परबलम् = शत्रुसैन्यम् (army of the enemy), जितम् = वशीकृतम् (has conquered), लज्जितः = व्रथायुक्तः (ashamed), एव (really), अस्मि = अहमि (I am), मम हि = For :—

अन्वयः—फलयोगम्, अवाप्य, विधियोगेन, विपक्षताम्, गतानाम्, शुचा, इव, अधोमुखानाम्, सायकानाम्, निजतूणीशयनमृतं प्रतुष्टयै, न, भवति ॥ १० ॥

अथवा—

विगुणीकृतकार्मुकोऽपि जेतुं भुवि जेतव्यमसौ समर्थ एव ।

स्वपतोऽपि ममेव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्यजागरुकाः ॥ ११ ॥

व्याख्या—फलयोगम् = लौहमयाप्रकीलसम्बन्धम्, अन्यत्र कार्यसिद्धिप्राप्तिम् (the arrows head, and success also, both are intended), अवाप्य=प्राप्य (obtaining), विधियोयेन=सुदैवप्रसादेन वा अग्रेरणया (the double meanings are explained here like-(1) by the agency of fate or the ordainment of providence), विपश्चतान्=असह्यताम् (1) the party of the enemy (11) birds feathers (Feathers were attached to the hinder parts of arrows in order to regulate their motion), गतानाम्=प्राप्तानाम् (have to observe), न ह्युवा इव=नु खेनेव (as if in grief), अधोमुखानाम्=आनताप्रभागानाम् (of lying down), सायकानाम्=बाणानाम् (of arrows), निजगुणीयनव्रतम् = निजगुणीयनमेव व्रतम् सर्वदा तत्रेवावस्थाननियमरूपम् प्रवृत्तैः=सन्तोषाय न भवति (in their own quiver after having been endowed with tips does not indeed tend much towards my satisfaction) ॥ १० ॥

अथवा—

अन्यथ.—स्वपत, अपि, मम, ह्य, यस्य, तन्त्रे, कार्यजागरुका, गुरव, जाग्रति विगुणीकृतकार्मुक, अपि, असौ, भुवि, जेतव्यम्, समर्थ, एव, ॥ ११ ॥

व्याख्या—स्वपतोऽपि=शयानस्यापि (Though asleep), मम ह्य (as in mine), यस्य तन्त्रे=राष्ट्रचि-तन्त्रे (in whose interest), कार्यजागरुका = कार्ये जागरुका = कर्तव्यकर्मसावधाना (vigilantly attend to all the affairs), गुरव = मन्त्रिप्रधाना (his preceptors), जाग्रति=सततम् प्रयत्नम् कुर्वन्ति (are awake), विगुणीकृतकार्मुक = विगुणीकृत कार्मुकम् येन यस्य वा स विगुणीकृत-कार्मुक भौर्वाहीनशरासमोऽपि सन् (even with bow unstrung), असौ (he), भुवि=पृथिव्याम् (on the earth), जेतव्यम्=जेतुं योग्यम् सन्तुम् इत्यर्थ (what- ever is fit to be conquered), जेतुम्=पराभवितुम् (to conquer), समर्थ-एव=शक्त एव (is quite able) ॥ ११ ॥

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) दूसरा क्या उपाय है ? देखना हू ।

(इसके बाद राजा और उसके अनुरूप सेवकवर्ग का प्रवेश)

राजा—(अपने आप) आर्य चाणक्य ने बिना युद्ध के ही अजेय शत्रु की सेना जीत ली है, अब मैं लज्जित हू । क्योंकि —

देवयोग से, पक्ष में—चाणक्यनीति के व्यापार से, शत्रु विजयरूपी वार्यसिद्धि की प्राप्ति को, पक्ष में—अस्य योग को प्राप्त करके—विरोधीभाव को प्राप्त हुए, परिहार—पक्षियों को पक्षता को प्राप्त किये मानो शोक से नीचे मुख किये बाणों वा अपने तूणीर में शयनरूपी व्रत सन्तोष के लिए नहीं होता है ॥ १० ॥

अथवा—मेरी तरह जिस राजा के राज्य में राज्य संचालन में सतत सावधान गुरजन

(चाणक्यमुपसृत्य ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति ।

चाणक्यः—संपन्नास्ते सर्वारिपः । तदभिवादन्यस्व तत्रभवन्तमनात्यमुख्यम् ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) योजितोऽनेन संबन्धः ।

चाणक्यः—(राजानमुपसृत्य ।) जयमना चराश्रमः प्राप्तः । प्रणमैनम् ।

निरन्तर जगन्क रहन है । वह राजा प्रत्यक्षा रहित अनुष बाल शैवा हुआ भी सत्कार में बैठने वाला शत्रु को जानने में मनर्ह हो है । ११ ॥

English—Rakshasa—(To himself) What help ! Here I see him.

(Enter the king followed by his attendants according to their rank).

The king—(Aside) I am indeed ashamed that noble sir has conquered, without a fight, the unconquerable army For — Of the arrows rendered as if wingless thorough the operation of expedients, the vow of lying down in their own quiver, with their heads hang down as if in grief, does not indeed tend much towards my satisfaction 10

Or rather :—Though with his bow unstrung, he is quite able to conquer what has to be conquered in this world, in whose interest as in mine though asleep, his preceptors are awake and vigilantly attend to all the affairs of his kingdom. 11.

टिप्पणी—इन श्लोक में ऊर्ध्वेक्षा अङ्गुष्ठार तथा नाक नासि छन्द् है ।

इन श्लोक में कान्त्यङ्गि तथा उदना अङ्गुष्ठार तथा नाकनासिणी छन्द् है । छन्द् का छन्द है ।—'विन्दे ससुजा गुरु तने, चेतनरा येन तु माक्यपरिणीयम् ।'

विमला

[चाणक्यः=चैटिक्यम् (To Chanakya). उपसृत्य=समीपमेव (approaching)], आर्य=मान्य (Noble Sir), चन्द्रगुप्तः=चण्डगुप्तः (Chandragupta), प्रणमति=अभिवाद्यति (bows to you)].

राक्षसः—ते=तव (Your), सकक्षिप=सकलाशीर्षादाः (all desires), सम्पन्नाः=पूर्णा याताः (have been accomplished), त्व=तस्मात् (so), तत्रभवन्तम् (His Honour), अनात्यमुख्यम्=सचिवप्रमुखम् (prime minister), अभिवादन्यस्व (salute).

राक्षसः—[स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)] अनेन=चाणक्येन (By this man), संबन्धः (connection), योजितः=सम्पादितः (is established)

चाणक्यः—[राजानम्=चन्द्रगुप्तम् (To the king), उपसृत्य=समीपम् गत्वा (approaching)], अयम्=एष (here), अमात्यराक्षसः=अन्धमचिवः (minister Rakshasa), प्राप्तः (has seen), एनम् (him), प्रणम=अभिवाद्य (bow down).

राजा—(राक्षसमुपसृत्य ।) आर्य, चन्द्रगुप्तः प्रणमति ।

राक्षसः—(विलोक्य, स्वगतम् ।) अये, चन्द्रगुप्तः । य एष—

वाल एव हि लोकेऽस्मिन् संभावितमहोदयः ।

क्रमेणारूढवान् राज्यं यूयैश्वर्यमिव द्विपः ॥ १२ ॥

(प्रकाशम् ।) राजन्, विजयस्व ।

राजा—[राक्षसम् (To Rakshasa), उपसृत्य (approaching)], आर्य=महोदय (Noble Sir), चन्द्रगुप्तः=मौर्यः (Chandragupta), प्रणमति=अभिवाधयति (bows to you).

राक्षसः—[विलोक्य=इष्टा (Observing, स्वगतम्=आत्मगतम् (to himself)], अये=आश्चर्यम् (Ah), चन्द्रगुप्तः=चण्डगुप्तः (chandragupta) य एष = (he it is who) —

अन्ययः—वाल, एव, हि, अस्मिन्, लोके, संभावितमहोदयः, द्विपः, इव, यूयैश्वर्यम्, क्रमेण, राज्यम्, आरूढवान् ॥ १२ ॥

व्याख्या—वाल एव=किंतु बाल (Though but a child), हि=इतिनिश्चयः (indeed), अस्मिन्=इह (this), लोके=संसारे (in the world), संभावितमहोदयः=अनुमितविशिष्टानुदयः (with a mighty advance guessed), द्विप इव=हस्तीव (like a tusker), यूयैश्वर्यम्=यूयाधिपत्यम् (the leadership of herd), क्रमेण=कालक्रमेण (gradually), राज्यम् (sovereignty), आरूढवान्=आप्तवान् (attained) ॥ १२ ॥

[प्रकाशम्=सुस्पष्टम् (aloud)], राजन् (O king), विजयस्व (be prosperous).

हिन्दी—(चाणक्य के समीप जाकर) वृन्धवर, चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है ।

चाणक्य—तुम्हें सभी आदमीवाँद सफल हो चुके हैं । अतः अत्यन्त आदरणीय मन्त्रिप्रवर हम श्रीमान् का प्रणाम करो ।

राक्षस—(अपने आप) सम्बन्ध जोड़ दिया हमने ?

चाणक्य—(राजा के समीप जाकर) यह अमात्य राक्षस उपस्थित है । इन्हें प्रणाम करो ।

राजा—(राक्षस के पास जाकर) आर्य चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है ।

राक्षस—(देखकर अपने आप) अरे चन्द्रगुप्त है । जो यह—

अपने श्रेष्ठकाल से ही हम संसार में अपने महान् अनुदय की सबकी आशा बैषवाना रहा । इसने ठीक उसी प्रकार मागधान्य को क्रमशः अधिकृत कर लिया—वैसे बचपन से ही कोई मछिण्डु गजशावक अपने बूख का अधिपत्य पा ले ॥ १२ ॥

(मुनाकर) राजन्, विजयी बनो ।

English—(Approaching Chanakya) Noble sir, Chandragupta bows to you

Chanakya—Your all desires have been matured. Therefore salute this honourable your prime minister.

Rakshasa—(To himself), He has established the connection.

राजा—आर्य,

जगतः किं न विजितं मयेति प्रविचिन्त्यताम् ।

गुरौ पादगुण्यचिन्तायामार्यं चार्यं च जाग्रति ॥ १३ ॥

राजतः—(स्वगतम् ।) स्पृशति मां श्रुत्यभावेन कौटिल्यशिष्यः । अथवा
विनय एवैव चन्द्रगुप्तस्य । मत्सरस्तु मे विपरीतं कल्पयति । सर्वथा स्याने
यशस्यो वाक्यः । कुतः—

Chanakya—(Approaching to the king) Here we have the minister
Rakshasa. Salute him.

The king—(Approaching Rakshasa) Noble sir, Chandragupta
bows to you.

Rakshasa—(Observing, to himself) Ah ! Chandragupta,
He,—who is with a mighty advance guessed in the world, fore
known even when a child has gradually obtained sovereignty like
a tusk-attaineding mastery over a herd of elephants. 16. (Aloud)
O, king be prosperous.

टिप्पणी—इत एतत् न मे उना कन्दुत तथा मन्दुद् एव है ।

विमला

राजा—आर्य,

अन्वय—आर्य, गुरौ, च, आर्य, पादगुण्यचिन्तायाम्, जाग्रति, मया, जगतः,
किम्, न, विजितम्, इति, प्रविचिन्त्यताम् ॥ १३ ॥

व्याख्या—राजा—आर्य=नाम्य भवन् (Nob's sir)

आर्य=पूज्य (His Honour), गुरौ=सिष्यकं (preceptor), च=पुनः
(and), आर्य=पूज्य (noble sir), पादगुण्यचिन्तायाम्=एव गुणः एव पादगुण्यम्
तस्य चिन्ता भावना तस्याम् पादगुण्यचिन्तायाम्=सन्धिबिप्रदादिभ्यामारविधाना-
विवानभावनायाम् (in the management of the six expedients), जाग्रति=
उद्यते सति (wide-awake), मया=चन्द्रगुप्तेन (by me), जगतः=संसारस्य
(of the world), किम् (what), न विजितम्=अपि सर्वमेव विजितम् (have
I not conquered), इति प्रविचिन्त्यताम्=तुष्यताम् (just think). ॥ १३ ॥

राजतः—[स्वगतम्=आगतम्=(To himself)], कौटिल्यशिष्यः=चानक्य-
शिष्यः, शौर्य (the disciple of Kautilya), माम्=राजम् (me), श्रुत्यभावेन=
सेवकत्वेन (as a servant), स्पृशति=अवगच्छति (treats), अथवा=वा (or
rather), चन्द्रगुप्तस्य=मैत्रेयस्य (Chandragupta's), एव विनय एव=सिद्धैव
(this is indeed, the humility of Chandragupta), तु=किन्तु (but),
मत्सरः=अन्यशुभद्वेषः (jealousy), मे=मम रासवत्य (my), विपरीतम्=
अ-यशः (otherwise), कल्पयति=अवगमयति (make me think), सर्वथा=

द्रव्यं जिगीषुमधिगम्य जडात्मनोऽपि

नेतुर्यशस्विनि पदे नियतं प्रतिष्ठा ।

अद्रव्यमेत्य भुवि शुद्धनयोऽपि मन्त्री

शीर्णाश्रयः पतति कूलजवृक्षवृत्त्या ॥ १४ ॥

सर्वभावेन (by all means), स्थाने = युक्त एव (proper), चाणक्यः = कौटिल्यः (Chanakya), यशस्वी = कीर्तिमान् (famous), कुतः = For :—

हिन्दी—राजा—आर्य, जब आप दोनों ही गुरुजनों का, नीति के पद्धतों में, जागरूकता के साथ चिन्मन परामर्श प्रतिक्षण मुझे उपलब्ध है, तो फिर हम समार में मेरे लिए रह ही क्या गया है ? ॥ १४ ॥

राक्षस—(अपने आप) कौटिल्य का शिष्य मेरे साथ सेवकभाव से व्यवहार कर रहा है, अथवा—यह चन्द्रगुप्त की स्वाभाविक नम्रता ही हो। किन्तु, मेरी ईर्ष्या मुझे विपरीतभाव का बोध करा रही है। कुछ हो, चाणक्य, सबकुछ इस आदर यश का अधिकारी है। क्योंकि :—

English—The king—Noble sir.

Just think—What of this world is not attained by me ? When noble sir and your honour as my preceptor, are watching over the management of the six expedients. 13.

Rakshasa—(To himself) Ah the disciple of Kautilya treats me as a servant. Or it is really Chandragupta's humility, but my jealousy makes me think differently, Chanakya is by all means rightly has become victorious. For :—

टिप्पणी—इस श्लोक में तुल्ययोगिता और समुच्चय अलङ्कार हैं तथा छन्द का नाम अनुष्टुप् है।

विमला

अन्वयः—द्रव्यम्, जिगीषुम्, अधिगम्य, जडात्मनः, अपि, नेतु, यशस्विनि, पदे, प्रतिष्ठा, नियतम्, अद्रव्यम्, एत्य, भुवि, शुद्धनयः, अपि, मन्त्री, शीर्णाश्रयः, कूलजवृक्षवृत्त्या, पतति ॥ १४ ॥

व्याख्या—द्रव्यम् = योग्यम् (Proper person), जिगीषुम् = जयोघमवन्तम् (ambitious), अधिगम्य = प्राप्य (finds), जडात्मनोऽपि = मन्दबुधोऽपि (even dull minded), नेतुः = नायकस्य (leader's), यशस्विनि = कीर्तिप्रापके (renown), पदे = स्थाने (in a post), प्रतिष्ठा = कीर्तिप्राप्तिः (position), नियतम् = निश्चितैव (firmly), अद्रव्यम् = अनुद्योगिनम् (an unworthy master), एत्य = प्राप्य (finds), भुवि = पृथिव्याम् (on the earth), शुद्धनयः = शुद्धो नयो नीतिर्यस्य = विविक्तनयः (unimpeachable policy), अपि (also), मन्त्री = सचिवः (the minister), शीर्णाश्रयः = शीर्णः उच्छिन्नः आश्रयोऽवलम्बनम् यस्यासी = उच्छिन्नावलम्बनः सन् (resort being destroyed), कूलजवृक्षवृत्त्या = तटस्थतरुनियमेन (in the manner of a tree grown on the bank of a river), पतति = कार्यसम्पादको न भवतीति भावः (falls). ॥ १४ ॥

चाणक्यः—अमात्य राजस्य, इष्यते चन्दनदासस्य जीवितम् ।

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त, कुतः संदेहः ।

चाणक्यः—अमात्य राजस्य, जगृहीतराक्षेण भयतालुगृह्यते वृषत इत्यतः संदेहः । तथापि नन्वनेव चन्दनदासस्य जीवितमिच्छते ततो गृयतामिदं गच्छन् ।

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त, ना नैवम् । अयोग्या वयनस्य विरोधतस्त्वया गृहीतस्य ग्रहणे ।

चाणक्यः—राक्षस, योग्योऽहं त्वं योग्य इति क्रियते । परम्—

चाणक्यः—अमात्य राजस्य (Minister Rakshasa), चन्दनदासस्य (Chandan-dasa's), जीवितम् = प्राणनम् (life), इष्यते = वाञ्छते (is desired by you) ?

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त=ओ कर्तिष्य (O Vishnugupta), कुतः संदेहः (whence is the doubt ?)

चाणक्यः—अमात्य राजस्य (Minister Rakshasa), जगृहीतराक्षेण = जनाङ्घ्रा-
ऽऽयुधेन (the weapon untouched), भयता = त्वया (by you), अनुगृह्यते =
अनुकम्प्यते (is being favoured), वृषत इति = नीर्ये इति (Vrishala), अतः =
अस्मादेतोः (for this), संदेहः = अनिर्णयः (the doubt), ननु = तस्मात् (so),
यदि = स्यात् (if), त्वमेव (really), चन्दनदासस्य जीवितम् (life of Chandan-
dasa), इष्यते = अभिष्यते (is desired), ततः (then), गृह्यताम् = ग्रहणं क्रियताम्
(take up), इदम् = एतत् (this), दास्यम् (weapon).

राक्षसः—भो विष्णुगुप्त = ओ कर्तिष्य (O Vishnugupta), ना नैवम् (do not
say so), वयम् (we), अयोग्या (unworthy), विशेषतः (especially), त्वया
गृहीतस्य (as it was wielded by you), ग्रहणे (to accept).

चाणक्यः—राक्षस (O Rakshasa), अहम् (I) योग्यः (able), त्वम् (you),
अयोग्यः (unfit), एतत् कथम् (how does it follow), परम् (see).

हिन्दी—मैं तो चाहे किता ना इतुनि क्यों हो, यदि राजा ने निजदेखा ना नहत्ता-
कहा हो तो वतकी पदनायेडा वनी रहना । किन्तु यदि शिष्य ने कानी योग्या न हो, अभि-
रुचि न हो तो शुद्धनीति बाना ना नकी बर्बर बाबर बाउ दद पर वतख हूड का वरह, फिर
पठता है ॥ १४ ॥

चाणक्य—अमात्य राजस्य ! न्या चन्दनदास को जीवन दित है ?

राक्षस—ओ विष्णुगुप्त ! क्या इसमें भा संदेह है ?

चाणक्य—अमात्य राजस्य, भवितु के चिह्न उत्तर को बिना जहा दिने ही जानने चन्द्रस्य
को अनुगृहीत किया है । अतः संदेह है । या यदि सबकुच चन्दनदास को वापिस देखना चाहते
हैं—तो आबिद प्रथम रहे जहा कीबिद ।

राक्षस—इ विष्णुगुप्त ! देखा नहा । इसे मैं जानने को ग्रहण करने में अयोग्य मानता हू ।
विरोध रूप से तब जब तुल्ये पड़ते भान्ते रहे ग्रहण कर किया है ।

चाणक्य—अमात्य राजस्य, मैं योग्य हूँ, जब अयोग्य है—यह कैसे ? उत्तर है—

English—Emplacement in a renowned position is assured, even
to a dull-minded when he finds a proper person, who is ambitious,

अश्वैः सार्धमजस्रदत्तकविकैः क्षामैरशून्यासनैः
 स्नानाहारविहार-पानशयनस्वेच्छासुखैर्वर्जितान् ।
 माहात्म्यात्तव पौरुषस्य मतिमन् दत्तारिदर्पच्छिदः
 पश्यैतान् परिकल्पनान्यतिकरप्रोच्छूनवंशान् गजान् ॥१५॥

but coming by the unworthy, even a minister of unimpeachable policy falls to the ground, in the manner of a tree grown on the bank of a river, his resort being destroyed 14.

Chanakya—O, Minister, Rakshasa, is the life of Chandandasa desired by you.

Rakshasa—O, Vishnugupta, whence is the doubt ?

Chanakya—Minister Rakshasa, Vrishala is being favoured by you with the weapons untouched, hence the doubt. So if you really want to save the life of Chandandasa, accept this weapon.

Rakshasa—No, Vishnugupta not so. I am unworthy to receive the weapon, especially as it was wielded by you.

Chanakya—Minister Rakshasa, how does it follow that I am worthy, you are unworthy, look here :—

टिप्पणी—एतद्दलोकं मे निदर्शना अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द इति ।

विमला

अन्वयः—हे मतिमन्, दत्तारिदर्पच्छिदः, तव, पौरुषस्य, माहात्म्यात्, अशून्यासनैः, अजस्रदत्तकविकैः, क्षामैः, अश्वैः, सार्धम्, स्नानाहारविहारपानशयनस्वेच्छासुखैः, वर्जितान्, परिकल्पनान्यतिकरप्रोच्छूनवंशान्, पश्यान्, गजान्, पश्य ॥ १५ ॥

व्याख्या—हे मतिमन् = बुद्धिमन् (O talented one), दत्तारिदर्पच्छिदः = दत्ता-
 श्वतेजस्रः । तेषां दर्पं क्षिण्यतीति दत्तारिदर्पच्छिदः तस्य = अभिमानवद्विपुलार्थविनाशकस्य
 (subdues the pride of conceited foes), तव = भवतः (your), पौरुषस्य =
 पराक्रमस्य (prowess), माहात्म्यात् = प्रभावात् (through the greatness),
 अशून्यासनैः = अनपनीतपर्याणैः (never unoccupied), अजस्रदत्तकविकैः = अन-
 चरतयोजितवस्त्रैः (being continually bridled and saddled), क्षामैः = कृशैः
 (lean), अश्वैः = घोटकैः (with these horses), सार्धम् = सह (with),
 स्नानाहारविहारश्च विहारश्च पानश्च शयनश्च तानि स्नानाहारविहारपानशयनानि तानि च
 तानि स्वेच्छासुखानि तैः स्नानाहारविहारपानशयनस्वेच्छासुखैः = निमज्जनभोजन-
 भ्रमणलुसाहार-विभ्रमभ्रमकषयेच्छाभ्यासाः (of the pleasures of bathing,
 feeding, sport, drinking and sleeping at will), वर्जितान् = रहितान्
 (has been deprived), परिकल्पनायाः व्यतिकरः परिकल्पनान्यतिकरस्तेन प्रोच्छू-
 ना वशा येषाम् ते तयोच्छास्तान् परिकल्पनान्यतिकरप्रोच्छूनवंशान् = युद्धसज्जाविशेष-
 सयोगस्फीतमहापृष्ठास्थिभ्याम् (with their spine swollen through the con-

अथवा किं बहुना ! न खलु भरतः शस्त्रप्रहणमन्तरेण चन्दनदासस्य जीवितमस्ति ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।)

नन्दस्नेहगुणाः स्पृशन्ति हृदयं मृत्योऽस्मि तद्विद्विषां

ये सिक्काः स्वयमेव वृद्धिमगमांश्चिदास्त एव द्रुमाः ।

शस्त्रं मित्रशरीररक्षणकृते व्यापारणीयं मया

कार्ष्णाणं गतयो विवेरपि न यन्त्याशाकरत्वं चिरात् ॥ १६ ॥

tact of their pads), एतान् = अनून् (these), हस्तिनः = गजः (the elephants), परम = अवलोक्य (look) ॥ १५ ॥

अथवा = वा (or rather), किम्बहुना = किमितोऽपिहन् (away with all this), भवता = तव (your), शस्त्रप्रहणमन्तरेण = बिना शस्त्रप्रहणेन (without acceptance of the weapons), चन्दनदासस्य (Chandandasa's), जीवितम् = जीवनम् (life), न = नहि (not), खलु = निश्चये (surely)

हिन्दी—इ नीमनू, अस्मदी द्रुमों के अनेमान को नष्ट कर देनेवाङ्ग भारके हो शौर्य के प्रमान से अनवरत पीठ पर सगर सैनिकों से मुझोमिद, अन्तःकार अन्तों के चढे रहने के कारण दुर्गठ रोजों के साथ,—बिनका स्नान, नोजन, विशार, पात, सुपव भर अन्य स्वच्छा द्रव्य मर अविन्त्य हो चुका है—सावधान के ज्ञोणे से मूजे (फूजे) दुष्ट पीठ बाङ्ग इन हस्तिनों को देखिद ॥ १५ ॥

अथवा—और अधिक कहने से क्या छान ! इतना बात निश्चिद है कि भारकं अस्त्रप्रहण के बिना चन्दनदास के जीवन को रक्षा नहीं होनी ।

English—Look at these tuskers with their spines swollen through the contact of their pads, deprived of the pleasures of bathing, feeding, sporting, drinking and sleeping at will and rest along with these horses, lean with being continually bridled and saddled. All through the greatness of your prowess. O talented one, the allayer of the brag of a haughty enemy. 15.

Or, away with all this, Chandandasa cannot live unless you accept the weapon.

टिप्पणी—इस श्लोक में वृद्धिमगमांश्चिदास्त एव द्रुमाः अर्थात् अस्त्रप्रहण के बिना चन्दनदास के जीवन को रक्षा नहीं होनी ।

विमला

राक्षसः—[स्वगतम् = आत्मगतम् (To himself)].

अन्वयः—नन्दस्नेहगुणाः, हृदयम्, स्पृशन्ति, तद्विद्विषाम्, मृत्युः, अस्मि, ये, द्रुमाः, स्वयम्, एव, सिक्काः, वृद्धिम, अगमन्, ते, विद्विषा, एव, मित्रशरीररक्षणकृते, मया, शस्त्रम्, व्यापारणीयम्, कार्याणाम्, गतयोः, चिरात्, विवे, अपि, अज्ञाकरत्वं, न, यन्ति ॥ १६ ॥

(प्रकाशम् ।) विष्णुगुप्त, नमः सर्वकार्यप्रतिपत्तिहेतवे सुहृत्स्नेहाय । का गतिः । एष प्रहोऽस्मि ।

व्याख्या—नन्देषु स्नेहः नन्दस्नेहस्तस्य गुणः नन्दस्नेहगुणः = नन्दानुरागगुणः (The qualities of the kindness of the Nandas) हृदयम् = चित्तम् (the heart), स्पर्शन्ति = सम्स्पृजन्ति (touch), तद्विद्विषाम् = तेषां विद्विषस्तद्विद्विष-स्तपाम् तद्विद्विषाम् = नन्दशत्रूणाम् (of their bitter foes), भृत्योऽस्मि = मेवकरवम् प्राप्नोऽस्मि (I am a servant), ये द्रुमाः = तरुः (those trees), स्वयमेव = आत्मनैव (by myself), सिक्ता = सलिलेन सिक्ता (being watered), वृद्धिम् (growth), अगमन् (had attained), ते = द्रुमाः (they), द्विष्टा = विनष्टा (are cut off), मित्रसरीररक्षणकृते = च-दनदासरक्षणाय (for the sake of the preservation of the person of my friend), मया = राजसेन (by me), दास्यम् = आयुधम् (weapon), व्यापारणीयम् = प्राप्यम् (has to be wielded), कार्याणाम् = कृत्याणाम् (courses of events), गतयः = प्रकाराः (deeds), चिरात् = बहुकालात् (after a long time), दिवे = दैवस्य (by fate), अपि (even), आशङ्करवम् = वशवद्वरवम् (ordained) न गच्छन्ति (do not come) ॥ १६ ॥

[प्रकाशम् = सुस्पष्टम् = (aloud)], विष्णुगुप्तः कौटिल्यः (Vishnugupta), सर्वाणि च तानि कार्याणि सेवा प्रतिपत्ति स्वीकारस्तस्या हेतुः कारणम् तस्मै सर्वकार्यप्रतिपत्ति-हेतवे = सफलकृत्यस्वीकारकारणाय (the cause of undertaking all works), सुहृत्स्नेहाय = मित्रानुरागाय (to the love of friend), नमः (I bow), का गतिः = कोऽन्य उपायः (what help), एष = अयम् (here), प्रहोऽस्मि = सज्जोऽस्मि (willing)

हिन्दी—राक्षस—(अपने आप) उपर नन्दों के स्नेह तथा अनुग्रह हृदय को छू रहे हैं और इससे मैं उसी के परमशत्रु की सेवा में सज्ज हो रहा हूँ । वही वृक्ष जिन्हें स्वयं सींच सींचकर बढ़ाया, आज बट चुके हैं । सम्प्रति मित्र की रक्षा के लिए मेरे द्वारा शस्त्रग्रहण करना है । कर्मों की गति चिरकाल से विधाना की भी आशङ्करिता को नहीं प्राप्त होती है ॥ १६ ॥

(प्रकाश रूप में) विष्णुगुप्त, सशक्ति कार्यों की स्वीकृति के कारण मित्र स्नेह को प्रमाण है । यह शस्त्र स्वीकार है ।

English—Ranashasa—(To himself) The virtues of Nanda's kindness touch my heart and I am going to be the servant of his enemies . Those trees which bring watered by me had attained growth are cut off . The weapon has to be wielded by me for the sake of the person of my friend . The courses of events ordained by fate do not come within the range of the vision of even the creator himself 16 (Aloud), Vishnugupta I bow to the love of friend, the causes of undertaking all work . What course in there I am willing

चाणक्यः—(सहर्षम् ।) वृषल, वृषल, अमात्यराक्षसेनदानीमनुगृहीतोऽसि ।
दिष्टया वर्धते भवान् ।

राजा—आद्यप्रस्ताद एष चन्द्रगुप्तेनानुभूयते ।

पुत्रयः—जैदु अजो । एसो क्खु भद्दमटभागुराअणप्पमुहेहि संजमिदकल-
चलणो मलअकेदू पाटहरमूमि उअट्टितो । एद सुणिअ अजो प्पमाणम् ।
(जयत्यार्यः । एष खलु भद्रमटभागुराजप्रमुखे सयनितकरचरणो मलयकेतु-
प्रतिहारभूमिमुपस्थित । इदं क्षुब्ध आर्यः प्रमाणम् ।)

चाणक्यः—भद्र, निवेद्यताममात्यराक्षसाय । मोऽदमित्रानां जानीते ।

राक्षसः—(स्वगतम् ।) दासीकृत्य मानिदानीं विज्ञापनायां नुसरीकरोति
कौटिल्यः । दा गति । (प्रसागम् ।) राजन् चन्द्रगुप्तं विदितमेव ते यथा वयं
मलयकेतां कवित्कालमुपितास्तन्परिरन्धन्तामस्य प्राणाः ।

टिप्पणी—एन इत्येकं नै विवम, अनुमान, कायलद तथा अर्थान्तरन्यास आदि
अन्तर्गो की सज्जि है, छन्द का नाम शास्त्रविकल्पि है

विमला

चाणक्य—[सहर्षम्=मानन्दम् (With joy)], वृषल, वृषल=भृशार्थं द्विरुक्तिः
(Vrishala, Vrishala), अमात्यराक्षसेन-नन्दयचिवेन (by minister Rakshasa),
इदानीम्=अधुना (now), अनुगृहीतोऽसि=आप्यायिनोऽसि (are favoured),
दिष्टया=मात्रेण (by late), भवान् (you), वर्धते (do you prosper) *

राजा—चन्द्रगुप्तेन=मेरे लिये (By Chandragupta), एषः=अयम् (this is),
आर्यप्रसादः=आर्यस्त्र=पूज्यस्य (noble), भवतः=तव (preceptor's), प्रसादः=
अनुग्रहः (grace), अनुभूयते=प्राप्यते (is being enjoyed).

पुत्रयः—आर्यं=पूज्यः (Noble sir) जयन्तु=सर्वोत्कर्षणं वक्तव्यम् (let prosper),
एष here), खलु भद्रमटभागुराजप्रमुखैः=भद्रमटप्रवृत्तिप्रधानैः मेभ्येरिति (by
Bhadrabrata and Bhagurayan and others), सयनितम् करचरणम् यस्य
स सयनितकरचरणम्=वहद्वस्तपादः (lettered with hands and feet), मलयकेतुः=
पर्वतकुट्टः (prince Malayaketu), प्रतिहारभूमिः=द्वारदेसः (to the site of
gate), उपस्थितः=आनीतः (has come up).

चाणक्य—भद्र=कल्याणिन् (Gentleman) अमात्यराक्षसाय (to mini-
ster Rakshasa), निवेद्यताम्=कथ्यताम् (be reported), सः=असौ
(that), अयम्=राक्षसः (he), इदानीम्=मात्रतः (now), जानीते=
करिष्यति (knows).

राक्षसः—[स्वगतम्=आत्मगतम् (To himself), दासीकृत्य=न दासीऽदासस्तं
दास कृत्वेन दासीकृत्य=सूत्र्यविधाय (having made servant), माम्=राक्षसम्
(me), इदानीम्=अधुना (now), कौटिल्यः=चाणक्यः (Kautilya), विज्ञाप-
नायाम् (at prayers), नुसरीकरोति=वाचाळम् करोति (makes me garru-

(राजा चाणक्यमुखमवलोकयति ।)

चाणक्य —प्रतिमानयितव्योऽमात्यराक्षसस्य प्रथमं प्रणय । (पुरुष प्रति ।)

lous) का गति = कोऽन्व उपाय (what help), [प्रकाश = स्पष्टम् = (aloud)] राजन् चन्द्रगुप्त = नृप मौर्य (O king Chandragupta), ते = तव (to you), विदितमेव = ज्ञातमेव (is indeed known), यथा (that), वयम् (we), किञ्चित् कालमुपि = किञ्चित् कालम् यावत् स्थिता (I stayed for some time), मलय केतु = पर्वतकपुत्रे (with Malayaketu), तत् = तस्मात् (so), अश्य = एतस्य (his), प्राणा = भस्व (life), परिरेच्यन्ताम् = रक्षणीया इत्यर्थ (let be spared)

हिन्दी—चाणक्य—(प्रसन्नतापूर्वक) वृषल, वृषल ! अमात्य राक्षस ने अब तुम पर कृपा की है । भाग्य से ही तुम्हारी अभिवृद्धि हो रही है ।

राजा—आर्य, आप की कृपा का ही अनुभव चन्द्रगुप्त कर रहा है ।

पुरुष—आर्य की विजय हो । भद्रभट, भागुरायण आदि प्रमुखों ने हाथ पैर बाँधकर मलयकेतु को द्वार पर उपस्थित किया है । अब आगे आर्य की नैसी आज्ञा ।

चाणक्य—भद्र, ये सारी बातें अमात्य राक्षस से निवेदन करो । अब से वे ही ये सब जानते हैं ।

राक्षस—(अपने आप) पहले दास्त बनाकर अब यह चाणक्य बात करने के लिए विवश कर रहा है । दूसरा उपाय ही क्या है ? (सुनाकर) महाराज चन्द्रगुप्त ! यह तो आपको विदित ही होगा कि मैं कुछ समय तक मलयकेतु के साथ रह चुका हूँ । अब उसके प्राण की रक्षा की जाय ।

English—Chanakya—(With joy), Vrishala, Vrishala, you are now favoured by minister Rakshasa . Luckily do you prosper

The king—It is noble preceptor's grace that Chandragupta is enjoying

Man—Victory to noble sir Here Malayaketu has been placed at the door with his hands and feet chained by Bhadrabhatta, Bhagurayan and others . Noble sir will decide on hearing it

Chanakya—Gentleman, let it be reported to Minister Rakshasa . He now knows

Rakshasa—(Aside) Kautilya having made me a servant, now makes me give the order what help (Aloud), O king Chandragupta, it is indeed known to you, that I was living with Malayaketu for some time, so let his life be spared

विमला

[राजा = नृप (The king), चाणक्यमुखम् = कौटिल्यामनम् (Chanakya's face), अवलोकयति (looks)]

चाणक्य —अमात्यराक्षसस्य (Minister Rakshasa's), प्रथम = आद्यम् (first), प्रणय = विज्ञापनम् (request), प्रतिमानयितव्यः = स्वीकर्तव्य (must be grant-

भद्र, अत्मद्वचनादुच्यन्तां भद्रमतप्रसूता यथा—‘अनात्यराक्षसेन विज्ञापितो देवचन्द्रगुप्तः प्रयच्छति मलयकेतवे पित्र्यमेव विषयम् । अतो गच्छन्तु भवन्तः सहानेन । प्रतिष्ठिते चास्मिन् पुनरागन्तव्यम्’ इति ।

पुरुषः—जं अत्रो आणवेदि ति । (परिगमति ।) (यदायं आज्ञापयतीति ।)

चाणक्यः—भद्र, विष्ट विष्ट अरं च वक्तव्यो दुर्गपालः—‘अनात्यराक्षमलामेन सुप्रीतश्चन्द्रगुप्तः समाज्ञापयति य एष श्रेष्ठो चन्दनदासः स प्रथिव्या सर्वनगर-
श्रेष्ठिपदमारोप्यतामिति । अपि च विना वाहनहस्तिभ्यः क्रियता सर्वमोक्ष’
इति । अथयानान्यराक्षसे नेतरि किमन्माक प्रयोजनमिदानीम् ।

ed), [पुरुषन् प्रति (to the attendant)], भद्र=कृपयन्ति (good man), अस्म-
द्वचनात् (in my name), वच्यताम् = कथ्यताम् (tell), भद्रमतप्रसूताः = भद्रमत-
प्रसूताः (Bhadrabhatta and others), यथा (that), अनारक्षसेन (by minis-
ter Rakshasa), विज्ञापित = समायितः (requested), देव = राज्ञः (sire), चन्द्र-
गुप्तः = चौर्य (Chandragupta), मलयकेतवे = पूर्वतकुपुत्राय (for Malayaketu),
पित्र्यमेव विषयम् = पितृराजसाम्राज्यम् (paternal kingdom), प्रयच्छति = ददाति
(grants), अत = अस्मादेतो. (so), भवन्तः (they), सहानेन = मलयकेतुना सह
(with him), गच्छन्तु = यातु (go), च = पुनः (and), अस्मिन्निष्ठिते (when
established), पुनः (again), आगन्तव्यम् (will come)]

पुरुषः—आर्य = मानव भवन् (Noble sir), यदाज्ञापयति = यदादिसति (as
commands), [इति परिक्रामति (walks round)]

चाणक्यः—भद्र = कृपयन्ति (Good man), विष्ट, विष्ट = स्थीयताम्, स्थीयताम्
(stay, stay), अपरञ्च = अन्यदपि (another), वक्तव्यम् (matter), दुर्गपालः
(the master of the fort), अनारक्षसेन (the reconciliation of
minister Rakshasa), सुप्रीतः = अतिप्रसन्नः (well pleased), चन्द्रगुप्तः = चौर्यः
(Chandragupta), समाज्ञापयति = आदिसति (orders), य एषः (here is),
श्रेष्ठो चन्दनदासः (merchant Chandandasa), सः = अस्मै (he), प्रथिव्याम् =
वरिष्याम् (on the earth), सर्वनगरश्रेष्ठिपदम् (the post of the principal
merchant in all cities), आरोप्यताम् = स्थप्यताम् (should be appointed).
अपि च = अन्यदपि (other too), विनावाहनहस्तिभ्यः (except the horses and
elephants), सर्वमोक्ष, क्रियताम् = विधायताम् (all should be set free), अथवा
= वा (or rather), अनारक्षसे (minister Rakshasa) नेतरि (as the
adviser), दूरतान् = ममयति (now), अस्माकम् (us), किम् प्रयोजनम्
(what use of).

हिन्दी—

(चाणक्य के मुँह को देखता है)

चाणक्य—अनात्य राजस का यह प्रश्न आदेश है—हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा ।
(पुरुष के प्रति) भद्र, हमारी ओर से भद्रमत प्रकृति अधिकारियों से कहो कि “अनात्य राजस के
अनुरोध पर महाराज चन्द्रगुप्त ने मलयकेतु को उसका पैतृक राज्य पुनः दे दिया । अतः तुम सब
इसके साथ ही जाओ । इसके स्थिर होने पर पुनः लौट आना ।”

विना वाहनहस्तिभ्यो मुच्यतां सर्वबन्धनम् ।

पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं वध्यते शिखा ॥ १७ ॥

पुनः — अज्जो आणवेदिं ति । (निष्क्रान्तः ।) (यदार्थं आज्ञापयति ।)

पुरुष—अर्थ की जैसी आज्ञा । (ऐसा कहकर घूमता है)

चाणक्य—मद्र, रको, रको । और, दूसरा दुर्गपाल से आकर कहो कि अमात्य राजस को उपरुम्भि से अत्यन्त मनुष्ट महाराज चन्द्रगुप्त ने यह आज्ञा दी है कि यह सेठ चन्दनदास विश्व के सभी व्यापारिक सभ के प्रधान पद पर नियुक्त किया गया है । और भी—घोड़ और हाथियों को छोड़कर सभी बन्धनमुक्त कर दिये जाय । अथवा—अमात्य राजस के मन्त्री हा जावे पर अब हम लोगों का प्रयोजन ही क्या रह गया ?

English—(Stares at Chanakya's face ,

Chanakya—Minister Rakshasa's first request has to be granted. (to the attendant) Goodman ' tell Bhadrabhatta and others in my words that Sire Chandragupta requested by minister Rakshasa, grants Malayaketu his paternal kingdom. So they should go with him and will come back when he is established

Man—As Noble sir commands (walks round)

Chanakya—Goodman, stay here stay, something is another matter. The superintendent of the forts has to be told this—"Sire Chandragupta, highly pleased at the reconciliation of Minister Rakshasa, commands that this merchant should be appointed to the post of the head merchant in all towns on the earth Besides it except all the horses and elephants should be set free Or Minister Rakshasa being now secured as a guide, what is the use of us

विमला

अन्वयः—वाहनहस्तिभ्यः, विना, सर्वबन्धनम्, मुच्यताम्, पूर्णप्रतिज्ञेन, मया, केवलम्, शिखा, वध्यते ॥ १७ ॥

व्याख्या—वाहनहस्तिभ्यः=अश्वगजेभ्यः (Horses and elephants), विना (except), सर्वबन्धनम्=सर्वपापं सयमनम् (every tie), मुच्यताम्=परित्यज्यताम् (be unloosed), पूर्णप्रतिज्ञेन=निस्तीर्णप्रणेन (having fulfilled the vow), मया=चाणक्येन (by me), केवलम्=एकमात्रम् (only), शिखा=चूडा (tuft of hair), वध्यते=सम्यग्यते (be tied) ॥ १७ ॥

पुनः — अर्थ = मान्यो भवान् (Noble sir), यदाज्ञापयति=यदादिशति (as commands), [इति निष्क्रान्त (Exit)]

चाणक्यः—भो राजन् चन्द्रगुप्त, भो अमात्य राक्षस, उच्यता किं वां भूयः प्रियनुपकरणि ।

राजा—किमतः परमपि प्रियमस्ति ।

राक्षसेन समं मैत्री राज्ये आरोपिता वयम् ।

नन्दाधोन्मूलिताः सर्वे किं कर्तव्यमतः प्रियम् ॥ १८ ॥

चाणक्यः—भो राजन् = भो नृप (O king), चन्द्रगुप्त = मौर्वी (Chandragupta), भो अमात्य राक्षस (O minister Rakshasa), उच्यताम् = कम्पताम् (tell me), वां (both of you), नृप = पुनः (again), किं प्रिय करोमि = किमिष्टं सम्पादयामि (what further favour I should confer).

राजा—अतः परमपि = इतोऽधिकमपि (Greater than this). किम् प्रियमस्ति (is there a pleasure).

अन्वयः—राक्षसेन, समम्, मैत्री, वयम्, च, राज्ये, आरोपिता, सर्वे, नन्दाः, च, उन्मूलिता, अतः, किम्, प्रियम्, कर्तव्यम् ॥ १८ ॥

व्याख्या—राक्षसेन = भक्तिराक्षसेन (With Rakshasa), समम् = साथम् (with), मैत्री = मुहुद्वयम् (friendship), वयम् (we), च = पुनः (and), राज्ये = अविपत्ते (on the throne), आरोपिताः = स्थिरीकृताः (have been placed), सर्वे नन्दाः = नन्दवंशका राजानः (the Nandas), च = पुनः (and), उन्मूलिताः = उन्मूलिताः (have been uprooted), अतः परम् = परतदुपरम् (beyond this), किं प्रियम् कर्तव्यम् = विधेयम् (what pleasure remains to be done ?).

हिन्दी—राजा और मोरे को छोड़कर सबों के कम्पन खोल दिये जायें । पूर्वादिश नेरे द्वारा मात्र नेरी निष्ठा आज बाँधी जा रही है ॥ १७ ॥

पुरुष—बैसी कार्य को काटा (ऐसा कहकर निकल गया)

चाणक्य—भो राजन् चन्द्रगुप्त, भो अमात्य राक्षस, मानवोग्यो का अन्य प्रिय क्या उपकार करने कहिये ।

राजा—क्या इन्हे नी कुछ अधिक प्रिय है ।

राक्षस के साथ मित्रता हो गयी, मुझे पुनः राज्य पर अधिकार कर दिया गया । सबों नन्दों को उन्मूलित कर दिया गया, इन्हे अधिक नेरे छिद्र बनामिष्ठ और क्या साध्य हो सकता है ॥ १८ ॥

English—Let every tie be loosened except that of horses and elephants. By me alone with the vow fulfilled the task is being tied. 17.

Man—As Noble sir Commands. (Exit)

Chanakya—O king Chandragupta, O Minister Rakshasa, tell me what more pleasure shall I bring unto you.

The king—Is there a pleasure greater than this ? All the Nandas were uprooted, I have been placed on the throne, friendship has been secured with Rakshasa. What thing more to be done beyond this remains ?

राक्षस — तथापीदमस्तु भरतवाक्यम् ।

वाराहीमात्मयोनेस्तनुमवनविधावास्थितस्यानुरूपं

यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिथिये भूतधात्री ।

म्लेच्छैरुद्विज्यमाना भुजयुगमधुना सञ्चिता राजमूर्तेः

स धीमद्वन्धुमृत्यश्चिरमवतु मर्द्दा पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः ॥ १९ ॥

(इति निष्क्रान्ता सर्वे ।)

(इति सप्तमोऽङ्कः ।)

इति विशाखदत्तविरचित मुद्राराक्षस नाटक समाप्तम् ।

टिप्पणी—श्लोक संख्या १७ का छन्द अनुष्टुप् है तथा इसमें पूर्वकथित शीव का निर्बहण है । १८ वें श्लोक में 'सम' नामक अलङ्कार तथा अनुष्टुप् छन्द है ।

विमला

राक्षस — तथापि (Still), इदमस्तु = एतद् भवतु (let there be this), भरत-
वाक्यम् (words of Bharata)

अन्वयः—प्राग्, प्रलयपरिगता, भूतधात्री, अवनविधी, अनुरूपम् वाराहीम्,
तनुम्, आस्थितस्य, यस्य, आत्मयाने, दन्तकोटिम्, शिथिये, अधुना, म्लेच्छैः, उद्-
विज्यमाना, राजमूर्तेः, भुजयुगम्, सञ्चिता, स, धीमद्वन्धुमृत्य, पार्थिव, चन्द्रगुप्त,
चिरम् महीम्, अवतु ॥ १९ ॥

व्याख्या—प्राग्=कल्पारम्भे (Before), प्रलयपरिगता=कल्पवृक्षपरिगता
(amidst Universal destruction) भूतधात्री=पृथ्वी (the earth), अवन-
विधी=जगद्रक्षणविधाने (to grant protection), अनुरूपम्=योग्याम् (suit-
able), वाराहीम्=शौकरीम् तनुम्=शरीरम् (the form of the Boar), आस्थि-
तस्य=आधितस्य (had assumed), यस्य (whose), आत्मयाने=वाराहरूपिण
ध्रीविष्णो (self exsistant God), दन्तकोटिम्=दन्ताप्रादपयम् (tusk),
शिथिये=आधिता (cling), अधुना=इदानीम् (now), म्लेच्छैः=यवने (by
the Mlechhas), उद्विज्यमाना=सपीड्यमाना (troubled), राजमूर्तेः=नृप
कृते (the form of the king), भुजयुगम्=बाहुयुगलम् (two arms) सञ्चिता=
समवलम्बिता (clung to), स=असौ (he), धीमद्वन्धुमृत्य=उपसीधुक्तानुचर
(with kins and servants), पार्थिव=नृप (the king), चन्द्रगुप्त=मौर्य
(Chandragupta), चिरम्=बहुकालम् (long time), महीम्=पृथिवीम् (the
earth), अवतु=रक्षतु (may guard) ॥ १९ ॥

[इति=इत्थम् प्रस्तुतविषय समाप्त्य (here), सर्वे=नद्या (all), निष्क्रान्ताः=
रक्षणात्तो बहिर्गता (exeunt omnes)]

[इति सप्तमोऽङ्कः End of act VII)]

इति विशाखदत्तविरचितम् (Composed by Vishakhadatta), मुद्राराक्षसम्
(Mudra Rakshasam), नाटकम्=अभिनयम् (drama), समाप्तम् (the end).

हिन्दी—राक्षस—उद्यापि वह नरवान्त्य हो ।

मन्त्र बन्धुओं और मृत्यों से पुत्र महाराज चन्द्रगुप्त विरकाल तक पृथ्वी का शासन करें । पहले प्रलय से परिन्त्यात पृथ्वी ने रक्षा करने में समर्थ शूद्र के शरीर को धारण किए हुए, दिन स्वयम्भू के दाँत की नोक पर आश्रय प्रदान किया था, सम्प्रति भेष्टों से पीड़ित बसुन्धरा राजा चन्द्रगुप्त के शरीर को धारण करने वाले मगवान् विष्णु की दोनों भुजाओं का आश्रय दिया है । इस श्लोक में अतिदोषी मल्लहार तथा लचरा हुए हैं ॥ १९ ॥

(इस प्रकार सभी निम्न जाते हैं)

महाकवि विशाखदत्त विरचित मुद्राराक्षस का सातवाँ अङ्क समाप्त

English—*Rakshasa*—Still let there be this words of Bharata
(the actor's benedictory speech)

May He, the prince Chandragupta long guard this earth with
kins and servants in prosperity—he who is a kingly manifestation
of that self existent God to whose task, when he had assumed
the form of the Boar fitted to grant protection the earth, clung,
amidst universal destruction, and He whose two arms in the form
of the king, she troubled by the Mlechhas, has now clung to. 19.

(Exeunt all)

(Seventh act)

Here ends the drama Mudra Rakshasa composed by Shri
Vishakhadatta. Here ends the commentary 'Vimala' by Shri Jagdish
Chandra Mishra.

इति दैवज्ञानीकीर्तिनाथमिश्रामत्र श्रीमद्गद्दीपचन्द्रमिश्रमैयिकेन विरचिताया
विमलाख्य सरकृत हिन्दी-अङ्करेखाभ्याख्यानं सप्तमोऽङ्कः समाप्तः ।

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

विशेष-विवरण

[नोट्स : NOTES]

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

१. नान्दी

आशीर्षचनसयुक्ता स्तुतिर्दस्मात् प्रयुज्यते ।

वेवद्वित्रयपादीनां तस्मान्नान्दीति यजिता ॥ (संहित्यदर्पण)

अर्थात् देवता, ब्राह्मण, राजा आदि की नान्दी (स्तुति यज्ञ) एक देसी है जिसमें रक्त सनाबिकों की शुभाशुभा का अभिप्राय गमित रहा करता है। नत्पदार्पण में लिखा है :—

देव-भूप सभा नर्तमुक्थानां मङ्गलाभिधा ।

नित्यारूपमुत्तेनान्दी-रदैः पद्भिरथाष्टभिः ॥

नान्दी और रङ्गविजयान्ति का बहुत सम्बन्ध है जैसा कि भावप्रकाशन की इन पंक्तियों में संकेतित है :—

नान्दी वृषो वृषाङ्गस्य जगदादौ जगत्पतेः ।

मुख्यतः कल्पनायोगाजगाम किल रङ्गताम् ॥

तस्य तद्रूपसम्बन्धात् पूजानान्दीति कथ्यते ।

देवतादिनमस्कार मङ्गलारम्भपारकः ।

या क्रिया नन्दयते नात्यारम्भे नान्दीति स स्मृता ॥ (भावप्रकाशन अधि७०)

संस्कृत ना-को का यह एक आवश्यक अङ्ग है। इसके लिए यह अंग्रेजित है कि इसके द्वारा गल, दम, चक्र, चक्रवाक, कौरव आदि मङ्गलास्पद वस्तुओं की अभिव्यञ्जना हो जान। यह अष्टरदा भी होता है और श्राद्ध पदा भी :—

यत्राष्टभिर्द्वादशानिरष्टादशभिरेव च ।

द्वादशाम्यापदैर्वापि सा नान्दी परिकीर्तिता ॥

यहाँ 'दर' शब्द 'पाद' परक है। इसलिये बहुधा यह 'नान्दी' श्लोकरत्न हो होता है :—

श्लोकरादपद् केचित् सुसिहन्तमयापरे ।

परैश्चान्तरवाक्यैस्वरूपपदमूचिरे ॥

नान्दी शब्द की व्युत्पत्ति इसकार की गयी है :—

“मन्दपति देवादीन् स्तुत्या, आनन्दपति च सम्भान् स्तुतदेवताप्रसादादिति नान्दी”

यह नान्दी दो प्रकार की होती है (१) नन्धस्त्रिभ और (२) नाट्यकार द्वारा प्रयुक्त। इनमें नन्धस्त्रिभ नान्दी ‘पूर्वरङ्ग’ कहलाती है और नाट्यकार द्वारा प्रयुक्त नान्दी ‘रङ्गनान्दी’ कहलाती है। नाट्यशास्त्र को ‘रङ्ग’ कहते हैं, क्योंकि इसके द्वारा सनाबिकों का मनोरञ्जन होता है। किसी नाट्य के अभिनेत्र प्रारम्भ होने से पूर्व जो सगीत का विधान है, उसे ही पूर्वरंग कहते हैं। महाराज विश्वनाथ ने लिखा है :—

यद्यप्यवस्तुनः पूर्वं रङ्गविशेषोपशान्तये ।

क्रुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स दध्यते ॥

जिस नाटक में 'नान्दी' के बाद सूत्रधार आधार है वहाँ 'पत्रावली' नामक नान्दी होती है :—

यस्यां धीजस्य विन्यासो ह्यभिधेयस्य धस्तुनः ।

रलेपेण वा समासोक्त्या नान्दी पत्रावलीतु सा ॥ (नाट्यदर्पण)

नान्दी के सम्बन्ध में नाट्यदर्पणकार का यह कथन है :—

“नान्दी च पूर्वैरज्ञाह्वानां द्वादशममङ्गे सकलपूर्वैरज्ञाह्वोपलक्षिका” ।

“.....नान्दी पाठकाश्च सूत्रधार-स्थापकपारिपार्ष्विका इति ॥”

(नाट्यदर्पण चतुर्थ विदेक)

अर्थात् जब कि सूत्रधार पूर्वैरज्ञ विधान के बाद रङ्गमञ्च छोड़ देता है, तब सूत्रधार का ही समकक्ष एक अन्यनट जिसे 'स्थापक' कहा जाता है रङ्गमञ्च पर आकर नाटक प्रयोग की स्थापना करता है। स्थापक के द्वारा नाटक प्रयोग की यह स्थापना अथवा उपक्रमणिका ही 'स्थापना' कही जाती है। इसका काम सामाजिकों के प्रति नाटकीय वस्तु अथवा नाटक के बीज अथवा मूल या पात्र की सूचना रहती है। तात्पर्य यह कि मुख्यकथा को प्रारम्भ करने के पहले गिन कृत्यों का विधान किया जाता है, उन्हें पूर्वैरज्ञ कहते हैं। पूर्वैरज्ञ में वे सभी कृत्य सम्मिलित हैं, जिन्हें अभिनय करने वाले नाटक आरम्भ करने के पहले रङ्गशाला (stage) के विघ्नों को दूर करने के लिए करते हैं। अतः मुनि के ही अनुसार सबसे पहले नगाडा बजा कर इस बात की सूचना दी जाती है कि अब नाटक प्रारम्भ होने वाला है। इसके बाद गाने वाले और बाना बजाने वाले रङ्गमञ्च पर आकर अपने वाद्ययन्त्र को ठीक करते हैं तथा उनके सुर आदि को मिलाकर उन्हें बजाते हैं। तब सूत्रधार रङ्गमञ्च पर पुष्प विरोधता हुमा आता है। उसके साथ एक सेवक पानी का पात्र और दूसरा इन्द्र की ध्वजालिपि रहता है। सूत्रधार पहले उस पात्र से पानी लेकर अपने को पवित्र करता है। फिर ध्वजा को हाथ में लेकर रङ्गमञ्च पर दृष्टता है तथा स्तुति पाठ करता है। इसी स्तुति पाठको मुख्यतया 'नान्दी' कहते हैं। इसमें देवता, मातृगण तथा राजा की जाशीर्वाद्भ्युक्त स्तुति की जाती है।

२. नृत्तम्

‘नृत्त ताललयाध्वयम्’ (दशरूपक १९)

नृत्त ताल तथा लय पर अभित होना है। नृत्त में केवल अङ्क का विक्षेप पाया जाता है, अभिनय का यहाँ अभाव रहता है। नृत्त केवल ताल के आधार पर मात्रा का अनुसरण करता है, तथा लय के आधार पर गति का आश्रय लेता है। इसमें किसी भी प्रकार के अभिनय की सथा नहीं होती, कोरा गानविशेष रहता है, जो ताल तथा लय के द्वारा नियमित होता है। इस नाटक के प्रथम अङ्क के द्वितीय श्लोक में भगवान् शंकर के इसी नृत्त की ओर संकेत है। पाठ भेद के कारण किसी किसी संस्करण में 'नृत्त' के स्थान पर 'नृत्य' का प्रयोग है।

३. सूत्रधार

नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते ।

सूर्य धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो सुपैः ॥

अपरश्च-नाटकीयकथासूत्रं प्रथमं येन सूत्र्यते ।

रङ्गभूमिं समाक्रम्य सूत्रधारः स उच्यते ॥

एवञ्च-चतुरातोयनिष्पातोऽनेकमूपासमावृतः ।

नानानायनतत्त्वज्ञो नीतिशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥

वंशोपचारचतुरः पौरपगविचक्षणः ।

नानागतिप्रचारज्ञो रसनावविशारदः ॥

नाट्यप्रयोगनिपुणो नानाशिल्पकलाम्बितः ।

छन्दोविधानतत्त्वज्ञः सर्वशास्त्रविचक्षणः ॥

तत्तद्गीतानुगुणकलातालावधारणः ।

अवधार प्रयोक्तृ च योक्तव्यानुपदेशकः ।

एवं गुणगणोपेतः सूत्रधारोऽभिधीयते ॥ इति ।

('अभिज्ञान साकुन्तलम्' चौखम्बा प्रकाशित १० ५)

श्रुत्यपि :- सूत्रं नाटकीयकथासूचकवाक्यं चारयतीति समुपस्थापयति यः सः सूत्रधारः, प्रधाननटः, इति ।

डॉ० रिज्जने भारतोऽ नामक के सूत्रधार के सम्बन्ध में करना अत्यन्त स्पष्ट किया है । उनका कहना है कि पुरुषियों को नचते समय नचने वाला उनके डोरे (मूत्र) को पीठ से पकड़े रहता है । इन्डियन व्ह 'मूत्रधार' कहा जाता है । पीठे चलकर नाटक के प्रलोका को जो वही नाम दे दिया गया । करने इस नट को पृष्ठ में झुंके अन्तर्गत करते हुए जाने कहा है कि भारत में 'पुत्रधी' के नाचों का प्रचार बहुत पुराना है । 'नहामारत' तथा कथामरित्नागर में भी पुरुषियों का वही वर्ण मिलता है । पिट्टे के इस नट का सम्बन्ध एक दूसरे पाश्चात्य विद्वान् रिज्जने ने हा कर दिया है । 'मूत्रधार' शब्द को पिट्टे की बाली श्रुत्यपि के बारे में कहा जा सकता है कि 'मूत्रधार' नाटक की कथावस्तु, नाटक, रस आदि का सूत्र बर्णन करने में वर्णन करता है, इन्डियन 'मूत्रधार' कहा जाता है, डोरे पकड़ने के कारण नहीं । फारशासन ने करने 'नाट्यकालन' में इस शब्द की श्रुत्यपि करते हुए लिखा है :-

सूत्रयन् काम्यनिष्ठबस्तुनेतृकथारसान् ।

नाट्यीष्टोक्तं नान्यन्ते सूत्रधार इति स्मृतः ॥

४. नटी

नट कथवा = नटार की पत्नी को नटी कहते हैं । कथवा इसके अतिरिक्त नाट्यमण्डली की किसी प्रमुख कौशल को भी नटी कहते हैं । दुःप्रामास ने प्रयुक्त नटी मूत्रधार की पत्नी है ।

५. नट

रामायण में 'नट' शब्द के सम्बन्ध में लिखा है :-

'नटानर्त्तकसंघानां गायकानां च गायताम्' ।

नहामारत में 'नट' शब्द, आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है । वज्रनाम नामक देश का नच करने के लिए श्रीरूपा तथा नाटकों के कला नचने पर ध्यान करने की चर्चा भी नहामारत में है । बौद्ध तथा जैन ग्रंथों एवं बालसाधन के कामनूत्र में भी 'नट' शब्द की चर्चा मिलती है । इससे भी पूर्व पाल्मिनि के ग्रीष्मवासी में भी 'नट' शब्द का प्रयोग मिलता है :-

(१) पारामर्त्यशिल्पलिन्यां निबुनटसूत्रयोः । (भा३।११०)

(२) कर्मन्दकृशाभादिभिः । (भा३।१११)

इन दो सूत्रों में पाणिनि ने झिलालि और कृशारव के नटसूत्र का उल्लेख किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि 'नट' शब्द का प्रयोग भारत में बहुत प्राचीन काल से है। नाटक खेलने वालों को 'नट' कहा जाता है।

नट और स्थापक प्रायः समानार्थी शब्द हैं। स्थापक सूत्रधार को कहते हैं। अतः सूत्रधार भी नट कहलाता है। नाटक में एक और परम्परागत शब्द प्रयुक्त होता है 'पारिपार्थिक'। नट को 'पारिपार्थिक' का अनुचर भी कहते हैं। पारिपार्थिक 'नट' एक स्तर नीचे का सदस्य होता है। इस सम्बन्ध में साहित्यदर्पण में लिखा है —

“सूत्रधारसदृशत्वात् स्थापकोऽपि सूत्रधार उच्यते। तस्यानुचर पारिपार्थिकं तस्मात्किञ्चिदूच्यते नटः।”

६. नाटक

नाटक कथातन्त्रस्य स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम् ।
 विलासदर्पादिगुणवस्तुके नानाविभूतिभिः ॥
 सुखं तु वसमुद्भूति नानारस निरन्तरम् ।
 पञ्चादिकादपरास्तप्राज्ञा परिकीर्तिता ॥
 प्रवयातच्छो राजर्षिधीरोदात्त प्रतापवान् ।
 दिव्योऽथ दिव्या दिव्यो वा गुणबाष्पायको मतः ॥
 एक एव भवेद्भो शृंगारो वीर एव वा ।
 भङ्गमन्ये रसा सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः ॥
 चाचार पद्म वा मुक्या कार्यभ्यापृतपूरुषा ।
 गोपुच्छाग्रसमप्र तु बन्धन तस्य कीर्तितम् ॥

(साहित्यदर्पण, चौलन्ना प्रकाशन, पृ० ११२ १३)

नाटक दृश्यरूपक का प्रमुख एवं प्रथम भेद है। इसको शरीररचना किसी प्रसिद्ध वृत्त से की जाती है। नाटक के इस इतिवृत्तात्मक शरीर में पांच सन्धियाँ जुड़ा करती हैं। अपने चरित्तों के उदात्त गुणों, अभ्युदयों और उपनिषत्तों के कारण नाटक जीसमृद्ध हुआ करता है। मानव की रागात्मक प्रवृत्तियों से इसकी उत्पत्ति होती है। विभिन्न भावों रसों का इसमें अनुभव रहा करता है। यह कम से कम पाँच और अधिक से अधिक दस अङ्कों में विभाजित रहता है। इसका नायक स्थापिताग्र राजवशीय होता है। इसमें नायकोचित सभी गुणों का समावेश रहना चाहिये। यह नायक दिव्य, आदित्य और दिव्यादिव्य तीनोंमें से कोई एक महात्मा न्यक्तित्व का होना चाहिये। नाटक में वीर या शृंगार नामक किसी एक रस की प्रधानता आवश्यक है। इसका अन्त विरमयोत्पादक होना चाहिये। इसकी रचना गोपुच्छ के अग्रभाग के समान हो तो उत्तम है। इसके सम्बन्ध में मातृगुप्त की परिभाषा है —

प्रक्यातवस्तुविषय धीरोदात्तादिनायकम् ।
 राजर्षिविशधरित तथा दिव्याश्रयान्वितम् ॥
 शृंगारवीरान्यतरप्रधानरससंध्यम् ।
 प्रकृत्यधस्यासम्पन्नसन्ध्यन्तरविभूषितम् ॥

मुसदुःखोत्पत्तिवृत्तं चरितं तच्च भूमताम् ।
इतिवृत्तं कथोद्भूतं द्विद्विदुत्पाद्यवस्तु च ॥
नाटकं नाम तत्त्वैषं रूपकं नाट्यवेदिभिः ॥

अंग्रेजी में जिस अर्थ में ड्रामा (Drama) शब्द का प्रयोग होता है, उसी अर्थ में संस्कृत में 'रूपक' शब्द का प्रयोग होता है। वैसे तो ड्रामा शब्द का अर्थ 'नाटक' किया जाता है, किन्तु नाटक वैसा कि पहले कहा जा चुका है, रूपक का एक भेद नाम है। वह रूपकों के दस प्रकार में से एक प्रमुख प्रकार है।

'रूपक' को उत्पत्ति के विषय में पाश्चात्य नवतुसारी विद्वान् 'रूपक' का प्रादुर्भाव पहले ग्रीक (यूनान) से हुआ, ऐसा मानते हैं और इसकी प्रुष्टि भारतीय रूपकों (नाटकों) में प्रमुख 'यवनिका' शब्द से करते हैं। परन्तु उनका यह कथन प्रायोगिक नहीं है, क्योंकि 'यवनिका' शब्द ही अशुद्ध है। शुद्ध शब्द 'जवनिका' ('जैन्य' स्यात् जवनिका) या 'यवनिका' है। इन्हीं के अग्रगण्य 'यवनिका' शब्द में कहा जाना है।

संस्कृत नाटकों को एक और निजा विशेषता यह है कि व्यक्तित्व चरितचित्रों को अनेकानेक वैयक्तिक अन्तर्द्वन्द्व के दृष्टि से देखा चरितचित्र होता है जिसे हम सामान्य कहते हैं। संस्कृत नाटक के ये तीन प्रमुख तत्व दृश्यरूपककार की दृष्टि में माने गये हैं—वस्तु, नेता तथा रस। पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तु ने त्रागिडी (Tragedy) के इतिवृत्त, आचार, वर्णनद्वयी विचार, दृश्य तथा गाय वे छः अङ्ग माने हैं। संस्कृत आचार्यों ने नाटक के इन छः अङ्गों का अन्तर्भाव—कथा, संवाद और रङ्गनिर्देश में कर लिया है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारतीय सिद्धान्त के अनुसार नाटक पञ्चसन्निभुक्त, पौराणिक या ऐतिहासिक वस्तु, ५ से १० तक अङ्ग, शीतोदात्त नायक, शृंगार या वीररस, कैदाको, नारदी या सात्वतवृत्ति होना अनिवार्य हैं।

७. नेपथ्य

संस्कृत नाटकों में नेपथ्य का प्रयोग स्थानभेद से तीन अर्थों में होता है।

- (१) नट की वेशभूषा—(रानादिभ्यश्चो वेशो नट नेपथ्यमुच्यते)
- (२) जवनिका या पर्दा—'नेपथ्यं स्याज्जवनिका'।
- (३) रङ्गभूमि

८. प्रस्तावना

नटी विदूषको वापि पारिपार्ष्विकं पृथ वा
सूत्रधारोऽसहिताः संलापः यत्र कुर्वते ।
चित्रैर्वाङ्ग्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताच्चेपिभिर्मित्य',
आमुखं तच्च चित्रेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा ॥

(सङ्केतदर्पण ३।३१ ३२)

नाटकों की 'प्रस्तावना' वस्तुतः उनका वह अङ्ग है, जिसमें नटी अथवा विदूषक वा पारि-
पार्ष्विक सूत्रधार के साथ देना आलाप मन्त्रन किया करते हैं जिसमें प्रस्तुत अभिनय का आश्रय
करने वाले स्व-स्व विशेषक अभिप्राय के सूचक चित्र विचित्र वाक्यों का प्रयोग होता है। प्राक्-
वना को नाट्यज्ञानों ने भारतीयवृत्ति का अन्त माना है। भारतीयवृत्ति से तात्पर्य है वाङ्मयात्तर का।
प्रस्तावना में जो अभिनय समग्र है वह मुख्यतः से वाचिकअभिनय के रूप में हो। अतः प्रस्ता-
वना के सम्बन्ध में दृश्यरूपककार का मत है—

सूत्रधारो नटीभ्यते मार्गं वाऽथ विदूषकम् ॥
 स्वकार्यं प्रस्तुताचेपिचिन्मोक्ता यच्चदामुखम् ।
 प्रस्तावना वा तत्र स्युः कथोद्घातः प्रवृत्तकः ॥

प्रस्तावना उसे कहते हैं जहाँ सूत्रधार नटी, मार्ग या विदूषक के साथ बात करते हुए विचित्र उक्ति के द्वारा प्रस्तुत का आक्षेप कर अपने कार्य का वर्णन करे। इस प्रस्तावना को आमुख भी कहते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि नाटक प्रारम्भ होने के पहले सूत्रधार (manager of the stage) नटी (actress) विदूषक इत्यादि के बीच प्रस्तुत होनेवाले नाटक के बारे में वार्तालाप या बातचीत को 'प्रस्तावना' कहते हैं। इसमें विचित्र उक्तियों द्वारा वार्तालाप होता है और बड़े कौशल से नाटक का आरम्भ होता है। साहित्यदर्पण में प्रस्तावना के पाँच भेद बतलाये गये हैं। (१) उद्घातक, (२) कथोद्घात (३) प्रयोगातिशय (४) प्रवर्तक (५) अवगहित। मुद्राराक्षस में दर्शकों को खले जानेवाले नाटक की सूचना दी जाती है। इसे ही नाटक की भूमिका आमुख आदि कहते हैं।

६. स्वगतभाषण

आध्यात्म्यं स्वगतं मतम् । (दशरूपक १।१४)

कभी-कभी रगमच का पात्र अपने मन को गुप्त बातों को प्रकाश में लाने के लिए दूसरे पात्र को और से मुह फेर कर इस तरह बोल करता है, जिसको दर्शक तो सुन लेते हैं, पर रगमच के अन्य पात्र सुन नहीं पाते। यहो स्वगत है। 'स्वगत' पात्र की मानसिक भावनाओं का व्यक्तिकरण है। संस्कृत के प्रायः सभी नाटकों में 'आत्मगतम्' या 'स्वगतम्' यह संकेत दिया गया होता है। इस स्वगत भाषण के अनेकों प्रयोजन हैं। नाटक के चरितों के हृदय की जो बात है, उसे नाटककार स्वगतम्, या आत्मगतम् से प्रकट करता है। इसीलिए कहा गया है—स्वगतम् स्वहृदि स्थितम्।' तात्पर्य, यह कि जो कथोपकथन सर्वमान्य नहीं होता वही स्वगत भाषण कहलाता है।

१०. अङ्क

नाटक की समस्त घटनाओं के विकास की कई हिस्सों में बाँट देने पर प्रत्येक भाग को अङ्क कहते हैं। प्रत्येक अङ्क में नायक आदि के विशेष चरित्र का प्रदर्शन रहता है। अङ्क में विशेष अवर्ण्य बातों के समावेश से अङ्क दोष आ जाता है। किसी भी रूपक का अङ्कप्रधान अङ्क माना जाता है। प्रायः प्रत्येक अङ्क में एक ही रस की प्रधानता रहती है।

एकाहाचरितैकार्थमित्यभासच्छनायकम्

पात्रैस्त्रिचतुरैरङ्गं तेषामन्तेऽस्य निर्गमः । (दश० १।३६)

तात्पर्य यह कि एक अङ्क में वस्तु की योजना इस ढङ्ग की हो कि वह केवल एक ही दिन की घटना से तथा एक ही प्रयोजन या एक ही व्यर्थ से सम्बद्ध हो। अङ्क के अन्त में भवस्थ सारे पात्रों का निर्गमन करा लिया जाता है। मूलतः अभिनय की दृष्टि से अभिनय का आन्तरिक विभाजन ही अङ्क है।

यदा तु सरसं वस्तु मूलादेव प्रवर्तते,

आदादेव तदाङ्कः स्वाद्यमुखाचेपसंश्रयः ।

प्रत्येक नृचरितो विन्दुम्यासिपुरस्कृतः

अङ्को नानाप्रकारार्थं संविधानरसाश्रयः ॥ (दृष्ट० ३।२९ ३०)

सस्तन नाटकों में प्रस्तावना के बाद ही सीधे अङ्क का प्रारम्भ हो जाता है। सस्तन नाटकों का अन्तर्विभाग दृश्यों में न होकर 'अङ्कों' में ही हुआ करता है। यदि एक एक अवस्था के लिए एक-एक अङ्क मान लिया जाय तो एक नाटक में कम-से-कम ५ अङ्क होना चाहिये। किन्तु, किसी एक अवस्था में उत्कृष्ट और उपसंहार का भेद कर लेने पर हमकी अधिकतम संख्या १० तक होनी चाहिये।

११. अङ्कान्तर

जब किसी बाद वाले अङ्क को घटनाओं की सूचना पूर्व अङ्क के अन्त में दी जाती है तब उस भाग को 'अङ्कान्तर' कहते हैं। उनमें पात्रों को बिना बदले ही पूर्व अङ्क की कथा आगे चलाई जाती है। पात्र वे ही रहते हैं। पहले अङ्क के पात्र बाहर जाकर फिर लौट आते हैं बाद के अङ्क की कथा का विस्तार करते हैं।

१२. आकाशोक्ति

आकाशोक्ति भी नाटकीय वृत्त का एक प्रकार है। इसका अर्थ है :—

'आकाशोक्तिः स्वयं प्रथम प्रत्युत्तरमपात्रकम् ।'

नाटक में : आकाशे) यह एक प्रकार का संकेत है। इस संकेत के द्वारा यह सूचित होता है कोई पात्र रंगमंच पर अकेले आकाश की ओर मुंह कर स्वयं प्रत्युत्तर की दृष्टि में बात करता दिखलाया जाता है। इसे आकाशमार्फत भी कहते हैं।

१३. जनान्तिकम्

'त्रिपताकान्तरोज्ज्वेन जल्पो वस्तुजनान्तिकम्'

हाम की एक मुद्राविशेष को ही 'जनान्तिक' कहते हैं।

अर्धं सर्वाङ्गुलिर्विपताकान्तिकः करस्त्रिपताकः ।'

अर्थात् जनान्तिक अंगुलि को कुछ देखा रखने हुए-हाथ की अन्य अंगुलियों को ऊपरी ओर ठाढ़े रहना त्रिपताक है।

इस मुद्रा से रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों को अपनी बात उस स्थिति में सुनायी जाती है जब उपस्थित पात्रों में से कुछ को नहीं भी सुनाने की बात होती है।

१४. परिपद्

अभिनय देखने के लिए उपस्थित दर्शकों के समूह को 'परिपद्' 'सम्य' सामाजिक दृष्टिकोण आदि कहते हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में इसका व्यवहार किया गया है।

१५. गणु

वहाँ प्रस्तुत विषय में सम्बद्ध अर्थ से मित्र वस्तु एकदम उपस्थित हो जाय, वहाँ गणु होता है—

'गणुः प्रस्तुतसम्बन्धिभिचार्यसहसोदिनम् ।' (दृष्ट० २० ३।२८)

गणु वस्तुतः वह वाक्य है, वहाँ नाटककार भावी घटना का संकेत किसी मित्र विषय पर दे जाता है। पात्राध्य नाटकों को 'द्वैतैक आदर्शनी' से यह कुछकुछ भिन्नता-सुलभ है। मुद्रा-राश्रस में इसका दो बार प्रयोग हुआ है।

१६. प्रवेशक

प्रवेशक भी विष्कम्भक की तरह अतीव और भावी कथाओं का सूचक है। इसमें प्रयुक्त उक्ति उदात्त नहीं होता। इसमें प्राकृत भाषा का प्रयोग होता है तथा यह नीच पात्रों के लिए ही प्रयुक्त होता है। प्रवेशक की योजना सदा दो अंकों के बीच की जाती है तथा यह भी शेष अंशों का सूचक होता है।

तद्देवानुवात्तोक्तवा नीचपात्रप्रयोजितः।

प्रवेशोऽद्भुतस्यस्यान्तः शेषार्थसोपसूचकः ॥ (दश० १।६०)

१७. भरतवाक्य

भारतीय नाट्यशास्त्र के आदि गुरु भरतमुनि के नाम पर प्राचीनकाल से यह नियम चला आ रहा है कि नाटक के अन्त में भरत वाक्य का होना स्वाभाविक ही है। भरतवाक्य में नाटक-कार तत्कालीन राजा, समाज, देश इत्यादि की मंगल-शामना प्रकट करता है। इसमें आशीर्वाद या ईश्वर की प्रार्थना होती है। इसी भरतवाक्य का प्रशस्ति भी कहते हैं जो पाँचवीं निर्वहण सन्धि का चौदहवाँ अङ्ग है। इसके विपरीत नान्दी को मुखसन्धि वा अङ्ग नहीं माना गया है।

मुद्राराक्षस में प्रयुक्त प्राकृत भाषा

संस्कृत नाटकों में प्राकृत भाषा का प्रयोग नाट्यशास्त्र की प्राचीन परम्परा से प्रसिद्ध है। 'मुद्राराक्षस' भी इस नियम का अपवाद नहीं है। इसमें महाराष्ट्री और शौरसेनी दो प्रकार के प्राकृत का व्यवहार हुआ है। उसमें महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग पद्यभाग में तथा शौरसेनी का प्रयोग गद्यभाग में हुआ है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को जिस प्रकार साधारणतः 'संस्कृत' कह दिया जाता है, उसी प्रकार मध्य भारतीय आर्य भाषा के लिए 'प्राकृत' शब्द का व्यवहार किया जाता है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृत' अर्थात् जनसाधारण से है; अतः प्राकृत का अर्थ हुआ जनसाधारण की भाषा। उत्तरकालीन प्राकृत के वैयाकरण 'पालि' से परिचित नहीं थे और अशोक के अभिलेखों तथा अन्य अभिलेखों की भाषा भी उनके सामने नहीं थी। अतः उन्होंने इस पर विचार ही नहीं किया। संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त तथा कुछ काव्यग्रन्थों एवं जैनो के धार्मिक ग्रन्थों में व्यवहृत प्राकृत पर ही इन वैयाकरणों ने विचार किया। अतः प्राकृत शब्द जैन भागमों की 'मागधी' अथवा 'अर्धमागधी' तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं की 'मागधी' 'शौरसेनी' तथा 'पैशाची' बोलियों के अर्थ में रूढ़ हो गया।

प्राकृत के वैयाकरणों में सर्वप्रथम आचार्य वररुचि का नाम आता है। वररुचि ने अपने 'प्राकृत प्रकाश' में प्राकृत के चार भेद किये हैं :—महाराष्ट्री, पेशाची, मागधी और शौरसेनी। जैन आचार्य हेमचन्द्र (१२ वीं शती) ने अर्धमागधी एवं शूलिका पैशाचिक पर भी व्याकरण लिखा है। संस्कृत के आदर्श पर चलकर कालांतर में यह प्राकृत भी साहित्यिक रचनाओं की भाषा रह गयी थी। इस रूप में, प्राकृतों का प्रयोग संस्कृत नाटककार षेरहवीं शताब्दी तक करते रहे।

महाराष्ट्री प्राकृत

साहित्यिक प्राकृत में महाराष्ट्री प्राकृत सर्वाधिक विद्यमान है। वररुचि ने इसे ही आदर्श प्राकृत माना है। मुद्राराक्षस में प्राकृत पद्यरचना सभी प्राकृत में है। महाराष्ट्री प्राकृत की

सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इनमें स्वरमध्यग स्पर्श व्यञ्जनों का लोप हो गया है। इन प्रकार स्वर मध्यग क्त् पृग् द्क् ण्यतया लुप्त हो गये हैं और स्क् फ् घ् ध् भ् के स्थान पर केवल प्राण ध्वनि ही बच रहो है। अतः प्राकृत पाठ्य, प्रामुख्य का 'पाठुइ' तथा कथयति का 'कदेइ' रूप महाराष्ट्री में मिलते हैं।

यह मध्य भारतीय-आर्य भाषा के द्वितीय पर्व के विकास की चरमावस्था है। शौरसेनी और महाराष्ट्री प्राकृत में प्रमुख भिन्नता इसी परिवर्तन में है। अन्वया महाराष्ट्री प्राकृत शौरसेनी से अधिक सान्न्व रखती है। कुछ लोगों की दृष्टि में महाराष्ट्री प्राकृत में आधुनिक मराठी का पूर्वरूप विद्यमान है। मसब है महाराष्ट्री में शौरसेनी की अवस्था परिवर्तन की गति अधिक तीव्र हो। इन सम्स्याओं का विवेचन कर भी मनमोहन घोष इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वाल्म्व में महाराष्ट्री प्राकृत शौरसेनी का विकसित रूप है। इन दोनों प्राकृतों में पहले स्थानगतभेद न होकर कालगत भेद था। इसके बाद महाराष्ट्री प्राकृत दक्षिण में पशुंची और काम्य भाषा बन गयो। इनको अन्य विशेषताएँ निम्नोक्त हैं :—

(१) इनमें वहाँ कहाँ उन्म व्यञ्जन ध्वनि के स्थान पर 'ह' हो गया है। यथा—पाषाण=पाहण, अनुदिवस=अनुदिअइन्। इस उदाहरण में 'व' का लोप इसलिये नहीं हुआ है कि 'अनु' एवं 'दिवस' शब्द अलग अलग हैं। अतः 'ह' यहाँ स्वर मध्यग नहीं हुआ।

(२) अपादान एकवचन में साधारणतया 'अहि' प्रत्यय लगता है, यथा—दूराय का दूरादि।

(३) अधिकरण एकवचन के रूप में 'मि' अथवा 'य' के योग से बनते हैं यथा—छोकरिमन् = छोअभि।

(४) कृषाया का रूप वैदिक भाषा के समान मिष्यत्र होता है। जैसे—कृणोति = कुणइ।

(५) 'आत्मन्' का प्रतिरूप, महाराष्ट्री में 'अप्' होता है

(६) क्रिया के कर्मवाच्य का 'य्' प्रत्यय 'इय्' में बदल जाता है। जैसे पृच्छयति का पुच्छिजर्, गम्यते का गमिअइ।

(७) पूर्वकालिक क्रिया का रूप उण् प्रत्यय के योग से बनता है जैसे—इत्ता का इपुच्छिअइ।

शौर सेनी

शौरसेनी प्राकृत मूलतः गुज्जरातप्रदेश, आधुनिक मधुरा की भाषा थी। यों दो मस्कृत नाटकों में कौपाय और विदूषक इन प्राकृत का प्रयोग करते हैं—मुद्राराक्षस में इसका कम प्रयोग हुआ है। मध्यदेश की भाषा होने के कारण यह संस्कृत के बहुत समीप है। इस पर संस्कृत का निरन्तर प्रभाव पड़ता रहा है। इसकी निम्नी विशेषताएँ अवशिष्ट हैं :—

(१) स्वरमध्य 'इ य' (मूळ तथा 'त य' के परिवर्तित रूप दोनों प्रकार के) अवशिष्ट हैं। यथा—आगतः = आवदो, कथयत = कथयव

(२) 'य' का 'यत्त' जैसे छुडि = जुभिड, इय = इयत्तु।

(३) सयुक्त व्यञ्जनों में से एक का निरोमाव कर पूर्ववर्त्य-स्वर को दीर्घ करने की प्रवृत्ति शौरसेनी में अधिक नही मिलती।

(४) विधि प्रकार (optative), के रूप संस्कृत के समान बनते हैं, महाराष्ट्री एवं अर्द्ध-नामधों के समान इनमें 'यज्' का रूप नहीं मिलता। यथा—वर्तेय = वदे।

(५) 'य' प्रत्यय का द्वितिरूप शौरसेनी में—'इय्' हो जाता है। यथा—पृच्छयति—पुच्छी-अदि, गम्यति—गमीअदि।

वररुचि ने अपने प्राकृत न्याकरण शीरसेनी के प्रकरण में ही इसकी विशेषताएँ बता देने के बाद अन्त में एक सूत्र लिखा है—‘शेष महाराष्ट्रीवत्’ अर्थात् बाकी महाराष्ट्री के समान समझना चाहिए। इससे यह अनुमान होता है कि पहले अध्याय में उन्होंने जिस प्राकृत को चर्चा की है तथा उसका नामोल्लेख नहीं किया है, वह महाराष्ट्री है। भागधी मगध और बंगाल की भाषाओं का प्राचीन रूप है। पेशाचो कहीं की भाषा थी, इस बात में नाना प्रकार के भटकल लगाये गये हैं। प्राचीन ग्रन्थों में भी कभी यह दक्षिस्तान (काश्मीर) की, कभी विष्णुवाचल के पहाड़ियों की, कभी सुदूर दक्षिण की भाषा मानी गयी है। आज पता है यह उस समय के आर्यतर जातियों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। वे उसका शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते होंगे और अपने भाराम्बास के अनुकूल विकृत करके बोलते होंगे। यही कारण है कि संस्कृत नाटकों में विदूषक, निम्न पात्र, या स्त्रियों के लिये नाटककारों ने प्राकृत का प्रयोग किया है।

अर्थात्क शीरसेनी का प्रश्न है, यह निश्चित है कि यह पश्चिमी हिन्दी का पूर्वरूप है, किन्तु गलत है ‘महाराष्ट्री’ नामकरण एक भ्रम है क्योंकि आधुनिक मराठी भाषा या महाराष्ट्र प्रान्त से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस पर कई पण्डितों ने दोनों को एक ही सिद्ध करने का अथक प्रयास किया है। हॉर्नेल तो एकबार कहा था कि शीरसेनी और महाराष्ट्री दो वृषकु भाषाएँ नहीं हैं बल्कि एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं। इन्हीं शैलियों के कारण नाटकों में इन दोनों में से एक का प्रयोग एक में हुआ है और दूसरी का गण में। यह बात मानी हुई है कि गण की भाषा कुछ प्राचीनतादिष्ट और कोमलकृत होती है। गण में ठोक वैसी ही भाषा व्यवहृत नहीं भी होती है। अतः महाराष्ट्री और शीरसेनी नाम्ना अलग अलग भाषा रहती हुई भी स्वभावतः एक ही है। अतः वररुचि ने प्राकृत न्याकरण में मुख्यतः दो ही भाषाओं की चर्चा की है। जो कुछ भी हो मुद्राराक्षस में प्रयुक्त दोनों ही प्राकृत के परिनिष्ठित रूप में दृष्टि गोचर होते हैं।

मुद्राराक्षस में प्रयुक्त सुभाषितावली

(१) प्रथम अङ्क —

- १ अत्यादरं शङ्कनीयम् ।
- २ अनुनूयता चिरं विचित्रो राजप्रसादः ।
- ३ अनुचित उच्यते इदमस्य परिनिवादापि दुःखनुत्पादयति ।
- ४ कायस्य इति लब्धौ मात्रा ।
- ५ कीदृशस्त्वृग्नानग्निना सह विरोधः ।
- ६ भीयते बालिशस्यापि सत्वेवपि ता कृपि ।
न शाले स्तम्भवरिता वपुर्गुणमपेक्षते ॥
- ७ दिष्ट्या मित्रकार्येण मे विमोक्षो न पुन्यदोषेभ्यः ।
- ८ प्रज्ञाविक्रममच्छयं सनुदिता येन गुणा मृतये ।
ते श्रुत्या नृपत कलत्रमितरे सपञ्चु चापसु च ।
- ९ फलेन सदादितमस्तु विच्छिन्नम् ।
- १० नहि सर्वं सर्वं जानति ।
- ११ न युक्तं प्राकृतनपि रिपुमवज्ञातम् ।
- १२ क्षिरसि भयमतिदूरे लप्स्यतिकारः ।
- १३ धोत्रियावराणि प्रयत्नलिखितान्यपि नियतमस्कुट्यानि भवन्ति ।

(२) द्वितीय अङ्क —

- १ प्रकृत्या वा काशप्रभवकुतुम्भान्तश्चपला ।
पुराणीनां प्रज्ञा पुरुषगुणावज्ञानविमुक्ता ।
- २ पृथिव्या स्वानिमज्जना प्रमाणे परमे स्थितः ।
- ३ किं शपस्य महम्पया न वपुषि ह्मा न क्षिप्तयेव यत् ।
किंवा नास्ति परिधनो दिनपतेरास्ते न यश्चिरचलः ।
किंनवद्वीकृतमुत्पन्नं कृपणवच्छलाभ्यो ज्ञानो लज्जते ।
निष्पुंङ्ग प्रतिपन्नवस्तुषु सतानेव हि गोघ्नमतम् ।
- ४ त्वमपि स्वाधिकारमग्नौ कुह ।
- ५ नन्वपुच्छत मुहद्विदाहः ।
- ६ नग्नं रक्षति भक्तिम्यता ।
- ७ त्वदभिप्रायापरिज्ञानान्तरितोऽयमस्मदनुनयः ।
- ८ सौहादात् कृतकृत्यव नियतं लब्धान्तरा मेत्यति ।
- ९ भगवति कमलालयं शृङ्गमगुणजासि ।
- १० धमन्त्रौपधिकुशलं म्यालप्रादी प्रमत्ता मत्तमचक्षुःश्रोही लब्धाधिकारो
वितकाशी राजसर्वक इत्यते त्रयाऽप्यवरय विनाशमनुभवन्ति ।

(३) तृतीय अङ्क —

- १ राज्यं हि नाम राजधमनुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महद्वीतिस्थानम् ।
- २ परायत्तं प्रीते कथमिव रस वेत्ति पुरुषः ।

- ३ दुराराध्या हि राजलक्ष्मीरात्मवद्विरपि राजभिः ।
- ४ श्रीलङ्घप्रसरेष वेक्षवनिता दुःखोपचर्चा मृगम् ।
- ५ सेवां लाघवकारिणीं कृतधियाः स्थाने श्ववृत्तिं विदुः ।
- ६ निरीहाणामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः ।
- ७ न निष्प्रयोजनमधिकारवन्तः प्रभुमिराद्वयन्ते ।
- ८ दैवमविद्वासः प्रमाणयन्ति ।
- ९ विद्वान्सोऽप्यविकथना भवन्ति ।

(४) चतुर्थ अङ्कः—

- १ अवीभस्वदर्शनं कृत्वा प्रवेशय ।
- २ त्वद्वाग्म्वान्तरितानि सम्यगिति विभो तिष्ठन्ति साध्यानि नः ।
- ३ प्रायो भूयारब्धयजन्ति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः ।
- ४ येनात्मनः पशुमुञ्जित्वा परपशुः प्रमाणीक्रियते ।

(५) पञ्चम अङ्कः—

- १ मुण्डितमुण्डो नक्षत्राणि पृच्छसि ।
- २ तदाशा कुर्वाणो हितमहितमित्येतद्वपुना ।
- विचारातिक्रान्तः किमिति परतन्त्रो विमृशति ।
- ३ अधिकारपदं नाम निर्दोषस्यापि पुरुषस्य महदाशङ्कास्थानम् ।
- ४ गतिः सोऽध्यायाणां पतनमनुकुलं कलयति ।
- ५ स्वार्थं कस्मिन् समीहा पुनरधिकतरे स्वामिनार्यं करोति ।
- ६ अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः ।
- ७ वयमिदानीमनार्याः संवृताः ।

(६) षष्ठ अङ्कः—

- १ त्रिकं निमित्तं कुक्कुटनटकस्यैवान्यन्मुखेऽन्यन्तिर्वहणम् ।
- २ दैवेनोपहतस्य मुद्गिरघवा सर्वा विपर्यस्यति ।
- ३ भलक्षितनिपाताः पुरुषाणां समविषमदृशापरिणतयो भवन्ति ।
- ४ अभूमिः खल्वेषोऽविनयस्य ।
- ५ पृतत्तदपावृतमस्मच्छोकदीक्षां द्वारं दैवेन ।
- ६ कृतार्थोऽयं सोऽर्थस्तव सति यणिकवेऽपि वणिजः ।
- ७ सोऽयमभयः शोकवज्रपातो हृदयस्य ।

(७) सप्तम अङ्कः—

- १ स्वपतोऽपि ममेव यस्य तन्त्रे गुरवो जाग्रति कार्यं जागरुकाः ।
- २ सम्पन्नारते सर्वाक्षिपः ।
- ३ सर्वथा स्थाने यदास्वी प्राणवयः ।
- ४ कार्याणां गतयो विधेरपि न यान्त्रयाज्ञाकरत्वं चिरात् ।
- ५ किं वा भूयः प्रियमुपकरोमि ।
- ६ किं कर्त्तव्यमतः परम् ।

श्लोकानुक्रमणिका

अ	सर्ग	श्लोक	ए	सर्ग	श्लोक
अर्चोग भक्तिः	२	२२	एकगुणा निधि	४	२०
अतिशयगुह्येय	६	३	एतानि तानि तव	५	१६
अत्युच्छिन्ने मन्त्रिणि	४	१३	ते		
अन्तर्धारीरपरिशीपम्	६	१३	देवर्षाश्चपेत	१	१४
अपासुवृषानाम्	३	८	क		
अप्राज्ञेन च कातरेण	१	१५	कन्यातस्य वधाय	२	१६
अभ्योषीनाम्	३	२४	कन्या तीव्रविष	५	२१
अरवे' सार्द्धमज्ज	७	१५	कमलार्ण मनोहराणाम्	१	१२
अस्ताभिमुखे सूर्ये	४	१९	कर्णेन विराङ्गनैक	७	१५
अस्मान्निर्गुणेवार्थम्	२	२०	कान मन्दमित्र	२	९
आ			कार्योपचेपमादौ	४	३
आकर' सवशाछाणाम्	७	७	कि शेषस्य भस्मस्य	२	१८
आकाश वासपुष्प	३	२०	कि गच्छामि तपोवन	५	२४
आनयन्त्ये गुणेषु	५	९	किनौपधपयातिवै	६	१६
आनन्दहेतुमपि	२	६	कुले लज्जयाद्य	५	४
आलुहाकृत्कोप	३	२७	कृताया कौटिक्यो	३	११
आनांश्चयैव मम	३	३३	केनोत्तुङ्गसिखा	७	६
आहूताना प्रगमामि	५	२	कौटिक्य' कुटिलमति	१	७
आलिङ्गन्तु गृहीतचूष	६	२	कौटिक्यपीरगु	२	२
आविर्भूतानुरागा	४	२१	कौमुदी कुमुदावन्दे	४	९
आशैलेन्द्राव्	३	१९	कौलतरिचक्रधर्म	१	२०
आस्वादिनद्विरह	१	८	चताह्वाना तीक्ष्ण	६	१२
इ			कूरग्रह सङ्केत	१	६
इष्टानज' सपदि	२	८	ग		
इह विरचयन्	३	६	गम्भीरगर्जितत्वा	४	१७
उ			गुणवत्पुपायनिर्ले	१	५
उच्छिद्राध्रपकातरेव	६	५	गुह्यमि' कल्पनास्तेषै	७	८
उत्प्लासुङ्गकूलस्य	४	१६	गुह्यावदचक्रम्	३	२८
उत्सिक्त' कुमचिव	३	१२	गौडाना ओषधचूडी	५	२३
उपच्छता धुरम्	४	६	ज		
उपलक्ष्यकृन्मेवत्	३	१५	चन्द्रगुप्तस्य विज्ञेय	५	१७
उपरि धन धनरहितम्	१	२४	चागक्ष्येनाकृन्नेन	१	२१
उत्कृष्टवयन् मन	१	१०	चागक्ष्येतरचष्टितमक्षिहं	३	३१

सर्ग	श्लोक	सर्ग	श्लोक
चीयते बालिशस्यापि	१ ३	प्रणमत यमस्य	१ १७
न		प्र यमोन्मेषजिह्वा	३ २१
जगत किं न विजितम्	७ १३	प्रसृद्गन्धोत्तृणाम्	६ १४
जयति जलदनील	६ १	प्रस्यातभ्य पुरस्तात्	५ ११
जानन्ति तन्मययुक्तिम्	२ १	प्राकार परित	२ १३
त		प्रारभ्यते न खलु	२ १७
तीक्ष्णादुद्दिजते	३ ५	फ	
त्यजयप्रियवत्	१ १५	फलयोगमवाप्य	७ १०
स्वययुक्कृष्टवले	४ १५	ख	
द		बाल एव हि लोके	७ १२
हुण्कालेऽपि कलौ	७ ५	बुद्धिजलनिर्झरै	५ १
दूरे प्र याससि	४ ४	भ	
दृष्ट्वा मौर्धमिव	२ २१	भक्तयान-दकुलानुराग	५ ५
देवस्य येन पृथिवी	४ ११	भव तावत् सेभ्याम्	५ १२
देवे गते दिवम्	६ ७	भक्तस्तथा कलुषिता	३ ९
द्रव्य जिगीषुमधिगम्य	७ १३	भर्त्ता पुरुषस्य	७ २
ध		भूषणसुपभोगेन	३ २३
धर्म्या केचन	१ १	भृत्याखे परिभावधामनि	५ २२
धूर्तरन्वीयमाना	३ १०	भृत्या भद्रभटादय	७ ९
न		भेतभ्य नृपतेस्तत	३ १४
न तावद्विर्वीर्यं	२ १०	म	
नन्दकुलकालभुजगी	१ ९	मदभृत्यै किल सोऽपि	३ १३
नन्दस्नेहगुणा	७ १६	मम विमृशत	४ २
नन्दैवियुक्तमनपेक्षित	३ १८	मित्र ममेदमिति	५ ७
नाय निस्त्रिशकाल	६ २१	मित्राणि दातुम्यम्	५ २
निस्त्रिशोऽय सजल	६ १९	मुद्रा सस्य कराकुलि	५ १५
नृपोपकृष्ट सचिवात्	४ १४	मुहुर्लक्षयोद्भेदा	५ ३
नेव विस्मृतभक्तिना	२ ५	मुक्तावाऽऽमियाणि	७ ३
प		मौर्यस्तेजसि	२ २३
पतिं त्यक्त्वा देवम्	६ ६	मौर्योऽसौ स्वामिपुत्र	५ १९
परार्थानुष्ठाने	३ ४	य	
परिहृतमयश	२ १९	यत्रैष मेघनीला	२ १४
पादस्याविर्भावतीम्	१ २	यदि हृष्टत रचितभ्या	७ १
पादग्रे दशमवधाय	५ १३	यदि च दकटो	६ २०
पितृन् पुत्रा पुत्रान्	६ १०	येन स्वामिकुल	७ ४
पीत्वा निरवशेष	२ ११	ये याता किमपि	१ २६
पुरुषस्य जीवितभ्यम्	१ १८	यो नन्दमौर्यनृपयो	३ १७
पृथिव्या किं दम्भा	२ ७	यो नष्टानपि बीज	६ ८
पीरैरङ्गुलिभि	६ १०		

र	सर्ग	श्लोक	सिधेरिव सनुद्भूतम्	सर्ग	श्लोक
राजनियोगो	४	१	शोचन्तोऽवनतैः	६	१८
राजसेन सनं मैत्री	७	१२	स्यामीकृत्याननेन्दुन्	१	१२
राजां चूडानयीन्दु	४	१२	आवितोऽस्मि ध्रियम्	१	११
रूपादीन् विपयान्	३	१	श्रुतं सखे श्रवयविदारणं	६	१५
ल			घ	५	६
लब्धायां पुरि यावदिच्छ	३	२६	पङ्गुणसंयोगद्वयाः	६	४
लेलोऽयं न मन्येति	५	१८	न		
य			संरम्भोत्पन्दि	३	३०
वक्षस्ताडननिष्ठ	४	५	मखनद्रमयात्	४	८
बहति जलमियम्	१	४	सखोरकपस्य धात्रा	३	२२
बानां बाहुलताम्	२	१२	सदोषः सचिव	३	३२
बाराहीमारनयोनेः	७	१९	सद्यः क्रीडारसच्छेदं	४	१०
बिक्रान्तैर्नयशालिभिः	१	२३	सन्तापे तारेक्षानाम्	६	२
विगुणीकृतकार्मुकोऽपि	७	११	समुत्वाता नम्राः	१	१३
विना बाह्वदस्तिभ्यो	७	१७	स हि मृगमभिमुखो	३	२५
विपर्यस्तं सौवन	६	११	साध्ये निश्चितम्	५	१०
विददयोर्नृमनिह	२	३	सुलभेष्वयं कामेषु	१	२४
विष्णुगुह्यं मौषञ्च	५	२२	सुविधयैरङ्गैः	३	३
वृष्णीनामिह	२	४	सोऽसौधैः स्थण्डिलैः	४	७
श			स्तुवन्ति भ्रान्तास्याः	३	१६
शनैः श्यामीभूताः	३	७	स्मृतं स्यात् पुत्रदारस्य	५	१४
शाङ्गाकर्पावमुक्त	९	९	स्वच्छन्दनेकधरम्	१	२७
शासननईताम्	४	१८	स्वयनादित्य भुञ्जानाः	१	१६
शिखां मोकुन्	३	२९			

विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा मुद्राराक्षस पर पूछे गये

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन

Discuss the date of visakhadatta—

Compare and contrast the characters of Chanakya and Rakshasa as depicted in Mudrarakshasa—

Translate in to English or your own vernacular—

(a) समुल्लाता नन्दा ...सुहृदि च ॥ ११३

(b) आकाशं काशपुष्प .. क्लेशमैशी शरद्वः ॥ ११२०

Explain in sanskrit, with reference to the context—

(a) सुहृलंघयोद्भेनीतिर्नयविदः ॥ ५३

Translate into English or your own vernacular—

(a) किं होषस्य भरव्यथाएतद्धि गोत्रघ्नतम् ॥ ३१८

(b) भक्त्या नन्दकुलानुराग .. चेतश्चिर भ्राम्यति ॥ ५५

Explain in sanskrit, with reference to the context—

(a) अभ्योधीनाम् ते प्रमुखम् ॥ ३१४

Discuss the date of the author of the Mudrarakshasa,
Discribe and illustrate the historical back-ground of the
Mudrarakshasa.

Write a note on the originality of sanskrit drama and on their
success as stage-plays

Translate into English of the following—

प्रस्थातव्यं पुरस्तात्राजलोकः कुमारम् ॥ ५११

Explain fully with reference to the context—

इह विचरयन्ययं हि पराङ्मुखाः ॥ ३५

Discuss the merits and the defects of Mudrarakshasa as a piece
of dramatic art

Compare and contrast the characters of Rakshasa and Chanakya
as portrayed by Vishakhadatta—

Translate in to English of the following—

साध्ये निश्चितमन्वयेन .. स्वामिनो निग्रहः ॥ ५१०

Explain fully of the following—

सुविग्रन्धैरङ्गैः .. दुःखं वहति च ॥ ३३०

Discuss the date or discribe the historical back ground of
Mudrarakshasa.

Translate into English of the following—

गौडीनां लोभधूलीविजयमूला पतन्तु ॥ ५२३

Explain fully of the following—

कार्योपदेयमादौ क्लेशमस्मद्विधो वा ॥ ४३

Give a critical estimate of the Mudrarakshasa as a political
drama.

Translate into English, adding notes wherever necessary—

विद्वान्तैर्नयशालिभिः श्यवस्यत् वृषक ॥११२३
साय्य निश्चितमन्वयन स्वामिनो निग्रह ॥५१०

Discuss if Chanakya of the Mudrarakshasa is the same as the author of the arthashastra.

Translate into English or your own vernacular—

कणनव विद्यानैक तद्रूपमेवावधीत् ॥२११५
वाराहमातमयान पर्यवोऽवन्तिचर्मा ॥५१९

Explain in sanskrit of the following—

Give and criticise the character of Rakshasa, Supporting your remarks with quotations, or at least references to passages from the drama

What defects or excellences if any, do you see in the character of Malayaketu ?

Distinguish the fiction from the reality of the Mudrarakshasa giving shortly your authorities or reasons

Translate closely but idiomatically into English

(a) आविर्भूतानुराग स्वामिनं सेवमाना ॥४१२२
(b) मरुदा नन्दकुलानुराग चतश्चिर भ्रात्र्यनि ॥५५५
(c) भय नावसम्भूयनि पवनमनुकूल कलयति ॥५१२२
(d) उच्छिद्राश्रय रङ्गैरिव स्थीयत ॥ ६१५
(e) पनि त्यक्त्वा देव द्विपदिष ॥ ९१६

What figures of speech is involved in pada प्रायो मृयास्तपजन्ति मवमाना (११२२) ? Who were the Nandas ? Derive the sense of गोत्र (९१५) A Ms reads प्रयान प्रवानु (९१६), what reading is preferable and more likely to be the correct one and why ? What is the exact force of तावत् ?

Translate in to English—

अथै मार्दमवस्तुदत्तकविकै प्रोक्तुनवशान्निधान् ॥ ५१५

Translate the following passages—

(a) स्वयमाहूय सादन्ति दुःखिता ॥ १११६
(b) जानन्ति तत्रयुक्ति सर्पनराधिपावुपचरन्ति ॥ २११
(c) प्रत्यप्रोन्मेष प्रमाणा निद्राच्छुद्धा राकेकराव ॥ ३१२१
(d) कनोत्तङ्ग प्रतीर्षाणव ॥ ५१६

Do you suspect any mis-lection in the following ? If you do state why, suggesting the proper readings. If the sense is clear as the passages stand, give it

(a) कृतकलह कृत्वा स्वतन्त्रे स्वतन्त्रा वयम् । कुत ?
(b) स्तुवनयथान्तास्या तिरस्कारविषय ॥ ३११६
(c) आसुरप्यनवाप्तपौरुषफले रङ्गैरिव स्थीयत ॥ ६१५
(d) आविर्भासस्मि श्रिय संप्रति मा विष ॥ ६१५

Of the two readings in the following which is correct or better and why ?

(a) गुह्यस्योद्धारणेऽसौ कार्यमवश्यमवगच्छति... किञ्चित् कार्यमवश्यं पश्येत् ॥

Act 4. Before pada 11, statement of Bhagurayana.

(b) भीमकेन चप्रतीर्णोऽर्णवः ॥ ७६

Name the several stages in the developement of the plot of a play mentioned by writers on Dramaturgy and indicate in this sloka. Analyse the plot of the mud and point out these stages in it. Translate the sloka—

कार्योपक्षेपमादौ.....कलेशमस्मद्विधो वा ॥ ४३

What are the logical a lacies alluded to in the following and why ?

साध्वे निश्चितमन्वयेन .. स्यात्स्वामिनो निग्रहः ॥ ५१०

Translate and discuss the various readings—

(a) राज्ञा—(स्वगतम्) राज्यं हि नाम.....स्थानम् कुतः ?

परायोनुष्ठाने रहयति... वेति पुनः ॥ ३४

(b) फलयोगमवाप्यव्रतप्रतिष्ठा । ७१०

Explain the following with context—

(a) जायंति तन्तुक्षुत्ति.....वचचरन्ति ॥ ३१३

(b) अत्याहिमुहेअडेदुभिः ॥ ४११९

(c) विजिगीषुमात्मभ्याय एवायमर्थः ॥

(d) तथा नामान्तराक्षस.....कुसुमपुरमागतः ।

(e) स्मृतं स्यात् पुनराशानाम्यत्तत्स्वचनपायिषु ॥ ५१४

Explain all the terms in this verse which relate to dramaturgy and state the portions of the plot which those terms refer to.

कार्योपक्षेपमादौ.....कलेशमस्मद्विधो वा ॥ ४३

Annotate on and derive . स्तम्भकरिता, उपजाप, यमपद, दक्षिणद्वारिकम् नक्षत्रम्, जीवनाशम् नष्टः, अवश्यकारिन् ॥

What is the date of Chandragupta and how is it determined ?

Justify the remarks that the date of Chandragupta is an important link in the determination of Indian chronology, and mention the places and persons of Chandragupta's time, alluded to in the Mudrarakshasa.

Contrast the style and sentiment displayed in the writings of sudraka and Visakhadatta and state what do you know of the lives of each of these poets

Describe and compare the Civil policy of Chanakya and Rakshasa. What natural advantage had the former on his side ?

State what do you know of the History of Chandragupta from Greek, Roman, Buddhist or other Sources, and give a comparison of the historical account of that king with that given in that Mudrarakshasa—

Translate adding a few explanatory notes where necessary—

(a) पादस्याविर्भवन्तिवो दु खनृचम् ॥ ११३

(b) आनन्दहेतुनपि.....प्रलयं गतासि ॥ २१६

(c) अस्तितावच्छुक्.....रुद्रम् कुमुनपुरम् । Before shloka 13 act 2

(d) ततः मनन्तादुपहृदन्.....तपस्विनि पर्वतरवरे । Act 2

Explain the following—

(a) सासपगमलिह.....घम्ललाहो होदु—२११८

(b) एतो नु स अ ड दा मो पट्टिहारमूनि.....बयिदो । Act 2 before Sloka 21

(c) नभ्रवं कथन्तो.....ष्यनागी कलोसि Act 4, 22 ।

To what religion does Jivasiddhi belong ? Is the author right in calling him as Kshapanaka ? If not give reasons. Who is the author of the Mudrarakshasa and what materials are there to determine his date ? Examine the play as dramatic work and point out its defects and excellences—

Translate into English or own language—

(a) भर्तुस्तया क्लृप्तिताप्रमथान् ॥ ३१९

(b) दुष्कालेऽपि कलावसञ्जना.....अस्मिन्तः ॥ ३१९

(c) शिबेरिव सनुदन्तम्मुहुरा विना ॥ ३१८

Explain fully the allusion in C

Explain, give the context where necessary—

(a) तदुच्यताम्.....लेखयित्वा मानुरविष्टम् ।

(b) अस्तामिः.....त्रिजिविषाम् ।

(c) अस्तामिन्नुत्ते सूर्ये.....केतौ ।

(d) प्रतिनाननिव.....प्रथमः प्रगयाः ।

(e) अनुपेक्षने द्वयोः.....प्रतिपाद्येत वा ।

(f) अयं लेखस्या.....दर्शय ।

(g) अलङ्कृतागम्.....गच्छन्ति ।

(h) अत्र न रहस्यं.....कालहरणं कादु ।

(a) What is meant by पद्गुण, उन्नेष, निदर्शन, बीज, विनय and चमपट ?

(b) Sketch briefly the character of Bhagurayana stating the part he is made to play in the drama.

(c) State all the allusions to the Buddhist religion that occur in the play —

Translate in to English or in your verse—

(a) शक्यः खल्वेव राजसमन्तिभवत्यमाहृमिच्छति ।

(b) वाराहीमात्मनोनेस्तनु.....पार्ष्वरश्चन्द्रगुप्तः ॥ ७ । १९

What is the technical name for the verse and why is it so called.

State in what connection the following sentences are used and translate them—

(a) अञ्जनं पसादो एतो जं.....परिम्याहं करोदि । Act 2, 23.

(b) कथं निरुपदनेव चाणक्यमिति.....चाणक्यमिति । A. 3. 32

(c) शोणं सिन्दूरशोणासततः ।

(d) अतोऽन्यलिखितमस्यापूर्वतं विभावयिष्यति ।

(e) वयस्स भद्दमरुणमुहा किलअणमणिष्वहणे । ६

Explain clearly the words of (c) and state which portions of the plot in the Mudrarakshasa are covered by them.

What are the different ways in which dramatic writers wind up the ? Which of them is used in the Mudrarakshasa—

Analyse the character of Chanakya give quotation where necessary Do you concur in the remarks that the policy of this Brahmana politician may be regarded as quite Machiavellian ? Give fully your reasons—

Give the substance of the letter which Chanakya made Sakatadas write without any address upon it. What parts does it play in the denouement of Mudrarakshasa ?

What different people are mentioned in the Mudrarakshasa ? Identify them where you can. Criticise the style of Visakhadatta stating the merits and demerits and illustrating the latter. To what time does his play refer ? Give the precise meaning of the following—

What reference is there in the Mudrarakshasa to the Buddhas and what trait of character does it illustrate ?

With what object in view did Chanakya cause Rakshasa's ring to be delivered to the latter and what purpose is served by the feigned quarrel between Chanakya and Chandragupta ?

Translate—

(a) प्रथमोन्मेषजिह्वाघणमनभिमुखी.....हरेर्हृष्टिराकेकरा वा ॥ ३।२१

शार्ङ्गकर्पावमुक्तप्रशिथिलकविकाः... ..भूयसा दुःखयन्ति ॥ ६।१९

Discuss the merits of the different readings in the following passages—

(a) भक्त्या कार्यपुर वहन्ति बहव ।

(b) अथवा न लिखामि पूर्वमनभिष्यक्तमेवास्ताम् ।

(c) तत्त्वदयोवश्यस्रग्मम् ।

(d) विप्रवर्माद्यो मद्यमभिदुहन्ति ।

(e) अगृहीतशस्त्रेणवृषल इत्यत सन्देह ।

(f) अथवा अमात्यराक्षसे.....प्रयोजनमिदानीम् ।

(g) विना वाहनसर्वबन्धनम् ।

Explain—

(a) सखमद्भयात् राज्ञाम् ।

(b) मुण्डितमुण्डो नष्टाणि पृच्छसि ।

(c) शकटदामस्तुअक्षराणि ।

(d) सर्वज्ञतामुपाध्यायस्य चोरवित्तुमिच्छसि ।

Explain the meaning of the following—

पंचवर्षदेहीय, परसवेदन, क्षात्रव, वाचिक, लोष्टघातम्, सिम्युंद, वृषलोघ, उपरलोक्वितुम्यः ।

Translate in to English—

(a) रूपाक्षोन्विपयाविरूप्य.....तृप्ते मुषा ताम्यति ॥ ३११

(b) कार्योपदेपनादौ तनुमपि.....बलेद्यमस्मद्विषो वा ॥ ३१३

What is a नटक ? What historical facts do you find embodied in the plot of the Mudrarakshasa ?

What is a पताका and a प्रकरी ? Refer to any in Mudrarakshasa—

Who were the allies of Malaya ? What countries were the serverigns ? With whom do you identify the Mlechhas referred to म्लेच्छेहृद्विज्यमाना in the varatvakshaya ?

Explain fully the following—

(a) पीवा निरवरोप... 'करोति तत्कार्यम् ॥ ३१११

(b) अस्तामिनुचे सूर्य... 'उदितास्तमिते च कंटौ ॥ ३११२

(c) त्वद्वाग्द्वान्तरितानि सन्ति विमो निष्ठानि साध्यानि नः ॥

(d) जःप्रपि लेखस्यागून्यापं किमपि प्रेषितम् । अयं लेखस्यागून्यापौ भविष्यति ।

(e) साधे निष्ठितमन्वयेन घटित.....स्यास्वामिनो निग्रहः ॥ ५११०

What jaina doctrine is indirectly alluded to in अलहन्तानं पगमानि
'...मनोर्हि गच्छन्दि (५२)

What difference in language do you make in पीवा निरवरोप...तत्कार्यम् (३१११) and अस्तामिनुचे सूर्य... 'च कंटौ and the verse अलहन्तागम्.....मनोर्हि गच्छन्दि (५२)

Translate—

(a) कनोचइतिन्वाकलापकविडा.....दोन्यां प्रनीर्गोर्मेवः ॥ ३२

(b) इह हि रचयन् साध्वी सिध्यवय हि पराङ्मुखाः ॥ ३२

(c) मुलभेन्वर्षलानेषु..... सिविना विना ॥ १२३

Who utters the first verse, or what occasion and with what object ? Explain in the last line and give another instance from the play of similar formation. What is the story about to which allusion is made in मुलभेन्वर्षलानेषु..... सिविना विना । १२३

Dsolve the following compound—

विनलनुन्नामनिपरिद्वेषविर... विदुलवद्वस्यले ।

Explain giving the context—

(a) त्वद्वाग्मुचरितैकदेशस्यानुकरणं क्लृप्तम् ।

(b) अलङ्घितनिपातापरिणता भवन्ति ।

(c) त्वद्वाग्द्वान्... साध्यानि नः ।

(d) फलेन संवादितमस्य विकल्पितम् ।

With what characters does the Mudrarakshasa actually commence and how is it introduced or staged ? By what name is this form of introduction known to Hindu critics ? What is your opinion regarding the state of public morality as disclosed by the Mudrarakshasa—

Give the meaning of the following words as used in the Mudrarakshasa—

अभियोय, उपजाय, विकार, स्पश, प्याल, अपवरक, जितकाशिन्, अभिचार, यापयि, उत्सेध ।

What means did Rakshasa employ to destroy the life of Chandragupta and how was he forestalled by Chanakya in every one of his efforts ? Explain the plot planned by Chanakya to bring about a rupture between Rakshasa and Malayaketu—
Compare the following characters as sketched in the Mudrarakshasa—

- (a) Chanakya and Rakshasa,
- (b) Chandragupta and Malayaketu Cite passage to illustrate your remarks

Dissolve the following compounds

- (a) भरिमित्रोदासीनव्यवस्था,
- (b) सज्जलजलदधोमसकाशमृतिः ।

Explain the formation of the following words—

- (a) निम्बूद ।
- (b) प्रोष्ठून ।
- (c) अमात्य ।

Translate into English—

- (a) आ शैलेन्द्राच्छिडा... स्वागुलीरभ्रभागा ॥ ३ । १९
- (b) कुले लज्जायां च परतन्त्रो विमुदति ॥ ५ । ४
- (c) दुष्कालेऽपि कलायसज्जन मेघोऽस्मि स ॥ ७ । ५

Translate—

- (a) देवस्य येन पृथिवीतल मित्रा सहेत ॥ ४ । ११
- (b) चताङ्गीनाम् तीक्ष्णं निबन्धन्ति कृण्वन् ॥ ६ । १२

Briefly sketch the character of Bhagurayan, Citing passages to illustrate your remarks—

Write notes in English to explain the following passage—

कार्येष्वेष

What allusion do you find in Mudrarakshasa to the Natyasandhis Illustrate these with reference to this play—

Give in Sanskrit the substance of the feigned quarrel between Chandragupta and Chanakya—

Translate and explain fully giving the context—

- (a) द्वयोः सारं तुल्य सुदृढि च ।
- (b) उत्तरोऽयं लेखार्थः पूर्वः कथमस्तु ?
- (c) उवक्षितं अणोण दुहेग किं वि ।
- (d) शिरसि भयमतिदूरे तत्प्रतीकारः ॥
- (e) ये याताः किमपि कामं प्रकामोदमाः ।
- (f) अमत्तो स हि कुसलो बालग्राही विणासमप्यु होन्ति ।
- (g) अस्माभिर कृतघ्नैः । नानुगम्यते ।
- (h) दुरात्मन् रक्षसः जीवति खलु कौटिल्यः ।